य० लेलचूक,
यू० पोल्याकोव,
अ० प्रोतोपोपोव

सोवियत समाज का इतिहास

सुबोध रूपरेखा

सपादक सोवियत सघ की
विज्ञान अकादमी के सहयोगी सदस्य
यू० पोल्याकोव

प्रगति प्रकाशन
मास्को

विषय-सूची

प्रस्तुत पुस्तक मे अक्तूबर क्रांति के बाद से सोवियत समाजवादी जनतंत्र सघ के पचास वरस से अधिक के इतिहास को समेटने का प्रयत्न किया गया है। यह इतिहास असाधारण रूप से समृद्ध तथा विविधतापूर्ण है और ऐसी घटनाओं से भरा पडा है, जिनका ऐतिहासिक महत्व बहुत है। इन बरसो मे सोवियत सघ ने जो रास्ता अपनाया, उसके नतीजे सब को मालूम है। पिछडा हुआ, अनपढ रूस एक महान समाजवादी शक्ति बन गया। सोवियत सघ के कट्टर दुश्मन भी इस से इनकार नही कर सकते।

इन पचास बरसो मे बहुत कुछ हुआ। महान क्रांति, हस्तक्षेपकारियो तथा सशस्त्र प्रतिक्रांति के विरुद्ध सोवियत जनगण का कठिन और तीव्र सघर्ष, सदियो के पिछडेपन के बाद समाजवादी समाज के सफल निर्माण की अभूतपूर्व ढग से तेज प्रगति, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध (१९४१–१९४५) की रोमाचकारी घटनाए, युद्ध द्वारा बर्बाद अर्थतंत्र के पुनर्निमाण की गौरवमयी गाथा और अत मे १९५० और १९६० के दशको की शानदार आर्थिक और सास्कृतिक प्रगति, जब कम्युनिज्म का निर्माण जोरो के साथ शुरू हुआ।

घटनाओ की बहुलता और उनकी तनातनी और पेचीदगी के कारण उन इतिहासकारो की कठिनाई बढ जाती है, जो अपेक्षाकृत सक्षिप्त इतिहास लिखने का प्रयास कर रहे हो। इस किताब के लेखको को इन कठिनाइयो का पूरी तरह सामना करना पडा। उन्हे दुख है कि बहुतेरी अहम और दिलचस्प घटनाए इसमे शामिल नही की जा सकी। घटनाओ को मूलत कालक्रम से दिया गया है, ताकि घटनाओ का क्रमागत चित्र

पाठको के सामने आ जाये। केवल कही कही सामग्री को विषय के अनुसार एकत्रित किया गया है। लेखको ने इतिहास के असली निर्माता, व्यापक जनगण की निर्णायक भूमिका, प्राप्त उपलब्धियो की आवश्यक शर्त के रूप म कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व और क्राति के सेनानी तथा सोवियत राज्य के सस्थापक व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की भूमिका दिखाने का प्रयास किया है।

लेखको को आशा है कि उनकी पुस्तक से पाठको को सोवियत सघ के इतिहास का मौलिक, यद्यपि सामान्य बोध प्राप्त होगा और उन्हे सोवियत इतिहासकारो द्वारा प्रकाशित अधिक तफ्सीली और विस्तारपूर्ण कृतियो को पढने का शौक होगा।

* * *

यह पुस्तक सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के वैज्ञानिक कार्यकर्ताओ यू० पोल्याकोव (अध्याय १-३ तथा ६), व० लेलचूक (अध्याय ४-८, १० तथा ११) और अ० प्रोतोपोपोव (सोवियत सघ की अतर्राष्ट्रीय स्थिति तथा वैदेशिक नीति से सबधित अध्याय) द्वारा लिखी गयी। उपसहार व० लेलचूक और यू० पोल्याकोव ने लिखा।

पहला अध्याय

रूस में समाजवादी क्राति

निरकुश शासन का अत

जिन लोगो का जन्म १९१७ के बाद हुआ है, उनके लिए यह कल्पना करना भी कठिन है कि आधी शती से कुछ ही अधिक पहले रूस पर निरकुश राजतत्र का साया था। जब सम्राट निकोलाई द्वितीय से किसी ने उनका पेशा पूछा, तो गभीरतापूर्वक जवाब मिला कि 'रूस की धरती का स्वामी हू'। सरकारी घोषणाओ मे स्वय अपने बारे मे सम्राट लिखा करते थे, "हम, ईश्वर की कृपा से, समस्त रूस के महाराजा " या "पितृभूमि के कल्याण की रक्षा करने के लिए भगवान द्वारा नियुक्त, हम महाराजा " आदि।

उस समय यही स्थिति थी। कई शताब्दियो से रूस जार के वशचिह्न–दो सिरो वाले गरुड की छत्र-छाया मे था। सगीनो की सुरक्षा मे, अत्याचार और दमन के शक्तिशाली शस्त्रास्त्र से सुसज्जित तथा जनता द्वारा असताप की अभिव्यक्ति को निर्ममता से दबानेवाला राजतत्र लगता था कि सदा इसी प्रकार बना रहेगा।

पीढी दर पीढी रूस के बेहतरीन सपूत जनता को अत्याचार और दमन से मुक्ति दिलाने के लिए अपना जीवन समर्पित करते रहे थे। लेकिन जब सर्वहारा वर्ग इतिहास के मच पर आ गया, तभी जनता को वह सेनानी मिला, जो उसे विजय की मजिल तक ले जा सकता था। रूसी सर्वहारा वर्ग ने लडाई का झडा उठाया तथा करोडो किसान जनता को अपने झडे तले एकत्रित किया। रूस मे क्राति ऐतिहासिक दृष्टि से अनिवार्य थी। बीसवी शती के प्रारभ तक इसकी विजय की सभी आवश्यक शर्ते तैयार हो चुकी थी, क्योकि रूस मे एक शोषणकारी व्यवस्था के सारे अतर्विरोध बहुत तीव्र हो गये थे।

रूस पूजीवादी विकास की बीच की सीढी पर था। परतु पूजीवादी सबध सामतवाद के बहुतेरे अवशेषा के साथ अजीव ढग से गुथे हुए थे। देश अभी तक कृषिप्रधान था वावजूद इसके कि उद्योग का विकास खासी तेज़ी से हा रहा था। मजदूरा का बुरी तरह शोषण किया जाता, काम का दिन दस घटे अथवा उस से भी अधिक था और मजदूरी बहुत कम थी। उस समय का रूसी उद्योग अपक्षाकृत पिछडा हुआ तो था ही, पर उसका एक विलक्षण मज़दूरा का उच्च सकेद्रण था (देश की श्रमशक्ति का ३६ प्रतिशत से अधिक भाग ऐसे कारखाना मे था, जहा एक हज़ार या उससे अधिक मज़दूर काम करते थे)।

किसाना की जीवन स्थिति बेहद खराव थी। वे भूमि अभाव का शिकार थे। १०५ लाख किसान परिवारो के पास उतनी ही भूमि थी जितनी ३० हज़ार ज़मीदारो के पास। इससे देहातो म उत्पादक शक्तियो के विकास मे वाधा होती थी। कृषि की अवस्था पिछडी हुई थी। खेती के औजार पुराने समय से वही चले आ रहे थे।

सबसे अधिक सामाजिक आर्थिक पिछडापन रूस के दूरवर्ती इलाका मे पाया जाता था। कुछ जगहा पर तो उद्योग नाम की कोई चीज़ नही थी। वहा मध्य युग की सामती अवस्था का बोलबाला था। और कुछ जन जातिया विकास के कबायली स्तर से आगे नही बढी थी।

रूस की राजनीतिक व्यवस्था का मुख्य पहलू यह था कि मेहनतकश जनता सभी अधिकारो से वचित थी। राजनीतिक अधिकारो का नामोनिशान नही था। प्रगतिशील सगठनो को सख्ती से कुचल दिया जाता और आज़ादी के योद्धा हज़ारा की सख्या मे जेलो मे बद थे या उनको निर्वासित कर दिया गया था।

रूसी साम्राज्य की आबादी मे आधे से ज्यादा लोग गैर-रूसी जातियो के थे। उनकी हालत बहुत खराव थी। जिन इलाका मे गैर रूसी लोग बसते थे उनमे से अधिकाश की अवस्था उपनिवेशा की सी थी।

भूदास प्रथा के अवशेषा के साथ मिलकर पूजीवादी उत्पीडन ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी थी, जो रूस के जनगण के लिए बिल्कुल असहनीय थी। इसन ऐसी जबरदस्त शक्तिया को जन्म दिया, जो कभी किसी क्राति मे देखन म नही आयी थी। रूस, जो सामाजिक और राष्ट्रीय उत्पीडन

का केंद्र बिंदु था, पूरी साम्राज्यवादी व्यवस्था के अंतर्विरोधों का केंद्र-बिंदु और उसकी सबसे कमजोर कड़ी बन गया। इसी लिए बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में रूस में क्रांति का स्वरूप प्रचंड होता चला गया। विश्व क्रांतिकारी आंदोलन का केंद्र बदलकर अब रूस आ गया था। यद्यपि १९०५-१९०७ की प्रथम रूसी पूंजीवादी जनवादी क्रांति नाकाम रही थी, फिर भी क्रांतिकारी आंदोलन की लहरें पीछे नहीं हटीं। एक नया उभार निकट आ रहा था।

१ अगस्त, १९१४ को जर्मनी ने रूस के खिलाफ युद्ध की उद्घोषणा कर दी। प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो चुका था। युद्ध साम्राज्यवादी पूंजीवादी वर्ग के फायदे के लिए छेड़ा गया था और इसलिए आम लोगों को उससे कोई दिलचस्पी नहीं थी। वे उससे घृणा करते थे। जारशाही शासन का ह्रास और पतन पूरी तरह सामने आ गया। मोर्चे पर भीषण दुर्घटनाएं, लाखों करोड़ों रूसी सैनिकों का अनर्थपूर्ण संहार और देश के भीतर आम आर्थिक दुर्व्यवस्था के कारण जनता के असंतोष और आक्रोश का कोई ठिकाना नहीं रहा। मार्च, १९१७* के शुरू में क्रांति की ज्वाला भड़क उठी, जिससे जार का तख्ता उलट गया।

कई पूंजीवादी इतिहासकारों का कहना है कि क्रांति इसलिए हुई कि जार और उसके अधिकारियों ने असाधारण अयोग्यता का परिचय दिया। अगर जार अधिक बुद्धिमान होता, उसके सेना नायक अधिक प्रतिभाशाली तथा उसके मंत्री अधिक स्फूर्तिवान होते और अगर उन्होंने मिल्युकोव और गुचकोव जैसे पूंजीवादी अधिकारियों के हाथ में शासन सौंप दिया होता, तो क्रांति नहीं होती।

इसमें कोई संदेह नहीं कि रूसी साम्राज्य के अंतिम सम्राट निकोलाई द्वितीय बहुत ही अयोग्य और मूर्ख व्यक्ति थे। जब फरवरी के उन दिनों

---

*फरवरी, १९१८ से पहले रूसी कैलेंडर यूरोपीय तथा अमरीकी कलेंडर से १३ दिन पीछे हुआ करता था। इसलिए पुराने कैलेंडर के अनुसार क्रांति फरवरी के अंत में हुई और उसे फरवरी क्रांति कहा जाता है। इस पुस्तक में सभी तिथियां नये कैलेंडर के अनुसार दी गयी हैं। मगर कुछ बहुत अहम घटनाओं के संबंध में पुरानी और नयी दोनों तिथियां दी गयी हैं।

म उन्होंने पेत्रोग्राद गैरिज़न के नायक को आदेश दिया कि कल तक राजधानी मे सारा हगामा शांत हो जाना चाहिए, तो उन्हे पूरा विश्वास था कि क्राति समाप्त हो जायेगी। विद्वेषी और सनकी जारीना मजदूरों के प्रदर्शनों को गुडो का आदोलन कहा करती और पूरी गभीरता से यह समझती थी कि क्राति की आग इसलिए भडक उठी है कि सरदी काफ़ी नही पडी। परतु जन क्रोध की ज्वाला केवल पतित रोमानोव राजवश के विरुद्ध नही बल्कि सपूर्ण निरकुश शासन व्यवस्था के विरुद्ध भडक रही थी। और उसे रोकना या बुझाना किसी के बस मे नही था।

पुतीलोव कारखाना राजधानी के सबसे बडे कारखाना मे था। उस कारखाने की एक वर्कशाप म हडताल हुई और तुरत पूरे कारखाने म फैल गई। वह हडताल क्या थी, मानो गरमी के दिना म सूखे वन म आग लग गई हो। हडताल आदोलन तेजी से पूरे पेत्राग्राद मे फैल गया। जब वोलीस्की रेजिमट के सैनिका न अपने अफसरा का आदेश मानने से इनकार कर दिया और बागियो से जा मिले, तो उनकी इस हरकत स जाहिर होता था कि सैनिका के मन मे युद्ध और इसकी आग भडकानेवाला के विरुद्ध कितनी घणा भरी हुई है। इसलिए कोई आश्चय की बात नही कि प्रेओब्रजेंस्की, लिथुआनियाई तथा अय रेजिमेटा के सैनिका ने भी वही रास्ता अपनाया। पेत्रोग्राद की सडका पर दो धाराए मिलकर एक हो गयी। एक मे मजदूर थे जो दढ प्रतिज्ञ थे कि जारशाही और पूजीवाद का अत करेंगे और दूसरी मे सैनिक, अधिकाश किसान, थे, जो युद्ध के खिलाफ विद्रोह तथा जमीन की माग कर रहे थे।

क्राति बडी तेजी से फली। हडताल, जिसके कारण राजधानी का प्रत्येक कारखाना वद हो गया था अब मजदूरा और सैनिका के सशस्त्र विद्रोह का रूप धारण करने लगी।

इस बीच जारशाही के अधिकारी भी चुप नही बैठे थे। उन्होंने क्राति को कुचलने मे कोई कसर नही उठा रखी। आदोलन को उसके नेतत्व से वचित करने के लिए जार की गुप्त राजनीतिक पुलिस ने कम्युनिस्टो (बोल्शेविको) की पेत्रोग्राद समिति को गिरफ्तार कर लिया। जार के आदेश से पेत्रोग्राद सैनिक क्षेत्र के कमाडर जनरल खबालोव ने प्रदशनकारियो के विरुद्ध अपनी सेना मैदान मे उतार दी। अफसरो न लोगो की भीड पर मशीनगनो से गोलिया चलानी शुरू कर दी। मजदूरो

पर सैनिको और पुलिस द्वारा राइफलो से गोलियो की बौछार होने लगी। पेत्रोग्राद की सडके मजदूरो के खून से रगी गयी।

लेकिन यह सब व्यथ गया। १२ माच, १९१७ के अत तक पेत्रोग्राद जनता के हाथो म आ चुका था। निरकुश ज़ारशाही का तख्ता उलट चुका था। सम्राट निकोलाई द्वितीय ने राजत्याग के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। रूस की जनता ने, जो आज तक पैरो तले रौदी जाती और सभी अधिकारो से वचित थी, आजादी की सास ली।

परतु निरकुश शासन का अत होने से देश के समक्ष तात्कालिक समस्याओ का अपने आप समाधान नही हुआ। फरवरी, १९१७ क्राति का अत नही, उसकी शुरुआत थी। मगर फरवरी क्राति के बिना अक्तूबर क्राति नही हो सकती थी। निरकुश शासन का अत समाजवादी क्राति के सघष मे ऐतिहासिक रूप से अनिवाय बीच की मजिल था।

दोहरी सत्ता

एक कारखाने के बडे से प्रागन मे मजदूरो की भीड लगी है। तेल मे सन कपडे पहने वे आपस मे बाते कर रहे हैं, हसी मजाक भी हो रहा है, माच की मटियाली, नम बफ को रौंदते चल रहे हैं। कारखाने के कार्यालय से एक मेज लाकर मच बनाया गया है। मेज पर एक आदमी खडा हो गया और चीखकर बोला "साथियो, हम यहा इसलिए जमा हुए ह कि मजदूरो के प्रतिनिधियो की सोवियत के लिए, जो हमारी सत्ता होगी, अपने प्रतिनिधि चुनें।"

१९१७ के वसत मे इस तरह का दृश्य देश के हर कारखाने मे देखा जा सकता था। फरवरी क्राति के दौरान और उसके बाद के दिनो मे हर जगह मजदूरो के प्रतिनिधिया की सोवियते कायम की गयी और सैनिक दस्ता तथा नौसेना के जहाजो मे सैनिका और नाविको की समितिया सगठित की गयी।

देश के अधिकाश नगरो और अनक ज़िला के मजदूरो, सनिको तथा किसाना की सोवियतें स्थापित हुईं।

फरवरी क्राति के तुरत बाद निर्णायक शक्ति सोवियता के हाथ मे आ गयी। उन्ह आबादी के बहुत बडे बहुमत का समथन प्राप्त था, उनके

पीछे क्रातिकारी सैनिक और नाविक थे और उन्हे मजदूरा के लाल गार्ड का सशस्त्र समर्थन प्राप्त था, जिसका सगठन फरवरी, १९१७ के तनाव के दिनो मे किया गया था।

पेत्रोग्राद मे १४ मार्च को मजदूरा और सैनिका के प्रतिनिधिया की सोवियतो की पहली सयुक्त बैठक मे सनिक प्रतिनिधियो न सामूहिक रूप से सैनिक गरिजन के लिए एक क्रान्तिकारी आज्ञप्ति तैयार की। यह दस्तावेज आदेश नबर १ के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे कहा गया कि सभी राजनीतिक कारवाइया मे हर सैनिक दस्ता सोवियत तथा उसकी समिति के अधीन है और यह कि सारे हथियार कम्पनी तथा बटालियन समितिया के हवाले कर दिये जायें और उन्ही के नियत्रण म रह।

इस प्रकार सोवियतो की बडी प्रतिष्ठा थी और उनके हाथ मे विशाल और कारगर ताक्त आ गयी थी। वे मजदूरो और किसाना के क्रातिकारी अधिनायकत्व का साधन थी।

परतु राज्य सत्ता सोवियतो के हाथ मे नही थी। देश मे एक और सरकारी सत्ता स्थापित कर ली गयी थी और वह विद्यमान और क्रियाशील थी। वह थी अस्थायी सरकार, जिसके अनेक स्थानीय निकाय थे। इसकी स्थापना इस प्रकार हुई थी। जारशाही रूस मे ससद की तरह की एक सस्था, राजकीय दूमा के नाम से १९०६ से चली आ रही थी और उसको कुछ सीमित अधिकार प्राप्त थे। चौथी राज्य दूमा का चुनाव १९१२ मे हुआ था जिसमे अधिकतर दक्षिणपथी पार्टियो के प्रतिनिधि थे। १९१४ मे उसके पाच कम्युनिस्ट सदस्या को गिरफ्तार करके साइबेरिया निर्वासित किया गया था। जब फरवरी क्राति हुई, तो दूमा के सदस्यो ने पहले एक अस्थायी समिति कायम की और फिर (१५ मार्च को) एक बडे जमीदार राजा ल्वोव के नेतत्व मे एक अस्थायी सरकार की स्थापना की। सभी महत्वपूर्ण पदा पर दक्षिणपथी पूजीवादी पार्टियो के प्रतिनिधि नियुक्त किये गये। इनमे गुचकोव, कोनोवालाव और तेरेश्चेको जैसे बडे पूजीपति थे। अस्थायी सरकार दरअसल पूजीवादी वर्ग का अधिनायकत्व थी। नतीजा यह हुआ कि देश म दो सत्ताए, दो अधिनायकत्व साथ साथ कायम और क्रियाशील हो गय।

इतिहास की सभी क्रातिया मे जहा कुछ बात समान हाती है वहा समय स्थान तथा प्रत्येक देश के ऐतिहासिक विकास के कारण उनकी

अपनी अपनी विशेषताए भी होती है। दोहरी सत्ता की स्थापना रूस की १६१७ की फ़रवरी क्रांति की एक विशेषता थी।

ज्यो ही ज़ारशाही का अत हुआ देश मे एक निमम राजनीतिक सघप शुरू हो गया। विभिन्न पार्टियो तथा सगठनो ने, जिन्हे अब खुलम-खुल्ला काम करने का मौका मिला था, अपनी अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनाने के लिए पूरा जोर लगा दिया।

उस समय राजनीतिक क्षेत्र मे मुख्य पार्टिया कौनसी थी?

तथाकथित सवैधानिक-जनवादी पार्टी (कैडेट) वित्तीय तथा औद्योगिक पूजीवादी वग के हितो की प्रतिनिधि थी। इस पार्टी का प्रभाव पूजीवादी बुद्धिजीवियो की उच्च श्रेणी मे तथा छात्र नवयुवको और अफसरो म फैला हुआ था। इसके नेताओ म इतिहास के प्रोफेसर मिल्युकोव, डाक्टर शिगारेव तथा प्रथम अस्थायी सरकार के अध्यक्ष राजा ल्वोव थे।

इस कैडेट पार्टी से दक्षिण अक्तूबरवादी पार्टी थी, जिसके नेता मास्को के उद्योगपति गुचकोव थे। अक्तूबरवादी पार्टी पूजीवादी ज़मीदारो तथा बडे साम्राज्यवादी पूजीपतियो की समथक थी। कैडेट तथा अक्तूबरवादी दोनो ही जमनी के विरुद्ध युद्ध को जारी रखना चाहते थे। उन्होने आठ घटे के काय दिवस का तथा किसानो को ज़मीन देने का विरोध किया।

दो निम्नपूजीवादी पार्टिया बहुत सक्रिय थी—सामाजिक-जनवादी (मेन्शेविक) तथा समाजवादी क्रातिकारी। मेन्शेविको को बुद्धिजीवियो के एक भाग (दफ्तरी कमचारियो और शिक्षको) का तथा मज़दूरो (खासकर विशेषाधिकारप्राप्त लोगो का समूह) के एक छोटे से भाग का समथन प्राप्त था। मेन्शेविको म कई गुट और प्रवत्तिया थी, जिनके नेता प्लेखानोव, मार्तोव, दान, छेईदज़े, त्सेरेतली आदि थे। समाजवादी क्रातिकारियो को भी बुद्धिजीवियो के एक भाग का समथन प्राप्त था, परतु वे अपने आपको "किसानो की पार्टी" कहा करते थे और विशेप रूप स देहातो म सक्रिय थे, जहा मुख्यतया ग्रामीण पूजीपतियो (कुलको) का समथन उन्हे हासिल था। समाजवादी क्रातिकारियो मे भाति भाति के लोग थे, जिसके कारण उनमे अनेक गुट फिर टूटकर अलग अलग पार्टिया बन गयी। दक्षिणपक्ष और मध्यमार्गियो का नेतत्व अव्क्सेन्त्येव, चेर्नोव, गोत्स और मास्लोव कर रहे थे। वामपक्ष मे स्पिरिदोनोवा, करेलिन, आदि थे।

मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी अपने आपको समाजवादी कहा करते थे, मगर दरअसल वे पूंजीवादी सत्ता को सहारा दे रहे थे। उनका उद्देश्य पूंजीवादी सत्ता के खिलाफ संघर्ष करना नहीं, बल्कि उससे समझौता करना था (इसी लिए उन्हें समझौतापरस्त कहा जाता था)। उनका ख्याल था कि रूस अभी समाजवादी क्रांति के लिए तैयार नहीं है। अतः वे पूंजीवादी-संसदीय आधार पर राष्ट्रीय विकास का समर्थन करते थे।

एकमात्र अटल क्रांतिकारी पार्टी कम्युनिस्टों (बोल्शेविकों) की थी। १९१७ में इसका बाकायदा नाम रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) था। बोल्शेविक पार्टी ने घोषणा की कि उसका उद्देश्य है समाजवादी क्रांति को पूरा करना, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व स्थापित करना तथा कम्युनिस्ट समाज की विजय के लिए संघर्ष करना। वह मजदूर वर्ग की पार्टी थी और इसलिए वह सभी मेहनतकशों के हितों के लिए लड़ती थी। उसका ख्याल था कि मजदूर वर्ग तमाम उत्पीड़ित और शोषित जनता का नेता है।

बोल्शेविक पार्टी के मूल केंद्र बिंदु थे फैक्टरियों और कारखानों में पीढ़ी दर पीढ़ी काम करनेवाले मजदूर (१९१७ में पार्टी के ६० प्रतिशत सदस्य ऐसे ही लोग थे)। पार्टी में क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों और गरीब किसानों के भी अनेक प्रतिनिधि थे।

पार्टी के सर्वमान्य नेता व्लादीमिर इल्यीच लेनिन (उल्यानोव) थे। उनके पिता वोल्गा की छोटी नगरी सिम्बीर्स्क (वर्तमान उल्यानोव्स्क) में एक शिक्षक थे। लेनिन ने युवावस्था से ही अपना जीवन मेहनतकश जनता की मुक्ति के ध्येय के लिए अर्पित कर दिया था। ज़ार की सरकार ने उनपर बड़े अत्याचार किये। उन्हें कई वर्ष कारावास और निर्वास में बिताने पड़े। लेनिन एक महान सिद्धांतकार थे। उन्होंने मार्क्सवाद को सृजनात्मक रूप से उन नयी स्थितियों के अनुसार विकसित किया, जो उस समय उत्पन्न हुईं, जब पूंजीवाद ने अपनी अंतिम अवस्था – साम्राज्यवाद – में प्रवेश किया। वह समाजवादी क्रांति के मेधावी रणनीतिविद थे। लेनिन में जहां एक सिद्धांतकार की असाधारण प्रतिभा थी, वहीं साथ ही उनमें ज़बरदस्त अंतर्बल, दृढ़ प्रतिज्ञा, एक व्यावहारिक नेता की सांगठनिक क्षमता तथा सुनिश्चितता थी, एक क्रांतिकारी का जोश तथा एक महान विचारक की बुद्धिमत्ता थी।

मेन्शेविक और समाजवादी क्रांतिकारी अपने
करते थे मगर दरअसल वे पूंजीवादी सत्ता को
उद्देश्य पूंजीवादी सत्ता के खिलाफ संघर्ष क
समझौता करना था (इसी लिए उन्हें समझौता
उनका ख्याल था कि रूस अभी समाजवादी क्रा
अतः वे पूंजीवादी-संसदीय आधार पर राष्ट्रीय f

एकमात्र अटल क्रांतिकारी पार्टी कम्युनिस्टो
१९१७ में इसका बाकायदा नाम रूसी सामा
(बाल्शेविक) था। बाल्शेविक पार्टी ने घोषणा
समाजवादी क्रांति का पूरा करना सर्वहारा वर्ग
करना तथा कम्युनिस्ट समाज की विजय के लि
वर्ग की पार्टी थी और इसलिए वह सभी मे
लडती थी। उसका ख्याल था कि मजदूर वर्ग •
जनता का नेता है।

बोल्शेविक पार्टी के मूल केंद्र बिंदु थे फैक्टरि
पीढी काम करनेवाले मजदूर (१९१७ में पार्टी
ही लोग थे)। पार्टी में क्रांतिकारी बुद्धिजी
भी अनेक प्रतिनिधि थे।

पार्टी के सर्वमान्य नेता व्लादीमिर इल्यी

उनके पिता वोल्गा की छोटी नगरी सिम्ब
में एक शिक्षक थे। लेनिन ने युवावस्था से
जनता की मुक्ति के ध्येय के लिए अर्पित कर
ने उनपर बडे उत्याचार किये। उन्हें कई व
बिताने पडे। लेनिन एक महान सिद्धांतकार
सृजनात्मक रूप से उन नयी स्थितियों के अनुसा
समय उत्पन्न हुई, जब पूंजीवाद ने अपनी अंति
म प्रवेश किया। वह समाजवादी क्रांति के मेधावी
म जहा एक सिद्धांतकार की असाधारण प्रतिभा ध
जबरदस्त आत्मबल दृढ प्रतिज्ञा, एक व्यावहारिक नेता
तथा सुनिश्चितता थी, एक क्रांतिकारी का जोश तथा
की बुद्धिमतता थी।

लेनिन ने ही रूस के श्रमजीवियों के मुक्ति सग्राम का नेतृत्व किया। मजदूर वग तथा समस्त उत्पीडित जनता का सौभाग्य था कि उसको इतिहास के एक निर्णायक तथा कठिन समय मे लेनिन जैसे नेता मिल गये।

पार्टी के नेताग्रा मे ग्रनुभवी क्रातिकारी थे, जिन्होने वरसा ज़ारशाही के विरुद्ध वीरतापूवक सघप किया था।

पार्टी के सबसे प्रमुख नताग्रा म याकोव मिखाइलाविच स्वेदलाव थे। लनिन कहा करते थे कि वह ऐसे सवहारा नेता थे, जिन्होंने मजदूर वग को सगठित करन तथा उसकी विजय को सुनिश्चित करने मे सबसे ग्रधिक यागदान दिया।

पालिश मजदूर वग के एक प्रमुख सपूत फेलिक्स एद्मु दाविच दज़ेर्जीन्स्की क्राति के महान सेनानी के रूप म प्रसिद्ध थे, जिन्होने ग्रपना सारा मनोवल तथा सारी प्रतिभा श्रमजीवी जनता की मुक्ति के लिए निछावर कर दी।

पेत्राग्राद के मज़दूरो मे एक व्यक्ति वहुत प्रसिद्ध थे—नाटा-सा कद, नुकीली ग्रौर छोटी-सी दाढी, लोहे के कमानीदार चश्मे के ग्रदर से उनकी ग्राखें सामनेवाले व्यक्ति पर केन्द्रित रहती प्रतीत हाती थी। यह मिखाईल इवानाविच कालीनिन थे, त्वर प्रदेश के किसान, जो मजदूर ग्रौर फिर पेशेवर क्रातिकारी वन गये। वह हमेशा लोगो के बीच मे रहा करते थे।

ग्रद्रेई सेर्गेयेविच वूवनाव १६१७ मे ३४ वप के थे, मगर तभी "पुराने" कम्युनिस्ट हो चुके थे ग्रौर उस समय १४ वरस से पार्टी के सदस्य थे। इन वरसो मे उन्हाने इवानोवो-वाज्नेसेन्स्क ग्रौर मास्को, नीज्नी नोवगोरोद ग्रौर पीटसबग, समारा तथा ग्रन्य नगरो मे पार्टी का काम किया था।

फरवरी क्राति के वाद पार्टी के नेतत्व म ग्रधिकाधिक उल्लेखनीय भूमिका जोजेफ विस्सारिग्रोनोविच स्तालिन ग्रदा कर रहे थे।

दो ग्रथक पार्टी कायकर्ताग्रा मे एक, जोशीले वक्ता तथा वेहद कमशक्तिवान सेर्गेई मिरोनोविच कीरोव तथा दूसरे, प्रतिभाशाली सगठनकर्ता वलेरिग्रान व्लादीमिराविच कूइबिशेव थे।

ज़ार की पुलिस के ग्रभिलेखागार मे एक नौजवान क्रातिकारी के फाटो थे—पतला, सुदर चेहरा, घुघराले वाल। नाम था ग्रिगोरी

लेनिन ने ही रूस के श्रमजीवियो के मुक्ति सग्राम का नेतत्व किया। मजदूर वग तथा समस्त उत्पीडित जनता का सौभाग्य था कि उसको इतिहास के एक निर्णायक तथा कठिन समय म लेनिन जैसे नेता मिल गये।

पार्टी के नेताओ मे अनुभवी क्रातिकारी थे, जिन्होने बरसा जारशाही के विरुद्ध वीरतापूवक सघप किया था।

पार्टी के सवसे प्रमुख नेताओ म याकोव मिखाइलोविच स्वेदलोव थे। लेनिन कहा करते थे कि वह ऐसे सवहारा नेता थे, जिन्होने मजदूर वग को सगठित करने तथा उसकी विजय को सुनिश्चित करने मे सबसे अधिक योगदान दिया।

पोलिश मजदूर वर्ग के एक प्रमुख सपूत फेलिक्स एद्मुदोविच दज़ेर्जीन्स्की क्राति के महान सेनानी के रूप म प्रसिद्ध थे, जिन्होने अपना सारा मनोवल तथा सारी प्रतिभा श्रमजीवी जनता की मुक्ति के लिए निछावर कर दी।

पेत्रोग्राद के मजदूरो मे एक व्यक्ति बहुत प्रसिद्ध थे—नाटा सा कद, नुकीली और छोटी-सी दाढी, लोहे के कमानीदार चश्मे के अदर से उनकी आखे सामनेवाले व्यक्ति पर केंद्रित रहती प्रतीत होती थीं। यह मिखाईल इवानोविच कालीनिन थे, त्वेर प्रदेश के किसान, जो मजदूर और फिर पेशेवर क्रातिकारी बन गये। वह हमेशा लोगो के बीच मे रहा करते थे।

अद्रेई सेर्गेयेविच बूवनोव १९१७ मे ३४ वप के थे, मगर तभी "पुराने" कम्युनिस्ट हो चुके थे और उस समय १४ बरस से पार्टी के सदस्य थे। इन बरसो म उन्होने इवानोवो-वोज्नेसेन्स्क और मास्को, नीज्नी नोवगोरोद और पीटसबग, समारा तथा अय नगरो मे पार्टी का काम किया था।

फरवरी क्राति के बाद पार्टी के नतृत्व म अधिकाधिक उल्लेखनीय भूमिका जोजेफ विस्सारिओनोविच स्तालिन अदा कर रहे थे।

दो अथक पार्टी कायकर्ताओ म एक, जोशीले वक्ता तथा वेहद कमशक्तिवान सेर्गेई मिरोनोविच कीरोव तथा दूसरे, प्रतिभाशाली सगठनकर्ता वलेरिआन व्लादीमिरोविच कूइबिशेव थे।

जार की पुलिस के अभिलेखागार मे एक नौजवान क्रातिकारी के फोटो थे—पतला, सुदर चेहरा, घुघराले बाल। नाम था ग्रिगोरी

2—1960

कोस्तातीनाविच ग्रार्जोनिकीदज़े (सेर्गो)। वारावाम ग्रौर निर्वानन समाजवाद की विजय म उनकी ग्रास्था को डिगा नही मव। इस वाल्शेविक का दृढ विश्वास सघप की ग्राग म तप चुका था।

प्रमुख पार्टी कायकर्ताग्रा म ग्रनक साहमी क्रातिकारी महिलाए थी, जैसे ग्रलेक्साद्रा मिखाइलाव्ना काल्लोन्ताई नादेज्दा कान्स्तान्तीनाव्ना क्रूप्स्काया रोज़ालिया समाइलोव्ना ज़ेम्ल्याच्का, येलेना दमीत्रियव्ना स्तासावा, ग्रादि।

पुरजाश प्रजानायक तथा ट्रासकाकेशिया के मजदूरा के प्रिय नता स्तपान गेग्रोगियविच शाउम्यान धातुकर्मी तथा चौथी राजकीय दूमा के सदस्य ग्रिगारी इवानोविच पत्रोव्स्की खराद मजदूर स्तानिस्लाव विकेत्यविच कासिग्रार शानदार पत्रकार मिखाईल स्तपानाविच ग्राल्मीन्स्की, प्रमुख साहित्यकार इतिहासकार ग्रौर ग्रथशास्त्री इवान इवानोविच स्क्वार्त्सोव स्तेपानोव ग्रनुभवी पार्टी कायकर्ता प्योत्र गेर्मोगेनाविच स्मिदोविच तथा येमेल्यान मिखाइलोविच यारास्लाव्स्की—य रूसी सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (वोल्शेविक) के प्रमुख व्यक्तिया मे कुछ के नाम ह।

यह बात बिना किसी ग्रतिशयोक्ति के कही जा सकती है कि किसी भी देश म किसी युग के महापुरुषा—महान विचारका, प्रभावशाली सगठनकर्ताग्रा तथा साहसी ग्रौर दूरदर्शी व्यक्तिया—की ऐसी गौरवपूण मडली पहले कभी नही थी।

ग्रमरीकी पत्रकार एल्बट रीस विलियम्स ने ग्रक्तूबर क्राति को ग्रपनी ग्राखा स देखा था। सयुक्त राज्य ग्रमरीका वापस जाकर फरवरी १६१६ मे उन्हाने कहा 'वाल्शेविक बुद्धिजीवी का मुख्य लाक्षणिक सार है जनगण मे विश्वास इस तथ्य म विश्वास कि मजदूर वग की मुक्ति स्वय मज़दूर द्वारा हासिल हो सकती है, परन्तु किसी की कल्पना द्वारा निमित प्रयोजना के ग्रनुसार नही।'

वोल्शेविक पार्टी के नेताग्रो मे ज़िनोव्येव, कामेनेव, बुखारिन, रीकोव आदि भी थे, जो उन दिना भी ढुलमुलपन का शिकार थे ग्रौर केन्द्रीय समिति के बहुमत द्वारा निर्धारित लाइन से ग्रक्सर भटक जाया करत थे। ग्रागे चलकर उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद से नाता तोड लिया ग्रौर उन्ह पार्टी से निकाल दिया गया।

निरकुश शासन का ग्रत होने के बाद बोल्शेविक पार्टी ने रूस के

भावी विकास के सबध मे सभी बुनियादी सवालो पर स्पष्ट और निश्चित मत प्रकट किया। इसका उल्लेख लेनिन की प्रसिद्ध "अप्रैल के थीसिसो" मे था, जिन्हे अप्रैल, १९१७ के अखिल रूसी पार्टी सम्मेलन म तफसीली विचार विमश के बाद स्वीकार किया गया।

मुख्य रणनीति सबधी काय पूजीवादी जनवादी क्राति को समाजवादी क्राति म परिवर्तित करना था। यह एक सवथा वास्तविक और सामयिक काय था। माक्सवाद को विकसित करने मे लेनिन ने समाजवादी क्राति का स्वय अपना सिद्धात प्रस्तुत किया था। उन्होने यह प्रदशित किया कि साम्राज्यवाद के युग मे एक सफल समाजवादी क्राति की सारी शर्तें प्रकट हो चुकी थी। लेनिन ने लिखा कि साम्राज्यवाद "ह्रासोन्मुखी पूजीवाद" है, कि "साम्राज्यवाद सवहारा वग की सामाजिक क्राति की पूववेला है।" इसी के साथ उन्होने यह भी बताया कि साम्राज्यवाद के दौरान विभिन्न देशो के अधिकाधिक असमान आर्थिक और राजनीतिक विकास के कारण यह बिल्कुल सभव हो गया है कि समाजवादी क्राति पहले केवल एक या कुछ ही देशो म विजयी हो। अगर किसी देश मे क्रातिकारी स्थिति उत्पन्न हो, तो उस देश का सवहारा वग सत्ता पर कब्जा करने तथा समाजवादी निर्माण को विकसित करने की सुविधाओ से लाभ उठा सकता है और उसे उठाना चाहिए। इस तरह वह तमाम देशो के क्रातिकारियो की बडी सेवा करेगा।

घटनाओ का विकास इस तरह हुआ कि रूस ही को सबसे पहले साम्राज्यवादी मोर्चे को तोडकर आगे बढने का मौका मिल गया।

समाजवादी क्राति की विजय की सभी आवश्यक स्थितिया रूस मे मौजूद थी। एकमात्र इसी प्रकार की क्राति देश के जीवन के बुनियादी अतर्विरोधो को हल कर सकती थी। समाजवादी क्राति मजदूर वग तथा गरीब किसानो को पूजीवादी शोषण से मुक्त करती, श्रमजीवी किसानो को इससे जमीन और आजादी मिलती इससे उत्पीडित जातियो को स्वाधीनता प्राप्त होती और साम्राज्यवादी युद्ध का अत हो जाता, जिसमे लोग बेहद घृणा करते थे। इसी लिए रूस की आबादी का जबरदस्त बहुमत समाजवादी क्राति का समथन करता था।

कम्युनिस्ट पार्टी ने बिल्कुल सही मूल्याकन किया कि अस्थायी सरकार पूजीवादी सरकार है और इस बात पर जोर दिया कि युद्ध अभी भी

साम्राज्यवादी युद्ध है और उसने एक न्यायपूर्ण तथा जनवादी शांति स्थापित करने का आह्वान किया।

आर्थिक क्षेत्र में पार्टी ने मेहनतकशों की परिस्थिति को सुधारने और शोषकों की स्थिति को कमजोर करने के लिए अनेक कारवाइयों का सुझाव रखा। इनमें बड़ी ज़मींदारियों की जब्ती के बाद भूमि का राष्ट्रीयकरण, तमाम बैंकों को मिलाकर मज़दूरों के प्रतिनिधियों की सोवियतों के नियंत्रण में एक राजकीय बैंक की स्थापना तथा माल उत्पादन और वितरण पर मज़दूरों के नियंत्रण की स्थापना शामिल थी।

दोहरी सत्ता की खास हालतों में कम्युनिस्ट पार्टी ने नारा दिया "सारी सत्ता सोवियतों को दो!" इसका मतलब था कि दोहरी सत्ता का अंत हो और सोवियतों की एकमात्र सत्ता स्थापित हो। हालात कुछ इस कारण पेचीदा हो रहे थे कि फरवरी क्रांति के बाद पहले कुछ महीने अधिकांश सोवियतों पर समाजवादी क्रांतिकारी और मेन्शेविक हावी थे, जो एकमात्र सत्ता सोवियतों के हाथ में सौंपने के खिलाफ थे और अस्थायी सरकार का समर्थन करते थे। फिर भी बोल्शेविक अपनी इस मांग पर डटे रहे कि सारी सत्ता सोवियतों को सौंप दी जाये। वे समझते थे कि इससे एक नये प्रकार के राज्य का निर्माण होगा, जो जनगण के हितों की रक्षा करेगा। केवल सोवियतों के आधार पर बनी हुई सरकार जनता की मांगों और उनकी आकांक्षाओं को पूरा कर सकेगी।

यह क्रांति के शांतिपूर्ण विकास का कार्यक्रम था, जिसकी संभावना रूस के ठोस घटनाक्रम से पैदा हुई थी। अस्थायी सरकार कमज़ोर थी और निर्णायक शक्ति सोवियतों के हाथ में थी और उन्हें जनता के विशाल बहुमत का समर्थन हासिल था। उनके लिए बस सत्ता ग्रहण करने का ऐलान करना बाकी रह गया था। उनके खिलाफ कोई कुछ नहीं कर सकता था। इसलिए कम्युनिस्टों ने उस समय अस्थायी सरकार का तुरंत तख्ता उलटने के लिए सशस्त्र विद्रोह का नारा नहीं दिया। वे एक ऐसी सरकार का तख्ता उलटने का नारा नहीं दे सकते थे, जिसे सोवियतों का समर्थन हासिल था। ज़रूरत इस बात की थी कि सोवियतें अपना समर्थन वापस ले लें और स्वयं सत्ता की जिम्मेदारी संभालें।

अगर सोवियतें सत्ता ग्रहण कर लेतीं, तो उनके समाजवादी क्रांतिकारी और मेन्शेविक नेताओं के लिए अपने ऊपर नीचे दबाव डाले रहना और बादा

की ग्राड मे छिपना सभव नही होता। लोग उनसे कहने "अब सत्ता आपके हाथ मे है, अपने वादे पूरे कीजिये!" लेकिन मेशेविक और समाजवादी क्रातिकारी जनता को शाति, भूमि और रोटी देना नही चाहते थे, और जब अमल का वक्त आता, तो अवश्य ही उनके चेहरे से नकाब उतर जाता। और तब जनता को ठोस सबूत मिल जाता कि मेशेविका और समाजवादी-क्रातिकारियो की वास्तविक भूमिका क्या है। उसका भ्रम दूर हो जाता और यह विश्वास हो जाता कि एकमात्र बोल्शेविक पार्टी ही जनता की मागो को पूरा कर सकती है। जनता शातिपूर्ण तरीके से सोवियतो के जनवादी सगठन के जरिये से मेशेविको और समाजवादी क्रातिकारियो को वादा खिलाफी के कारण सोवियतो से वापस बुला लेती और नेतृत्व बोल्शेविको के हाथो मे सौप देती।

"सारी सत्ता सोवियतो को दो!" क्राति का मुख्य नारा बन गया।

समाजवादी क्रान्ति का जोर पकडना

१९१७ के वसत और गर्मियो मे रूस मे क्रातिकारी आदोलन बहुत तेजी और जोरो से बढा।

जारशाही के विरुद्ध लडने मे देश की मेहनतकश जनता शाति, भूमि, रोटी और आजादी के लिए लड रही थी। पूजीवादी अस्थायी सरकार जनता की इन मागो को पूरा नही कर रही थी। इनको पूरा करने का उसका न तो कोई इरादा था और न वह ऐसा कर ही सकती थी, क्योकि वह जनगण के हितो का नही, बल्कि पूजीपतियो और जमीदारो के हितो का प्रतिनिधि और रक्षक थी।

युद्ध जारी रहा। अस्थायी सरकार ने नारा दिया कि क्राति की सफलताओ की रक्षा करने के लिए युद्ध जारी रखा जाय। मगर वह प्रतिरक्षात्मक युद्ध नही बना,- अभी भी वह साम्राज्यवादी युद्ध था, जो जमीदारो और पूजिपतियो के हित मे और नये देशो पर कब्जा करने तथा नयी जातियो को गुलाम बनाने के उद्देश्य से लडा जा रहा था। अस्थायी सरकार ने पुराने नारे "जब तक विजय न हो, युद्ध जारी रहे!" को कायम रखकर जनता की आशाओ पर पानी फेर दिया।

आबादी मे बडा बहुमत किसानो का था। उनकी माग थी कि जमीदारिया उनके हवाले कर दी जायें। अस्थायी सरकार उनकी इस माग को पूरा करने पर तैयार नही थी, क्योकि किसानो को जमीन देने का मतलब था जमींदारो से जमीन ले लेना। उस समय तक अधिकाश जमीदारिया पूजीपतियो के बको के हाथो म गिरवी रखी जा चुकी थी। इसलिए किसानो को जमीन देने का मतलब होता पूजीपतियो पर चोट करना। नये मन्त्रिगण जमीदारो और पूजीपतियो के हितो पर कैसे चोट कर सकते थे, जब वे उन्ही की इच्छा का प्रतिनिधित्व कर रहे थे?

अस्थायी सरकार ने मजदूरो की हालत मे सुधार करने के लिए कोई कदम नही उठाया। उसने आठ घटे का काय दिवस जारी करने, मजदूरी बढाने और काम की स्थिति सुधारने का विरोध किया। उलटे, पूजीपतियो को हर प्रकार की सुविधाए दी गयी।

अन्न सकट गहरा हो गया। शहरो मे रोटी की रसद की व्यवस्था ठीक नही थी। खाद्यान्न की कीमते आकाश को छू रही थी।

जातीय समस्या का भी समाधान नही हो रहा था। गैर रूसी जातियो के करोडो मेहनतकशो को कोई अधिकार प्राप्त नही थे। सरकार वास्तव मे जारशाही की औपनिवेशिक नीति का ही पालन कर रही थी। जार शाही के उत्पीडन की सारी मशीनरी अपनी जगह मौजूद थी।

क्राति की कर्णधार जनता को बेवकूफ बनाया जा रहा था। देश के सामने जो समस्याए थी, उन्हे पूजीवादी-जनवादी क्राति हल नही कर रही थी। एक ऐसी सरकार सत्तारूढ हो गयी थी, जिसका मेहनतकश जनता से कोई लगाव नही था और वह देश को सामाजिक प्रगति की ओर नही, बल्कि युद्ध, विनाश और भुखमरी के रास्ते अनिवार्य राष्ट्रीय तबाही की ओर लिये जा रही थी।

इससे सारे देश मे जनता सक्रिय हो उठी। क्राति की आग हर जगह—मोर्चे पर मोर्चे के पीछे औद्योगिक केद्रो और दूर दूर के गावो म, राजधानी म और दूरवर्ती इलाको मे सुलगने लगी।

देश के कोने कोने से खतरे की स्थिति के तार अस्थायी सरकार के पास पहुचने लगे। तार विभिन्न जगहो से आ रहे थे, मगर सब मे बात एक ही थी उनमे लिखा होता कि किसान जमीन के लिए सघर्ष तथा जमीदारो के खिलाफ विद्रोह कर रहे है।

कूस्क गुबेनिया* मे किसानो ने अलेक्सान्द्रोव्का जमीदारी पर 'हमला बोल दिया', रियाज़ान गुबेनिया मे किसानो ने राजा त्रुबेत्स्काई की ज़मीदारी पर कब्ज़ा कर लिया था और स्वय उसका प्रबध कर रहे थे। तूला गुबेनिया के देहाता मे एक ज़मीदारी मे आग लगा दी गयी थी। कही व्लादीमिर गुबेनिया मे जमीदारो की जमीनो पर जबरदस्ती हल चला लिया गया था, समारा गुबेनिया म चरागाह काट डाली गयी थी और कज़ान गुबेनिया मे वनो के वक्ष काट लिये गये थे प्रति दिन इस प्रकार के समाचार पत्रोग्राद आया करत।

किसानो का जन आदोलन माच मे शुरू हुआ और दिनादिन बढता गया। जुलाई, १६१७ मे ६६ मे स ४३ गुबेनियाओ म किसाना के विद्रोह की आग फैल चुकी थी।

क्रातिकारी सघष का एक अत्यत महत्वपूण क्षेत्र सेना थी, जिसमे लाखा मजदूर और किसान थे। सैनिको म विशाल बहुमत किसाना का था। उन्ह स्वभावत ज़मीदारा के विरुद्ध किसानो के सघर्षों से सहानुभूति थी और व भूमि समस्या के तत्काल समाधान की माग कर रहे थे।

कठार तथ्यो ने सनिका के इस भ्रम का चकनाचूर कर दिया कि वे प्रतिरक्षात्मक युद्ध लड रहे है। व अधिकाधिक इसका असली स्वरूप समझने लगे।

मोर्चों के कमाडरो की एक बैठक मई, १६१७ मे हुई, जिसमे सभी इस बात पर सहमत थे कि सैनिका का मन युद्ध मे नही है, उन्ह सिफ शाति और ज़मीन चाहिए। जनरल ब्रुसीलाव ने, जा उस समय दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे के कमाडर थे, बताया कि उनकी रेजिमेटा मे से एक ने हमला करने से इनकार कर दिया था और बहुत देर तक सैनिका को समझाने-बुझाने का प्रयास किया गया। सैनिका की ओर से कहा गया कि उन्हें लिखित जवाब दिया जायगा। चन्द मिनट बाद एक पोस्टर उनके सामन रख दिया गया, जिसपर लिखा था "शाति, चाहे किसी कीमत पर! युद्ध बद करो!'

सेना मे बोल्शेविका का प्रभाव दिनोदिन बढता गया। जून, १६१७ तक २६,००० सैनिक और जूनियर अफसर रूसी-सामाजिक-जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) मे शामिल हो चुके थे।

---

*पुरान रूस म प्रदेश के बड़े इलाके का नाम गुबेनिया था।

इस दौरान मे गैर रूसी जातिया की मेहनतकश जनता की सक्रियता बढती जा रही थी। यह सही है कि पूजीवादी राष्ट्रीयतावादी इस सक्रियता से अपना मतलब निकालना चाहते थे। उनकी चेष्टा थी कि इन जातियो को विलग कर ले, ताकि उनकी श्रमजीवी जनता मे और रूसी सवहारा वर्ग मे ज्यादा मजबूत एका न कायम होने पाये। राष्ट्रीय पूजीपतिया के प्रतिनिधि या वहन का राष्ट्रीय समानता और आजादी का नाम जरूर लेते थे, मगर चूकि उन्हे क्राति से नफरत थी, इसलिए वे रूसी पूजीपतिया से गठबधन करना चाहते थे। कम्युनिस्टो ने उत्पीडित जातिया मे अपना काम तेज कर दिया और उन्हे सवहारा अन्तरराष्ट्रीयतावाद के झडे तले एकताबद्ध करते तथा रूसी और स्थानीय शापको के खिलाफ राष्ट्रीय और सामाजिक मुक्ति सघष मे उनकी सहायता करते रहे। बोल्शेविक पार्टी ने राष्ट्रो के अलग होने और अपना आजाद राज्य स्थापित करने के अधिकार का समथन किया। इस अधिकार को मानने के कारण जातियो म फूट नही पडी। उलटे, इससे उनकी एकता शक्तिशाली हुई, उनमे जनवाद और स्वेच्छा के आधार पर मेल मिलाप बढा और श्रमजीवी जनता अपने क्रातिकारी सघष मे एकताबद्ध हुई।

क्रातिकारी आदोलन की प्रमुख शक्ति रूस का सवहारा वग थी। मजदूरो ने पूजीपतिया के खिलाफ लडाई मे हडताल का जोरदार हथियार उठा रखा था। सभी राजनीतिक कारवाइया म वे आगे आगे थे। उन्होने अपने क्रातिकारी जोश, मुस्तैदी और पहलकदमी से किसानो और सैनिको को प्रेरित किया और बराबर अपने सगठन और एकता को बेहतर बनाते रहे।

मई, १९१७ मे देश के कोने-कोने में हडतालो का सिलसिला शुरू हो गया। मजदूरो की माग थी कि उनकी मजदूरी बढ़ाई जाय और काम की स्थिति सुधारी जाये। जून मे हडतालो की सख्या और बढ गयी। वोल्गा तट पर सार्मोवो कारखाने के २० हजार मजदूरो ने हडताल कर दी। फिर मास्को और मास्को प्रदेश के धातु कर्मी मजदूरो की हडताल शुरू हुई। दोनत्स बेसिन और बाकू म भी भयकर वर्गीय लडाइया भडक उठी। उराल म भी हडताल आदोलन चल रहा था। मास्को और पेत्रोग्राद मे रग्च मजदूर भी अधिकाधिक मुस्तैदी से सघष म शामिल हो गये।

पूजीपतियो ने इसका बडी सख्ती स मुकाबला किया। उन्होने मजदूर वग के अधिकारो को पामाल किया और उनपर अधिकाधिक आर्थिक दबाव

डालने लगे। उन्होंने सर्वहारा वर्ग को विगठित करने तथा उसकी क्रांतिकारी दृढता को कमज़ोर करने का प्रयास किया। १९१७ की गर्मियों में "तालाबंदी" का मनहूस शब्द मज़दूरों के इलाकों में चारों ओर गूंज उठा। पूंजीपति अपने कारखाने बंद और मज़दूरों को बेरोज़गार बना रहे थे।

मई में १०८ कारखाने बंद हुए, जून में १२५ और २०६—जुलाई में। ९५ हज़ार मज़दूर बेरोज़गार हो गये। पूंजीपति वर्ग के उद्देश्य को बड़े उद्योगपति रियाबुशींस्की ने स्पष्ट शब्दों में निर्लज्ज भाव से कह दिया था। एक समय आयेगा, उसने कहा, जब "भूख और दरिद्रता के चंगुल जनता के बंधुओं, विभिन्न समितियों और सोवियतों के सदस्यों का गला दबायेंगे।"

ऐसी स्थिति में मज़दूरों और पूंजीपतियों के बीच संघर्ष और भी तीव्र होता गया।

मज़दूरों की लड़ाई केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं थी। उन्होंने राजनीतिक मांगें भी पेश कीं, सोवियतों की कारवाई में सक्रिय भाग लिया और सारी सत्ता सोवियतों को सौंपने के नारे का समर्थन किया।

मज़दूर वर्ग के संगठन और उसकी एकता को बेहतर बनाने में फैक्टरी कमिटियों ने बड़ा काम किया। इन कमिटियों ने, जो फैक्टरियों के सब मज़दूरों द्वारा चुनी जाती थीं, उत्पादन तथा मज़दूर कार्यकलाप के सारे पहलुओं का ज़िम्मा ले लिया। सोवियतों से संपर्क स्थापित करना, रसद की समस्याओं को निबटाना, आठ घंटे के कार्य दिवस की व्यवस्था करना तथा कारखानों की सुरक्षा का बंदोबस्त करना सब उनका काम था।

कारखानों के प्रांगणों में, मैदानों और खामोश गलियों में सैनिक आदेशों के शब्द सुने जा सकते तथा सादी पोशाक, मगर सैनिक पलटन के रूप में लोगों को राइफल और पिस्तौल लेकर कवायद करते देखा जा सकता था। यह लाल गार्ड के दस्ते थे, जिन्हें फरवरी क्रांति के दिनों में संगठित किया गया था। इन्हें प्रशिक्षण दिया जा रहा था। १९१७ की गर्मियों और पतझड़ के मौसम में उनकी संख्या बहुत बढ़ गयी। मज़दूर वर्ग ने हथियार उठा लिया था और आगे की फैसलाकुन लड़ाइयों के लिए उनका प्रयोग सीख रहा था।

अस्थायी सरकार से जनता के असंतोष तथा बढ़ते हुए क्रांतिकारी आंदोलन के कारण अनिवार्यतः राजनीतिक संकट उत्पन्न होने लगे।

पहला, जिसे अप्रैल सकट कहा जाता है, १ मई (१८ अप्रल) को शरू हुआ, जब पेत्रोग्राद के मजदूरा और सैनिका को पता लगा कि विदेशी मत्री मिल्युकोव ने एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर करके सरकार की यह दृढ प्रतिज्ञा व्यक्त की है कि अतिम विजय तक युद्ध जारी रखा जायेगा। एक लाख मजदूर और सैनिक मिल्युकोव के इस्तीफे की माग करते सडका पर निकल आये। अन्य रूसी शहरा म भी प्रदशन हुए, जिनम जनता ने अस्थायी सरकार की नीतियो से अपना असतोष प्रकट किया। यह सही है कि सैनिको की एक अच्छी खासी सख्या, जो मिल्युकोव के इस्तीफे का माग कर रही थी, यह नहीं जानती थी कि समस्या का सम्बध किसी व्यक्ति विशेष से नही, बल्कि सरकार के वग स्वरूप से है।

उस समय पेत्रोग्राद सोवियत बडी आसानी से सत्ता अपने हाथ म ले सकती थी। मगर मेन्शेविक और समाजवादी क्रातिकारी नेताओ ने इस अवसर स लाभ उठाने से इनकार कर दिया और अपने प्रतिनिधि सरकार के पास भेजकर उसका समथन किया।

सरकार का पुनगठन किया गया। मत्रिया म, प्रधान मत्री जमीदार ल्वाव के साथ कई मेन्शेविक और समाजवादी-क्रातिकारी मत्री भी थे समाजवादी क्रातिकारी केरेन्स्की युद्ध और नौसेना के मत्री थे, समाजवादी क्रातिकारी चेर्नोव को कृषि मत्री नियुक्त किया गया, मेन्शेविक स्कोबेलेव श्रम मत्री बने। लेकिन इन लोगा के नियुक्त होने से स्थिति म कोई परिवतन नही हुआ। मिल्युकोव और गुचकोव निकल गये थे, मगर सरकार की नीति वही थी। "समाजवादी' मत्रियो ने पूजीवादी मत्रिया की ही नीतिया पर अमल किया।

बाल्शेविका न बताया "सकट के कारणो का अत नही हुआ और पुन ऐसे सकटा का आना अवश्यभावी है।"*

दो महीन भी नहीं होने पाये थे कि एक और सकट, जो पहले से अधिक बडा और खतरनाक था, उत्पन्न हुआ।

१८ जून को पेत्रोग्राद म मजदूरा और सैनिका का एक बडा प्रदशन हुआ। लगभग ५ लाख आदमिया न उसम भाग लिया। यह एक ऐसा

---

* ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खड २४, पृष्ठ १८१

घटना थी, जो क्रांतिकारी रूस की राजधानी ने पहले कभी नही देखी थी। शहर के कोने-कोने से प्रदशनकारियो की टोलिया केंद्र की ओर आ रही थी। सबके हाथो म झडे थे, जिनपर बोल्शेविक नारे लिखे थे। मेन्शेविक पत्र "नोवाया जीज्न" (नया जीवन) को भी यह मानना पडा "रविवार के प्रदशन ने सिद्ध कर दिया कि पेत्रोग्राद के मजदूरो और सैनिको म 'बोल्शेविज्म' को सपूण विजय प्राप्त हो गयी है।"

और इस बार भी पेत्रोग्राद के मेहनतकशो के प्रदशन के समथन मे मास्को, कीयेव, त्वेर, मीन्स्क, वोरोनेज, तोम्स्क तथा अ य अनेक शहरो मे क्रातिकारी कारवाइया हुई।

अस्थायी सरकार जनता का समथन प्राप्त करने मे असमथ थी। उसके सामने फिर गम्भीर सकट उपस्थित हुआ। हर चीज यही बता रही थी कि देश मे क्रातिकारी आदोलन तेजी से बढ रहा है और जनता जल्द से जल्द बुनियादी राजनीतिक तथा आर्थिक परिवतनो की माग कर रही है। ये तब्दीलिया सारी सत्ता सोवियतो के हाथा म सौप देने से ही लायी जा सकती थी।

लेकिन मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियो ने सोवियतो को अस्थायी सरकार का अधीन बनाये रखने की अपनी नीति जारी रखी। सोवियतो की पहली अखिल रूसी काग्रेस की बैठके जून भर होती रही। काग्रेस म एक हजार से अधिक मजदूरो, सैनिको और किसानो की सोवियतो के प्रतिनिधि थे। कोई चीज ऐसी नही थी, जो काग्रेस को सत्ता अपने हाथो म लेने से रोक सकती। मगर अधिकाश स्थानीय सोवियतो की तरह इस काग्रेस म भी मेन्शेविको और समाजवादी-क्रातिकारियो का बोलबाला था। काग्रेस ने सत्ता पर अधिकार करने का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया।

दोहरी सत्ता मे शक्तियो का जो अस्थायी सतुलन निहित था, वह अधिक दिन जारी नही रह सकता था। एक नया विस्फोट अवश्यभावी था।

वह १६-१७ जुलाई को हुआ, जब पेत्रोग्राद के मजदूर और सैनिक सडको पर यह माग करते निकल पडे कि सत्ता सोवियतो के हवाले की जाय। १७ जुलाई को ५ लाख से अधिक मजदूरो, सनिको और नौसैनिको ने प्रदशन म भाग लिया। मजदूरो के शातिपूण, सगठित जत्थे शहर के विभिन्न भागो से माच करते हुए ताव्रीदा प्रासाद की ओर बढे, जहा

मज़दूरो और किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियतो की अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति का कार्यालय था।

परतु सरकार शातिपूर्ण समाधान नही चाहती थी। उसने प्रदर्शन को बहाना बनाकर क्रातिकारी शक्तियो पर खुले आम और व्यापक हमला बोल दिया। मेन्शेविक और समाजवादी क्रातिकारी नेताओ ने मत्रियो का पूरा समर्थन किया।

अचानक गोलियो की आवाज से शातिपूर्ण वातावरण भग हो गया। युकरो* और कज्जाको ने प्रदर्शनकारियो पर गोलिया चलायी। शाम होते-होते सरकार ने प्रदर्शनकारियो के खिलाफ फौजी तोपखाना और बाकायदा सेना मैदान म उतार दी थी। शातिपूर्ण प्रदर्शन को दबा दिया गया।

प्रतिक्राति ने अपनी सफलता को सुदृढ करने मे बडी जल्दी की। पेत्रोग्राद की सडको पर घायलो की चीख-पुकार बद भी नही होने पायी थी कि प्रतिक्रातिकारी मार-काट शुरू हुई। मुख्य हमले का रुख बोल्शेविक पार्टी के खिलाफ था। केंद्रीय बोल्शेविक समाचारपत्र "प्राव्दा" के सपादकीय कार्यालय पर और इसी के साथ अनेक बोल्शेविक समितियो और ट्रेड यूनियनो के कार्यालयो पर भी छापा मारा गया। जिन सैनिक दस्तो ने जुलाई प्रदर्शन मे भाग लिया था, उन्हे भग कर दिया गया। सरकार ने मोर्चे पर मृत्यु-दड जारी किया।

सरकार ने २० जुलाई को अपनी एक विज्ञप्ति प्रकाशित की, जिसमे लेनिन तथा अन्य बोल्शेविको को गिरफ्तार करने और उनपर मुकदमा चलाने का आदेश था।

इसका दस्तावेज़ी सबूत मौजूद है कि मुकदमा चलाने से पहले ही लेनिन को मार देने का विचार था। पार्टी की केंद्रीय समिति के फैसले के अनुसार लेनिन छिप गये। वह पेत्रोग्राद से कुछ ही दूर राज्लीव रेलवे स्टेशन चले गये जहा वह एक घास काटनेवाले के भेस म एक महीने तक छिपे रहे, मगर पार्टी की केंद्रीय समिति से उनका गहरा सपर्क बराबर कायम था और वह क्राति की सैद्धातिक और व्यावहारिक समस्याओ पर बराबर काम करते रहे। बाद मे पतझड के करीब आने पर लेनिन फिनलैंड चले गये, जहा वह अक्तूबर तक रहे।

---

*फौजी अफसर स्कूलो के विद्यार्थी।

जुलाई का महीना क्रांति के विकास में मोड़ बिंदु था। दोहरी सत्ता का अन्त हो चुका था, सारी सत्ता अब प्रतिक्रांतिकारी अस्थायी सरकार के हाथों में सकेंद्रित हो चुकी थी। सत्ता सोवियतों के हाथों से निकल गयी।

लेनिन ने लिखा "जुलाई का मोड़ बिन्दु वस्तुनिष्ठ स्थिति में ठीक एक बुनियादी परिवर्तन था। राज्य सत्ता की अस्थायी स्थिति का अंत हो चुका था। निर्णायक बिंदु पर सत्ता प्रतिक्रांतिकारियों के हाथों में चली गयी।"*

"सारी सत्ता सोवियतों को दो!" का नारा बेमानी हो चुका था और कुछ दिनों के लिए इसे वापस ले लिया गया। लेकिन चंद सप्ताह बाद जब सोवियतों पर बोल्शेविकों का अधिकार हो गया, तो यह नारा फिर उपयुक्त हो गया। चूंकि सरकार ने जनता के विरुद्ध हिंसा का मार्ग अपनाया था और सारी सत्ता अपने हाथों में ले ली थी, इसलिए अब इसे शांतिपूर्ण उपाय से बेदखल करना संभव नहीं था। क्रांति की शांतिपूर्ण अवस्था समाप्त हो चुकी थी।

जुलाई की घटनाओं से जनता को महत्वपूर्ण सबक मिला। इन घटनाओं से पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि अस्थायी सरकार का वास्तविक वर्ग स्वरूप क्या है। एक शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर गोली चलाकर अस्थायी सरकार ने जनता के बहुत से भ्रमों को चकनाचूर कर दिया। समझौतापरस्तों—समाजवादी क्रांतिकारियों और मेन्शेविकों—के चेहरे लोगों के सामने बेनकाब हो गये। उन्होंने देख लिया कि ये दोनों पार्टियां प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों के पीछे चल रही हैं।

इन शक्तियों ने जुलाई में सफलता प्राप्त करने के बाद बीच रास्ते में नहीं रुकने का निश्चय किया। पूंजीपति समझ रहे थे कि अस्थायी सरकार (जिसका पुनःसगठन किया जा चुका था और जिसके अध्यक्ष अब केरेन्स्की थे) क्रांतिकारी आंदोलन की बाढ़ को रोकने में समर्थ नहीं हो सकती। खुल्लम-खुल्ला एक प्रतिक्रांतिकारी अधिनायकत्व कायम करने की योजना बनायी गयी। इस योजना को अमल में लाने के लिए एक व्यापक षड्यंत्र रचा गया, जिसके कर्णधार जनरल कोर्नीलोव थे।

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २५, पृष्ठ १६६

उन्हें जुलाई की घटनाओं के कुछ ही दिनों बाद सर्वोच्च सेना-नायक नियुक्त किया गया था। उन्होंने सत्य द्रोह की सीधी तैयारियां शुरू कर दी। षड्यन्त्र की योजना इस प्रकार थी चुने हुए प्रतिक्रांतिकारी सैनिक दस्ते पत्रोग्राद पर चढ़ाई करें और इसी के साथ शहर में विद्रोह का झंडा बलंद करें और उसपर अधिकार जमा लेने के बाद क्रांतिकारी शक्तियों को निर्ममतापूर्वक कुचल डालें। इस षड्यन्त्र में कोर्नीलोव तथा उसके जनरलों के साथ कैडेट पार्टी के नेता भी थे। इनके अतिरिक्त संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस के राजनयिक और सैनिक प्रतिनिधियों ने भी षडयन्त्र में प्रत्यक्ष भाग लिया।

७ सितंबर को कोर्नीलोव ने जनरल क्रीमोव की सवार कोर को पत्रोग्राद की ओर बढ़ने का आदेश दिया। तीन दिनों में कोर्नीलोव का रिसाला राजधानी के निकट पहुंचने लगा।

खतरा बड़ा था। लेकिन इन दिनों में जनता का क्रांतिकारी जोश नयी शक्ति मुस्तैदी और पहलकदमी के साथ व्यक्त हुआ। यह बात स्पष्ट हो गयी कि प्रतिक्रांति को जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है। लोगों ने इस दुःसाहस का दृढ़तापूर्वक तथा निश्चयात्मक रूप से विरोध किया और नये खतरे का सामना करने साहसपूर्वक उठ खड़े हुए।

बोल्शेविक पार्टी ने कोर्नीलोव के खिलाफ जन संघर्ष का नेतृत्व किया। लाल गार्ड के लगभग ६०००० लोग, सैनिक और नौसैनिक पेत्रोग्राद की रक्षा करने मैदान में उतर आये। बोल्शेविकों के आग्रह पर रेलवे मजदूरों ने रेल की पटरियां उखाड़ ली रेलवे लाइनों पर खाली डिब्बों की कतार खड़ी कर दी और इंजन निकालकर ले गये। क्रीमोव की सेना को आगे बढ़ने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। पत्रोग्राद के विरुद्ध जो कज्जाक रेजिमेंटें बढ़ रही थी, उनमें बोल्शेविक प्रचारक काम करने लगे। जब कज्जाकों को कोर्नीलोव के षड्यन्त्र का हाल मालूम हुआ, तो उन्होंने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया और अपने अफसरों को गिरफ्तार कर लिया।

यह बगावत एक सप्ताह से भी कम समय में बिलकुल कुचल दी गयी। पत्रोग्राद पर चढ़ाई करनेवाली सेना जो देखने में बहुत शक्तिशाली लगती थी तितर बितर हो गई। जनरल क्रीमोव के पास कोई सेना ही नहीं रह गयी थी और जब उन्हें गिरफ्तार होने का खतरा हुआ, तो उन्हें

आत्महत्या के सिवा और कोई रास्ता नही दिखाई दिया। उनके पिस्तौल की गोली मानो क्राति और प्रतिक्राति के सघर्ष के इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय का अतिम वाक्य थी। कार्नीलोव की बगावत से प्रतिक्राति सपूर्ण विजय की दिशा मे एक निर्णायक कदम उठाना चाहती थी। लेकिन स्थिति ने कोई और ही रुख अपनाया। बगावत कुचल दी गयी और क्राति ने एक कदम आगे बढाया।

सशस्त्र विद्रोह

नयी स्थितियो मे क्राति क्या मार्ग अपनाये? सत्ता के लिए सर्वहारा वर्ग के सघर्ष का रूप क्या हो?

जुलाई की घटनाओ के बाद जब दोहरी सत्ता का अत हो गया और राज्य सत्ता पूरी तरह पूजीपतियो के हाथो मे सकेद्रित हो गयी, तो कम्युनिस्ट पार्टी को इन्ही सवालो का सामना करना पडा।

लेनिन ने स्थिति का गहन और सर्वतोमुखी अध्ययन किया और पार्टी की नयी कार्यनीति की व्याख्या और पुष्टि अपनी इन कृतियो मे की, जैसे "राजनीतिक परिस्थिति", "तीन सकट", "नारो के विषय मे", "क्राति के सबक" इत्यादि।

रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी (बोल्शेविक) की छठी काग्रेस अर्द्ध-कानूनी ढग से २६ जुलाई से ३ अगस्त तक हुई। काग्रेस ने देश की परिस्थिति का स्पष्ट मूल्याकन किया और नयी स्थिति मे पार्टी के कार्य निर्धारित किये।

क्राति निरतर विकसित होती और आगे बढती रही। काग्रेस ने घोषणा की कि पूजीपतियो का आतक क्राति की लहरो को रोक नही सकता। "इतिहास की अतर्लीन शक्तिया सक्रिय है। जनसाधारण के अतराल मे असतोष की आग सुलगने लगी है। किसानो को जमीन चाहिए, मजदूरो को रोटी और दोनो को शाति।"

समाजवादी क्राति की विजय अनिवार्य थी। लेकिन "शातिपूर्ण विकास और सोवियतो को सत्ता का कष्टरहित हस्तातरण असभव हो गया है।" साम्राज्यवादी पूजीपतियो के प्रभुत्व का बलपूर्वक अत आवश्यक हो गया है। अब पार्टी का बुनियादी रास्ता सशस्त्र विद्रोह का था। लेकिन इसका

यह मतलव नही कि पार्टी न तुरत विद्राह का नारा दिया। कुछ जरूरी शर्तें अभी भी पूरी नहीं हुई थी। विद्राह की तैयारी करना, उस निकट लाना, और जब उसका समय आये, ता पूरी तरह सशस्त्र रहना-यह थी पार्टी की नीति।

अप्रल सम्मलन से छठी कांग्रेस तक पार्टी की सदस्य सख्या तिगुना हो गयी थी। अब २४०००० कम्युनिस्ट कांग्रेस के फैसला से लस, नई मुस्तदी से जनता म काम करन, क्राति की विजय का पक्का करने क लिए आगे बढे।

पतझड निकट आ रहा था। फरवरी क्राति का आधा साल बीत चुका था। लेकिन जनता की स्थिति दिनादिन खराब होती जा रही थी। आर्थिक अव्यवस्था बढ रही थी। औद्योगिक उत्पादन राज कम हो रहा था। १९१७ क पतझड मे रूबल की क्रय शक्ति १९१३ की तुलना म दस गुना कम थी। देश म नोटा की बाढ आ गयी थी, जिनका कोई मूल्य नही था। परिवहन का प्रबंध टूट रहा था। अकाल सर पर मडला रहा था। शहरा और मजदूरा की बस्तियाा मे खाद्यान्न की दुकानो पर लोगा की लबी कतारे घटा खडी रहती। रोटी, शक्कर तथा अन्य खाद्य सामग्री का अभाव था। बेरोजगारी बढ रही थी।

युद्ध अब भी जारी था। सैनिक पूछा करते "क्या अगला जाडा भी हम खदकों म बिताना पडेगा?"

सरकार ने युद्ध को जारी रखने के लिए ब्रिटेन, फास और सयुक्त राज्य अमरीका से नये कर्ज हासिल किये। इन कर्जों ने देश को जजीरा मे और जकड दिया और उसके सामने प्रभुसत्ता के बिल्कुल छिन जान का खतरा उपस्थित कर दिया।

पूजीपतियो का प्रभुत्व देश को राष्ट्रीय विनाश की ओर लिये जा रहा था। इस बेमतलब युद्ध के जारी रहने से देश के मूल साधन बर्बाद हो रह थे और अर्थतत्र अस्तव्यस्त हो रहा था। देश वैदेशिक पूजी की गुलामी के चगुल म फसता जा रहा था। ये सारी बाते आनेवाली तबाही की ओर सकेत कर रही थी।

१९१७ के पतझड तक रूस म क्रातिकारी सकट परिपक्व हो चुका था। रेलवे मजदूरा की आम हडताल, उराल मे एक लाख मजदूरा की हडताल, इवानावा-कीनेश्मा क्षेत्र के तीन लाख सूती मिल मजदूरा की

हडताल, मुद्रको की हडताल, मास्को के चमकारा की हडताल, बाकू के तेल मजदूरो, दोनेत्स बेसिन के कायला मजदूरा तथा और भी कितने ही मजदूरो की हडताले हो रही थी। हडताला का आदोलन आनेवाले तूफान की शक्तिशाली लहरा की भाति फैलते-फैलते अभूतपूव हद तक बढ गया, जिससे पूजीवादी प्रभुत्व की नीव हिल गई।

हडताला के दौरान मे मजदूर अधिकाधिक दृढतापूवक तथा ज्यादा सगठित रूप से कारखाना के प्रबध म हस्तक्षेप करने लगे और माल उत्पादन तथा वितरण पर अपना नियन्त्रण स्थापित करने लगे। किसान आदोलन ने जमीदारा के विरुद्ध एक व्यापक जन आदोलन का रूप धारण कर लिया और चूकि सरकार वतमान भूमि प्रथा का समथन और रक्षा भी करती थी, इसलिए यह आदोलन सरकार के खिलाफ भी था। सच तो यह है कि देश मे व्यापक किसान विद्रोह की आग फैलती जा रही थी। इस तथ्य का बडा राजनीतिक महत्व था। एक किसान देश म किसान विद्रोह! यही एक तथ्य राष्ट्रीय सकट का काफी सबूत था। इस दौरान मे सेना मे बोल्शेविक प्रभाव बडी तेजी से फैल रहा था। बिना अतिशयोक्ति प्रतिदिन हजारो सनिक पार्टी मे शामिल हो रहे थे और पूरी की पूरी रेजिमेटें और बटालियन बोल्शेविक प्रस्ताव स्वीकार कर रहे थे। बाल्टिक नौसेना के सभी नौसैनिक तथा रिजव रेजिमेटा के सैनिक बोल्शेविको के साथ थे और यही हाल उत्तरी और पश्चिमी मोर्चो के अधिकाश सैनिका का था। और ये मोर्चे चूकि देश के केद्र से निकट थे, इसलिए इनका महत्व बहुत था। इसके अलावा देश मे गैरिजनो का बहुत बडा हिस्सा भी पार्टी का समथक था।

इन नयी स्थितियो म सोवियतो के जीवन मे एक नये युग का प्रादुर्भाव हुआ, जिसमे उनके कायकलाप और दक्षता मे बडी वृद्धि हुई। सोवियते भी बोल्शेविको का साथ देने लगी।

सावियतो के इतिहास मे और क्राति के इतिहास मे १३ सितबर का दिन एक स्मरणीय दिन ह। मजदूरो और सैनिको के प्रतिनिधियो की पेत्रोग्राद सोवियत ने सत्ता के सवाल पर एक बोल्शेविक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। पुराने अध्यक्षमडल ने इस्तीफा दिया और पेत्रोग्राद सोवियत का नेतृत्व बोल्शेविको के हाथ मे आ गया। १८ सितबर को मास्को सोवियत ने भी एक बोल्शेविक प्रस्ताव स्वीकार किया। एक के बाद एक

अन्य शहरो (कीयेव खारकोव, काजान, उफा, मौस्क, ताशकंद ब्रियान्स्क, समारा तथा उराल और दोनेत्स बेसिन के शहरा) से इसी की रिपोर्टें आने लगी। पूरे रूस मे २५० से अधिक सोवियता ने "सारी सत्ता सोवियता को दो!" के बोल्शेविक नारे का समथन किया। सोवियता का बोल्शेविकीकरण हो गया। जैसा कि लेनिन पहले ही से समझ रहे थे अधिकाश सोवियत जनता की मनस्थिति का प्रतिनिधित्व करते हुए मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारियो की नीतिया को अस्वीकार कर चुकी थी और उन्होने बोल्शेविक नीतियों का अगीकार कर लिया।

"सारी सत्ता सोवियता को दो!" का नारा एक बार फिर अमली सवाल बन गया और अब इसका अथ था पूजीवादी शासन को बलपूर्वक समाप्त करने का आह्वान।

१९१७ के पतझड तक समाजवादी क्राति की विजय की तमाम जरूरी शर्तें पूरी हो चुकी थी। जनता ने दढतापूवक और निश्चित रूप से बोल्शेविको के नेतृत्व मे स्वय अपनी सत्ता स्थापित करने के सघष के लिए अपनी तत्परता प्रकट कर दी थी।

मेन्शेविको और समाजवादी क्रातिकारिया के अदर अव्यवस्था निरतर बढती जा रही थी। दोना पार्टियो मे फूट पड गयी और उनमे अलग अलग दल और गुट बन गये। समाजवादी क्रातिकारी पार्टी के वामपक्ष ने घोषणा की कि वह एक अलग पार्टी है।

इसके अतिरिक्त प्रतिक्राति के उग्रवादी तत्वा की माग थी कि जनता के खिलाफ एकमुश्त हमला बोल दिया जाये। क्राति को कमजोर करने के लिए पूजीपतिया ने रीगा जमन सेनाओ के हवाले कर दिया। खुले आम राष्ट्र से गद्दारी का माग अपनाकर वे अब पेत्रोग्राद को भी उनके हवाले करने की तैयारी कर रहे थे।

पूजीपति वग जमनी से अलग शाति सधि सम्पन्न करने का विचार कर रहा था ताकि अपनी पूरी शक्ति क्रातिकारी जनता के विरुद्ध लगा सके। अत म पूजीपति वग एक बार फिर कार्नीलाव ढग की कारवाई करने की तैयारी करने लगा। उसने "तूफानी दस्ता" का सगठन तक कर लिया, जितने सनिक दस्ते विश्वसनीय जान पडे, उन्हें एकत्रित किया तथा क्रांतिकारी दस्ता का भग करने की पूरी चेष्टा की। इन सब बातो

की वजह से विद्रोह की तैयारी मे अब कोई देर नही की जा सकती थी। देर करने का नतीजा यह होता कि पूजीपति अपनी शक्तिया को एकत्रित कर लेते और अपनी कारवाई शुरू कर देते, जिससे क्राति को असफल होना पडता।

निर्णायक घडी आ पहुची। सशस्त्र विद्रोह अब तात्कालिक व्यावहारिक काय के रूप मे सामने आ गया।

२३ (१०) अक्तूबर को कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति की एक गुप्त बठक पत्रोग्राद मे हुई। जुलाई के बाद यह पहली बठक थी, जिसमे लेनिन, जो फिनलैंड से गैर-कानूनी तौर पर हाल ही म लौटे थे, उपस्थित थे। उनके अलावा इस बैठक मे केंद्रीय समिति के ग्यारह सदस्या ने भाग लिया (वे थे बूबनाव, दृजेर्जीस्की, जिनोव्येव, कामेनेव, कोल्लान्ताई, लामोव, स्वेदलोव, सोकोल्निकोव, स्तालिन, त्रोत्स्की और उरीत्स्की)।

लेनिन की रिपोट सुनने के बाद समिति न एक प्रस्ताव स्वीकार किया, जिसमे कहा गया था "अत यह समझते हुए कि सशस्त्र विद्रोह अनिवाय है और यह कि उसके लिए समय पूणत परिपक्व हो चुका है, कद्रीय समिति सभी पार्टी सगठना को आदेश देती है कि इसी के अनुकूल निदिष्ट हा और इसी दृष्टिकोण से सभी व्यावहारिक सवाला पर विचार-विमश करे और निश्चय करे "*

केंद्रीय समिति के सभी सदस्यो ने, सिवाय जिनोव्येव और कामेनेव के, इस प्रस्ताव के समथन मे वोट दिया। उन्हाने कहा कि क्राति की विजय के लिए आवश्यक स्थितिया अभी परिपक्व नही हुई हैं, कि खतरा नही मोल लेना चाहिए और कि प्रतिरक्षात्मक, अवसर की प्रतीक्षा करने की नीति पर चलना चाहिए।

केंद्रीय समिति का फैसला हा जाने के बाद विद्रोह की तैयारी पूरे जोरो के साथ शुरू हो गयी। लेनिन ने क्राति की एक योजना बनायी, जिसमे क्रातिकारी सैनिको, नौसैनिका तथा सशस्त्र मजदूरा की सयुक्त कारवाई का प्रयाजन था।

विद्रोह के लिए क्रातिकारी शक्तिया को सगठित करने के उद्देश्य से

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २६, पृष्ठ १६२

पत्रोग्राद सोवियत ने एक क्रांतिकारी सैनिक समिति गठित की तथा अन्य कई शहरों में इसी प्रकार की समितियां गठित की गयीं। बाल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में इन समितियों की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी विद्रोह की तैयारी करनी थी।

कारखानों में लाल गार्ड दस्तों का सगठन जारी रहा। पत्रोग्राद के कारखाने सशस्त्र कैंपों के समान लगते थे। बहुतेरे लाल गार्ड जब मशीनों पर काम करते, तब भी उनकी राइफलें उनके पास होतीं। शस्त्रों की मरम्मत और सफाई कारखानों में होती और उनके प्रांगणों में सैनिक कवायद करायी जाती।

अक्तूबर में पत्रोग्राद में लाल गार्ड के प्रशिक्षित तथा सशस्त्र २३,००० लोग मौजूद थे। पत्रोग्राद के लाल गार्ड कम समय के भीतर ५०,००० योद्धाओं को मैदान में उतार सकते थे। ६२ शहरों में कोई दो लाख मजदूर लाल गार्ड की पंक्तियों में भर्ती हो गये थे।

बाल्टिक नौसेना के जलपोतों पर भी विद्रोह की जबरदस्त तैयारियां हो रही थीं। स्थायी लड़ाकू प्लैटून बड़े जलपोतों पर तथा तट स्थित नौसेना में सगठित किये गये, जो ठीक समय पर विद्रोह में भाग लेने के लिए तैयार थे।

पेत्रोग्राद के गैरिजन की क्रांतिकारी रेजिमेंटें भी कारवाई के लिए तैयार थीं। कम्पनी और रेजिमेंट समितियों के प्रतिनिधियों ने अस्थायी सरकार के विरुद्ध कदम उठाने की अपनी दृढ़ प्रतिज्ञा घोषित की।

२४ अक्तूबर को उत्तरी प्रदेश की सोवियतों की एक कांग्रेस पेत्रोग्राद में आयोजित की गयी और उसने निर्णायक कदम उठाने के लिए जनता की तत्परता की पुष्टि की। अक्तूबर-नवम्बर में देश भर में सोवियतों की गुबेर्नियाई कांग्रेसें होती रहीं। एक अच्छे बैरोमीटर की भांति उन्होंने यह बता दिया कि जनता अस्थायी सरकार के विरुद्ध एक निर्णायक सघर्ष के लिए तयार है।

इस दौरान में कामेनेव और ज़िनोवयेव ने एक ऐसी हरकत की, जो पार्टी के इतिहास में अभूतपूर्व थी। उन्होंने खुली गद्दारी की।

३१ अक्तूबर को मेन्शेविक वामपक्षी अखबार 'नोवाया जीज्न" में कामेनेव का एक समालाप छपा। उन्होंने सशस्त्र विद्रोह के सबंध में

बोल्शेविक पार्टी के निश्चय से अपने और जिनोव्येव के मतभेद की घोषणा की। यह खुली ग़द्दारी थी और इससे विद्रोह की योजनाओं को बडा धक्का लगा। जो लोग पार्टी नेतृत्व का अग थे, उन्होंने ग़ैर पार्टी अखबार मे पार्टी के गुप्त फैसलो का विरोध किया। लेनिन ने आक्रोश के साथ लिखा "कामेनेव और जिनोव्येव ने विश्वासघात करके सशस्त्र विद्रोह के सवाल पर अपनी पार्टी की केद्रीय समिति के फसले की सूचना रोद्ज्याको और केरेंस्की को दे दी है "*

कामेनेव और जिनोव्येव के रवैये से जाहिर था कि उन्हे क्राति और मजदूर वग की शक्ति पर विश्वास नही था। मगर लेनिन और पार्टी का जनता से अटूट सबध था। वे पूजी के प्रभुत्व का तख्ता उलटने के लिए जनता की मुस्तैदी और तत्परता को देख रहे थे। पार्टी उन दो आदमियो के विश्वासघात और घबराहट के बावजूद, विजय मे दृढ विश्वास के साथ विद्रोह की तैयारी करती रही।

लेनिन ने बाल्शेविक पार्टी सदस्यो के नाम एक पत्र मे लिखा

"समय कठिन है। काम मुश्किल है। विश्वासघात सगीन है।

"इसके बावजूद काम पूरा होकर रहेगा। मजदूर अपनी पक्तियो को सुदृढ करेंगे, किसानो का विद्रोह और मोर्चे पर सैनिको की असीम व्याकुलता रग लाकर रहेगी! हम अपने को एकताबद्ध करे – सर्वहारा की विजय अवश्यभावी है!"**

विद्रोह की व्यावहारिक तयारियो, जो पोद्वोइस्की, अतोनोव ओव्सेयेको, चुदनोव्स्की इत्यादि के प्रत्यक्ष नेतृत्व मे हो रही थी, बहुत महत्वपूण थी। इनका पूरा काम लेनिन के निदेशन और नियत्रण म हो रहा था।

२ नवम्बर के बाद क्रातिकारी सैनिक समिति ने क्रातिकारी सैनिक दस्तो का नेतृत्व करने के लिए कमिसारो की नियुक्ति शुरू की। तीन दिनो के अदर लगभग ३०० व्यक्तियो को क्रातिकारी सैनिक समिति ने कमिसार नियुक्त किया। कमिसारो की स्वीकृति के बिना किसी आदेश का पालन नही करना था। इस प्रकार एक बहुत बडी शक्ति – पेत्राग्राद गैरिज़न, जिसमे लगभग ढाई लाख सैनिक होगे, – क्रातिकारी हेडक्वाटर के अधीन काम करने लगी।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड ३४, पृष्ठ ४२५
**वही, खड २६, पृष्ठ १८८

धावा करने की पूरी तैयारी हो चुकी थी। इसमें बस ग्रव चन्द घं
की देर थी।

ग्रस्थायी सरकार ने पहलकदमी करने के ख्याल से क्रांतिकारी शक्तियों पर हमला करने का फैसला किया। ६ नवम्बर (२४ अक्तूबर) की रात में सरकार ने आदेश दिया कि सभी सैनिक स्कूलों को कारवाई करने के लिए तैयार किया जाय। पत्रोग्राद सैनिक क्षेत्र के कमांडर पाल्कोव्निकोव ने आदेश जारी किया कि कोई सैनिक दस्ता क्षेत्रीय हेडक्वाटर की आज्ञा के बिना अपनी बारिकों से बाहर नहीं जाय। शिशिर प्रासाद के चारों ओर सैनिक गार्ड को और मजबूत किया गया। सरकार का निवास यहीं था। युकरों के दस्ते नेवा नदी के पास भेजे गये, ताकि उसपर के पुलों को उठा दें।* ऐसा करने से मजदूरों की बस्तियों और शहर के केंद्र में कोई संबंध नहीं रह जाता।

ज़ाहिर था कि खुले मुकाबले का समय आ गया था। अब एक मिनट भी देर नहीं की जा सकती थी। प्रतिक्रांति ने हमला शुरू कर दिया था। उसको परास्त करना और निर्णायक हमले का कदम उठाना आवश्यक हो गया था।

प्रातःकाल बोल्शेविक पार्टी की केंद्रीय तथा पेत्रोग्राद समितियों की बैठक हुईं। वे इस बात पर सहमत थीं कि "बिना किसी देरी के, क्रांति की समस्त संगठित शक्ति के साथ हमला करना ज़रूरी है।"

उस विशाल शहर के सभी हिस्सों में क्रांति की शक्तियों ने कारवाई शुरू की। सशस्त्र विद्रोह के लिए लेनिन की योजना को निष्पादित किया जाने लगा था।

कारखानों में आदेश भेज दिया गया कि लाल गार्ड एकत्रित हों। कुछ दस्ते स्मोल्नी** की ओर चले। औरों ने विभिन्न कार्यालयों पर कब्ज़ा करना तथा पुलों और रेलवे स्टेशनों की ओर बढ़ना शुरू किया।

---

*नेवा नदी पत्रोग्राद के बीच से बहती है। बड़े जलपोतों को आने जाने देने के लिए इसके पुलों को उठाया जा सकता है।

**स्मोल्नी—ग्रभिजात परिवारों की लड़कियों के भूतपूर्व शिक्षालय (स्मोल्नी इंस्टीटयूट) की इमारत। अक्तूबर के सशस्त्र विद्रोह के दिनों में यहीं क्रांतिकारी शक्तियों का हेडक्वाटर था।
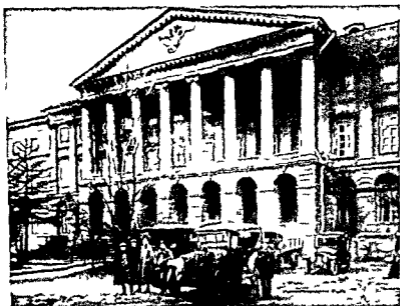
अक्तूबर, १९१७ मे स्मोलनी, पत्नाग्राद

स्मालनी मे पोदवोइस्की, अन्तोनोव ओव्सेयेको और चुद्नाव्स्की पत्रा ग्राद के एक नक्शे पर झुके हुए क्रातिकारी दस्ता की प्रगति का अदाज़ा और तसदीक करते। क्रातिकारी सैनिक पार्टी केंद्र के सदस्या–बूबनोव, द्ज़ेर्जोंस्की, स्वेदलोव, स्तालिन और उरीत्स्की–द्वारा कमाडरो, कमिसारा और पार्टी सगठना के नेताओ को सैनिक आदेश जारी किय जा रहे थे।

लेनिन, जो उस समय तक गुप्त मकान मे आदेश भेजा करत थे नतृत्व के पूर ढाचे का केंद्र विदु थे।

६ नवम्बर को दिन भर क्रातिकारी दस्ता न अपनी कारवाइया सफलतापूवक जारी रखी और पत्रोग्राद के अनेक महत्वपूण स्थाना और कार्यालयो पर अधिकार कर लिया। लेकिन केंद्रीय समिति और क्रातिकारी सनिक समिति के कुछ सदस्या न ढुलमुलपन और अनिश्चितता का परिचय दिया। इनमे पेत्रोग्राद सोवियत के अध्यक्ष त्रोत्स्की भी थ, जिन्हाने ६ नवबर को घापणा की कि अस्थायी सरकार की गिरफ्तारी का अभी काई

सवाल नही है। उसी दिन शाम को लेनिन ने केंद्रीय समिति के सदस्यों के नाम एक पत्र लिखकर बताया कि सरकार पर अत्यंत ... ढग और तेज गति से हमला करना तत्काल जरूरी है। "हम किसी भी कीमत पर भी, आज ही शाम को, आज ही रात को, पहले युकरा का नि शस्त्र करके (अगर वे प्रतिरोध करे, तो उन्हे परास्त करके) इत्यादि सरकार को गिरफ्तार कर लेना चाहिए।

"हमे प्रतीक्षा नही करनी है। ऐसा किया, तो हो सकता है कि सब कुछ हाथ से निकल जाये!!

"सरकार की धज्जिया उड रही है। उसे किसी भी कीमत पर मौत के मुह मे धकेल देना चाहिए!"*

उस दिन कुछ शाम हो जाने पर लेनिन अपने गुप्त मकान मे निकलकर स्मोल्नी की ओर चले। पेत्रोग्राद के उन खतरनाक रास्ता से होकर, जहा शत्रु के सैनिको का पहरा था, लेनिन क्रातिकारी शक्तियो के सदर मुकाम पर पहुच गये, ताकि स्वय विद्रोह की बागडोर सभाले। घटनाओ की गति और तेज हो गयी। क्रातिकारी दस्ता ने दोगुनी मुस्तैदी से काम लेकर नगर के सबसे महत्वपूर्ण स्थाना पर अधिकार कर लिया। रात मे लाल गार्ड तथा क्रातिकारी सैनिको और नौसैनिको ने रेलवे स्टेशनो, राजकीय बैंक, टेलीफोन केंद्र, बिजलीघर तथा पेत्रोग्राद तारघर पर कब्जा कर लिया।

इतिहास उस रात की अजीब तसवीर को हमेशा जुगाय रखेगा जब विश्व की प्रथम समाजवादी क्राति के भाग्य का निर्णय हो रहा था एक के बाद एक लाल गार्ड के सदस्यो से लदी लारिया पेत्रोग्राद के कुहासे से भरी सडको पर गुजरती रहती। चौराहो पर क्रातिकारी चौकियो के अलाव के शात मद रात के अधियारे को चीर जाते। कभी कभी रात के सन्नाटे म गोली चलने की आवाज सुनाई देती और हर म कोई सैनिक आदेश गूज उठता। और फिर कभी एक ओर से और कभी दूसरी ओर से जब क्राति के योद्धा पुरानी दुनिया पर अतिम प्रहार करने बढते, तो "वार्शाव्याका' या "इटरनेशनल" की धुनें रात के सन्नाटे को भग करती।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २६ पृष्ठ २०३-२०४

नेवा नदी की धारा के उलटे रुख क्रूजर "अव्रोरा" धीरे-धीरे बढ रहा था। साढे तीन बजे भोर मे "अव्रोरा" ने शिशिर प्रासाद से कुछ ही दूर पर लंगर डाला।

सैकडा आदमी स्मोलनी की जगमगाती, प्रकाशमान इमारत के सामने खडे थे। प्रागन मे और सामने चौक पर बख्तरबन्द गाडिया खडी थी, जिनकी मोटरे चालू थी। अलावा के हलके प्रकाश म आनेवाला के पासो की जाच की जा रही थी। द्वार पर खुली मशीनगनें खडी थी। हरकारे निरतर नगर के विभिन्न इलाका म भेजे जा रहे थे। सारी रात रेजिमेटा और फैक्टरिया के प्रतिनिधि आदेश लेने स्मोलनी आ रहे थे। लाल गार्ड के नये दस्त आते और तुरत उन्ह कही तैनात करके अपना काम सभालने भेज दिया जाता।

क्रूजर "अव्रोरा"
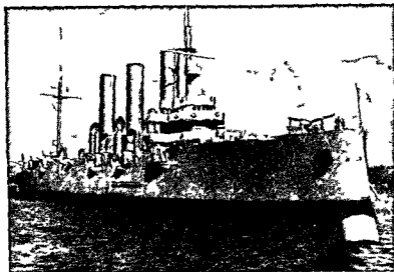
७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) की भीगी, ठडी सुबह आ पहुची। इस समय तक विद्रोह की सफलता निश्चित हो चुकी थी। लगभग सारा पेत्रोग्राद क्रातिकारियो के हाथो म था। अस्थायी सरकार का नियत्रण केवल शिशिर प्रासाद, जनरल स्टाफ की इमारत और मरियीन्स्की प्रासाद

तक सीमित था। अस्थायी सरकार के प्रधान मंत्री केरेंस्की पेत्रोग्राद से भाग चुके थे। उन्हें आशा थी कि कुछ प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को जुटाकर पत्रोग्राद पर धावा करने भेजेंगे।

तीसरे पहर २ बजकर ३५ मिनट पर पत्रोग्राद सोवियत की एक विशेष बैठक आयोजित की गयी। लेनिन भाषणमंच पर आये। और ये शब्द हवा में गूंज उठे "साथियो, मजदूर किसान क्रांति, जिसकी जरूरत पर बाल्शेविकों ने हमेशा जोर दिया, पूरी हो चुकी है।"*

लेकिन अस्थायी सरकार अभी तक शिशिर प्रासाद में मौजूद थी। पांच बजे तक क्रांतिकारी शक्तियों ने प्रासाद को चारों ओर से घेर लिया। क्रांति की शक्तियां कहीं ज्यादा थीं। खून खराबा न होने पाये, इसके लिए क्रांतिकारी सैनिक समिति ने दो बार—६ बजे और फिर ८ बजे शाम को—अस्थायी सरकार से हथियार डाल देने का आग्रह किया। मगर कोई जवाब नहीं मिला। तब क्रांतिकारी सैनिक समिति ने आक्रमण

शिशिर प्रासाद पर धावा

---
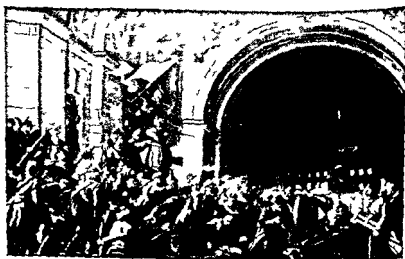
*व्ला० इ० लेनिन संग्रहीत रचनाएं, खंड २६, पृष्ठ २०८

करने का आदेश दिया। आक्रमण के सकेतक के तौर पर
हवा म तोप दागी।

रात को दस बजे क्रूजर पर आदेश गूजा "फायर।"
और शिशिर प्रासाद पर धावा शुरू हुआ। कुछ देर दोना ओर
चली और तब धावा बोलनवाला का तूफान शिशिर प्रासाद
बढा। धावा करनेवाले लोग प्रासाद के अदर घुसे और तब कदम
एक एक कमरा, एक एक हाल करके उन्होंने प्रासाद पर अधिक
लिया। एक कमरे म अस्थायी सरकार के सदस्य डरे और सहमे

जब सनिको, नौसैनिका और लाल गाड का दस्ता उस कम
दरवाजे पर पहुचा, तो एक युवक ने रास्ता रोककर कहा
सरकार है।'

एक नौसनिक न उत्तर दिया "और यह क्राति है।"

प्रात काल २ बजकर १० मिनट पर ८ नवबर को मत्रिया
गिरफ्तार कर लिया गया। रूस की आखिरी पूजीवादी सरकार का अ
हो गया।

पेत्रोग्राद मे सशस्त्र विद्रोह तेजी से और दक्षता के साथ पूरा हो
गया। लगभग कोई खून खराबा नही हुआ। दोना ओर से सब मिलाकर
कुछ ही दजन लोग मारे गय या जख्मी हुए होगे।

रूस मे सोवियत सत्ता की घोषणा

७ नवम्बर (२५ अक्तूबर) को रात के १० बजकर ४० मिनट
पर, जब विद्रोह का अतिम कदम उठाया जा चुका था यानी शिशिर
प्रासाद पर धावा बोल दिया गया था मजदूरा और सैनिका के प्रतिनि-
धियो की सोवियता की दूसरी अखिल रूसी काग्रेस का अधिवेशन स्मोलनी
म शुरू हुआ। कुल ६५० प्रतिनिधिया म कोई चार सौ बाल्शेविक रहे
होगे। वामपक्षी समाजवादी क्रातिकारी गुट के प्रतिनिधिया की सख्या अच्छी
खासी थी। मगर मेन्शेविको और दक्षिणपथी समाजवादी क्रातिकारिया का
वजन सोवियता मे बहुत घट गया था। काग्रेस म उनके केवल ७०-८०
प्रतिनिधि थे। इन लोगा ने काग्रेस की कारवाई मे खडन डालने की चेष्टा

की। मगर अधिकाश प्रतिनिधियो ने उनका समर्थन नही किया। इसपर समाजवादी क्रातिकारी और मेंशेविक नेता (५१ व्यक्ति) अधिवेशन से उठकर चले गये।

कांग्रेस ने अपना काम जारी रखा। आधी रात बीत चुकी था, जब एक प्रमुख बोल्शेविक नेता लुनाचार्स्की मच पर आये। उनके हाथ में लेनिन के हस्तलिखित कुछ कागजात थे। लूनाचार्स्की ने दस्तावेज को पढ़ना शुरू किया "मजदूरो, सैनिको और किसानो के नाम।" हाल में सन्नाटा छा गया।

"मजदूरो, सैनिको और किसानो के विशाल बहुमत की इच्छा के बल पर, पेत्रोग्राद मे मजदूरो और गैरिजन के विजयी विद्रोह के बल पर, यह कांग्रेस सत्ता अपने हाथो मे लेती है।

"अस्थायी सरकार का तख्ता उलट दिया गया।"*

इन सीधे सादे गभीर शब्दो का स्वागत तालियो की तूफानी गडगडाहट और हर्षध्वनि के साथ किया गया।

"कांग्रेस आज्ञप्ति जारी करती है स्थानीय स्तर पर सारी सत्ता मजदूरो सैनिको और किसानो के प्रतिनिधियो द्वारा ग्रहण कर ली जायेगी"** दस्तावेज का पढना जारी रहा। प्रात काल ५ बजे इस अपील पर मतदान हुआ। एक बार फिर हर्षध्वनि के साथ समर्थन में हाथ उठ गये। केवल दो आदमियो ने विरोध मे वोट दिया।

इस प्रकार रूस मे सोवियत सत्ता की घोषणा कर दी गयी। इस प्रकार सशस्त्र विद्रोह की विजय, समाजवादी क्राति की विजय की पुष्टि की गयी। इस प्रकार आज्ञप्ति द्वारा पूजीवादी प्रभुत्व का समाप्त किया गया और ससार के प्रथम मजदूर किसान राज्य का निर्माण सपन्न हुआ।

उसी दिन ८ नवम्बर को ६ बजे रात म कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन शुरू हुआ।

अक्तूबर क्राति शाति का नारा लगाती विजय की मजिल तक पहुची थी। जनगण की सर्वसम्मत माग थी कि "युद्ध का अन्त हो!" बोल्शेविक

---

*सोवियत सत्ता की आज्ञप्तिया, रूसी सस्करण मास्को १६५७ खंड १ पृष्ठ ८

**वही, पृष्ठ १२

लेनिन सोवियत सत्ता की विजय की घोषणा कर रहे हैं

ने माग की थी कि जनवादी शाति की जाये—ऐसी शाति, जिसमे न विदेशी इलाको पर अधिकार किया जाये, न एक देश दूसरे को गुलाम बनाये और न हरजाना वसूल किया जाये। इसलिए सोवियत सत्ता की प्रथम आज्ञप्ति "शाति के बारे मे आज्ञप्ति" थी।

लेनिन ने स्वय काग्रेस के मच से शाति के बारे मे आज्ञप्ति पढकर सुनायी। यह मानवजाति के इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ सिद्ध हुई।

सोवियत रूस ने आह्वान किया कि "तमाम युद्धरत जनगण और उनकी सरकारे एक न्यायपूर्ण, जनवादी शाति के लिए तत्काल वार्तालाप शुरू करे।"*

आज्ञप्ति मे आगे चलकर कहा गया था "सरकार के विचार मे मानवता के विरुद्ध सबसे बडा अपराध इस युद्ध का इस सवाल पर जारी रखना है कि शक्तिशाली तथा समृद्ध राष्ट्रो मे उनके द्वारा पराजित कमजोर राष्ट्रो का बटवारा कैसे किया जाये ..."**

---

*वही, पृष्ठ ८

**वही, पृष्ठ १२

सोवियत सरकार ने गंभीरतापूर्वक सभी युद्धरत शक्तियों के साथ न्यायपूर्ण तथा जनवादी आधार पर शांति संधि पर हस्ताक्षर करने की दृढ़ प्रतिज्ञा घोषित की।

पहले की तमाम गुप्त संधियों को बिना शर्त और तत्काल प्रकाश घोषित कर दिया गया। इस तरह पुराने रूस की साम्राज्यवादी नीति का निर्णायक और अटल रूप से अंत कर दिया गया। सोवियत सत्ता ने अपने अस्तित्व के प्रथम दिवस से ही राष्ट्रों के बीच शांति और मैत्री का झंडा बुलंद कर दिया था और जंग के विरुद्ध संघर्ष शुरू कर दिया था। आज्ञप्ति ने विभिन्न सामाजिक आर्थिक व्यवस्थाओंवाले राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का विचार प्रस्तुत किया, जो सोवियत वैदेशिक नीति का एक मौलिक सिद्धांत बन गया।

शांति के बारे में आज्ञप्ति को कांग्रेस ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया। लेनिन ने भूमि के बारे में आज्ञप्ति प्रस्तुत की। संक्षिप्त, सीधे-सादे तथा युक्तिपूर्ण शब्दों में पहला मद यह था "भूमि पर ज़मींदारों का स्वामित्व बिना मुआवज़ा फ़ौरन मंसूख किया जाता है।"* सभी ज़मींदारियाँ, सभी जागीरें, मठों और गिरजाघरों की ज़मीनें अपने सभी मवेशी और खेती के औज़ारों, खेतघरों और अन्य सभी संबंधित चीज़ों सहित वोलोस्त** की भूमि समितियों तथा किसान प्रतिनिधियों की उयेज़्द*** सोवियतों के बंदोबस्त में दे दी गयीं। भूमि के निजी स्वामित्व का अधिकार मंसूख कर दिया गया। सारी भूमि का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया।

व्यवहार में इन तमाम बातों का क्या मतलब था?

किसानों को भूमि की विशाल मात्रा—१५ करोड़ देस्यातीना ज़मीन—मिली (एक देस्यातीना = २.७ एकड़)। उन्हें लगान की एक भारी रकम—७० करोड़ स्वर्ण रूबल सालाना—की अदायगी के भार से मुक्ति मिल गयी और बकाया लगान अदा करने से छुटकारा मिल गया, जो ३००

---

*वही, पृष्ठ १५।

**पुराने रूस में कई गांवों की एक इकाई का नाम जो तहसील के बराबर होती थी, वोलोस्त था।

*** पुराने रूस में प्रान्त (गुबेर्निया) के एक ज़िले का नाम उयेज़्द था।

सोवियत सरकार ने गंभीरतापूर्वक सभी युद्धरत शक्तियों के साथ न्यायपूर्ण तथा जनवादी आधार पर शांति संधि पर हस्ताक्षर करने का दृढ़ प्रतिज्ञा घोषित की।

पहले की तमाम गुप्त संधियों को बिना शर्त और तत्काल अवैध घोषित कर दिया गया। इस तरह पुराने रूस की साम्राज्यवादी नीति का निर्णायक और अटल रूप से अंत कर दिया गया। सोवियत सत्ता ने अपने अस्तित्व के प्रथम दिवस से ही राष्ट्रों के बीच शांति और मैत्री का झंडा बुलंद कर दिया था और जंग के विरुद्ध संघर्ष शुरू कर दिया था। आज्ञप्ति ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओंवाले राज्यों के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का विचार प्रस्तुत किया, जो सोवियत वैदेशिक नीति का एक मौलिक सिद्धांत बन गया।

शांति के बारे में आज्ञप्ति को कांग्रेस ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया। लेनिन ने भूमि के बारे में आज्ञप्ति प्रस्तुत की। संक्षिप्त, सीधे-सादे तथा युक्तिपूर्ण शब्दों में पहला मद यह था "भूमि पर ज़मींदारों का स्वामित्व बिना मुआवज़ा फ़ौरन मंसूख किया जाता है।"* सभी ज़मींदारियां, सभी जागीरें, मठों और गिरजाघरों की ज़मीनें अपने सभी मवेशी और खेती के औज़ारों, खेतघरों और अन्य सभी संबंधित चीज़ों सहित वोलोस्त** की भूमि समितियों तथा किसान प्रतिनिधियों की उयेज़्द*** सोवियतों के बंदोबस्त में दे दी गयीं। भूमि के निजी स्वामित्व का अधिकार मंसूख कर दिया गया। सारी भूमि का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया।

व्यवहार में इन तमाम बातों का क्या मतलब था?

किसानों को भूमि की विशाल मात्रा – १५ करोड़ देस्यातीना ज़मीन – मिली (एक देस्यातीना = २.७ एकड़)। उन्हें लगान की एक भारी रकम – ७० करोड़ स्वर्ण रूबल सालाना – की अदायगी के भार से मुक्ति मिल गयी और बक़ाया लगान अदा करने से छुटकारा मिल गया, जो ३००

---

*वही, पृष्ठ १५।

**पुराने रूस में कई गांवों की एक इकाई का नाम जो तहसील के बराबर होती थी, वोलोस्त था।

***पुराने रूस में प्रान्त (गुबेर्निया) के एक ज़िले का नाम उयेज़्द था।

कर ली थी। वाकू मे स्थिति पेचीदा और कठिन थी, फिर भी सत्ता सोवियता को हस्तातरित करने म वोल्शेविक सफल हुए। मध्य एशिया के वडे शहरो – अश्काबाद, समरकन्द और फरगाना – मे भी मेहनतकशो ने अपेक्षाकृत आसानी से विजय प्राप्त कर ली।

लेकिन अनेक स्थानो मे प्रतिक्राति ने भयकर प्रतिरोध किया और सशस्त्र सघष की स्थिति पैदा कर दी। ताशकन्द के मजदूर और सैनिक सफेद गाड के खिलाफ चार दिना तक तुर्किस्तान की राजधानी मे लडते रहे। इकूत्स्क मे सोवियत सत्ता की नौ दिन की लडाई मे लाल गाड के ३०० लोग मारे गये।

मास्को मे भयकर सशस्त्र सघष हुआ। वहा प्रतिक्राति के पास २०,००० सशस्त्र और प्रशिक्षित जवानो की सेना मौजूद थी, जिनमे अफसर, सनिक स्कूलो के युकर और एसाइन तथा पूजीवादी परिवारा के विद्यार्थिया के फौजी दस्ते थे।

मास्को मे प्रतिक्राति ने सघष के कठोरतम तरीके अपनाने से भी सकोच नही किया। इसने जन हत्या भी की। क्रेमलिन पर १० नवम्बर की सुबह मे कब्जा कर लेने के बाद युकरो ने क्रातिकारी ५६वी रेजिमेट के निहत्थे सैनिको को शस्त्रागार के सामने खडा कर दिया। अचानक एक आदेश के शब्द सुनाई दिये और मशीनगन से गोलिया चलने लगी। सैनिका की पाति की पाति ढेर हो गयी।

बीस लाख की आबादी के उस वडे शहर के विभिन्न भागो म भयकर लडाइया हुइ। छ दिन की लडाई के बाद प्रतिक्राति का सिर कुचला जा सका और मास्को मे सोवियत सत्ता की स्थापना हुई।

ओरेनबुग गुबेनिया मे भी प्रतिक्राति के विरुद्ध सघष बहुत वडे पमाने पर हुआ। ओरेनबूग कज्जाका के अतामान (मुखिया) दूतोव ने सोवियत सत्ता के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। सोवियत सरकार ने पेत्रोग्राद, मास्को और वोल्गा क्षेत्र से दूतोव के खिलाफ नौसनिका और लाल गाड के दस्ते रवाना किय। उराल के वाल्शेविको ने पार्टी के सभी सदस्यो को, जो हथियार उठा सकते थे, सशस्त्र किया। सोवियत दस्ते ऐसे समय ओरेनबूग पहुचे, जब भारी हिमपात हो रहा था और सडक बफ से ढकी हुई थी। जनवरी, १९१८ मे अनेक भयकर लडाइया के बाद दूतोव की सेनाओ को शिकस्त हुई।

राजनीतिक स्थिति समान नहीं थी और वर्गीय शक्तियां का आपसी संबंध देश के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न ढंग से विकसित हुआ था। यह आशा नहीं की जा सकती थी कि पेत्रोग्राद की विजय के बाद जनगण के हाथों में सत्ता अपने आप और तुरंत चली आयगी। देश में हर जगह सोवियत सत्ता की स्थापना एक जटिल प्रक्रिया थी। सोवियत सत्ता की स्थापना के लिए संघर्ष कार्केशिया में, साइबेरिया में, मध्य एशिया में, वोल्गा क्षेत्र तथा अन्य इलाकों में जिस प्रकार विकसित हुआ, उसकी अपनी अलग अलग विशेषताएं थीं।

मगर जटिलताओं और कठिनाइयों के बावजूद देश के सभी भागों में सोवियतों को असाधारण तेजी से विजय प्राप्त हुई। सोवियत सत्ता की विजय अभियान देश के एक कोने से दूसरे कोने तक द्रुत गति से बढ़ा। चार महीने से कम समय में—मार्च १९१८ तक—मजदूरों और किसानों की सत्ता देश की पश्चिमी सीमाओं से साइबेरिया और सुदूर पूर्व तक हर जगह स्थापित हो चुकी थी।

इसका कारण था कि समाजवादी क्रांति के लिए परिस्थिति सारे देश में परिपक्व हो चुकी थी। आम जनता के दिल में हर जगह यह बात घर कर चुकी थी कि पूंजी के प्रभुत्व को समाप्त करना आवश्यक है।

बहुत सी जगहों में सत्ता शांतिपूर्ण ढंग से सोवियतों के हाथ में आ गयी। प्रतिक्रांति को यह एहसास था कि जनता की शक्तियां बहुत भारी पड़ रही हैं और इसलिए उसके सामने संघर्ष के बिना सत्ता हवाले कर देने के सिवा और कोई रास्ता ही नहीं रह गया है। अधिकांश बड़े औद्योगिक केंद्रों में तथा मध्य रूस, वोल्गा क्षेत्र, उराल और साइबेरिया के मझोले और छोटे शहरों में अधिकांशत यही हालत हुई।

अनेक गैर रूसी इलाकों में भी मजदूरों, सैनिकों और किसानों की सोवियतों की सत्ता के संघर्ष में विजय बिना सशस्त्र संघर्ष के प्राप्त हो गयी।

एस्तोनिया की श्रमजीवी जनता ने एस्तोनियाई क्रांतिकारी सैनिक समिति के आह्वान पर अपने देश में हर जगह सोवियत सत्ता की स्थापना कर ली। लाटविया के उस हिस्से में, जहां जर्मन सेना का कब्जा नहीं हुआ था प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां सोवियतों की विजय को रोक नहीं सकीं। ७ नवम्बर की शाम को मीन्स्क सोवियत ने बेलोरूस में सत्ता स्थापित

कर ली थी। बाकू मे स्थिति पेचीदा और कठिन थी, फिर भी सत्ता सोवियतो को हस्तातरित करने म बोल्शेविक सफल हुए। मध्य एशिया के बडे शहरो—अश्काबाद, समरकन्द और फरगाना—म भी मेहनतकशो ने अपेक्षाकृत आसानी से विजय प्राप्त कर ली।

लेकिन अनेक स्थानो म प्रतिक्राति ने भयकर प्रतिरोध किया और सशस्त्र सघप की स्थिति पैदा कर दी। ताशकन्द के मजदूर और सैनिक सफेद गाड के खिलाफ चार दिनो तक तुर्किस्तान की राजधानी मे लडते रहे। इर्कूत्स्क मे सोवियत सत्ता की नौ दिन की लडाई मे लाल गाड के ३०० लाग मारे गये।

मास्को मे भयकर सशस्त्र सघप हुआ। वहा प्रतिक्राति के पास २०,००० सशस्त्र और प्रशिक्षित जवाना की सेना मौजूद थी, जिनम अफसर, सैनिक स्कूलो के युकर और एसाइन तथा पूजीवादी परिवारा के विद्यार्थियो के फौजी दस्ते थे।

मास्को म प्रतिक्राति ने सघप के कठोरतम तरीके अपनाने से भी सकोच नही किया। इसने जन हत्या भी की। क्रेमलिन पर १० नवम्बर की सुवह मे कब्जा कर लेने के वाद युकरा ने क्रातिकारी ५६वी रेजिमेट के निहत्थे सनिको को शस्त्रागार के सामने खडा कर दिया। अचानक एक आदेश के शब्द सुनाई दिये और मशीनगन से गोलिया चलने लगी। सैनिका की पाति की पाति ढेर हो गयी।

बीस लाख की आबादी के उस बडे शहर के विभिन्न भागा म भयकर लडाइया हुई। छ दिन की लडाई के बाद प्रतिक्राति का सिर कुचला जा सका और मास्को मे सोवियत सत्ता की स्थापना हुई।

ओरेनबुग गुबेनिया मे भी प्रतिक्राति क विरुद्ध सघप बहुत बडे पमान पर हुआ। ओरेनबूग कज्जाका के अतामान (मुखिया) दूतोव ने सोवियत सत्ता के खिलाफ युद्ध की घोपणा कर दी। सोवियत सरकार ने पत्ताग्राद, मास्को और वोल्गा क्षेत्र से दूतोव के खिलाफ नौसैनिका और लाल गाड के दस्ते रवाना किय। उराल के बोल्शेविका ने पार्टी के सभी सदस्या को, जा हथियार उठा सकत थे, सशस्त्र किया। सोवियत दस्ते ऐसे समय ओरेनबूग पहुचे, जब भारी हिमपात हो रहा था और सडक बफ से ढकी हुई थी। जनवरी, १६१८ म अनेक भयकर लडाइया के बाद दूतोव की सेनाओ को शिकस्त हुई।

दोन नदी के तटवर्ती इलाके म प्रतिक्राति इसस भी अधिक खतरनाक थी। दोन कज्जाका के अतामान कलदिन न सावियत सरकार का मानन से इनकार कर दिया और मास्को और पत्राग्राद पर चढाई की तयारी करन लगा। उसके साथ बहुत सी प्रतिक्रातिकारी शक्तिया इकट्ठा हो गयी। एटेंट* के प्रतिनिधिया ने जल्दी-जल्दी कलेदिन को निधि और हथियार मुहैया किये। कलेदिन की सनाओ न रास्ताव ग्रान-दान, तगानराग और अजाव पर अधिकार कर लेने के बाद दोनेत्स बेसिन पर आक्रमण कर दिया। लेकिन यहा भी शत्रुग्रा की सनाए क्राति के विजय अभियान का आगे बढने से रोक नही सकी।

लेनिन के आदेश पर लाल गाड और क्रातिकारी सनिक दस्त दक्षिण भेजे गय। इनके साथ दोनत्स बेसिन के खान मजदूर तथा तगानराग और रोस्ताव आन-दोन के श्रमिक भी सघप म शामिल हा गये। गरीब कज्जाक और दोन के श्रमजीवी किसान भी अतामान के विद्रोह को कुचलने के लिए सशस्त्र मदान म उतर आये। जनवरी, १६१८ म मोर्चे पर कज्जाका की एक काग्रेस हुई, जिसम पोद्तल्काव और क्रिवाश्लीकाव के नतत्व म एक दोन कज्जाक क्रातिकारी सैनिक समिति स्थापित की गयी। कलेदिन और उसके समथका की हालत बिगड गई और अत मे कलेदिन ने अपने आपको गोली मार दी।

उक्रइना के मजदूरो और किसाना ने प्रतिक्राति के खिलाफ़ घोर सघप किया। अनेक औद्योगिक केंद्रा जैसे लुगान्स्क, ऐकातेरीनोस्लाव, माकयव्का और खेर्सोन मे सोवियतो को शातिपूण ढग से सत्ता प्राप्त हो गयी। दिसम्बर म खारकोव म सोवियत सत्ता सुसगठित कर ली गई। लेकिन उक्रइना के अनेक क्षेत्रो म सोवियत सत्ता की विजय के रास्ते म उक्रइनी पूजीवादी राष्ट्रीयतावादियो द्वारा सगीन बाधाए उपस्थित की गयी, जिन्होने फरवरी क्राति के बाद स्वय अपना प्रतिक्राति सगठन—केंद्रीय रादा—स्थापित कर लिया था। जब ११ नवम्बर को कीयेव के श्रमजीवियो

---

*एटेंट ब्रिटेन, फ्रास और जारशाही रूस का साम्राज्यवादी गठबधन गुट था, जिसकी स्थापना १६०७ म हुई थी। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान यह शब्द सयुक्त राज्य अमरीका और जापान समेत उन सभी देशा के लिए इस्तमाल किया जाने लगा, जो जमनी और उसके समथका के विरुद्ध लड रहे थे।

ने "श्रर्सेनाल" (शस्त्रागार) कारखाने के मजदूरो के नतृत्व म विद्रोह कर दिया और तीन दिना की लडाई के बाद अस्थायी सरकार की सनाओ का परास्त कर दिया, ता रादा अपनी सेना शहर म ले आयी और सबसे महत्वपूण स्थानो पर अधिकार कर लिया। रादा ने पूर उक्रइना म अपनो प्रभुसत्ता घापित कर दी और रूस की सावियत सरकार को मानने से इनकार कर दिया।

कद्रीय रादा के प्रतिक्रातिवादी स्वरूप तथा प्रतिनिया की सबसे दुष्ट शक्तियो के साथ उसके गठजाड पर आजादी, जनवाद तथा उक्रइनी स्वाधीनता के उसक नारो का परदा पडा हुआ था। अपनी कमजोरी का अदाजा करके और यह देखकर कि उस जनता का समथन प्राप्त नही है, रादा ने एटेंट सरकारा से सहायता की अपील की। इन सरकारा ने कोई मदद उठा नही रखी।

उक्रइना की श्रमजीवी जनता ने अपने आपका रादा के विरुद्ध सघप म झोक दिया। २४ दिसबर को खारकाव मे उक्रइना की सावियतो की पहली कांग्रेस आयोजित हुई। दूसरे दिन—२५ दिसबर को—उक्रइना म सोवियत सत्ता की घाषणा कर दी गयी।

उक्रइना की सोवियत सरकार का सगठन किया गया। इसम सर्गेयेव (अर्त्योम), बोश, कात्सुबीन्स्की, जतान्स्की, स्क्रिपनिक आदि शामिल थे। सावियत सरकार के आह्वान पर समूचे उक्रइना की श्रमजीवी जनता केद्रीय रादा के विरुद्ध सशस्त्र सघप म जुट गयी।

कीयव म, जहा क्रातिकारी मजदूरा ने फिर विद्रोह का झडा उठा लिया था, कई दिन लडाई हाती रही। विद्रोही मजदूरा की सहायता के लिए सोवियत सनिक दस्त कीयेव की ओर बढे। फरवरी के शुरू म कीयेव आजाद हो गया और सोवियत सत्ता लगभग पूर उक्रइना म स्थापित हो गयी।

इस प्रकार माच, १९१८ तक रूस के लगभग पूर इलाके म सावियता की विजय हो गयी थी। पूजीवादी सत्ता वही शेष रह गयी थी, जहा जमन और आस्ट्रियाई सनाओ का कब्जा था (जैस लिथुआनिया, लाटविया का भाग, पश्चिमी बेलारूस का भाग तथा पश्चिमी उक्रइना), जार्जिया और आर्मीनिया म तथा दश के कुछ दूरवर्ती क्षेत्रा म।

नवजात जनतन्त्र के सामने एक अत्यंत आवश्यक और सबसे फ़ौरी काम युद्ध से निकलना था। मगर यह काम एकपक्षीय तौर पर नही किया जा सकता था। इसके लिए एक शाति सधि पर हस्ताक्षर करना जरूरी था। सोवियतो की दूसरी काग्रेस ने एक आज्ञप्ति स्वीकार करके तमाम युद्धरत देशो के सामने शाति का सुझाव रखा था। यह विश्वव्यापी जनवादी शांति के लिए इसके अनवरत अभियान की शुरूआत थी।

नवबर, १९१७ के प्रारभ से सोवियत सरकार ने जर्मनी के विरुद्ध लडनवाले देशो—फ्रास, ब्रिटेन, इटली, सयुक्त राज्य अमरीका तथा अन्य सरकारा को बार-बार सरकारी प्रस्ताव भेजे कि शाति की वार्ता शुरू की जाये। हर बार सोवियत सरकार न यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह अपनी प्रस्तावित शर्तों को अतिम नही मानती, बल्कि अन्य देशो द्वारा प्रस्तावित शर्तों पर बातचीत करने को तैयार है।

एटेंट सरकारा ने इनमे से किसी अपील पर कोई ध्यान नही दिया। ऐसी स्थिति मे सोवियत सरकार के सामने इसके सिवा और कोई रास्ता नही रह गया कि वह स्वय जर्मनी और उसके मित्र राष्ट्रो से बातचीत शुरू करे। पहले (दिसबर १९१७ मे) एक अस्थायी युद्ध विराम किया गया। सोवियत प्रतिनिधियो के जोर देने पर युद्ध विराम समझौते म एक दफा यह भी जोडी गयी थी कि पूर्वी मोर्चे की सेनाए पश्चिमी मोर्चे पर नही भेजी जायेंगी।

२२ दिसबर को बेलोरूस के छोटे से शहर ब्रेस्त लितोव्स्क म एक शाति सम्मलन शुरू हुआ। इस सम्मेलन म क़ैसर जर्मनी जनवादी और न्यायपूर्ण शाति सधि करने के इरादे स नही आया था। जर्मन साम्राज्यवादियो की माग थी कि पोलैंड, लिथुआनिया लाटविया का एक भाग और बेलोरूस का एक भाग जर्मनी के हवाले कर दिया जाय। यह बेशर्मी क साथ अन्य देशो का हडपन की नीति थी। लेकिन सोवियत सरकार को इसपर राजी होना पडा। इन अत्यत कडी शर्तों पर भी शाति सधि कर लेन स सोवियत जनतन्त्र को सास लेन की मुहलत मिली, जिसकी बड़ी जरूरत थी। लोग युद्ध स तग आकर शाति की कामना कर रहे थ। दरअसल पुरानी जारशाही की सेना तितर बितर हो चुकी थी और उसने

लडने का दम नही रह गया था। लाल सेना का अभी निर्माण हो ही रहा था। वह सख्या म कम और पूरी तरह प्रशिक्षित नही थी। इसलिए लेनिन बहुत जोर दे रहे थे कि जितनी जल्दी सभव हो शाति सधि कर ली जाये। लेकिन इस सवाल पर पार्टी नेतृत्व म मतभेद था। बुखारिन के नेतृत्व म "वामपक्षी कम्युनिस्टो" का एक गुट युद्ध को जारी रखना चाहता था। *उनका कहना था कि यह जमन साम्राज्यवाद का तख्ता उलटने के* लिए एक "क्रातिकारी" युद्ध होगा। त्रात्स्की शाति सधि करने के खिलाफ तक पेश कर रहे थे। उनका फामूला था "न शाति, न युद्ध।"

मगर लेनिन ने स्वेदलोव, सेर्गेयेव (अर्त्योम), स्तालिन और केद्रीय समिति के अन्य सदस्यो की सहायता से जग को समाप्त करने पर जोर दिया। उन्हाने बताया कि बुखारिन और त्रोत्स्की की लाइन महत्वाकाक्षी और बुनियादी तौर पर गलत और अत्यत हानिकारक है, जिसका परिणाम सोवियत राज्य की बर्बादी के सिवा और कुछ नही हो सकता।

इस दौरान म जमन साम्राज्यवादिया ने अपना दबाव और बढाया। ९ फरवरी, १९१८ को जमनी के विदेश मत्री ने कसर विल्हेल्म के आदेशानुसार माग की कि सोवियत रूस तुरत जमन शर्तों को स्वीकार करे। त्रोत्स्की ने, जो ब्रेस्त वार्तालाप म सोवियत प्रतिनिधिमडल के अध्यक्ष थे, लेनिन के प्रत्यक्ष आदेश का उल्लघन करके शाति सधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। जमन साम्राज्यवादी यही चाहते थे। जमन सर्वोच्च कमान ने तुरत हमले की तयारी शुरू कर दी, जिसका उद्देश्य सोवियत सत्ता का अत करना था। १८ फरवरी को रीगा की खाडी स लेकर डैन्यूब के मुहाने तक पूरे मोर्चे पर लडाई शुरू हो गयी। ७ लाख जमन और आस्ट्रियाई सैनिक रूसी मोर्चे की ओर बढ़ने लगे। पुरानी बची-खुची जारशाही सेना दुश्मन की बेहतर सेना के सामन ठहर नही सकी और पीछे हटने लगी। जमन डिवीजन पेत्रोग्राद, मास्को और कीयेव की ओर बढे।

कम्युनिस्ट पार्टी ने जमन हमलावरो का परास्त करने के लिए जनगण का आह्वान किया। २२ फरवरी को मास्को, पेत्रोग्राद, त्वर, यरोस्लाव्ल खारकोव तथा अन्य शहरा के मजदूरा क इलाक़ा के निवासिया को खतरे के भापू और साइरेना की आवाज न जगाया। मजदूर अपन

कारखाना की ओर भागे। वहा दीवारा पर अखबार चिपक हुए थे और उनपर मोटे अक्षरा म शीषक था "समाजवादी पितृभूमि खतर म है!" यह लेनिन द्वारा लिखित सोवियत सरकार की ग्रानप्ति थी।

'सभी देशा क पूजीपतिया द्वारा सौप गय काम को पूरा करन हुए जमन सनाशाही रूसी तथा उक्रइनी मजदूरो तथा किसानो का गला घोट देना चाहती है, जमीन जमींदारा को, मिल तथा फक्टरिया (धनी) को और सत्ता राजतत्र को वापस दिला देना चाहती है"।*

हर जगह मिला और कारखाना म सक्षिप्त सभाय की गयी। इन तमाम सभाश्रा म एक ही नारा गूज उठा "सब कुछ क्राति की रक्षा के लिए! हथियार सभालो!" एक के बाद एक मजदूर आगे आते और लाल सेना के स्वयसेवका म अपना नाम लिखाते और वहा से अपने निश्चित स्थान की ग्रार चल देते। पत्रोग्राद म कोई ४०,००० स्वयसेवकों न लाल सेना म अपना नाम लिखाया, मास्को मे ६०,००० से अधिक स्वयसेवको ने।

फरवरी की ठड म नवजात लाल सेना के दस्ता न पेत्रोग्राद की दूरवर्ती सीमा पर जमन डिवीजनो को रोक दिया।

जमन हस्तक्षेपकारिया के विरुद्ध इस लडाई मे लाल सना को युद्ध का प्रथम अनुभव हुआ। तबसे २३ फरवरी को हर साल सोवियत सेना दिवस मनाया जाता है।

इस दौरान म लेनिन ने 'वामपक्षी कम्युनिस्टा" तथा त्रोत्स्कीवादियो क प्रतिरोध का पराजित करक जमनो के साथ शाति सधि के लिए जोर लगाया। जन कमिसार परिपद ने जमन सरकार के नाम वेतार का सदेश भेजा, जिसम ऐसी सधि पर हस्ताक्षर करने का प्रस्ताव किया गया था। जमन जनरल अब यह समझ गय थे कि वे जसा कि समझ रहे थे, एक हमले म सोवियत सरकार का तख्ता नही उलटा जा सकता। उन्होने देखा कि लाल सना क पीछे करोडो मजदूरा और किसाना की शक्ति थी। व सोवियत सत्ता की रक्षा क लिए सब कुछ निछावर करने को तैयार थे। इसलिए जमन सरकार शाति सधि करने पर राजी हो गयी, मगर

---

*व्ला० इ० लनिन, सग्रहीत रचनाए, चौथा रूसी सस्करण, खड २७, पृष्ठ १३७

अब उसकी शर्तें पहले से भी कडी थी। सोवियत जनतन्त्र को पूरा बाल्टिक क्षेत्र, उक्रइना और बेलोरूस छोडना पडा और भारी हरजाना देना पडा। ये बहुत ही कडी और अपमानजनक शर्तें थी। मगर कोई और रास्ता नही था। सोवियत सत्ता को बचाने के लिए किसी कीमत पर भी शाति सधि करनी ही थी।

३ माच, १९१८ को सोवियत प्रतिनिधिमडल ने* जमनी और उसके मित्र-राष्ट्रो के साथ शाति सधि पर हस्ताक्षर किये, जिसे ब्रेस्त शाति सधि कहते हैं। १४ माच को "वामपक्षी कम्युनिस्टो" और वामपक्षी समाजवादी-क्रातिकारियो के विरोध के बावजूद यह सधि सोवियता की चौथी अखिल रूसी काग्रेस** द्वारा अनुमादित हो गयी।

यह सधि बेहद कडी थी। मगर यह सधि करके सोवियत जनगण ने सबसे महत्वपूण और बुनियादी चीज को बचा लिया और वह थी सोवियत सत्ता। जमन सगीनो के बल पर सोवियतो का खात्मा करने का प्रयास रोक दिया गया।

सोवियत जनतन्त्र को सास लेने का अवसर मिल गया। समस्या अब यह थी कि निराशा को राह न दी जाये, बल्कि जमकर सोवियत सत्ता को सुदृढ बनाया जाये, एक नये समाज का निर्माण किया जाये, एक शक्तिशाली सेना सगठित की जाय, जो शत्रु के किसी भी नये आक्रमण का मुहतोड जवाब दे सके। लेनिन न ब्रेस्त शाति की कटुता के बारे म जनता को साहसपूवक और स्पष्ट रूप से सब कुछ सही-सही बताया, पर साथ ही अतिम विजय मे दृढ विश्वास प्रकट किया। उन्हाने पार्टी को प्रेरित किया कि जब बाधाए सामने आयें और पीछे हटना पडे, ता हिम्मत नही हारनी चाहिए और उन्हाने तमाम श्रमजीविया से अपील की कि पूरा जोर लगा दें। " सब चीजा म सबसे अनुचित हताश हाना

---

*नये सोवियत प्रतिनिधिमडल मे थे चिचेरिन, कराखान, पेत्राव्स्की तथा सोकोल्निकोव।

**सोवियता की चौथी अखिल रूसी काग्रेस का अधिवेशन मास्को म हुआ। इस बीच मे सावियत सरकार मास्को आ गयी थी, जो मार्च, १९१८ मे देश की राजधानी बन गया।

है" उन्होंने लिखा, 'शांति की शर्तें असहनीय रूप से कटु हैं। फिर भी इतिहास सीधे रास्ते पर आगे रहेगा

"हम संगठन, संगठन और फिर संगठन के लिए काम करें। तब कठिनाइयों के बावजूद भविष्य हमारा है।"*

प्रथम

क्रांतिकारी तब्दीलियाँ

"समाजवादी क्रांति के इस प्रथम दिवस पर शुभकामनाए," लेनिन ने इन्ही शब्दो से ८ नवम्बर, १९१७ की सुबह अपने साथियो का अभिनंदन किया। समाजवादी क्रांति विजयी हो चुकी थी। अब समय समाजवादी निर्माण काय शुरू करने का था—पुराने ढाचे को तोड फेंकना और नया ढाचा बनाना था।

पहला काम था राज्य प्रशासन को सगठित करना, एक नये राजकीय कार्ययत्र का निर्माण करना। पुरानी राज्य मशीनरी, जो सदियो में तैयार हुई थी, शोषको द्वारा उनके प्रभुत्व को हमेशा कायम रखने के लिए बनाई गयी थी। यह स्पष्ट था कि ऐसा राजकीय कार्ययत्र क्रांति की सेवा नही कर सकता था। यह जरूरी था, जैसा कि लेनिन ने लिखा, कि उस मशीन को 'तोड दिया जाय" और उसे ' चूर चूर कर दिया जाय"** और उसके स्थान पर एक नये राज्य का निर्माण किया जाये—एक ऐसे राज्य का, जो श्रमजीवी जनता का हो और श्रमजीवी जनता के हितो की रक्षा करने के लिए हो।

यह एक अत्यत जटिल काय था। इसको राज्य निर्माण में जनता की व्यापक शिरकत के जरिये, उसकी सजनात्मकता और पहलकदमी के उपयोग के जरिये ही पूरा किया जा सकता था।

जनता की क्रांतिकारी सृजनात्मकता द्वारा सोवियतो का निर्माण हुआ था जो अब क्रांति की बदौलत केंद्र और प्रदेशो में राज्य सत्ता का साधन बन गयी। १९१८ के वसत तक ज्यादातर मजदूरो और सैनिको के प्रति

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए खड २७, पृष्ठ ३२
**वही, खड २५, पृष्ठ ३८८

निधियो की सोवियतो तथा किसानो के प्रतिनिधियो की सोवियतो का देश भर म विलयन हो चुका था। पूजीवादी स्थानीय सरकारी सस्थाए–नगर दूमा और ज़ेम्स्त्वो–हर जगह पदच्युत की जा रही थी। प्रदेशो म सोवियत ही सत्ता का एकमात्र साधन रह गयी।

सोवियते सच्चे सोवियत जनवाद का प्रतीक थी। उनका जनता से अटूट सबध था। अखिल रूसी केंद्रीय कायकारिणी समिति की आज्ञप्ति "वापस बुलाने का अधिकार" द्वारा, जिसपर लेनिन के २१ नवम्बर, १९१७ को हस्ताक्षर किये, श्रमजीवी जनता को यह अधिकार मिल गया कि वह उन प्रतिनिधियो को, जो जनता के विश्वासपात्र सिद्ध न हो, कभी भी वापस बुला सकती है, और यह व्यवस्था की गयी कि आधे से अधिक वोटरो की माग पर सोवियतो का फिर से चुनाव किया जायेगा।

ग्राम और नगर सोवियतो के चुनाव नियमित रूप से हुआ करते थे, जैसे प्रदेशो, गुबेनियाओ, उयेज्दो तथा वोलोस्तो की सोवियतो की काग्रेसे हुआ करती थी।

क्राति के फौरन बाद सत्ता के केंद्रीय निकाय–अखिल रूसी केंद्रीय कायकारिणी समिति तथा जन कमिसार परिषद–पेत्रोग्राद म काम करने लगे थे। मगर इन निकायो के पास कोई बना बनाया कायतत्र नही था। हर चीज नये सिरे से शुरू करनी थी।

जन कमिसार जब पुराने मत्रालयो मे आये तो उन्हे वहा के अधिकारियो, खासकर चोटी के अधिकारियो के शत्रुतापूर्ण रुख का सामना करना पडा, जिन्होने आदेशो का पालन करने से इनकार कर दिया और काम से जी चुराया या गडबड की।

पूजीपतियो को विश्वास था कि सवहारा वग के पास अपने प्रशिक्षित कायकर्ता नही है इसलिए वह पुराने कायतत्र और अनुभवी अधिकारियो के बिना व्यवस्था प्रबध नही कर सकेगा। क्राति के शत्रुओ का विचार था कि देश का कामकाज ठप्प पड जायेगा और मेहनतकशो को बाध्य होकर सत्ता त्यागना पडेगा।

तोड-फोड करनेवाले विश्वास के साथ कदम उठा रहे थे और उन्हे पूजीपतियो से भौतिक समथन मिल रहा था। प्रतिक्रातिकारियो ने राजकीय बैंक से ४ करोड रूबल निकाल लिये, जिससे वे अपने साथ सहयोग

करनेवाले अधिकारियो को वेतन अग्रिम कर चुकते थे। बैंक तथा उद्योगपतियो ने उदाहरण के लिए रियाजुशास्त्री ने तोड़फोड़ करनेवाला का वित्तीय सहायता करने के लिए भारी रकम प्रदान कर दी। प्रतिक्रांतिकारियो ने अधिकारियो को कई महीने की तनख्वाह पहले ही अदा कर दी सिर्फ इस शर्त पर और वह यह कि वे घर पर बैठे रहें और काम करने से इनकार करें।

लेकिन प्रतिक्रांतिकारियो की आशाएं खाक मे मिल गयी। देश के नये स्वामी – फैक्टरियो, युद्धपोतो तथा सैनिक दस्तो के सीधे-सादे लोग – राज्य की नौका खेने के लिए स्वय आगे आये।

बाल्टिक बेडे के नौसैनिक और पत्रोग्राद "सीमन्स शुक्ट" कारखाने के कामगार वैदेशिक मामलो की जन कमिसारियत मे काम करने आये। "पुतीलोव" कारखाने के मजदूरो ने अंदरूनी मामलो की जन कमिसारियत के कार्ययंत्र का निर्माण करने मे भाग लिया। और यातायात की जन कमिसारियत का सगठन पत्रोग्राद और मास्को के रेलवे मजदूरो की सक्रिय सहायता से किया गया।

मजदूरो और नौसैनिको को बडी कठिनाइया हुई, क्योकि उन्हे इस काम की जानकारी और अनुभव नही था। मगर उनका क्रांतिकारी उत्साह, दृढ प्रतिज्ञा और पार्टी कार्यभार को पूरा करने की जोरदार इच्छा ने इस कठिन काम मे उनकी सहायता की।

मंत्रालयो के पुराने कर्मचारियो ने जब देखा कि तोड-फोड की उनकी चाल विफल हो गयी तो वे काम पर लौटने लगे। जन कमिसारियतो का काम ज्यादा सुविधाजनक रूप से चलने लगा।

सोवियत राज्य ने पुरानी पुलिस व्यवस्था को भग कर दिया और एक सर्वहारा मिलिशिया का निर्माण किया, जिसने जनता के अधिकारो की रक्षा का कार्यभार सभाला। पुरानी पूजीवादी-जमीदारी अदालती व्यवस्था भी, जो शोषको के हितो की देखभाल किया करती थी, मिटा दी गयी और उसकी जगह एक नया जन न्यायालय स्थापित किया गया, जिसके द्वारा जनता के अधिकारो की रक्षा की जाती थी।

प्रतिक्रांति ने चूकि हिसात्मक प्रतिरोध का रास्ता अपनाया, इसलिए सोवियत सत्ता के लिए प्रतिरक्षा की एक चौकस और कारगर सस्था कायम करना जरूरी हो गया। २० दिसबर, १९१७ को जन कमिसार

परिषद ने प्रतिक्राति और तोड-फोड के खिलाफ सघष के लिए अखिल रूसी असाधारण आयोग (चेका) स्थापित करने का फैसला किया। दृजेर्जीस्की की अध्यक्षता मे चेका क्राति की तलवार और पूजीपतियो के लिए आतक का कारण बन गया। श्रमजीवी जनता की सहायता से सोवियत चेका के कायकर्ता दुश्मन की साजिशो पर कडी नजर रखत और प्रतिक्राति पर जोरदार प्रहार करते।

सोवियत जनतत्र चारा ओर शक्तिशाली शत्रुओ से घिरा हुआ था। उसके लिए स्वय अपनी सेना के बिना कायम रहना असभव था। लेनिन ने कहा कि "कोई क्राति अगर अपनी रक्षा न कर सके, तो बेकार है"।* शोषको की सगठित की हुई पुरानी सेना मजदूरा और किसाना के किसी काम की नही थी। जरूरत एक नयी सेना की थी, जिसका निर्माण बिल्कुल नये आधार पर किया गया हो। अत जन कमिसार परिषद न १५ जनवरी १९१८ को मजदूरा और किसाना की लाल सेना के सगठन के बारे म एक आज्ञप्ति जारी की।

सबहारा वग ने एक बडा ऐतिहासिक कारनामा कर दिखाया था। उसन राजनीतिक सत्ता अपने हाथो म ले ली थी। लेकिन क्राति को सुदृढ करन और एक नये समाज का निर्माण करने मे यह पहला कदम था। अथव्यवस्था म महत्वपूण आसना पर अभी पूजीपतिया का नियत्रण क़ायम था। वे फैक्टरिया और निजी बको के मालिक थे। यह जरूरी था कि पूजीपति वग को आथिक सत्ता से वचित और राष्ट्रीय अथव्यवस्था मे प्रभावशाली स्थाना से निकाला जाये।

अखिल रूसी कद्रीय कायकारिणी समिति ने १४ नवम्बर, १९१७ को "मजदूरा के नियत्रण के बारे म विनियम" स्वीकार किये। सभी उद्यमो मे माल उत्पादन और वितरण पर मजदूरा का नियत्रण कायम किया गया। मजदूर स्वय अपने निर्वाचित सगठना – फैक्टरी कमिटियो आदि के जरिये नियत्रण करत थे। इसस जनता के स्वतत्र कायकलाप और पहलकदमी को प्रोत्साहन मिला।

राज्य ने राष्ट्रीय अथतत्र का नियत्रित करने की स्वय अपनी सस्थायें बनायी। दिसम्बर, १९१७ म जन कमिसार परिषद के अतगत सर्वोच्च

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २८, पृष्ठ १०४

राष्ट्रीय अर्थ-परिषद की स्थापना की गयी। इसके बाद जिला (प्रदेश) गुबेनियाई और उयदद के अर्थ-परिषदों के निर्माण का काम शुरू हुआ।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण तन्त्रिका उसकी वित्तीय व्यवस्था होती है। उस समय देश में मुद्रा संचलन और ऋण व्यवस्था बड़ी हद तक बैंकों के कार्यकलाप पर निर्भर करती थी और बैंकिंग व्यवस्था उन प्रभावशाली स्थानों में थी, जिनपर पूंजीपतियों का कब्जा था।

सोवियत सत्ता ने साहसपूर्वक और निश्चयात्मक ढंग से बैंकों को ले लिया। राजकीय बैंक और राजकोष के अधिकारियों द्वारा तोड़फोड़ का मुकाबला किया गया। तोड़-फोड़ करनेवालों को निकाल दिया गया और जो बहुत बदमाश थे, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। कारखानों और सैनिक दस्तों के वित्तीय कार्यकर्ताओं ने, जो क्रांति के प्रति वफ़ादार थे, उनका स्थान संभाला। इसके बाद निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

एक बार जब उत्पादन पर मजदूरों का नियंत्रण कायम हो गया और बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो गया, तो सोवियत राज्य की आर्थिक स्थिति दिन ब दिन सुदृढ होने लगी। पूंजीपतियों पर मजदूरों का नियंत्रण स्थापित हो चुका था, मगर अभी तक वे कारखानों के मालिक थे। लेकिन यह भी बहुत दिनों तक नहीं रहा। १९१७ के नवम्बर-दिसम्बर में औद्योगिक उद्यमों का राष्ट्रीयकरण शुरू हुआ।

व्लादीमिर गुबेनिया की लीकिनो बस्ती में एक बड़े कारखाने का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया। यह पहली फ़ैक्टरी थी, जिसका राष्ट्रीयकरण किया गया। सितम्बर, १९१७ में उसके मालिक स्मिर्नोव ने उत्पादन बंद कर दिया था और ४,००० मज़दूर बेकार हो गये थे। फ़क्टरी बेकार पड़ी थी। आखिर ३० नवम्बर को लेनिन ने एक विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये जिसके ज़रिये फ़क्टरी को रूसी जनतंत्र के स्वामित्व में ले लिया गया।

इसके बाद उराल, पेत्रोग्राद तथा अन्य क्षेत्रों और शहरों में अनेक कारखाने राज्य के स्वामित्व में लिये गये। जून, १९१८ तक ५०० से अधिक बड़े कारखानों का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया था और २८ जून को जन कमिसार परिषद ने तमाम बुनियादी उद्योगों में बड़े

उद्यमो के राष्ट्रीयकरण के सबध मे एक आज्ञप्ति जारी की। १९१८ के वसत मे वैदेशिक व्यापार पर भी राज्य का एकाधिपत्य स्थापित कर दिया गया।

इस प्रकार पूजीपतियो को राजनीतिक सत्ता से ही नही, बल्कि आर्थिक प्रभुता से भी वचित कर दिया गया। लेकिन सपत्तिकर्ताओ का सपत्तिहरण करना, मालिको को निकाल बाहर करना और बैको और फैक्टरियो पर अधिकार करना तो आधा ही काम था। अब यह सीखना जरूरी था कि अर्थतत्र का प्रबध, उत्पादन का सगठन और वितरण जनता के लिए और जनता द्वारा कैसे किया जाये।

इस समस्या को हल करने के उपाय और तरीको का उल्लेख समाजवादी अर्थव्यवस्था की नीव डालने की उस योजना म किया गया, जिसे लेनिन ने अपनी अनेक कृतियो मे, खासकर "सोवियत सत्ता के तात्कालिक कार्यभार" (१९१८ के वसत मे प्रकाशित) म प्रस्तुत किया था।

उस समय रूस एक लघु किसानी देश था, जिसमे, जैसा कि लेनिन ने बताया, लघु-माल उत्पादन का बोलबाला था और वह पूजीवाद को सुरक्षित रखने और उसकी पुनरावृत्ति के आधार का काम देता था। यही निम्नपूजीवादी तत्व सोवियत सत्ता और समाजवाद के लिए मुख्य खतरा थ और आवश्यक था कि अर्थव्यवस्था मे समाजवादी व्यवस्था को हर सभव तरीके से मजबूत बनाकर इस खतरे का दूर किया जाये। लेकिन आर्थिक प्रबध की कला सीखे बिना यह नही किया जा सकता था। लेनिन ने लिखा "समाजवाद तभी निरूपित और सुदृढ हो सकता है, जब मजदूर वग अर्थतत्र का सचालन करना सीख जाये और जब महनतकशो की प्रतिष्ठा मजबूती से स्थापित हो जाये। इसके बिना समाजवाद एक आकाक्षा मात्र है।"*

लेनिन ने प्रबधकार्य का कारगर ढग से सगठन करने के लिए विस्तृत मार्गदर्शी सिद्धात स्थापित किये। उन्होने लोगो का आह्वान किया कि वित्तीय मामलो म पाई-पाई का हिसाब रखें और ईमानदारी स काम ले, अर्थव्यवस्था को किफायत से चलायें, कामचोरी छोडें और कडे श्रम अनुशासन

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २८, पृष्ठ ११९

का पालन करें। हिसाब किताब व सगठन और माल उत्पादन तथा वितरण पर नियत्रण का बडा महत्व था। प्रबध का सगठित करने का काम और और बहुत कठिन था, क्योकि पूजीवाद के अतगत श्रमजीवी जनता को आवश्यक अनुभव और जानकारी हासिल करने का कोई अवसर प्राप्त नही था। लेकिन मजदूर वग इन कठिनाइयो पर काबू पाने लगा। धीरे धीरे उत्पादन म सुधार हुआ और एक नये, सचेत और बिरादराना प्रकार का श्रम अनुशासन उत्पन्न और स्थापित हुआ।

क्राति की लहर उस विशाल देश म चारो ओर फैल गयी, समाज की नस नस मे पहुच गयी और उन्होने जो कुछ पुराना और सडा-गला था, उसे बहाकर साफ कर दिया।

अखिल रूसी कायकारिणी समिति और जन कमिसार परिषद ने २४ नवम्बर, १९१७ को एक आज्ञप्ति जारी करके सामाजिक श्रेणियो में आबादी के विभाजन और तमाम श्रेणी सबधी विशेषाधिकारो अथवा पाबदियो को मिटा दिया। इसी के साथ सभी पदवियो उपाधियो और पदो के अन्तर को मिटा दिया गया।

देहातो मे बडा परिवतन हो रहा था। भूमि के बारे मे आज्ञप्ति के अनुसार किसानो ने बडी जमीदारियो को मिटाकर जमीनें आपस म बाट ली थी। १९१८ के वसत तक जमीदार वग का मूलत सफाया हो चुका था। जमीन, मवेशी और खेती के औजार किसानो को मिल गये।

इस प्रकार इतिहास मे पहली बार एक पूरे शोषक वग को मिटा दिया गया—और उसे मिटाया गया क्रातिकारी तरीके स। क्राति की यह एक बहुत बडी उपलब्धि थी। उस समय देहातो मे वर्गीय शक्तियो की व्यवस्था मे एक मौलिक परिवतन हुआ। किसानो का सबसे दरिद्र भाग—जमीदारो के खेत मजदूरो की श्रेणी शेष नही रही। गरीबो के एक बडे भाग को भूमि मिल गयी थी और उनकी अवस्था अब मझोले किसानो की हो गयी थी।

लेकिन जमीदारो के स्वामित्व के अधिकारो के मिटने मात्र से ही अपने आप देहात म सामाजिक असमानता का अत नही हुआ। देहाती पूजीपतियो—कुलको—ने पुराने जमीदारो की जमीन के एक बडे भाग पर कब्जा करके कृषि क्राति से लाभ उठाना चाहा। उन्हे आशा थी कि इस

प्रकार व अपनी ताकत को मजबूत बना लगे और गरीब किसानों का अधिक शोषण करगे। जाहिर है कि श्रमजीवी किसानों न इसका डटकर विरोध किया।

देहातो म वग सघप तज हुआ और उसने समाजवादी क्राति–कुलको क खिलाफ गरीब किसानो की क्राति–के सभी लक्षण ग्रहण कर लिय।

क्राति ने अतीत के एक बदतरीन अवशेष–पुरुषो और महिलाओ की असमानता–को समाप्त कर दिया। ३१ दिसम्बर, १९१७ को "सिविल विवाह, बच्चे और रजिस्ट्रार कार्यालयो का काम के बारे म" एक आज्ञप्ति जारी की गयी, जिसके द्वारा पुरुषो और महिलाओ को समान अधिकार प्रदान किये गय।

सोवियत सत्ता ने आर्थोडाक्स चच के सभी विशेषाधिकारो को मिटा दिया, चच को राज्य से और स्कूल को चच से अलग किया और इस प्रकार सावजनिक शिक्षा पर चच के प्रभाव का अत किया। सपूण विवेक-स्वतत्रता स्थापित की गयी। यह आज्ञप्ति जारी की गयी कि "हर नागरिक को आजादी है कि चाहे जो धम अपनाय या कोई धम न अपनाय।"*

क्राति के तूफान न उन जजीरो को तोड दिया, जिनस रूस की जातियाँ बधी हुई थी। "रूस की जातियो के अधिकारो की घोषणा" के चार सक्षिप्त सूत्रो ने जातियो की आकाक्षाओ को साकार कर दिया। उन्होने रूस की जातियो की समानता और प्रभुसत्ता, उनके स्वतत्र आत्मनिणय के अधिकार, जिसम अलग होने और स्वावलबी राज्य स्थापित करने का अधिकार शामिल था, प्रत्येक और सभी राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय-धार्मिक प्रतिबधो को मिटाने, और रूस के इलाके म बसी हुई गैर-रूसी अल्पसख्यको तथा नस्ली समूहो के स्वतत्र विकास की घोषणा की।

रूस म अब शासक और शासित जातियो का विभाजन नही रहा। देश की सभी–छोटी बडी–जातियो को अपने अपने सवतोमुखी विकास का अवसर प्रदान किया गया। गैर-रूसी क्षेत्रो के मेहनतकशो की राजनीतिक चेतना और कायकलाप म तजी स वृद्धि हुई। सोवियत सत्ता को मजबूत करके उन्होने स्वय अपने राष्ट्रीय राज्यत्व का निर्माण किया। स्वतत्र

---

*"सोवियत सत्ता की आज्ञप्तियाँ", खड २, पृष्ठ ३७१

आत्मनिर्णय के अधिकार के अनुसार सभी जातियों को सोवियत राज्य से अलग होने का अवसर मिला। इस अवसर से लाभ उठाया फ़िनलैंड ने, जो पहले रूस का अंग था। सोवियत सरकार ने उसकी स्वाधीनता को तुरंत मान्यता प्रदान की। लेकिन देश की बाक़ी जातियों ने स्वयं अपना सोवियत राज्यत्व स्थापित करने के साथ-साथ रूसी जाति से और आपस में एक दूसरे से अपने संबंध को मज़बूत बनाया। वे समझते थे कि समाजवादी क्रांति तथा रूसी जाति और उसके मज़दूर वर्ग से बंधुत्व द्वारा उनके राष्ट्रीय पुनर्जागरण का मार्ग, पहले की उत्पीड़ित जातियों का राजनीतिक सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक प्रगति का मार्ग खुल गया।

नये सोवियत राज्य का सरकारी नाम पड़ा रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र। जनतंत्र का प्रथम संविधान १० जुलाई, १९१८ को सोवियतों की पांचवीं अखिल रूसी कांग्रेस में सर्वसम्मति से पास हुआ।

जनतंत्र का राज्यचिह्न स्वर्ण हंसिया और हथौड़ा था, जिसकी लाल पृष्ठभूमि में उभरते सूरज की किरणें चमक रही थीं और जिसके चारों ओर अन्न की बालियों की माला थी और ऊपर "रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र" और नीचे "दुनिया के मज़दूरो, एक हो!" लिखा गया था।

हंसिया, हथौड़ा और अन्न की बालियां ही शांति और सृजनात्मक श्रम का एकमात्र प्रतीक नहीं थीं, जनतंत्र का पूरा संविधान – संसार के प्रथम मज़दूर किसान राज्य का प्रथम संविधान – जातियों के परस्पर बंधुत्व और भाईचारे के विचारों से ओतप्रोत था।

इस संविधान में १७ अध्याय और ९० धारायें थीं। वह क्रांति की राजनीतिक और सामाजिक आर्थिक उपलब्धियों का प्रतिबिंब था। उसने नागरिकों के अधिकारों तथा कर्तव्यों का विवरण किया, केंद्र और स्थानीय इलाकों में सोवियत सत्ता के ढांचे की व्याख्या की और एक जनवादी निर्वाचन व्यवस्था स्थापित की। जनतंत्र के सभी नागरिकों को उनकी जातीयता, धर्म या अधिवास का कोई ख्याल किये बिना १८ वर्ष की आयु होने पर मतदान का अधिकार दिया गया।

क्रांति की विजय का मतलब यह नहीं था कि समाजवादी व्यवस्था अपने आप क़ायम हो गयी। बरसों के तीव्र संघर्ष के बाद ही कहीं जाकर

शापक वर्गों को और मानव द्वारा मानव के शोषण को जन्म देनेवाले कारणा को पूरी तरह मिटाया जा सकता था। शापका ने इसका कडा प्रतिरोध किया। इन स्थितिया म सविधान न शोषका के अधिकारो को सीमित कर दिया। मतदान का अधिकार उन लोगा को नही दिया गया, जो बिना मेहनत की आमदनी पर जीवन व्यतीत कर रहे थे, जो मुनाफा कमाने के लिए मजदूर रखते थे, जो निजी व्यापार करते या अन्य प्रकार से शोषण करते थे। लेकिन पूरी आबादी म इन लागा की सख्या नगण्य थी और ये प्रतिबध अस्थायी थे। जैसे ही सोवियत जनगण ने समाजवाद के निर्माण म सफलता का माग प्रशस्त कर लिया, परिवर्तन काल के ये सभी प्रतिबध मिटा दिये गये।

* * *

हमने अभी तक यह बताया है कि रूस म महान अक्तूबर समाजवादी क्राति कैसे हुई और प्राथमिक क्रातिकारी परिवर्तना को कैसे व्यवहार म लाया गया।

अक्तूबर समाजवादी क्राति को ठीक ही महान कहा गया है। वह महान थी इसलिए कि क्रातिकारी प्रक्रिया मे जनता न अभूतपूर्व रूप से बहुत बडे पैमाने पर भाग लिया और इसलिए कि यह क्राति सिद्धातत उन सभी क्रातियो से भिन्न थी, जिनका मानवजाति को अनुभव था। इतिहास म यह पहली क्राति थी, जिसने शापका को सत्ता से पदच्युत किया, उनकी आर्थिक सत्ता की नीव तोड दी, श्रमजीवी जनता को राज्य का प्रधान बनाया और उत्पादन साधना पर सारे जनगण का स्वामित्व कायम किया। एक नये प्रकार के राज्य – सोवियत समाजवादी राज्य – का निर्माण किया गया और एक नये प्रकार के जनवाद – मेहनतकशा के जनवाद – का जन्म हुआ। इस क्राति ने मानव द्वारा मानव के शोषण का बिल्कुल नामोनिशान मिटाने, तथा सामाजिक अन्याय से मुक्त समाजवादी समाज के निर्माण की शुरूआत की। महान अक्तूबर समाजवादी क्राति की विजय ने विश्व साम्राज्यवाद का मोर्चा भग कर दिया। सोवियत मजदूर किसान राज्य का जन्म हुआ और वह विश्व क्रातिकारी आदोलन का दुर्ग बन गया। इससे मानव इतिहास म एक नये युग का – पूजीवाद के विध्वस तथा समाजवाद और कम्युनिज्म के युग का – प्रादुर्भाव हुआ।

वैदेशिक हस्तक्षेप और आन्तरिक प्रतिक्राति के विरुद्ध संघर्ष १६१८-१६२०

हस्तक्षेप और गृहयुद्ध की शुरूआत

समाजवादी क्राति का निष्पादन रूस की आबादी के विशाल बहुमत के समर्थन और सक्रिय शिरक्त से हुआ था। लेकिन विभिन्न गुटो ने जो पहले सत्तारूढ रह चुके थे और जिन्हे विशेषाधिकार प्राप्त थे, विजयी क्राति के विरुद्ध तीव्र संघर्ष शुरू कर दिया। इनमे वे जमीदार थे जिनकी जागीरे छिन गयी थी, वे पूजीपति थे जिनकी फक्टरियो, बैको आदि का राष्ट्रीयकरण कर लिया गया था। सैनिक अफसरो और अधिकारीगण का एक बडा भाग जिसका जमीदारो और पूजीपतियो से गहरा सम्बन्ध था, जन सत्ता के खिलाफ खडा हो गया। शताब्दियो मे जारशाही ने एक खास प्रकार का विशेषाधिकार प्राप्त सैनिक दल—कज्जाक सेनाए तैयार की थी। उनकी संख्या काफी बडी थी और वे एक बडे क्षेत्र (दोन, उत्तरी काकेशिया, दक्षिण उराल, साइबेरिया और सुदूर पूर्व) मे फैली हुई थी। हा कज्जाको मे भी सामाजिक राजनीतिक स्तरीकरण हो गया। श्रमजीवी कज्जाको ने क्राति का पक्ष लिया। लेकिन कज्जाको मे जो बडे लोग थे, वे प्रारम्भ मे कज्जाक सेनाओ के एक भाग को सोवियत सत्ता के विरुद्ध खडा करने मे सफल हो गये।

क्राति के खिलाफ आवाज उठानेवालो मे बडे पादरी लोग—आर्थोडाक्स, कैथोलिक और मुस्लिम—और पूर्व के सीमावर्ती जातीय इलाको के सामंती और अर्द्ध-सामंती हल्के भी थे। ग्रामीण पूजीपतियो—कुलको—ने तो खुल्लम खुल्ला सोवियत विरोधी पक्ष लिया भी।

मजदूर वर्ग द्वारा सत्ता पर अधिकार करने के पहले के तमाम प्रयास चूकि असफल रहे थे इसलिए प्रतिक्राति को पूरा विश्वास था कि देर सवेर

वही बात इस बार भी होकर रहेगी। प्रतिक्रांति और उसकी सेनाएं (जिन्हें सफेद गार्ड कहा जाने लगा) वैदेशिक प्रतिक्रियावादियों के व्यापक समर्थन की आशा कर रही थी। जैसा कि बाद की घटनाओं से जाहिर हो गया उनकी आशाएं निराधार नहीं थीं।

अत क्रांति का विरोध करनेवाली शक्तियां खासी बड़ी थीं। इसके अलावा बहुत से लोग, खासकर जिनका संबंध बुद्धिजीवियों से था, यद्यपि सोवियत सत्ता के दुश्मन नहीं थे, मगर किंकर्तव्यविमूढ़ और डांवाडोल थे। देश में क्रांतिकारी परिवर्तनों का जो जबर्दस्त उभार आया, उससे वे घबरा और डर गये थे।

अक्तूबर क्रांति के पहले दिनों से ही नवजात जनतंत्र के शत्रुओं ने सोवियत सत्ता को उलटने और पुरानी प्रथा को फिर से कायम करने के लिए आर्थिक तोड़फोड़ और राजनीतिक संघर्ष करने के साथ-साथ, सशस्त्र संघर्ष भी शुरू कर दिया था जिसकी तीव्रता दिनादिन बढ़ती जा रही थी।

सोवियतों की दूसरी कांग्रेस में सोवियत सत्ता की उद्घोषणा पर विजयोल्लास खत्म भी नहीं होने पाया था कि क्रांति की जन्मभूमि के पास तोपों की गोलाबारी की आवाज सुनाई दी। पेत्रोग्राद से भागने पर भूतपूर्व प्रधान मंत्री केरेन्स्की ने एक विप्लव संगठित किया। जनरल क्रास्नोव से मिलकर उसने कई सैनिक दस्ते एकत्र किये और विजयी मजदूरों और किसानों को 'शांत" करने चला। केरेन्स्की-समर्थक क्रास्नोव की सेनाएं पेत्रोग्राद के निकट पहुंच गयीं मगर १२ नवम्बर को मजदूरों, नौसैनिकों और सैनिकों ने उन्हें परास्त कर दिया। केरेन्स्की भाग निकला और क्रास्नोव बंदी बना लिया गया था मगर इस "आश्वासन" पर उसे रिहा कर दिया गया कि वह अब सोवियत सत्ता के खिलाफ हथियार नहीं उठायेगा।

१९१८ के पूर्वार्द्ध में पूंजीपतियों ने बड़ी संख्या में गुप्त संगठन बनाये जिनके जरिये वे षड्यंत्र रचते, विप्लव संगठित करते, तोड़-फोड़ और आतंक मचाते और सोवियत विरोधी प्रचार कराते थे। प्रतिक्रांति बड़ी मुस्तैदी से अपनी सैन्य शक्ति का निर्माण कर रही थी। उत्तरी काकेशिया में सोवियत विरोधी सैनिक अफसर एक तथाकथित स्वयंसेवक सेना तैयार कर रहे थे जिसके प्रधान जारशाही के पुराने जनरल अलेक्सेयेव, कोर्नीलोव और देनीकिन थे। कज्जाक क्षेत्रों में सोवियत विरोधी दस्तों का संगठन किया जा रहा था।

प्रतिक्रांतिकारियों द्वारा गृहयुद्ध छेड़ने के प्रथम प्रयासों को बड़ा जल्दी परास्त कर दिया गया था (पत्रोग्राद के निकट क्रास्नोव-समर्थक क्रास्नोव की हार, दक्षिण उराल में दूतोव तथा दोन के पास कलेदिन की हार)। इससे यह बात बिलकुल स्पष्ट हो गयी थी कि सोवियत सत्ता को आबादी के विशाल बहुमत का समर्थन प्राप्त है और वह प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों से कहीं ज्यादा तगड़ी है।

मगर सशस्त्र संघर्ष का अंत नहीं हुआ। इसके विपरीत ज्यों ज्यों महीने गुजरते गये उसकी आग फैलती और तीव्रता बढ़ती गयी। इसका कारण एक ही था संसार के सबसे बड़े पूंजीवादी देशों द्वारा सोवियत विरोधी हस्तक्षेप।

सोवियत रूस में एंटेंट सेना भेजने का कारण आधिकारिक तौर पर यह बताया गया कि जर्मन हस्तक्षेप को रोकने के लिए ऐसा किया गया है। लेकिन यह सफाई सही नहीं साबित होती। यह ठीक है कि एंटेंट की प्रथम सेनाएं रूस में उस समय उतारी गयीं जब जर्मनी से युद्ध जारी था। मगर वास्तविकता यह है कि बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप जर्मनी से युद्ध का अंत हो जाने के बाद ही हुआ।

हस्तक्षेप का असली कारण साफ था। यह संसार के प्रथम समाजवादी राज्य के विरुद्ध सत्तारूढ़ वर्गों का अंतर्राष्ट्रीय आक्रमण था। विंस्टन चर्चिल ने अनेक बार यह स्वीकार किया कि उसका उद्देश्य 'जनमत ही बाल्शेविज्म का गला घोंट देना' था। सारी दुनिया में क्रांतिकारी आंदोलन के फैलने से साम्राज्यवादी क्षेत्रों में बड़ी घबराहट फैल गयी थी और वे समझने लगे थे कि रूस का उदाहरण बहुत खतरनाक है।

एक बड़ा कारण यह भी था कि अक्तूबर क्रांति ने पश्चिमी पूंजीपतियों को रूस में उनके कारखानों, रियायतों और लगी पूंजी से वंचित कर दिया था। साम्राज्यवादी नेताओं को यह भी आशा थी कि हस्तक्षेप के जरिये रूस के टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायेंगे और उसके कुछ भागों को वे अपना उपनिवेश बना सकेंगे।

दिसम्बर, १६१७ में रूमानियाई राजतंत्र ने अंतर्राष्ट्रीय कानून, समझौते और वादों का उल्लंघन करके बेसाराबिया पर कब्जा कर लिया। इसके शीघ्र ही बाद ब्रिटिश, जापानी और अमरीकी हस्तक्षेपकारी सेनाएं सोवियत देश के उत्तर (मूर्मान्स्क और अर्खागेल्स्क) और सुदूर पूर्व (व्लादीवास्तोक) में उतारी गयीं।

१९१८ की मई के अंत म मध्य वोल्गा क्षेत्र और साइबेरिया म एक चेकोस्लावाक कोर का विप्लव शुरू हुआ। इस कोर म चेक और स्लोवाक सनिक थे जो आस्ट्रिया की सेना म थे और जिन्हे विश्वयुद्ध के दौरान रूसियो ने युद्धवदी बना लिया था। यह कोर सोवियत सरकार की अनुमति से साइबेरिया और सुदूर पूव के रास्ते यूरोप के लिए रवाना हो रहा था। लेकिन ब्रिटिश फ्रासीसी अमरीकी एजेटो न कोर के प्रतिक्रियावादी कमान की सहायता से उसे सोवियत जनतत्र के विरुद्ध सघष म इस्तेमाल कर लिया। रलवे लाइन क साथ साथ तैनात कोर के ६० ००० सशस्त्र सनिको ने वोल्गा क्षेत्र और साइबेरिया म अनेक शहरो पर कब्जा कर लिया।
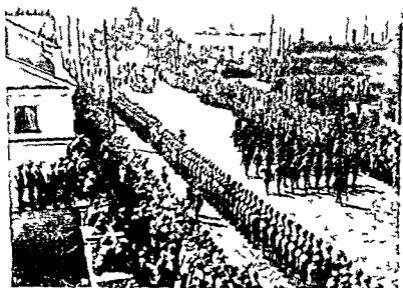
आर्खागेल्स्क म अंग्रेजी सेना उतर रही है। १९१८

हस्तक्षपकारियो न सोवियत मध्य एशिया के इलाके पर भी हमला कर दिया। ईरान से आकर ब्रिटिश सनाओ ने ट्रास-कास्पियन क्षेत्र पर अधिकार कर लिया।

अधिकृत इलाकों में हस्तक्षेपकारियों ने एक औपनिवेशिक, आतंक व्यवस्था कायम की। कम्युनिस्टों, सोवियत और ट्रेड यूनियन कार्यक को गिरफ्तार कर लिया गया। उनमें से बहुतों की हत्या कर दी ग इस प्रकार बिना तहकीकात किये और मुकदमा चलाये उन २६ कमि की हत्या की गयी थी जो आज़रबजान की राजधानी बाकू में सो सत्ता के नेता थे। बाकू कमिसारों में अजीज़बेकोव, जापारीदजे, माला फिओलेताव शाउम्यान आदि प्रमुख जन नेता थे। अंग्रेज उन्हें पकड़ ट्रांस-कास्पियन क्षेत्र के रेगिस्तान में ले गये और वहां उन्हें गोली मार दी

बाकू के २६ कमिसारों की प्राणाहुति

सोवियत विरोधी हस्तक्षेप में कुल मिलाकर यूरोप, अमरीका और एशिया के १४ देशों ने भाग लिया। इनमें बुनियादी भूमिका सबसे बड़ी पूंजीवादी शक्तियों–संयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस और जापान ने अदा की। अक्तूबर क्रांति के बाद चार सालों में पूंजीवादी जगत बंटे रहने के कारण एक ओर ब्रिटेन और दूसरी ओर जर्मनी और उसके मित्र राष्ट्रों में बंटा हुआ था। इससे साम्राज्यवादी शक्तियों का एकीकरण किया हुआ तक कठिन हो गया था। लेकिन इस स्थिति में भी

दाना युद्धरत शक्तिया ने सोवियत जनतन्त्र के विरुद्ध वास्तव मे सयुक्त कदम उठाया।

रूस के एक विशाल भाग पर जमनी और आस्ट्रिया हगरी द्वारा कब्जा बढत हुए ब्रिटिश फ्रासीसी-जापानी अमरीकी हस्तक्षेप से सवद्ध था। इससे पहले कभी किसी देश पर इतने विशाल पमाने पर और मिलकर आक्रमण नही किया गया था।

रूस और वाहरी दुनिया के वीच सारा स्थल और जल यातायात वन्द कर दिया गया और सोवियत जनतन्त्र की लगभग मुकम्मल नाकाबन्दी कर दी गयी। हस्तक्षेपकारिया ने सफेद गार्डी प्रतिक्रातिकारी शक्तियो से प्रत्यक्ष एकता कायम की। उन्हाने रुपय पैसे और हथियारा से उनकी सहायता की और उनके साथ मिलकर फौजी कारवाइया म भाग लिया। हस्तक्षेपकारियो के प्रत्यक्ष समथन के कारण भीतरी प्रतिक्रातिकारिया को अपनी कारवाइया को तज करने का अवसर मिल गया।
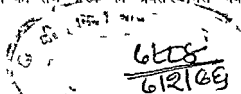
सोवियत जनतन्त्र अग्नि घेरे मे

ब्रेस्त सधि के जरिये [illegible] लेने की मुहलत मिली थी, उसका १६१८ क मध्य तक अत हो [illegible] सोवियत दश को वैदेशिक हस्तक्षप और भीतरी प्रतिक्राति के खिलाफ युद्ध मे उतरना पडा। युद्ध की समस्या अब क्राति की सबसे महत्वपूण, बुनियादी समस्या बन गयी। रूस की जातिया का भाग्य अब इस बात पर निभर करता था कि क्या सोवियत सत्ता दुश्मन के हमले का परास्त करने और क्राति के ध्येय की रक्षा करन के योग्य होगी या नही।

१६१८ के मध्य म सारा सोवियत दश साम्राज्यवादियो द्वारा भडकाई युद्ध की आग म झुलस रहा था। उत्तर, दक्षिण, पूव, पश्चिम—चारा ओर हस्तक्षेपकारियो और सफेद गार्डों के खिलाफ जोरदार सघप चल रहा था।

मध्य १६१८ तक सफेद स्वयसेवक सेना न उत्तरी काकेशिया के एक वडे भाग पर कब्जा कर लिया। जनरल क्रास्नोव और मामोन्तोव ने कज्जाका का विप्लव कराया, दोन क्षेत्र पर कब्जा किया और त्सरीत्सिन (वतमान वोल्गाग्राद) और वोरानज पर हमला बोल दिया।

चेकोस्लोवाक विप्लवियो और सफेद गार्डों ने पूरे साइबेरिया तक वाल्गा प्रदेश के अनेक शहरों – समारा (वर्तमान कूइबिशेव), सिम्बिर्स्क (वर्तमान उल्यानोव्स्क) और काज़ान पर अधिकार कर लिया। अतामान दूतोव के सफेद कज़्ज़ाक दस्ते फिर सक्रिय हो गये, जिन्होंने जुलाई, १९१८ के शुरू में ओरेनबुर्ग पर कब्जा कर लिया। सोवियत तुर्किस्तान का देश के केंद्र से विच्छेद हो गया।

उराल में तीव्र संघर्ष छिड़ गया। जुलाई भर येकातेरीनबुर्ग (वर्तमान स्वेर्दलोव्स्क) के पास, जो उस क्षेत्र में प्रतिरोध का केंद्र था, लड़ाई चलती रही। हस्तक्षेपकारियों और सफेद गार्डों को पता था कि भूतपूर्व ज़ार निकोलाई रोमानोव को येकातेरीनबुर्ग में बंदी बनाकर रखा गया है। वे चाहते थे कि उसे रिहा करके प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों को उसके गिर्द इकट्ठा किया जाये। उराल क्षेत्रीय सोवियत की विज्ञप्ति के अनुसार निकोलाई रोमानोव को १७ जुलाई, १९१८ को गोली मार दी गयी। एक सप्ताह बाद सफेद गार्डों ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया।

हस्तक्षेपकारियों और सफेद गार्डों द्वारा अधिकृत इलाकों (आर्खागेल्स्क, समारा, ओम्स्क, ट्रांस-कास्पियन क्षेत्र तथा अन्य स्थानों) में सोवियत विरोधी प्रतिक्रांतिकारी 'सरकारें' स्थापित की गयीं जिनमें मेन्शेविक और समाजवादी-क्रांतिकारी शामिल थे। शुरू में इन "सरकारों" ने जनवादी शब्दावली का व्यापक प्रयोग किया। लेकिन व्यवहार में वे अपने हर काम में पूंजीपतियों, जमींदारों और वैदेशिक साम्राज्यवादियों की इच्छा पूरी करती थीं और खुल्लम-खुल्ला सैनिक तानाशाही का रास्ता साफ कर रही थीं।

नवजात सोवियत जनतंत्र मोर्चों के अग्नि घेरे में घिरा हुआ था। सोवियतों का लाल झण्डा केवल केन्द्रीय रूस के अपेक्षाकृत एक छोटे से इलाके पर लहरा रहा था।

इसके अलावा कुलक विप्लवों की लहर देश भर में फैल गयी और अनेक क्षेत्रों में (वोल्गा क्षेत्र और साइबेरिया में) मझोले किसानों का एक खासा बड़ा भाग डगमगाने और समाजवादी-क्रांतिकारियों का समर्थन करने लगा।

सोवियत राज्य कड़ी परीक्षा से गुजर रहा था। जुलाई १९१८ में लेनिन ने कहा : "विश्व साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में प्रथम

समाजवादी दस्ता होने का परम सम्मान और परम कठिनाई हमे प्राप्त हुई है।"*

एटेंट के हस्तक्षेप और जमन कब्जे के कारण सोवियत रूस स खाद्यान, कच्चे माल तथा इधन का उत्पादन करनेवाले महत्वपूण इलाके छिन गये थे। मास्को, पेत्रोग्राद तथा अन्य शहरा के मजदूरा का आधा पट राशन मिलता था। सोवियत जनतन्न के पास न दोनेत्स्क बेसिन का कोयला था, न निचोय रोग का खनिज लोहा, न बाकू का तेल और न तुर्किस्तान की रूई। कच्चे माल और ईंधन के अभाव मे कारखाने ठप होन लगे। १६१८ की गर्मिया के अत तक कोई ४० प्रतिशत औद्योगिक उद्यम बेकार पडे थ।

"मत्यु या विजय!"—यह था वह नारा जिसके तहत सोवियत जनगण लडे। सितम्बर, १६१८, के शुरू मे अखिल रूसी केन्द्रीय कायकारिणी समिति न सोवियत जनतन्न को एक सयुक्त फौजी छावनी घोषित किया। समिति के २ सितम्बर की विज्ञप्ति म कहा गया था "उत्पीडका के खिलाफ सशस्त्र सघप के पवित्र ध्येय का पूरा करने के लिए सोवियत जनतन्न की सारी शक्ति और साधन लगा दिय जायेंगे।"

सफेद गार्डों और हस्तक्षेपकारिया के खिलाफ सघप म देश के सभी साधन जुटाने के लिए ३० नवम्बर, १६१८ को मजदूरा और किसाना की प्रतिरक्षा परिपद कायम की गई, जिसके प्रधान लेनिन थे।

सोवियत सेना के निर्माण का काय कठिन और जटिल था। लाल सेना एक वर्गीय सेना—मजदूरा और श्रमजीवी किसाना की सेना के रूप म सगठित की गयी। इसकी रीढ की हड्डी देश के औद्योगिक केन्द्रा—मास्को, पेत्रोग्राद, त्वेर, इवानोवो वोज्नसेन्स्क, नीज्नी नावगोरोद, तूला और उराल के रूसी सवहारा थे। श्रमजीवी जनता की पाति से अनेक प्रतिभाशाली और साहसी सनिक नेता पैदा हुए। युद्ध की आग म तपकर निकलनेवाले कमाडरा म ब्लूखेर, बुद्योन्नी, वोरोशीलोव, लाजो, कतोव्स्की, पर्खोमेंको, फन्नीतिसउस, फेद्को, फ्रूजे, चापायेव, श्चोर, यावीर आदि थे।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खण्ड २७, पृष्ठ ४०२

मज़दूरा और किसाना म स नय कमाडरा का प्रशिक्षण करत के साथ ही साथ सावियत सरकार ने अनुभवी सनिक विशेपज्ञा का सवाए भी प्राप्त की जिन्हाने जारशाही सेना म काम किया था। कई पुरान अफसरा ने जनतत्र स विश्वासघात किया और शत्रु से मिल गय, मगर प्रगतिशील विचार के अफसरा ने ईमानदारी स सोवियत सत्ता की सवा की। इनकी कुछ मिसाले थी कामेनेव जो गृहयुद्ध के दौरान सावियत सय शक्तिया के सर्वोच्च कमाडर बने, शापाश्निकोव जा उन दिना एक फील्डस्टाफ की कारवाइया के प्रधान थे और वाद मे जनरल स्टाफ़ क चीफ नियुक्त हुए येगोरोव और तुखाचेव्स्की जिनके हाथा म सवस महत्वपूण मोर्चो की कमान थी और बाद मे सोवियत सघ के माशल बन, काविशेव एक प्रमुख सैनिक इजीनियर जिन्हाने १६१८–१६२० म सावियत जनतत्र की रक्षा म सक्रिय भाग लिया और महान देशभक्तिपूण युद्ध क दौरान वीरगति पायी।

लाल सना के दस्तो की भर्ती और गठन के लिए देश भर म क्षत्रीय, गुवेनियाइ, उयज्द तथा वोलोस्ता की सनिक कमिसारियत कायम का गयी। २ सितम्बर १६१८ को जनतत्र की क्रातिकारी सनिक परिषद का निर्माण किया गया जा सीधे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के मातहत काम करती थी। इस परिषद की स्थापना से सभी मोर्चे और सनिक सस्थाए केन्द्रीकृत नियत्रण मे आ गयी। केन्द्रीय समिति की एक विशप विनप्ति म इस बात पर जार दिया गया था कि सनिक विभाग की नाति "पार्टी की कद्रीय समिति द्वारा जारी किये गये आम निदेशा का ध्यानपूवक पालन करती और प्रत्यक्ष रूप स उसके द्वारा नियत्रित है।

मार्चों तथा सनाओ के सचालन का एक सयुक्त ढाचा स्थापित किया गया। प्रत्येक मोर्चे (या सेना) का अगुआ एक क्रातिकारी सनिक परिषद थी जिसम मोर्चे (या सेना) के कमाडर तथा दो राजनीतिक कमिसार हुआ करत थे।

हज़ारा कम्युनिस्ट लाल सना म भर्ती हुए। मार्चे पर जानवाल कम्युनिस्टा का आदेश म कहा गया था कम्युनिस्ट की बहुत सा जिम्मदारिया ह मगर विशेपाधिकार एक ही मिलता है—क्राति के लिए सबस आगे बढ़कर लडन का अधिकार।"

कम्युनिस्टों ने ढीलेपन, मनमानेपन के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया और लाल सेना को एक सुव्यवस्थित, सुदृढ़ अनुशासित सेना बनाने के लिए बड़ी मेहनत से काम किया। सबसे पक्के आदमियों को—उन कम्युनिस्टों को जो क्रांतिकारी संघर्ष में पूरी तरह तप चुके थे—सैनिक कमिसार नियुक्त किया गया। कम्युनिस्ट कमिसारों ने सेना को मजबूत बनाने, उसकी युद्ध क्षमता को बढ़ाने, लाल सेना के जवानों को राजनीतिक प्रशिक्षण देने और भूतपूर्व जारशाही सेना के सैनिक विशेषज्ञों की गतिविधियों पर नियंत्रण करने में उल्लेखनीय भूमिका अदा की।

पार्टी और सोवियत सत्ता के महान कार्य के फलस्वरूप लाल सेना का निर्माण सफलतापूर्वक जारी रहा। १९१८ की गर्मी और पतझड़ के दौरान ८ लाख से अधिक आदमी लाल सेना में भर्ती हुए।

सोवियत जनतंत्र की प्रतिरक्षा क्षमता में वृद्धि का एक और महत्वपूर्ण कारण था सार्विक सैनिक प्रशिक्षण। १८ से ४० वर्ष तक के जनतंत्र के सभी नागरिकों ने अनिवार्य सैनिक प्रशिक्षण पाया।

लाल सेना की पंक्तियों में लड़नेवालों में यूरोप और एशिया की अनेक जातियों के प्रतिनिधि भी थे। प्रथम विश्वयुद्ध के युद्धबंदियों, रूस में रहनेवाले विदेशी मजदूरों तथा उत्प्रवासियों ने स्वयंसेवक दस्ते बनाये जो लाल सेना के अंग बन गये। सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद की महान शक्ति और इस बात के एहसास ने कि रूस के मजदूर और किसान सारी मानवजाति के लिए उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं, विदेशों के दसियों हजार साधारण जनगण को रूस में क्रांति का सिपाही बना दिया। हंगरियन, चेक, पोल, सर्वियाई, चीनी, कोरियन तथा संसार की अन्य जातियों के प्रतिनिधियों ने रूस के रणक्षेत्रों में सोवियत सत्ता की खातिर अपने प्राण निछावर किये।

उन्होंने रूसियों, उक्रइनियों और बेलारूसी सैनिकों के साथ सैनिक जीवन की सभी कठिनाइयों और विपत्तियों झेलीं और कंधे से कंधा मिलाकर समान शत्रु के खिलाफ लड़े।

१९१८ की गर्मी और पतझड़ के दौरान भारी लड़ाइयों में नवजात लाल सेना को अपनी प्रथम सफलताएं प्राप्त हुईं।

गर्मी भर मध्य वोल्गा क्षेत्र में जबर्दस्त लड़ाई चलती रही जहां से चेकोस्लोवाक और सफेद गार्डों के दस्ते देश के केंद्रीय क्षेत्रों की ओर

यत्न का प्रयत्न कर रहे थे। सोवियत जनतंत्र के लिए इस क्षेत्र का नाश का निर्णायक महत्व हो गया।

अगस्त १९१८ में लेनिन ने पूर्वी मोर्चे के हेड क्वार्टर को लिखा "अब क्रांति का सारा भाग्य एक बात पर निर्भर करता है कि कज़ान-उराल समारा मोर्चे पर चेकोस्लोवाकों पर फौरी विजय करें।"*

सोवियत सरकार ने पूर्वी मोर्चा बनाया जिसमें बहुत ही कम समय में निर्मित पांच सेनाएं आ गई थीं। बड़ी संख्या में कम्युनिस्टों को कमांडर, कमिसार, साधारण सैनिक तथा प्रचारक की हैसियत से पूर्वी मोर्चे पर भेजा गया। १९१८ के अंत तक कोई २४,००० कम्युनिस्ट मोर्चे की सेनाओं में थे।

एक वोल्गा सैनिक बेड़ा तैयार किया गया। नीज्नी नावगारोद (वर्तमान गोर्की) तथा वोल्गा के अन्य तटवर्ती शहरों के मज़दूरों ने स्टीमरों और बजरों को लैस किया और नहरों के रास्ते बाल्टिक से विध्वंसक पोत लाये गये।

१९१८ की पतझड़ में पूर्वी मोर्चे की सेनाओं ने बड़ी सफलताएं प्राप्त कीं। सितम्बर के शुरू में लाल सेना के दस्तों ने वोल्गा तट के एक बड़े शहर कज़ान को मुक्त कर लिया। अक्तूबर में वे समारा (वर्तमान कुइबिशेव) में दाखिल हुए। इस महान रूसी नदी – देश की महत्वपूर्ण जीवन वाहिनी की लड़ाइयों का विवेचन करते हुए लेनिन ने लिखा "समारा ले लिया गया। वोल्गा मुक्त हो गयी।

१९१८ की गर्मी और खासकर पतझड़ की सैनिक घटनाओं में प्रथम महत्व दक्षिण मोर्चे के संघर्ष का था जिसमें दोन नदी, निचली वोल्गा तथा उत्तरी काकेशिया के क्षेत्र शामिल थे। इस मोर्चे में पांच सेनाएं शामिल थीं जो वोरोनेज़, त्सरीत्सिन (वर्तमान वोल्गोग्राद) तथा उत्तरी काकेशिया में स्थित थीं। यहां सोवियत सेनाएं दोन और कुबान के प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों, देनीकिन की सफ़ेद स्वयंसेवक सेना और उत्तरी काकेशिया के पूंजीवादी राष्ट्रवादियों के दस्तों के विरुद्ध संघर्ष कर रही थीं।

गर्मी और पतझड़ में दक्षिण मोर्चे के त्सरीत्सिन क्षेत्र में ज़बरदस्त लड़ाइयां छिड़ गयीं। १९१८ के दौरान दो बार (अगस्त सितम्बर और

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं खण्ड ७४ पृष्ठ ७५

अक्तूबर मे) सफेद गार्ड की सेनाए त्सरीत्सिन के निकट पहुची। दोनो बार शहर के निकट जबदस्त घमासान लडाइया हुईं और दोनो ही बार क्रास्नाव के दस्तो को सख्या मे अधिक होने के बावजूद मुह की खानी पडी और उन्हे धकेलकर दोन के पीछे भगा दिया गया। त्सरीत्सिन की प्रतिरक्षा का नेतृत्व करने मे वोरोशीलाव, मीनिन और स्तालिन ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

"भरती हो गये?" यह सबसे पहले सोवियत पोस्टरो मे था

१९१८ की पतझड में उत्तर की ओर हस्तक्षेपकारियों और मध्य प्रा का आगे बढना रोक दिया गया।

देश की शक्तियों को शत्रु को परास्त करने के लिए संगठित क के साथ साथ सोवियत सरकार ने देश के पिछवाडे में क्रांतिकारी व्य कायम करने के लिए कदम उठाये। इस समय प्रतिक्रांति द्वारा सफेद आतंक बहुत बढ गया था और उसने चरम रूप धारण कर लिया था। पेत्रोग्रा में प्रतिक्रांतिकारी आतंकवादियों ने कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख नेताओं वोलोदार्स्की और उरीत्स्की की हत्या कर दी।

३० अगस्त, १९१८ को दक्षिणपंथी समाजवादी क्रांतिकारियों ने लेनिन की हत्या करने की चेष्टा की। मास्को के एक कारखाने में एक सभा में एक समाजवादी क्रांतिकारी महिला कपलान ने दो विषैली गोलियों से लेनिन को सख्त घायल कर दिया।

प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां षडयंत्र, बगावत और तोड-फोड की कारवाइयां कराती रहीं। जुलाई, १९१८ में ही मास्को, यरास्लाव्ल, रीबिन्स्क तथा अनेक अन्य शहरों में बगावतें हुई। पूर्वी मोर्चे पर सोवियत सेनाओं के कमांडर भूतपूर्व जारशाही फौजी अफसर मुराव्योव ने भी बगावत कर दी। हर जगह बगावत होते ही कम्युनिस्टों और ट्रेड-यूनियन कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी जाती थी। यरोस्लाव्ल में प्रतिक्रांतिकारियों ने गुबेर्निया कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष नाखिमसोन तथा सैकडों अन्य कम्युनिस्टों सोवियत दफ्तरी कर्मचारियों और मजदूरों को मार डाला।

इन कारवाइयों का निदेशन एंटेंट के एजेंट कर रहे थे जो अक्सर अधिकृत राजनयिक प्रतिनिधि हुआ करते थे। प्रतिक्रांतिकारी शक्तियों के प्रत्यक्ष संगठनकर्ताओं में अमरीकी राजदूत फ्रंसिस, फ्रांसीसी राजदूत नूलांस मास्को में अमरीकी कान्सल पूल तथा ब्रिटिश राजनयिक प्रतिनिधि लाकहार्ट था। उनकी शिरकत का अकाट्य सबूत उस समय की दस्तावेज़ में, १९२२ में समाजवादी क्रांतिकारी नेताओं पर चलाये मुकदमे के दौरान उनकी गवाहियों में, सफेद गार्ड के खुफिया संगठन के एक नेता साविंका पर १९२४ में चलाये गये मुकदमे में उसकी गवाही में तथा उनके अपने व्यक्तिगत संस्मरणों में मौजूद है।

शुरू में सोवियत राज्य ने अपने दुश्मनों के प्रति नरमी का व्यवहार अपनाया। अस्थायी सरकार के किसी भी सदस्य की हत्या नहीं की गयी

अस्तव्यस्त यातायात व्यवस्था और जीर्णावस्था उद्योग मिला था। लेकिन कोई कठिनाई भी मजदूरों के मनोबल को तोड नही सकी। ग्रामयाग होकर उन्होंने लाल सेना के लिए विजय के अस्त्र ढालने का काम किया। ट्रेड-यूनियनो ने अपील की "साथियो, अपने खराद और वरमे पर जुट जाग्रो अपने हथौडे और रेतिया उठाओ! पितभूमि खतरे मे है!" दसियो हजार मजदूरो ने इन अपीलो पर ध्यान दिया। मास्को, पेत्रोग्राद, कोलामना इवानोवो-वोज़नेसेंस्क त्वेर, नीज्नी नोवगोरोद के कारखानो मे दिन-रात तेजी से काम चल रहा था। १६१८ के उत्तरार्द्ध मे लाल सेना को २००० से अधिक तोपे, कोई २५ लाख गोले, ६ लाख से अधिक राइफल, ८ हजार मशीनगन, ५० करोड से अधिक कारतूस और को १० लाख दस्ती बम मिले।

सोवियत सत्ता के सामने एक और महत्वपूर्ण काम देहातो मे अपनी स्थिति को मजबूत करना था। कुलको को, जो हथियार और भूख के जरिये सोवियत सत्ता का गला घोटने की कोशिश कर रहे थे, परास्त करना गरीब किसानो को एकताबद्ध करना मझोले किसानो का समर्थन प्राप्त करना था और इस प्रकार मजदूर वर्ग और किसानो की एकता को मजबूत करना था। इस कार्यभार का अटूट सबध रोटी के लिए सघर्ष और खाद्यान्न सप्लाई करने की समस्या से था।

श्रमजीवी किसानो और कुलको के बीच वर्ग सघर्ष पूरे जोरो पर हो रहा था। कुलक जमीदारो की छीन ली गई भूमि, औजार और बीज के भडार पर कब्जा करके गरीब किसानो को गुलाम बनाने की चेष्टा कर रहे थे। लेकिन श्रमजीवी किसानो ने कुलको और उनकी शोषणकारी प्रवत्तियो का घोर विरोध किया। यह तीव्र वर्ग सघर्ष जो अक्सर सशस्त्र मुठभेड का रूप ले लेता हजारो कस्बो और गावो मे जारी था।

लेकिन गरीब किसान ठीक से सगठित नही थे और उनमे अपने उद्देश्यो और कार्यभार की स्पष्ट समझदारी नही थी। ११ जून, १६१८ को अखिल रूसी केद्रीय कार्यकारिणी समिति ने देहातो मे गरीब किसान समितिया सगठित करने की आज्ञप्ति जारी की। थोडे ही समय मे हर जगह-हर वोलोस्त और हर गाव मे इस तरह की समितिया बन गयीं। इन समितियो ने श्रमजीवी किसानो मे भूतपूर्व जमीदारो की जमीनो के पुनर्वितरण मे सहायता की और इससे लोगन कुलको से ५ करोड हेक्टर

जमीन छीन ली गई। गरीब किसान कमिटियो ने गरीब किसानो द्वारा हासिल की गयी भूमि का विकसित और उसपर खेतीबारी करने के लिए उन्ह बीज और कृषि के औजार मुहैया किये। इन कमिटियो ने उन्ह मवेशी दिये और लाल सेना के जवाना के परिवारा की देखभाल की। शहर के मजदूरो ने भी कुलको के खिलाफ सघष मे गरीब किसाना की सहायता की। फैक्टरिया और कारखाना मे मजदूरा के विशेष जत्थे बनाये गये और उन्ह देहातो म भेजा गया। उन्होंने कुलका द्वारा प्रेरित अन्न वसूली की तोड फोड की कारवाइया रुकवायी, गरीब किसाना की एकता कायम करने मे सहायता की और गावो मे सोवियत सत्ता के निकायो को मजबूत बनाया। परिणामस्वरूप कुलका का प्रतिरोध भग हो गया।

देहातो मे सवहारा का आगमन तथा गरीब किसान कमिटियो की स्थापना से देहात मे और सारे देश मे ही सवहारा अधिनायकत्व को सुदृढ करने मे सहायता मिली। कुलको का दबाने और सोवियत सत्ता के सुदृढ होन से मझोले किसाना का सोवियत सत्ता के पक्ष मे लाने मे सहायता मिली। मझोले किसानो ने जब देखा कि सवहारा राज्य सचमुच जनप्रिय नीति पर अमल कर रहा है जो तमाम श्रमजीवी जनता के हित म है, तो वे सोवियता की सत्ता का सक्रिय समथन करने लगे।

इस दौरान मे मझोले किसानो की सख्या मे भी वृद्धि हुई, क्याकि लाखा गरीब किसानो को जमीन, मवेशी और खेती के औजार मिल गये थ, उनकी आर्थिक स्थिति मे सुधार हुआ था, और इस प्रकार वे मझोले किसानो के स्तर पर पहुच गये थे। जहा पहले गरीब किसाना की सख्या अधिक थी, वहा अब बहुसख्यक किसान (लगभग ६० फीसदी) मझोले किसान थे।

क्राति से ठीक बाद के जमाने मे मझोले किसानो का यह तबका राजनीतिक ढुलमुलपन का शिकार रहा। लेकिन १६१८ के अत तक वह मजदूर वग और सोवियत सत्ता का सक्रिय समथन करने लगा।

सोवियत सत्ता के लिए अब यह सम्भव था कि वह मझोले किसानो के साथ एका की नीति पर अमल करे। यह नीति जिसे लेनिन ने १६१८ के अत मे निरूपित किया, (माच १६१६ मे) कम्युनिस्ट पार्टी की आठवी काग्रेस मे स्वीकृत हुई। गरीब किसाना को मजबूत आधार मानना, मझोल किसानो के साथ एका स्थापित करना और ग्रामीण पूजीपतिया

6—1960

और कुलको के विरुद्ध सघष करो—यह थी देहातो मे सोवियत सत्ता की वर्गीय नीति का तिहरा फामूला। किसानो की विशाल बहुसख्या के साथ मजदूर वग की एकता गृहयुद्ध मे विजय और बाद के शातिपूण निर्माण-काय मे सफलता की एक अत्यत महत्वपूर्ण शर्त बन गया।

१६१८ के अत तक सोवियत राज्य की अतर्राष्ट्रीय स्थिति मे काफी फक आ गया था। प्रथम विश्वयुद्ध का अत हो चुका था। जमनी और उसके मित्र राष्ट्रो की शिकस्त हुई। ११ नवम्बर को जमनी और एटेंट देशो के बीच युद्धविराम सधि हुई।

जमनी और आस्ट्रिया-हगरी मे क्राति फूट पडी। होहेनजोल्लन और हैब्सबग राज परिवारो का तख्ता उलट गया।

जमनी और आस्ट्रिया-हगरी की शिकस्त और इन देशो मे क्रातिकारी आदोलन के कारण सोवियत राज्य की स्थिति पर बडा प्रभाव पडा। इन घटनाओ का अन्य यूरोपीय देशो पर क्रातिकारी असर हुआ और इस तरह सोवियत रूस की स्थिति मजबूत हुई।

जमनी की शिकस्त के बाद सोवियत जनतत्र के लिए ब्रेस्त की खसोटू सधि को रद्द करना सम्भव हो गया। १३ नवम्बर, १६१८ को अखिल रूसी केंद्रीय कायकारिणी समिति ने एक विशेष विज्ञप्ति जारी करके, जिसपर लेनिन और स्वेदलोव के हस्ताक्षर थे, ब्रेस्त सधि को रद्द कर दिया।

१६१८ की पतझड मे एस्तोनिया, लाटविया, बेलोरुस, लिथुआनिया, उक्रइना और ट्रास काकेशिया को जमन कब्जे से मुक्त कराने का काम शुरू हुआ। जब ब्रेस्त सधि को रद्द कर दिया गया तो अधिकृत इलाको मे जनता के मुक्ति आदोलन को, जो जमन आक्रमण के साथ ही शुरू हो गया था रूसी जनतत्र का प्रत्यक्ष और व्यापक समथन मिला। मेहनतकश जनता ने जमन दखलदार सेनाओ को मार भगाया और रूसी सवहारा की सहायता से सोवियत सत्ता की स्थापना की।

जमन सनिक क्रातिकारी भावना से अधिकाधिक प्रभावित होते गये। उन्होने अपने अफसरो का आदेश मानने से इनकार कर दिया तथा लाल सेना के जवानो और मजदूरो से भाइचारे का सबध स्थापित किया।

नवम्बर १६१८ मे इस्टलैंड श्रम कम्यून—एस्तोनियाई सोवियत जनतत्र स्थापित हुआ। दिसम्बर मे लाटविया और लिथुआनिया मे सोवियत सत्ता

की घोषणा की गयी। सोवियत रूस ने बाल्टिक जनतंत्रो की स्वतन्त्रता मान ली। १ जनवरी, १९१९ को बेलोरूस मे एक अस्थायी सोवियत सरकार कायम हुई।

इन जनतंत्रो के नेताओ मे प्रमुख राजनयिक थे, जैसे लिथुआनिया की प्रथम सोवियत सरकार के अध्यक्ष मित्स्क्याविचुस-कपसुकास, लाटविया की जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष स्तूचका, बेलोरूस की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्ष म्यासनिकोव तथा एस्तोनियाई बोल्शेविको के नेता किंगिसेप।

उक्रइना में तीव्र संघर्ष चल रहा था। १९१८ मे वहा के राजनीतिक क्षितिज पर अनेक तब्दीलिया हो गयी थी। पाठक को याद होगा कि १९१७ के अंत मे कीयेव में सत्ता पर केंद्रीय रादा (परिषद्) ने अधिकार कर लिया था जिसमें निम्नपूजीवादी राष्ट्रवादी तत्व थे। मजदूरो और किसानो के एक विद्रोह की बदौलत रादा का तख्ता उलट गया। तब रादा के प्रतिनिधि जिनका रुख एटेंट की ओर था, जर्मनी से समझौता कर बैठे। लेकिन जर्मन सेनाओ ने उक्रइना पर दखल करने के बाद रादा को मार भगाया और एक राजतन्त्रवादी स्कोरोपाद्स्की को सिंहासन पर बैठा दिया। उसे "उक्रइना का हेतमन" (हड्मैन) घोषित किया गया। जर्मनी की शिकस्त के बाद निम्नपूंजीवादी राष्ट्रवादी पार्टिया एक बार फिर सामने आयी। उन्होंने स्कोरोपाद्स्की को पदच्युत कर दिया और पेत्लूरा और विन्निचेको के नेतृत्व मे एक डायरेक्टरी स्थापित की। और एक बार फिर उक्रइना की श्रमजीवी जनता ने राष्ट्रवादी प्रतिक्रांति के विरुद्ध संघर्ष का झंडा उठाया। नवम्बर के अंत मे उक्रइनी सोवियत सरकार कायम की गयी। इसमे अर्त्योम, वोरोशीलोव, ज़तोन्स्की, क्वीरिंग, कोत्सूबीस्की आदि शामिल थे। फरवरी १९१९ मे उक्रइनी सोवियत दस्ता ने कीयेव को मुक्त किया।

जर्मनी की शिकस्त से सोवियत राज्य के लिए कुछ नकारात्मक परिणाम भी निकले। इससे एटेंट राज्यो को सोवियत जनतन्त्र के विरुद्ध अपने हस्तक्षेप को और बढाने का मौका मिल गया।

१६ नवम्बर, १९१८ की रात मे दर्रे दनियल और बास्फोरस से होकर ब्रिटिश और फ्रांसीसी युद्धपोत काले सागर मे दाखिल हुए और इनके पीछे-पीछे सेना, शस्त्रास्त्र और गोला-बारूद से भरे जहाज़ भी पहुचे। ओदेस्सा मे फ्रासीसी और यूनानी सेनाए बख्तरबन्द जहाज़ो की ओट मे

उनरी। शत्रुओं ने सवास्तोपोल और तगानरोग से प्राय सभी शहरो का त्याग कर लिया और ट्रास-काकेशिया में महत्वपूर्ण शहरो पर कब्जा किया जस बाकू, तिफलीसी और बतुमी। उन्होने मध्य एशिया में मुख्य भूमिका अदा की और ब्रिटिश ने ट्रास-काकेशिया में। उत्तर और सुदूर पूर्व में हस्तक्षेपकारी शक्तियो का गुमच पहुंचाई गयी।

दुश्मन की शक्तियो ने सोवियत जनतंत्र के विरुद्ध अपनी जग कारवाइया तेज कर दी। इसके अतिरिक्त सफेद गार्ड की शक्तियो का अब और अधिक मात्रा में हथियार और गोला-बारूद मिलने लगा। साइबेरिया और उत्तरी काकेशिया में प्रतिक्रांतिकारी शक्तिया तेजी से बढीं और एक विशाल ताकत बन गयी। गृहयुद्ध एक घमासान और दीर्घकालिक सघर्ष का रूप धारण कर रहा था।

इस दौरान में मशेविक और समाजवादी-क्रातिकारी "सरकारो" को हटाकर उनकी जगह खुली सैनिक तानाशाही कायम की जा रही थी जो अधिक प्रत्यक्ष रूप में अतर्राष्ट्रीय और देशी पूजीपति वर्ग की इच्छा पर अमल कर सके। निम्नपूजीवादी पार्टिया जो "जनवादी" और "समाजवादी" होने का दावा करती थी और कहती थी कि वे एक "मध्यस्थ", "तीसरी" शक्ति है जो दक्षिणपक्ष और वामपक्ष दोनो के अधिनायकत्व का विरोध कर रही हैं, अमल में बिलकुल प्रतिक्राति के शिविर मे शामिल थी और उन्होने जनरलो और एडमिरलो की तानाशाही सत्ता ग्रहण करने में सहायता पहुचाई। ओम्स्क में जारशाही एडमिरल कोल्चाक ने समाजवादी क्रातिकारी कैडेट डायरेक्टरी के स्थान पर एक सैनिक तानाशाही स्थापित की। उसे रूस का "सर्वोच्च शासक" घोषित किया गया। जनरल देनीकिन उपप्रधान और दक्षिण रूस का वास्तविक तानाशाह बन गया। उत्तर मे आर्खागेल्स्क में जनरल मिलर ने अपनी तानाशाही स्थापित की।

लाल सेना की निर्णायक सफलताए

१६१८ के अत से लेकर १६२० के अत तक देश मे लगभग निरतर बडे पैमाने पर लडाई चलती रही। हमला और जवाबी हमलो का रुख बदलता रहता था, मुख्य कारवाई कभी एक मोर्चे पर होती और कभी दूसरे पर, मगर सघर्ष की तीव्रता मे कभी कोई कमी नही हुई।

१९१८ के अंत और १९१९ के शुरू मे दक्षिण मे सबसे महत्वपूर्ण लडाइया हुइ। १९१९ के वसत म सोवियत सेनाओ ने घमासान लडाइयो के बाद क्रास्नोव की सफेद कज्जाक रेजिमेटो को खदेड दिया और दोन क्षेत्र को मुक्त कर लिया। लाल सेना और गुरिल्ला दस्तो ने दक्षिण उक्रइना म हस्तक्षेपकारी शक्तिया को भी अनेक शिकस्ते दी।

इस बीच पूर्वी मोर्चा अधिकाधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा था। जाडा मे वहा कुछ मुख्य लडाइया हुइ मगर निर्णायक कारवाई १९१९ के वसत म हुई। मार्च के शुरू मे उराल की विशाल नदिया अभी जमी हुई बर्फ की सख्त परत से बिलकुल ढकी हुई थी। ४ मार्च, १९१९ को प्रथम सफेद गार्ड दस्ता ने पेम नगर के दक्षिण मे कामा नदी को पार किया और पश्चिम की ओर बढने लगे। उत्तरी उराल के घने जगलो से लेकर वोल्गा तटवर्ती दक्षिणी स्तेपी तक २,००० किलोमीटर का सारा पूर्वी मोर्चा सरगम हो उठा। १९१९ के वसत मे यही मुख्य मोर्चा बन गया।

वहा एडमिरल कोल्चाक की विशाल सेना (कोई ४ लाख सैनिक और अफसर) लड रही थी। विदेशी साम्राज्यवादियो ने उदारतापूर्वक कोल्चाक को हथियार, गोला-बारूद और वरदी मुहैया किया था। १९१९ मे ही ४ लाख राइफलें, १ हजार मशीनगनें, तोपें, कारतूस, गोले, वरदी और भी बहुत कुछ सयुक्त राज्य अमरीका से आया था।

चर्चिल के एक वक्तव्य के अनुसार अग्रेजो ने १ लाख टन सामरिक सामान साइबेरिया भेजा था। फ्रास ने १,७०० मशीनगनें, ४०० तोपें और ३० विमान भेजे थे। जापान से १०० मशीनगनें, ७०,००० राइफले और १,२०,००० वरदी के सेट आये थे।

कोल्चाक की सारी सनिक कारवाइयो का निदेशन दरअसल वैदेशिक जनरल कर रहे थे। जनवरी, १९१९ के एक विशेष समझौते के अनुसार कोल्चाक के लिए अपनी सैनिक कारवाइया का समाकलन पूर्वी रूस मे हस्तक्षेपकारी शक्तियो के सर्वोच्च सेनापति, फ्रासीसी जनरल जनिन के साथ करना जरूरी था। ब्रिटिश जनरल नाक्स (जिसकी ट्रेन म काल्चाक को १९१८ मे विदेश से साइबेरिया लाया गया था) कोल्चाक की सेनाओ को सामान सप्लाई करनेवाले विभाग का प्रधान था।

प्रारम्भ मे कोल्चाक की सेनाओ को कई महत्वपूर्ण और अपेक्षाकृत

तूला के कम्युनिस्ट मजदूर मार्च को रवाना

आसान सफलताए प्राप्त हुईं। अप्रैल १६१६ के मध्य तक पूर्वी मोर्चे पर तनाव अपनी चरम सीमा पर पहुच गया था। वसत के आक्रमण के दौरान कोल्चाक की सेनाओ ने ३,००,००० वर्ग किलोमीटर इलाके पर कब्जा कर लिया। यह इलाका इटली के बराबर था। प्रतिक्रातिकारी वोल्गा के निकट पहुच रहे थे। उनके अगले दस्ते काजान, सिवीस्क और समारा से केवल ८०–१०० किलोमीटर दूर रह गये थे।

कम्युनिस्ट पार्टी ने नारा दिया "कोल्चाक के खिलाफ लडाई म एडी चोटी का जोर लगा दो!"

१२ अप्रल को "प्राव्दा" ने "पूर्वी मोर्चे की स्थिति के सबध म रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति की प्रतिपत्तिया" प्रकाशित की। इन्ह लेनिन ने लिखा था। इनमे कहा गया था "पूर्वी मोर्चे पर कोल्चाक की सफलताए सोवियत जनतत्र के लिए अत्यत गम्भीर खतरा पैदा कर रही है। कोल्चाक को परास्त करने के लिए हमे जान लडा देनी चाहिए।"*

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २६, पृष्ठ २५१

कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति ने सभी पार्टी सगठनो को आदेश दिया कि "देश की रक्षा के लिए मजदूर वग के और व्यापक हिस्सो का सक्रिय समयन प्राप्त करने मे" पूरा जोर लगा दें।*

जो कदम उठाये गये उनके कारण हथियारो का उत्पादन बहुत बढ गया। उदाहरण के लिए तुला मे मई म गोला-बारूद का उत्पादन १६१६ के स्तर तक पहुच गया था और जुलाई मे उससे बढ गया था। पेत्रोग्राद मे १६१६ के शुरू मे जो २६४ कारखाने काम कर रहे थे उनमे ६० प्रतिशत केवल मोर्चे का आडर पूरा करने के लिए काम हो रहा था। पत्रोग्राद के मजदूरो ने प्रतिरक्षा म महत्वपूण योगदान किया। उहाने तोपें, बारूद, गोले, जूते, वरदी कोट आदि पैदा किये।

अपने श्रम द्वारा लाल सेना की हर प्रकार सहायता करने की मजदूरो की इच्छा का सबसे उल्लेखनीय इजहार कम्युनिस्ट सुब्बोतनिक** थे जिनकी शुरूआत अप्रैल-मई १६१६ में हुई। अप्रल १६१६ के प्रारम्भ मे मास्को के उपनगर क्षेत्र – मास्को काजान रेलवे के सोतिरोवोचनाया स्टेशन – मे स्थित एक डिपो का कम्युनिस्ट सगठन ने जनतत्र की सैनिक स्थिति पर विचार करने के लिए अपनी बैठक बुलायी। उस समय कोल्चाक वोल्गा क्षेत्र पर आक्रमण कर रहा था। कम्युनिस्ट रेलवे मजदूरो ने एक मत से निश्चय किया कि उनकी सारी कोशिशें दुश्मन पर विजय प्राप्त करने के लिए अर्पित होगी और पार्टी सगठन के अध्यक्ष फिटर बुराकोव द्वारा प्रस्तुत एक प्रस्ताव स्वीकार किया कि १२ अप्रैल, शनिवार को, काम का समय खत्म हो जाने के बाद भी वे काम करते रहेंगे और अतिरिक्त इजनो की मरम्मत करेंगे।

१२ अप्रल की शाम को तरह कम्युनिस्ट और दो हमदद काम करने लगे। वे सारी रात बिना विश्राम काम करते रह और उन्होने तीन रेलवे इजनो की पूरी मरम्मत की।

सोतिरोवोच्नाया स्टेशन के रेलवे मजदूरो की पहलकदमी सुनकर मास्को-काजान रेलवे जिले के सभी कम्युनिस्टो ने व्यापक पैमाने पर सुब्बोतनिक सगठित करने का निश्चय किया। एक पार्टी बैठक मे

---

* वही

** छुट्टी के दिन स्वेच्छापूवक बिना वेतन काम।

निम्नलिखित फैसला किया गया "चूकि कम्युनिस्टो को क्राति की सफलता के लिए स्वास्थ्य और प्राण कुछ भी देने से हिचकना नही चाहिए इसलिए इस काम को बिना मुआवजा करना है। कम्युनिस्ट सुब्बोत्निकों की प्रथा पूरे जिले मे जारी की जायेगी और उस समय तक जारी रहेगी जब तक कोल्चाक पर पूर्ण विजय न प्राप्त हो जाये।"*

इस निश्चय के अनुसार प्रथम आम सुब्बोत्निक १० मई, १९१९ को आयोजित किया गया जिसमे २०५ कम्युनिस्टो ने भाग लिया। उस दिन मजदूरो ने ४ रेलवे इजनो और १६ डिब्बो की मरम्मत की, और कोई १५० टन सामान उतारा। श्रम उत्पादिता साधारण दिनो से ढाई गुना अधिक थी।

लेनिन ने प्रथम कम्युनिस्ट सुब्बोत्निका को "एक शानदार शुरुआत" कहा। लेनिन ने लिखा कि कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक "एक ऐसे परिवर्तन की शुरूआत है जो पूजीपति वर्ग का तख्ता उलटने से भी अधिक कठिन, अधिक ठोस, अधिक बुनियादी तथा अधिक निर्णायक है, क्योकि यह स्वय अपनी रूढिवादिता, अनुशासनहीनता तथा निम्नपूजीवादी अहकार पर विजय है, उन आदतो पर विजय है जो अभिशप्त पूजीवाद मजदूर तथा किसान के लिए विरासत मे छोड गया था। जब इस विजय को सुदृढ बना लिया जायेगा, तब, और केवल तब ही नये सामाजिक अनुशासन समाजवादी अनुशासन की रचना हो सकती है, तब और केवल तब ही पूजीवाद मे फिर लौट जाना असभव हो जायेगा, कम्युनिज्म सचमुच अपराजेय हो जायेगा"।**

सुब्बोत्निक विचार फैलता गया—शीघ्र ही सोवियत जनतत्र मे हर जगह उनका आयोजन किया जा रहा था। कम्युनिस्टो की मिसाल देखकर गैरपार्टी मेहनतकश भी शामिल होने लगे और इसमे हिस्सा लेनेवालो की सख्या बढी।

सोवियत राज्य ने पूर्वी मोर्चे को हर सभव तरीके से मजबूत बनाया। मास्को पेत्रोग्राद और नौ केंद्रीय गुबेर्नियाओ से श्रमजीवी जनता के नये जत्थो को लाल सेना मे भर्ती किया गया। केंद्रीय रूस मे मजदूरो और

---

*ब्ला० इ० लेनिन सग्रहीत रचनाए खड २९, पृष्ठ ३८०
**वही, खड २९, पृष्ठ ३७९–३८०

श्रमजीवी किसानो के आने से पूर्वी मोर्चे की सोवियत सेनाओ को नया बल मिला। पूर्वी मोर्चे को सबसे उत्कृष्ट और त्यागी कार्यकर्ताओ द्वारा बल पहुचाने के लिए पार्टी, कोम्सोमोल तथा ट्रेड-यूनियन सदस्यो की व्यापक लामबदी शुरू की गयी। १५,००० कम्युनिस्ट, ३,००० कोम्सोमोल सदस्य और २५,००० ट्रेड-यूनियनो के सदस्य उस मोर्चे की सेनाओ मे शामिल होने के लिए रवाना हुए।

अप्रैल, १९१९ के उत्तरार्द्ध मे लाल सेना ने कोल्चाक के खिलाफ एक निर्णयात्मक आक्रमण की तैयारी की। पूर्वी मोर्चे के दक्षिणी दल ने फ्रूजे और कूइबिशेव के नेतृत्व मे अप्रैल के अतिम दिनो मे एक जवाबी हमला किया। वोल्गा पार के मैदानो मे, दक्षिण उराल की तराइयो मे, बुगुरुस्लान, बुगुल्मा, बेलेबेय, उफा के निकट घमासान लडाइया हुइ। कोल्चाक के सबसे बढिया दस्तो को परास्त कर दिया गया।

कोल्चाक की शिकस्त मे एक बडी भूमिका २५वी डिवीजन ने अदा की जिसके कमाडर चापायेव थे। वह गृहयुद्ध के सबसे जनप्रिय वीर बन गये। २५वी डिवीजन के कमिसार फूर्मानोव थे जो आगे चलकर एक प्रमुख लेखक बने। दक्षिणी दल की बुनियादी हमलावर शक्ति के रूप मे चापायेव की डिवीजन ३५० किलोमीटर लम्बे रास्ते पर लडती हुई आगे बढी।

कोल्चाक के खिलाफ जब लाल सेना का आक्रमण पूरे जोरो पर था तो त्रोत्स्की ने जो उन दिनो जनतत्र की क्रातिकारी सैनिक परिषद का अध्यक्ष था, उराल मे बेलाया नदी के किनारे-किनारे रुक जाने, कोल्चाक की सेनाओ का और अधिक पीछा न करने और सेना को दक्षिण और पश्चिम की ओर मोडने का प्रस्ताव रखा। कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति ने इस योजना को अस्वीकार कर दिया क्योकि इसकी बदौलत उराल का इलाका अपनी फैक्टरियो और रलवे के जाल सहित कोल्चाक के हाथो मे रह जाता, और हस्तक्षेपकारियो की सहायता से उसे अपनी शक्तियो को पुन सगठित करने का अवसर मिल जाता। केद्रीय समिति ने आदेश जारी किया कि आक्रमण जारी रखा जाये और कोल्चाक को उराल पर्वतमाला के पीछे साइबेरियाई स्तेपी तक खदेड दिया जाये।

कोल्चाक के खिलाफ आक्रमण नये जोश से जारी रहा। जून–जुलाई १९१९ मे सोवियत सेनाओ ने उराल के बुनियादी केंद्रो–पेर्म, येकातेरिनबुर्ग और चेल्याबिन्स्क को मुक्त कर लिया, और अगस्त तक वे तोबोल नदी के किनारे पहुच गयी थीं। कोल्चाक की बची-खुची सेनाए पूर्व की ओर पीछे हटती गयी। लाल सेना को एक शक्तिशाली गुरिल्ला आदोलन का समर्थन प्राप्त था जो कोल्चाक के मोर्चे के पिछवाडे विकसित हो गया था। बोल्शेविको के नेतृत्व मे साइबेरिया और सुदूर पूर्व के मजदूरो और किसानो ने बडी सख्या मे गुरिल्ला दस्ते सगठित किये थे जिनके सदस्यो की कुल सख्या अधूरे आकडो के अनुसार १,४५,००० थी।

लाल सेना और गुरिल्ला दस्ते कोल्चाक की शक्तियो पर निरतर वार करते रहे। १९१९ के अत तक कोल्चाकी सेना के पैर बिलकुल उखड चुके थे। स्वय कोल्चाक गिरफ्तार कर लिया गया और क्रातिकारी समिति के फैसले के अनुसार उसे इर्कूत्स्क मे गोली मार दी गयी।

इस बीच एटेंट की नीति मे कुछ परिवर्तन हो चुके थे। जर्मनी की शिकस्त के फौरन बाद, १९१८ के अत और १९१९ के वसत मे एटेंट ने खुले हस्तक्षेप की नीति अपनायी थी। यह नीति असफल सिद्ध हुई। एटेंट द्वारा उतारी गयी सेनाए क्रातिकारी विचारो से प्रभावित होने लगी। उत्तर और सुदूर पूर्व मे अमरीकी और ब्रिटिश सेनाओ मे असतोष की लहर दौड रही थी। ओदेस्सा मे फ्रासीसी नौसैनिको ने विद्रोह कर दिया। खुल्लम-खुल्ला हस्तक्षेप की नीति मे एटेंट के लिए खतरा पैदा होने लगा। पूजीवादी देशो मे श्रमजीवी जनता ने जन सभाए, प्रदर्शन और हडताल की और नारा दिया कि "हस्तक्षेप बद करो! सोवियत रूस से हाथ हटाओ!"

१९१९ मे और १९२० के प्रारभ मे एटेंट को मजबूर होकर सोवियत रूस के अनेक क्षेत्रो से अपनी सेनाए वापस हटानी पडी। यह एटेंट पर एक महत्वपूर्ण विजय थी। लेनिन ने कहा "हमने उनको सैनिको से वचित कर दिया।" मगर हस्तक्षेप बद नही हुआ। सुदूर पूर्व मे अभी जापान के बडे सैन्यदल मौजूद थे और एटेंट ने सफेद गार्ड सेनाओ को हथियारो और गोले-बारूद की सहायता बढा दी।

१९१९ के उत्तरार्द्ध मे दक्षिण मोर्चा कारवाई का मुख्य क्षेत्र बन गया। जनरल देनीकिन की सेना देश के हृदय स्थल की ओर बढी आ

रही थी। देनीकिन की सेना पश्चिमी शक्तियो द्वारा हथियारबन्द और सुसज्जित की गयी थी। उसके बारे मे चर्चिल ने कहा कि "यह रही मेरी सेना!"

१६१६ की गमिया तक देनीकिन ने पूरे कुबान, तेरेक और दोन क्षेत्र, क्रीमिया और द्नेपर नदी के पूर्व उक्रइना के भाग पर दखल कर लिया था। दोनेत्स बेसिन के लिए लडाई चल रही थी। देनीकिन का मोर्चा द्नेपर से वाल्गा तक फैला हुआ था और दिनोदिन उत्तर की ओर बढता जा रहा था। देनीकिन ने घोषणा की कि उसका उद्देश्य मास्को पर दखल करना है। देनीकिन की सबसे बढिया डिवीजनें—सफेद स्वयसेवक सेना जिसमे अधिकाश प्रतिक्रातिकारी अफसर शामिल थे, मोर्चे के मध्य मे खारकोव—कूर्स्क—ओर्योल—तूला—मास्को के रास्ते बढ रही थी। ये डिवीजनें जो देनीकिन की शक्तियो का बुनियादी केद्रक थी—एक बलवान शक्ति थी।

देनीकिन को सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन और फ्रास द्वारा शस्त्रास्त्र, गोला-बारूद, वरदी और रुपये-पैसे की जो भारी सहायता मिल रही थी, उसकी बदौलत उसने सितम्बर—अक्तूबर १६१६ मे महत्वपूण सफलताए प्राप्त की। अक्तूबर, १६१६ के शुरू मे उसकी सेनाओ ने वोरोनेज तथा ओर्योल पर दखल कर लिया और तूला गुबेर्नियाा मे प्रवेश किया। सोवियत राज्य की राजधानी मास्को के लिए प्रत्यक्ष खतरा उत्पन्न हो गया। शत्रुओ न नवजात सोवियत जनतत्र के विरुद्ध जो हमले किये थे उनमे यह सबसे बडा और सबसे खतरनाक हमला था।

जुलाई, १६१६ मे ही कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति के एक अधिवेशन ने लेनिन द्वारा लिखित पार्टी सगठनो के नाम एक पत्र स्वीकार किया जिसका शीर्षक था "देनीकिन के खिलाफ लडाई मे एडी-चोटी का जोर लगा दो!"* इसमे इस बात पर बल दिया गया था कि क्राति की एक सबसे नाजुक घडी आ पहुची है और देनीकिन को शिकस्त देने के लिए सघष का एक जुझारू, ठोस कायक्रम पेश किया गया है। "सबसे पहले और बढकर सारे कम्युनिस्टो को, उनके साथ सारे हमदर्दों को, सभी ईमानदार मजदूरा तथा किसानो को, समस्त सोवियत कमचारियो को सनिक कार्यकुशलता का परिचय देना चाहिए और अपने काम, अपने

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २६, पृष्ठ ४०३

प्रयासों तथा अपने ध्यान को अधिकतम हद तक सीधे-सीधे युद्ध-संबंधी कार्यभारों पर केंद्रित करना चाहिए। शत्रु ने सोवियत जनतंत्र को घेर रखा है। उसे केवल शब्दों में ही नहीं, बल्कि व्यवहार में भी एक सैनिक छावनी बन जाना चाहिए।" इस सबसे खतरनाक घड़ी में सारे जनगण और पार्टी द्वारा पूरा जोर लगाकर प्रयत्न करने से ही सोवियत राज्य को बचाया जा सकता था। लेनिन ने इसी प्रकार प्रयत्न करने का आवाहन किया।

लेनिन द्वारा तैयार किये गये कार्यक्रम के आधार पर लामबन्दी पूरे जोरों से शुरू की गयी। सैनिकों से भरी ट्रेनें दक्षिण मोर्चे की ओर जाने लगीं और हमेशा की तरह इस बार भी सबसे पहले जानेवालों में कम्युनिस्ट और कोम्सोमोल के सदस्य थे। १९१९ की पतझड़ में १५,००० कम्युनिस्ट और १०,००० कोम्सोमोल सदस्य मोर्चे पर पहुंचे। उन दिनों कोम्सोमोल की अनेक जिला समितियों के कार्यालयों के दरवाजों पर लिखा होता था "जिला समिति बंद है। सब मोर्चे पर गये।"

पिछवाड़े के संगठनों के काम को जंगी आधार पर रख दिया गया और जिन संस्थाओं के काम की जरूरत से कोई संबंध नहीं था, उनका काम कम या बिलकुल बंद कर दिया गया। इस तरह जो लोग खाली हुए उन्हें मोर्चे पर भेज दिया गया।

दक्षिण मोर्चे के नेतृत्व को मजबूत किया गया। येगोरोव को दक्षिण मोर्चे का कमाण्डर नियुक्त किया गया। स्तालिन क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य नियुक्त हुए। ओर्जोनिकीद्जे को १४वीं सेना की क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य की हैसियत से मोर्चे पर भेजा गया। वोरोशीलोव और श्चादेंको प्रथम सवार सेना की क्रांतिकारी सैनिक परिषद के सदस्य थे। यह सेना उस समय बुद्योन्नी की कमान में थी और उसने दक्षिण की विजय में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

नई योजना बनाई गयी जिसके अनुसार [illegible] के विरुद्ध मुख्य हमला खार्कोव–दोनबास के क्षेत्र में किया जाना था। उधर [illegible] और [illegible] में [illegible] पर [illegible] था।

एक [illegible] डिवीजन [illegible] तथा [illegible] को [illegible] बनाई गयी। [illegible] डिवीजन [illegible]

लड़ाइयों मे अपना लोहा मनवा लिया था, लेनिन के व्यक्तिगत आदेश पर पश्चिम से दक्षिण मार्चे पर भेजी गयी।

लाल सेना ने ओर्योल से वारोनेज तक लगभग ३०० किलोमीटर लम्बे मार्चे पर एक निणायक हमला किया। बुद्योनी की सवार सेना ने सफेद गार्ड जनरलो शकुरो और मामोतोव की शक्तियो को वोरोनेज के निकट खदेड दिया। २४ अक्तूबर को लाल रिसाले ने गुप्त कम्युनिस्ट सगठन के नेतृत्व मे वोरोनेज के मजदूरो की सहायता से शहर पर धावा बोलकर अधिकार कर लिया। ओर्योल--क्रोमी क्षेत्र मे जबदस्त लडाइया के बाद देनीकिन की स्वयसेवक सेना चकनाचूर हो गयी।

भागते शत्रु का पीछा करते हुए सोवियत डिवीजनो ने दोनेत्स बेसिन को मुक्त किया और जनवरी, १६२० मे अजोव समुद्र के तट पर जा पहुची। रोस्तोव को मुक्त करने के बाद लाल सेना के दस्ते उत्तरी काकेशिया मे जा पहुचे। देनीकिन अपनी फौज को छोड-छाड रूस से भाग गया। देनीकिन की सेनाओ का एक बहुत छोटा सा भाग पीछे हटते हटते क्रीमिया जाने मे सफल हुआ। उत्तरी काकेशिया को मुक्त करने के बाद सोवियत सेनाए ट्रास-काकेशिया तक आ पहुची।

१६१६ म पेत्रोग्राद के निकट जो लडाइया हुईं, वे भी महत्वपूण थी। जनरल युदेनिच की सफेद गार्ड साल मे दो बार इस शहर पर धावा बोल चुकी थी। पहला हमला मई, १६१६ के मध्य मे शुरू हुआ। इसी के साथ क्रास्नाया गोर्का और सेराया लोशद के तटवर्ती किलो मे प्रति-क्रातिकारी विद्रोह हुए।

प्रतिक्रातिकारी बगावत स्वय शहर मे रचा जा रही थी। परिस्थिति बहुत गम्भीर हो गयी। पेत्रोग्राद मे घेर की स्थिति घोषित कर दी गयी। केद्रीय समिति के आवाहन पर पेत्रोग्राद के मजदूरो ने अपने श्रेष्ठतम प्रतिनिधि मार्चे पर भेजे। कोई १३,००० पेत्रोग्राद मजदूरा न जल्दी जल्दी सनिक ट्रेनिंग लेकर शहर की रक्षा करनवाली ७वी सेना की रंजिमेटा की रिक्त पक्तियो को पूरा किया।

१३ जून को बाल्टिक बेडे के युद्धपोत "आन्द्रेई पेर्वोजवानी' और "पेत्रोपाव्लोव्स्क" ने समुद्र मे प्रवेश किया और बगावती क्रास्नाया गोर्का किले पर गोलाबारी शुरू की। इसके बाद क्रास्नाया गोर्का पर स्थल हमला किया गया। १६ जून की रात को लाल सेना ने क्रास्नाया गोर्का पर

दखल कर लिया। चन्द घटा बाद बगावती सेनाम्रा लोगद किले ने हथियार डाल दिये।

पेत्रोग्राद के निकट स्थिति म बुनियादी परिवतन हो गया था। जून के उत्तराद्ध मे युदेनिच की सेनाम्रा को परास्त कर दिया गया।

लेकिन पतझड म्रात म्राते युदेनिच ने विदेश की सहायता से पुन अपना आक्रमण शुरू किया। अक्तूबर १६१६ के मध्य मे सफेद गाड सनाए पत्रोग्राद के निकट के इलाका म घुस मायी। नगर के लगभग सभी कम्युनिस्ट मोर्चे पर गये हुए थे। १६ वष से अधिक म्रायु के सभी कोम्सोमोल सदस्या ने पेत्रोग्राद की रक्षा मे हथियार उठाया।

पूल्कोवो की पहाडो पर जो पत्रोग्राद की दक्षिणी बाहरी सीमा पर आखिरी प्राकृतिक रोक है, पाच दिन और रात घमासान लडाई होती रही। इस बार युदेनिच की धज्जिया पूरी तरह बिखर गयी। उसकी बची-खुची सेना भागकर एस्तोनिया चली गयी।

कोल्चाक, देनीकिन और युदेनिच पर विजय प्राप्त करने के बाद सोवियत जनतत्र को कुछ दिन (लगभग तीन महीने) दम लेने की मुहलत मिल गयी। लेकिन १६२० के वसन्त मे फिर बडे जोरा से लडाई शुरू हुई। इस बार पोलैड ने—जहा जमीदारा-पूजीपतियो का एक राष्ट्रवादी गुट सत्तारूढ था—सोवियत जनतत्र पर हमला किया। इसके अलावा देनीकिन की सेना के बचे हिस्से को "काले बैरन" जनरल म्रागेल द्वारा क्रीमिया मे एकत्रित करके पुन सक्रिय बनाया जा रहा था।

एटेंट के सैनिक क्षेत्रो ने दिल खालकर पोलिश सेना की सहायता की। उसे हथियार, वरदी और रुपया-पसा सब कुछ दिया। अपन सनिक सलाहकार भी भेजे। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद यूरोप मे अमरीका का जो शस्त्र भडार बच रहा था उससे बडी मात्रा मे जगी सामान पोलिश सेना को मिला। पोलिश सनाम्रा की कारवाइयो और सामरिक नेतत्व मे निर्णायक भूमिका फ्रासीसी सैनिक प्रतिनिधि मडल ने अदा की।

सोवियत सरकार ने अपनी शातिपूण नीति के अनुसार बार-बार पोलैंड से शाति वार्ता करने का सुझाव रखा। सोवियत सरकार ने बाकायदा घोषणा की कि वह पोलिश गणतत्र की आजादी और प्रभुसत्ता को बिना शत स्वीकार करती है और पोलड के जनगण और सोवियत रूस म अत्यत शातिपूण और मत्रीपूण सबध कायम करना चाहती है।

सोवियत सरकार ने ऐलान किया कि केवल एटेंट के साम्राज्यवादी जो शातिपूर्ण समझौते को हर तरह से तोड रहे हैं, रूस और पोलैंड को लडाना चाहते है। शाति के उद्देश्य से सोवियत राज्य भूक्षेत्र सम्बन्धी समस्या मे कई रिआयते देने को तैयार था। लेकिन पोलिश राज्य के वस्तुत प्रधान पिलसूदस्की ने सोवियत सरकार के तमाम सुझावो को रद्द कर दिया।

२५ अप्रैल, १६२० को सफेद पोलिश फौजो ने उक्रइना पर हमला बोल दिया। मई मे वे देश के अदर दूर तक घुस आयी और ६ मई को कीयेव पर कब्जा कर लिया।

फिर व्रागेल ने क्रीमिया से आक्रमण शुरू किया। उसकी सेनाए दोन के क्षेत्रो, उक्रइना और कुबान के लिए खतरा बनी हुई थी। व्रागेल की सेना कोल्चाक, देनीकिन और युदेनिच से भी अधिक मात्रा मे ब्रिटिश-फासीसी अमरीकी परोपकारियो द्वारा सुसज्जित थी।

सैनिक स्थिति फिर नाजुक हो उठी। फिर यह जरूरी हो गया कि मोर्चे के लिए पूरा जोर लगा दिया जाये। १६२० मे २५,००० कम्युनिस्टो को पोलिश और व्रागेल के मोर्चे पर भेजा गया। प्रथम सवार सेना उत्तरी काकेशिया से १ हजार किलोमीटर का फासला तय करके आ पहुची। और पूव से एक बेहतरीन सोवियत डिवीजन – चापायेव की डिवीजन आ गयी।

पोलैंड से युद्ध दक्षिण पश्चिम दिशा मे (उक्रइना मे) और पश्चिम की दिशा म (बेलोरूस मे) हुआ। दक्षिण पश्चिम मे (मोर्चे के कमाडर – येगोरोव, क्रातिकारी सैनिक परिपद के सदस्य – स्तालिन) महत्वपूण भूमिका प्रथम सवार सेना ने अदा की जिसकी कमान बुद्योनी और वोरोशीलोव कर रहे थे। ५ जून १६२० को उसने दुश्मन के मोर्चे को तोड डाला और पश्चिम की ओर बढी। मध्य अगस्त मे वह पश्चिम उक्रइना के सबसे बडे शहर ल्वोव के पास पहुच गयी और उसपर धावा करने की तैयारिया करने लगी।

४ जुलाई को सुबह सवेरे पश्चिमी मोर्चे की सेनाओ ने आक्रमण शुरू किया (मोर्चे के कमाडर – तुखाचेव्स्की, क्रातिकारी सैनिक परिपद के सदस्य – उनश्लिख्त)। पश्चिमी मोर्चे की सेनाओ ने बेलोरूस को मुक्त किया और वारसा के निकट पहुचकर विस्तुला नदी के निकट लडाई छेड दी।

लेकिन विस्तुला पर सोवियत सेनाओ को सफलता नही हुई और उन्हें पीछे हटना पडा।

अक्तूबर, १९२० मे रीगा मे पोलैंड के साथ एक प्रारम्भिक शांति सधि हुई। पोलिश शासक क्षेत्रा का दूनपर के पश्चिम उक्रइना और बेलोरूस पर से अपना दावा उठाना पडा। फिर भी गलीशिया (पश्चिमी उक्रइना) और बेलोरूस के पश्चिमी भाग पर पोलड का दखल कायम रह गया।

इस बीच दक्षिण मे व्रागेल से जबदस्त लडाई चलती रही। व्रागेल दोनेत्स बेसिन तक आ पहुचा जिससे कोयला का यह सबसे महत्वपूण क्षेत्र खतरे मे पड गया।

अक्तूबर, १९२० के अंत मे दक्षिणी मोर्चे की सोवियत सेनाओ ने (मोर्चे के कमाडर—फ्रूजे, क्रातिकारी सनिक परिपद के सदस्य—गूसेव और बेला कुन) व्रागेल को लगातार कई शिकस्ते दी और उसे दक्षिण उक्रइना से भगा दिया। व्रागेल की सेना क्रीमिया हट गयी।

सोवियत सेनाओ को अब आखिरी जोर लगाना था—क्रीमिया के रास्ते की मोर्चेबदिया को तोडना और व्रागेल की सेना का अत करना था। यह कोई आसान काम नही था। क्रीमियाई प्रायद्वीप महाद्वीप से लम्बी, तग पेरेकोप और चोगार स्थलडमरूमध्य और अरावात की भूसधि के जरिये जुडा हुआ है। विश्वयुद्ध के अनुभव प्राप्त वैदेशिक विशेषज्ञो के निदेशन मे उस जगह मजबूत मोर्चेबदिया खडी कर दी गयी थी।

लाल सेना के रास्ते मे कटीले तारो का जाल कतार दर कतार बिछा हुआ था खदके, मिट्टी की मेडे और खाइया थी। जमीन के चप्पे चप्पे पर जबदस्त गोलाबारी की जा सकती थी। शत्रु को विश्वास था कि क्रीमिया का रास्ता पार करना असम्भव है।

फ्रूजे ने क्रीमिया मे व्रागेल के दस्तो को परास्त करने के लिए एक योजना बनाई। यह निश्चय किया गया कि पेरेकोप और चोगार की मोर्चेबदियो पर धावा किया जाये और साथ ही पेरेकोप और चोगार स्थलडमरूमध्य के बीच सिवाश की दलदली पट्टी — सडे समुद्र—को जिसे शत्रु अलघ्य मानता था, पार किया जाये।

७ से ८ नवम्बर १९२० की रात को महान अक्तूबर समाजवादी क्राति की तीसरी जयती के अवसर पर सोवियत सेना ने हमला शुरू किया।

पतझड की अंधेरी रात्रि म लाल रजिमेंटें सिवाश के दलदल और नमकीन झीना को पार करने लगी। दलदली कीचड मे घोडे और तोपगाडिया फसी जा रही थी। बर्फीली हवा चल रही थी और सैनिको के भीगे कपडे जमने लगे थे। बीच रात म लाल सेना के अगुआ दस्ते क्रीमिया के उत्तरी हिस्से मे सफेद गाड की मोर्चेबदिया के निकट पहुचे। शत्रु की गोलियो की तूफानी बौछार म धावामार दस्ता जिसम लगभग सब के सब कम्युनिस्ट थे, आगे बढा। सफेद गाड दस्ता को पीछे धकेलकर सोवियत सैनिका ने क्रीमियाई तट पर अपना दखल जमा लिया।

८ नवम्बर को परेकोप मोर्चेबदिया पर प्रहार शुरू हुआ। कई घटा तक ५१वी पैदल सेना डिवीजन के दस्ता ने शत्रु की तूफानी गोलाबारी का सामना करते हुए अभेद्य तुरत्स्की मेड पर हमला जारी रखा। पेरेकोप मोर्चेबदिया पर कब्जा कर लिया गया। इसके बाद चोगार स्थलडमरूमध्य पर शत्रु के मोर्चे मे दरार पड गयी। प्रथम सवार सेना की रजिमटें उस म घुस पडी।

व्रागेल की सेना को मुह की खानी पडी। इसके बचे-खुचे हिस्स जल्दी-जल्दी ब्रिटिश और फासीसी जहाजो पर लदकर क्रीमिया से भाग निकले। इस विजय को सारे देश म मनाया गया। "प्राव्दा" ने सोवियत जनगण की इस विजय की खबर पर लिखा "निस्स्वाथ वीरता और बहादुराना प्रयास से क्राति के ओजस्वी सपूता न व्रागेल का खदेड दिया। लाल सेना, श्रम की महान सेना जिन्दाबाद!"

युद्धकालीन कम्युनिज्म

१९१८–१९२० मे देश के रक्षाथ साधनो को जुटाने के लिए सोवियत सरकार ने अनेक असाधारण कारवाइया की जिन्हे युद्धकालीन कम्युनिज्म कहा जाता है।

इस विशेष नीति का निरूपण धीरे-धीरे हुआ। इसकी शुरुआत १९१८ के मध्य म हुई। इसका स्वरूप अस्थायी था और गृहयुद्ध और अत्यत कठिन सैनिक स्थिति के कारण इसको लागू करना जरूरी हो गया था। सोवियत जनतत्र को अपनी सुरक्षा का सुचारु प्रबध करने के साथ ही साथ आर्थिक तबाही को भी दूर करने की जरूरत पडी जो जारशाही और

लेकिन विस्तुला पर सोवियत सेनाओं को सफलता नहीं हुई और उन्हें पीछे हटना पडा।

अक्तूबर, १९२० मे रीगा मे पोलैंड के साथ एक प्रारम्भिक सधि हुई। पोलिश शासक क्षेत्रा का दुनेपर के पश्चिम उक्रइना बेलोरूस पर से अपना दावा उठाना पडा। फिर भी गलीशिया (उक्रइना) और बेलोरूस के पश्चिमी भाग पर पोलैंड का दखल रह गया।

इस बीच दक्षिण मे व्रागेल से जबदस्त लडाई चलती दोनेत्स बेसिन तक आ पहुचा जिससे कोयला का यह सबसे खतरे मे पड गया।

अक्तूबर, १९२० के अत मे दक्षिणी मोर्चे की सोवियत (मोर्चे के कमाडर–फ्रूजे, क्रातिकारी सैनिक परिषद के सदस्य बेला कुन) व्रागेल को लगातार कई शिकस्ते दी और उसे दक्षिण से भगा दिया। व्रागेल की सेना क्रीमिया हट गयी।

सोवियत सेनाओं को अब आखिरी जोर लगाना था– रास्ते की मोर्चेबदियो को तोडना और व्रागेल की सेना था। यह कोई आसान काम नही था। क्रीमियाई प्रा लम्बी, तग पेरेकोप और चोगार स्थलडमरूमध्य और के जरिये जुडा हुआ है। विश्वयुद्ध के अनुभव प्राप्त निदेशन मे उस जगह मजबूत मोर्चेबदिया खडी

लाल सेना के रास्ते मे कटीले तारा का हुआ था, खदके, मिट्टी की मेडें और खा पर जबदस्त गोलाबारी की जा सकती क्रीमिया का रास्ता पार करना असम

फ्रूजे ने क्रीमिया मे व्रागेल योजना बनाई। यह निश्चय किया मोर्चेबदियो पर धावा किया जाये स्थलडमरूमध्य के बीच सिवाश की शत्रु अलघ्य मानता था पार किया

७ से ८ नवम्बर १९२० की रात क्राति की तीसरी जयती के अवसर पर

ग्रौर अगले साल की बुवाई के लिए कितने अनाज की जरूरत है और उन्हे अपने मवशी के लिए कितना चारा चाहिए। इसके बाद जो कुछ बच रहता था वह सरकार को दे दिया जाता था। फसल की हालत देखकर यह अंदाजा कर लिया जाता था कि हर गुबेनिया का कितना अनाज देना है। फिर आगे चलकर उसी आधार पर उयेज्द, वोलोस्त, गाव और प्रत्येक किसान परिवार का हिस्सा-बाट दिया जाता था।

यह वसूली लेनिन द्वारा निरूपित एक वर्गीय सिद्धात के आधार पर की जाती थी गरीब किसानो को कुछ नही, मझोले किसानो को थोडा-सा और धनी किसानो का काफी मात्रा मे देना पडता था।

फिर काम करना सभी वर्गों के वास्ते अनिवार्य कर दिया गया। पूजीपति वर्ग के लोगो को शारीरिक काम करने पर बाध्य किया गया। इस तरह यह उसूल लागू किया गया कि "जो काम नही करेगा, वह खायेगा भी नही।"

अपने हाथो मे अर्थव्यवस्था के निर्णायक शिखरो का सकेन्द्रण कर लेने के बाद सोवियत राज्य ने देश की अर्थव्यवस्था के विकास की दिशा निदेश करने का काम शुरू किया। कच्चे माल, ईंधन, खाद्यान्न तथा औद्योगिक सामानो का वितरण कडे केंद्रीकरण के अतर्गत ले आया गया। आर्थिक साधनो की चूकि बेहद कमी थी, इसलिए इस अत्यत कडे केंद्रीकरण की बदौलत उनका रक्षा की जरूरता के अनुसार उपयोग सम्भव हुआ।

जमीदारो का एक वर्ग के रूप मे उन्मूलन, मेहनतकश किसानो को जमीन मिलना तथा लगानो और करो के भारी बोझ से उनकी मुक्ति ऐसी बाते थी जिनकी बदौलत सोवियत राज्य को मेहनतकश किसानो का पक्का समर्थन प्राप्त हो गया था, मजदूरो और किसानो की सैनिक-राजनीतिक एकजुटता को सुदृढ करने मे सहायता मिली।

मेहनतकश किसान हुक्मी वसूली और इसके कारण उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयो का स्वीकार करने को तैयार थे क्योकि सोवियत सत्ता जमीदारो और कुलको से उनकी रक्षा करती थी। किसान जानते थे कि सोवियत सत्ता से उन्हे जो जमीन मिली है उसे बचाने और जमीदारो और कुलको का मुकाबला करने के लिए उन्हे पूरा जोर लगाकर सोवियत सत्ता का समर्थन करना है जो किसानो के हितो की रक्षा कर रही है।

अस्थायी सरकार की नीतियो का नतीजा थी। उसे एक ऐसे देश म अथव्यवस्था को सुव्यवस्थित करना था जो शत्रुओ से घिरा हुआ था और जिसे बाहर से कोई आर्थिक सहायता नही मिल रही थी।

युद्धकालीन कम्युनिज्म जवाब था पूजीपति वग के भीषण प्रतिरोध का जिसन सवहारा वग को सघप के निहायत तीव्र रूपो को अपनाने पर मजबूर कर दिया।

अक्तूबर काति के बाद सोवियत राज्य ने योजना बनायी थी कि "नय सामाजिक-आर्थिक सबधा मे सक्रमण यथासम्भव धीरे धीरे"* किया जाये, उसे "जहा तक हो सके उस समय के सम्बधा के अनुकूल बनाया जाये और पुरातन का जहा तक सम्भव हो कम से कम तोडा जाये।"** रूसी पूजीपति वग विश्व पूजी की सहायता प्राप्त करके न तो कोई समझौता करने पर तैयार था और न राज्य नियमन और नियत्रण को मानने पर। इसके बजाय उसने एक भीषण युद्ध छेड दिया जिससे सोवियत सत्ता का अस्तित्व ही खतरे म पड गया। लेनिन ने बताया कि पूजीपतियो की इन हरकतो से सोवियत जनगण "एक भीषण और निमम सघप के लिए मजबूर हो गया जिससे पुराने सवधो को जितना हमने पहले सोचा था उस सेकही ज्यादा हद तक तोडने पर मजबूर होना पडा।"***

बडे पैमाने के उद्योग के अलावा राज्य को मझोले और छोटे उद्योगो का भी राष्ट्रीयकरण करना पडा। यह इसलिए आवश्यक हो गया था कि सारा औद्योगिक सामान राज्य के हाथो म केंद्रीभूत किया जा सके और वह सेना और ग्रामीण आबादी को उसे पहुचाने की स्थिति म हो।

अन्न का राजकीय इजारा कायम किया गया और अनाज के निजी व्यापार पर रोक लगा दी गयी। ११ जनवरी, १६१६ को फाजिल अनाज और चारे की हुकमी वसूली लागू की गयी। (आगे चलकर अय कृषि पैदावार को भी इसी वसूली प्रथा के तहत ले आया गया)। इस प्रकार किसानो को अपनी सारी अतिरिक्त पैदावार राज्य के हवाले कर देनी पडती थी। राज्य सस्थाए यह तय करती थी कि किसानो का उपभोग

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड ३३, पृष्ठ ६५

**वही, पृष्ठ ६७

***वही।

और अगले साल की बुवाई के लिए कितने अनाज की जरूरत है और उन्हे अपने मवेशी के लिए कितना चारा चाहिए। इसके बाद जो कुछ बच रहता था वह सरकार को दे दिया जाता था। फसल की हालत देखकर यह अन्दाजा कर लिया जाता था कि हर गुबेनिया का कितना अनाज देना है। फिर आगे चलकर उसी आधार पर उयेज्द, वालोस्त, गाव और प्रत्येक किसान परिवार का हिस्सा-बाट दिया जाता था।

यह वसूली लेनिन द्वारा निरूपित एक वर्गीय सिद्धात के आधार पर की जाती थी गरीब किसानो को कुछ नही, मझोले किसानो को थोडा-सा और धनी किसानो को काफी मात्रा मे देना पडता था।

फिर काम करना सभी वर्गो के वास्ते अनिवार्य कर दिया गया। पूजीपति वर्ग के लोगो को शारीरिक काम करने पर बाध्य किया गया। इस तरह यह उसूल लागू किया गया कि "जो काम नही करेगा, वह खायेगा भी नही।"

अपने हाथो म अर्थव्यवस्था के निर्णायक शिखरो का सकेन्द्रण कर लेने के बाद सोवियत राज्य ने देश की अर्थव्यवस्था के विकास की दिशा निदेश करने का काम शुरू किया। कच्चे माल, ईंधन, खाद्यान्न तथा औद्योगिक सामानो के वितरण कडे केन्द्रीकरण के अतगत ले आया गया। आर्थिक साधनो की चूकि बेहद कमी थी, इसलिए इस अत्यत कडे केन्द्रीकरण की बदौलत उनकी रक्षा की जरूरतो के अनुसार उपयोग सम्भव हुआ।

जमीदारो का एक वर्ग के रूप मे उन्मूलन, मेहनतकश किसानो को जमीन मिलना तथा लगानो और करो के भारी बोझ से उनकी मुक्ति ऐसी बात थी जिनकी बदौलत सोवियत राज्य को मेहनतकश किसानो का पक्का समथन प्राप्त हो गया था, मजदूरो और किसानो की सैनिक-राजनीतिक एकजुटता को सुदृढ करने मे सहायता मिली।

मेहनतकश किसान हुक्मी वसूली और इसके कारण उत्पन्न होनेवाली कठिनाइयो को स्वीकार करने को तैयार थे क्योकि सोवियत सत्ता जमीदारो और कुलको से उनकी रक्षा करती थी। किसान जानते थे कि सोवियत सत्ता से उन्हे जो जमीन मिली है उसे बचाने और जमीदारो और कुलको का मुकाबला करने के लिए उन्हे पूरा जोर लगाकर सोवियत सत्ता का समथन करना है जो किसानो के हितो की रक्षा कर रही है।

युद्ध शत्रु के घेरे और आर्थिक तबाही की कठिन स्थितिया म युद्धकालीन कम्युनिज्म की ये कारवाइया देश के तमाम साधना का रक्षा के लिए जुटाने का एकमात्र उपाय थी।

देश भर की मुक्ति

व्रागेल की सेना की शिकस्त और क्रीमिया की मुक्ति का मतलब यह था कि शत्रु की मुख्य शक्तियो पर सोवियत जनगण ने विजय प्राप्त कर ली। लेकिन इसके बाद भी देश के कई भागो मे लडाई जारी रही। खासकर, काकेशिया, सुदूर पूव और मध्य एशिया मे लडाई ने बहुत तूल खीचा। विदेशा के लिए इन सीमावर्ती इलाको मे अपने सैयदल भेजना और प्रतिक्रातिकारी शक्तिया को हथियार और गोले-बारूद की रसद पहुचाना आसान था। इस बात का महत्व भी कुछ कम नही था कि स्थानीय पूजीपति और जमीदार आबादी के कुछ हिस्सो मे कुछ दिना के लिए राष्ट्रवादी भावना भडकाने मे सफल हो गये थे। मगर अत म इन इलाका मे भी आम जनता की विजय हुई।

खीवा, बुखारा, आजरबैजान और आर्मीनिया की श्रमजीवी जनता ने १९२० के दौरान विजय प्राप्त की। १९१८ मे बाकू कम्यून के पतन के बाद आजरबजान म सत्ता पूजीवादी-राष्ट्रवादी "मुसावात" पार्टी क हाथा मे केंद्रित हो गयी थी। आजरबैजान की कम्युनिस्ट पार्टी के नतत्व म मेहनतकशा ने विद्रोह की तैयारी की।

२७ अप्रैल, १९२० का प्रात काल बाकू के मजदूरो ने फौजी बारिका, जहाज घाट और रेलव स्टेशन पर धावा बोल दिया। इसके बाद शहर के तमाम अय महत्वपूण स्थाना पर दखल कर लिया गया। उस रात सत्ता आजरबजानी क्रातिकारी सनिक समिति के हाथा मे चली गयी और आजरबैजान सोवियत जनतन्त्र बन गया। क्रातिकारी समिति क प्रधान नरिमानाव थे।

उस समय आर्मीनिया म तीव्र सघष चल रहा था। वहा सत्ता पूजीवादी राष्ट्रवादी पार्टी 'दश्नक्त्सुत्युन' (एकता) के हाथा म थी जिसने आर्मीनिया का तबाही के कगार पर पहुचा दिया था। आर्मीनिया क मजदूर और किसान दश्नका की सत्ता स्वीकार करने पर राजी नहा

थे। देश के विभिन्न भागो मे विद्रोह होते रहते थे। २६ नवम्बर, १६२० को दिलिजान उयेज्द के विद्रोहियो द्वारा स्थापित सैनिक-क्रांतिकारी समिति ने आर्मीनिया को सोवियत समाजवादी जनतन्त्र घोषित कर दिया। क्रांतिकारी समिति के अध्यक्ष कास्यान थे जो १६०४ से पार्टी के सदस्य थे। कुछ दिनो बाद विद्रोही जनता ने आर्मीनिया की राजधानी येरेवान को मुक्त कर लिया।

आर्मीनिया मे सोवियत सत्ता स्थापित हो जाने के बाद काकेशिया मे प्रतिक्रांति का एक ही गढ बच रहा और वह था मेशेविक जार्जिया। जार्जियाई मेशेविक अपने को समाजवादी और जनवादी कहा करते थे मगर समाजवादी सुधार करने का उनका कोई इरादा नही था।

फरवरी, १६२१ मे जार्जिया के लोगो ने विद्रोह का झडा उठाया। इसका नेतृत्व क्रांतिकारी समिति कर रही थी जिसमे अनेक अनुभवी बोल्शेविक – माखाराद्ज़े (अध्यक्ष), ओराखेलाश्वीली त्स्खाकाया, एलिआवा आदि शामिल थे। २५ फरवरी को क्रांति का लाल झडा तिफलिस (त्बिलीसी) पर लहराया गया।

विजयी क्रांति का अतिम अध्याय मध्य एशिया की जातियो ने पेश किया। १६२० मे तुर्किस्तान सोवियत जनतन्त्र के साथ साथ दो निरकुश राजतन्त्र – खीवा की खानशाही और बुखारा की अमीरशाही मौजूद थी। उज्बेक, ताजिक और तुर्कमान जातियो की श्रमजीवी जनता खान और अमीर के क्रूर दमन का शिकार थी। बुखारा और खीवा मे समय माना रुका हुआ था। इन दोनो राज्यो की स्थिति पुराने मध्य युग की याद दिलाती थी। स्कूलो और अस्पतालो का कोई नामोनिशान नहीं था। दस्तकारो और किसानो को भारी कर अदा करना पडता था। जब वे गरीब कर नही अदा कर पाते तो उनके बच्चो को दास बना दिया जाता। मामूली से कसूर पर आम लोगो का सर काट दिया जाता या बिच्छुओ से भरे तहखानो मे डाल दिया जाता। खान और अमीर ने सोवियत रूस के विरुद्ध जग की तैयारियां शुरू की। रेगिस्तान और पहाडो के रास्ते ऊट के कारवानो के जरिये ब्रिटिश राइफले, मशीनगने और कारतूस बुखारा और खीवा पहुचाये जाते।

मगर जनता के क्रोध के सामने ये भ्रष्ट निरकुश राजतन्त्र टिक नही सके। अप्रैल १६२० मे जन क्रांति की बदौलत खीवा मे सोवियत सत्ता

कायम हुई और १६२० के अंत मे बुखारा के मेहनतकशो ने विद्रोह का झंडा उठाया। लाल सेना की टुकडियों की सहायता से विद्रोहियों ने अमीर के लशकरो को खदेड दिया और जन सत्ता स्थापित की। पूरे मध्य एशिया मे समाजवाद के निर्माण का काम शुरू किया गया।

हस्तक्षेपकारी शक्तियो का आखिरी अड्डा सुदूर पूर्व मे था। वहा जापानी हस्तक्षेपकारी और सफेद गाड अभी भी जमे हुए थे। इनके विरुद्ध गुरिल्ला दस्तो ने लडाई सगठित की। १६२० मे उस इलाके के मेहनतकशो ने सुदूर पूर्वी जनतंत्र की स्थापना की और गुरिल्ला दस्तो को मिलाकर एक जन क्रांतिकारी सेना का निर्माण किया गया।

१६२२ के शुरू म ब्लूखेर की कमान मे इस सेना ने निर्णयकारी हमले की कारवाई शुरू की। खबारोव्स्क से कुछ ही दूर पर वोलोचायेव्का स्टेशन के ठीक निकट सफेद गार्डो ने एक मजबूत मोर्चेबन्दी की व्यवस्था की। यून-कोरान पहाडी पर जिसके आगे बर्फीला मैदान फैला हुआ था, तोपें और मशीनगनें लगा दी गयी। पहाडी तक पहुचने के रास्त पर गहरा जमी बर्फ वाली मेडो से खाइया और अंतहीन कांटेदार तारो का जाल बिछा हुआ था।

१० फरवरी, १६२२ को मोर्चेबन्दी पर धावा बोल दिया गया। सबसे पहले छठी पैदल सेना की एक कम्पनी कटीले तारो की बाड तक पहुच गई, पर उसका एक एक आदमी काम आ गया। परन्तु हानि के बावजूद क्रांतिकारी सेना के जवान पीछे नही हटे। वे बर्फ पर लेट गये और कुमक के पहुचने की प्रतीक्षा करने लगे। कडाके की सर्दी और तूफानी हिमपात के बावजूद वे डटे रहे यद्यपि अधिकाश के पास जाडे का कपडा भी नहीं था। १२ फरवरी की सुबह को तोपखाने से गोलाबारी करने के बाद पहाडी पर दूसरी बार धावा किया गया। लडाई तीन घंटे चलती रही। कटीले तारो के जाल का पार कर लेने के बाद सैनिको ने सगीनो से हमला बोल दिया। वोलोचायेव्का पर दखल कर लिया गया।

क्रांतिकारी सेना ने प्रशांत महासागर तट तक भागते शत्रु का पीछा किया। २५ अक्तूबर, १६२२ को तीसरे पहर जन क्रांतिकारी सेना ने व्लादिवोस्तोक म प्रवेश किया और इसके साथ ही देश वैदेशिक हस्तक्षेपकारियों और प्रतिक्रांतिकारी सेनाओं से बिलकुल मुक्त हो गया।

* * *

अक्तूबर क्राति की उपलब्धियो की रक्षा करने तथा अपनी समाजवादी मातभूमि की स्वतत्रता के लिए रूस के जनगण का तीन बरस तक सशस्त्र सघप करना पडा। इस कठोर घमासान सघप मे सोवियत जनतत्र की सम्पूण विजय हुई। हस्तक्षेपकारिया और सफेद गाड शक्तियो के पास साज-सामान और रसद कही अधिक थी, फिर भी उनके पैर उखड गये और उन्हे शिकस्त हुई। सोवियत राज्य को विनाश करने का सभी देशो के साम्राज्यवादियो और प्रतिक्रातिकारी शक्तियो का सयुक्त प्रयास बिलकुल विफल हुआ।

सोवियत राज्य की विजय इसलिए हुई कि हस्तक्षेपकारिया और सफेद गार्डों के खिलाफ इसका सघप प्रतिक्रियावादी और पुरानी पड गई शक्तियो के विरुद्ध एक नयी, प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था का सघप था जिसका जन्म समाजवादी क्राति की बदौलत हुआ था। करोडो मेहनतकश जो एक नयी जीवन पद्धति का निर्माण करने के लिए व्याकुल थे, सवहारा वग और उसकी हिरावल—कम्युनिस्ट पार्टी—के झडे तले एकत्रित हो गये। उन्होंने अभूतपूव सृजनात्मक कायक्षमता और उत्साह का परिचय दिया। शत्रुओ के विरुद्ध सघप म श्रमजीवी जनता जबरदस्त त्याग करने और भयकर विपत्तिया झेलने के लिए तैयार थी और उसने रणक्षेत्र और देश के भीतर निस्स्वाथ वीरता का सबूत दिया। कम्युनिस्ट पार्टी ने न केवल एक सही नीति अपनायी जिसे जनता का सम्पूण समथन प्राप्त था, बल्कि वह जनता के सुरक्षा अभियान की मुख्य प्रेरक शक्ति और सगठनकर्ता बन गयी। पार्टी ने जन शक्ति को सही रास्ते पर लगाया, देश का एक सशस्त्र छावनी म बदल दिया, तमाम उपलब्ध शक्तिया का सुरक्षा के लिए जुटाया और मजदूरो और किसाना की एक सेना का निर्माण किया।

दो व्यवस्थाओ—समाजवादी और पूजीवादी—की प्रथम सामरिक टक्कर मे नवजात समाजवादी राज्य की विजय हुई जिसमे इसकी श्रेष्ठता, शक्ति और जीवत क्षमता साबित हो गई।

तीसरा अध्याय

नयी आर्थिक नीति।
राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार
१९२१–१९२५

राजनयिक बिलगाव का अंत

हस्तक्षेपकारी और सफेद गार्ड शक्तियो की शिकस्त ने साम्राज्यवादियो द्वारा शस्त्रास्त्र के बल पर सोवियत राज्य का विनाश करने के प्रयासो का हमेशा के लिए अंत कर दिया। सोवियत जनतंत्र को शांतिपूर्ण परिस्थितियो मे निर्माण योजनाए शुरू करने का अवसर प्राप्त हुआ। लेनिन का यह दावा उस समय बिलकुल सही था कि " हमे न केवल दम लेने का समय ही मिला है। हम तो एक नये दौर मे प्रवेश कर रहे है, जिसमे पूजीवादी राज्यो के जाल मे हमने अपने बुनियादी अंतर्राष्ट्रीय अस्तित्व का अधिकार प्राप्त कर लिया है।' *

पूजीवादी राज्यो के नेताओ को चाहे यह बात पसन्द हो या न हो, उन्हे मजबूर होकर एक समाजवादी राज्य के अस्तित्व को स्वीकार करना पडा। यद्यपि उन्होने सोवियत रूस के विरुद्ध संघर्ष बंद नही किया, फिर भी नवजात सोवियत राज्य तथा अन्य देशो मे संबंध धीरे धीरे स्थापित होने लगे।

इस क्षेत्र मे बडी सफलताए १९२१ के वसंत मे ही प्राप्त हो गयी थी। उस वर्ष १६ मार्च को लन्दन मे एक एंग्लो-सोवियत व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते का महत्व केवल आर्थिक ही नही, राजनीतिक भी था, क्योकि इसका मतलब यह था कि ब्रिटेन ने

---

*ब्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाए, खंड ४२, पृष्ठ २२

वास्तव मे सोवियत सरकार को मान लिया। लोकसदन मे ब्रिटिश प्रधान मन्त्री लाइड जाज की बातो का मतलब भी यही था।

इसके बाद जर्मनी, इटली, नार्वे, आस्ट्रिया तथा अनेक अन्य देशो के साथ व्यापार समझौते हुए।

१९२१ के वसत मे तुर्की, ईरान और अफगानिस्तान के साथ सधियो के माध्यम से सामान्य सबध स्थापित हुए। इन सधियो ने, जिनकी प्रारम्भिक तयारी पहले कर ली गयी थी, यह प्रदर्शित कर दिया कि सोवियत राज्य और साम्राज्यवादी देशो की नीतियो मे उसूल का बुनियादी अन्तर है। पूरब के देशो को साम्राज्यवादी औपनिवेशिक विस्तार का लक्ष्य मात्र मानते थे। किसी महान शक्ति और पूरब के देशो के बीच ये सबसे पहली सधिया थी, जिनका आधार समानता, राष्ट्रीय स्वाधीनता और राज्य प्रभुता के सम्मान के सिद्धातो पर था।

अगले साल सोवियत राज्य को अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे और अधिक सफलताए प्राप्त हुईं। अप्रैल, १९२२ मे सोवियत जनतन्त्र के प्रतिनिधियो ने जेनाआ मे आयोजित एक अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे पहली बार भाग लिया।

सोवियत रूस की शिरकत से एक अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने का निश्चय ६ जनवरी, १९२२ को कैंनिस मे एटेंट की सर्वोच्च परिषद की एक बैठक मे किया गया था। पश्चिम मे बहुत से लोग यह समझ रहे थे कि सोवियत प्रतिनिधियो को सम्मेलन मे आने का मौका देकर वे राजनयिक दबाव के जरिये सोवियत रूस से बडी आर्थिक मागें मनवा सकेंगे। कैंनिस मे स्वीकृत प्रस्ताव से भी यही प्रकट होता था। सोवियत रूस के समक्ष पूर्वनिर्धारित शर्तें पेश करने के उद्देश्य से फ्रासीसी सरकार ने एक विशेष वक्तव्य मे कहा कि 'यदि सोवियत या अन्य कोई सरकार अपने उत्तर या सरकारी घोषणाओ के जरिये यह बता देगी कि वह ६ जनवरी को (एटेंट की सर्वोच्च परिषद की कनिस बैठक मे—स०) पहले से तैयार की गयी शर्तों को पूर्णत स्वीकार नही करती, तो फ्रासीसी सरकार के लिए जेनाआ सम्मेलन मे अपना प्रतिनिधिमडल भेजना सभव नही होगा।" इस प्रकार सोवियत राज्य पर दबाव डालने का क्रूर प्रयास किया गया। फ्रास ने सोवियत रूस को छोडकर एक प्रारम्भिक सम्मेलन आयोजित करने का भी प्रयास किया, ताकि पूजीवादी राज्य आपस मे

इस बात पर सहमत हो जायें कि जेनोग्रा सम्मेलन मे क्या प्रस्ताव स्वीकार किया जाये।

सोवियत सरकार ने १५ माच, १६२२ के एक नोट म जेनोग्रा सम्मेलन के ग्रायोजको द्वारा समाजवादी राज्य के समक्ष पहले से स्वीकृत फैसलो को एक निश्चित तथ्य के रूप मे प्रस्तुत करन के प्रयत्न की निदा की।

सोवियत सरकार को जेनोग्रा एव प्रतिनिधिमडल भेजने का निमत्रण ७ जनवरी १६२२ को मिला और दूसरे ही दिन उसने सम्मेलन के काम मे भाग लेन पर ग्रपनी तत्परता घोषित कर दी।

लेनिन ने ग्रनक भाषणो ग्रौर लेखो मे जेनाग्रा सम्मेलन मे सोवियत प्रतिनिधिमडल के लिए एक उचित कायक्रम पेश किया। इस कायक्रम के मुख्य सूत्र ये थे सोवियत देश ग्रय राज्यो के साथ सहयोग करने ग्रौर उनके ऐसे सुझावा का समथन करने को तैयार है, जो शाति के हिता के विपरीत नहा है। वह सभी देशा मे राजनयिक तथा ग्राथिक सहयोग के सवतोमुखी विकास का समथन करता है। सोवियत राज्य न एक देश द्वारा दूसरे देश पर ग्रपनी इच्छा थोपने ग्रौर एक तरफा सधिया लादने के तमाम प्रयत्नो का भी विरोध किया। जेनोग्रा मे सोवियत प्रतिनिधिमडल का मुख्य काय सुदढ ग्रौर स्थायी शाति हासिल करना, जातियो के ग्राथिक सहयोग को निश्चित करना तथा सोवियत जनतत ग्रौर पूजीवादी देशो मे व्यापार सबध स्थापित करना था।

जेनोग्रा सम्मेलन का उदघाटन तेरहवी शताब्दी के बने हुए पलाज्जा दि सा जोर्जो के दा वडे हाला मे से एक मे १० ग्रप्रल को वड ग्राडम्बरपूण वातावरण मे हुग्रा। शहर मे प्रतिनिधिमडलो के सदस्य ग्रौर विभिन्न विशेषन कुल मिलाकर दो हजार व्यक्ति एकत्रित हुए थे।

सावियत प्रतिनिधि के भाषण की प्रतीक्षा उत्सुक्तापूवक की जा रही थी। चिचेरिन न शाति को सुदृढ करन के लिए सोवियत सरकार का व्यापक कायक्रम पश किया ग्रौर परस्पर लाभ तथा समानता के ग्राधार पर सभी देशा के साथ ग्राथिक ग्रौर व्यापारिक सबध स्थापित करने की उसकी उत्सुकता प्रकट की। सोवियत प्रतिनिधि ने हथियारो मे सवव्यापी कटौती करने का प्रस्ताव भी पेश किया, जिसम विषैली गसा तथा ग्राम ग्रावादी के खिलाफ इस्तेमाल होनेवाले तमाम शस्त्रो के प्रयाग पर

प्रतिबंध भी शामिल था। हथियारो मे कटौती का इस प्रकार का यह सवप्रथम प्रस्ताव था। सम्मेलन के एक प्रतिनिधि ने उसका पुन स्मरण करते हुए कहा "चिचेरिन के भाषण का प्रभाव इतना जबदस्त था कि तालियो की गडगडाहट ने जब राजनयिक शिष्टाचार के सारे बधनो को तोड दिया, तो लगता था कि यह एक ऐसे ग्रथशाली भाषण की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है "

चिचेरिन के भाषण और उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावो का ससार भर के जनवादी क्षेत्रो ने हार्दिक स्वागत किया। सम्मेलन अधिवेशन के दौरान ही सोवियत प्रतिनिधिमडल के पास बडी सख्या मे तार और पत्र पहुचने लगे, जिनमे प्रतिनिधिमडल के काम का समथन और सराहना की गयी थी। लेकिन इन सुझावो के प्रति सम्मेलन मे पूजीवादी देशो के प्रतिनिधियो की प्रतिक्रिया कुछ और ही थी। सवव्यापी और सपूण निशस्त्रीकरण के प्रस्ताव का बिना किसी विचार विमश के अस्वीकार कर दिया गया।

१८ अप्रल को जेनोआ सम्मेलन की चारा समितियो की बैठको म इस समाचार से खलबली मच गयी कि रेपैलो मे सोवियत-जमन सधि पर हस्ताक्षर हो गये। ब्रिटेन, फ्रास तथा अन्य देशो के प्रतिनिधि जिस समय विभिन्न आयोगा म समाजवादी राज्य पर अपनी शर्तें थोपने का प्रयत्न कर रहे थे, उस समय एक सोवियत जमन समझौते के लिए जमन सरकार से सोवियत राज्य के प्रतिनिधियो का वार्तालाप जेनोआ मे जारी था। इस सबध मे काम पहले ही बलिन मे शुरू हो चुका था। १६ अप्रैल को यह वार्तालाप सफलतापूवक सम्पन्न हुआ। उस दिन सोवियत-जमन सधि पर हस्ताक्षर हुए। इसमे निम्नलिखित बाते थी दोनो देशो मे राजनयिक सबध और कौसुलेट की पुन स्थापना, युद्धकालीन कर्जो का परित्याग, सोवियत रूस म भूतपूव जमन सम्पत्ति के राष्ट्रीयकरण का जमनी द्वारा स्वीकरण "बशर्ते कि रूसी सोवियत सघात्मक समाजवादी जनतत्र की सरकार अन्य सरकारो के इसी प्रकार के दावो को स्वीकार नही करेगी।"

रेपैलो सधि सोवियत जनतत्र की प्रथम मुख्य राजनयिक विजय थी। पहली बार एक प्रमुख पूजीवादी देश ने सोवियत जनतत्र से राजनयिक सबध स्थापित किया था। इससे अतर्राष्ट्रीय सबधो के क्षेत्र मे सोवियत राज्य की स्थिति को और सुदृढ बनाने का माग प्रशस्त हो गया।

की कि वह युद्धपूर्व के कर्जों के सवाल पर पुन विचार करने को तैयार है बशर्ते कि कर्जदाता देश युद्धकालीन कर्जों को रद्द कर दें और रूस की वित्तीय सहायता कर।

लेकिन उस समय तक जेनोआ सम्मेलन वास्तव मे भग हो चुका था, क्योकि पश्चिमी देश समान समझौता की बात सुनने को भी तैयार नही थे। इस प्रश्न पर सयुक्त राज्य अमरीका ने कडा रुख अपनाया। उसने सोवियत जनतत्र के प्रतिनिधियो से किसी भी बातचीत का विरोध किया। सयुक्त राज्य अमरीका ने इस सम्मेलन मे भाग नही लिया और कवल एक पयवेक्षक—इटली म अमरीकी राजदूत—को भेजा था। इसी के साथ सयुक्त राज्य अमरीका के इजारेदार क्षेत्रो को डर था कि उनके प्रतिद्वद्वी कही सोवियत सरकार से किसी प्रकार का समझौता न कर ले। इसलिए उन्होने जेनोआ सम्मेलन को भग करने की पूरी कोशिश की।

११ मई, १६२२ को सोवियत प्रतिनिधिमडल ने सम्मेलन मे विशेषज्ञो के वार्तालाप को पुन शुरू करने का सुझाव रखा। इस सुझाव पर विचार विमश के अत मे यह फैसला किया गया कि जून म एक आर्थिक सम्मेलन आयोजित किया जाये, जिसम जेनोआ मे उठाये गये सवालो पर विस्तारपूर्वक विचार किया जायेगा। इस प्रकार एक नया सम्मेलन, इस बार हेग मे आयोजित करने की योजना बनी।

हेग सम्मेलन उसी वष जून और जुलाई म हुआ। उसका भी कोई परिणाम नही निकला। इससे भी यही प्रदर्शित हुआ कि पूजीवादी देश तब भी यही आशा कर रहे थे कि सोवियत रूस पर भारी आर्थिक शर्तें लाद सकेंगे, क्राति के दौरान राष्ट्रीयकृत उद्यम उनके वैदेशिक मालिको को वापस दिला सकेगे और पुन पूजीवादी क्रियाकलाप जारी करायेंगे। जब पश्चिमी देशो का उद्देश्य पूरा नही हुआ, तो उन्होने जल्दी जल्दी सम्मेलन को समाप्त कर दिया। सम्मेलन के परिणाम से यह भी साफ हो गया कि पूजीवादी जगत के अनेक राजनीतिज्ञ अभी भी समाजवादी राज्य की आर्थिक नाकेबदी जारी रखने के पक्ष मे थे।

लेकिन जेनोआ और हेग सम्मेलनो मे सोवियत प्रतिनिधिमडलो के कायकलाप, उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावो और अत म जर्मनी के साथ रेपैलो सधि सम्पन्न होने का राजनीतिक रगमच पर भारी प्रभाव पडा।

की कि वह युद्धपूर्व के कर्जों के सवाल पर पुन विचार करने को तैयार है बशर्ते कि कजदाता देश युद्धकालीन कर्जों को रद्द कर दे और रूस की वित्तीय सहायता करे।

लेकिन उस समय तक जेनोग्रा सम्मेलन वास्तव म भग हा चुका था, क्योंकि पश्चिमी देश समान समझौता की बात सुनने को भी तैयार नही थे। इस प्रश्न पर सयुक्त राज्य अमरीका ने कडा रुख अपनाया। उसन सोवियत जनतत्र के प्रतिनिधिया से किसी भी बातचीत का विरोध किया। सयुक्त राज्य अमरीका ने इस सम्मेलन मे भाग नही लिया और केवल एक पयवक्षक – इटली में अमरीकी राजदूत – को भेजा था। इसी के साथ सयुक्त राज्य अमरीका के इजारदार क्षेत्रो को डर था कि उनके प्रतिद्वद्वी कही सावियत सरकार से किसी प्रकार का समझौता न कर लं। इसलिए उन्हाने जेनोग्रा सम्मेलन को भग करने की पूरी कोशिश की।

११ मई, १९२२ को सोवियत प्रनिनिधिमडल ने सम्मेलन म विशेषज्ञा के वातालाप को पुन शुरू करने का सुझाव रखा। इस सुझाव पर विचार विमश के अत म यह फैसला किया गया कि जून म एक आर्थिक सम्मेलन आयाजित किया जाये, जिसमे जेनोग्रा मे उठाये गय सवाला पर विस्तारपूवक विचार किया जायेगा। इस प्रकार एक नया सम्मेलन, इस बार हेग मे आयोजित करने की याजना बनी।

हग सम्मेलन उसी वष जून और जुलाई मे हुआ। उसका भी कोई परिणाम नही निकला। इससे भी यही प्रदशित हुआ कि पूजीवादी दश तब भी यही आशा कर रहे थे कि सावियत रूस पर भारी आर्थिक शर्तें लाद सकगे, क्राति के दौरान राष्ट्रीयकृत उद्यम उनके वैदेशिक मालिको को वापस दिला सकेंगे और पुन पूजीवादी क्रियाकलाप जारी करायेंगे। जब पश्चिमी देशा का उद्देश्य पूरा नही हुआ, तो उन्होने जल्दी-जल्दी सम्मेलन को समाप्त कर दिया। सम्मेलन के परिणाम से यह भी साफ हो गया कि पूजीवादी जगत के अनेक राजनीतिज्ञ अभी भी समाजवादी राज्य की आर्थिक नाकेबन्दी जारी रखन के पक्ष म थे।

लेकिन जेनोआ और हग सम्मेलना म सोवियत प्रनिनिधिमडला के कायकलाप, उनके द्वारा प्रस्तुत सुझावा और अत म जमनी के साथ रपलो सधि सम्पन्न हाने का राजनीतिक रगमच पर भारी प्रभाव पडा।

नवजात सोवियत जनतंत्र ने जहा सहयोग के लिए अपनी इच्छा प्रकट की वहा यह भी साफ कर दिया कि वह अपने आंतरिक मामलों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही बर्दाश्त करेगा।

यद्यपि जेनोआ अथवा हेग सम्मेलनों का कोई फल नही निकला, फिर भी यही बात कि सोवियत जनतंत्र को उनमे आमंत्रित किया गया और सोवियत प्रतिनिधिमंडलों ने उनके कामों मे भाग लिया, बता रही थी कि समाजवादी राज्य के राजनयिक विलगाव का अंत हो गया।

इन दो सम्मेलनों के बाद सोवियत राज्य की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति लगातार मजबूत होती गयी। सोवियत राजनयिकों द्वारा शांति और अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ करने के प्रयासों को नजरदाज नहीं किया जा सकता था। सुदूर पूर्व की मुक्ति के संबंध मे लेनिन ने कहा "यदि जापानियों ने अपनी सैनिक शक्ति के बावजूद घोषणा की कि वे अपनी फौज वापस ले जायेंगे और उन्होंने अपना वादा पूरा किया, इसका श्रेय हमारी अंतर्राष्ट्रीय नीति को भी मिलना चाहिए।"*

जून १९२२ मे ही सोवियत सरकार ने फिनलैंड, एस्तोनिया, लाटविया और पोलैंड की सरकारों के समक्ष यह सुझाव रखा कि समानुपातिक निशस्त्रीकरण पर विचार करने के लिए मास्को मे एक सम्मेलन आयोजित किया जाये। दिसम्बर, १९२२ मे यह सम्मेलन मास्को मे हुआ। सोवियत राजनयिकों ने ठोस प्रस्ताव पेश किया कि शिरकत करनेवाले देशों मे शस्त्रास्त्र मे कितनी कमी की जाये। यद्यपि उपस्थित पूंजीवादी क्षेत्रों के रुख के कारण मास्को सम्मेलन का कोई निश्चित परिणाम नही निकला, फिर भी इस सम्मेलन का आयोजन ही एक सकारात्मक घटना था। इससे दुनिया को यह पता लग गया कि सोवियत जनगण अपने पड़ोसियों के संग सहयोग करने की हार्दिक इच्छा रखते हैं और शस्त्रास्त्र मे कटौती की जैसी महत्त्वपूर्ण समस्या पर उनसे समझौता करना चाहते हैं।

इस बीच प्रतिक्रियावादी क्षेत्रों ने सोवियत संघ की अर्थव्यवस्था पर चोट करने और उसकी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा को बढ़ने से रोकने के लिए पूंजीवादी देशों का एक संयुक्त सोवियत विरोधी मोर्चा बनाने का एक और प्रयास किया।

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २७, पृष्ठ ३१७

८ मई, १९२३ को ब्रिटिश विदेश मत्री लार्ड कर्जन ने सोवियत सरकार को एक चेतावनी भेजी, जिसका उद्देश्य सोवियत सघ के आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से कमजोर करना तथा सोवियत सघ की शान्तिपूर्ण वैदेशिक नीति के प्रति सन्देह के बीज बोना था। यह चेतावनी देश के आतरिक मामलो में हस्तक्षेप करने का एक क्रूर प्रयास था। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि सोवियत सरकार ने शीघ्र ही यानी ११ मई को अपने नोट मे इस चाल का सख्ती से जवाब दिया।

लेकिन कर्जन की चेतावनी सोवियत-विरोधी उकसावे की कोई अकेली हरकत नहीं थी। यह एक पूरे सिलसिले की एक कडी थी। १० मई, १९२३ को लोज़ान (स्विट्ज़रलैंड) मे एक सफेद गार्ड ने एक सोवियत राजनयिक वोरोव्स्की की हत्या कर दी।

परन्तु न तो कर्जन का नोट, न यह आतकवादी हरकत और न ही प्रतिक्रियावादी शक्तियो द्वारा उकसावे की अन्य हरकतें से सोवियत सघ की अतर्राष्ट्रीय स्थिति के दृढीकरण और उसकी प्रतिष्ठा मे वृद्धि का रोका जा सका। सोवियत सघ को मान्यता देने, उसके साथ राजनयिक सबध स्थापित करने का अभियान पश्चिम म निरन्तर जोर पकडता जा रहा था। फ्रास मे भी यह अभियान व्यापक पैमाने पर विकसित हो रहा था, यद्यपि उस देश के पूजीवादी क्षेत्र सोवियत सघ के शत्रुओ के दक्षिण पक्ष की चरमसीमा पर थे। फ्रासीसी रेडिकल समाजवादी पोल पेनेवे ने उस समय यह बात अकारण ही नही कही थी कि "इस सदी जो मत्रिमडल सोवियत सघ को मान्यता प्रदान करने पर तैयार नही होगा, वह सत्तारूढ नही रह सकेगा।"

१९२३ मे ब्रिटेन के ससदीय चुनावो मे लेबर पार्टी ने अपने चुनावपूर्व घोषणापत्र मे एक नारा यह भी दिया था कि सोवियत सघ के साथ सामान्य सबध स्थापित किये जायें। यहा तक कि उदारवादी पार्टी के नेताओ ने भी सोवियत सघ से राजनयिक सबध स्थापित करने का आह्वान किया। इससे उन्हे कुछ अधिक वोट मिलने की आशा थी, क्योकि १९२३ के अत तक सोवियत सघ की मान्यता का नारा ब्रिटेन मे बहुत जनप्रिय हो चुका था। ब्रिटेन, फ्रास तथा अन्य पश्चिमी देशो मे सभी जगह मजदूर सोवियत सघ की मान्यता की माग के लिए आवाज बुलद कर रहे थे।

जब जनवरी १९२४ म ब्रिटेन म पहली बार लेबर पार्टी की सरकार बनी तो सोवियत सघ स राजनयिक सबध स्थापित करने के उद्देश्य म वार्तालाप के लिए कदम उठाये गये। उस साल १ फरवरी को मैकडानल्ड की सरकार ने मास्को स्थित सरकारी ब्रिटिश प्रतिनिधि हाजसन के जरिये एक पत्र इस आशय का भेजा कि ब्रिटेन ने सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ को मान्यता दे दी है। दूसरे दिन सोवियतो की दूसरी अखिल सघीय काग्रेस ने एक विशेष प्रस्ताव स्वीकार कर ब्रिटिश सरकार की इस पहलकदमी का अभिनन्दन किया। सोवियत सघ और ब्रिटेन के बीच राजनयिक सबध की स्थापना सोवियत सघ के वैदेशिक सबधो के इतिहास म एक महत्वपूर्ण युगातरकारी घटना थी। ब्रिटेन की पहलकदमी के बाद उसी वर्ष अनेक पूजीवादी देशो – इटली, नार्वे, आस्ट्रिया, यूनान, स्वीडन, मेक्सिको डेनमार्क और हेजाज ने भी यह कदम उठाया। मई, १९२४ म चीन के साथ भी राजनयिक सबध स्थापित हुए। चीनी जनतत्र की प्रभुता के सम्मान पर आधारित इस सधि ने चीन मे जारशाही रूस द्वारा प्राप्त सभी विशेषाधिकारो को मिटाने की पुष्टि की।

सोवियत सघ और फ्रास के बीच राजनयिक सबधो की स्थापना भी एक महत्वपूर्ण कदम था। मई, १९२४ मे ससदीय चुनावो के बाद पुआकारे की सरकार उलट गयी और उसके स्थान पर पूजीवादी जनवादी एडुअर्ड हेरिओ के नेतृत्व म सरकार बनी। हेरिओ फ्रास और सोवियत सघ के बीच व्यापारिक सबध स्थापित और विकसित करने के पक्ष मे थे। अक्तूबर, १९२४ म दोनो देशो म राजनयिक सबध पूर्ण रूप मे स्थापित हो गये।

१९२४ का साल सोवियत वैदेशिक नीति के इतिहास मे अतर्राष्ट्रीय मान्यताओ का साल है। राजनयिक सबधो के साथ-साथ सोवियत सघ तथा अन्य देशो के बीच आर्थिक सबध भी कायम हुए। १९२४ म सोवियत सघ का प्रतिनिधित्व विभिन्न अतर्राष्ट्रीय मेलो और प्रदर्शनियो म आस्ट्रिया (वियना), जर्मनी (कोलोन, लाइपज़िग और फ्रैंकफुर्ट आन मेन) और फिनलैंड (हेलसिंकी) मे हुआ।

२० जनवरी, १९२५ को सोवियत सघ और जापान के बीच राजनयिक सबध तथा कौंसुलेट स्थापित करने के लिए एक उपसधि पर हस्ताक्षर हुए।

१९२५ के प्रारम्भ तक सयुक्त राज्य अमरीका को छोडकर बाकी सभी प्रमुख पूजीवादी देशो ने सोवियत सघ को मान्यता दे दी थी। अमरीकी शासक क्षेत्रो ने सोवियत सघ को मान्यता देने की कम से कम शर्त यह पेश की कि जारशाही और अस्थायी सरकारो द्वारा लिये गये कर्जो को रद्द करनेवाली आज्ञप्तियो को तथा वैदेशिक नागरिको की निजी सम्पत्ति के राष्ट्रीकरण को मनसूख किया जाय। यह बात अमरीकी विदेश मन्त्री चार्ल्स एवास ह्यूज ने दिसम्बर, १९२३ मे खुले आम कही। साधारण बुद्धि के तकाजो और स्वय अपने देश के आर्थिक हितो को नजरअन्दाज करते हुए सयुक्त राज्य अमरीका के साम्राज्यवादी क्षेत्रो ने केवल यही नही कि सोवियत सघ से राजनयिक सबध स्थापित करने से इनकार किया बल्कि अन्य देशो मे भी सक्रिय सोवियत विरोधी नीति पर अमल किया।

इस प्रकार १९२१–१९२५ की अवधि मे अनेक कठिनाइयो के बावजूद सोवियत सघ ने अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे बडी सफलताए प्राप्त की और अतर्राष्ट्रीय सबधो के दायरे मे ऐसी स्थितिया सुनिश्चित की, जिनसे इसके अर्थतत्र की बहाली मे सहायता मिली।

नयी आर्थिक नीति मे सक्रमण

युद्ध के लम्बे महीनो के दौरान सोवियत स्त्री और पुरुष अपना समाचारपत्र हाथ मे लेते ही सबसे पहले यह देखते थे कि मोर्चे की ताजा खबर क्या है। आखिरकार घमासान युद्ध का अत हुआ। १५ दिसम्बर १९२० का समाचारपत्रो मे जनतत्र की क्रातिकारी सैनिक परिषद के रणभूमि प्रधान कार्यालय की अतिम रिपोर्ट छपी थी। इसमे सन्देह नही कि दूरवर्ती इलाको जैसे जनतत्र के सुदूर पूर्व मे छिटपुट लडाइया अभी जारी थी और १९२२ तक जारी रही, मगर १९२० के अत तक शत्रु की मुख्य शक्तियो को परास्त किया जा चुका था। सोवियत राज्य के जीवन मे शाति की अवधि शुरू हो चुकी थी।

उस समय देश की स्थिति बेहद कठिन थी। लडाई बन्द होने के फौरन बाद सोवियत देश की स्थिति का वर्णन करने के लिए लेनिन ने जिन शब्दो का प्रयोग किया, वे थे "कमरतोड तबाही, अभाव,

दरिद्रता "* देश को लगातार सात वर्ष युद्ध की मुसीबत झेलनी पड़ी थी – पहले जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी और तुर्की के खिलाफ और उसके बाद हस्तक्षेपकारियों और सफेद गार्डों के खिलाफ। देश के तीन चौथाई भाग पर विदेशी या सफेद गार्ड सेनाओं का कब्जा रह चुका था। पीछे हटते समय शत्रुओं ने जान-बूझकर रास्ते में पड़नेवाली फैक्टरियों और पुलों को नष्ट कर दिया था, वे मवेशी हका ले गये थे और खाद्यान्न और कच्चे माल के भंडार लूट लिये थे। खानों में पानी भर दिया गया था और मशीनों का चकनाचूर कर दिया गया था। भट्ठियां बेकार पड़ी थीं और देश के अधिकांश कारखानों में कोई जान नहीं रह गयी थी।

युद्ध के दिनों में करोड़ों आदमी हताहत या अपंग हो गये थे। १९१४ और १९२० के बीच दो करोड़ से अधिक लोग मारे गये, १६ से ४६ वर्ष तक की आयु के ४४ लाख स्त्री और पुरुष पंगु हुए। लाखों बच्चे अनाथ और निराश्रय हो गये।

औद्योगिक उत्पादन का स्तर १९२० में गिरकर १९१३ के सातवें भाग और बड़े पैमाने के उद्योग में लगभग आठवें भाग के बराबर रह गया था।

यातायात की व्यवस्था भी तबाही की हालत में थी। अधिकांश रेलवे इंजनों और डिब्बों की मरम्मत की जरूरत थी, लाखों स्लीपर सड़ गये थे, सैकड़ों मील पुरानी रेलवे लाइनों को बदलना जरूरी था। हजारों पुल नष्ट कर दिये गये थे। १९२० में रेलवे की सामान ले जाने की क्षमता युद्धपूर्व का पांचवां भाग रह गयी थी। देश के विभिन्न भागों तथा देहातों और औद्योगिक केंद्रों को जोड़नेवाली आर्थिक कड़ियां टूट चुकी थीं।

इस बीच कृषि में जोत की जमीन बहुत घट गयी थी। उत्पादन बहुत गिर गया था। मवेशियों की संख्या बहुत कम रह गयी थी। १९२० में कृषि की कुल पैदावार युद्धपूर्व का केवल ६७ प्रतिशत थी।

इतने दिनों अपार कठिनाइयों और अभाव का शिकार रहने के बाद लोग थक चुके थे। आधा पेट खाकर रहते कई बरस हो गये थे और रोटी पर कड़ा राशन था। औद्योगिक मजदूरों और दफ्तरी कार्यकर्ताओं के राशन

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३२, पृष्ठ २४१

म मास और मक्खन शायद ही कभी मिलता हो और चीनी तो बडी नेमत थी। शारीरिक थकावट और अल्पपाषण के चलते महामारिया फैलन लगी और १६२० म ३५ लाख आदमी टाइफस का शिकार हुए। कपडे, जूत और दवाइयो की भी बडी कमी थी।

युद्ध के वर्षो मे इन कठिनाइया की असल चोट मजदूर वग पर पडी थी। उसकी सख्या बहुत घट गयी। और इसका मतलब यह था कि सवहारा वग के अधिनायकत्व का वर्गीय आधार कमजार हा गया था। किसाना को भी अपार कठिनाइया और अभाव सहना पड रहा था। उन्हाने भी युद्धकालीन कम्युनिज्म की कारवाइया से अपनी नाराजगी प्रकट की। किसान चाहते थे कि अतिरिक्त अनाज की हुक्मी वसूली बन्द कर दी जाये और उन्ह अपनी अतिरिक्त पैदावार को आजादी के साथ बेचन का अधिकार मिल जाये।

प्रतिक्रातिकारिया और सफेद गार्डो ने सोवियत्त सत्ता के विरुद्ध अभी अपना सघष छाडा नही था। वे आगे बढकर किसाना के असतोप को हवा देन लगे। कई क्षेत्रा मे धनी किसाना (कुलका) ने बगावत कर दिया। और कुछ मझोले किसान भी उनके साथ हा गये।

माच, १६२१ के शुरू मे पेत्रोग्राद के पास क्राश्तादत की नौसैनिक गढ म सोवियत विरोधी बगावत हो गयी। इसका मतलब कट्टर सफेद गाडवाल कर रहे थ। लेकिन इस अवसर पर उन्हान अपना असली चेहरा छिपाना चाहा। उनका कहना था कि सोवियत सत्ता से उनका काई विराध नही। विराध हुक्मी वसूली मे है। और यह कि वे समथक "सोवियता की सत्ता के हैं, पार्टियो की नही"। इस नारेबाजी के जरिय उन्हाने गढ गरिजन के नौसनिका के काफी बडे भाग का समथन प्राप्त कर लिया। इनमे बडी सख्या किसाना की थी, जा हाल ही म भर्ती हाकर आये थे।

इस बगावत को कुचल दिया गया। मगर यह एक खतरनाक चेतावनी थी। यहा साफ दिखाई दे रहा था कि आर्थिक समस्याए राजनीतिक समस्याओ से इस तरह जुड गयी है कि दोना को अलग नही किया जा सकता। लेनिन ने उस समय लिखा "१६२१ के वसत म अथव्यवस्था राजनीति म बदल गयी क्राश्ताद्त।"

---

* वही, पृष्ठ ३०६

उस समय फौरी काम अर्थव्यवस्था को बहाल करना और मेहनतकश जनता की स्थिति को सुधारना था। यह बुनियादी ध्येय जीवन और मरण का सवाल बन गया था।

इस ध्येय की पूर्ति के लिए जनतंत्र की आर्थिक नीति मे बडा परिवर्तन करना आवश्यक हो गया। युद्धकालीन कम्युनिज्म, जो युद्ध के वर्षों म एकमात्र सही हल था, नयी स्थिति का सामना करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

* * *

लेनिन के अध्ययनकक्ष के सामने वडी सख्या मे लोग एकत्रित थे और देर से उनसे भेंट करने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यह एक असाधारण बात थी, क्योकि लेनिन हमेशा लोगो से समय तय करके भेट किया करते थे। वे सभी यह समझ रहे थे कि राज्य की कोई अत्यावश्यक समस्या या कोई बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष का समय ले रहा था। वह कौन व्यक्ति हो सकता था, जिसे लेनिन ने इतना अधिक समय दिया था?

आखिर लेनिन के अध्ययनकक्ष का दरवाजा खुला और एक दढियल किसान, जो वस्त के जूते और भेड की खाल का पुराना कोट पहने हुआ था, बाहर निकला। वह खास गरीब किसानों का प्रतिनिधि मालूम होता था, जो उस समय करोडो की सख्या मे सारे रूस मे फले हुए थे।

'क्षमा कीजिये, आपको प्रतीक्षा करनी पडी" लेनिन ने उन लोगा से कहा, जो बाहर एकत्रित थे। "ताम्बोव का यह किसान मुझे ऐसी दिलचस्प बात बता रहा था कि मुझे समय का ध्यान नही रहा।"

इस घटना की चर्चा अमरीकी लेखक एल्वर्ट रीस विलियम्स न की है। यह लेनिन की खास आदत थी। वह साधारण मजदूरा और किसाना की बात बहुत ध्यान से सुनत थे। वह उनसे अक्सर मिला करत थे और उनकी सलाह पूछा करत थे। वह उनकी आवश्यकताओ और आशाओ स खूब अवगत थे।

१९२० क अत और १९२१ के प्रारम्भ म लनिन ने ग्रामा क प्रतिनिधियो–खासकर मास्को, ताम्बाव और व्लादीमिर प्रदेशा के किसाना–से बहुत बातचीत की।

परिस्थिति का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करने तथा व्यापक पैमाने पर सबधित मामला को ध्यान मे लेने के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने लेनिन के नेतत्व मे एक नयी आर्थिक नीति मे सक्रमण की योजना तैयार की। इस योजना का उद्देश्य युद्ध तथा उसके कारण आर्थिक तबाही से पैदा होनेवाली समस्याओ का समाधान करना और जल्द से जल्द अर्थव्यवस्था को बहाल करना था। परन्तु लेनिन की योजना अल्पकालिक समस्याओ तक सीमित नही थी। कार्यनीतिक समस्याओ और रणनीतिक समस्याओ मे गहरा सबध था। नयी शातिपूर्ण स्थितियो म समाजवादी निर्माण किस प्रकार करना चाहिए? देश के दो मुख्य वर्गों यानी मजदूरा और किसानो मे अनुकूल और सामजस्यपूर्ण सबध किस आधार पर विकसित किये जा सकते है? उनकी एकजुटता को, जो सोवियत समाज की सफल प्रगति की जमानत है, क्योकर सुदृढ किया जा सकता है? लेनिन और कम्युस्टि पार्टी ने इन तमाम सवालो का एकमात्र सही जवाब प्रस्तुत किया।

यह आवश्यक था कि मजदूर वग समाजवाद का निर्माण श्रमजीवी किसाना के साथ मिलकर करे। यह बात रूस मे खासकर महत्त्वपूर्ण थी जहा आबादी का बडा भाग किसान थे। १३ करोड की कुल आबादी मे १० करोड से अधिक लोग गावा मे रहा करते थे।

अधिकाश किसाना के पास छोटे-छोटे खेत ही थे। उन दिना सामूहिक फाम बहुत कम थ। समाज म किसानो का स्थान दो विरोधी पक्षो पर आधारित था। एक ओर वह औद्योगिक मजदूरा की ही भाति मेहनत की अपनी कमाई से जीवनयापन करता था। दूसरी आर वह स्वामी भी था, जो अपनी सम्पत्ति मे वृद्धि करना चाहता था। जब तक उत्पादन साधनो के निजी स्वामित्व पर आधारित लघु किसानी माल उत्पादन खेती का रिवाज था, तब तक पूजीवाद के पुन सिर उठाने की सभावना मौजूद थी। इस वग के भीतर धनी किसान (कुलक) थे। यह एक अलग दल था, जो उजरती श्रम से काम लेता था।

कम्युनिस्ट पार्टी ने कृषि के समाजवादी रूपातरण का, बडे-बडे सामूहिक फाम कायम करने और मानव द्वारा मानव के शोषण को मिटाने का बीडा उठाया। लेकिन यह काई ऐसा काम नही था, जो तुरत पूरा हो जाय। इसके लिए किसानो को पुन शिक्षित करने मे लम्बी तैयारी

ग्रौर जमकर मेहनत करने की जरूरत थी। ग्रौर ग्रावश्यक शर्तें पूरी किये बिना इसकी कल्पना भी नही की जा सकती थी। उस समय किसानो के साथ सामजस्यपूर्ण सबध स्थापित करना जरूरी था ग्रौर ऐसा करते समय छोटे पैमाने की निजी खेती का बराबर ध्यान मे रखना था, जो उन दिनो खेती का प्रधान रूप था।

युद्ध के दौरान शहर ग्रौर देहात का सबध युद्ध की स्थिति से निर्धारित होता था। नवजात जनतत्र चारो ग्रोर शत्रुग्रो से घिरा था। उसका ग्रस्तित्व ही खतरे म था। उन शत्रुग्रो पर विजय प्राप्त करने के लिए किसान बडा त्याग करने ग्रौर बेहद कष्ट उठाने को तैयार थे। उन्होने मजदूर वग ग्रौर सेना के लिए ग्रपनी सारी ग्रतिरिक्त ग्रनाज की हुक्मी वसूली को स्वीकार कर लिया था, क्योकि उन्होने किसानो की तथा ग्रक्तूबर क्राति के चलते उनको मिली भूमि की रक्षा की थी। इस प्रकार मजदूर वग ग्रौर किसानो की सैनिक राजनीतिक एकजुटता का जन्म हुग्रा था।

मगर शाति के समय जब जमीदार वग के वापस लौट ग्राने का वास्तव मे कोई खतरा नही रह गया, तो किसान ग्रब उतना त्याग करने को तैयार नही थे। वे चाहते थे कि उन्ह ग्रपनी ग्रतिरिक्त पैदावार का वे जिस तरह चाह बेंचने की ग्राजादी मिले। इस तरह एक नया कायभार – मजदूरो ग्रौर किसानो मे एक नये प्रकार की एकजुटता – ग्राथिक एकजुटता स्थापित करने का कायभार सामने ग्राया। यह ग्रावश्यक हो गया कि शहर ग्रौर देहात म एक ग्राथिक सबध स्थापित किया जाये ग्रौर कृषि की उपज ग्रौर ग्रौद्योगिक सामान के विनिमय का ऐसा उपाय किया जाये, जिससे मजदूर ही नही, किसान भी सतुष्ट हो।

इसी उद्देश्य से लेनिन ने सुझाव रखा कि खाद्यान्न की हुक्मी वसूली के बजाय जिसी टैक्स लगाया जाये। इसका मतलब यह था कि किसानो को ग्राजादी थी कि ग्रपनी ग्रतिरिक्त पैदावार का एक भाग मडी म बेचे ग्रौर उसके दाम से ग्रपनी जरूरत का सामान खरीदें। लेनिन का विचार था कि किसानो को प्रोत्साहन की जरूरत है "छोटे किसान को, जब तक वह छोटा रहता है एक प्रेरणा की, प्रोत्साहन की ग्रावश्यकता है, जो उसके ग्राथिक ग्राधार यानी ग्रलग ग्रलग छोटे फाम के ग्रनुसार हो।"*

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए खड ३२, पृष्ठ १६६

और जब हुक्मी वसूली के बजाय जिन्सी टैक्स लगाया गया, तो किसानो को यह प्रोत्साहन मिल गया। इससे किसानो को अधिक उत्पादन करने का प्रोत्साहन मिला और इसकी बदौलत कृषि की बहाली और उन्नति अधिक तेजी से हुई। इस उन्नति से उद्योग की उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

मगर निजी व्यापार की आजादी मे एक खतरे का बीज भी निहित था—पूजीवाद के किसी हद तक पुनरुत्थान और कुलको और निजी व्यापारियो की अधिक शक्ति के खतरे का। शहर और देहात के पूजीवादी तत्व अपनी आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को सुदृढ करने मे कोई कसर उठा नही रखेंगे और सच तो यह है कि उन्होंने उठा नही रखी। महत्वपूर्ण सवाल यह था कि इस सघर्ष मे विजयी कौन होगा।

देश और विदेश के पूजीवादी विचारको और स्वय कम्युनिस्ट पार्टी के अन्दर ढुलमुल तत्वो ने यह नतीजा निकालना शुरू किया कि नयी आर्थिक नीति का मतलब है पूजी के आगे घुटने टेक देना समाजवादी निर्माण को त्याग देना, इत्यादि। लेकिन इन धारणाओ का न तो कोई सैद्धातिक आधार था और न व्यावहारिक सबूत। पूजीवादी तत्वो को कुछ देर के लिए, सीमित कार्यकलाप का मौका देने का मतलब कदापि पूजीवाद को लौटाना नही था। पूजीवादी तत्व विजेताओ के रूप मे आगे बढकर अपनी शर्तें नही मनवाने लगे। सोवियत राज्य की स्थिति पर काबू था और रहा। राजनीतिक सत्ता और अर्थव्यवस्था के "निर्णायक स्थान दोनो पहले ही की तरह उसके हाथ में रहे। सर्वहारा का अधिनायकत्व अर्थव्यवस्था के निचले स्तर से उभरते पूजीवाद को सीमित और नियत्रित करने मे सफल रहा।

भूमि, कारखाने, परिवहन और राजकीय वित्त—समाज निर्माण के ये सभी शक्तिशाली आर्थिक उत्तोलक सोवियत राज्य के हाथो में रहे। इन उत्तोलको के जरिये अल्पायु राज्य सफलतापूर्वक पूजीवाद का मुकाबला कर सका और यह सुनिश्चित कर सका कि अत मे उसको पछाडा और मिटाया जा सके।

नयी आर्थिक नीति की कल्पना एक व्यापक ऐतिहासिक परिदृश्य मे की गयी थी। पूजीवाद को दी गयी अस्थायी सुविधाओ के रूप मे पीछे कदम हटाना उस नीति का केवल एक पहलू था। इस अस्थायी प्रत्यावर्तन

और शक्तियो का पुन एकत्रित कर लेने के बाद समाजवादी तत्वो का सवतोमुखी आक्रमण करना और उद्योग, व्यापार और कृषि म रूमी पूजीवाद के विरुद्ध अतिम और निणयात्मक लडाई लडना था। वास्तव मे नयी आर्थिक नीति के प्रथम वर्षों म लेनिन ने सहकारिता की अपनी योजना तैयार की, जिसमे कृषि के समाजवादी पुनर्निर्माण की व्यवस्था थी।

नयी आर्थिक नीति पूजीवाद से समाजवाद के पूरे सक्रमणकाल के लिए थी। नयी आर्थिक नीति के कणधारा न सवहारा क्राति की विजय के बाद वर्गीय शक्तियो के अनुपात का सही अदाजा लगाया और छोटे किसाना की कृपि की खास विशेषताओ का सही मूल्याकन किया और इस आधार पर उन स्थितियो को सुनिश्चित किया, जो समाजवाद के निर्माण के लिए अनिवाय थी।

वतमान पूजीवादी तत्वो के विरुद्ध कारगर सघप करने के लिए कम्युनिस्टो को अथतत्र के सही और कुशल सगठन और व्यावसायिक लेन देन का ढग सीखना पडा। एक महत्वपूण, मगर कठिन काम उद्योग की, खासकर भारी उद्योग की, बहाली और विस्तार करना था, क्योंकि इसके बिना समाजवाद की विजय की कल्पना भी नही की जा सकती थी।

१९२० मे लेनिन के सुझाव पर रूस के बिजलीकरण की एक योजना (गोएलरो) तयार की गयी। इस योजना मे, जो १०-१५ वप की अवधि के लिए थी, कुल मिलाकर १५ लाख किलोवाट की क्षमता के ३० बडे बिजलीघर बनाने का प्रबध था। योजना का ध्येय पूरा हो जाने पर रूस की बिजली उत्पादन की क्षमता १९१३ की क्षमता से दस गुना बढ जानेवाली थी। गोएलरो योजना म केवल बिजलीघरो के निर्माण का ही नही, बल्कि देश की अथव्यवस्था की सभी शाखाओ के विस्तार और सुधार का प्रबध था क्योकि उसम उद्योग और कृषि दोनो मे बिजली के व्यापक प्रयोग की कल्पना की गयी थी। इस अवधि मे कुल औद्योगिक पैदावार के दो गुना होने की कल्पना की गयी थी।

बिजलीकरण की यह योजना जिसका सूत्रपात लेनिन ने किया था, दिसम्बर १९२० मे सोवियतो की आठवी अखिल रूसी काग्रेस के सामने अनुमोदन के लिए पेश की गयी। क्रिजानोव्स्की न काग्रेस के प्रतिनिधियो के सामने योजना के मुख्य कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होने भावी

बिजलीघरो, बिजली से चलनेवाले कारखानो का उल्लेख किया और ज्या ज्या वह बोलत गये एक विशाल नकशे पर, जो बोल्शोई थियेटर के मच पर लटका दिया गया था, एक-एक करके विभिन्न रगो की बत्तिया जगमगा उठी। ठडे हाल में बैठे प्रतिनिधियो के सामने भावी रूस का — समृद्ध, शक्तिशाली और सुखी रूस का — चित्र आ गया।

माच, १९२१ मे रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की १० वी काग्रेस ने हुक्मी वसूली के बजाय "जिन्सी टैक्स लागू करने" का प्रस्ताव स्वीकार किया। इस प्रस्ताव के साथ युद्धकालीन कम्युनिज्म से नयी आर्थिक नीति मे सक्रमण की शुरूआत हुई। इस प्रकार शातिपूण स्थितियो मे काम की एक ठोस योजना, समाजवादी निर्माण को आगे बढाने की योजना का खाका तैयार हुआ।

लेकिन इससे पहले कि यह रचनात्मक काय पूरा किया जाये अभी कुछ और समस्याए थी, जिनका समाधान करना था। १९२१ मे भारी सूखा पडा। अप्रल मे ही सख्त गर्मी पडने लगी और तापमान जून के औसत तापमान के बराबर हो गया। मई से जून तक असाधारण रूप से सूखा, गम मौसम रहा। हर दिन मौसम के अनुमान और समाचारो से लोगो की परशानी बढती जा रही थी।

देश पर एक नयी बडी विपत्ति आयी। सोवियत रूस के सभी मुख्य कृषि क्षेत्र जबदस्त सूखे का शिकार हुए। वोल्गा क्षेत्र मे, पूर्वी उक्रइना, उत्तरी कावेशिया, उराल, कजाखस्तान और मध्य रूस के कई प्रदेशो और जिलो मे फसले बर्बाद हो गयी। सूखाग्रस्त इलाको मे कोई ३ करोड लोग रहते थे।

बुरी फसल की इतनी व्यापक प्रतिक्रिया का कारण केवल प्रतिकूल मौसम की स्थिति ही नही, बल्कि यह बात भी थी कि जिन इलाको म सूखा पडा वे सफेद गाड और हस्तक्षेपकारियो के विरुद्ध लडाई मे पहले ही तबाह हो चुके थे। इन्ही इलाको म गृहयुद्ध का घमासान मचा था, यही से होकर युद्ध मार्चे की रेखा गुजरती थी।

युद्ध के कारण सारे देश म जो व्यापक आर्थिक अव्यवस्था और बडे पैमाने पर दरिद्रता फैली उसका प्रभाव भी कम महत्वपूण नही था। श्रम का अभाव, खेती के पशुओ, सामानो, बीजो की कमी खराब किस्म का बीज तथा अत्यावश्यक खाद का बिलकुल अभाव — इन सब बातो का

भूखे बच्चो को खाना दिया जा रहा है। समारा। १९२१

नतीजा यह हुआ कि किसान प्राकृतिक प्रकोप का सामना करने की स्थिति मे नही थे।

सूखाग्रस्त गुबेनियाओं म लोगो को जसी मुसीबत उठानी पडी, उसकी कल्पना भी कठिन है। अनेक जिलो मे अधिकाश किसान भूखा मर रहे थे।

फलस्वरूप कृषि को पुन अपने पैरो पर खडा करने का काम पहल के अनुमान स कही ज्यादा कठिन निकला। सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण काम भूखो मरनेवाले किसानो को समय रहते बचाना और सूखाग्रस्त इलाको म खाद्यान्न और बोआई के लिए बीज पहुचाना था।

लोग कमर कसकर स्थिति का मुकाबला करने को तैयार हुए। अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्षमडल ने "रूसी जनतत्र के सभी नागरिको के नाम" अपनी अपील म "इस अभियान के लिए सभी शक्तियो को जुटाने" का आवाह्न किया।

भूखो मरनेवालो की सहायता के लिए केन्द्रीय समिति ने, जिसके प्रधान अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अध्यक्षमडल के अध्यक्ष

मिखाईल इवानोविच कालीनिन थे, भुखमरी से बचाने का काय शुरू किया।

देश के सभी भागो से क्षतिग्रस्त इलाका म खाद्यान्न और निधि भेजी गयी। स्वेच्छापूवक चन्दे से ही लगभग १,७६,००० टन खाद्यान्न और भारी रकमे इकट्ठा हो गयी। राज्य ने क्षतिग्रस्त इलाको मे हजारा टन रोटी, आलू तथा अन्य खाद्य पदाथ भेजे, मवेशी के लिए चारा पहुचाया और १ करोड २५ लाख आदमिया के लिए ३० हजार भोजनालय खोले।

विदेशा से भी बडी मात्रा म सहायता आयी। ब्रिटेन, सयुक्त राज्य अमरीका, फ्रास, जमनी, इटली तथा अनेक अन्य देशा मे श्रमजीवी जनता ने वोल्गा क्षेत्र के भूखे किसाना का खाद्य पदाथ, औषधि और कपडा भेजन के लिए निधि इक्ट्ठा की। उन्हान सोवियत रूस मे भूखो की अन्तर्राष्ट्रीय सहायता का सगठन करने के लिए एक समिति की स्थापना की। सोवियत जनगण ने इस भ्रातृत्वपूण सहायता का बडी कृतज्ञता से अभिनन्दन किया। सोवियतो की नवी अखिल रूसी काग्रेस (दिसम्बर १६२१) ने घोषणा की कि "रूस की श्रमजीवी जनता यूरोप और अमरीका के मजदूरा के श्रम के घट्ठदार हाथो द्वारा दी गयी भ्रातृत्वपूण सहायता का विशेप रूप से मूल्यवान मानती है। काग्रेस की नजरा मे यह सहायता महनतकशा की सच्ची अतर्राष्ट्रीय एकजुटता की अभिव्यक्ति है।"

अन्य वदशिक सगठना जैस रेड क्रास और क्वैकरा ने भी सहायता की। प्रसिद्ध नार्वेजियन ध्रुवीय गवेषक फ़्रित्याफ नानसेन न रूस के लिए अकालग्रस्ता की सहायता के लिए समिति की स्थापना की। इस समिति ने बाद म ८० हजार टन खाद्य पदाथ भेजा। कृतज्ञता तथा प्रशसा के तौर पर नानसेन को मास्को सोवियत का सम्मानित सदस्य बना दिया गया।

एक अमरीकी खैराती सगठन—"अमरीकी सहायता प्रशासन"—ने भी बडी मात्रा मे खाद्य पदाथ रूस भेजा। लेकिन "अमरीकी सहायता प्रशासन" ने टीनबद खाद्य और आटे को केवल अकालग्रस्ता की सहायता के लिए नही, बल्कि सोवियत सत्ता क खिलाफ सघप के लिए भी इस्तेमाल किया। 'अमरीकी सहायता प्रशासन" के प्रतिनिधिया ने विशेप प्रयास करके वितरण करनेवाली प्रशासन की सस्थाग्रा म प्रतिक्रातिकारी तत्वो को शामिल किया, जो सोवियत विरोधी कायकलाप म लगे।

१९२१ की गर्मियो के अंत मे देश के सामने काम था सूखाग्रस्त इलाको मे जाडे की बोआई के लिए बीज मुहैया करना। मगर राज्य के पास बीज का कोई भडार नही था। मजबूरन इसे नयी फसल का अनाज वोल्गा के गावो मे इस काम के लिए भेजना पडा।

अगस्त मे "प्राव्दा" के एक अक मे बडे अक्षरो मे यह शीर्षक छपा "साथी किसानो! अपना जिन्सी टैक्स अदा करो, वोल्गा क्षेत्र के खेत रोपण की प्रतीक्षा कर रहे है! बीज मे देर का मतलब है विनाश और मृत्यु!" इस अपील से ही प्रकट होता है कि उन दिनो स्थिति कितनी नाजुक थी।

सूखाग्रस्त इलाको मे २ लाख २४ हज़ार टन अनाज समय पर पहुच गया। इस प्रकार किसानो को बडी आवश्यक सहायता मिली और जाडे मे साधारणतया जितनी भूमि पर खेती होती थी, उसके तीन चौथाई को रोप लिया गया।

लेकिन इसका यह मतलब नही था कि खराब फसल के परिणामो पर काबू पाने के प्रयत्नो मे किसी प्रकार की ढिलाई की जा सकती थी। दूसरा काम था वसत रोपण के लिए अनाज के बीज मुहैया करना। इस तूफानी अभियान मे भी सफलता हुई। सूखाग्रस्त इलाको के किसानो को वसत रोपण के लिए ६,५६ ००० टन बीज मिल गया।

१९२२ मे वसत रोपण अच्छे ढग से बडे उत्साह के साथ किया गया। इन ग्रामीण क्षेत्रो के समाचारो से यह ज़ाहिर होता था कि किसानो ने खेतो मे बडी लगन से काम किया बीजो के वितरण के लिए व बहुत कृतज्ञ थे और रोपण का काम बहुत जल्दी और सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

अनिवार्यत युद्ध और दरिद्रता के दुर्भाग्यपूर्ण परिणामो का, जिनकी तीव्रता १९२१ की फसल की बर्बादी से बहुत बढ गयी थी, बहुत गहरा असर पडा। घोडे और बैल की बडी कमी थी और खेती के जो साधन बर्बाद हो चुके थे उनकी तत्काल क्षतिपूर्ति सभव नही थी। ऊपर बताया गया है कि राज्य ने बीज मुहैया करके किसानो की निर्णायक सहायता की। लेकिन ज़ाहिर है कि इस बीज से किसानो की सारी ज़रूरत पूरी नहीं हो सकती थीं। इस का परिणाम यह हुआ कि १९२२ मे जोत की जमीन मे और कमी हुई।

१९२२ मे जब फसल का समय आया, तो लोग मौसम की भविष्यवाणी डर-डर कर सुनते और भयभीत थे कि कही कोई नया प्राकृतिक प्रकोप न टूट पडे। लेकिन उनका डर निराधार सिद्ध हुआ। १९२२ का साल अच्छा था और अनाज की कुल पैदावार ३ करोड ५२ लाख टन से अधिक हुई यानी पिछले दो वर्षो से ज्यादा अच्छी फसल हुई।

जब १९२२ मे जाडे की बोआई का समय आया, तो सारे देश मे काश्त की जमीन का विस्तार किया गया। यह सोवियत कृषि के विकास मे एक मोड बिदु था। इस समय से खेती का पुनरुत्थान निरतर सफलता पूर्वक होता रहा। सबसे कठिन लडाई जीती जा चुकी थी।

अकाल तथा उसके परिणामो के विरुद्ध अभियान बहुत महत्वपूर्ण था। बहुत बडे पैमाने पर, राज्य सस्थाओ और सोवियत जनगण द्वारा सुसगठित सहायता काय की बदौलत करोडो आदमियो को भुखमरी के चगुल से और ग्रामीण रूस के विशाल क्षेत्रो को तबाही और बर्बादी से बचा लिया गया था।

उस समय ऐसा लगा होगा कि अभूतपूर्व तबाही और उद्योग तथा परिवहन की दुर्व्यवस्था के कारण कृषि को बर्बादी से बचाना सभव नही होगा। परन्तु सोवियत सत्ता ने सफलतापूर्वक सभी उपलब्ध साधनो को जुटा लिया और एक अत्यत समन्वित योजना तैयार करके उन्हे इस अतिमहत्वपूर्ण और सर्वप्रधान काय को पूरा करने की खातिर एक क्षेत्र मे सकेद्रित किया।

इस प्रकार सोवियत राज्य के सामने जो एक बेहद कठिन बाधा उपस्थित हो गयी थी, उसपर तमाम जनगण के अथक प्रयासो के फलस्वरूप सफलतापूर्वक काबू पा लिया गया।

अर्थव्यवस्था की सफलतापूर्वक बहाली

नयी आर्थिक नीति मे सक्रमण के परिणाम शीघ्र अधिकाधिक स्पष्टता के साथ सामने आने लगे। कृषि के क्षेत्र मे १९२३ से निरन्तर विस्तार शुरू हुआ। उस साल फसल २,२६ ५०० हज़ार एकड जमीन पर लगायी गयी थी, जिसका मतलब यह है कि गत वर्ष की तुलना मे

३४६०० हज़ार एकड की वद्धि हुई थी। अगले दो वर्षों यानी १६२४ और १६२५ मे सालाना २४,८०० हज़ार से अधिक एकड की वद्धि हुई। १६२५ तक कृषि का क्षेत्र लगभग युद्धपूव स्तर पर पहुच गया था।

सभी बुनियादी फसले अधिक बोयी जान लगी थी और १६२५ में कपास और चुक दर की कुल उपज युद्धपूव के लगभग बराबर थी। आल की रोपाई मे भी बराबर विस्तार और उपज मे वद्धि हुई। १६२५ मे इसकी पदावार युद्धपूव की तुलना मे ५० प्रतिशत अधिक थी। सूरजमुखा की पदावार म वृद्धि इससे भी अधिक बडी थी।

पशु पालन की स्थिति मे भी बडी तेज़ी से सुधार हुआ और १६२५ तक पिछले तमाम वर्षों की क्षतिपूर्ति हो गयी थी।

इस तरह कितनी ही कठिनाइया के बावजूद कृषि की बहाली १६२५ तक लगभग पूरी हो चुकी थी। यद्यपि अभी बहुतेरी विषमताओ को दूर करना और कुछ पिछडेपन का उ मूलन करना बाकी था, मगर मुख्य उद्देश्य पूरे हो चुके थे।

उद्योग की बहाली मे भी सफलतापूवक प्रगति हुई। १६२१–१६२२ म ही कपडे, जूते, माचिस, साबुन, कागज तथा सावजनिक उपभाग की अय वस्तुआ के उत्पादन मे वद्धि हुई। कोयले की पैदावार भी, खासकर मुख्य कोयला-खनन केद्र–दोनत्स बेसिन मे बढी। उद्योग के अय क्षत्रा जसे तेल निष्कासन (बाकू तेल क्षेत्र) और कृषि सबधी मशीना के उत्पादन मे खासा सुधार हुआ।

परिवहन की व्यवस्था भी शीघ्र ही सामाय रूप से काम करने लगी। १६२२ के अत तक रलवे की मरम्मत का बडा काम पूरा हा चुका था और सभी लाइनें फिर से चालू हो गयी थी।

गहयुद्ध के वर्षों की तरह ही इन वर्षों मे भी मजदूर वग ने अपन कायभारा के प्रति बडे त्याग और तत्परता का सबूत दिया। एक बार फिर उन्होंने छुट्टी के दिना म बिना मुआवजा काम करने इधन तयार करन, मशीना की मरम्मत करन आदि के लिए स्वेच्छापूवक श्रमदान किया।

मजदूर वग के सन्स्या न उद्योग मे नय आदोलन भी शुरू किय। १६२१ म पहली बार दानत्स बेसिन, उराल पत्राग्राद (लेनिनग्राद) तूला और अय औद्योगिक क्षेत्रा म अग्रणी मजदूरा के दस्त बन। इन अग्रणी दस्ता के सदस्या ने विशेष रूप से उच्च श्रम की उत्पादन क्षमता

स्थापित की, उत्पादन के नवीकरण सबधी सुझाव पेश किये, आदि। इस दशक के उत्तरार्द्ध मे यह आदोलन बहुत व्यापक हो गया और अधिकाश मजदूर इसमे भाग लेने लगे।

१९२१–१९२२ मे कारखाना मे पहली बार उत्पादन सबधी मामलो पर सभाए हुई जिनमे मजदूरा ने उत्पादन सबधी महत्वपूण समस्याओ के बारे मे फँसले किये, त्रुटियो की ओर ध्यान दिलाया और श्रम के सगठन मे सुधार की नयी सम्भावनाओ की खोज लगायी। १९२५ के अत तक उद्योग की सभी शाखाओ मे उत्पादन सभाए नियमित रूप से होने लगी थी।

इस अवधि मे मजदूर वग की सख्या भी तेजी से बढ रही थी। इसका कारण एक तो यह था कि खाद्य पदार्थों के अभाव के दिनो मे जो मजदूर गावा म काम करन चले गये थे वे शहरों म वापस आ गये, और दूसरे, नौजवानो की एक नयी पीढी और कल के किसान भी मजदूरा की पाति मे आकर मिलने लगे थे।

१९२४ के शुरू मे मुद्रा सुधार किया गया, जिससे मुद्रा स्फीति का अत हुआ और वित्तीय व्यवस्था सुदृढ और स्थिर हो गयी।

१९२६ के प्रारम्भ तक उद्योग की बहाली का काम मुख्यतया पूरा हो चुका था। बडे पमाने के उद्योग म कुल पैदावार १९१३ के स्तर से अधिक हो गयी थी (१०८ प्रतिशत), और कुछ शाखाओ म (टर्बाइन, बायलर और मशीन टूल का उत्पादन) यह स्थिति एक बरस पहले ही हो चुकी थी। बिजली शक्ति के उत्पादन मे भी शानदार प्रगति हुई। गोएलरो योजना के अनुसार कुछ बिजलीघर—कशीरा और पत्नाग्राद के बिजलीघर १९२२ म, कीजेलोव, नीज्नी नोव्गोरोद और शतूरा के बिजलीघर १९२४–१९२५ म—चालू होने लगे थे। प्रथम बडे बिजलीघर का निर्माण १९२६ मे पूरा हुआ।

लेकिन उद्योग की कुछ अन्य शाखाए अभी भी बहुत पीछे थे। उदाहरण के लिए कच्चे लोह की पैदावार १९२० की तुलना म १९२६ म १९ गुना अधिक हो गयी थी, मगर युद्धपूव के मुकाबले मे केवल ५२ प्रतिशत थी।

तरह-तरह की बाधाओ के बावजूद अथव्यवस्था, जिसे युद्ध के वर्षों मे बडी क्षति पहुची थी, अत्यत कम समय मे पुन अपने पैरो पर खडा हो

चुका था। सोवियत जनगण की इस महान उपलब्धि का मतलब यह था कि देश अब अपने विकास की नयी मंजिल में प्रवेश कर सकता था।

समाजवादी निर्माण के लिए लेनिन की योजना

गृहयुद्ध के थोडे ही दिनो बाद लेनिन ने समाजवादी निर्माण की एक योजना तैयार कर ली थी। इसमे क्रातिकारी मार्क्सवादी सिद्धात को सृजनात्मक ढग से विकसित किया गया था, क्राति के अनुभव का, प्रारम्भिक समाजवादी परिवर्तनो और एक नयी सामाजिक व्यवस्था के निर्माण का विस्तारपूर्वक विश्लेषण किया गया था। लेनिन की कृतियो मे, जो १६२२ के अत और १६२३ के प्रारम्भ मे लिखी गयी थी, समाजवाद की विजय के लिए सघर्ष का सामजस्यपूर्ण और स्पष्ट कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया था।

समाजवाद के निर्माण के लिए लेनिन की योजना के तीन मुख्य अगभूत तत्व है—उद्योगीकरण, कृषि-सहकारिता और सास्कृतिक क्राति।

समाजवादी समाज के पास एक मजबूत और विश्वसनीय भौतिक और तकनीकी आधार का होना जरूरी है और खुद इसके लिए उद्योग और खासकर भारी उद्योग का सर्वतोमुखी विकास आवश्यक है। इसी लिए लेनिन ने उद्योग को विकसित करने और नये कारखानो तथा बिजलीघरो के निर्माण पर खास तौर पर जोर दिया। यह रूस जैसे अपेक्षाकृत पिछडे देश मे एक कठिन और पेचीदा काम था। लेनिन ने लोगो को सख्त किफायत करने और इस प्रकार जमा किये गये धन को उद्योग की बहाली और विस्तार के लिए उपयोग करने का आवाहन किया।

कृषि के सबध मे लेनिन ने इस बात की गुजाइश रखी कि सोवियत राज्य किसानो को धीरे धीरे सहकारिता की ओर प्रोत्साहित करेगा और यह कि किसानो को, जिन्होने शुरू मे सहकारिता के बहुत सादा रूप (बिक्री, सप्लाइ, कर्ज आदि की सहकारी सस्थाए) अपनाये थे, शीघ्र स्वय अपने अनुभव से सहकारिता प्रणाली के फायदो का यकीन हो जायेगा और वे समझ लेगे कि अलग अलग किसान, जिनके पास अपने छोटे से खेत के सिवा और कुछ नही है, स्वय अपने आप अपनी खेती को

लाभदायक नही बना सकेंगे, लेकिन अगर वे आपस मे मिल जायें, समूहीकरण कर ले, तो जल्दी ही समृद्ध हो जायेंगे। सहकारिता के निम्न, साधा रूपो से उच्चतर रूपो यानी उत्पादको की सहकारी सस्थाओ तक, जिनमे भूमि, भारवाहक पशु, और खेती के मूल साधन का भी स्वामित्व साझा मे हो, सक्रमण को सहज बनाने के लिए योजनाए तैयार की गयी। सोवियत व्यवस्था के अतर्गत सहकारिता से किसानो के व्यक्तिगत और सार्वजनिक हितो को एक ही साथ बढावा देना सम्भव हो गया।

लेनिन ने सास्कृतिक पिछडेपन का दूर करने और व्यापक पैमाने पर सास्कृतिक क्राति को अमल मे लाने के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया। इसकी शुरूआत अतीत की भयकर विरासत – निरक्षरता – के उन्मूलन से की गयी थी और उसमे पुस्तकालयो और क्लबो के निर्माण के लिए साधन की व्यवस्था तथा बडे पैमाने पर नये बुद्धिजीवियो के प्रशिक्षण और विज्ञान और कला की भव्य प्रगति का उल्लेख है।

लेनिन को पूरा अदाजा था कि आगे आनेवाले वर्षो मे क्या-क्या *कठिनाइया और पेचीदगियां उत्पन्न होगी। फिर भी* उनका अटल विश्वास था कि जिन कामो का उन दिनो बीडा उठाया जा रहा था, उन्ह कामयाबी के साथ पूरा किया जा सकता है। वह जानते थे कि इस विजय को सुनिश्चित करनेवाली निर्णायक शक्ति कम्युनिस्ट पार्टी है, जिसकी जडें जनगण मे मजबूती से जमी हुई हैं। इसी लिए लेनिन ने अपील की कि पार्टी की एकता को कायम रखने के लिए पूरी कोशिश की जाये, सगठित अनुशासन का सख्ती से पालन किया जाये और इस प्रकार पार्टी पक्तियो की एकजुटता को बनाये रखा जाये।

* * *

मार्च, १९२३ मे लेनिन बहुत बीमार हो गये। अभी वह ५३ वर्ष के भी नही थे, मगर बरसो निर्वासन म अभाव का जीवन और गुप्त काम, शत्रु की गोलियो के जखम का असर और हमेशा ही काम का जबरदस्त भार अब रग लाने लगा था।

२१ जनवरी, १९२४ को व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की मृत्यु हो गयी। उनकी मौत ने दुनिया को स्तब्ध कर दिया। उनके दुश्मन भी उनकी असाधारण प्रतिभा और विश्व इतिहास म उनकी महान भूमिका
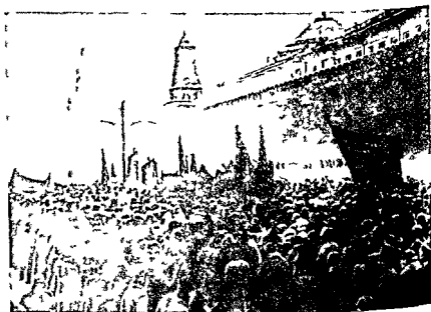
लेनिन का जनाजा। लाल चौक। जनवरी १६२४

से इनकार नहीं कर सकते थे। लेनिन का नाम मानवजाति के इतिहास में एक नये युग के प्रादुर्भाव—पूंजीवाद के पतन और समाजवाद और कम्युनिज्म के उत्थान—से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। लेनिन के रूप में मजदूर वर्ग को इतिहास के एक निर्णायक मोड़ पर एक प्रतिभाशाली नेता मिल गया था।

लेनिन की मौत से मेहनतकश जनता को अपार दुख पहुंचा। परन्तु वह घबराहट भरी निराशा का शिकार नहीं हुई। मजदूर, किसान और बुद्धिजीवी जानते थे कि लेनिन का लक्ष्य अमर है और कम्युनिस्ट पार्टी इस महान नेता के बतलाये हुए मार्ग पर जनता का नेतृत्व करती रहेगी।

उन शोकपूर्ण दिनों में जब सोवियत जनगण लेनिन से विदाई ले रहे थे, कम्युनिस्ट पार्टी और जनगण की एकता बहुत स्पष्ट रूप में सामने आयी। इस एकता का प्रभावशाली इजहार कम्युनिस्ट पार्टी में सामूहिक रूप से मेहनतकशों के शामिल होने में हुआ। लेनिन की मृत्यु के दूसरे ही दिन हजारों मजदूरों ने सदस्यता के लिए दरखास्तें दीं। "गोसज़नाक"

की मास्को फैक्टरी के मजदूरो ने घोषणा की "यह कोई सयोग की बात नही है कि हम रूसी कम्युनिस्ट पार्टी की पक्तियो मे शामिल हो रहे है। बरसो से हममे से दजनो आदमी कम्युनिस्टो के साथ कधे से कधा मिलाकर काम कर रहे है और अब हम पार्टी मे शामिल हो रहे है किसी विशेषाधिकार की खातिर नही, बल्कि उस क्षति को पूरा करने के लिए, जो हमारी महान सर्वहारा पार्टी को अभी उठानी पडी है।"

यह आदोलन लेनिन पार्टी भर्ती अभियान के नाम से प्रसिद्ध है। इसके जरिये मजदूर वर्ग के सर्वोत्तम प्रतिनिधियो मे से २,४०,००० नये सदस्य कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हुए। इसी के साथ १,७०,००० लडके-लडकिया रूसी नौजवान कम्युनिस्ट लीग मे (जो अब सोवियत सघ की लेनिनवादी नौजवान कम्युनिस्ट लीग या कोम्सोमोल के नाम से प्रसिद्ध है) शामिल हुए।

सामाजिक राजनीतिक जीवन

अर्थव्यवस्था को पुन उसके पैरो पर खडा करने के साथ ही सोवियत व्यवस्था को भी सुदृढ बनाया जा रहा था। नयी आर्थिक नीति के जारी होते ही किसानो के रुख मे एकाएक परिवर्तन हुआ। किसानो का मुख्य भाग शीघ्र ही सोवियत सत्ता का मजबूती से और दृढतापूर्वक समर्थन करने लगा। उसने अपनी नयी स्थिति पर अपना सतोष प्रकट किया। कुलको की बगावतो का जोर घटने लगा। सोवियत विरोधी लूट-मार करनेवाले गिरोहो का उस समय तक सफाया कर दिया गया था। लेकिन तब भी समय-समय पर तोड फोड करनेवालो के इक्का-दुक्का दलो का बाहर से देश के भीतर घुस आने का सिलसिला जारी रहा।

आर्थिक बहाली और उसके बाद मजदूरो और किसानो के जीवन स्तर मे सुधार की बदौलत उनके सामाजिक राजनीतिक कार्यकलाप मे वृद्धि हुई। सोवियतो तथा दूसरे अनेक सार्वजनिक सगठनो के काम मे करोडो आदमी शरीक होने लगे। लाखो मेहनतकशो ने सोवियतो की जनतत्रीय, गुबेर्नियाई, उयेज्द और वोलोस्त काग्रेसो के प्रतिनिधि, तथा सभी स्तरो पर सोवियतो से सबधित समितियो के सदस्यो की हैसियत से सोवियतो के काम मे भाग लिया। मेहनतकशो के जन सम्मेलनो का

आयोजन किया गया, जिन्हे मजदूरो किसानो का गैर-पार्टी सम्मेलन कहा जाता था। अधिकाधिक स्त्रियो को राजकीय, सहकारी, सास्कृतिक तथा शैक्षणिक सगठनो मे काम पर लगाया गया। १९२३ के अत म लगभग पाच लाख स्त्रिया सावजनिक कामो मे सक्रिय भाग ले रही थी। ट्रेड यूनियनो, सहकारी सस्थाओ तथा कोम्सोमोल के सक्रिय सदस्यो की सख्या अधिकाधिक होती जा रही थी।

उसी जमाने मे मेन्शेविक और समाजवादी-क्रातिकारी निम्नपूजावादी पार्टियो का हमेशा के लिए विगठन हो गया। ये पार्टिया अक्तूबर क्राति के समय और उसके कुछ महीने पहले ही पूजीपति वग के साथ समझौता करने की अपनी तत्परता के कारण जनता का विश्वास खोने लगी थी। गृहयुद्ध के दिनो मे हस्तक्षेपकारियो और सफेद गार्डों के साथ उनके जा मिलने से वे अपने असली रग मे सामने आ गयी और जाहिर हो गया कि वे पूजीवादी व्यवस्था की समथक है। गृहयुद्ध के बाद सोवियत सत्ता की सफलताओ और कम्युनिस्ट पार्टी के परचम तले जनता के जमा हो जाने से रहे सहे समाजवादी-क्रातिकारी और मेन्शेविक सगठनो म कोई दम नही रहा और अपने आप उनका विगठन हो गया।

तीसरे दशक के मध्य मे ही रूस मे निम्नपूजीवादी राजनीतिक पार्टियो का सगठित राजनीतिक शक्ति के रूप मे कोई अस्तित्व नही रह गया था। उनका अस्तित्व कही कुछ था तो गुप्त सगठनो के रूप म, जिनको जनता का कोई समथन नही था।

सभी पूजीवादी और निम्नपूजीवादी पार्टियो का विगठन और सफाया हो जाने के बाद सोवियत सघ म एक ही पार्टी—रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बाल्शेविक)* रह गयी। इसकी नीति की सत्यता लाखो मेहनतकशो के अनुभव से प्रमाणित हो चुकी थी। उन्होने देख और समझ लिया था कि यही एक पार्टी उनके हितो की रक्षा करती है और स्वतत्रता और समृद्धि का रास्ता बतलाती है। इसी लिए उन्होने इसी एक पार्टी का समथन

---

*कम्युनिस्ट पार्टी का यह आधिकारिक नाम १९१८ के वसत स १९२५ तक था। १९२५ स १९५२ तक उसका नाम था अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बाल्शेविक) और १९५२ म उसका नाम हो गया सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी।

किया और अन्य सभी पार्टियो से मुह फेर लिया, जिन्होने नारे तो बहुत शानदार लगाये थे, मगर वास्तव मे जनता के हितो से गद्दारी की थी।

नयी आर्थिक नीति के प्रथम वर्षो म शहर और देहात मे दोनो ही जगह पूजीवादी तत्वा की सख्या और कायकलाप मे कुछ वद्धि हुई। शहरा म नौपूजीपतिया की एक परत उत्पन्न हुई (निजी व्यापारी, रेस्तोरा और छोटे उद्योग धधा के मालिक अथवा ठेकेदार आदि)। इसी दौरान म देहातो मे एक ग्रामीण "पूजीपति वग" (कुलक) की उत्पत्ति होने लगी थी। इस कारण पजीवादी विचारधारा मे भी कुछ नयी जान आयी। पूजीवादी बुद्धिजीवियो मे यह धारणा पैदा हुई कि नयी आर्थिक नीति का मतलब यह है कि कम्युनिस्ट पार्टी ने समाजवादी समाज के निर्माण का त्याग किया और आखिरकार उसे पूजीवाद की ओर लौटना पड रहा है। ये धारणाए खुले और स्पष्ट रूप मे उस सिद्धात म व्यक्त हुई, जिसने अपना नाम लेखो के उस सकलन "स्मेना वेख" से लिया, जिस १९२१ मे प्रवासी रूसियो ने प्राग मे प्रकाशित किया था। इस सिद्धात के अनुयायियो ने घोषणा की कि नयी आर्थिक नीति का रूस थोडे ही दिना म पूजीवादी रूस बन जायेगा। इस उद्देश्य को सामने रखकर उन्होने माग की कि निजी उद्यमकर्ता का पूरी आजादी प्रदान की जाये, भूमि का राष्ट्रीयकरण मसूख किया जाये, इत्यादी।

कम्युनिस्ट पार्टी ने बिना किसी लगी लिपटी के इन पूजीवादी धारणाओ को बेनकाब किया। लेनिन के भाषणो तथा पार्टी के प्रस्तावा मे इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि पूजीवादी विचारधारा की हर अभिव्यक्ति के खिलाफ अडिग सघष करना कम्युनिस्टा का कतव्य है। बार-बार कम्युनिस्टा ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि नयी आर्थिक नीति देश को पूजीवाद नही, बल्कि समाजवाद की दिशा मे ले जा रही है। लेनिन ने यह बात मास्को सोवियत के सपूर्ण अधिवेशन म २० नवम्बर, १९२२ के अपने भाषण मे बिल्कुल स्पष्ट कर दी थी। उन्होने कहा था कि "नयी आर्थिक नीति का रूस समाजवादी रूस बनगा।"*

उस समय स्वय कम्युनिस्ट पार्टी भी कठिन, तनावपूर्ण दौर से गुजर

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड ३३, पृष्ठ ४०५

रही थी। कुछ प्रमुख पार्टी कायकर्ता डगमगाने लगे तथा उन्होंने बहुमत की लेनिनवादी राजनीतिक लाइन के खिलाफ बोलना शुरू किया। इन विरोधी तत्वो क प्रधान त्रात्स्की थे। उनका और उनके समथका का विश्वास नही था कि बिना विश्व क्राति के सोवियत सघ म समाजवाद विजयी हो सकेगा। उन्होंने मजदूर वग और किसानो की एकजुटता का भी समथन नही किया क्योकि वे किसानो को शुद्ध प्रतिक्रातिकारी शक्ति मानते थे। त्रात्स्की न पार्टी एकता के विरुद्ध बात की। उनकी कोशिश थी कि विरोधी गुटो और गिरोहो को कायकलाप का पूरा अवसर मिले। १९२३ के वसत मे पार्टीव्यापी बहस म त्रोत्स्कीवादियो को बुरी तरह शिकस्त हुई। इस बहस म केवल १३ प्रतिशत सदस्यो ने उनके समथन मे वोट दिया।

जनवरी, १९२४ म १३व पार्टी सम्मेलन ने इस बात की पुष्टि की कि त्रोत्स्कीवादी विरोध पक्ष "बोल्शेविक्वाद म सशोधन का प्रयास मात्र और लेनिनवाद का स्पष्ट त्याग ही नही, बल्कि असदिग्ध रूप से एक निम्नपूजीवादी भटकाव है।"

त्रात्स्कीवाद के खिलाफ अभियान म एक मुख्य भूमिका स्तालिन न अदा की, जो १९२२ के वसत म कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव बन गये थे।

लेकिन इस शिकस्त के बावजूद लेनिनवाद विरोधी तत्व अभी सक्रिय थे। १९२५ मे तथाकथित 'नया विरोध-पक्ष" सामने आया, जिसका नेतत्व जिनोव्येव और कामेनेव कर रहे थे। "नये विरोध पक्ष" का कायक्रम मुख्यतया वही था जो त्रोत्स्कीवादियो का था, जिन्हे सोवियत सघ म समाजवाद की विजय पर विश्वास नही था। पार्टी ने इस विरोध पक्ष की निन्दा की और केन्द्रीय समिति के लेनिनवादी माग का समथन किया। उस दौर के पार्टी प्रस्तावो मे सोवियत सघ मे समाजवाद की विजय की सम्भावना का स्पष्ट और साफ शब्दो म निरूपण किया गया है।

सोवियत सघ का सस्थापन

३० दिसम्बर, १९२२ को सोवियत समाजवादी जनतन्त्र सघ की सोवियतो की प्रथम काग्रेस के २२१५ प्रतिनिधि मास्को के बोल्शोई थियेटर म जमा हुए। उनम स सबसे वृद्ध प्रतिनिधि स्मिदोविच । काग्रेस

का उदघाटन किया। इनपर तालिया की गडगडाहट "इटरनेशनल" की धुन मे डूब गयी। गान के शब्द विभिन्न भाषाओ मे थे, मगर उसकी धुन और उत्साह एक ही था।

वह दिन सोवियत इतिहास मे हमेशा स्मरणीय रहेगा, क्योकि उसी रोज, ३० दिसम्बर १९२२ को एक बहुजातीय राज्य, सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ का निर्माण हुआ।

जैसा कि पिछले अध्यायो मे उल्लेख किया गया भूतपूर्व रूसी साम्राज्य की धरती पर अक्तूबर क्राति के बाद, जिसने जातीय उत्पीडन की जजीरो को तोड दिया था, अनेक जातीय जनतत्रो की स्थापना हुई थी। करोडो उपेक्षित लोग, जो सभी अधिकारो से वचित थे, अपने जातीय सोवियत राज्यत्व की स्थापना कर रहे थे। लेकिन इसका कदापि यह मतलब नही था कि इस कारण सारा देश कमजोर या विगठित हुआ। इसके विपरीत नवजात जातीय जनतत्रो ने सघ मे शामिल होने की प्रबल इच्छा प्रकट की। रूस की जातियो के आत्मनिर्णय और इसी के साथ साथ सोवियत सत्ता और जातीय राज्यत्व की स्थापना ने प्रत्येक जाति के विकास और प्रगति के लिए अनुकूल स्थितिया पैदा की तथा मजबूत और स्थायी एकता की जमानत मुहैया की। अतीत मे "एकता" का आधार दम घोटनेवाला उत्पीडन था, मगर नयी प्रकार की एकता स्वेच्छापूर्वक ढग से कायम हुई, वह जातियो की स्वय अपनी आकाक्षाओ की अभिव्यजना थी, क्योकि वे अपनी शक्तियो को एकत्रित करने का जबदस्त महत्व समझ गयी थी और एक होना चाहती थी।

हस्तक्षेपकारियो और सफेद गार्डों के विरुद्ध सघर्ष के दौरान सभी सोवियत जनतत्रो न क्राति की उपलब्धियो की रक्षा करने के लिए एक दूसरे का साथ दिया। सोवियत जनतत्रो की सैनिक एकता लडाई की आग म गढी गयी और पक्की बनायी गयी थी और गहयुद्ध के बाद इस एकीकरण की जरूरत और भी ज्यादा महसूस की जाने लगी थी। अगर वे एक दूसरे की सहायता करे और हाथ मे हाथ देकर काम करे, तभी बर्बाद खेतो मे पुन बीज बोया जा सकेगा, धमन भट्ठियो और जग लगी मशीन टूलो को फिर से चालू किया जा सकेगा, केवल तभी वे समाजवादी निर्माण के महान कार्यों से निबट सकेगे। शक्तियो का मिलाकर चलने की जरूरत इसलिए भी थी कि बाहरी दुश्मन का खतरा बराबर बना हुआ था।

सोवियत संघ का प्रथम राज्यचिह्न

साम्राज्यवादी क्षेत्रों ने सोवियत जातियों को गुलाम बनाने की अपनी योजनाओं का त्याग नहीं किया। इस खतरे का मुकाबला करने के लिए सोवियत जनतंत्रों की अटूट एकता आवश्यक थी।

तीसरे दशक के प्रारम्भ में देश की धरती पर अनेक सोवियत जनतंत्र मौजूद थे। इनमें सबसे बड़ा रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र था जिसकी आबादी ९ करोड़ ६५ लाख थी। रूसी जनतंत्र में मध्य रूस, दोन और वोल्गा क्षेत्रों, उराल, साइबेरिया और सुदूर पूर्व के अलावा जो मुख्यतया रूसियों से आबाद थे, दागिस्तानी, गोर्स्किया (पहाड़ी), तातार, बाश्किर, कज़ाख, तुर्किस्तान और याकूत स्वायत्त जनतंत्र तथा अनेक स्वायत्त प्रदेश भी शामिल थे।
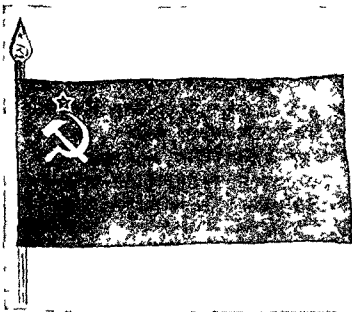
सोवियत संघ की राज्य पताका
लाल पृष्ठभूमि में स्वर्ण हथौड़ा,
हंसिया और सितारा

उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतंत्र की आबादी २ करोड़ ६० लाख और बेलोरूसी सोवियत जनतंत्र की १६ लाख थी। ट्रांसकाकेशिया के जनतंत्रों—आजरबैजान, आर्मीनिया और जार्जिया, जिन्होंने १९२२ में मिलकर एक ट्रांस-काकेशियाई सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र बनाया था—की आबादी ५६ लाख थी।

इन सभी जनतंत्रों में समान हितों, उद्देश्यों, ध्येयों का संबंध था और उनका राजकीय ढांचा एक था। विभिन्न जनतंत्रों के बीच बंधुत्व के संबंध संघीय संधियों के जरिये सुदृढ़ हो चुके थे। इन संधियों में कई आर्थिक और प्रशासकीय संस्थाओं और सेना को सम्मिलित करने की व्यवस्था थी। लेकिन जनतंत्रों को और भी घनिष्ठ एकता करके एक संघ में एकताबद्ध होने की जरूरत महसूस हो रही थी। इस सवाल को सभी जनतंत्रों में मेहनतकशों ने स्वयं उठाया। इससे यह बहस शुरू हुई कि

सक्रिय थे। संविधान को अंतिम रूप से ३१ जनवरी, १९२४ को सोवियतों की द्वितीय अखिल संघीय कांग्रेस में स्वीकार किया गया।

जब सोवियत संघ की स्थापना हुई, तो उस समय मध्य एशिया में तुर्किस्तान स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतंत्र, जो रूसी जनतंत्र में शामिल था, और बुखारा और ख्वारज्म नामक सोवियत जनतंत्र थे। इनमें से हर एक जनतंत्र में अनेक जातियों के लोग रहते थे, परन्तु उनकी राज्य सीमाएं मध्य एशिया में विभिन्न जातियों के क्षेत्रीय विभाजन के अनुसार नहीं था।

१९२४ में मध्य एशिया में जातीय और राज्य सीमाओं का निर्धारित किया गया। यह काम मध्य एशिया की जातियों की इच्छा के अनुसार आबादी की जातीय बनावट के तफसीलों और सूक्ष्म अध्ययन के बाद किया गया। परिणामस्वरूप उज्बेक और तुर्कमान संघीय जनतंत्रों और साथ ही ताजिक*, किर्गिज तथा कराकल्पाक स्वायत्त जनतंत्र की स्थापना की गयी।

उज़्बेकिस्तान और तुर्कमानिस्तान की सोवियतों की संस्थापन-कांग्रेसों ने इन जनतंत्रों की सोवियत संघ में शामिल होने की इच्छा का ऐलान किया और १९२५ में सोवियतों की तीसरी अखिल संघीय कांग्रेस ने उनके इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सोवियत राज्य छः जनतंत्रों का संघ बन गया।

---

*ताजिक स्वायत्त जनतंत्र को १९२९ में संघीय जनतंत्र बना दिया गया।

चौथा अध्याय

अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में प्रगति १९२६-१९२८

सोवियत सघ की अतर्राष्ट्रीय स्थिति।

अथव्यवस्था के समाजवादी पुनर्निर्माण का काय कठिन परिस्थितिया मे शुरू किया गया था। समग्र रूप से सोवियत सघ की अतर्राष्ट्रीय स्थिति सुदृढ बनती जा रही थी, देश की प्रतिष्ठा मजबूत हो रही थी, तथा अन्य देशो के साथ अधिकाधिक राजनयिक, आर्थिक तथा सास्कृतिक सबध स्थापित हो रहे थे। लेकिन पूजीवादी देशो मे प्रतिक्रियावादी क्षेत्रों ने एक सयुक्त सोवियत विरोधी मोर्चा कायम करने का विचार त्याग नहीं दिया था। एक ओर इन क्षेत्रो को अभी भी यह आशा थी कि मिलकर कोशिश करने से वे सोवियत राज्य को नष्ट कर सकगे और, दूसरी ओर, उन्ह नजदीक आते जा रहे आर्थिक सकट से बचने का एक सभव रास्ता अपने सोवियत विरोधी अभियान को तेज करने म दिखाई दिया। लन्दन, पेरिस और वाशिंगटन के अनेक अखबारो ने सोवियत सघ से राजनयिक सबध विच्छेद करने का आवाहन किया। १९२७ के वसत म ब्रिटिश सरकार ने इसकी दिशा मे सक्रिय कदम उठाये १२ मई को पुलिस ने लदन म सोवियत व्यापार निगम "आरकोस" की इमारत पर धावा किया। लेकिन सोवियत सघ पर ब्रिटेन विरोधी हरकतो का आरोप लगाने के उद्देश्य से सोवियत व्यापार सगठन पर पुलिस का यह गैर-कानूनी हमला जो अतर्राष्ट्रीय कानून के बिल्कुल विपरीत था, असफल रहा। जैसा कि आशा की जा सकती थी कोई ऐसी दस्तावेज नही मिली जिससे सोवियत सघ पर आरोप साबित किया जा सकता।

इसके बावजूद ब्रिटिश विदेश मत्री आस्टिन चैम्बरलेन ने २७ मई को सोवियत सघ के पास एक नोट भेजा जिसमे एग्लो-सोवियत व्यापार

सधि को मसूख करने तथा सोवियत सघ से राजनयिक सबध विच्छेद करने की घोषणा की गयी थी।

सोवियत विरोधी उकसावे अन्य देशो मे भी आयोजित किये गये।

७ जून को किसी व्यक्ति ने पोलड मे सोवियत राजदूत वोइकोव की हत्या कर दी। पोलिश प्रतिक्रियावादी क्षेत्रा का आशा थी कि पोलिश-सोवियत सबध बिगड जायेंगे और हो सकता है कि दोना की फौजें आपस म टकरा जायें जिसमे अन्य शक्तिया भी शरीक हो जायेंगी। लेकिन इस चाल का भी कोई नतीजा नही निकला।

पूव मे भी उन्ही दिना सोवियत विरोधी उकसावे आयोजित किये गय। उसी १९२७ के साल अप्रैल मे पेकिंग मे सोवियत दूतावास पर हमला किया गया। इमारत की तलाशी ली गयी और सारा सामान नोच खसोट डाला गया तथा दूतावास के कई आदमियो को गिरफ्तार कर लिया गया। शघाई और तीनत्सिन मे भी सोवियत कौसुलेटो पर हमला किया गया।

पूजीवादी राज्यो को आशा थी कि सोवियत सघ के विरुद्ध नाना प्रकार के कुत्सापूवक अभियाना का पडयन्त्र रचकर वे एक सयुक्त सोवियत-विरोधी मोर्चे की स्थापना तथा प्रथम समाजवादी राज्य के खिलाफ एक नया जेहाद सगठित कर सकेंगे। इस सोवियत विरोधी अभियान के फलने के साथ साथ पश्चिम मे हथियारबदी की होड तेज हो रही थी। फौजे बढायी जा रही थी और सैनिक खच म वृद्धि की जा रही थी। जमनी ने भी पुन शस्त्रीकरण शुरू किया और वेर्साई सधि द्वारा लगाये गये प्रतिबधा के बावजूद, १९२४ से १९२८ तक के चार वर्षों मे शस्त्रास्त्र पर उसका खच ११ गुना बढ गया। जाहिर है कि इस सदभ मे युद्ध और शाति के सवाला का महत्व बहुत बढ गया था। सोवियत सरकार ने शाति के लिए तथा सभी देशो के साथ सामान्य आर्थिक सबध स्थापित करने के लिए अपना अभियान जारी रखा।

सोवियत सघ के वैदेशिक व्यापार के सबधा को कमजोर करने म प्रतिक्रियावादी क्षेत्रा को सफलता नही मिली। १९२७ मे सोवियत सघ का निर्यात और आयात दोनो ही १९२६ से अधिक था। १९२७ म सोवियत सघ ने आइसलड, लाटविया स्वीडन और ईरान से व्यापार सधिया की। अन्य देशा के साथ भी व्यापारिक सबधा मे काफी विकास हुआ। यद्यपि ब्रिटेन से व्यापार को धक्का पहुचा था, मगर अन्य देशा के

साथ सोवियत व्यापार मे खासा विस्तार हुआ। सोवियत व्यापारिक सगठना ने जिन चीजो को पहले ब्रिटेन से खरीदने की व्यवस्था की था, उन्ह अब अन्य देशो से खरीदने का प्रबध किया। इसका मतलब यह था कि ब्रिटेन के शासक वर्गो ने अपने कुकमावो के जरिये सोवियत सघ को नही बल्कि स्वय अपने हिता को चोट पहुचाई।

उसी साल सोवियत सघ ने पहली बार जेनेवा म अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्मेलन मे भाग लिया। ठोस उदाहरणो और तथ्या का हवाला देकर सोवियत प्रतिनिधिमडल ने बताया कि सोवियत सघ और पूजीवादी देशो मे आर्थिक सहयोग की बडी सम्भावनाए मौजूद है।

उस समय सोवियत सघ नि शस्त्रीकरण की बातचीत म भी सक्रिय भाग ले रहा था। ३० नवम्बर, १९२७ को सोवियत प्रतिनिधियो ने पहली बार एक नि शस्त्रीकरण सम्मेलन के तैयारी आयोग के काम म भाग लिया। यह सम्मेलन राष्ट्र सघ की परिषद द्वारा आयोजित किया जानवाला था। सोवियत प्रतिनिधिमडल के प्रधान थे लित्वीनोव। सोवियत सरकार की ओर से उन्होने आम और सपूण नि शस्त्रीकरण के लिए एक सक्षिप्त और ठोस सुझाव पश किया। उस सुझाव मे ये बाते थी प्रत्येक देश की हर प्रकार की सेनाए भग कर दी जायें, सभी हथियार और गोला-बारूद, विलाबदिया, नौसेना तथा वायुसेना के अड्डे नष्ट कर दिये जायें, सभी प्रकार के युद्धपोतो और सैनिक वायुयानो को भग कर दिया जाय, अनिवाय सैनिक सेवा का अत करने के लिए कानून बनाये जायें तथा प्रशिक्षण के लिए रिजव सैनिको के जमघट पर प्रतिबध लगा दिया जाय, हथियारो के कारखाने ताड दिये जायें और सैनिक खर्चो के लिए धन देना बद कर दिया जाये। यह सुझाव पेश करते समय सोवियत प्रतिनिधिमडल ने यह भी घोषणा कर दी कि वह नि शस्त्रीकरण की किसी भी अन्य योजना पर जिसमे ठोस सुझाव मौजूद हो, विचार करने को तयार है। सोवियत सघ द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव का प्रारूप बहुत ही सीधा-सादा था। इसम केवल दो बात थी (१) यह सुझाव रखा गया कि तयारी आयोग सोवियत सुझावो के आधार पर आम और सपूण नि शस्त्रीकरण सधि का विस्तृत मसविदा तयार करने के वास्ते तुरत काम शुरू कर दे, और (२) सोवियत सुझावो के आधार पर तयार किये गये सधि के मसविदे पर विचार और उसे स्वीकार करने के लिए एक नि शस्त्रीकरण सम्मेलन मार्च १९२८ तक आयोजित किया जाय।

सोवियत प्रस्ताव का गहरा असर पडा जिसे पूजीवादी समाचारपत्रो ने भी स्वीकार किया। लेकिन प्रधान पूजीवादी देश तो सैन्यकरण की नीति पर अमल कर रहे थे। उनके प्रतिनिधियो ने सोवियत सुझावो पर विचार किये बिना ही, उन्हे नजरअन्दाज कर दिया।

सोवियत सघ से सबध विच्छेद के बाद दो बरस का समय बीत चुका था। इस दौरान ब्रिटिश सरकार ने महसूस किया कि इससे न केवल ब्रिटेन के आर्थिक हितो को बहुत क्षति पहुची बल्कि उसने यह भी देखा कि सोवियत सघ की बढती हुई शक्ति को और उसकी अतर्राष्ट्रीय स्थिति के सुदृढ होने को रोका नही जा सका। १६२६ के वसत मे ८४ ब्रिटिश उद्योगपति पुन आर्थिक सपर्क कायम करने सोवियत सघ आये। लेबर और लिबरल पार्टिया सोवियत सघ से तुरत सबध स्थापित करने के पक्ष मे थी। उन्हे मई १६२६ के ससदीय चुनावो मे बहुमत प्राप्त हुआ।

जुलाई, १६२६ मे ब्रिटिश सरकार ने सोवियत सरकार के सामने सुझाव पेश किया कि दोनो के बीच राजनयिक सबध पुन स्थापित किये जायें। फलस्वरूप उसी पतझड मे एक प्रोटोकोल पर हस्ताक्षर किये गये जिसमे राजनयिक सबध तुरन्त पुन स्थापित करने की बात थी।

अत चौथे दशक के प्रारभ तक सयुक्त सोवियत विरोधी मोर्चा कायम करने की सारी कोशिशो पर पानी फिर चुका था।

१६२६ मे पूजीवादी जगत मे आर्थिक सकट फूट पडा और उसने उन सभी विरोधाभासो को तीव्र कर दिया जो पूरी पूजीवादी व्यवस्था मे निहित थे। इस बीच सोवियत सघ की राजनीतिक स्थिति दिनोदिन मजबूत हो रही थी और देश के समाजवादी पुनर्गठन मे तेजी मे प्रगति हो रही थी। सोवियत सघ और अन्य कई देशो के बीच व्यापारिक सपर्क का विकास भी द्रुत गति से हो रहा था। लेकिन सोवियत राजनयिको को अपनी शक्ति मुख्यत शाति कायम रखने के सघर्ष मे लगानी पड रही थी। अतर्राष्ट्रीय स्थिति मे दिनोदिन तनाव बढता जा रहा था। पूर्व मे जापान ने सैनिक कारवाई शुरू कर दी थी और जर्मनी से चिन्ताजनक समाचार आ रहे थे। वहा फासिस्ट सत्ता पर कब्जा करने मे प्रयासरत थे।

सितम्बर, १६३१ में जापानी फौजे उत्तर पूर्वी चीन मे घुस गयी। १६३३ के वसत तक जापान ने चीन के चार प्रातो पर दखल कर लिया था। २७ मार्च को जापानी सरकार ने राष्ट्र सघ से त्यागपत्र देने की

घोषणा की। अत उसने अपनी आक्रामक कारवाई के विस्तार के लिए अपने को मुक्त कर लिया। इस प्रकार सुदूर पूर्व में युद्ध का एक अड्डा तैयार हो गया।

इस बीच यूरोप में भी स्थिति बहुत तनावपूर्ण हो चुकी थी। वैदेशिक कर्जो की सहायता से १६२६ तक जर्मनी के शासक क्षेत्रो ने देश के अधिकांश सामरिक उद्योग को पुन पहले के स्तर पर पहुचा दिया था। चार साल बाद आर्थिक ह्रास तथा मजदूर वर्गीय आन्दोलन के प्रत्यक्ष विकास को देखकर जर्मन पूजीपति वर्ग ने सत्ता फासिस्टो के हवाले कर दी जिन्होने ससार के नक्शे मे हेरफेर करने के अपने उद्देश्य छिपाया नही था।

पूर्व और पश्चिम दोनो तरफ जब आक्रमण के अड्डे तैयार हो रहे थे, सोवियत सघ ने वैदेशिक नीति के क्षेत्र मे अपना प्रयास अतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ करने पर केद्रित किया। १६३१ की गर्मियो में एक सोवियत अफगान तटस्थता तथा अनाक्रमण सधि पर हस्ताक्षर हुए और अगले साल जुलाई महीने मे पोलैड के साथ भी इसी प्रकार की सधि पर हस्ताक्षर हुए। नवम्बर, १६३२ मे सोवियत सघ और फ्रास ने और अन्य कई देशो ने भी अनाक्रमण सधि पर हस्ताक्षर किये। उस समय इस सन्दर्भ मे सोवियत राजनयिको ने जो कदम उठाये उनका यह एक सक्षिप्त मगर बिल्कुल अधूरा विवरण है।

१६३२ मे सोवियत सघ ने शस्त्रास्त्र मे कटौती करने और प्रतिबंध लगाने के सवाल पर विचार करने के लिए जेनेवा में आयोजित एक अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे भाग लिया। यद्यपि यह सम्मेलन राष्ट्र सघ के तत्वाधान मे आयोजित किया गया था, सोवियत सघ सहित अनेक देशो ने, जो राष्ट्र सघ के सदस्य नही थे, इसमे भाग लिया। सम्मेलन ऐसे समय हुआ जब अतर्राष्ट्रीय स्थिति काबू से बाहर हुई जा रही थी। यही कारण था कि सोवियत प्रतिनिधियो ने नि शस्त्रीकरण की समस्याओ को अविलम्ब हल करने के लिए कदम उठाने का सुझाव रखा। सोवियत प्रतिनिधिमडल ने एक कार्यक्रम पेश किया जो आम और सपूर्ण नि शस्त्रीकरण कायम करने के आधार का काम दे सकता था, और इसके सदस्यो ने यह भी घोषणा की कि सोवियत सघ अन्य सहयोगियो के सुझावो पर विचार करने के लिए तैयार है।

निःशस्त्रीकरण की समस्याओं के समाधान का एक स्वीकरणीय आधार तलाश करने के लिए सोवियत संघ की प्रबल इच्छा और अधिक स्पष्ट हो गयी जब सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने एक और निःशस्त्रीकरण कार्यक्रम पेश किया। इसमें कहा गया था कि सम्बद्ध देश हथियारों में सानुपातिक कटौती पर एक संधि तैयार करें।

सोवियत संघ द्वारा प्रस्तुत सीधे-सादे और ठोस सुझावों के विपरीत पश्चिमी देशों की योजनाओं ने सम्मेलन के प्रतिनिधिमंडलों का ध्यान निःशस्त्रीकरण की समस्याओं के समाधान से दूसरी ओर मोड़ दिया। परिणामतः कोई प्रगति नहीं हो सकी और अंतर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ता गया।

समाजवादी उद्योगीकरण का प्रारम्भ

दिसम्बर, १९२५ में मास्को में सरदी बहुत कड़ाके की पड़ रही थी, फिर भी समाचारपत्रों की दुकानों के सामने खुलने से बहुत पहले ही लोगों की कतार लग जाती थी। उन दिनों सोवियत राजधानी में कम्युनिस्ट पार्टी की १४वीं कांग्रेस हो रही थी। लोगों को उससे बड़ी दिलचस्पी थी क्योंकि उसमें एक ऐसे सवाल पर विचार किया जा रहा था जो हर एक के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वह सवाल था सोवियत समाज का विकास तथा सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण के कार्यभारों और तरीकों का।

यह कोई साधारण कांग्रेस नहीं थी। दूसरे अधिवेशन के बाद जैसे ही केन्द्रीय पार्टी संस्थाओं की ओर से स्तालिन, मोलोतोव और कूइबिशेव ने मुख्य रिपोर्टें पेश कीं, प्रतिनिधियों के एक दल ने मांग की कि जिनोव्येव को बोलने का अवसर दिया जाय। जिनोव्येव ने एक सह रिपोर्ट पेश की जिससे यह प्रकट हो गया कि पार्टी नियमों का उल्लंघन करते हुए एक गुट की स्थापना की गयी थी जो सिद्धांततः केन्द्रीय समिति और उसके पोलिट ब्यूरो की आम नीति से पथभ्रष्ट हो गया था। अतः संघर्ष का तनावपूर्ण और जटिल स्वरूप उन परस्पर विरोधी सिद्धांतों का प्रतिबिंब था जो देश की जरूरतों के लिए सबसे अनुकूल विकास मार्ग के सवाल से संबंधित थे।

उस समय तक सोवियत संघ के सामाजिक-आर्थिक विकास के विश्लेषण से जाहिर था कि शहर और देहात दोनों ही में आर्थिक स्थिति

10—1960

म निरंतर सुधार हो रहा है। देश शीघ्र १९१३ के (जारशाही के अंतर्गत अंतिम शांतिपूर्ण वर्ष के) स्तर पर पहुंचनेवाला था। रोजगार के आंकडों और जीवन स्तर में बराबर प्रगति हो रही थी। राजकीय क्षेत्र का खासकर उद्योग और व्यापार मे विस्तार हो रहा था।

लेकिन अब भी देश कृषिप्रधान था। आबादी में पांच में चार जन (या ठीक-ठीक कहा जाये तो १९२६ की जनगणना के अनुसार १४ करोड ७० लाख आबादी का ८२ प्रतिशत) ग्रामीण क्षेत्रों में रहते थे। कृषि का तरीका मुख्यतया पिछडा हुआ था। देश की कुल पैदावार का केवल एक तिहाई औद्योगिक था और वर्तमान औद्योगिक उद्यमों में अधिकांश उपभोग का माल पैदा होता था। कुल औद्योगिक पैदावार में भारी उद्योग का भाग केवल ४० प्रतिशत था। तीसरे दशक के मध्य तक १०–१२ वर्ष पहले ही की तरह, देश के पास काफी विकसित इंजीनियरिंग उद्योग नहीं था, तथा रासायनिक और बडे पैमाने के निर्माण उद्योगों की अनेक शाखाएं भी निम्न स्तर पर थीं। आधुनिक मशीनें, धातु, रबड, कपास, ट्रैक्टर, घडियां और कई अन्य सामान बाहर से मंगाने पडते थे जैसा कि जारशाही के अंतर्गत भी हुआ करता था। और जैसा कि लेनिन ने बताया था उसका तकनीकी सामान अमरीकी उद्योग की तुलना में दसवां भाग तथा जर्मन और ब्रिटिश उद्योग की तुलना में एक चौथाई था।

बहाली के दौर के अंत के पर्यवेक्षणों से पता चला कि देश की जनसंख्या का केवल १८ प्रतिशत समाजवादी क्षेत्र में काम कर रहा था और इस आंकडे में शामिल थे मजदूर, राजकीय उद्यमों तथा प्रतिष्ठानों के कर्मचारी, सहकारी समितियों में ऐक्यबद्ध दस्तकार और वे किसान जिन्होंने सामूहिक फार्म कायम कर लिये थे। आबादी का बडा हिस्सा अभी भी छोटे किसानों का था जिनके अपने अलग खेत थे। शहरी और ग्रामीण पूंजीपति वर्ग अभी भी काफी प्रभावशाली थे और जनसंख्या में इनका अनुपात ७ प्रतिशत था। दूसरे शब्दों में सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना के सात बरस बाद भी शोषक वर्गों के अवशेष संख्या में उतने ही थे जितना मजदूर वर्ग, जिसकी संख्या आबादी का ७.७ प्रतिशत थी।

इस चित्र को पूरा करने के लिए यह उल्लेख भी जरूरी है कि देश के रोजगार कार्यालय में दस लाख बेरोजगारों के नाम दर्ज थे, और निजी

पूजी शहरा म अपने पैर जमा रही थी और गावा म कुलको के फार्मों की सख्या बढ रही थी।

इस परिस्थिति के मूल्याकन मे विरोध-पक्ष न अपना ध्यान उन बाधाओ पर केन्द्रित किया जिनके कारण सोवियत अर्थतत्र का विकास रुका हुआ था, लेकिन वे उन वास्तविक शक्तिया को देखन म असमर्थ थ जिनकी सहायता से इन बाधाओ को दूर किया जा सकता था। वे फिर स इस बात से इनकार करने लगे कि एक देश म समाजवाद का निर्माण करना सम्भव है। उन्होन यह सावित करने का प्रयत्न किया कि अन्य सर्वहारा राज्यो की सहायता के बिना सोवियत सघ म नये समाज का निर्माण असम्भव है। इससे उन्हान यह निष्कर्ष निकाला कि हाथ पर हाथ धर बठे रहन तथा अन्य देशो म सर्वहारा क्रातिया की विजय की प्रतीक्षा करन के सिवा और कुछ नही किया जा सकता।

उनम से कुछ ने यह सुझाव रखा कि पूरा जोर लगाकर कृषि का विकसित करना चाहिए, निर्यात बढाना चाहिए अन्न, कपास, इमारती लकडी, पटुआ की बिक्री करनी चाहिए और इस प्रकार धीरे धीरे बडे पैमाने के उद्योग के निर्माण के लिए आवश्यक धन जुटाना चाहिए। इसका मतलब यह था कि सोवियत सघ को अभी कई बरसो तक कृषिप्रधान रहना पडता। उन्होन इस तथ्य की ओर बिल्कुल ध्यान नही दिया कि ऐसी स्थिति मे देश के पास अपनी सुरक्षा को सबल बनाने का कोई साधन नही होगा।

विरोध पक्ष क सदस्या ने लगातार इस नीति का समर्थन किया। उनका विश्वास था कि पहले यह आवश्यक है कि हल्के उद्योग को विकसित किया जाये और कपडे जूते और अन्य आवश्यक वस्तुओ की बिक्री बढायी जाये, और उसके बाद ही जब मुनाफे की बडी रकम जमा हो जाये, भारी उद्योग की बुनियाद डालन का काम शुरू किया जाये। इसम सन्देह नही कि यह रास्ता बहुत प्रलोभनभरा लगता था। कम्युनिस्टो मे कौन था जिसन जनता को प्रचुर मात्रा म उपभोग का सामान मुहैया करने का सपना नही देखा था? परन्तु सपने अगर हवाई कल्पना मात्र नही है तो उनका वास्तविक आधार होना चाहिए। उस समय के सामाजिक विकास के बुनियादी नियमो और मुख्य विशेषताओ को ध्यान मे लिए

बिना उपयुक्त नीति का निर्धारित और कार्यान्वित करना असम्भव था। विरोध पक्ष के दृष्टिकोण की कमजोरी की जड यही थी।

देश के समक्ष उस समय जो भीषण कठिनाइया थी व अतीत की विरासत थी, व 'विकास की कठिनाइया" थी जिनका सबध बहाली के कार्यों की पूर्ति से तथा पूरी अर्थव्यवस्था के तकनीकी और सामाजिक पुनर्गठन मे सक्रमण से था। वे निर्णायक तत्व नही थी। नयी स्थिति की मौलिक विशेषता यह थी कि मजदूर वर्ग राजनीतिक सत्ता का पूर्णत स्वामी था, अर्थतत्र म सर्वोच्च स्थान उसके पास थे, उसे महनतकश किसानो का समर्थन प्राप्त था और उसमे रास्ते की सभी बाधाओ पर काबू पाने की शक्ति और दृढ सकल्प भी था।

कम्युनिस्ट पार्टी की १४वी काग्रेस ने इस परिस्थिति का सामना करने के लिए एक योजना बनायी। विरोध पक्ष के विचारो की आलोचना करने तथा उसकी गुटबदी की कारवाइयो की निदा करने के बाद पार्टी की सर्वोच्च सस्था न अपने सारे फैसलो का आधार लेनिन की इस प्रतिपत्ति पर रखा कि एक देश मे समाजवाद का निर्माण सम्भव है। काग्रेस दो सप्ताह चली जिसके बाद उसन एकमात्र सही नीति के लिए एक योजना पेश की, यानी ऐसी योजना, जो सोवियत सघ को मशीनरी और औद्योगिक सामान का आयात करनेवाले देश से परिणत करके मशीनरी और औद्योगिक सामान का उत्पादन करनेवाला देश बना दे, सोवियत सघ को, जो पूजीवादी देशो से घिरा हुआ था समाजवादी सिद्धातो पर आधारित एक स्वतत्र आर्थिक इकाई बना दे। सक्षेप मे उस काग्रेस ने समाजवादी उद्योगीकरण की योजना तैयार की।

देश को एक औद्योगिक शक्ति मे परिणत करने की दिशा म पहला कदम भारी उद्योग के विकास की गति को तेज करना और देश की सुरक्षा क्षमता को सुदृढ बनाना था। केवल तभी यह सम्भव हो सकता था कि अभूतपूर्व ढग से कम समय म देश के तकनीकी और आर्थिक पिछडपन का दूर किया जाये मानव द्वारा मानव के शोषण और बेरोजगारी का अत किया जाये और करोडो किसानो के लिए नयी सम्भावनाओ के द्वार खोले जायें।

समाजवादी उद्योगीकरण की योजना कोई अप्रत्याशित घटना नही थी। लेनिन ने १९२१ मे ही इस बात पर जोर दिया था कि "समाजवाद क

लिए एकमात्र भौतिक आधार जो सम्भव है वह है बड़े पैमाने का मशीनी उद्योग जिसमें कृषि के पुनर्गठन की सामर्थ्य हो।* उन्होंने लिखा था कि जब देश का विद्युतीकरण हो जायेगा, जब अर्थतन्त्र के तमाम अनुभागों का आधुनिक बड़े पैमाने के उद्योग की तकनीक के अनुसार तकनीकी आधार निर्मित हो जायेगा तभी समाजवाद विजयी होगा। गृहयुद्ध, हस्तक्षेपकारी युद्ध और आर्थिक बदहाली के वर्षों में इस प्रकार के उद्योग का निर्माण सम्भव नहीं था। लेकिन तीसरे दशक के आरम्भ में सोवियत संघ में गृहयुद्ध के असर से आगे पहुँचने की गुंजाइश पैदा हो रही थी। गोएलरो विद्युतीकरण योजना के अनुसार अनेक पुराने कारखानों को जो युद्ध में तबाह होकर बन्द पड़े थे, दोबारा खोला गया और उनका पुनर्गठन किया गया था। यही वह समय था जब देश ने अपने प्रथम डीजल इंजन, प्रथम मोटरकारों और ट्रैक्टरों का उत्पादन किया। ज़ारशाही रूस में कभी इनका उत्पादन नहीं हुआ था। यह बात भी उल्लेखनीय है कि उस समय बिजली शक्ति उत्पादन, बिजली के उपकरण, वस्त्र उद्योग के करघों तथा कई प्रकार की कृषि तथा अन्य मशीनों के उत्पादन के आँकड़े १४वीं पार्टी कांग्रेस से काफ़ी पहले ही १९१३ के आँकड़ों से आगे बढ़ चुके थे।

जिन लोगों का दृष्टिकोण अभी भी अतीत से बंधा हुआ था और जिन्होंने पुराने साँचों से नाता नहीं तोड़ा था, उनके लिए ये उपलब्धियाँ कठिनाइयों के समुद्र में छोटे टापुओं के समान आकस्मिक सफलताएँ मात्र थीं। इसके विपरीत अखिल रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति ने तथा सोवियत सरकार ने इन उपलब्धियों का सर्वथा भिन्न मूल्यांकन किया। उनमें उन्हें समाजवादी अर्थतंत्र की जिसका उन दिनों निरूपण हो रहा था, श्रेष्ठता का प्रतिबिंब दिखाई दिया, उस पुनर्निर्माण का संकेत मिला जिसपर केन्द्रीयकृत योजनाओं के अनुसार काम चालू हो चुका था। तीसरे दशक के मध्य तक नयी आर्थिक नीति की बदौलत, एक ऐसा मोड़ बिन्दु आ गया था जहाँ एक समाजवादी समाज के निर्माण के लिए आवश्यक भौतिक और तकनीकी आधार तैयार करने के संगठित प्रयत्न को तेज करना सम्भव था। १४वीं पार्टी कांग्रेस ने ठीक पहले देश के विकास की इस नयी मंजिल के ऐतिहासिक महत्व का गण। करते

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३२, पृष्ठ ४३४

हुए स्तालिन ने १६२५ की तुलना अक्तूबर क्रांति के काल में करना ठीक समझा। "तब १६१७ में कार्य था पूंजीपति वर्ग की सत्ता से सर्वहारा वर्ग की सत्ता में संक्रमण करना। अब १६२५ में काम है वर्तमान अर्थतंत्र से जिसे पूर्ण रूप में समाजवादी नहीं कहा जा सकता, समाजवादी अर्थतंत्र उस अर्थतंत्र में संक्रमण करना जो समाजवादी समाज के भौतिक आधार का काम देगा।"*

सोवियत इतिहास में कम्युनिस्ट पार्टी की १४वीं कांग्रेस उद्योगीकरण की कांग्रेस के नाम से मशहूर है। १६२५ का अंत सोवियत संघ के विकास में जल विभाजक के समान था। देश में जीवन के अनेक पहलू बहुत कुछ उसी तरह थे जैसे वे सदियों से चले आ रहे थे। मग्नीतोगोर्स्क पहाड़ पर बर्फ पहले ही की तरह सरसराया करते थे और मग्नितागोर्स्क नगर ने नक्शे पर अभी अपनी जगह नहीं बनायी थी यद्यपि थोड़े ही दिनों में वह उराल तथा पूरे देश का मुख्य इस्पात उत्पादन केन्द्र बन जानेवाला था। द्नेपर नदी का पानी अभी चट्टानों के बीच मुक्त रूप में बहता जा रहा था और द्नेप्रोगेस (द्नेपर पनबिजलीघर) का शब्द अभी केवल उन इंजीनियरों में प्रचलित था जिनका उस निर्माण योजना से प्रत्यक्ष संबंध था। भावी तुर्कसिब रेलवे के पथ पर, जो मध्य एशिया और साइबेरिया को जोड़नेवाली थी अभी ऊंटों के मन्थर-गति काफिले आया जाया करते थे। आबादी का बड़ा हिस्सा अभी भी निरक्षर था और उन दिनों ऐसे गांव इक्के-दुक्के ही थे जहां लोगों ने कोई ट्रैक्टर देखा हो। बहुतेरे वे लोग जो आगे चलकर देश के विभिन्न निर्माण स्थलों पर श्रम वीर की पदवी से सम्मानित हुए, उन दिनों दूसरों के खेतों पर मजदूरी किया करते थे। मगर समाचारपत्रों, रेडियो प्रसारणों तथा राजनीतिक प्रचार और सूचना व्यवस्था के हजारों कर्मचारियों के आंखों देखे वर्णनों ने उद्योगीकरण शब्द को घर घर पहुंचा दिया। वह उद्योग के त्वरित विकास, व्यापक पैमाने के मशीनीकरण, आम सांस्कृतिक विकास, अधिक समृद्धि और सामाजिक प्रगति सब का प्रतीक बन गया।

"क्रास्नी पुतीलोवेत्स' कारखाने के एक मजदूर के शब्दों में उन वर्षों के वातावरण का सजीव चित्रण मौजूद है। लेनिनग्राद के मजदूरों को

---

*ज० व० स्तालिन, रचनाएं, खण्ड ७, पृष्ठ २५२

सबोधित करते हुए उसने कहा "जरा सोचो, अभी दो वष पहले त्रोत्स्की हमारे कारखाने को बन्द कर देना चाहते थे, क्याकि उन्हे इसका कोई भविष्य नही दिखाई देता था। आज यह सोचकर कुछ अजीव सा लगता है। अब जरूरत है कि हमारी तरह की दस या शायद सौ फैक्टरिया और बनायी जायें और उनको चलाने के लिए बिजलीघरा तथा और भी बहुत कुछ का निर्माण हो जाये। मुझे इसका अधिक ज्ञान नही है, मैंन तो अभी-अभी पढना लिखना सीखा है। लेकिन मजदूर वग यह सब काम सभाल लेगा। हम बेरोजगारी, शहरी पजीपतिया और कुलका सबको मिटायेगे। हम लार्डों और पूजीपतियो का डर नही है।" यह समझना गलत होगा कि हर आदमी का विचार इसी ढग का था। ऐसे लोग भी थे जिन्हे इसम सन्देह था और कुछ लोग खुले आम इसके विरोधी थे। उन्होन समाजवादी उद्योगीकरण की योजनाओ को कायरूप दिय जाने मे बाधा डालने के लिए कोई भी उपाय उठा नही रखा। और बात यहा तक जा पहुची कि तोड फोड हुई, पार्टी तथा सरकारी पदाधिकारिया तथा उद्याग और निर्माण स्थलो पर आदश मज़दूरी के खिलाफ आतकवादी कारवाइया की जाने लगी। समाचारपत्रो म आगज़नी, मशीनें तोडे जान की वारदाता और हत्याओ की भी काफी चर्चा हुई।

१९२८ के शुरू मे दोनेत्स बेसिन म एक तोड फोड करनेवाले सगठन का भडा फूट गया। यह भूतपूव औद्योगिक विशेषज्ञा तथा भूतपूव खदान और फैक्टरी मालिको का एक बडा सोवियत विरोधी दल था। श्रमजीवी जनता का गहरा आक्रोश अनेक जलसा और सभाओ म व्यक्त हुआ और उन्होन सरकार से प्रतिक्रातिकारियो के विरुद्ध कडी कारवाई करन का आग्रह किया। इसी के साथ उन्होने अथतत्र को तेज़ी से विकसित करने के लिए पहले से बेहतर और अधिक महनत करन की प्रतिज्ञा की।

उन दिना हर मौके पर चाहे वह शहर या ग्राम सावियतो का चुनाव हा या ट्रेड-यूनियन और कोम्सोमोल की काग्रेस वैज्ञानिका का सम्मलन हो अथवा जन सगठनो की सभायें, हर जगह विचार का मुख्य विषय उद्योगीकरण होता था आम जनता का जहा तक हो सके पूरी तरह और अधिक व्यापक पैमाने पर इस मे कैसे शरीक किया जाये, पार्टी की आम उद्योगीकरण की नीति का कसे जल्दी से जल्दी और यथासम्भव कारगर

ढंग से कार्यान्वित किया जाय। बाल्शेविकों द्वारा और उनकी देखरेख में जो विराट संगठनात्मक काम किया गया वह सार्थक हुआ। उद्योगीकरण के अभियान में शीघ्र ही करोड़ों शामिल हो गये और इससे उसकी सफलता पूर्वनिश्चित हो गयी।

जैसी कि सम्भावना थी पूजीवादी सरकारों ने इस काम में सर्वहारा राज्य की कोई वित्तीय सहायता नहीं की। सोवियत संघ के लोगों को केवल अपने साधनों पर भरोसा करना पड़ा। सारा मुनाफा जिसे पहले पूजीपति और ज़मींदार हथिया लिया करते, जिसे ज़ार परिवार फूक दिया करता था और जिसे विदेशी पूजीपति तरह-तरह के कर्ज़ों के सूद के रूप में वसूल किया करते थे अब सोवियत राज्य द्वारा उद्योग में लगाया जाने लगा। बैंकिंग व्यवस्था और राज्य बजट का पूरी तरह उपयोग करते हुए सरकार ने कृषि तथा हलके उद्योग का कुछ मुनाफा भारी उद्योग में लगाया। १९२७ में एक विशेष उद्योगीकरण कर्ज़ जारी किया गया जो किस्त के आधार पर बटा हुआ था। थोड़े ही समय में श्रमजीवी जनता ने अपने राज्य को २० करोड़ रूबल का कर्ज़ दे दिया। १९२८ में एक दूसरा कर्ज़ भी उतना ही सफल हुआ और इस बार उससे ५० करोड़ रूबल मिला। १९२६ और १९२९ के बीच विभिन्न प्रकार के पद्रह अदरूनी कर्ज़ जारी किये गये।

इससे भी ज्यादा शानदार नतीजे श्रम की उत्पादिता बढाने, सामान में किफायत करने तथा कारखानों में काम के संगठन को सुधारने के जन अभियान में प्राप्त हुए। इस अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका अगुआ मज़दूरों के सामूहिक जत्थों ने अदा की। इनमें कज़ान रेलवे के मास्को स्टेशन की मरम्मत शाप के मज़दूरों ने विशेष रूप से कारगर पेशकदमी का परिचय दिया। कम्युनिस्ट पार्टी की १४वीं काग्रेस के थोड़े ही दिनों बाद शाप के पार्टी मंत्री ने वहां काम करनेवाले कोम्सोमोल सदस्यों को इकट्ठा किया और उनसे पूछा 'जवानो पार्टी की चुनौती का तुम क्या जवाब देने जा रहे हो? तुम्हें एक मिसाल कायम करनी चाहिए। सारी शाप को दिखा दो कि तुम उत्पादिता में वृद्धि कर सकते हो। आखिर तुम लोग कोम्सोमोल के सदस्य हो जो देश के नौजवानों का प्रगतिशील हिरावल, लेनिन के शब्दों में इसकी अग्रणी टुकड़ी हो। इसके बाद बड़े उत्साह के साथ बहस हुई और अंत में एक युवक ब्रिगेड कायम करने का निश्चय

किया गया। यह तय किया गया कि यह ब्रिगेड बढ़िया से बढ़िया काम करने का प्रयत्न करेगा। सबा न बडी मेहनत से काम किया तथा इसी के साथ एक दूसरे की सहायता की। धीरे-धीरे वे अपने काम म और निपुण हो गये। प्रत्येक चार आदमी पहले पाच का और फिर छ आदमिया का काम करने लगे। प्रारम्भिक नतीजे स्वय बहुत बडा प्रमाण थे इन नौजवान मजदूरो न अपनी योजना से काफी अधिक काय पूरा किया और इनका वेतन शाप मे सबसे अधिक था।

इसी तरह के कोम्सामोल यवक ब्रिगेड मास्का और लेनिनग्राद में, उराल म, दानत्स बेसिन और ताशक द के कारखानो में सगठित किये गये। उन सबा न बडे उत्साह स नय उच्चतर लक्ष्या के लिए काम किया और उ ह अग्रणी ब्रिगेड कहा जाने लगा।

यह काई ढकी छिपी बात नही कि कुछ लाग इन ब्रिगेडो पर तथा आम पहलकदमी की अ य मिसाला पर तिरस्कारपूण ढग से हसते या उनका मजाक उडाया करत थे। इन लागा का यह विश्वास नही होता था कि रूस के पिछडेपन का जिसकी जडें बहुत गहरी थीं, तेजी से दूर किया जा सकता है। वे यह समझने म असमथ थे कि सवहारा राज्य मे एक महान ध्येय की खातिर साधारण श्रमजीवी जनता स्वेच्छापूवक कुर्बानिया करने और मुसीबत सहने का तैयार है। ज़ाहिर था, उस समय की आम भावना कुछ आशाहीन लागा की सशयवादी मनाभावना या जनता के दुश्मना की नफरत से निर्धारित नही हाती थी। उस भावना का निरूपण रलवे मजदूरा, धातु और सूती मिल मजदूरो के श्रम कारनामो से होता था जिन्होन अपनी सारी शक्ति और उत्साह अपनी बचत का पैसा तक उद्योगीकरण को समर्पित कर दिया था।

सारे जनगण के सम्मिलित प्रयास के फलस्वरूप १६२६–१६२७ के आर्थिक वष म ही उद्योग म लगभग १ अरब रूबल लगाया गया। उद्योगीकरण के अभियान के पहले तीन वर्षो मे ३,३० कराड रूबल उद्योग पर लगाये गये। यह अथतन्त्र के समाजवादी क्षेत्र म हासिल किये गय मुनाफा, सार्वजनिक कर्ज़ों और खच म बडी किफ़ायत स सम्भव हुआ। आय के वितरण से उन दिना की प्राथमिकताओ का पता चलता है। विनियोग का बडा अश नये भारी उद्यमा के निर्माण के लिए अलग रख दिया गया। पहले जो निधि उपलब्ध हाती उसे मुख्यतया उद्यमो की बहाली

श्रौर श्राम मरम्मत पर खच किया जाता था। मगर श्रब नय श्रौद्यागिक उद्यमा को प्रधानता दी गयी। बडी कठिनाई यह थी कि उद्योग पर लगायी गयी पूजी की भरपाई कम श्रर्से मे नही हो सकती थी श्रौर उत्पादन की मात्रा तुरत बढायी नही जा सकती थी। इन विनियोगा का अधिकतम लाभ कई वर्षों के बाद ही महसूस किया जा सकता था, परन्तु उन परिस्थितियो मे श्रौर कोई रास्ता भी नही था। इसके श्रतिरिक्त उस समय की श्रतर्राष्ट्रीय परिस्थिति मे भी सोवियत सघ श्रपनी प्रतिरक्षा क्षमता को सुदढ करने के लिए मजबूर था। पूजीवादी राज्या की सनाए श्रपने श्रापको श्राधुनिकतम वायुयानो, टैंको, बख्तरबद गाडिया तथा रासायनिक श्रस्त्रो से सुसज्जित कर रही थी, जबकि उस राज्य म जहा सवहारा श्रधिनायकत्व स्थापित हुश्रा था श्रपनी वायुसेना या माटर उद्योग का निर्माण श्रभी शुरू ही किया गया था, श्रौर रसायन उद्योग की एसी श्रनेक शाखाए श्रभी खुली भी नही थी जो कृषि के विकास तथा सीमाश्रा की सुरक्षा दोनो के लिए जरूरी थी।

उद्योगीकरण के लिए दिये गये करोडो रूबल किन विशेष प्रयाजनाश्रो पर खच किये गये? १६२६ के श्रत मे वोलखोव नदी पर बना पन बिजलीघर चालू हुश्रा जो उन दिनो यूरोप मे श्रपनी किस्म का सबसे बडा बिजलीघर था। "प्राव्दा" ने इस उपलब्धि का स्वागत इन शब्दो मे किया था "क्या सोवियत सघ मे समाजवादी निर्माण का काम सम्पन्न हो सकता है? हा! इसका उत्तर उन हजारो बिजली बत्तियो ने दिया है जो दूर नदी तट के दलदलो मे चमक रही ह। इनके प्रकाश ने कोई सन्देह नही रहने दिया। श्रब कौन इस बात मे श्रविश्वास कर सकता कि स्वीर, द्नेपर श्रौर दोन नदिया पर पनबिजलीघर बनेंगे बशर्ते कि बाहरी दुश्मन हमारे काम मे श्रडगा नही डाले। जहा तक मजदूर वग की बात है, वह श्रब भी उन्ही श्रातरिक साधनो को जुटा सकता है जो उसने वालखोव पनबिजलीघर के निर्माण के लिए जुटाये हैं।"

चन्द महीने बाद निर्माण मजदूर दनेपर के तट पर जहा भावी दनेपर बिजलीघर का निर्माण होना था, पहुच गये। दजना भूवैज्ञानिका के दल कीरोव्स्क के खिबीनी पहाडा, उराल श्रौर मध्य एशिया मे भेजे गये। १६२७ म वाल्गा पर एक ट्रक्टर कारखाना, श्रौर मग्नीलाया पहाड श्रौर क्रिवोई रोग के पास इस्पात कारखाना के निर्माण के लिए प्रारम्भिक काम शुरू किया गया।

एक एक करके उद्योग की सभी शाखाए अधिक आधुनिक मशीनो से सुसज्जित कर ली गयी। मध्य एशिया से साइबेरिया तक एक रेलवे का निर्माण कार्य शुरू हुआ।

बेरोजगारो की सख्या मे तजी से कमी हो रही थी। १९२६–१९२९ की अवधि मे राजकीय क्षेत्र के उद्योगा म मजदूरा के वेतन मे ७० प्रतिशत वद्धि हुई। लगभग ६ लाख मजदूरो तथा उनके परिवारो का नया निवास स्थान दिया गया।

१९२७ म देश ने क्राति की दसवी सालगिरह मनायी। उस अवसर पर यह घोषणा की गयी कि वेतन म कटौती किय बिना ७ घटे का कार्यदिवस जारी किया जायेगा। किसाना की स्थिति म भी काफी सुधार हुआ। समाजवादी उद्योगीकरण मे श्रमजीवी जनता के सभी हिस्सो का लाभ हो रहा था।

कृषि का समूहीकरण

१९२७ मे कुल औद्योगिक पदावार मे १३ प्रतिशत, उसके बाद के वर्ष मे २१ प्रतिशत और १९२९ म २६ प्रतिशत वद्धि हुई। इस दौरान म कृषि की स्थिति बहुत भिन्न थी। १९२७–१९२८ मे कृषि उत्पादन मे केवल ३ प्रतिशत वृद्धि हुई और १९२९ मे ३ प्रतिशत कमी हो गयी। औद्योगिक विकास तथा कृषि की प्रगति की दर का अतर दिनादिन बढता जा रहा था।

ज्यो ज्यो नये निर्माण स्थलो का उदघाटन हुआ तथा अधिक कारखाने चालू हुए, मजदूरो तथा कर्मचारियो की सख्या बराबर बढती गयी। शहरो की आबादी बढी तो उनके लिए अधिक रोटी तथा अन्य सामग्रियो की जरूरत पडी। इस सबध मे एक और महत्वपूर्ण बात यह थी कि श्रमजीवियो का वास्तविक वेतन बढ रहा था और उनकी भौतिक खुशहाली मे सुधार हो रहा था। १९२६–१९२७ मे शहरो म रोटी का उपभोग १९१३ की तुलना मे २७ प्रतिशत अधिक था हालाकि उस अवधि म शहरो की आबादी केवल १२ प्रतिशत बढी थी।

बढती हुई आबादी के लिए आवश्यक खाद्यान्न और उद्योग को कच्चा माल मुहैया करने म किसाना को अधिकाधिक कठिनाई हो रही थी। कृषिगत क्षेत्र और पशुओ की सख्या (गाय, सुअर, भेड और बकरी)

युद्धपूर्व के आंकडों में अधिक हो गयी थी, मगर राज्य या गैर-सरकारी बाजार में बेचने के लिए माल का उत्पादन बहुत कम था। यह कहना काफी होगा कि जहां १९१३ में बाजार में २०,८ लाख टन अनाज बिका था, वहां १९१६ से १९२८ तक उसका आधा ही भाग बाजार में बेचा गया था। औद्योगिक केंद्रों को खाद्यान्न की सप्लाई में गडबडी होने लगी और दुकानों के सामने लम्बी कतारें देखने को मिलने लगी। सट्टेबाजों, कुलकों और व्यापारियों ने इस स्थिति से लाभ उठाने में देर नही की। और फिर काफी बेरोजगारी होने की वजह से स्थिति और गम्भीर हो गयी। कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर विरोधपक्ष के तत्वों ने उद्योगीकरण की रफ्तार धीमी करने की आवाज जोरों से उठायी।

शहरी आबादी और लाल सेना के लिए काफी मात्रा में रोटी तथा अन्य रसद को सुनिश्चित करने के लिए सरकार को मजबूर होकर १९२८ मे शहरो में राशनबंदी करनी पडी।

इस परिस्थिति ने लेनिन के इन शब्दों की सत्यता साबित कर दी कि छोटे पैमाने की खेती अभाव से मुक्ति नहीं दिला सकती।"* अक्तूबर क्राति ने किसानों को जारशाही उत्पीडन और जमींदारों तथा बडे पूंजीपतियों के शोषण से मुक्त कर दिया था। अब कृषि मे मझोले किसानों की भूमिका का महत्व निर्णायक था। सरकार मझोले किसानों को दी जानेवाली सहायता मे बराबर वृद्धि कर रही थी, उन्हे सहकारिता के आधार पर एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित कर रही थी और ग्रामीण पूंजीपतियों या कुलकों को रोके रखने के लिए उसने पूरा जोर लगा दिया था। फिर भी देहाती क्षेत्र में अभी काफी गरीबी थी और उत्पादन की पूंजीवादी पद्धति का प्रभुत्व कायम था। यंत्रीकरण के संबंध मे बुनियादी परिवर्तन अभी बहुत दूर थे, अधिकांश जमीन पर हाथ से काम किया जाता था, फसल हाथ से बोयी और काटी जाती थी, मवेशियों का सारा काम हाथ से किया जाता था। जैसा कि प्राचीन काल से होता आया था लकडी का हल, दराती खेती के मुख्य औजार थे।

किसानों के खेत अभी भी छोटे टुकडों मे बटते जा रहे थे। १९२७ में किसानों के चकों की संख्या २ करोड ५० लाख यानी क्रातिपूर्व की

---

*व्ला० इ० लेनिन संग्रहीत रचनाएं खंड ३६, पृष्ठ ३१४

सख्या से बीसियो लाख अधिक थी। किसाना का वर्गीय स्तरीकरण अभी भी जारी था यद्यपि उसकी रफ्तार अब पहले से धीमी थी। मझोले किसानो की सख्या बराबर बढ रही थी और उसी के साथ कुलको के खुशहाल फार्मों का अनुपात बढ रहा था और १६२६–१६२७ तक उनकी सख्या ३६ प्रतिशत हो गयी थी। जिन किसानो को अपनी श्रमशक्ति बेचनी पडती उनकी सख्या मे भी वृद्धि हो रही थी। लगभग एक तिहाई किसान परिवारा के पास न मवेशी थे और न खेती के औजार।

छोटे छोटे खेत, बहुत कम यत्नीकरण और श्रम की उत्पादिता का निम्न स्तर – ये ही वे मुख्य कारण थे जिनके फलस्वरूप बिक्रेयोग्य अनाज कम माता मे उपलब्ध हुआ और किसान देश का पर्याप्त माता मे कृषि की पदावार मुहैया नही कर पाये। करोडा किसान परिवार पहले से कही अच्छी तरह जीवन बितात और खा रहे थे लेकिन सरकार के हाथ बेचने के लिए उनके पास बहुत कम बचता था। पर स्थिति ऐसी थी कि अब वे ही मुख्य उत्पादक थे, न कि जमीदार और कुलक जा पहले अनाज और उद्योगापयागी फसले खासकर बेचने के लिए उपजाते थे। जहा तक समाजवादी क्षेत्र का सवाल है – यानी सामूहिक और राजकीय फार्मों का – उनमे कुल कृषि उत्पादन का केवल २ प्रतिशत और बाजार मे बिकनवाली पैदावार का केवल ७ प्रतिशत पैदा होता था (१६२७ के आकडे)।

वर्गीय अतविरोधो के बढने के कारण देहात की स्थिति अधिक तनावपूण हो गयी। एक ओर, गरीब और मझोले किसान सावियत राज्य स प्राप्त होनेवाले समथन को देखते हुए अपना राजनीतिक कायकलाप तेज कर रह थे और ग्रामीण पूजीपतियो की शोषणकारी आकाक्षाओ का विरोध अब वे अधिक साहस और दढता के साथ करन लगे थे। दूसरी ओर, कुलक जनता पर अपना शिकजा और ज्यादा कसने की काशिश कर रहे थे और इसकी खातिर कुछ भी करने का तैयार थे। भाडे पर मजदूर रखकर उनकी जमीन ठेके पर लेकर, गरीब किसाना का अस्थायी तौर पर इस्तेमाल के लिए अपनी गाहने की मशीन या भारवाही पशु देकर वे किसानो पर अपना शिकजा कस रह थे।

शापक वर्गों के शेप प्रतिनिधि मध्य एशिया कावेशिया कजाखस्तान तथा देश के बहुतेर अन्य गैर रूसी छोरवर्ती क्षेत्रो मे, जो कुछ ही दिन पूव

रूसी साम्राज्य के सबसे पिछड़े भाग थे, खास तौर पर शक्तिशाली थे। उज्बेक जनतन्त्र में भूमि और जल के राष्ट्रीयकरण की आज्ञप्ति पर १९२५ तक अमल नहीं किया गया था। जमीनों, मवेशी, जलस्रोतों और चरागाहों का काफी बड़ा हिस्सा अभी तक धनी जमींदारों या उस इलाके के भाषी में बाय लोगों के हाथ में था।

१९२५ से १९२९ तक पूरे मध्य एशिया और कज़ाखस्तान में भूमि और जल सुधार लागू किया गया। बड़ी सामंती जागीरें मिटा दी गयीं और कुलकों तथा मुल्लाओं और पादरियों की जमीनों का बड़ा भाग ज़ब्त कर लिया गया। इस प्रकार शोषण का दायरा बहुत सीमित कर दिया गया।

उस समय पूरे देश में कुलक अपनी सोवियत विरोधी कारवाइयां तेज कर रहे थे। वे आतंकवादी हरकतों के लिए, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत अधिकारियों तथा राजनीतिक तौर पर सक्रिय किसानों की हत्या करने से भी बाज नहीं आते थे। सरकारी तौर पर १९२६ में ग्रामीण क्षेत्रों में ४०० १९२७ में ९०० और १९२८ में १,१२३ आतंकवादी कारवाइयां दर्ज हुई। कोई दिन नहीं गुजरता था जब कहीं न कहीं खून खराबा, हत्या या आगज़नी की वारदात नहीं होती हो।

१९२८ में कुलकों ने एक प्रकार की अनाज हड़ताल संगठित की जिसके फलस्वरूप राज्य द्वारा अनाज की खरीद आवश्यक लक्ष्य से बहुत कम हो गयी। कृषि की जो स्थिति थी उसमें गांव देश को आवश्यक खाद्यान्न मुहैया करने में असमर्थ थे। उक्रइना और उत्तरी काकेशिया में फसल खराब होने से स्थिति और बिगड़ गयी। केवल यही नहीं कि इन इलाकों से सरकार को जितनी आशा थी उतना अनाज नहीं मिला, बल्कि उसे क्षतिग्रस्त इलाकों के लिए सहायता का प्रबंध करना पड़ा।

आर्थिक संस्थाओं तथा अनाज की वसूली करनेवाले कार्यकर्ताओं की गलतियों के चलते परिस्थिति और अधिक गम्भीर हो गयी। किसानों को औद्योगिक मालों की जरूरत थी मगर बिक्री व्यवस्था के कार्यकर्ताओं के कुप्रबंध के कारण ये माल गोदामों में पड़े रह गये। कर-संबंधी अधिनियमों को भी काफी सख्ती से लागू नहीं किया जा रहा था। हर मौके पर धनी किसान अपना कर अदा करने से किसी तरह बच निकलते थे। राज्य तथा राज्य के लिए अनाज खरीदनेवाली सहकारी संस्थाओं की प्रतियोगिता भी आड़े आती थी।

ग्रामीण पूंजीपतियो ने इस स्थिति से खूब फायदा उठाया। वे अकारण ही अनाज का दाम बढा दिया करते या अपना जमा अनाज बेचने से सीधे-सीधे इनकार कर देते। खुले आम हडताल कर दी गयी, उसका उद्देश्य था अनाज की सप्लाई रोककर सोवियत राज्य को मजबूर करके सुविधाए लेना, पूजीवादी तत्वो को पुन चुनावो मे भाग लेने का अधिकार दिलवाना और सामान्य रूप से कुलको पर दबाव डालने से रोकना।

उस नाजुक घडी म कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और जन कमिसार परिषद ने ३० हजार पार्टी सदस्यो तथा विशेष मजदूर जत्था को गावो मे भेजा। उनकी सहायता से गरीब किसानो ने तोड फोड करनेवालो के खिलाफ कारवाई शुरू की। नयी कृषि नीति जो उन दिनो लागू की गयी थी किसानो को समझाने के लिए एक व्यापक अभियान शुरू किया गया। वित्तीय विभागो और व्यापारिक सस्थाओ के कार्यकर्ताओ ने लगन और कुशलता से अपना काम किया। गावो म अधिक मात्रा मे औद्योगिक माल भेजा गया।

उसी समय सरकार ने कुलको और सट्टेबाज के विरुद्ध जो बहुत ऊचे दामो पर अनाज बेच रहे थे अदालती कारवाई करने का निश्चय किया। जिन लोगो ने अपना बेशी अनाज सरकारी दाम पर बेचने से इनकार किया, उन्हे अदालतो के सामने तलब किया गया और उनमे बेशी अनाज ले लिया गया। जब्त किये गये बेशी अनाज का एक चौथाई गरीब किसानो के हवाले कर दिया गया।

अवश्य ही ये सभी सकटकालीन कारवाइया थी और कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार के नेताओ न इनके उद्देश्य पर पर्दा डालने का कोई प्रयत्न नही किया। राज्य के पास उस समय न तो अनाज का सुरक्षित भडार था जिससे वह सकट का सामना कर सकता और न ही परिवर्तनीय मुद्रा थी जिससे बडे पैमाने पर अनाज का आयात किया जा सकता। मजदूर वर्ग शहरी आबादी और लाल सेना के लिए अनाज की नियमित सप्लाई तभी सुनिश्चित कर सकता था जब उसे किसानो मे श्रमजीवी तत्वो का सक्रिय सहयोग प्राप्त होता।

कार्य-योजना सही सिद्ध हुई और ग्रामीण पूजीपतियो को तुरत मुह की खानी पडी। बोलशेविक केन्द्रीय समिति ने एक बार फिर यह दिखला दिया कि उसकी नीति सही है और पार्टी के दक्षिणपथी तत्व गलती पर है। ये लोग

कुलको पर दवाव डालने का विरोध करते थे। इनका कहना था कि अन्त में कुलक अपने आप समाजवाद का स्वीकार कर लगे। लेकिन तथ्य सामने थे। कुलक अपनी पुरानी सत्ता से वंचित हो जाने पर भी सरकार का विरोध करत और प्रतिरोध के नये रूप और तरीके तलाश करते रहे थ।

लेकिन १९२८ की घटनाओं से जाहिर था कि यह सकटकालीन नीति केवल थोडे समय के लिए ही कारगर हो सकती थी। इन उपायो से आम तौर पर खाद्यान्न की उपज बढाना असम्भव था। बाल्शेविक देख रहे थे कि इस पूरी समस्या का बुनियादी हल कुछ और है। वह यह हल है कि समाजवादी क्षेत्र को सुदृढ बनाया जाये, व्यापक पैमाने पर राजकीय और सामूहिक फार्मों का सगठन किया जाये, जो खाद्यान्न और कच्चे माल मे देश की जरूरतो को पूरी कर सकेगे। कम्युनिस्ट पार्टी की १५वी काग्रेस मे दिसम्बर, १९२७ मे जो अनुदेश तैयार किया गया उसम यही बाते थी।

काग्रेस ने एक प्रस्ताव प्रकाशित किया जिसमे कहा गया था कि "मौजूदा दौर मे अलग-अलग किसानो के छोटे खेतो को बडे सामूहिक फार्मों म मिलाना और पुनर्गठित करना ग्रामीण क्षेत्रो मे पार्टी का मख्य काय होना चाहिए।"

इस प्रस्ताव के समय देश मे करीबन १५,००० सामूहिक फाम थे जिनमे कोई दो लाख किसान परिवार शामिल थे। यह उनकी कुल सख्या के एक प्रतिशत से कम था। मुख्यत ये सामूहिक फाम बडे नही होते थे, इनमे १० से १५ चक तक हुआ करते थे। उनका लाभ केवल यही तक सीमित नही था कि आम तौर पर आमदनी बढ जाती थी। यह तो मिल जुलकर काम करने और साधनो को एकत्र करने से होता ही है। राज्य की सहायता से सामूहिक फाम मशीनें खाद तथा अन्य सामान रियायती दामो पर हासिल कर सकते थे और जल्द ही व निजी तौर पर खती करनेवाले किसानो से कही अच्छी तरह सुसज्जित हो गये। राज्य न देखा कि सामूहिक फाम ही देहात मे उसका मुख्य आधार ह और उसन सचेत रूप से उनके विकास के लिए विशेष रूप से अनुकूल स्थितिया पदा की। यद्यपि अधिकाश सामूहिक किसान पहले गरीब थे और उन्ह आर्टेल म काम करन का कोई अनुभव नही था फिर भी उनकी फसल औसतन व्यक्तिगत फार्मों द्वारा प्राप्त फसलो स अधिक होती थी।

लेकिन शुरू में देहाती जनता को सामूहिक फार्मों की उपलब्धियों से अवगत कराना सभव नही हो पाया क्याकि इस कायक्षेत्र मे अनुभव, धन और प्रशिक्षित कायकर्ताओ का अभाव था। दूसरी बाधा थी अधिकाश किसानो का आम पिछडापन, उनमे स्वामित्व की मनाभावना की व्याप्ति जिसस कुलक लाभ उठाया करते थे। फिर शहरी उद्योग भी अभी इस स्थिति मे नही था कि ग्रामीण आबादी को मशीनें और औद्योगिक माल पर्याप्त मात्रा मे मुहैया कर सके। १६१६ मे देश के पास केवल १४ हजार ट्रैक्टर थे।

जब कम्युनिस्ट पार्टी की १५वी काग्रेस ने दिसम्बर १६२७ मे समूहीकरण की अपनी योजना घोषित की तो आशावादी लोग तक इस राय के थे कि सामूहिक फाम आदोलन बहुत धीरे-धीर बढेगा। लेकिन हुआ कुछ और ही। १६२८ की गमियो तक सामूहिक फार्मों की सख्या पूववर्ती वप की तुलना म ढाई गुनी हो गयी थी।

व्यापक पैमाने पर सामूहिक फाम कायम करने की योजना ने शीघ्र ही अपना औचित्य साबित कर दिया।

किसानो के अधिकाधिक समूह सयुक्त रूप से ट्रैक्टरो और मशीना की खरीदारी करन लगे। सहकारिता के अय रूप भी प्रचलित हुए। १५वी पार्टी काग्रेस के बाद उत्पादक सहकारी समितिया पहले से कही ज्यादा तेजी से फैली। इनका उद्देश्य सयुक्त आधार पर खेती करना और उपज को बेचना था। १६२६ मे पहले के आधे से ज्यादा गरीब और मझोले किसान सहकारी समितियो म शामिल हो गये थे जिनम पाच मे चार उत्पादक सहकारी समितिया थी। समूहीकरण आदालन की देखरेख करने के लिए एक अखिल सघीय सामूहिक फाम केन्द्र – कोलखोजत्सेन्त्र – कायम किया गया।

१६२८ की गमियो मे मास्को मे सामूहिक किसानो की प्रथम अखिल सघीय काग्रेस बुलायी गयी। इस काग्रेस मे ४०४ प्रतिनिधि उपस्थित थे और उन्हान उन निष्कर्षो पर विचार किया जो गुबेर्नियाई, प्रादेशिक और जिला स्तर पर इसी तरह की काग्रेसो मे निकाले गये थे।

सरकार की ओर से कालीनिन ने काग्रेस म भाषण किया। उन्होंने पूरे देश के जीवन मे सामूहिक फार्मों की भूमिका बतायी और कहा कि सामूहिक किसान "समाजवाद के निर्माता हैं, जिन्होंने सचेत ढग से उस ससार

का जिसमे वे रहते है, युक्तियुक्त पुनर्निर्माण करने का बीडा उठाया है ताकि अर्थव्यवस्था को अपने काबू मे किया जा सके और उसके प्रवाह का नियत्रण किया जा सके।" उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि "हम कोई दबाव नही डाल रहे है कि लोग सामूहिक फार्मों मे शामिल हो मगर स्वभावत सरकार सामूहिक फार्मों की सहायता करती है, और उसका यह सहायता निजी तौर पर खेती करनेवाले किसानो को दी जानेवाली सहायता से अधिक होती है।" अधिकाश सामूहिक फार्म उस समय भारवाही पशुओ तथा मानवश्रम पर निर्भर करते थे। मशीने खरीदने मे सामूहिक फार्मों की सहायता करने के लिए राज्य ने उन्हे सुविधाजनक शर्तों पर कर्ज दिये और जो किसान सामूहिक फार्मो मे शामिल नही हुए उनके हाथ ट्रैक्टरो की बिक्री पर रोक लगा दी। फिर भी सामूहिक फार्मों की सख्या ट्रक्टरो के उत्पादन से ज्यादा तेज़ी से बढी। इस कारण उत्पन्न होनेवाली विसगति को दूर करने के लिए यह तय किया गया कि सामूहिक फार्मों को मशीनें राज्य द्वारा सचालित मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो के माध्यम से मुहैया की जायेंगी। इस प्रकार राज्य ने यह प्रबध किया कि सामूहिक फार्म बडे पैमाने पर मशीनो का प्रयोग कर सके जिसके लिए उन्हे अनाज तथा अन्य उपज की निश्चित मात्रा राज्य को देनी पडती थी। इन नयी प्रवृत्तियो और घटनाओ का मूल्याकन करने के बाद गोसप्लान (राजकीय आयोजन आयोग) ने यह निश्चय किया कि प्रथम पचवर्षीय योजना के वर्षों मे यह सम्भव होगा कि ४०–५० लाख किसान खेतियो का समूहीकरण किया जाये।

उद्योग तथा भीतरी व्यापार से निजी पूजी की बेदखली

समाजवादी उद्योगीकरण की नीति मे सक्रमण और कृषि के समूहीकरण का अभियान यह परिलक्षित कर रहा था कि पूजीपतियो के खिलाफ, यानी शोषक वर्गों के उन शेष तत्वो के खिलाफ जो १९२१ मे नयी आर्थिक नीति के लागू होने के बाद एक बार फिर उभर आये थे, सोवियत राज्य के सघर्ष मे एक निर्णायक मजिल शुरू हो गयी है। इस समय तक देश मे वर्गीय शक्तियो का सतुलन तथा आम आर्थिक और राजनीतिक स्थिति इस काय की पूर्ति के लिए सहायक हो गयी थी।

तीसरे दशक के मध्य मे शहरी और देहाती पूजीपति अपने परिवारो सहित कुल आबादी का केवल ४ प्रतिशत थे, जबकि १९१३ मे उनका अनुपात १६ ३ प्रतिशत था। इसका खास तौर पर जोरदार इजहार मास्को के आकडा मे होता था। १९२६ मे उस शहर मे (फैक्टरी मालिको को छोडकर) कोई ४ हजार मालिक ऐसे थे जो वेतनभोगी मजदूरो से काम लेते थे। क्रातिपूर्व के आकडो का यह केवल पाचवा भाग था। इसी अवधि मे फैक्टरी मालिको की सख्या कम होकर १९१३ की कुल सख्या का बारहवा भाग रह गयी थी। उनकी सख्या केवल १४५ थी। यह स्थिति मास्को मे थी जहा निजी पूजी का पुनरुत्थान विशेष रूप से स्पष्ट था। अन्य नगरो मे पूजीपतियो की स्थिति और कमजोर थी।

साधारणत निजी पूजी ने अर्थव्यवस्था की उन्ही शाखाओ मे अपने पर जमाये थे जिनका आम उपभोक्ताओ से गहरा सबध था और जहा तेजी से मुनाफा कमाने की गुजाइश थी। निजी उद्यम मुख्यतया छोटे किस्म के थे। उनमे केवल कुछ ही मध्यम पैमाने के थे। मजदूरो की औसत सख्या राज्य के अपने कारखानो मे प्रति कारखाना २५७ थी मगर निजी स्वामित्व के कारखानो मे केवल २२ थी। बडे पैमाने के उद्योग मे निजी स्वामित्व के उद्यमो का हिस्सा कुल पैदावार का केवल ४ प्रतिशत था और मजदूरो मे उसका केवल २ ५ प्रतिशत।

छोटे पैमाने के उद्योग का हाल इससे बिल्कुल भिन्न था। यहा निजी पूजीपति का प्रभुत्व था। १९२५-१९२६ के आर्थिक वर्ष मे छोटे पैमाने के उद्योग की कुल पैदावार मे निजी क्षेत्र का हिस्सा ८२ प्रतिशत था। फुटकर बिक्री मे भी खासकर कृषि की उपज की बिक्री मे निजी पूजी का महत्वपूर्ण स्थान था (कुल बिक्री मे उसका भाग ४३ प्रतिशत था)। निजी व्यापार की विशेषता यह थी कि इसके अतर्गत बहुत छोटी तथा सर्वत्र बिखरी हुई दुकानो का एक अत्यत व्यापक जाल बिछा हुआ था। १९२५-१९२६ मे निजी दुकानो की सख्या अपने शिखर पर पहुच गयी थी और ५ लाख से अधिक थी। लेकिन इनमे से आधे से अधिक छोटी दुकानें और स्टाल थे और इनमे अधिकाश नगरो मे थे।

इस समय तक वैदेशिक स्वामित्व के उद्यमो की कोई महत्वपूर्ण भूमिका सोवियत अर्थतत्र मे नही रह गयी थी। शक्तिशाली वैदेशिक पूजीपति सोवियत राज्य से सहयोग करने को तैयार नही थे और उन्होने परस्पर

११*

लाभदायक सधिया वरने से इनकार कर दिया था। वदेशिक उद्यमकर्ताग्रो को दी गयी विशेष सुविधाग्रो के ग्राधार पर उनका ग्रौद्योगिक उत्पादन १६२७–१६२८ मे ग्रपनी चरम सीमा पर पहुच गया था जब देश की कुल ग्रौद्योगिक पैदावार म उसका हिस्सा ० ६ प्रतिशत था। इन उद्यमो मे सबसे बडा "लेना गोल्डफील्ड्स" का कसेशन इकूत्स्क गुबेर्निया म स्थित था। इसके मालिको को सोना, लोहा ग्रौर ग्रलोहीय धातु निकालने का ग्रधिकार प्राप्त था। ग्रमरीकी इजारेदारो ने जाजिया म मगनीज का खदान तथा स्वीडिश फम न मास्को म बालबेयरिग के उत्पादन का कसेशन प्राप्त कर लिया था। इन ठेको पर हस्ताक्षर करते समय सोवियत सरकार ने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि वदेशिक पूजी ग्रथतत्र की मुख्य शाखाग्रो मे पैर जमा न पाये। उसने साम्राज्यवादियो द्वारा घोर हानि पहुचानेवाली शर्ते लागू करने के प्रयत्नो को दढतापूवक ठुकरा दिया था। १६२६ मे सोवियत्त उद्योग म वैदेशिक विनियोग ५ करोड रूबल तक पहुच गया था। तीन साल बाद देश मे ५६ कसेशन थे। इनमे १२ जमन थे, ११ जापानी, ६ ब्रिटिश ग्रौर ४ ग्रमरीकी। इन सबो मे कुल मिलाकर २० हजार मजदूर तथा दफ्तर कमचारी काम करते थे।

इन उद्यमो के मालिको ने जो समझौते किये थे, उनका पग-पग पर उल्लघन शुरू किया। उनमे से ग्रधिकाश सोवियत सघ के प्राकृतिक साधनो को लूट-खसोट रहे थे। उन्हे श्रम प्रक्रियाग्रो के यत्रीकरण तथा नये उपकरण लागू करने मे कोई दिलचस्पी नही थी। "लेना गोल्डफील्ड्स" ने शीघ्र ही ग्रपने सोने की खदान की दुव्यवस्था कर दी ग्रौर कई उद्यमो का बद करना पडा। इससे हजारो ग्रादमी बेरोजगार हो गये ग्रौर राज्य को बडी क्षति उठानी पडी। जाजिया मे ग्रमरीकनो से सहयोग का भी कोई लाभदायक नतीजा नही निकला। इस प्रकार के केवल कुछ इक्के-दुक्के कन्सेशन समझौते ही पूरी तरह सफल हुए। इनमे स्वीडिश उद्यमकर्ताग्रो के साथ समझौता था जिन्होने सोवियत सघ मे बालबेयरिग के उत्पादन को जो पहले पहल उन्ही दिनो शुरू किया गया था, बढावा देने के लिए बहुत कुछ किया। ग्रमरीकी करोडपति हैमर द्वारा मास्को मे सगठित पेंसिल उत्पादन भी सफल हुग्रा।

लेकिन कुल मिलाकर ग्रपने उद्योग को विकसित करने के लिए कन्सेशन के रूप म वैदेशिक विनियोग को ग्राकर्षित करने का सोवियत

सरकार का प्रयास सतोषजनक नही सिद्ध हुआ। इसका कारण सबसे बढकर पूजीवादी जगत के शासक क्षेत्रो की सोवियत विरोधी नीति थी। जिन कसेशनो के लिए हस्ताक्षर हो चुके थे उनमे अधिकाश प्रत्याशित नतीजे नही निकले। वैदेशिक फर्मों ने जिन्हे केवल अपने मुनाफे से मतलब था, थोडे ही दिना मे सोवियत कानूना का उल्लघन करना शुरू किया और उनके प्रति मजदूरो मे द्वेष की भावना फैल गयी। उनके तकनीकी तथा आर्थिक कार्यकलाप के परिणाम नगण्य थे। ज्यो-ज्यो समाजवादी उद्योगीकरण ने प्रगति की थी कसेशन अधिकाधिक पुराने पडते गये। १६३० मे उनको बद करने के लिए दढतापूर्वक कारवाई की गयी।

अगस्त, १६२६ मे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने "वैदेशिक स्वामित्व के तथा निजी उद्यमो मे पार्टी कार्य" के बारे मे एक निर्णय किया। यह जरूरी हो गया था क्योकि निजी और वैदेशिक उद्यमो के मालिको तथा उनमे काम करनेवाले मजदूरो मे जटिल तथा विरोधात्मक सबध उत्पन्न हो गये थे। मालिक दोमुही नीति अपना रहे थे। उन्होने जो जिम्मेदारिया स्वीकार की थी, उन्हे उन्होने पूरा नही किया, जिससे मजदूरो को सक्रिय प्रतिरोध और हडताल का कदम उठाना पडा और उसी के साथ उन्होने मजदूरो के विभिन्न समूहो मे झगडा खडा करने का प्रयत्न किया, उनमे से कुछ को रिश्वत देने की चेष्टा की और उन्हे मिलकर अपनी ट्रेड-यूनियन बनाने से रोकना चाहा। कम्युनिस्ट पार्टी ने इन कारखानो मे काम करनेवाले मजदूरो मे प्रचार कार्य को ज्यादा तेज करने का आवाहन किया। विशेष ध्यान पार्टी इकाइयो तथा ट्रेड-यूनियनो के काम पर दिया गया जिन्हें मजदूरो के आर्थिक, सास्कृतिक तथा रोजमर्रे के हितो की रक्षा करनी थी। राज्य ने निजी पूजीपतियो के विरुद्ध मजदूरो के सघर्ष का हर तरह समर्थन किया। समाजवादी अदालतो ने भी इन मजदूरो के हितो की रक्षा की और सभी सोवियत लोग ने उनका समर्थन किया। श्रमजीवी जानते थे कि उद्योग तथा भीतरी व्यापार मे निजी पूजी जो उनके हितो को कुचल रही थी, कुछ ही दिनो की मेहमान है और वह दिन दूर नही जब पूजीपतियो का सदा के लिए नामोनिशान मिट जायेगा।

१४वी पार्टी काग्रेस ने समाजवादी उद्योग का सर्वतोमुखी विकास करने तथा राज्य व्यापार व्यवस्था को और सुदृढ बनाने और उसका विस्तार करने, उद्योग और भीतरी व्यापार दोनो से पूजीवादी तत्वो का

लाभदायक संधिया करने से इनकार कर दिया था। वैदेशिक उद्यमकर्ताओ को दी गयी विशेष सुविधाओं के आधार पर उनका औद्योगिक उत्पादन १९२७–१९२८ मे अपनी चरम सीमा पर पहुच गया था जब देश की कुल औद्योगिक पैदावार मे उसका हिस्सा ०६ प्रतिशत था। इन उद्यमो म सबसे बडा 'लेना गाल्डफील्ड्स" का कन्सेशन इर्कूत्स्क गुबेर्निया म स्थित था। इसके मालिको को सोना, लोहा और अलोहीय धातु निकालने का अधिकार प्राप्त था। अमरीकी इजारेदारो ने जाजिया म मगनीज की खदान तथा स्वीडिश फर्म न मास्को मे बालबेयरिंग के उत्पादन का कन्सेशन प्राप्त कर लिया था। इन ठेको पर हस्ताक्षर करते समय सोवियत सरकार ने इस बात का पूरा ध्यान रखा था कि वैदेशिक पूजी अर्थतत्र की मुख्य शाखाओ मे पैर जमा न पाये। उसने साम्राज्यवादियों द्वारा घोर हानि पहुचानेवाली शर्ते लागू करने के प्रयत्नो को दृढतापूर्वक ठुकरा दिया था। १९२६ मे सोवियत उद्योग मे वैदेशिक विनियोग ५ करोड रूबल तक पहुच गया था। तीन साल बाद देश मे ५९ कन्सेशन थे। इनमे १२ जर्मन थे, ११ जापानी, ६ ब्रिटिश और ४ अमरीकी। इन सबो म कुल मिलाकर २० हजार मजदूर तथा दफ्तर कर्मचारी काम करते थे।

इन उद्यमो के मालिको ने जो समझौते किये थे, उनका पग पग पर उल्लघन शुरू किया। उनमे से अधिकाश सोवियत सघ के प्राकृतिक साधनो को लूट-खसोट रहे थे। उन्हे श्रम प्रक्रियाओ के यत्रीकरण तथा नये उपकरण लागू करन मे कोई दिलचस्पी नही थी। "लेना गोल्डफील्डस" न शीघ्र ही अपने सान की खदान की दुर्व्यवस्था कर दी और कई उद्यमो को बन्द करना पडा। इससे हजारो आदमी बेरोजगार हो गये और राज्य को बडी क्षति उठानी पडी। जाजिया मे अमरीकनो से सहयोग का भी कोई लाभदायक नतीजा नही निकला। इस प्रकार के केवल कुछ इक्के-दुक्के कन्सेशन समझौते ही पूरी तरह सफल हुए। इनमें स्वीडिश उद्यमकर्ताओ के साथ समझौता था जिन्होने सोवियत सघ मे बालबेयरिंग के उत्पादन का जो पहले पहल उन्ही दिनो शुरू किया गया था, बढावा देने के लिए बहुत कुछ किया। अमरीकी करोडपति हैमर द्वारा मास्को म सगठित पेंसिल उत्पादन भी सफल हुआ।

लेकिन कुल मिलाकर अपने उद्योग को विकसित करने के लिए कन्सेशन के रूप म वैदेशिक विनियोग को आकर्षित करने का सोवियत

सरकार का प्रयास सतोषजनक नही सिद्ध हुआ। इसका कारण सबसे बढकर पूजीवादी जगत के शासक क्षेत्रो की सोवियत विरोधी नीति थी। जिन कन्सेशनो के लिए हस्ताक्षर हो चुके थे उनमे अधिकाश प्रत्याशित नतीजे नही निकले। वैदेशिक फर्मों ने जिन्हे केवल अपने मुनाफे से मतलब था, थोडे ही दिना मे सोवियत कानूना का उल्लघन करना शुरू किया और उनके प्रति मजदूरा मे द्वेष की भावना फैल गयी। उनके तकनीकी तथा आर्थिक कायकलाप के परिणाम नगण्य थे। ज्यो-ज्यो समाजवादी उद्योगीकरण ने प्रगति की थी कन्सेशन अधिकाधिक पुराने पडते गये। १६३० मे उनको वद करने के लिए दढतापूवक कारवाई की गयी।

अगस्त, १६२६ मे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने "वैदेशिक स्वामित्व के तथा निजी उद्यमा मे पार्टी काय" के बारे मे एक निणय किया। यह जरूरी हो गया था क्याकि निजी और वैदशिक उद्यमो के मालिका तथा उनमे काम करनवाले मजदूरा मे जटिल तथा विरोधात्मक सवध उत्पन्न हो गये थे। मालिक दोमुही नीति अपना रहे थे। उन्हाने जो जिम्मेदारिया स्वीकार की थी, उन्हे उन्हाने पूरा नही किया, जिसमे मजदूरा को सक्रिय प्रतिरोध और हडताल का कदम उठाना पडा और उसी के साथ उन्हाने मजदूरा के विभिन्न समूहो मे झगडा खडा करने का प्रयत्न किया, उनमे से कुछ को रिश्वत देने की चेष्टा की और उन्हे मिलकर अपनी ट्रेड-यूनियन बनाने से रोकना चाहा। कम्युनिस्ट पार्टी ने इन कारखाना मे काम करनेवाले मजदूरो मे प्रचार काय को ज्यादा तेज करन का आवाहन किया। विशेष ध्यान पार्टी इकाइया तथा ट्रेड-यूनियनो के काम पर दिया गया जिन्हे मजदूरा के आर्थिक, सास्कृतिक तथा रोजमर्रे के हिता की रक्षा करनी थी। राज्य ने निजी पूजीपतिया के विरुद्ध मजदूरा के सघप का हर तरह समथन किया। समाजवादी अदालता ने भी इन मजदूरा के हिता की रक्षा की और सभी सोवियत लोग ने उनका समथन किया। श्रमजीवी जानते थे कि उद्योग तथा भीतरी व्यापार मे निजी पूजी जो उनके हितो को कुचल रही थी, कुछ ही दिना की मेहमान है और वह दिन दूर नही जब पूजीपतिया का सदा के लिए नामोनिशान मिट जायेगा।

१४वी पार्टी काग्रेस ने समाजवादी उद्योग का सवतोमुखी विकास करन तथा राज्य व्यापार व्यवस्था को और सुदढ बनाने और उसका विस्तार करने, उद्योग और भीतरी व्यापार दोनो से पूजीवादी तत्वो का

बेदखल करने तथा समाजवाद की आर्थिक और राजनीतिक विजय प्राप्त करने के लिए एक मार्ग निर्धारित किया था। जब तक समाजवादी क्षेत्र इस स्थिति मे नही था कि पूरी तरह निजी पूजी की जगह ले सके, तब तक उससे बिल्कुल छुटकारा पाना असम्भव था। इस स्थिति को स्वीकार करना था। अस्थायी रूप से निजी पूजी से काम लेना सम्भव और जरूरी था और तब धीरे धीरे उसको सीमित करके अत मे उसे पूणत बेदखल करना था।

इस काम को हाथ मे लेते समय सरकार ने सबसे पहले आर्थिक साधन इस्तेमाल किया। इनमे एक सबसे महत्वपूण उपाय समाजवादी उद्योग तथा व्यापार की उन शाखाओ का विस्तार था जो पहले मुख्यत या पूणत निजी पूजी के दायरे मे थी। सरकार ने निजी उद्यमकर्ता के दायरे को सीमित करने के लिए कई उपाय किये। मालो तथा कच्चे सामान के स्टाक को कम या बिल्कुल बद कर दिया, कज देने से इनकार किया, निजी उद्योगपति और व्यापारी के लिए माल भाडा बढा दिया और करो मे परिवतन किया।

ऐसी परिस्थिति मे निजी व्यापारियो को मुनाफा कमाते रहने के लिए *मुख्यतया बाजार मे दुलभ वस्तुओ का दाम बहुत बढा देने का रास्ता* अपनाना पडा। जिन वस्तुओ की सप्लाई पर्याप्त मात्रा मे थी, उनके राजकीय तथा निजी व्यापार के दामो मे बहुत कम अतर था। जैसे मिसाल के लिए माचिस निजी बाजार मे २ से ३ प्रतिशत महगी थी। लेकिन *जिन वस्तुओ की कमी थी उनके दाम मे बडा अतर था। १६२६ म सूती* कपडा निजी बाजार मे ३० प्रतिशत से अधिक महगा था। वही बात नमक पर लागू होती थी। लेकिन ज्यो ही सरकारी दुकानो मे दुलभ वस्तुओ की आपूर्ति करना और उनका सरकारी दाम कम करना सम्भव हुआ, *निजी क्षेत्र मे भी तुरत दाम कम होने लगे।*

यह कल्पना करना कठिन नही है कि निजी व्यापारियो तथा उद्यमकर्ताओ के प्रति श्रमजीवी जनता की भावना क्या रही होगी। बार बार उन्होने निजी उद्यम पर कडे प्रतिबध तथा निजी मुनाफे पर अधिक कर लगाने की माग की।

औद्योगिक विस्तार के फलस्वरूप १९२७ मे आम उपभोग के सामाना का दाम कम करना सम्भव हुआ और इससे सट्टेबाज की गुजाइश बहुत कम हो गयी। देश भर मे निजी व्यापारिया की दुकानें बद होने लगी। १९२७ के दौरान उनकी संख्या मे २५ प्रतिशत कमी हो गयी तथा उनके कुल क्रयविक्रय मे और अधिक कमी हुई।

लेकिन जहा तक कृषि की उपज का सवाल है निजी व्यापारिया का प्रभुत्व अब भी बना हुआ था। उक्रइना मे १९२७ मे एक मजदूर का आधा वेतन निजी क्षेत्र मे से खाद्य पदार्थ खरीदने म खच हो जाता था।

१९२८–१९२९ म उद्योग म निजी क्षेत्र की हालत तेजी से खराब हो गयी। १९२१ का पारित कानून जिसके अनुसार निजी व्यक्तियो को सरकारी उद्यम ठेके पर लेने की आज्ञा थी, मसूख कर दिया गया। निजी उद्यमकर्ताओं के ठेका की शर्तों पर पुनर्विलोकन किया गया। निजी उद्यमकर्ताओं और व्यापारिया के लिए राजकीय कारखाना स प्रतियोगिता करना सम्भव नही रहा था क्योकि राजकीय कारखाना मे अच्छा और सस्ता माल तैयार होने लगा था। मिसाल के लिए निजी पूजी आटा पिसाई, चमडे के काम और साधारण प्रकार के तम्बाकू के उद्योगा मे बेदखल हो गयी। १९२६ मे छोटे निजी सस्थाना तथा अलग अलग दस्तकारा द्वारा जो अधिकाशत पूजीवादी उद्यमकर्ताओं तथा निजी दुकाना के मालिका पर निर्भर करते थे, देश मे बिकनेवाले ७५ प्रतिशत जूते बनाये जाते थे। राज्य केवल १ करोड जोडे जूते मुहैया कर सकता था जबकि देश मे जरूरत साढे चार करोड की थी। दो साल बाद यह स्थिति बदल गयी। राज्य ४ करोड १० लाख जोडे जूते तैयार करने लगा।

निजी पूजीपतिया ने अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए अपने अधीन काम करनेवाला का शोषण तेज कर दिया, नाना प्रकार की गैर-कानूनी हरकत की जैसे स्वय अपनी देखरेख म कार्टेल स्थापित किय। इस कारण पूजीवादी उद्यमा मे वग सघर्ष तेज हुआ और अधिक हडताल होने लगी। अदालता ने भी श्रमजीवी जनता के अधिकारा की रक्षा म महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। हडताली मजदूरा ने माग की कि जिन कारखाना मे वे काम करते ह उन्ह सरकार के हवाले कर दिया जाय।

उन दिना किसान परिवार अपना ६७ प्रतिशत सूती कपडा, ८३ प्रतिशत कृषि उपकरण, अपनी छतो के लिए ८८ प्रतिशत लोहे की चादर

तथा ६६ प्रतिशत कीले राजकीय तथा सहकारी दुकाना स खरीदने लगे थे। पेचीदा कृषि मशीनें तथा खाद केवल सरकारी दुकाना से ही ली जा सकती थी। निजी मध्यस्थ व्यापारी की अब आवश्यकता नहीं रह गयी थी। इसके अलावा निजी व्यापारिया की मुनाफे की होड तथा देश की सामयिक आर्थिक कठिनाइयो स लाभ उठाने और सबसे बढकर दुलभ कच्चा माल हासिल करने की चेप्टा का मतलब यह था कि निजी क्षेत्र समाजवादी क्षेत्र के विकास म बाधा बन गया था। १६२८–१६२६ मे राजकीय क्षेत्र कृषि के कच्चे माल के अभाव के कारण जूते तथा चमडे के माल, स्टाच तथा राब, तम्बाकू और वनस्पति तेल और मक्खन का योजना लक्ष्य पूरा नहीं कर सका। निजी क्षेत्र ने बडी मात्रा मे ये सामान अपन पास जमाकर लिये थे मगर आधुनिक मशीना के अभाव के कारण उसकी पैदावार कम और घटिया थी।

वित्तीय सस्थाओ ने कई जाच पडताल की जिसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि निजी व्यापार तथा औद्योगिक सस्थान, जा बद हो गये थे, वे भी, अपना मुनाफा किस प्रकार बाटते हैं। इससे पता चला कि उनकी आमदनी का बडा भाग अवैध सट्टेबाजी के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

यह देखकर कि उद्योग अब मुख्यतया पुन अपन परा पर खडा हो गया है और आम समूहीकरण का प्रथम फल सामने आने लगा है, और पजीवादी तत्व अवध कारवाइया म लगे हुए हैं, सोवियत सरकार ने निजी पूजीपतिया के विरुद्ध आर्थिक और प्रशासकीय दबाव बढाने का निश्चय किया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुल निमित सामान मे निजी पूजी का हिस्सा कम होते १६२६ मे ० ३ प्रतिशत रह गया। उस समय केवल १७७ निजी उद्यम रह गय थे जिनमे १,७०० मजदूर काम करते थे। सोवियत राज्य अब पूजीवादी उद्योग के राष्ट्रीयकरण को पूरा कर रहा था, जिसकी बुनियाद क्राति के तुरत बाद रख दी गयी थी।

कम्युनिस्ट पार्टी की १६वी काग्रेस (जून–जुलाई १६३०) म केद्रीय समिति की रिपाट मे इस बात की पुष्टि की गयी कि यह सवाल कि पूजीवादी तत्वो पर समाजवाद का प्रभुत्व होगा या पूजीवादी तत्व समाजवाद को दबा लेगे हमेशा के लिए हल हो चुका है और इसका हल समाजवाद के पक्ष मे है।

उस समय तक निजी पूजी को व्यापारिक व्यवस्था से भी कमोबेश पूर्णत बेदखल कर दिया गया था। राजकीय व्यापार व्यवस्था द्वारा देश के समस्त माल का क्रयविक्रय होने लगा था। १६३१ मे फुटकर क्रयविक्रय का १०० प्रतिशत इसके नियत्रण मे था।

निजी पूजी का अब जान के लाले पडे थे और इसलिए वह जान बचाने के सघर्ष मे कोई भी चाल चलने को तैयार था। पूजीपतियो ने राजकीय सस्थाओ मे घुसना चाहा, उनके कार्यकर्ताओ को रिश्वत देने की कोशिश की और अक्सर सीधे बडे आर्थिक अपराध और प्रतिक्रातिकारी हरकत करने लगे। इसका नतीजा यही हुआ कि उनकी बर्बादी का दिन करीब आ गया। समाजवादी अर्थव्यवस्था से प्रतियोगिता मे पूजीपतियो को पराजय हुई और यह जाहिर हो गया कि उनकी आर्थिक सरगर्मिया समयानुसार नही रही है।

पूजीवादी इतिहासकारो का कहना है कि नगरो मे निजी पूजी को मुख्यतया बल प्रयोग तथा दमन के जरिये बेदखल किया गया। लेकिन आकडो से बिल्कुल ही भिन्न चित्र सामने आता है। भूतपूर्व मालिको मे से केवल ४ ५ प्रतिशत को जेल या निर्वासन का दड दिया गया। इन सभी ने या तो अपराध किये थे या वे सट्टेबाजी, रिश्वत या धोखेबाजी मे पकडे गये थे। पूजीपतियो के विशाल बहुमत को यह तय करने की पूरी आजादी दी गयी कि वे भविष्य मे किस क्षेत्र मे काम करना चाहते है। उन्हे सभी मेहनतकशो के साथ समानता के आधार पर समस्त जनगण के सृजनात्मक श्रम प्रयासो मे भाग लेने का अवसर प्रदान किया गया।

नयी आर्थिक नीति के दौरान उभरनेवाले पूजीपति कभी भी कोई महत्वपूर्ण आर्थिक या राजनीतिक शक्ति नही थे। इसका मतलब यह है कि सोवियत सरकार उनके खिलाफ कम से कम बल प्रयोग का सहारा लेकर वर्ग सघर्ष करने मे समर्थ थी। इसी लिए एक पूरे वर्ग को बलपूर्वक बेदखल करने का नारा देहाती पूजीपतियो या कुलको के सबध मे तो दिया गया मगर शहरी पूजीपतियो के सबध मे, जो उनसे कही अधिक क्षीण थे, बोल्शेविको ने बिल्कुल ही भिन्न तरीके अपनाये।

पाचवा अध्याय

प्रथम पचवर्षीय योजना
१९२८–१९३२

योजना की तयारी और स्वीकृति

२० मई, १९२९ को सोवियत सघ की सोवियतो की पाचवी काग्रेस मास्को म बोल्शोई थियेटर म हुई जहा लगता था कल ही की बात है कि प्रतिनिधिगण राजकीय विजलीकरण योजना (गोएलरो) पर विचार कर रहे थे। तब, १९२० के अत मे समाजवादी अथव्यवस्था के निर्माण का एक १०–१५ वप का कायक्रम विचाराधीन था। सीले, सद हाल के धीमे प्रकाश तथा प्रतिनिधियो के सनिक वरदी कोटो मे और वक्ताओ के शब्दो मे कितना वैषम्य था। तबसे शातिकालीन काय के नौ वप बीत चुके थे और स्थिति इतनी बदल गयी थी कि पहचानी नही जा सकती थी। हाल मे बिजली का तेज प्रकाश था तथा स्टॉल्ज और बल्कनी कारखानो, निर्माण स्थलो और फार्मो के लोगो से भरी हुई थी।

इन वर्षों मे प्राप्त अनुभव से आथिक विकास की एक पचवर्षीय योजना का सवाल उठाना सम्भव हो गया था। बडे पैमाने के पुनर्निर्माण काय पूजी विनियोजन मे वद्धि तथा सुलभ साधनो और निधि का जहा तक हो सके अत्यत यथोचित उपयोग किये जाने के लिए केद्रीकृत योजना व्यवस्था को सुदढ बनाना था। भावी कायभार के एक वनानिक ढग से सुसम्पादित कायक्रम की जरूरत थी जिसमे ठोस आकडो तथा समयसूची का उल्लेख किया जाये, और इस प्रकार अलग अलग उद्यमो और क्षेत्रो के लिए और साथ ही पूरे उद्योग, कृषि और व्यापार के लिए विकास की सम्भावनाओ का विवरण किया जाये।

इस तरह की योजना का प्रारूप तैयार करना बहुत जटिल काम था। था। मानवजाति के इतिहास मे इस तरह का प्रयोग पहले पहल किया जा रहा था।
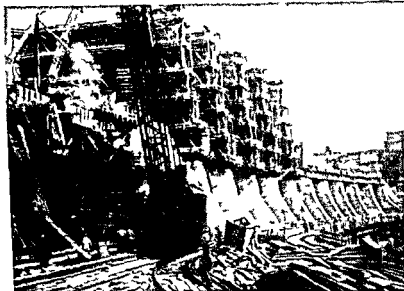
दनेपर पनबिजलीघर का निर्माण

प्रथम पचवर्षीय योजना के प्रथम प्रारूप जो १६२८ मे तयार किये गये थे, अस्वीकार करने पडे क्योकि उन सब मे कमोबेश त्रुटिया मौजूद थी। लेकिन पूर्वोदाहरण और प्रशिक्षित विशेषज्ञो का अभाव ही समस्या का एकमात्र कारण नही था। राज्य नियोजन आयोग और सर्वोच्च राष्ट्रीय अर्थ परिषद तथा कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की प्रधान सस्थाओ मे बहुत दिनो तक इस बात पर एक मत नही हो सका कि पचवर्षीय योजना के मुख्य कार्यभारो का स्वरूप और उद्देश्य क्या होगा। त्रोत्स्की के समर्थको की माग थी कि योजना के प्रारम्भिक वर्षो मे पूजी विनियोग तथा औद्योगिक पैदावार का विकास अधिकतम हो और अवधि के अत तक उसे धीरे धीरे घटा दिया जाये। इस उद्देश्य से उन्होने सुझाव दिया कि इस नीति को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक धन पूरी आबादी और खासकर किसानो पर कर भार बढा कर जुटाया जाये।

दूसरी ओर दक्षिणपथी पथभ्रष्टो ने सुझाव दिया कि औद्योगिक विकास की ऊची दर की इच्छा नही करनी चाहिए और उत्पादन के साधनो के उत्पादन के बदले हलके उद्योग, उपभोग माल पर अधिक जोर देना

चाहिए। इस नीति के समथको के नजदीक कुलक उत्पादन को सक्रिय रूप से शरीक किये बिना आर्थिक प्रगति की कल्पना नही की जा सकती थी।

उपर्युक्त बातो से स्पष्ट है कि इस खास विषय पर वाद-विवाद कोई साधारण बहस नही थी, जो किसी भी नये प्रस्थान मे अनिवाय होती है। विचारो के भेद का स्वरूप राजनीतिक था और उसका कारण सोवियत सघ मे समाजवाद के निर्माण के प्रति राजनीतिक दृष्टिकोणा मे भिन्नता थी। मूलत त्रोत्स्कीवादी तथा दक्षिणपथी पथभ्रष्ट ऐसा दष्टिकोण अपना रहे थे, जो पूजीवादी विशेषज्ञो के दष्टिकोण से मिलता जुलता था, जो अपने ज्ञान तथा अपने विश्वासो के चलते पूजीवादी विकास के नमूना के सिवा कोई और बात स्वीकार करने मे असमथ थे। उन्ह किसी और तरह सोवियत अथव्यवस्था को विकसित करने की सम्भावना मे विश्वास नही था।

पार्टी ने दृढतापूवक "अति उद्योगीकरण" की स्कीम की निन्दा की क्योकि इसका अटूट सबध किसानो के शोषण से था। दक्षिणपथी पथभ्रष्टो का भी कोई समथन नही किया गया जिनका नेतत्व अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केद्रीय समिति के पोलिट ब्यूरो के तीन सदस्य कर रहे थे। वे थे बुखारिन, "प्राव्दा" के मुख्य सपादक, रीकोव, जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष तथा तोम्स्की, ट्रेड-यूनियना की अखिल सघीय केद्रीय परिषद के अध्यक्ष।

इन विरोध-पक्षियो की शिकस्त एक महत्वपूण घटना थी। पार्टी की १५वी काग्रेस ने जो दिसम्बर, १९२७ मे आयोजित हुई, इस तथ्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि विरोध-पक्ष के विचार लेनिनवाद से पृथक है। त्रोत्स्कीवादी विरोध-पक्ष का समथन तथा इसके विचारो का प्रचार पार्टी सदस्यता के विपरीत घोषित किया गया।* काग्रेस ने प्रथम पचवर्षीय योजना तैयार करने के लिए निर्देश स्वीकार किये। आथिक विकास की

---

*नवम्बर, १९२७ मे अक्तूबर क्राति की दसवी जयती के समारोह के अवसर पर त्रोत्स्कीवादियो ने मास्को और लेनिनग्राद मे स्वय अपने प्रदशन सगठित करने का प्रयत्न किया। यह केवल पार्टी नियमा का ही उल्लघन नही, सोवियत विरोधी हरकत भी थी। उसी महीने, नवम्बर १९२७ मे त्रोत्स्की और जिनोव्येव को कम्युनिस्ट पार्टी से निकाल दिया गया। पार्टी बहस के दौरान देखा गया कि ९९ प्रतिशत से अधिक कम्युनिस्टा ने केद्रीय समिति की लाइन का समथन किया।

कार्यविति की ऐसी परिकल्पना की गयी थी जिससे प्रतिवर्ष उद्योग, कृषि तथा व्यापार मे राजकीय क्षेत्र का अंश निरतर बढता रहेगा, और विकास की दर पूजीवादी देशो से कही ज्यादा ऊची होगी। भारी उद्योग को प्राथमिकता दी गयी।

१६२८-१६२६ मे दक्षिणपथियो के विचारो पर बहुत कडी आलोचना की गयी। पार्टी दस्तावेज़ो मे यह बात नोट की गयी कि उद्योगीकरण की रफ्तार धीमी करने तथा ग्रामीण पूजीपतियो के अधिकारो को पूर्णत सुरक्षित रखने के उनके आग्रह का कार्यरूप मे परिणाम होता "पूजीवादी तत्वों से वर्गीय सहयोग की नीति, कुलको के खिलाफ सर्वहारा वर्ग सघर्ष की नीति के बदले 'कुलको का समाजवाद मे विलयन' की नीति।"

अप्रैल, १६२६ मे १६ वे पार्टी सम्मेलन मे दक्षिणपथी पथभ्रष्टो की पूर्णत शिकस्त हुई। उस समय तक पचवर्षीय योजना का प्रारूप पूरा हो चुका था। इसकी तैयारी में महत्वपूर्ण हिस्सा केवल नियोजन आयोग तथा प्रधान वैज्ञानिक सस्थाओ न ही नही, बल्कि स्वय मेहनतकशो ने भी लिया था। उनका कार्यकलाप स्पष्टत इस बात का सबूत था कि निर्माण-कार्य के महान लक्ष्य सचमुच जनता को प्रेरित कर रहे थे।

वैज्ञानिको न दिलचस्प पहलकदमी प्रदर्शित की। मार्च, १६२८ में प्रमुख वैज्ञानिको के एक बडे समूह ने जन कमिसार परिषद के नाम एक पत्र में इस बात पर ज़ोर दिया कि पचवर्षीय योजना म रसायन की भूमिका पर अधिक ध्यान दिया जाये। बाख, ज़ेलीस्की, कुर्नाकोव, फवोर्स्की, फेस्मन आदि वैज्ञानिक उस समय रूस तथा विदेशो दोनो जगह हो रहे काम मे दृष्टिगोचर प्रवृत्तियो का विश्लेषण करके यह बतलाने की स्थिति मे हो गये थे कि एक नये युग का आविर्भाव हो रहा है जो अपने साथ विकिरणशीलता तथा परमाणु ऊर्जा के प्रयोग की असीम सभावनाए लायेगा। सरकार के सदस्यो की उन वैज्ञानिको के साथ एक बैठक हुई जिसमे उनके सुझावो पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया और बाद मे इस बहस का नतीजा पचवर्षीय योजना के लक्ष्याको मे प्रदर्शित हुआ। इसी समय जन कमिसार परिषद ने अर्थव्यवस्था मे रसायन उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के पोलिट ब्यूरो के एक सदस्य रुदजुताक के तहत एक समिति नियुक्त की। योजना के विनिधानो मे वृद्धि की गयी और दो या तीन साल के भीतर विशालकाय रासायनिक

कारखानों का निर्माण बारेरिकी (अब नावामास्काव्स्क), बेरजिनकी, खिबीनी अक्तूबिस्क मागिल्याव, यारास्लाव्ल, आदि में हुआ।

१६ वे पार्टी सम्मेलन ने पंचवर्षीय योजना के दो प्रारूपों – एक अल्पतम और दूसरा युक्ततम प्रारूप – पर विचार किया। युक्ततम में अल्पतम से २० प्रतिशत बड़े लक्ष्यांक पेश किये गये थे। सम्मेलन में प्रतिनिधियों ने इसी को स्वीकार किया। इस तरह पार्टी ने आर्थिक विकास की दर को किसी प्रकार भी कम करनेवाले सभी सुझावों को दृढतापूर्वक रद्द कर दिया। अब योजना को कानून का रूप देने के लिए सोवियत संघ की सोवियतों की कांग्रेस द्वारा उसे स्वीकार होना था।

२० मई, १९२९ को मास्को के बोल्शोई थियेटर में राज्य नियोजन आयोग के प्रधान क्रजिजानोव्स्की ने रिपोर्ट पेश की। मंच पर एक विशाल नक्शे पर यह दिखाया गया था कि पांच वर्ष में सोवियत संघ क्या हो जायेगा। आखिर में नक्शा आप अपनी कहानी कहने लगा जब दर्जनों सितारे, बिंदियां, वर्ग और रेखाएं ज्वलित हो उठीं। इससे नये बिजलीघरों, कोयला खदानों, तेलकूपों, ट्रैक्टर और मोटर कारखानों, सामूहिक और राजकीय फार्मों, रेलवे और नये नगरों का चित्र मन के सामने आ गया। जब रिपोर्ट के अंत में नक्शे पर सारी बत्तियां जल उठीं तो ऐसा लगा मानो जादू की छडी से देश के भविष्य पर से पर्दा हट गया और १९३३ का सोवियत संघ आंखों के सामने आ गया – एक महान औद्योगिक और सामूहिक कृषि की शक्ति। प्रतिनिधियों ने इस चित्र का जोरदार स्वागत किया। हाल तालियों की गडगडाहट से गूंज उठा। सब लोग उठकर खडे हो गये और उन्होंने बडे उत्साह से "इन्टरनेशनल" गीत गाया।

बहस कई दिनों तक चलती रही। २८ मई, १९२९ को देश की सर्वोच्च विधायक संस्था ने योजना को स्वीकार कर लिया।

उस समय को देखते हुए योजना बहुत भारी भरकम थी। उसके मुख्य लक्ष्यों, अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों तथा देश के विभिन्न इलाकों के समक्ष ठोस कार्यभारों का विवरण तीन भारी खंडों में किया गया था। योजना के हर भाग में निर्माण कार्यक्रम का केंद्रीय महत्त्व था। देश की अर्थव्यवस्था में ६५ अरब रूबल का विनियोजन किया जानेवाला था यानी गत पांच वर्षों के विनियोग से ढाई गुना ज्यादा। दूसरे शब्दों में नये उद्यमों के

निर्माण तथा पुराना के पुनर्निर्माण के लिए प्रतिदिन ३ करोड ५० लाख रूबल के हिसाब से विनिधान किया गया था। समस्त औद्योगिक विनिधान मे तीन चौथाई स अधिक भारी उद्याग के लिए निदिष्ट कर दिया गया था। आधुनिक मशीनरी से सज्जित १,५०० से अधिक बडे उद्यमा के निर्माण की याजनाए तैयार की गयी। उद्योग का देश के अर्थव्यवस्था म सबसे आगे का स्थान ग्रहण करना और उसका प्रमुख क्षेत्र बनना था। इस नये औद्योगिक स्थिति के समथन से यह आशा की गयी थी कि कृषि म समाजवादी क्षेत्र इतनी प्रगति कर लेगा कि १६३३ तक कुल पैदावार मे उसका हिस्सा १६२७-१६२८ के २ प्रतिशत के बदले १५ प्रतिशत हा जायेगा। कोई ५०-६० लाख किसाना की जात की जमीना को सामूहिक और राजकीय फार्मों म एकत्रित करने की योजना बनायी गयी।

योजना के एक महत्वपूण भाग मे सावियत सघ म सास्कृतिक त्राति को उन्नति देने के कायभार निर्धारित किय गये थे। साविक प्राथमिक शिक्षा लागू करना, ४० साल स कम आयुवाला म निरक्षरता का उन्मूलन करना तथा सास्कृतिक और शैक्षणिक सस्थाना की व्यवस्था का काफी विस्तार करना था।

योजना का मुख्य उद्देश्य देश के उद्यागीकरण तथा कृषि के समूहीकरण को उन्नति देना, सावियत सघ को एक कृषि प्रधान देश से एक औद्योगिक देश बनाना और ऐसा करके पूजीवादी तत्वा को अधिक कारगर ढग से अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रो से बेदखल करना और आखिरकार एक समाजवादी अर्थव्यवस्था की बुनियाद डालना था।

सोवियत सघ का औद्योगिक शक्ति बनना

प्रथम पचवर्षीय योजना तैयार करते हुए कम्युनिस्ट पार्टी ट्रेड-यूनियनो और कोम्सोमोल की सहायता मे बडे पैमाने पर प्रचार काय भी कर रही थी जिसका उद्देश्य इन नये ध्यया को पूरा करने के काम मे श्रमजीवी जनता का शरीक करना था। २० जनवरी, १६२६ को "प्राव्दा" ने पहली बार लेनिन का लेख "प्रतियागिता कैसे सगठित की जानी चाहिए ?" प्रकाशित किया। उस समय की स्थिति मे वह इतना प्रासागिक था कि लगता था कि उसे १६१७ के अत मे नही, बल्कि खास इस अवसर पर लिखा गया था।

लेनिन ने लिखा था कि केवल समाजवाद के अंतर्गत ही श्रमजीवी को अपने लिए, स्वयं अपने राज्य के लिए, अपने समस्त जनगण की समृद्धि के लिए काम करने का अवसर प्राप्त होगा। समाजवाद ने ही पहले पहल सार्वजनिक प्रतियोगिता का अवसर प्रदान किया। वर्गों के शोषण पर आधारित पूंजीवादी व्यवस्था ने निपुणता के असीम स्रोत का घाट दिया और पैरों तले रौंद डाला था। समाजवाद में ही मेहनतकशों की बहुसंख्या के लिए सृजन कार्य में भाग लेना, अपनी योग्यता की उन्नति देना और अपनी पहलकदमी प्रदर्शित करना सम्भव होगा। मानव द्वारा मानव के शोषण का अंत होने के बाद ही होड़ के स्थान पर बिरादराना सहयोग और करोड़ों लोगों की श्रम में प्रतियोगिता कायम की जा सकती है।

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं सोवियत संघ में ज्यों-ज्यों उत्पादन के नये संबंध सुदृढ हुए काम के प्रति इस नये रुख का जन्म हुआ और वह जड़ पकड़ने लगा। शुरू में इसका इजहार कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक में और फिर अग्रणी ब्रिगेड आन्दोलन में हुआ। प्रथम पंचवर्षीय योजना के प्रारंभ में आम प्रतियोगिता के लिए स्थिति बहुत ही अनुकूल थी। कारखानों तथा नये शहरों का निर्माण, और पुराने कारखानों का पुनर्निर्माण अधिकाधिक तेजी से हो रहा था, कुशल कार्यकर्ताओं की आवश्यकता बढ़ रही थी और सामान्यत श्रमजीवियों की भौतिक स्थिति में सुधार हो रहा था। मजदूर वर्ग के विघटन की प्रक्रिया बहुत पहले ही अतीत की बात हो चुकी थी। १९२९ तक देश के आधे से अधिक मजदूर पुश्तैनी मजदूर थे। पुनर्निर्माण आन्दोलन के प्रारंभ में केवल २० प्रतिशत मजदूर उद्योग में नवागन्तुक थे। ८० प्रतिशत कम से कम तीन साल पहले से उद्योग में काम कर चुके थे और लगभग आधे मजदूरों ने क्रांति के पहले उद्योग में काम शुरू किया था। अक्तूबर क्रांति के बाद निरक्षर मजदूरों की संख्या बहुत कम हो गयी थी (१९२९ में १४ प्रतिशत तक कम)।

फिर भी जाहिर है कि उद्योग में काफी संख्या में पिछड़े लोग भी थे। बहुत से लोग जो कल तक किसान थे, जिनकी अपनी जोत की जमीन थी, अब भी सपने देखा करते कि पैसे बचाकर अपने गांव वापस जायेंगे और एक घोड़ा या गाय खरीदेंगे। कोई २० प्रतिशत फैक्टरी मजदूर अखबार नहीं पढ़ते थे, हर सातवां आदमी तो अनपढ़ था ही। उस समय जबकि जीवन स्तर सापेक्षत नीचा था, जब खाद्य पदार्थों की राशन लागू

थी, और बडे पैमाने के गह निर्माण काय के लिए निधि नही थी, स्वभावत ही कुछ मजदूर और दफ्तरी कमचारी सतुष्ट नही थे। लेकिन सोवियत सघ के मजदूर वग का चरित्र-निरूपण उनके द्वारा नही होता था। मजदूर वग की मुख्य अगुआ शक्ति पुराने अनुभवी मजदूर थे। १९२९ के वसत मे केवल १२ प्रतिशत फैक्टरी मजदूर कम्युनिस्ट थे और ८५ प्रतिशत कोम्सोमोल सदस्य थे। यही लोग शहरा के सवहारा का नेतृत्व करते थे। प्रथम पचवर्षीय योजना का पूरा करने म कम्युनिस्ट पार्टी मुख्य समथन की आशा इन्ही मजदूरा स कर रही थी।

अग्रणी मजदूरा ने लेनिन के इस लेख को कदम उठाने के लिए पार्टी का आह्वान माना। ३५ वर्षीय पूतिन ऐसे ही एक मजदूर थे। वह लेनिनग्राद म "क्रास्नी वीवोर्जेत्स" फैक्टरी मे ब्रिगेड नायक थे। वह केवल ब्रिगेड नायक ही नही, बल्कि प्रचारक भी थे। मजदूर उनकी बात बडे ध्यान मे सुना करते थे। उनका सारा ब्रिगेड उनके गिद जमा हो जाता, प्रश्न पूछे जाते और बहुत सी बाती पर बहस होती। एक दिन प्रतियोगिता पर लेनिन का लेख पढते पढते वे आपस मे बाते करने लगे। उस समय उनका कारखाना याजना के अपने ध्येया को पूरा नही कर पा रहा था। इसका कारण विशेषकर काम से अक्सर जी चुराना, देर म काम पर आना और घटिया काम करना था। मगर पूतिन का ब्रिगेड प्रगतिशील समझा जाता था। इसके ८ व्यक्तिया म चार पार्टी के सदस्य थे और एक कोम्सोमोल का। ये लाग हमेशा अपने कोटे की अतिपूर्ति किया करत थे लेकिन सवाल था दूसरा से उनका काम पूरा कराना। इस सवाल पर पहले भी काफी सोच विचार किया गया, लेकिन लेनिन के लेख ने उनका सही रास्ता दिखा दिया। उन्हाने अय ब्रिगेडा के सामने प्रतियागिता का प्रस्ताव रखने का निश्चय किया और कुछ देर साच विचार के बाद उन्हाने मिलकर ये शर्तें तय की कायमूल्य म वे स्वेच्छापूवक १० प्रतिशत की कटौती स्वीकार करगे, श्रम उत्पादिता म १० प्रतिशत वृद्धि करेग, खराब माल नही बनायेंगे और वकशाप म अपने ब्रिगेड को सवम अनुशासित सिद्ध करने का प्रयत्न करगे। उन दिना इतनी जिम्मदारी भी बहुत थी क्योकि बडी सख्या म मजदूर पढना नही जानत थे, नियमित रूप से सार धम त्योहार मनाया करत थे और इस नाम पर काम म

अनुपस्थिति को उचित समझते थे। पूतिन और उनके साथियो के प्रस्ताव को शुरू मे अत्यत सन्देह की दृष्टि स देखा गया और उसकी बहुत कुछ कडी आलोचना भी हुई

"नये खास वनन आये है!"

"तुम्हारा प्रस्ताव मेरे जसा के लिए नही है!"

"तुम हमारी ही जेब खाली कराने चले हो!"

इस तरह की प्रतिक्रिया केवल १६२६ म ही सुनने मे नही आती थी जब समाजवादी प्रतियोगिता पहले पहल व्यापक पैमाने पर सगठित की जा रही थी। प्रसिद्ध नवीकारक इज्ञातोव को १६३२ मे भी इसी प्रकार की सन्देहजनक बात सुनने का मौका मिला। जब उन्होने कोयला निकालने क प्रगतिशील उपायो के सबध म "प्राव्दा" मे एक लेख प्रकाशित किया तो बहुतेरे कोयला खोदनेवालो ने स्पष्टत उसे नापसन्द किया "बडे उस्ताद बन कर काम का ढग बताने चले है! अपना काम चुपचाप क्यो नही करते!" लेकिन पुरानी आदते और पूर्वाग्रह जन उत्साह की उभरती लहरो को रोक नही सके। कम्युनिस्टो तथा कोम्सोमोल सदस्यो का सगठनात्मक काय सफल हुआ। बहुसख्यक मजदूर समाजवादी प्रतियोगिता आन्दोलन का समथन करने और उसम भाग लेने लगे। जो लोग कल तक किसान थे स्वेच्छापूवक अपने कायमूल्यो मे कटौती करने पर राजी हो गये, युवा मजदूरो ने अपना कतव्य बिना किसी आना कानी के पूरा किया, और पुराने अनुभवी लोगो ने अपने "काम के गुर" युवा मजदूरो को सिखाये। इन सब बातो से काम के प्रति लोगो के दृष्टिकोण तथा उनकी सामाजिक चेतना मे परिवतन लक्षित हो रहा था।

प्रतियोगिता आन्दोलन से पहलकदमी और सम्मिलित काय को प्रोत्साहन मिला, अनुशासन मे सुधार हुआ, मजदूर अपने काय को एक नयी और अधिक सजनात्मक दृष्टिकोण से देखने और स्वय अपने को मालिक समझने लगे। धीरे धीरे उद्योग के सभी प्रधान क्षेत्रो और देश के सभी मुख्य उद्यम तथा निर्माण काय मे नयी व्यवस्था चालू हो गयी। जो लोग अपनी जिम्मेदारियां विशेष रूप से अच्छी तरह निभाते, उन्ह समय समय पर प्रतियोगिता विजेता घोषित किया जाता। उन्ह लाल झडे पुरस्कार दिये जाते तथा उनके सबध मे समाचारपत्रो मे लेख लिखे जाते और रेडियो पर कायक्रम प्रसारित किया जाता। अग्रणी मजदूरो को अवकाश

गृहा और आरोग्य निवासो के प्रवेशपत्र दिये जाते। वद्ध मजदूरा ने आज तक उन विशेष प्रमाणपत्रो का सुरक्षित रखा है जो उन्हे प्रथम पचवर्षीय योजना काल मे बढिया काम के लिए प्रदान किया गया था।

१९२९ के अत म अग्रणी मजदूर ब्रिगेडो की अखिल सघीय काग्रेस मास्को मे आयोजित की गयी। उक्रइना, उराल, बेलोरूस, तथा मध्य एशिया, लेनिनग्राद और नीज्नी नोवगोरोद के मजदूरा ने अपनी अपनी उपलब्धियो के बारे मे बतलाया। उत्सव का वातावरण होने के बावजूद मजदूरो ने अपने काम के सबध मे कारोबारी ढग से बहस की, भावी प्रयोजनाओ की रूपरेखा तैयार की और विभिन्न त्रुटियो को दूर करने क उपाया पर विचार किया।

काग्रेस के दौरान सोरमोवा के मजदूरा की पहलकदमी पर श्रेष्ठ मजदूर कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो गये। इस तरह समाजवादी प्रतियोगिता को आयोजित तथा करोडो मजदूरो का उसमे शरीक होने के लिए प्रोत्साहित करके कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता के सवश्रेष्ठ प्रतिनिधि बडी सख्या मे शामिल किये। समाजवाद के निर्माण काय ने जोर पकडा और वहुत से काम जो कभी असम्भव लगते थे अब पूरे किये जा रहे थे।

आजकल उराल और साइबेरिया के औद्योगिक केद्रा—मग्नितोगोस्क और नोवोकुज्नेत्स्क के औद्योगिक प्रतिष्ठानो की ख्याति सोवियत सघ की सीमाओ से बाहर दूर-दूर तक फैली हुई है। १९२९ मे आज के मग्नितोगोस्क के स्थान पर एक रेलवे स्टेशन तक नही था। एक रेल का डिब्बा उसके काम आया, फिर भी सारे देश मे लोग इसके नाम से परिचित थे। शहरो और गावो मे पोस्टर लगे हुए देखे जा सकते थे जिनमे लोगा से कहा गया था कि मग्नितोगोस्क का निर्माण काय उनकी प्रतीक्षा कर रहा है। हजारा आदमियो ने इस चुनौती को स्वीकार किया और उराल के लिए रवाना हो गये।

हा, शुरू मे कठिनाइया बहुत थी। अधिकाश काम हाथ से करना पडता था। निर्माण-काय के लिए इने गिने ट्रैक्टर और लारिया थी। अक्सर साधारण घोडा गाडियो, ठेला गाडिया, फावडा, गरम कपडो और तिरपाल के दस्ताना की भी कमी थी, और मजदूरा का बैरका मे रहना पडता था। जब बडी सख्या मे मजदूर आये थे तो उन्हे तहखानो म रहना पडता। कुछ लोग कठिनाइयो से हार मानकर वापस चले गये, लेकिन अधिकाश इस परीक्षा मे पूरे उतरे।

ऐसी ही कठिन स्थितियों में चिर्चीक में, तूरा के निकट बेरजिन्की में, अक्तूबिन्स्क में रसायन कारखाना का तथा आज के नावोकुज्नेत्स्क नगर के निकट धातुकर्म कारखाने का निर्माण-कार्य शुरू हुआ। उन दिनों न तो यह शहर था और न यह धातुकर्म कारखाना। योजना में उनका नाम ही नाम था। लेकिन १६२६ में ही दिन रात काम पूरे जोरों पर चल रहा था। रात में काम मशालों की सहायता से किया जाता और तेज पाले में जब एक्सकेवेटर इस्तेमाल नहीं किये जा सकते तो आदमी स्वयं अपने हाथों हाथों में फावड़े लेकर सख्त जमीन खोदते रहते। निर्धारित कार्य कोटा की अति पूर्ति स्वेच्छापूर्वक बेशी समय तथा छुट्टी के दिनों में काम हर कहीं साधारण परम्परा बन गयी।

सर्वश्रेष्ठ चेतन तथा सक्रिय मजदूरों ने "पैसे खोरों" को भी उत्साहित कर दिया। जब पार्टी और कोम्सोमोल सदस्य मजदूर किसी आकस्मिक काम में सहायता देने बीच रात में उठा करते तो उनकी देखा देखी दूसरे भी उठते। जब साथी मजदूर दिन भर के थका देनेवाले काम के बाद भी किसी आवश्यक कार्य की पूर्ति के लिए जुट जाते या छुट्टी के समय दूसरों को पढ़ना लिखना सिखाने लगते तो किसी के लिए भी उदासीन रहना असम्भव था।

उस समय के एक प्रसिद्ध निर्माण मजदूर मीरसैइद अदुआनोव ने उन दिनों को याद करते हुए लिखा है "शुरू में हमारा श्रमिक दल भौतिक लाभार्जन पर आधारित था। लेकिन जसे जसे हम भावी कारखाने की नींव के लिए दसियों और सैकड़ों घन मीटर मिट्टी काटते गये, हमें धीरे धीरे यह एहसास होने लगा कि हम क्या और किसके लिए निर्माण कर रहे हैं।" इस दल में ३५ बेलदार थे और उनमें बहुमत तातार और बाश्कीर थे। अनेक बार भूतपूर्व कुलकों ने जो बेरजिन्की रसायन कारखाने के निर्माण मजदूरों में शामिल हो गये थे, मीरसैइद तथा उनके दल पर हावी होने का प्रयत्न किया जो समाजवादी प्रतियोगिता आंदोलन में भाग ले रहे थे। मीरसैइद के साथियों में एक की हत्या कर दी गयी और स्वयं उनको भी बहुत दिन अस्पताल में रहना पड़ा। लेकिन यह दुःसाहसिक कारवाइयां सफल नहीं रहीं, बल्कि इसके कारण हो रही घटनाओं का सार समझने में मदद मिली। बेलदार पहले से भी अच्छी तरह काम करने लगे, उन्होंने प्रयत्न किया कि श्रमिक दल के सभी साथी पढ़ना लिखना सीख लें नये पेशे
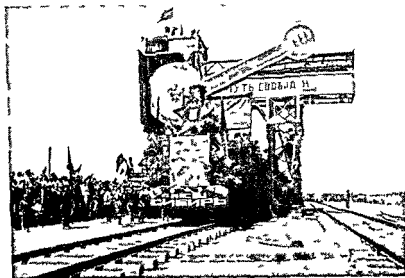
नयी तुर्किस्तान–साइबेरिया रेलवे पर पहली यात्रा। १९२९

सीखे। श्रमिक दल के चौदह आदमी मीरसैद की अगुआई में पार्टी के सदस्य बने। श्रमिक दल एक अग्रणी ब्रिगेड बन गया।

मजदूर वर्ग का श्रम उत्साह बढ़ता गया। शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि प्रथम पचवर्षीय योजना के लक्ष्यों को समय से पहले ही पूरा करना सम्भव होगा। यह बात खासकर इसलिए और भी महत्वपूर्ण थी कि १९२९ की गर्मियों में सोवियत संघ की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति काफी कठिन हो गयी थी। साम्राज्यवादियों ने अपनी साधारण धमकियों और उकसावों के बजाय सीधे सैनिक हमले शुरू कर दिये थे जैसा कि मानचूरियन सेना तथा रूसी सफेद गार्ड द्वारा चीनी पूर्वी रेलवे पर कब्जा करने के प्रयत्न से जाहिर होता था। स्थिति का तकाजा था कि पचवर्षीय योजना के कार्यक्रम का पुनः मूल्यांकन किया जाये, जिसके बाद भारी उद्योग के विस्तार को, खासकर उसकी उन शाखाओं को जो सोवियत संघ की प्रतिरक्षा के लिए बुनियादी महत्व की थी, तेज करने का निश्चय किया गया। परिणामस्वरूप धन के संशोधित विनियोजन तथा उद्योगीकरण की दर में अधिक तेजी और बढ़ते समाजवादी प्रतियोगिता आंदोलन के कारण

समाजवादी निर्माण मे महत्वपूर्ण सफलताए प्राप्त हुइ। १ मई, १६३० को (निर्धारित योजना से सवह महीने पहले) मध्य एशिया और साइबेरिया को जोडनेवाली रेनवे लाइन चालू हुई। इसे तुर्कसिब (तुर्किस्तान साइबेरियाई रेलवे) कहा जाता था। यह प्राय १,५०० किलोमीटर लबी थी और कजाखस्तान, किर्गिजस्तान और रूसी सघ को जोडती थी। नई मशीनो को, निर्माण मजदूरो के काम और रहन-सहन को देखकर स्थानीय निवासी हैरान थे। वडे बूढे पहली बार रेलवे इजन देखकर यह समझे कि शैतान उन्हे चलाता है, लेकिन नौजवानो ने उनके अधविश्वास का जवाब हसकर दिया। जुमअली उमरोव ने भी जीवन को एक नयी दृष्टि से देखा। छब्बीस वप की आयु मे जब उसे अभी पढना लिखना भी प्राय नहीं आता था वह तुर्कसिब निर्माण कार्यस्थल पर काम करने गया। काम के दौरान उसने शिक्षा प्राप्त की और कम्युनिस्ट पार्टी म शामिल हो गया। लेकिन रेलवे जिस दिन खुल गयी उस दिन तक उसे यह विश्वास नही हो सकता था कि कभी उसे इस लाइन का निरीक्षक नियुक्त किया जायेगा।

जीवन के सभी क्षेत्रो मे नई परिघटनाए अपना असर दिखा रही थी। स्वय जनता ही जो अब देश की मालिक थी, इनका सजन कर रही थी।

१७ जन, १६३० को स्तालिनग्राद मे पहला ट्रैक्टर बनाया गया। सरातोव से क्षेत्रीय पार्टी सम्मेलन के सभी प्रतिनिधि ट्रक्टर कारखाने पहुचे जिससे प्रतीत होता है कि उस समय प्रथम सोवियत ट्रक्टर की उत्पत्ति को कितना महत्व दिया गया था। कुछ दिन बाद ट्रैक्टर नम्बर १ को राजधानी लाया गया। मास्को निवासियो ने हपध्वनि से उसका स्वागत किया। उसे बोल्शोई थियेटर तक लाया गया जहा कम्युनिस्ट पार्टी की १६ वी काग्रेस हो रही थी। प्रतिनिधियो ने इस घोषणा का जयध्वनि से स्वागत किया कि देश का प्रथम ट्रैक्टर कारखाना निर्धारित समय से दस महीने पहले तैयार हो गया था।

जिन लोगो को मास्को जाने का अवसर मिले व उस ट्रक्टर को देख सकते ह। अब वह अतीत की अन्य यादगारो के साथ क्रांति म्यूजियम म रखा हुआ है। वह एक पुराने ढग की मशीन है जो अपने शक्तिशाली आधुनिक प्रतिरूपो स बहुत भिन्न है। फिर भी वह साधारण अथ म "प्रदर्शनीय वस्तु" नही है तईस वप तक इसने खेतो मे समाजवाद के

ध्येय की सेवा की है और बिना अतिशयोक्ति के कहा जा सकता है कि आज भी वह समाजवाद के ध्येय की सेवा कर रहा है।

प्रथम पचवर्षीय योजना के वर्षों की उपलब्धियो मे एक सबसे महत्वपूर्ण घटना सश्लिष्ट रबड उद्योग की स्थापना थी। इस बात की घोषणा से कि सोवियत सघ मे सश्लिष्ट रबड का उत्पादन होने लगा है, सारी दुनिया म सनसनी फैल गयी थी।

इस बीच यारोस्लाव्ल, वोरोनेज और येफ्रेमोव मे सश्लिष्ट रबड के बडे-बडे कारखाना का निर्माण हो रहा था। १९३२ की पतझड मे पहले दोनो कारखानो मे उत्पादन शुरू हो गया था। जमनी ने इसके पाच वष बाद सश्लिष्ट रबड का उत्पादन शुरू किया और सयुक्त राज्य अमरीका ने तो १९४२ मे शुरू किया।

प्रथम पचवर्षीय योजना की उपलब्धिया मे इस तरह के अनेक कारनामे है। सोवियत सघ से बाहर कम लोग यह विश्वास कर सकते थे कि एक दिन मास्को स्वय अपना बेयरिंग पैदा करने लगेगा। लेकिन अविश्वासियो को निराश होना पडा—एक बेयरिंग फैक्टरी कायम हो गयी। जब सरकार ने इजोरा फैक्टरी को ब्लूमिंग मिल के लिए आर्डर दिया तो यह कल्पनालोक की बात लगती थी। अमरीकी इजारे सोवियत सघ से ब्लूमिंग के लिए बहुत अधिक दाम, वास्तविक दाम से सात गुना ज्यादा माग रहे थे। उन्ह यकीन था कि सोवियत सघ के सामने अमरीका से ब्लूमिंग खरीदने के सिवा और कोई रास्ता नही है। लेकिन उनका अनुमान गलत निकला। इजोरा फैक्टरी ने सरकारी आर्डर नौ महीनो मे पूरा कर दिया।

प्रथम पचवर्षीय योजना के इतिहास मे दनेपर पनबिजलीघर के निर्माण को विशेष स्थान मिलना चाहिए।

देश के बिजलीकरण के नारे का पूरी आबादी ने बडे उत्साह के साथ स्वागत किया था। सबसे दक्ष कार्यकर्ता और आधुनिकतम मशीनें इसके निर्माण के लिए भेजी गयी। इस निर्माण मे वास्तव में सारे देश ने भाग लिया। एक प्रमुख सोवियत बिजली विशेषज्ञ और आगे चलकर अकादमीशियन वीतेर इसके प्रधान थे। १९३२ म ५,२०० से अधिक कम्युनिस्ट तथा ७,५०० कोम्सोमोल सदस्य इस निर्माण-काय मे भाग ले रहे थे। वास्तव मे यह एक अगुआ शक्ति थी जिसने दसियो हजारो निर्माणकर्मियों

के लिए नमूना पेश किया। कोई दिन ऐसा नही होता था जब मजदूर या इजीनियर नवीन प्रक्रियाओ को अपनाने का सुझाव न प्रस्तुत करते हो जिससे काय को निर्धारित समय से पहले सम्पन्न करना सम्भव हो सके। प्रथम टर्बाइन का ढाचा ३४ काय दिनो मे खडा किया गया। निर्माण स्थल पर तकनीकी सलाहकार की हैसियत से काम करनेवाले अमरीकी विशेषज्ञा का विश्वास नही होता था – उनके देश म इस प्रकार के काय को सम्पन्न करन मे औसतन ४५ काय दिन लगते थे। उन्ह इससे भी अधिक आश्चय तब हुआ जब पाचवे टर्बाइन को उनकी देखा देखी २४ काय दिना म कर दिया गया।

बाध को निर्धारित समय से पहले पूरा कर लेन की खातिर निर्माण मजदूरो ने हर रोज अपनी पाली खत्म होने के बाद एक अतिरिक्त "समाजवादी घटा" काम करने का निश्चय किया। कम्युनिस्ट तथा कोम्सोमोल सदस्या की इस पहलकदमी का शीघ्र ही हजारा गैर-पार्टी मजदूरो ने भी समथन किया। समाजवादी प्रतियोगिता आदोलन के दौरान अगुआ मजदूरा न अपने कोटे से दुगुना काम किया।

दिन प्रति दिन, घटा प्रति घटा बाध मे प्रगति हो रही थी। वह ७६० मीटर लम्बा और ६४ मीटर ऊचा था, यानी एक बीस मजिला इमारत से भी ज्यादा ऊचा। १ मई, १९३२ को द्नेपर पनबिजलीघर ने बिजली दी।

उदघाटन समारोह के अवसर पर अखिल सघीय केंद्रीय कायकारिणी समिति के प्रतिनिधि कालीनिन तथा भारी उद्योग के जन कमिसार ओर्जोनिकीदज़े उपस्थित थे। सत्तर सवश्रेष्ठ निर्माण मजदूरो को सरकारी पदक दिये गये। उस निर्माण काय म भाग लेनेवाले ४५ ००० मजदूरा को बधाई देते हुए ओर्जोनिकीदज़े ने कहा "यह बिजलीघर जिसे हमने स्वय अपने प्रयास से बनाया है ससार में अपन प्रकार का सबसे बडा है। इस महान काय की शुरुआत पर अविश्वासिया की सारी बक-बक और विदेशा मे लागा के द्वेषपूण उल्लास के बावजूद अब हम अविश्वासिया और सन्देह करनेवाला की ओर मुडकर कह सकत है – आइय और स्वय देख लीजिय द्नेपर पनबिजलीघर चालू हो गया है।"

१९३२ म मग्नितोगोर्स्क तथा कुज्नेत्स्क की धमन भट्टिया कच्चा लोहा का उत्पादन करन लगी थी। खिबीनी की ऐपेटाइट का लेनिनग्राद तथा

उत्पइना मे खाद के रूप म तैयार किया जा रहा था। खारकोव मे ट्रैक्टर और नीज्नी नोवगारोद (गोर्की) मे मोटर कारखान, क्लीन, मागिल्याव और लेनिनग्राद मे कृत्रिम रेशा फैक्टरिया चालू हो चुकी थी, बेरेज्निकी और वोस्क्रेसेन्स्क मे रसायन कारखान, क्रास्नाउराल्स्क में तावा पिघल कारखाना तथा ताशकन्द कृषि मशीन कारखाना भी निर्मित हो चुके थे।

१ अक्तूबर, १६२८ और १६३२ की अवधि म कुल १,५०० वडे औद्योगिक उद्यमो का निर्माण हुआ जिसका मतलब यह था कि रोज एक नया औद्योगिक उद्यम चालू किया जा रहा था।

पहले के पिछडे जातीय छोरवर्ती इलाको म विकास विशेष तजी के साथ हुआ। जहा पुरान औद्योगिक केंद्रो म उत्पादन की मात्रा म १०० प्रतिशत वद्धि हुई वहा जातीय जनतन्त्रो म वृद्धि की दर २५० प्रतिशत थी। इस तरह लेनिन की जातिया सबधी नीति को कारगर ढग से कार्यान्वित किया जा रहा था। रूस की उत्पीडन के शिकार गैर रूसी जातियो के आर्थिक पिछडेपन के उन्मूलन की पक्की नीव डाली जा चुकी थी।

पुरान औद्योगिक केंद्रो म भी महत्वपूण परिवतन हुए। अनेक फक्टरिया का वडे पमान पर पुनर्निमाण किया गया। बाकू तेल कूपो और दोनेत्स बेसिन की कोयला खदानो म नयी मशीनें लगायी गयी। वहुत पुराने उद्यमो जैसे मास्को की "क्रास्नी प्रालेतारी" मशीन टूल फैक्टरी, कालोम्ना के रेलवे इजन कारखान और लेनिनग्राद के "क्रास्नी त्रेऊगोल्निक" रबड कारखाने मे नयी जान डाली गयी।

पुराने "अमो' मोटर कारखाने के स्थान पर यूराप का एक सबसे बडा मोटर कारखाना खडा हो रहा था, मास्को केवल सूती कपडो का केन्द्र नही रह गया था। सोवियत सघ की राजधानी मशीन निर्माण उद्योग तथा बिजली इजीनियरिंग का केंद्र बन गयी थी।

देश भर म श्रम के जरिये कदम कदम पर देश का कायापलट हो रहा था। पूजीवाद पर समाजवाद की श्रेष्ठता जिसे पहले केवल सद्धान्तिक रूप से सिद्ध किया जाता था अब सोवियत सघ मे व्यवहार रूप मे प्रदर्शित हो रही थी। सावियतो की धरती के मित्रो की निगाहे खाद्य पदार्थ और रिहायशी मकानो के अभाव के अलावा बहुत कुछ देख रही थी। उनकी नजरो के सामने निर्माणाधीन परियोजनाओ और सामूहिक फार्मो का देश था, ऐसी जनता थी जिसने शोषण और बेरोजगारी को

मिटा दिया था, ऐसा राज्य था जिसने दुनिया मे सबसे छोटा काय दिन जारी किया था और प्रत्येक श्रमजीवी का काम, अध्ययन तथा विश्राम के समान अधिकारा की जमानत दी थी।

वे सभी लोग जो समाजवाद के प्रति वर्गीय द्वेष की भावना से अधे नही हो गये थे समझ रहे थे कि सोवियत सघ की कठिनाइया विकास सम्बन्धी कठिनाइया के सिवा और कुछ नही थी।

उस समय ससार के छठे भाग पर ही समाजवाद का उदय हुआ था। सोवियत लोग इससे भलि भाति अवगत थे, अपने उज्ज्वल भविष्य म विश्वास रखते थे और इसकी खातिर अनेक प्रतिबधो और अभावा को स्वीकार करने तथा कुर्बानी करने को तैयार थे। सोवियत उद्योग का विकास वास्तव मे अविश्वसनीय दर से हुआ और १९३१ तक मशीन निर्माण उद्योग, बिजली इजीनियरिग और तेल उद्योग मे योजना नियत समय से पहले ही पूरी हो चुकी थी। जनवरी १९३३ मे कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के अधिवेशन ने इस बात की पुष्टि की कि सोवियत सघ को एक महान औद्योगिक शक्ति मे परिवर्तित करने का निर्णायक कदम उठाया जा चुका है, राष्ट्रीय अथव्यवस्था की समस्त शाखाओ के तकनीकी पुनसज्जा की आधारशिला रखी जा चुकी है और समाजवाद की आर्थिक बुनियाद डाली जा चुकी है।

यह कम्युनिस्ट पार्टी, मजदूर वग और समस्त सोवियत जनता की एक महान विजय थी।

बीस बरस से कम ही असा पहले, १९१३ मे रूस की पैदावार मे ६० प्रतिशत कृषि पैदावार होती थी। देश के सारे मशीन निर्माण उद्योग की सालाना पैदावार केवल १,७५४ मशीन टूल थी। देश मे एक भी ट्रैक्टर या मोटर का निर्माण नही होता था और १९२८ तक गावो मे शहरा से अधिक माल पैदा होता था।

पाच साल भी नहीं गुजरने पाये थे कि देश की अथव्यवस्था की कुल पैदावार मे उद्योग का भाग आधे से कही अधिक हो गया और भारी उद्योग का कुल उत्पादन हल्के उद्याग से अधिक हो गया। १९३२ म १९,७०० मशीन टूलो (१९२८ का १० गुना) ४९ ००० ट्रैक्टरो (१९२८ का ३८ गुना) २३,९०० मोटर गाडियो (१९२८ का लगभग ३० गुना) का

निर्माण हुआ। बिजली शक्ति, खाद, गैस, तेल, सीमेंट, कागज आदि की पैदावार मे बडी वद्धि हुई।

लेकिन महत्वपूण तबदीलिया पैदावार की माला तथा अथव्यवस्था के ढाचे के भीतरी परिवतनो तक सीमित नही थी। मूल बात यह थी कि ये सफलताए समाजवादी उद्योग द्वारा प्राप्त की गयी थी, ऐसे उद्योग द्वारा जो जनता की सम्पत्ति थी और जिसका निरतर विकास राजकीय योजना के अनुसार हो रहा था जिसकी प्रगति सवहारा अधिनायकत्व को सुदढ बना रही थी। दुनिया ने इससे पहले किसी अथव्यवस्था को इतनी तज़ी से विकास करते नही देखा था। समाजवाद का निर्माण पहले पहल हो रहा था और पहले पहल मानवजाति को इसके निर्णायक सुलाभो को देखने का मौका मिला था।

समूहीकरण की विजय

१९२६–१९२९ की अवधि मे तेज औद्योगिक विकास की प्राप्ति तथा कृषि के पुनगठन मे प्रारभिक प्रभावशाली सफलता से प्रेरित होकर अनेक पार्टी कायकर्ताओ ने, स्थानीय शासन सम्बधी सस्थाओ के प्रधान समूहीकरण को तेज करने का सुझाव दिया। मिसाल के लिए, जार्जिया मे सोवियतो की काग्रेस ने इस आशय का एक विशेष प्रस्ताव भी स्वीकार किया। १९२९ के वसत मे देश के केद्रीय इलाको तथा मध्य एशिया मे इसी तरह के विचार प्रकट किये गये। सवहारा राज्य का कृषि की उपज की सख्त जरूरत थी। अत मेहनतकश जनता को आवश्यक खाद्य पदाथ तथा उद्योग को आवश्यक कच्चा माल यथासम्भव शीघ्रातिशीघ्र मुहैया करने की इच्छा स्वाभाविक थी। १९२९ के वसत और गर्मी मे कई इलाको मे सम्पूण समूहीकरण का रुख अपनाया गया।

किसानो के बडे हिस्से सामूहिक फार्मों मे शामिल होने लगे। साल के अत तक गरीब तथा मझोले किसान परिवारो का प्राय पाचवा भाग सामूहिक फार्मों मे मिला लिया गया था। प्रथम पचवर्षीय योजना के लक्ष्याक प्रथम वष समाप्त होने से पहले ही पूरे हो चुके थे। नवम्बर, १९२९ मे कम्युनिस्ट पार्टी की कद्रीय समिति के अधिवेशन ने सोवियत सघ म समाजवाद के निर्माण म एक नये ऐतिहासिक दौर के प्रादुर्भाव पर जोर दिया।

१६२६ के उत्तरार्द्ध म गावा मे भ्राति के ममय के जैंमा उत्साह देखने म आया था। कृपि मे काम करनवाले करोडा लागा का उत्साह नया जीवन पद्धति की प्रेरणा का प्रतिबिंब था जो पहले ही से शहरा का विशेपता बन चुकी थी। हर रोज अखबारा और रडियो प्रसारण मे नयी निर्माण परियोजनाग्रा तथा समाजवादी प्रतियागिता आन्दोलन के नये वीरा के समाचार मिला करते। नयी फैक्टरिया बन रही थी और अधिकाधिक गावा मे बिजली की बत्ती प्रकाश फैला रही थी। किसान घरा म परम्परागत देव प्रतिमाग्रा का स्थान लाउडस्पीकरा ने ले लिया था। ट्रैक्टर तथा अन्य मशीनें अधिकाधिक नजर आने लगी थी। शहरी मजदूरा और किसाना के बीच सहयोग के नये नये रूपा का प्रसार उस जमाने म महत्वपूण भूमिका अदा कर रहा था। पार्टी तथा ट्रेड-यूनियन सगठना के प्रस्ताव के अनुसार बडी फैक्टरिया अलग अलग गावो के सहायतार्थ जिम्मेदार बना दी जाती और वे वहा अपने ब्रिगेड भेजा करती जो बोलशेविको की कृपि सम्बन्धी नीति के बुनियादी पहलुग्रा की व्याख्या करते थे, शैक्षणिक तथा सास्कृतिक काम मे सहायता देते थे और अक्सर किसानो के रोजमर्रे के काम मे मदद करते। अलग अलग गावा और आगे चलकर पूरे के पूरे क्षेत्रो ने फैक्टरिया के साथ उच्चतम उत्पादन के लिए प्रतियोगिता सबधी विशेप इकरारनामे किये। इनके अतगत शहरी मजदूर गावा को समथन की जमानत देते और विभिन्न प्रकार का सामान जिनकी किसानो की बडी जरूरत थी अधिक मात्रा मे पैदा करने का वायदा करते, किसान सामूहिक फार्मो की स्थापना के लिए अधिक सयुक्त प्रयास करते तथा कम से कम समय मे सरकार को अनाज तथा अन्य कृपि पदार्थ मुहैया करने की योजना बनाते।

सामान्यत सामूहिक फार्मो के सगठन मे सबसे सक्रिय भूमिका कम्युनिस्टा कोम्सोमोल सदस्या तथा गैर पार्टी कायकर्ताग्रा ने अदा की जो अपने अपने जिलो के निवासियो मे अच्छी तरह परिचित थे। इनमे से अक्सर गरीब किसान थे जो गहयुद्ध मे भाग ले चुके थे। किसाना म उनकी प्रतिष्ठा व्यापक समूहीकरण की सफलता के लिए बहुत महत्वपूण थी खासकर इसलिए कि अभी बडी भारी समस्याग्रा को हल करना बाकी था। पहले की ही तरह कृपि मशीना का बडा अभाव था और पहले म ज्यादा कुलका के भयकर प्रतिरोध का सामना करना पड रहा था।

१६२६ क उत्तरार्द्ध म गावा म ग्राति क समय म ग्राया था। कृषि म काम करनेवाले कराडा न जीवन पद्धति की प्ररणा का प्रतिबिंब था जा प विशेषता बन चुकी थी। हर राज ग्रखबारा ग्रौर र्न निर्माण परियोजनाग्रा तथा समाजवादी प्रतियागिता ग्रा के समाचार मिला करत। नयी फक्टरिया बन रही गावा म बिजली की बत्ती प्रकाश फैला रही। परम्परागत देव प्रतिमाग्रा का स्थान लाउडस्पीकरा न न तथा ग्रन्य मशीनें ग्रधिकाधिक नजर ग्रान लगी थी। किसाना के बीच सहयाग के नय-नय रूपा का प्र महत्वपूर्ण भूमिका ग्रदा कर रहा था। पार्टी तथा ट्रेड-यू प्रस्ताव के ग्रनुसार बडी फक्टरिया ग्रलग ग्रलग गा जिम्मेदार बना दी जाती ग्रौर व वहा ग्रपन व्रि जो बोल्शेविका की कृषि सम्बन्धी नीति के बुनियादी पह करते थे शक्षणिक तथा सास्कृतिक काम म सहायता दत किसानो के रोजमर्रे के काम म मदद करते। ग्रलग ग्रलग चलकर पूर के पूरे क्षेत्रा ने फैक्टरियो के साथ उच्चतम ट प्रतियोगिता सबधी विशेष इकरारनामे किये। इनके ग्रतगत गावा को समथन की जमानत देते ग्रौर विभिन्न प्रकार का किसानो की बडी जरूरत थी, ग्रधिक मात्रा म पदा क करते किसान सामूहिक फार्मो की स्थापना के लिए ग्रधिक करते तथा कम से कम समय मे सरकार को ग्रनाज तथा ग्र मुहैया करने की योजना बनाते।

सामान्यत सामूहिक फार्मों के सगठन मे सबसे स कम्युनिस्टा, कोम्सोमोल सदस्यो तथा गर पार्टी कायकर्ताग्रा न ग्रपन ग्रपने जिला के निवासियो म ग्रच्छी तरह परिचित थे। २ गरीब किसान थे जो गृहयुद्ध म भाग ले चुके थे। कि ान। प्रतिष्ठा व्यापक समूहीकरण की सफलता के लिए बहुत खासकर इसलिए कि ग्रभी बडी भारी समस्याग्रो को हल था। पहले की ही तरह कृषि मशीना का बडा ग्रभाव था ग्रौर कुलका के भयकर प्रतिरोध का सामना करना पड रहा था।

पदाधिकारी वनत और कृषि की नयी सामूहिक व्यवस्था को अदर ही अदर नुक्सान पहुचाते। कुलक अपनी सम्पत्ति फाम के हवाले नही करना चाहते थे इसलिए उन्हाने अपने पशुआ का मार डाला, अपने औजार वेच डाले और अय किसाना को भी यही करन के लिए उकसान लगे। अत मे यह जरूरी हो गया कि इन विध्वसक तत्वा की हरक्ता का रोकने के लिए विशेष कारवाई की जाय। सरकार ने एक प्रस्ताव पेश किया जिसके अनुसार उन इलाका म जहा सम्पूण समूहीकरण किया जा रहा था जमीन को ठेके पर लेन और कमेरा रखन पर प्रतिबध लगा दिया गया। स्थानीय सत्ता के निकायो को कुलका की सम्पत्ति का जब्त करने और कुलका को वेदखल करन का अधिकार दिया गया। जाहिर ह कि कानून तोडको को सामूहिक फार्मों से वेदखल कर दिया गया। १६३० के शुरू से १६३२ तक की अवधि म कुल २,४०,००० कुलक परिवारा को उन क्षेत्रो से वेदखल किया गया जहा सम्पूण समूहीकरण चालू था। कुलका की यह वेदखली सीधे-सीधे एक प्रशासकीय कारवाई नही थी, इसे स्वय गरीब और मझोले किसानो ने किया था। स्थानीय निवासिया के आयोग कुलका की सम्पत्ति की कुर्की करत और मवशी को सामूहिक फार्मो के हवाले कर देत। वेदखल कुलका के घरा म स्कूल, क्लव और सावजनिक वाचनालय खोले जाते। कुलक परिवारा के केवल एक भाग को ही वेदखल किया गया था। सरकारी फैसले के अनुसार अदालती कारवाई केवल आतकवादियो और विध्वसकारी गिरोहा के खिलाफ ही की जा सकती थी। दूरवर्ती इलाका म कुलका के एक हिस्से का ही वसाया जाता। अधिकाश कुलक परिवारा (लगभग ७८ प्रतिशत) को उन्ही प्रशासकीय जिला म बसा दिया जाता जहा के वे रहनेवाले थे और उन्ह अपनी सम्पत्ति का एक अश रखन का दी जाती जा उजरती मजदूर रखे बिना स्वय काम करने के लिए आवश्यक था।*

---

*सोवियत सरकार न भूतपूव कुलका की राजनीतिक प्रवत्ति बदलने के लिए बहुत कुछ किया। उनम से अधिकाश सामाजिक दृष्टि से लाभदायक काय मे भाग लने लगे और बाद म सोवियत सघ के समानाधिकारप्राप्त नागरिक बन गये। नाजिया के खिलाफ युद्ध के दिनो मे काफी बडी सख्या म वे मोर्चे पर लडे और साहस तथा वीरता के लिए सरकार द्वारा सम्मानित हुए।

कुलको से बाज़ी मार ले जाने के लिए सामूहिक फार्मों में शामिल हो जाइये, समाजवादी कृषि का निर्माण कीजिये।"

औद्योगिक मजदूरों, सार्वजनिक संगठनों तथा राजकीय निकायों ने हड़तालियों का जबरदस्त समर्थन किया। मिसाल के लिए कीयेव के नज़दीक एक गांव में दो सप्ताह की हड़ताल के दौरान कीयेव ट्राम डिपो और चर्म कारखाने के मजदूरों ने अपने वेतन का एक भाग हड़ताली खेत मज़दूरों की सहायता के लिए भेजा। जो कुलक श्रम कानूनों का उल्लंघन कर रहे थे उनके खिलाफ कानूनी कारवाई की गयी। उक्रइना राजकीय फार्म ट्रस्ट ने खेत मजदूरों को काम देने के लिए एक और फार्म स्थापित किया।

१६२६ के उत्तरार्द्ध में किसान समुदाय का विशाल बहुमत समूहीकरण आन्दोलन में शामिल हो गया। मझोले किसान जो देहात में संख्या में सबसे अधिक और सबसे प्रभावशाली थे, सामूहिक फार्मों में शामिल होने लगे और यही उस दौर की प्रमुख विशेषता थी। घटनाओं के विकास क्रम का तकाज़ा अब यह था कि कुलकों को बेदखल करने तथा उनके कार्यक्षेत्र को सीमित करने की नीति के बजाय एक वर्ग के रूप में कुलक समुदाय के परिसमापन की नीति अपनायी जाये। उस समय तक अन्न उत्पादन में कुलकों की भूमिका उतनी महत्वपूर्ण नहीं रह गयी थी जितनी कुछ समय पहले थी। १६२६ में सामूहिक और राजकीय फार्मों ने राज्य के हाथ २० लाख टन अनाज बेचा, यानी उतना ही अनाज जितना एक साल पहले कुलकों ने बेचा था। अतः सामूहिक और राजकीय फार्मों ने उत्पादन शक्ति के रूप में कुलकों को बेदखल करने के लिए आवश्यक भौतिक आधार महैया कर दिया था।

एक वर्ग के रूप में कुलकों के परिसमापन का अर्थ कभी भी शारीरिक रूप से उनको तहस-नहस करना नहीं था। केवल सोवियत सत्ता के कट्टर दुश्मन ही जानबूझकर इस तरह के झूठ का प्रचार किया करते थे और आज भी करते हैं। वास्तव में उद्देश्य कुलकों को उत्पादन साधनों के निजी स्वामित्व से श्रमजीवी जनता का शोषण करने की समस्त सम्भावनाओं से वंचित करना था। प्रारम्भ में अनेक सामूहिक फार्मों ने कितने ही भूतपूर्व कुलकों को अपना सदस्य बनाया लेकिन अक्सर कुलक जो अधिक चतुर और अनुभवी संगठनकर्ता थे, शीघ्र ही जिम्मेदारी के

पदाधिकारी बनत और कृषि की नयी सामूहिक व्यवस्था को अदर ही अदर नुक्सान पहुचाते। कुलक अपनी सम्पत्ति फाम के हवाले नही करना चाहते थे इसलिए उन्हान अपने पशुआ को मार डाला, अपने औजार बेच डाले और अय किसानो को भी यही करने के लिए उकसाने लगे। अत म यह जरूरी हो गया कि इन विध्वसक तत्वा की हरकता को रोकन के लिए विशेष कारवाई की जाये। सरकार ने एक प्रस्ताव पेश किया जिसके अनुसार उन इलाको म जहा सम्पूण समूहीकरण किया जा रहा था जमीन को ठेके पर लेन और कमेरा रखने पर प्रतिबध लगा दिया गया। स्थानीय सत्ता के निकाया का कुलका की सम्पत्ति को जब्त करने और कुलका को वेदखल करन का अधिकार दिया गया। जाहिर है कि कानून तोडको का सामूहिक फार्मो से वेदखल कर दिया गया। १९३० के शुरू से १९३२ तक की अवधि मे कुल २,४०,००० कुलक परिवारा का उन क्षेत्रो से बेदखल किया गया जहा सम्पूण समूहीकरण चालू था। कुलका की यह बेदखली सीधे-सीधे एक प्रशासकीय कारवाई नही थी, इसे स्वय गरीब और मझोले किसानो ने किया था। स्थानीय निवासिया के आयोग कुलका की सम्पत्ति की कुर्की करते और मवेशी का सामूहिक फार्मो के हवाले कर देते। वेदखल कुलको के घरा म स्कूल, क्लब और सावजनिक वाचनालय खोले जात। कुलक परिवारा के केवल एक भाग को ही वेदखल किया गया था। सरकारी फसले क अनुसार अदालती कारवाई केवल आतकवादियो और विध्वसकारी गिरोहा के खिलाफ ही की जा सकती थी। दूरवर्ती इलाका म कुलका के एक हिस्से का ही बसाया जाता। अधिकाश कुलक परिवारा (लगभग ७५ प्रतिशत) को उन्ही प्रशासकीय जिला मे वसा दिया जाता जहा के वे रहनेवाले थे और उन्ह अपनी सम्पत्ति का एक अश रखन को दी जाती जो उजरती मजदूर रखे बिना स्वय काम करने के लिए आवश्यक था।*

---

*सोवियत सरकार न भूतपूव कुलका की राजनीतिक प्रवृत्ति वदलन के लिए वहुत कुछ किया। उनम से अधिकाश सामाजिक दृष्टि स लाभदायक काम म भाग लेन लगे और वाद म सावियत सघ के समानाधिकारप्राप्त नागरिक वन गये। नाजिया के खिलाफ युद्ध के दिना म काफी वडी सख्या म वे मोर्चे पर लडे और साहस तथा वीरता के लिए सरकार द्वारा सम्मानित हुए।

कृषि के समूहीकरण के लिए, जो श्रमजीवी किसानों तथा पूरे देश की मेहनतकश जनता दोनों के फायदे के लिए किया गया था, सोवियत समाज की अगुआ और सबसे संगठित शक्ति कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग को जबर्दस्त प्रयास करना पड़ा। १९२९ के अंत में सामूहिक फार्मों के संगठन में सहायता करने के लिए २५,००० मज़दूरों को गावों में भेजने का निश्चय किया गया। इनमें सर्वप्रथम कम्युनिस्ट भेजे जाते थे जिन्हें संगठनात्मक कार्य का बड़ा अनुभव था। लेकिन स्वयंसेवकों की संख्या उससे बहुत बढ़ गयी। १९३० के शुरू में लगभग ३५,००० मज़दूर गावों को रवाना हुए। साथ ही साथ बीसियों औद्योगिक उद्यमों की सहायता बढ़ाई गई। कृषि मशीनरी, खाद तथा कृषि की जरूरत की अन्य वस्तुएं पैदा करनेवाली औद्योगिक शाखाओं—ट्रैक्टर उद्योग, रसायन, आदि—के और विकास के लिए अतिरिक्त निधि लगाई गयी।

पार्टी के केंद्रीय संगठनों की प्रत्यक्ष देख रेख में ग्रामीण कम्युनिस्टों ने अपने कार्यकलाप को तेज़ किया। मई, १९३० में सामूहिक फार्मों में ३ १३,००० से अधिक पार्टी सदस्य और ५,५३,००० से अधिक कोम्सोमोल सदस्य थे। यह संख्या श्रम योग्य ग्रामीण आबादी का केवल ६ ५ प्रतिशत थी यानी प्रत्येक १०० गैर पार्टी किसानों के पीछे ३ कम्युनिस्ट और ६ कोम्सोमोल सदस्य थे। यह संख्या या देखने में बड़ी नहीं थी, मगर उनकी ताकत इसमें थी कि वे एक संगठित, अगुआ और एक लक्ष्यनिष्ठ दस्ता था जिसके सदस्य समान उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सम्मिलित होकर काम करते थे। स्थानीय सक्रिय कार्यकर्ता उनके समर्थन में एकत्रित हुए और ग्राम जनता ने भी साथ दिया। इनमें से बहुतों को अक्सर प्राणों का खतरा उठाना पड़ता था। उन वर्षों के इतिहास में ऐसे बहुत से लोगों के नाम अंकित हैं जिन्होंने सोवियत कृषि में समाजवाद की विजय की खातिर प्राणों की आहुति दी। सामूहिक फार्मों उद्यमों, बस्तियों, सड़कों और स्कूलों के नाम इन वीरों के नाम पर रखे गये हैं। परंतु उनकी वीरता की सबसे महत्वपूर्ण यादगार वे समृद्ध सामूहिक फार्म हैं जिनके निर्माण में तीसरे दशक के अंत और चौथे के प्रारम्भ में उन्होंने हाथ बटाया था।

१९२९ के अंत में सोवियत संघ की केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के एक अधिवेशन में राज्य नियोजन आयोग के अध्यक्ष अजिजानोव्स्की ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा था "जब हम किसी क्षेत्र में ८० प्रतिशत

से अधिक खेतो का समूहीकरण करते है तो इसका क्या मतलब होगा? मतलब होगा ऐसी स्थिति पैदा हो जाना, जिनमे बाकी किसान उनका अनुसरण करेगे।" मालोतोव ने, जो १९३० मे जन कमिसार परिषद के अध्यक्ष नियुक्त हुए थे, यह विचार प्रकट किया कि १९३० मे हम "केवल समूहीकृत क्षेत्रो को ही नही, बल्कि पूरे के पूरे समूहीकृत जनतत्रो को उत्पन्न होते देखेगे।"

ऐसे समय जब अतर्राष्ट्रीय स्थिति बेहद तनावपूर्ण थी, जब उद्योगीकरण तेजी से प्रगति कर रहा था और किसान बडी सख्या मे सामूहिक फार्मो मे शामिल हो रहे थे, कृषि को समाजवादी आधार पर पुनर्गठित करने की उत्सुकता बिलकुल स्वाभाविक और समझने योग्य थी। लेकिन जिन हालतो मे समूहीकरण आवश्यक तैयारियो के बिना किया गया, जब अनुभवी और योग्य सगठनकर्ताओ का अभाव था, गलतिया अनिवार्य थी। ऐसे अनेक उदाहरण थे जब किसानो को स्वेच्छापूर्वक सामूहिक फार्मो मे नही लाया गया। ऐसी भी मिसाले थी कि जो किसान सामूहिक फार्मो मे शामिल होने मे हिचक रहे थे या जो फैसला करने मे कुछ विलम्ब कर रहे थे, उनके साथ सोवियत विरोधी तत्वो का सा व्यवहार किया गया। मझोले किसानो का नाम अक्सर कुलको की सूचि मे लिख दिया जाता तथा रिहायशी मकानो, भेड-बकरो, मुर्गे मुर्गियो और सब्जी-तरकारियो के बगीचो का जबरदस्ती समूहीकरण कर लिया जाता। फिर कुछ अन्न उपजानेवाले इलाको मे समूहीकरण के सचालक विशालकाय फार्म कायम करने के विचार का शिकार हो गये जिनमे बहुत अधिक लाभ थे।

उसी समय उराल पश्चिमी साइबेरिया, उक्रइना तथा देश के कुछ और भागो मे कम्यूनो की स्थापना की गई थी। इनमे शामिल लोगो ने स्वेच्छापूर्वक मूलभूत उत्पादन साधनो को ही नही, बल्कि रिहायशी मकानो, भेड-बकरो और मुर्गे-मुर्गियो तक को कम्यून की सम्पत्ति बना लिया। आम तौर से वे सयुक्त आमदनी का भी बराबर भागो मे बाट लेते थे। आर्थिक तथा सास्कृतिक कार्यकलाप से सबधित सारे सवाल भी सामूहिक आधार पर तय किये जाते थे।*

---

*इसी प्रकार के, मगर आम तौर से कुछ छोटे आकार के कम्यून औद्योगिक केन्द्रो मे भी बनाये जाते। मजदूर वेतन मिला देते, मिलकर खाते-पीते, और रहन-सहन, छुट्टियो, शिक्षा, कपडो आदि के खर्च मे समान रूप से भागीदार करते।

इस प्रकार के कम्यूना की स्थापना (शहरा और दहाता दोना जगह) सदस्या की इस प्रवल इच्छा का नतीजा थी कि शीघ्रातिशीघ्र अपन जीवन को नय सिद्धाता के आधार पर, सामूहिकता के साचे म ढाल ल। लकिन उत्पादन शक्तिया के स्तर, श्रमजीविया की भौतिक स्थिति तथा समानता के आधार पर आमदनी क बटवारे स उत्पादन के विकास म कोई सहायता नही मिली। यद्यपि अक्सर इन कम्यूना से लोगा के मन स निजी स्वामित्व की भावना का उन्मूलन करने म सुविधा हुई और परस्पर सम्मान और भ्रातृत्व की भावना का प्रात्साहन मिला, मगर इनम से अधिकाश सस्थाओ ने वे आशाए पूरी नही की जो उनस की गयी थी। उनम स कुछ विगठित हो गये, औरा का फक्टरिया म उत्पादन दला तथा दहाता म उत्पादन आर्टेला—यानी सामान्य सामूहिक फार्मों के रूप म पुनगठन कर दिया गया।

वज्ञानिक कम्युनिज्म के सस्थापका ने अनेक अवसरो पर इस बात पर जोर दिया था कि कृषि के पुनगठन म बडी कठिनाइया है क्याकि निजी सम्पत्तिवाले किसान की मनोभावना छोटे मालिक की सी होती है। समूहीकरण का काम इससे भी कही जटिल था क्योकि वह ऐसे समय चलाया जा रहा था जब विरोधी पूजीवादी देशा के घेरे मे सोवियत सघ को मजबूर होकर एक ही समय मे औद्योगिक विस्तार को तेज करना, अपनी प्रतिरक्षा क्षमता को मजबूत करना तथा अपनी कृषि को समाजवाद के आधार पर पुनगठित करना पड रहा था।

प्रारम्भिक अवस्था मे गलतियो और पार्टी नीति की विकृति का नतीजा यह हुआ कि बहुत से किसान जो अभी अभी सामूहिक फार्मों मे शामिल हुए थे, उनसे मुह मोडने लगे। १९३० के वसत मे समूहीकृत खेतो की सख्या ५० प्रतिशत से अधिक थी, लेकिन उस साल के मध्य तक यह सख्या घटकर लगभग २४ प्रतिशत रह गयी।

परन्तु धीरे-धीरे गावा के सामाजिक पुनगठन को दुरुस्त करने के लिए पार्टी और सरकार द्वारा की गयी कारवाइया का असर हुआ। जा गलतिया हुई थी, उनकी कडी आलोचना की गयी। स्तालिन के लेख "सफलता से हतबुद्धि के साथ-साथ विशेष प्रस्तावा ने जनता को यह बताया कि गलतियो का कारण क्या था और कसे और किन उपायो से उन गलतिया को सुधारना चाहिए। सामूहिक फाम का नया आदश नियम प्रकाशित किया

गया जिसम यह व्याख्या की गयी कि सामूहिक फार्मों के कायभार क्या है, उनकी स्थापना कैसे करनी चाहिए, और सदस्या को अपना रोजमर्रे का काम कैसे करना चाहिए। उनमें यह निर्धारित किया गया था कि हर सामूहिक किसान अपनी व्यक्तिगत खेती अपन निजी इस्तेमाल के लिए रख सकता है, उसके पास खेती के अपने छोटे औजार हो सकत हैं, और वह कुछ गाय, भेड-बकरी और मुर्गे-मुगिया पाल सकता है। इसी के साथ इस बात पर जोर दिया गया था कि तमाम भारवाही पशुओ का, बीज भडार का और उन खेती सम्बन्धी इमारता का, जा सामूहिक फाम के काय के लिए जरूरी हैं, समाजीकरण कर लेना है। कुलक और दूसरे निर्वाचन अधिकारा से वचित लोग सामूहिक फार्मो के सदस्य नही बन सक्त थे। उसी समय राज्य न सामूहिक फार्मों की अधिक आर्थिक सहायता की, उन्ह कई सुविधाए दी और कुछ करा से उन्ह विमुक्त कर दिया। पार्टी और सरकार ने सभी राजकीय और सावजनिक सगठना को कृषि में समाजवादी उत्पादन पद्धति को सुदढ करने के काम मे लगाया।

१९३० की पतझड म इन कारवाइया का औचित्य सिद्ध हो गया। सामूहिक फार्मों की फसल व्यक्तिगत खेती रखनेवाले किसानो से ज्यादा हुई और इन फार्मो ने अनाज की कुल पैदावार का एक तिहाई राज्य को सप्लाई किया। सबस अच्छी हालत उन्ही फार्मो की थी जिन्ह राजकीय मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो की सेवाए प्राप्त थीं। १९३१ तक इनकी सख्या १,४०० थी जिनमें कुल ६२,४०० ट्रक्टर थ। १९३१ के वसत म मशीन-ट्रैक्टर स्टेशना ने तमाम सामूहिक फार्मो के २५ प्रतिशत की जरूरत पूरी की और उनकी खेती की जमीन के एक तिहाई से अधिक पर काम किया। सामूहिक किसाना की आमदनी व्यक्तिगत किसाना से अधिक थी, जिसका विशेष महत्व था। इन अधिक अनुकूल स्थितिया म सामूहिक फार्मों म किसान दूसरी बार बहुत बडी सख्या मे शामिल हान लगे। यह कितने बडे पैमाने पर हुआ, इसका अन्दाजा पाठको को निम्न आक्डा से हा सकता है हर राज लगभग ११५ सामूहिक फाम, एक या दो मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन और दो राजकीय फाम स्थापित हो रहे थे।

धीरे धीरे सामूहिक फार्मो की आमदनी के विभाजन के नय सिद्धात विकसित हुए। अनुभव से यह जाहिर हो गया था कि आमदनी का विभाजन किसाना के परिवार के आकार की बुनियाद पर नही, न उनकी

जरूरतो या सामूहिक फाम म उनके द्वारा लायी गयी सम्पत्ति के आधार पर करना चाहिए। एक नयी पद्धति लागू की गयी जिसके अनुसार सामूहिक किसानो द्वारा किय गये काम को श्रम की एक विशेष इकाई – काय दिवस इकाइयो म नापा जाने लगा। ऐसा करने म काम की मात्रा और गुण तथा उसम लगी श्रम चेष्टा को भी ध्यान मे लिया जाता था। काम के हिसाब से अदायगी की व्यवस्था भी जारी की गयी। व्यावहारिक अनुभव के आधार पर काफी विश्वसनीय परिशुद्धता के साथ यह अनुमान करना सम्भव था कि किस तरह का काम कितनी काय दिवस इकाइयो के बराबर है।

इस समय तक समूहीकरण के निणयात्मक नतीजे सामने आ चुके थे। सामूहिक फार्मा की सख्या २,११,००० तक पहुच गयी थी जिसम १ करोड ५० लाख व्यक्तिगत खेती और कृष्ट भूमि का तीन चौथाई भाग शामिल था। एक तिहाई फार्मो को मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो की सुविधाए प्राप्त थी। इन फार्मो के पास सभी सामूहिक फार्मो की कुल कृष्ट जमीन का आधा था। सोवियत कृषि के पास उस समय १,४८,५०० कृषि मशीने था।

१९३२ मे अभी ६० ००० कुलको के फाम मौजूद थे (जिनके पास कुल मिलाकर १० लाख हक्टर जमीन थी)। कुलक अब पहल की तरह अलग वग के रूप मे नही रह गये थे मगर दश के कुछ हिस्सो म, जस मिसाल के लिए ताजिकिस्तान म १९३४ तक कुलको के अधिकारो पर केवल कुछ प्रतिबध लगा दिये गये थे। उज्बेक जनतत्र मे कुलक वग का अत १९३८ म हुआ और दागिस्तान के पहाडी इलाको म दूसरी पचवर्षीय योजना के आखिर मे।

बचे खुचे शोषक वर्गों के प्रतिरोध के कारण कृषि और सामान्य रूप से पूरे देश को काफी क्षति पहुची। सबसे बढकर इसका असर देश के पशुधन पर पडा जो प्रथम पचवर्षीय योजना काल म पहले स आधा रह गया था।

फिर भी सोवियत कृषि न अपनी मुख्य समस्या – श्रमजीवी जनता को पर्याप्त मात्रा म खाद्यान्न की तथा हल्के उद्योग का कच्चे माल की पूर्ति और रिजव रखने की समस्या – को सफलतापूवक पूरा किया।

सम्पूर्ण समूहीकरण स पहल राज्य द्वारा अनाज की खरीदारी औसतन १ करोड १० लाख टन स अधिक सालाना होती थी मगर समूहीकरण क दौरान करीब दोगुनी वृद्धि हुई यानी २ करोड १५ लाख टन म

अधिक की। समूहीकरण की बदौलत कपास की पूर्ति भी पर्याप्त मात्रा म हुई। लेकिन इससे भी महत्वपूण काई और बात थी, वह यह थी कि कृपि से पूजीवादी तत्वा का बेदखल कर दिया गया था और उजरती खेत मजदूर भी अतीत की कहानी बन गया था। प्रथम पचवर्षीय याजना काल म दस लाख स अधिक विगत खेत मजदूर सामूहिक फार्मों म शामिल हुए और कोई नौ लाख राजकीय फार्मों और मशीन-ट्रक्टर स्टेशना पर काम करन लगे और बाकी फक्टरिया म चले गये या उन्हें शिक्षा प्राप्त करन और फिर दफ्तरी कमचारी बनन का अवसर दिया गया।

समूहीकरण न मूलभूत उत्पादन साधना के निजी स्वामित्व का अत कर दिया और करोडा विगत छोटी सम्पत्ति के मालिक सामूहिक ढग से काम करना सीखने लगे। ग्रामीण क्षेत्रा मे रोजगार का स्तर भी प्रत्यक्ष रूप स ऊचा हुआ। किसान अब कृपि जनसख्यातिरेक, दरिद्रता और तबाही की छाया तले जीवन नही बिता रहे थे। सामूहिक किसान जो कुछ ही दिन पहले सोवियत सघ की जनसख्या का बहुत छाटा भाग थ अब सख्या की दृष्टि स सावियत समाजवादी समाज का सबसे बडा वग बन गये। इसका मतलब यह था कि समाजवाद गावा म भी विजयी सिद्ध हुआ था।

काय तथा जीवन स्थिति मे परिवतन। बेरोजगारी का अत

प्रथम पचवर्षीय याजना से सावियत जनगण की जीवन पद्धति म बडे परिवतन हुए। बहुत बडी सख्या मे कारखाना खनना तथा तेलकूपो के निर्माण न उत्तर, कजाखस्तान साइबेरिया और सुदूर पूव के कुछ इलाका का औद्योगिक केद्रा मे बदल दिया। उस अवधि मे साठ शहरा और बडी औद्योगिक बस्तिया की उत्पत्ति हुई। यद्यपि नागरीकरण की प्रक्रिया पूजीवाद के दारान ही शुरू हो चुकी थी और तेजी से बढ रही थी मगर तीसरे दशक के अत और चौथे के प्रारम्भ म ही उसन व्यापक रूप धारण किया। जब तक अथव्यवस्था का व्यापक पुनर्निर्माण नही शुरू हुआ तब तक शहरी और देहाती आबादी के अनुपात मे प्रथम विश्वयुद्ध से पहले की तुलना म काई परिवतन नही हुआ था यानी शहरी आबादी उस समय तक केवल १८ प्रतिशत थी। प्रथम पचवर्षीय योजना के प्रथम

चार वर्षो मे वह वढकर २८ प्रतिशत हो गयी। यह वृद्धि उतनी हा थी जितनी १८९७ तथा १९२६ की जनगणना तक के तीस वर्षो मे हुई था। शहरी ग्राबादी का यह विस्तार ग्रभूतपूव था।

शहरी ग्रावादी की वृद्धि का एकमात्र कारण नये शहरा की उत्पत्ति ही नही थी। पुरान ग्राद्योगिक केद्रो का भी शीघ्र विकास हो रहा था। विशाल पैमाने पर उद्योगीकरण के चलते स्वभावत फक्टरी मजदूरो ग्रौर दफ्तरी कमचारिया की सख्या मे वडी वद्धि हुई। प्रथम पचवर्षीय याजना के दौरान जहा शहरी ग्राबादी मे कुल वृद्धि ४४ प्रतिशत हुइ, वहा मजदूरा ग्रौर दफ्तरी कमचारिया की सख्या दोगुनी हो गयी यानी १,०८ ००,००० से वढकर २,२६,०० ००० हो गयी। इसम ८०,००,००० ग्रौद्योगिक मजदूर (पहले के ३८,००,००० के वजाय), २३,००,००० निर्माण मजदूर (पहले के ७,००,००० के वजाय) ग्रौर २०,००,००० परिवहन मजदूर (पहले के १३,००,००० के वजाय) शामिल थे। यह विस्तार ग्रयव्यवस्था के केवल समाजवादी क्षेत्र म हुग्रा था। १९३२ तक एक प्रतिशत से भी कम देश की श्रम शक्ति पूजीवादी क्षेत्र मे लगी हुई थी। पूजीवादी तत्वा की इतनी तेजी से वेदखली ग्रौर उजरती श्रम का ग्रत योजना के लक्ष्याको से कही ज्यादा तेजी से हुग्रा।

विश्व ऐतिहासिक महत्व की एक घटना यह थी कि सावियत सघ म वेरोजगारी को पूण रूप से मिटा दिया गया। १९२६ स १९२९ तक वेरोजगारा की सख्या म वृद्धि हा रही थी ग्रौर वह वढत-वढत १७,००,००० तक पहुच गयी थी। लगभग ९०,०० ००० ग्रादमिया को ग्रामीण क्षत्र म उचित काम नही मिला था। यह स्थिति जिस कृषि जनसख्यातिरेक कहत हैं, व्यक्तिगत किसाना की खेती का नतीजा थी जिसकी उत्पादन क्षमता नगण्य थी। हर माल काई पद्रह लाख किसान राजगार की तलाश म ग्रौद्योगिक या निर्माण मजदूर का काम करन शहरा का रुख करत थ।

सोवियत सघ म वेराजगारी विन्शा म पनी वेराजगारा स मूलत भिन थी। सावियत सघ म वेराजगारा की वृद्धि ऐस समय हा रही थी जब ग्रथव्यवस्था का तजा स विकास हा रहा था। उद्याग का निरतर विकास हा रहा था ग्रौर ग्रौद्योगिक मजदूरा की सख्या बराबर वढ रही थी। निमाण तथा परिवहन सस्थाग्रा म भा समान वृद्धि हा रहा थी। फिर भी फ्लून राजगार क मार किसाना का शहरा म ताता लगा हुग्रा था ग्रौर

इसीलिए बेरोजगारो मे अयोग्य मजदूरो का विशाल बहुमत था। जहा तक बेरोजगार औद्योगिक मजदूरो का सवाल है उनकी सख्या कुल बेरोजगारो की १५-१७ प्रतिशत से अधिक नही थी और उसका मुख्य कारण मजदूरो की अत्यत अस्थिरता थी।

ब्रिटेन, फास, जर्मनी और सयुक्त राज्य अमरीका की स्थिति भिन्न थी। इन देशो मे बेरोजगारी का सम्बन्ध उद्योग के उतार-चढाव से था। पूजीवादी देशो मे बेरोजगारो मे हमेशा योग्य मजदूरो की बडी सख्या होती थी।

लेकिन तीसरे दशक मे सोवियत सघ मे भी बेरोजगारी की समस्या बहुत गम्भीर हो चली थी। उस समय राज्य के पास आवश्यक साधन नही थे जिनकी सहायता से स्थिति मे तेजी से परिवर्तन लाया जा सकता। कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की नीति स्पष्ट थी यह नीति थी प्रत्येक सोवियत नागरिक के लिए काम करने का अधिकार सुनिश्चित करना और बेरोजगारी का पूर्ण रूप से उन्मूलन करना।

राज्य सगठन तथा ट्रेड-यूनियनें बेरोजगारो की जितनी भी सहायता कर सकती थी, उन्होने की। रोजगार कार्यालयो मे जितने लोगो के नाम दर्ज थे उन्हे कुछ विशेष सुविधाए दी गयी उन्हे सामान्य मकान भाडे का आधा देना था, रेल और जहाज भाडे मे भी उन्हे ५० प्रतिशत की छूट हासिल थी, उन्हे कई प्रकार की वृत्तिया मिली हुई थी और दिन का भोजन अगर मुफ्त नही तो सस्ता जरूर मिलता था। अनेक बेरोजगारो को सडक बनाने पार्क और बगीचे लगाने, सडक पर झाडू देने और दलदलो का निष्कासित करने का काम दिया गया। कई ट्रेड-यूनियनो ने अपनी निधि का एक भाग बेरोजगारो की सहायतार्थ खर्च किया। फिर भी बेरोजगारी एक मुख्य सामाजिक समस्या बनी रही जिसका पूरी जनसख्या और खासकर मजदूर वर्ग के जीवन स्तर पर बुरा प्रभाव पड रहा था।

सोवियत सरकार, ट्रेड-यूनियन नेताओ और श्रम की जन कमिसारियत ने बेरोजगारी की समस्या का बाकायदा अध्ययन किया। कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा पोलिट ब्यूरो की बैठको मे भी इसपर विचार किया गया। प्रथम पचवर्षीय योजना तैयार करते समय भी इस समस्या पर विशेष रूप से ध्यान दिया गया। इसमे सदेह नही था कि इन पाच वर्षों के दौरान श्रम शक्ति की माग बहुत बढ जायेगी मगर योजना के

रचयिताओ के स्वप्न म भी यह बात नही थी कि इस अवधि क अत तक बेरोजगारी का उन्मूलन हो जायगा। यह समाजवादी अर्थव्यवस्था की श्रेष्ठता, समाजवादी शक्तिया की तजी से वद्धि का सबूत था।

१६२६ के अत म ही श्रम की जन कमिसारियत न घोषणा की "पिछली तिमाही (अक्तूबर से दिसम्बर तक) के आकडा स मालूम होता है कि जहा तक आवश्यक श्रम शक्ति का सबध है अपर्याप्त उपलभ्य क कारण स्थिति कडी है।" यह पहली सरकारी दस्तावेज थी जिसम पूरा अर्थव्यवस्था के सबध म मजदूरा की कमी की चर्चा की गयी थी। १६३० मे बेरोजगारा की सख्या मे भारी कमी हुई। अप्रैल म देश के रोजगार कार्यालया मे ८,५०००० बेरोजगारा के नाम दज थे, पतझड तक इसम ७८ प्रतिशत कमी हो गयी थी और साल का अत होते होते रोजगार कार्यालया के रजिस्टरा म किसी का नाम नही रह गया था।

अक्तूबर क्राति की चौदहवी सालगिरह के दिन "प्राव्दा" के मुखपष्ठ पर बडे अक्षरो मे लिखा हुआ था "सवहारागण! सभी देशा के मजदूरो! आज जब आप सभा स्थला म जमा होगे और प्रदशना मे निकलेगे तो दो अर्थव्यवस्थाओ की उपलब्धिया का खुलासा करगे—पूजीवाद की और समाजवाद की।

"याद रखिये!

पूजीवादी देशो मे

"करोडो बेरोजगार बढता हुआ विश्व सकट, हजारा दिवाले, दसिया हजार ठप फक्टरिया, उपनिवेशा मे बढती गरीबी, भूख और तबाही। नये साम्राज्यवादी नरसहारो की तयारिया हो रही है।

"समाजवादी निर्माण के देश मे

'उद्योग का अत्यधिक विस्तार, बेरोजगारी का उन्मूलन, राजकीय तथा सामूहिक फार्मों के आधार पर बडे पैमाने का मशीनीकृत कृषि उत्पादन, श्रमजीवी जनता की भौतिक स्थिति म सुधार तथा बोल्शेविक पार्टी और उसकी लनिनवादी केंद्रीय समिति के गिद उनका एकत्रीकरण।'

सोवियत सघ ससार का पहला देश था जिसन मानव के काम क महान अधिकार की व्यवहार म जमानत की और वह भी ऐसे समय जब कि ससार के पैर एक अभूतपूव आर्थिक सकट के थपेडो स लडखडा रह थे। पूजीवादी समाचारपत्रा क लिए अब यह छिपाना सम्भव नही था कि

पूजीवादी देशा मे जनता को भीषण तबाही का सामना करना पड रहा है। इस सदभ म एक ऐसे देश म जहा समाजवाद का निर्माण अभी शुरू ही किया गया था, बेराजगारी का उन्मूलन और भी अधिक महत्वपूण था। इस मुख्य विजय का मतलब केवल यही नही था कि श्रमजीवी जनता के सभी हिस्सा की भौतिक स्थिति मे सुधार हुआ, बल्कि इसन लोगा म निस्वाथ उत्साह की भावना जगाई और उन्ह पहले से कही ज्यादा दढ विश्वास दिलाया कि उन्होंने जो माग अपनाया है वह सही है।

इस विश्वास से सोवियत लोगो को उन कठिनाइयो का जो अभी भी उनके सामन मौजूद थी, शात चित्त से तथा दढतापूवक मुकाबला करने म सहायता मिली। खाद्य पदाथ, आवश्यक उपभाग सामान—कपडे और जूते—की राशन बन्दी थी। कारखाना ने अपन भोजनालया और दुकाना म खाद्य पदार्थों की रसद को सुधारन के उद्देश्य से आलू और सब्जी तरकारी उपजाना और पशुपालन आदि शुरू कर दिया था। अग्रणी मजदूरा को प्राथमिकता दी गयी बोनस के रूप म उन्ह सेनेटोरियमा तथा अवकाश गहा के लिए प्रवेशपत्र दिये जात, इनाम के रूप म उन्ह सूट का कपडा, घडी या कभी कभी जूतो के जोडे दिये जात।

महनतकश जनगण अच्छी तरह अवगत थे कि ये समस्याए चन्द दिन की ह। वे अपनी आखा से देख रहे थे कि काय और जीवन स्थिति म दिनोदिन सुधार हो रहा है, शहरा का चेहरा बदलता जा रहा है, नित्य नये स्कूल और उच्च शिक्षा सस्थाए खुल रही ह, और अधिकाधिक व्यापक पैमान पर नि शुल्क चिकित्सा सेवा का प्रबध किया जा रहा है।

मजदूरा के विशाल बहुमत के लिए सात घटे का काय दिवस कर दिया गया था और जमीन के नीचे या स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पेशावाले कवल छ घटे काम करत। किशारो तथा गभवती औरता के लिए विशेष सुविधाओ का प्रबध किया गया। प्रथम पचवर्षीय याजना के वर्षो म सामाजिक बीमे पर राज्य व्यय बढकर लगभग ३ गुना हो गया तथा चिकित्सा सेवाओ पर ४ ५ गुना बढ गया। हर जगह बडे पमान पर रिहायशी गह निमाण हा रहा था। मास्को, लेनिनग्राद तथा सभी सघीय जनतन्त्रा की राजधानिया और बडे शहरो म नये मुहल्ले उभरते आ रहे थे। लेकिन इन शहरा की आबादी इससे भी अधिक तजी से बढ रही

थी। निर्माणाधीन केन्द्रो मे निर्माण मजदूरा का ग्राम तौर स लक्डी के वने ग्रस्थायी घरो म रहना पडता था जहा ग्राधुनिक सुविधाए भी उपलब्ध नही थी। स्थिति ग्रौर ज्यादा खराव इसलिए थी कि य निर्माण काय ग्रधिकतर ऐसे इलाका मे हो रहे थे जो केन्द्र से बहुत दूर थे ग्रौर जहा उत्तर की कडाके की सर्दी, मध्य एशिया की गर्मी ग्रौर रेत या सुदूर पूव के दुगम वना की कठिनाइयो के कारण नयी समस्याए उठती रहती थी।

किंडरगाटनो तथा शिशुपालगृहो की सख्या भी वहुत कम थी। साव जनिक परिवहन की स्थिति भी नाजुक थी। लेकिन सोवियत श्रमजीवा जनता की मनोभावना इन कठिनाइयो से नही निर्धारित होती थी। लाग ग्रपनी वतमान स्थिति की तुलना कुछ ही दिन पहले की स्थिति से करत ग्रौर चारा ग्रोर नजर डालते तो देखते कि कितने विशाल परिवतन हो रहे है, जिनका लाने मे स्वय उनका वडा हाथ है। प्रथम पचवर्षीय योजना के दौरान शहरी किंडरगाटना मे स्थान ६ ६ गुना वढ गये ग्रौर ग्रामीण क्षेत्रो मे यह वद्धि लगभग ६३ गुना थी। रेडियो ग्रौर बिजली वत्ती हर जगह साधारण चीज हो गयी थी। ग्रनेक शहरो म वतमान निवास स्थाना मे ग्राधुनिक सुविधाए लगाने का पुनर्निर्माण काय शुरू किया गया। पानी के नल, गदे पानी की नाली व्यवस्था, टेलीफोन सचारण, तथा पाक ग्रौर सावजनिक उद्यान लगाने की ग्रोर खास ध्यान दिया गया।

सास्कृतिक प्रगति भी एक महत्वपूण चीज थी। निरक्षरता के विरुद्ध सघप ने वास्तव म राष्ट्रव्यापी रूप धारण किया। १६२८ म कोम्सोमाल की ग्राठवी काग्रेस ने पढे लिखे लोगा से निरक्षरो को पढना लिखना सिखाने की ग्रपील की। निरक्षरता निवारण ग्रौर ग्राम जनता म साक्षरता ग्रभियान के माने सवज्ञात थे। ग्रनक सामूहिक ग्रौर राजकीय फार्मो ने विशेप खेता की फमल की ग्रामदनी पाठ्यपुस्तक, कापी ग्रौर पेंसिल खरीदन के लिए ग्रलग कर दी। मजदूर तथा दफ्तरी कमचारी प्राय इस प्रयोजन के लिए विशेप निधि जमा करत थे। शहर ग्रौर देहात के बुद्धिजीविया ग्रौर सवप्रथम स्कूली ग्रध्यापका न निरक्षरता निवारण क लिए नि शुल्क स्वेच्छापूवक बहुत काम किया। इसका परिणाम ग्राश्चय चकित कर देनेवाला था १६२७ म यूरापीय देशा म साक्षरता क स्तरा की सूचि म सोवियत सघ का स्थान उन्नासवा था। मगर १६३२ तक
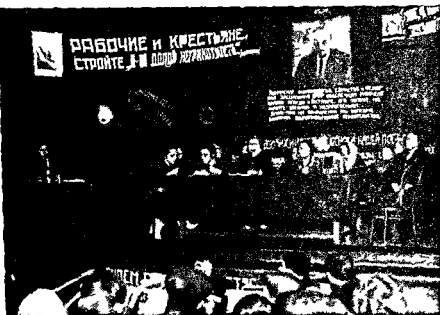
निरक्षरता निवारण संस्था की एक सभा मे
नादेज्दा क्रूप्स्काया भाषण कर रही है। १९२७

इसकी प्रौढ आबादी का विशाल बहुमत पढना लिखना जानता था। गैर-रूसी इलाको मे इसका परिणाम और भी प्रभावी था। १९२९ से १९३३ तक साक्षरता का स्तर ताजिकिस्तान मे ४ प्रतिशत से ५२ प्रतिशत, उज्बेकिस्तान म १२ प्रतिशत से ७२ प्रतिशत और ट्रास-काकेशिया मे ३६ प्रतिशत से ८६ प्रतिशत तक पहुच गया था।

इसी दौर मे ८ स १५ वप के बच्चो के लिए अनिवाय प्राथमिक शिक्षा लागू की गयी। विशेषकर कम्युनिस्टो तथा कोम्सामोल सदस्यो को शिक्षक की ट्रेनिग लेने भेजा गया।

पाठ्यपुस्तको की सख्या म दजनो गुना की वृद्धि हुई जिनम बहुत सी पुस्तके रूसी के सिवा सोवियत सघ की अन्य जातियो की भाषाओ मे थी। फलस्वरूप १९३३ तक यह सम्भव हो गया था कि चारवर्षीय अनिवाय शिक्षा पूरे देश म लागू कर दी जाये। शहरो मे अनिवाय सातवर्षीय शिक्षा मे सक्रमण शुरू हो चुका था और मूलत १९३४ तक सपन्न हो गया।

उच्च शिक्षा प्रणाली या बुनियादी पुनर्गठन भी शुरू किया गया। छात्र समुदाय की बनावट में भी बड़ा परिवर्तन हो गया था। अधिकांश मजदूरों और किसानों के बेटे-बेटियाँ थे। योग्य विशेषज्ञों के अभाव में केवल यही जरूरी नहीं हुआ कि वर्तमान इंस्टीट्यूटों तथा विश्वविद्यालयों की संख्या का विस्तार किया जाये और विशेष उच्च शिक्षा संस्थाएं स्थापित की जायें जहां व्यावहारिक अनुभव प्राप्त विद्यार्थियों का प्रशिक्षण दिया जाता, बल्कि यह भी कि शिक्षा की अवधि कम कर दी जाय (साधारण पांच साल के बजाय चार साल) तथा दाखिले की परीक्षा की प्रथा उठा दी जाये। १९३३ तक मुख्य विषयों के सभी अध्ययनक्रमों में दाखिले की परीक्षा की प्रथा फिर से जारी कर दी गयी थी। विद्यार्थियों के स्वतंत्र काम का प्रत्याशित स्तर भी ऊंचा कर दिया गया और पंचवर्षीय अध्ययनक्रम पुनः जारी हो गये।

१९३२ में उच्च शैक्षणिक संस्थाओं तथा विशेष माध्यमिक स्कूलों में विद्यार्थियों की कुल संख्या पंद्रह लाख से अधिक थी। मध्य एशिया और कजाखस्तान में उच्च शैक्षणिक संस्थाओं की संख्या प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि में ४ से बढ़कर ५५ हो गयी थी। ट्रांसकाकेशिया में छात्रों की संख्या इस अवधि में लगभग दोगुनी हो गयी थी और उक्रइना में तिगुनी से अधिक। १९२८ से १९३२ तक कोई २,००,००० उच्च शिक्षाप्राप्त विशेषज्ञ सोवियत श्रमजीवी जनगण की पंक्तियों में शामिल हो गये थे। दूसरी पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में उन नौजवानों की संख्या जो गत पांच वर्षों मे स्नातक हुए थे, भारी उद्योग के कुल विशेषज्ञों तथा नेतृत्वकारी कार्यकर्ताओं के ६० प्रतिशत से अधिक थी।

उस दौर में समाजवादी संस्कृति फैलाने में क्लबों और सार्वजनिक वाचनालयों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। १९३२ में सार्वजनिक पुस्तकालयों के पास ९ करोड़ १० लाख पुस्तकें थी, क्रांति के पहले की कुल संख्या के दसगुना से अधिक। समाचारपत्रों की कुल बिक्री ३ करोड़ ६० लाख प्रतियां थी यानी १९२९ से १९३३ तक इसमें कोई चारगुना वृद्धि हुई थी। १९३२ में सोवियत संघ में बसे लोगों की ८८ भाषाओं में समाचारपत्र छपने लगे थे। "प्राव्दा" की बिक्री १९२८ से १९३२ तक ६,२०,००० से बढ़कर १६,००,००० प्रतियां हो गयी थी।

शिक्षा की यह प्यास तथा देश के राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन

मे भाग लेने की इच्छा केंद्रीय तथा स्थानीय समाचारपत्रो म मजदूर और किसान सवाददाताग्रा के काय म भी प्रतिबिंबित होती थी। लाखो व्यक्तियो न अपने साथी मजदूरा की उपलब्धियो का वणन करन, नौकरशाही का भडाफोड करन, त्रुटियो की आलोचना करने के लिए कलम उठायी और विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किये जिन सब का उद्देश्य लोगा की काय तथा जीवन स्थिति को सुधारना था। यह अकारण ही नही था कि कुलका तथा ग्रय सोवियत-विरोधी तत्वो न इन सवाददाताग्रा के काम का और गावा म क्लवा और सावजनिक वाचनालयो का सगठित करनेवाला का घोर विरोध किया। केवल १९२८ म १११ ऐसे सवाददाताग्रा की हत्या की गयी और ३४६ व्यक्तिया को मारा पीटा गया। प्रमुख सोवियत लखक मक्सिम गोर्की ने लिखा "सोवियत सघ के विशाल क्षेत्र मे एक सिरे से दूसर सिर तक, इसके दूर-दूर के सभी कोना म मजदूर वग के पास—मजदूर और किसान सवाददाताग्रा की बदौलत—उसकी अपनी सतक ग्राखे और ग्रावाज हैं। ग्राज तक किसी देश म पत्रा ने जीवन का ऐसा ब्योरेवार चित्र जिसम छोटी से छोटी तफसील ग्रा गयी हो, प्रस्तुत नही किया जसा इस देश म किया जाता है।" इसमे जरा भी ग्रतिशयोक्ति नही थी। १९३२ म मजदूर और किसान सवाददाताग्रा की सेना मे ३० लाख लोग थे।

यही समय था जब शोलोखाव न अपनी कृति "धीरे बहे दोन रे" स ग्रतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की, जिसमे अक्तूबर क्राति के दौरान वज्जाक किसानो के जीवन और नियति का चित्रण किया गया है। उन्ही दिना निकालाई ग्रोस्त्रोव्स्की न क्रान्ति के समकालीना और उसम भाग लेनेवालो के बारे म अपना जोशीला उपन्यास लिखा। गहयुद्ध के जख्मो के कारण वह बिस्तर स लग चुके थे, और अधे और लगभग बिलकुल लकवा ग्रस्त होकर भी इस लेखक न अपनी पीढी के लोगो की कहानी को सजीव बना दिया, उन लोगा की कहानी जिन्हान पूरी दढता से क्राति की रक्षा की और निस्स्वाथ समाजवाद का निर्माण किया। ग्रास्त्रोव्स्की के उपन्यास का शीपक है "अग्निदीक्षा"। इन शब्दा म सोवियत युवा पीढी के माग का सारतत्व प्रस्तुत कर दिया गया है। इस पुस्तक ने नौजवाना को जीवन निर्माण और सारी कठिनाइया को झेलने का साहस प्रदान किया। वह नय जीवन के निर्माण के लिए, इसके लिए सघप करने की एक जोशीली चुनौती थी और शीघ्र ही वह लाखा करोडो पाठको की प्रिय पात्र बन
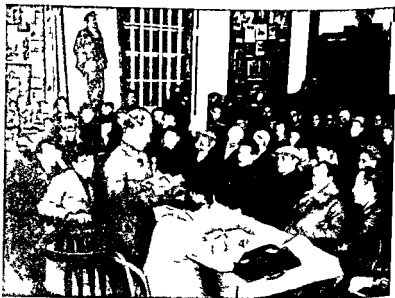
शोलोखाव मास्को की "क्रास्नी बोगातीर" फैक्टरी के मजदूरा को
अपने उपन्यास "धीरे बहे दान रे" का एक अध्याय
पढकर सुना रहे हैं

गयी। उस समय के अन्य जन प्रिय लेखको म थे अलेक्सेई तोलस्तोय, एक भूतपूव काउट जो एक सवश्रेष्ठ सोवियत लेखक बन गये, फदेयेव, एक कम्युनिस्ट जिहान गहयुद्ध मे भाग लिया था, कुशल व्यग्यकार ईल्फ और पेत्राव, और प्रमुख सावियत कवि मयाकोव्स्की।

सोवियत पाठको के हृदय म एक व्यक्ति का विशेप स्थान था और वह थे प्रमुख सवहारा लेखक मक्सिम गोर्की जो १९२८ मे सावियत सघ वापस लौटे। उहाने देश का खूब भ्रमण किया, मजदूरा, सामूहिक किसाना तथा पुराने और नये बुद्धिजीवियो से मिले और बाते की। प्रथम पचवर्षीय याजना की अवधि क दौरान गोर्की न बहुत स लख लिखे जिनम उन्हान समाजवाद के निर्माताआ के पराक्रम की सराहना की और साम्राज्यवादिया द्वारा युद्ध की तयारियो की कलई खोली। इस सामाजिक पक्षधर लेखक के अथक प्रयत्न नय सावियत साहित्य के परिवतनशील

विचारधारात्मक अतय तथा समाजवादी यथार्थवाद के कलात्मक पद्धति के सुदढीकरण के सदभ मे अत्यत महत्वपूण थे।

अगस्त, १६३२ म शौकिया कलाकारो के प्रथम अखिल सघीय ओलिपियड का आयाजन मास्को म किया गया और शौकिया मडलिया न २५ भिन्न भाषाओ मे प्रदशन किये।

उन वर्षो मे देश मे नाट्य कला का विकास भी काफी जोरो पर था। ऐसे ऐसे इलाको मे थियेटर कायम किये गये जहा जाति से पहल एक भी नही था। उदाहरण के लिए मध्य एशिया म १६३३ तक ५० जातीय थियेटर कायम हो गये थे।

सोवियत साहित्य और समग्र रूप म कला ने सोवियत जनगण के जीवन मे महत्वपूण भूमिका अदा की और इससे उन्ह तय माग का स्पष्ट मूल्याकन करने म तथा आशापूण विश्वास के साथ भविष्य का सामना करने म सहायता मिली।

छठा अध्याय

सोवियत संघ के आर्थिक पुनर्गठन का समापन १९३३–१९३७

नयी प्रविधि मे दक्षता प्राप्त करने का अभियान। स्तखानोव आदोलन

देश की अर्थव्यवस्था की अधिकाश शाखाओ म प्रथम पचवर्षीय योजना के निर्धारित ध्येय नियत समय से पहल ही पूरे हो गय थे। जनवरी, १९३३ मे दूसरी पचवर्षीय योजना का प्रारभ हुआ। १९३३–१९३७ की अवधि के लक्ष्य काफी पहले ही तयार कर लिय गय थे और योजना वनानवाला न उद्योगीकरण अभियान शुरू हाने के बाद से श्रमजीविया द्वारा अजित नयी कुशलताओ और ज्ञान का ध्यान म रखा था। नयी योजना का उद्दश्य समाजवादी आधार पर अर्थव्यवस्था के पुननिर्माण को सपन्न करना, उसे नयी मशीनरी से सुसज्जित करना तथा श्रम के शोषण की प्रत्यक सभावना का अत करना था।

अभी बहुत कुछ करना बाकी था जिसकी ओर किसी न किसी कारणवश गत पाच वर्षों के दौरान ध्यान नही दिया जा सका था। दनपर विजलीघर चालू हो गया था, मगर इसका मुख्य उपभोक्ता ज़पोरोजस्ताल इस्पात कारखाना अभी अपने निर्माण की प्रारभिक अवस्थाओ मे था। धातु-उद्योग मे भी कुछ असगतिया देखने को मिलती थी। यद्यपि उसन १९१३ तो क्या १९२८ की तुलना म भी महत्वपूण प्रगति की थी मगर योजना के निर्धारित ध्येय पूर नही हुए थे।

जहा तक खनिज उवरक, विभिन्न प्रकार के रासायनिक पदार्थों तथा हल्के उद्योग का सवध है लक्षित आकडा तथा वास्तविक उत्पादन म भारी अतर था। उद्योगीकरण की तज़ गति स कुछ लागा का सर फिर गया और परिणामत उन्हान वतमान सामर्थ्य का अत्याधिक माका। इसका

नतीजा यह हुआ कि निधि और श्रम शक्ति बेकार खर्च हुई और उद्योग की अन्य अधीन शाखाओं में विभिन्न नियोजित लक्ष्यों को पूरा करना असम्भव हो गया।
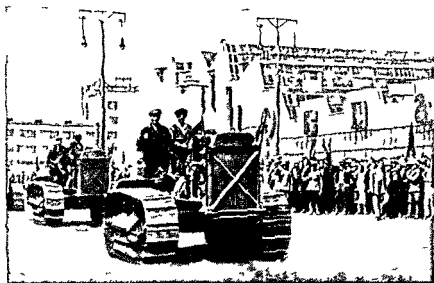
चेल्याबिन्स्क ट्रैक्टर कारखाने की पहली भेंट

नवनिर्मित कारखानों को पूर्णतः चालू करना अत्यंत जटिल कार्य साबित हुआ। प्रारंभ में यह मान लिया गया था कि नियोजित सामर्थ्य जल्द ही प्राप्त हो जायेगा लेकिन थोड़े ही दिनों में यह स्पष्ट हो गया कि कारखानों का निर्माण आसान है मगर कम समय के भीतर नये उपकरणों में दक्षता प्राप्त करना बहुत कठिन है। स्तालिनग्राद में विशालकाय ट्रैक्टर कारखाना नियत समय से पहले ही जून, १९३० में तैयार हो गया था मगर वह १४४ ट्रैक्टर प्रतिदिन की अपनी नियोजित क्षमता तक अप्रैल, १९३२ से पहले नहीं पहुंच सका। इस प्रकार की कठिनाइयों का कारण यही था कि आधुनिक मशीनों तथा कन्वेयर लाइनों का प्रयोग करके व्यापक क्रमबद्ध उत्पादन देश ने अभी अभी शुरू किया था। इस नयी परिस्थिति का सामना करने के लिए लाखों मजदूरों और इंजीनियरों को प्रशिक्षित करना था।

इन हालात मे गत पाच वर्षों का अनुभव वेहद मूल्यवान था। पहले जहा यत्रीकरण को प्राथमिकता दी जाती थी, वहा अब प्राथमिक आवश्यकता नये कारखानो को चलाने के लिए प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की थी। नयी प्रविधि तथा नये प्रकार के उत्पादन मे दक्षता प्राप्त करने का अभियान दूसरी पचवर्षीय योजना का केन्द्रीय प्रश्न वन गया। यही बात पूजीगत निर्माण पर लागू होती थी जिसको और भी व्यापक पमाने पर विकसित होना था।

स्तालिनग्राद ट्रैक्टर कारखाने की तुलना मे खारकाव और चेल्याबिस्क ट्रैक्टर कारखाना को चालू करना अधिक आसान साबित हुआ। मास्को मोटर कारखाने ने भी लगातार अपनी उत्पादन गति म वृद्धि की। उसके कुछ विभागो का अभी निर्माण ही हो रहा था जब हजारो मजदूरो का तक्नीकी स्कूलो मे, विभिन्न उत्पादन तथा व्यवसाय सबधी कार्सों और कारखाने से सबद्ध आटोमोबाइल इजीनियरिंग सस्थान के पत्र व्यवहारवाले विभाग मे प्रशिक्षण हो रहा था। आगे चलकर उपकरणो को नियत समय से पहले चालू करने तथा उसके प्रयोग के सबसे कारगर ढग के लिए विभिन्न जत्थो मे प्रतियोगिता सगठित की गयी। १९३५ तक मोटर कारखाना अपनी योजना से अधिक, प्रतिदिन ११० लारियो का उत्पादन कर रहा था।

विजलीकरण की प्रगति से यह सम्भव हुआ कि प्रति मजदूर उपलब्ध विजली शक्ति अभिसूचक को दोगुने से अधिक बढाया जाये। इसके साथ मजदूरो की अधिक प्रवीणता और उत्पादन के वेहतर सगठन की बदौलत १९३३ और १९३७ के बीच श्रम की उत्पादिता मे ८२ प्रतिशत वृद्धि हुई (योजना म जितनी गुजाइश रखी गयी थी, उससे यह आकडा कही अधिक था)। प्रथम पचवर्षीय योजना म श्रम की उत्पादिता के परिकल्पित आकडे काफी कम थे लेकिन फिर भी उनतक पहुचना सम्भव नही हुआ था। उस समय पैदावार म वृद्धि करने के लिए अधिक मजदूरो को उस काम पर लगा दिया जाता था। विचाराधीन अवधि म नयी कार्यपद्धति म दक्षता प्राप्त करने से अनेक कारखानो, फ़ैक्टरियो और निर्माण स्थलो म मजदूरो की सख्या म कमी करना सम्भव हुआ। निर्माण उद्योग पर यह बात विशेषकर लागू होती थी यद्यपि निर्माण-कार्य का विस्तार हुआ।

मज़दूरो ने नयी प्रविधि का स्वागत किया क्याकि इसका मतलब था काम म सुविधा, वेतन म वद्धि तथा अपनी योग्यता मे वृद्धि करने की सम्भावना। सारे देश मे बडी सख्या म औद्योगिक मज़दूरा की ज़रूरत थी और अर्थव्यवस्था के केन्द्रीकृत नियोजन के कारण यह सम्भव हो सका कि निर्माण उद्योग के भूतपूर्व मज़दूरो की वदली आवश्यक व्यवसाया मे उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर लेन के बाद कारखाना मे कर दी जाय।

चेल्यूस्किन खोजयात्रा के सदस्य मास्को पहुचे

पहले ही की तरह किसान बडी सख्या मे काम की तलाश म शहरा म आते रहे। लेकिन अब उनका समागम राज्य द्वारा नियन्त्रित कर लिया गया था। देहात के लोगो म से औद्योगिक मज़दूरा की भर्ती करने के लिए विशेष सगठन स्थापित कर दिये गये थ।

नयी मशीना और प्रविधि को उपयोग मे लाने तथा उनम दक्षता प्राप्त करने का ज़ोरदार उत्साह सारे देश मे फल गया। १९३३–१९३४ मे उद्योग तथा परिवहन व्यवस्था को उतना ही उपकरण मिला जितना प्रथम पचवर्षीय योजना की पूरी अवधि म मिला था। प्रथम श्रेणी के मज़दूरा की सख्या म भी वृद्धि हुई।

दोनेत्स बेसिन की एक खदान म इजोतोव ने नियमित रूप स अपने काटे की चार गुना अतिपूर्ति की। वह एक पाली म २० टन तक कायला काट लिया करत थे। वह अपने साथी मजदूरा का भी गुर की बात बतात रहते थे। राष्ट्रीय समाचारपत्रा न अग्रणी मजदूरा से उनका अनुसरण करने का आवाहन किया और उद्याग की सभी शाखाग्रा म इस अपील की व्यापक अनुक्रिया हुई। इसी जमाने म सभी योग्य मजदूरा के लिए निश्चित तकनीकी जानकारी की अनिवाय शत लागू की गयी।

१९३३ म पूरे देश न मास्को मे मध्य एशिया के रगिस्तान तक सोवियत निर्मित कारो की यात्रा और वापसी म बडी दिलचस्पी ली। इस घटना के बाद सोवियत समतापमडलीय गुब्बारे द्वारा समतापमडल म अत प्रवेशन मे विश्व रिकाड स्थापित किया गया। १९३२ म एक सोवियत बरफ तोडक जहाज न ग्रखगिल्स्क से ब्लादीवोस्ताक तक उत्तरी महासागर मार्ग एक ही नौगम्य मौसम मे तय किया। इतिहास मे यह पहली बार हुआ था। यह यात्रा स्वेज या पानामा नहर के रास्ते से सामान्य यात्रा की तुलना म दो गुनी कम थी। १९३३ की गमिया म एक और सावियत जहाज "चेल्यूस्किन" एक महत्वपूण ध्रुवीय अभियात्रा पर रवाना हुआ जिसको भीषण दुघटना का शिकार होना पडा। जहाज प्लावी हिमखड से चूर चूर हो गया और सारे नाविका और यात्रिया ने जिनमे महिलाए और बच्चे भी थे, चुकोत्का सागर के बीच हिमखड पर साधनहीन अवस्था मे शरण ली। 'ग्रोतो शिमदत कैम्प" (अभियात्रा के नेता तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक ग्रोतो श्मिदत के नाम पर) के लोगो ने अपने साहस और अनुशासन से सारे ससार को चकित कर दिया। देश के सबसे अच्छे विमान चालक उन्हे बचाने के लिए भेजे गये और जबदस्त कठिनाइया के बावजूद वे अभियात्रा के सभी सदस्या को वापस ले आने म सफल हुए। इस कारनामे के उपलक्ष्य म सोवियत सघ की केन्द्रीय कायकारिणी समिति ने १६ अप्रैल १९३४ को सर्वोच्च सावियत विभूषण—सावियत सघ के वीर की पदवी स्थापित की। ध्रुवीय अभियात्रिया को बचानेवाले विमान चालका को ही सबसे पहले इस पदवी से सम्मानित किया गया।

इन नाविका, विमान चालका तथा ध्रुवीय गवपका का कारनामा सावियत नर-नारिया की वीरता और साहस का ही परिचायक नही था बल्कि इससे उनकी तकनीकी दक्षता तथा प्रवीणता भी उभरकर सामने

आयी जो अब वे देश की सेवा म अर्पित करने के योग्य हो गये थे। जब ये ध्रुवीय गवेषक और निर्भीक विमान चालक आर्कटिक से लौटकर आये तो पूरा मास्को उन वीरा का भव्य स्वागत करने सडको पर उमड पडा।

वतमान मनोभावना की उचित अभिव्यक्ति कम्युनिस्ट पार्टी की १७वी काग्रेस के भाषणा और रिपोर्टों मे हुई जिसका आयोजन १६३४ के प्रारभ मे मास्का म हुआ। २६ जनवरी को, यानं जिस दिन काग्रेस का उदघाटन हुआ, "प्राव्दा" ने "विजेताग्रा की काग्रेस" के शीषक से सपादकीय छापा।

स्तालिन द्वारा केद्रीय समिति की रिपाट पेश किय जाने के बाद काग्रेस के डेलीगेट, २८ लाख सदस्यावाली पार्टी के अग्रदूत, एक-एक करके भाषण करने आते गय। वक्ताग्रा मे प्रतिरक्षा के जन कमिसार वोरोशीलोव भारी उद्योग के जन कमिसार आर्जोनिकीद्ज़े, आपूर्ति के जन कमिसार मिकोयान तथा बहुत पार्टी सगठना के नेता थ। प्रतिनिधिया न क्रूप्स्काया का भाषण ध्यानपूवक सुना जिन्होने बताया कि सास्कृतिक क्रांति के बारे मे लेनिन के विचारा का किस तरह कार्यान्वित किया जा रहा है। दूसरी पचवर्षीय योजना के बार मे राज्य नियाजन आयोग के अध्यक्ष कुइबिशेव द्वारा प्रस्तुत रिपोट पर ओजपूण बहस हुई।

काग्रेस के काम तथा उसके द्वारा पारित प्रस्तावा से इस बात का सबूत मिल रहा था कि पूर सोवियत समाज ने मुख्य सफलताए प्राप्त की है और पार्टी की पक्तिया मे दढ एकजुटता मौजूद है। इन सफलताग्रा और पार्टी की बढती हुई प्रतीष्ठा ने सोवियत सघ के दुश्मना का क्रोधाकुल कर दिया। १ दिसम्बर, १६३४ को एक प्रतिक्रांतिकारी आतकवादी न केद्रीय समिति के एक मत्री, लेनिनग्राद बोल्शेविका के नेता तथा कम्युनिस्ट पार्टी की प्रमुख हस्ती कीरोव की हत्या कर दी। इस हत्या के बाद सोवियत जनगण को समाजवाद के दुश्मना के प्रति अपनी सतकता को और तज करना पडा। गिरफ्तारिया हुईं। गिरफ्तार हानेवाला म पार्टी के भीतर के भूतपूव विरोधी गिराहा के नेता भी थे जिन्हाने सोवियत विरोधी हरकतो मे भाग लिया था। यह विश्वास करना कठिन था कि इनम से कुछ लाग जो किसी समय पार्टी म उच्च पदा पर रह चुके थ सोवियत सत्ता क शत्रु हो गय ह।

इस दौरान म उद्योग तथा कृषि दोना म नयी उपलब्धिया की बदौलत लोगा का मनोबल बढ गया था। १९३५ म सरकार ने औद्योगिक मजदूरा के एक बडे समूह को उनके श्रम के कौशलपूण कार्यों के लिए पदका से विभूषित किया और उनके प्रयत्नो के सम्मानित होने की अनुक्रिया के रूप म अगुआ मजदूरो न पहले से भी अधिक काम की जिम्मेदारी ली। वास्तव मे उस वष अनेक मुख्य सफलताए देखने म आयी। गोर्की ओटोमोबाइल कारखाने के मजदूर श्रम की उत्पादिता के उसी स्तर पर पहुच गये जो अमरीकी मोटर उद्याग द्वारा प्राप्त हो चुका था। मग्नितोगोस्क के मजदूर उस समय तक देश मे सबसे सस्ती धातु पैदा करने लगे थे और उन्हे राज्य की आर्थिक सहायता की जरूरत नही रही थी।

उस साल की एक सनसनी फैलानवाली घटना मास्को म देश की प्रथम भूमिगत रेलवे का उद्घाटन था। उस समय राजधानी की जनसख्या ३० लाख थी और उपलब्ध ट्राम, बस, ट्रालीबस (जो १९३३ म जारी की गयी थी) तथा टैक्सी की सेवाए मुसाफिरो की यातायात की जरूरता को पूरा नही कर पाती थी (शहर मे उस समय तक घोडा गाडिया भी मौजूद थी)।

पूरे देश के मजदूरो ने इस प्रयोजना मे योगदान किया ५०० से अधिक विभिन्न उद्यमा ने इसके लिए उपकरणो का उत्पादन किया। मास्को कोम्सोमोल सगठन ने इसके निर्माण मे सहायता करने के लिए १५ हजार नौजवान स्त्री पुरुष भेजे। जरूरत पडने पर उन्हाने लगातार दो या तीन पालिया म काम किया और अपन तक्नीकी ज्ञान का उपयोग करके तथा प्रयोजना मे काम करनेवाले मजदूरो, इजीनियरो और वनानिको के परस्पर कारगर सहयाग स फायदा उठाकर उन्हाने नियमित रूप से अपने कोटे से अधिक काम पूरा किया। सरकारी उदघाटन समारोह १५ मई, १९३५ को हुआ और प्रथम ट्रेनें रवाना हुइ। यह अवसर सावियत वनानिका और मजदूरा की एक बडी विजय का द्योतक था।

१९३५ म एक और महत्वपूण अवसर देश के पूव म निर्माण काय से सबधित था। सावियत उद्योग को स्वय अपने ताबे की बडी जरूरत थी। उस समय ताबे के नात सग्रह का लगभग ६० प्रतिशत कजाखस्तान मे था। आज जहा काउनरादस्की नगर खडा है वहा एक ताम्र कारखाना

बनाने की योजना तैयार कर ली गयी थी। मगर निकटतम रेलवे स्टेशन वहा से ४८० किलोमीटर की दूरी पर था। ऐसी परिस्थिति मे एक ही उपाय था और वह यह कि ताम्र खदानो तथा रेलवे दोनो का निर्माण एक साथ किया जाये। पहले ५०० पार्टी सदस्यो तथा १ हजार कोम्सोमोल सदस्यो को काय स्थल पर भेजा गया और इससे एक और वीर गाथा का प्रारभ हुआ।

दो इजनो के भाग तथा अनेक प्लैटफाम बल्खश झील के रास्ते काय स्थल तक लाये गये और वहा उन्हे एकत्रित किया गया। रेगिस्तान से उन्हे ले जाने के लिए अस्थायी रेले बिछायी जाती जिन्हे बार बार एक जगह से उखाडा जाता ताकि आगे की लाइन बिछायी जाये। इस तरह एक एक मील करके "चलती रेलवे लाइन" के जरिये मशीने कोउनरादस्की तक लायी गयी। ताम्र खदानो पर काम ने थोडे ही दिनो म जोर पकडा और शीघ्र ही एक तापन प्लाट, कारखाने तथा रिहायशी घरो का निर्माण होने लगा। १९३५ के पतझड तक करागदा-बल्खश रेलवे चालू हो गयी और इसका मतलब यह था कि ताम्र खदानो का रास्ता खुल गया।

आर्थिक विकास की इस तेज गति को कायम रखने के लिए पार्टी ने केवल सफलताओ का ही नही बल्कि उद्योग की त्रुटियो का भी ध्यानपूवक विश्लेषण किया। स्थानीय, नगर तथा प्रादेशिक पार्टी समितियो और केन्द्रीय समिति ने अपनी बैठको म फैक्टरी मैनेजरो, अगुआ मजदूरो, इजीनियरो और वैज्ञानिको को सुना और उनकी रिपोर्टो का ध्यानपूवक अध्ययन किया। सामूहिक विचार विमश से पता चला कि श्रम की उत्पादिता मे और अधिक वद्धि मे बाधा का बडा कारण उत्पादन का खराब सगठन तथा कोटा निर्धारण का पिछडा तरीका था।

यह निश्चय किया गया कि अगुआ मजदूरो द्वारा पूरे किये गये कोटे ही मापदड का काम दे क्योकि इन मजदूरो ने आधुनिक काय पद्धतियो म कुशलता प्राप्त की थी। यह निश्चय बहुत ही उचित साबित हुआ।

१ सितम्बर, १९३५ को स्तखानोव का नाम पहली बार राष्ट्र के अखबारो मे शीषक रूप म छपा। दोनेत्स बेसिन की 'इमिनो-केन्द्रीय" खदान के इस नौजवान कोयला काटनेवाले ने अतर्राष्ट्रीय युवक दिवस के उपलक्ष्य म एक नया रिकाड कायम करने की प्रतिज्ञा की। ३१ अगस्त को

अपनी रात की पाली म उसन १०२ टन कोयला काटा और इस तरह सामान्य कोटे की चौदह गुना अधिपूर्ति की। दानत्स खनक का यह कमाल केवल हाड मास की बात नही थी कुछ दिना स अगुआ खनक कायला काटने के अधिक सस्त उपाया पर काफी सोच विचार कर रहे थे। पहले एक ही आदमी कायला काटता, फिर कटाव खम्बे लगाता और तव दावारा अपना न्यूमेटिक हैम्मर उठाता। स्तखानाव न अधिक सुप्रवाहित श्रम विभाजन लागू करने का निश्चय किया। उनके साथ खम्बा लगानेवाला का एक जत्था भेजा गया और इससे उन्ह उत्पादिता का अभूतपूव शिखर तक पहुचाने का मौका मिल गया। इस रिकाड से दूसरे लोगा का भी भीतरी सम्भावनाओ स काम लेन की प्रेरणा मिली।

कई दिना बाद अखबारा म समाचार छप कि अन्य अगुआ मजदूरो ने भी श्रम की उत्पादिता मे रिकाड कायम किये गोर्की मोटर कारखाने म बुसीगिन ने, लेनिनग्राद के "स्कोरोखोद" जूता कारखाने म स्मेतानिन ने मास्को इजीनियरिग कारखाने म गूदोव ने, विचुगा सूती कारखाने मे यव्दोकीया और मरीया विनोग्रादोवा ने, तथा परिवहन सेवा म क्रिवोनोग ने। बेशक ही ये सारे रिकाड एक रात मे नही कायम हुए, वे ध्यानपूवक अध्ययन और तैयारी का नतीजा थे मगर ये सब रिकाड तोडनेवाले अपने अपने काम म सचमुच निपुण थे जो बहुत दिनो से योजना के ध्येयो की अधिपूर्ति कर रहे थे। इन व्यक्तियो और पूरे के पूरे जत्थो और कारखानो के उत्साह ने शीघ्र ही एक राष्ट्रव्यापी आन्दोलन का रूप धारण कर लिया जिसका उद्देश्य वतमान उत्पादन दर को बदलना तथा श्रम की उत्पादिता मे अत्यधिक वृद्धि करना था।

नवम्बर १९३५ के मध्य मे कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा जन कमिसार परिषद ने स्तखानोव के समथको का एक अखिल सघीय सम्मलन आयोजित किया। मजदूर वग के ३ हज़ार सवश्रेष्ठ प्रतिनिधि चार दिन क्रेमलिन मे मीटिग करते रहे। उन्हाने अपने अपने अनुभव सुनाये, आर्थिक विकास को बढावा देने के उपाय निकाले और यह निश्चय किया कि आगे सबसे महत्वपूण कायभार क्या हैं। क्रेमलिन के इस सम्मेलन ने हर प्रतिनिधि को चाहे वह मजदूर हो या जन कमिसार फक्टरी मेनजर हो या पार्टी कायकर्ता, आर्थिक और राजनीतिक मामला म अधिक ज्ञान देकर समृद्ध किया।

केवल दस बरस पहले स्तखानोव एक कुलक के खेत मजदूर थे और बुसीगिन १९२९ म अपना गाव का घर बेचकर शहर आये थे। ओर्लोव इन दोना से उम्र म बहुत बडे थे। अपन बाप और दादा की ही तरह वह भी क्राति स पहले राज मिस्त्री का काम करते थे। मास्को म उन्होंने पत्थर की अनेक इमारत बनायी थी मगर स्वय उनके लिए लक्डी का झापडा ही था। क्राति के बाद वह अपने पेशे के निपुण उस्ताद माने गये जिनके काम व तरीका को अनेक राज मिस्त्रियो ने अपनाया।

मास्को सम्मेलन के बाद मजदूरा के नये समूह समाजवादी प्रतियागिता म शामिल हुए। एक साल के भीतर हर तीसरा या चौथा मजदूर इसम भाग ले रहा था। जो लाग वकशापा, फक्टरिया तथा निर्माण प्रयोजनाग्रा के काय पालक थे, उन्हाने स्तखानोव आन्दोलन का बढावा देने मे महत्वपूण भूमिका अदा की। वे मजदूरा की दक्षता का स्तर ऊचा करते तथा देश के पूरे आर्थिक विकास के लिए उसके महत्व से भली भाति अवगत थे। ये कोई आश्चय की बात नही थी, क्याकि अधिकाशत उद्योग के प्रबधक्र्ता ऐसे लोग थे जो शुरू म खुद भी मजदूर थ।

उनम से एक कोराबोव थे जो पहले एक धातुकमक मजदूर थे। उनका जन्म १९०२ मे हुआ था और अपन पिता के पदचिह्ना पर चलत हुए उन्होंने भी माकेयेव्का धातुकमक कारखाने म लडकपन मे ही काम करना शुरू कर दिया था। क्राति की बदौलत उनको और उनके भाइयो को उच्च शिक्षा मिली। कोरोबाव इजीनियर हुए और आखिरकार धातुकमक उद्यमा के मग्नितोगास्क समूह के निदेशक नियुक्त किये गये।

इसी तरह का रास्ता तय किया था आत्स ने जो लेनिनग्राद मे कीराव इजीनियरिग कारखान के निदेशक थे, लिखाचाव ने जो मास्को मोटर कारखाने के निदेशक थे, ग्रानोव्स्की ने जो बेरेज्नीकी रासायनिक खाद फैक्टरी के निदेशक थे और फ्राकफुत न जा कुज्नेत्स्क मे नय औद्योगिक केन्द्र के निर्माण की देखरेख कर रहे थे। इनम सभी स्नातक इजीनियर नही थे लेकिन व सभी बहुत अनुभवी और कुशल सगठनकर्ता थे जिनम जबदस्त इच्छा शक्ति और मुस्तदी थी। उनम उन गुणा का बहुत उपयुक्त समावेश हुआ था जो उद्योग तथा पार्टी काय दोना के नताग्रा के

खान मजदूर स्तखानोव
श्रौर उनके मज़दूर साथी।
दोनेत्स बेसिन। १९३५

लिए जरूरी है श्रौर इसी बात ने उनको अपने साथियो मे प्रमुख बना दिया।

१९३३ श्रौर १९३७ के बीच ४,५०० बडे उद्यम चालू किये गये। यह प्रथम पचवर्षीय योजना की कुल सख्या के तीन गुना से भी अधिक था। उसी अवधि मे श्रौद्योगिक पैदावार दोगुनी हो गयी। पहले ही की तरह सबसे अधिक तेजी से विकास भारी उद्योग का हुआ श्रौर १९३७ तक अर्थतत्र की सभी मुख्य शाखाओ का तक्नीकी पुनर्निर्माण बडी हद तक पूरा हो चुका था। परिणाम विशेष रूप से असाधारण उन जनतत्रो श्रौर क्षेत्रो मे हुए जहा ग़ैर रूसी जातिया के लोग रहते थे। क्राति के बाद जो बीस बरस गुजरे थे उनमे उक्रइना ने अपने उद्योग को सात गुना

विस्तार कर लिया था और १९३७ म इसकी पैदावार उतनी ही थी जितनी १९१७ मे पूरे जारशाही रूस की थी। कजाखस्तान और मध्य एशिया म उद्योग के विकास के साथ स्थानीय मजदूर वग का विकास हो रहा था। १९३७ मे पूरे देश म उद्योग मे काम करनेवालो की सख्या १ करोड से अधिक थी और मध्य एशिया म १९३२ और १९३७ के बीच उद्योग मे काम करनेवाले लोगो की सख्या मे ६० प्रतिशत वृद्धि हुई याने पुराने औद्योगिक केन्द्रो और उक्रइना की तीन गुना वृद्धि।

विभिन्न गैर रूसी जनतन्त्रो म औद्योगिक विकास के स्तर तेजी स समतल होते जा रहे थे। कजाखस्तान थोडे ही दिनो मे कोयले, तेल तथा अलौह धातुओ का एक मुख्य केन्द्र बन गया। कोयला खनन ने किर्गिजस्तान का चेहरा बदल दिया। सोवियत उज्बेकिस्तान कृषि मशीनें, रेशमी और सूती कपडा और कपास पैदा करने लगा। तुर्कमानिस्तान मे तेलकूप और रासायनिक कारखाने बनाये गये, ताजिकिस्तान म औद्योगिक उद्यम बडी तेजी से फल रहे थे और हर जनतन्त्र म, हर प्रदेश मे इसी प्रकार का विकास देखने को मिलता था।

प्रथम पचवर्षीय योजना की तुलना म १९३३–१९३७ की अवधि म उपभोग सामान के उद्योग के विकास के लिए अधिक धन और प्रयत्न लगाया गया। उदाहरण के लिए जाजिया म चाय, डिब्बाबन्दी, शराब और जूते के उद्योग को प्रधानता दी गयी। मध्य एशिया विभिन्न प्रकार के कपडा तथा खाद्य पदार्थों का उत्पादन करने लगा।

१९३७ म कुल औद्योगिक पैदावार का ८० प्रतिशत नये या पूणत पुनर्निर्मित कारखानो म पैदा होता था। उत्पादक शक्तियो का महत्वपूण स्थानातरण देश के पूर्वी भाग की ओर हुआ। कुज्नेत्स्क कोयला बेसिन और कारागन्दा कोयला बेसिन का आर्थिक महत्व बढता गया। वोल्गा और उराल के बीच के इलाके मे तेल का पता लगा और वहा एक तल उत्पादन केन्द्र विकसित हुआ। उराल, साइबेरिया तथा सुदूर पूव की औद्योगिक शक्ति प्रभावी रफ्तार से बढी।

अतर्राष्ट्रीय स्थिति के दिनोदिन बिगडते जाने, जमनी म फासिज्म का उत्थान तथा जापान की आक्रामक आकाक्षाओ के बढने के कारण सोवियत सघ के लिए अपनी प्रतिरक्षा पर अधिक खच करना जरूरी हो गया। इसका मतलब यह था कि हल्के उद्योग म कम धन लगाया जा सकता

पापानिन खोज दल के सदस्य। १९३६

था और इससे योजना के ध्येयो की पूर्ति पर असर पडा। शुरू मे सोचा गया था कि दूसरी पचवर्षीय योजना के अतर्गत हल्के उद्योग का विकास भारी उद्योग से अधिक तेजी से होगा। मगर यह नही होनेवाला था। इस बीच लाल सेना को पुन सुसज्जित करने का काम तेज कर दिया गया। १९३६ मे देश के सिनेमा घरो मे एक वृत्त चित्र "कीयेव की लडाई" दिखाया गया जिसने उस साल उक्रइना तथा बेलारूस मे ताजा सोवियत युद्धाभ्यास को चित्रपट पर पेश किया। इन युद्धाभ्यासो को देखनेवालो मे विदेशी राजनयिक और सवाददाता भी थे जिन्हे इस प्रकार अपनी आखो से सोवियत कवचित सैनिक दस्तो की उच्च गतिशीलता

तथा छतरी सेना की कार्यशीलता को देखने का अवसर मिला। दोनों चीजें देखकर पश्चिमी दर्शकों को आश्चर्य हुआ।

१९३७ में सोवियत विमान चालकों तथा सम्पूर्ण सोवियत वैमानिकी ने संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था जब उस साल २१ मई को वोदोप्यानोव की कमान में सोवियत विमान ने उत्तर ध्रुवीय क्षेत्र में हिमखण्ड पर उतरकर एक पूरे वैज्ञानिक खोज दल को वहां पहुंचा दिया। पापानिन के नेतृत्व में चार व्यक्तियों के इस खोज दल ने बहते हुए हिमखण्ड पर २७४ दिन गुजारे। जून में उत्तरी ध्रुव के रास्ते मास्को से न्यूयार्क की पहली लगातार उड़ान हुई। तूपोलेव के डिज़ाइन किये हुए विमान पर च्कालोव के कर्मी दल ने ८,५०८ किलोमीटर की उड़ान ६३ घंटे १६ मिनट में तय की। एक महीने के बाद ग्रोमोव के नेतृत्व में एक और कर्मी दल ने भी यही उड़ान की। इन विश्व रिकार्डों ने सारे संसार को प्रभावित किया और दुनिया में चारों ओर पत्र-पत्रिकाएं इन वीरों के छायाचित्रों से भरे पड़े थे। विमान तथा उनके डिज़ाइनकारों की भी बड़ी प्रशंसा की गयी।

यह कहने की जरूरत नहीं कि ये सफलताएं समाजवादी उद्योगीकरण की उपलब्धियां तथा मजदूर वर्ग के त्यागपूर्ण प्रयासों की बदौलत ही सम्भव हो सकीं।

१९३७ में सोवियत संघ यूरोप की प्रमुख औद्योगिक शक्ति बन चुका था और संसार में उसका स्थान दूसरा था। ये सब कुछ संचिति के अंदरूनी साधनों का उपयोग करके तथा देशी उत्पादन को विकसित करके हासिल किया गया था। आयात मालों से भी सहायता मिली खासकर १९२९ और १९३३ के बीच जब १९१७ और १९३७ के बीच आयात के लिए निर्धारित कुल धन का ४० प्रतिशत इन पांच वर्षों में विदेशी मशीनरी और कच्चा माल खरीदने पर खर्च किया गया। लेकिन प्रथम पंचवर्षीय योजना की अवधि में भी विदेशों में खरीदा हुआ माल देश के उपभोग के ३–३ ५ प्रतिशत से अधिक नहीं था और बाद के पांच वर्षों में यह आंकड़ा कम होकर १ और ० ७ प्रतिशत के बीच पहुंच गया था। १९३७ तक सोवियत संघ ने साबित कर दिया था कि वह तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से एक स्वावलम्बी शक्ति है।

दूसरी पचवर्षीय योजना के प्रारम्भ तक सामूहिक कृषि व्यवहारत सोवियत सघ म स्थापित हो चुकी थी। अधिकाश किसान स्वच्छापूर्वक सामूहिक फार्मो मे शामिल हो चुके थे। काश्त की लगभग ८० प्रतिशत जमीन पर राजकीय तथा सामूहिक फार्मों द्वारा खेती की जाती थी। लेकिन इस समय के कुछ बाद ही ये नये फाम सचमुच लाभदायक बनने की तथा अपनी करीबन असीम क्षमता से पूरी तरह काम लेने की आशा कर सकते थे। चौथे दशक के प्रारम्भ म कृषि उत्पादन मे वृद्धि होने के बजाय कुछ कमी ही हो गई। इसपर सोवियत सघ के दुश्मनो ने बडी कटु और व्यग्यात्मक आलोचनाए की। बोल्शेविको के विरुद्ध आरोपा का कोई अत नही था। समाजवाद के अनेक विरोधी आज भी उस दौर की कठिनाइया तथा अतविरोधा की चर्चा बहुत आनन्द लेकर करते हैं। मगर शात चित्त तथा वस्तुनिष्ठा के भाव से यह जानने के लिए कि वास्तव मे हुआ क्या था, इतिहास के प्रति बहुत भिन्न दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।

उन दिनो अधिकाश फाम छोटे और आर्थिक दृष्टि से कमजोर थे। औसतन हर एक मे ७१ किसान परिवारा के चक शामिल थे, सामूहिक बोवाई की १,०७० एकड जमीन, १३ गाए, १५ सूअर आदि थे। इन फार्मों पर जो काम होता था उसका केवल पाच मे एक भाग फाम मशीना द्वारा किया जाता था, अन्यथा सब कुछ हाथ से या पशुआ की सहायता से किया जाता।

पार्टी इन समस्याओ क स्वरूप से जो कृषि के समाजवादी पुनगठन के कारण पैदा हो रही थी, भली भाति अवगत थी और जानती थी कि यह परिघटना अस्थायी है। बडे पैमाने की सामूहिक खेती के निर्णायक फायदा म, राजकीय और सामूहिक फार्मों के उज्ज्वल भविष्य म उसका विश्वास एक क्षण के लिए भी कम नही हुआ। जनवरी, १९३३ मे केन्द्रीय समिति के एक पूर्णाधिवेशन न बताया कि "यह आशा करना हास्यास्पद होगा कि य सभी अनेक नयी कृषि इकाइया जो ग्रामीण क्षेत्रा म स्थापित की गई थी जहा निरक्षरता तथा पिछडी हुई विधिया का जोर था, यकायक, एक साल के अर्से म आदश, अत्यत लाभदायक उद्यम बन जायेंगी। यह जाहिर है कि सामूहिक और राजकीय फार्मों का सगठनात्मक

रूप से पुष्ट करने, अपकारी तत्वों को निकाल बाहर करने तथा परीक्षित बोल्शेविक मेनेजरों को सावधानी से चुनने और परिशिक्षित करने के लिए ताकि राजकीय और सामूहिक फार्मों को वास्तव में आदर्श उद्यम बनाया जा सके, समय की और दृढ, धैर्यपूर्वक उद्यमशील काम करने की ज़रूरत है।"

शीघ्र ही सामूहिक फार्मों को सुदृढ करने तथा उनके यन्त्रीकरण को तेज़ करने के लिए एक व्यापक अभियान शुरू किया गया। १९३३ के प्रारम्भ में राज्य ने कृषि की पैदावार के भुगतान के नये नियम जारी किये जिनके अनुसार प्रत्येक सामूहिक फार्म को अपनी उपज की एक निश्चित मात्रा नियत दाम पर सरकार को देनी थी। यह एक प्रकार का कर था। यह कोटा दे देने के बाद सामूहिक किसानों को आज़ादी थी कि बाकी उपज आपस में बांट लें। राज्य तथा फार्मों के बीच इस संबध का मतलब यह था कि किसानों को अपने सामूहिक फार्मों की पैदावार बढाने के लिए अधिक भौतिक प्रोत्साहन मिला।

इसी के साथ केन्द्रीय समिति ने मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों में तथा राजकीय फार्मों में विशेष पार्टी संस्थाएं स्थापित कीं जिन्हें राजनीतिक विभाग कहा जाता था और जिनके नेता सीधे केन्द्रीय समिति द्वारा नियुक्त किये जाते थे। ये वास्तव में पार्टी द्वारा आपातकालीन कारवाइयां थीं जिनका उद्देश्य कृषि विकास पर पार्टी की देखरेख को पुष्ट करना था। इन पदों पर पार्टी के कुछ सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि भेजे गये। उनमें से लगभग आधे उच्च शिक्षा प्राप्त थे और कोई दस बरस से पार्टी का काम कर रहे थे। इस नये रक्त के प्रवाह का असर ग्रामीण क्षेत्रों में शीघ्र ही नज़र आने लगा। १९३३ के प्रारम्भ में सामूहिक फार्मों के अग्रणी कमियों की प्रथम अखिल संघीय कांग्रेस मास्को में आयोजित हुई। अगुआ किसानों ने पार्टी द्वारा सामूहिक कृषि को पुष्ट करने के लिए की गई कारवाई की सराहना की। इस कांग्रेस द्वारा पारित प्रस्ताव में कहा गया था "हम व्यवहार में देख चुके हैं कि सोवियत सत्ता और बोल्शेविक पार्टी से हमें कितना लाभ होता है। यह हमारी अपनी सत्ता है। यह हमारी अपनी पार्टी है। ये हमारे अपने हाड मांस के टुकडे हैं और उनके लिए हम कभी भी और किसी भी शत्रु के खिलाफ अंतिम विजय तक लडने को तैयार हैं।"

राजनीतिक विभागों के कमियों ने राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय किसानों की सहायता से राजनीतिक तथा आर्थिक कार्य के ढांचे को तेज़ी से और

मूलत पुनगठित किया। प्रवधकर्ताग्रा को चुनने ग्रौर प्रशिक्षित करन पर विशेष जोर दिया गया। प्रवध कार्या पर २ ५ लाख से ग्रधिक अगुग्रा सामूहिक किसान नियुक्त किये गये। उस समय ग्रामीण पार्टी इकाइयो की सख्या बहुत बढ गई। १९३० की गमिया मे सामूहिक किसाना म पार्टी सदस्यो की कुल सख्या ८ लाख से कुछ ही ग्रधिक थी, मगर १९३८ के ग्रत तक यह सख्या करीवन दोगुनी होकर ७,९०,००० तक पहुच गई थी।

सामूहिक फार्मों मे प्रवध तथा साधारण कायर्कर्ताग्रा मे व्यापक हेरफर तथा राजनीतिक तौर पर सक्रिय सदस्यो की सख्या म काफी वडी वृद्धि का लाभदायक प्रभाव सामूहिक तथा राजकीय फार्मों ग्रौर मशीन-ट्रक्टर स्टेशना के सागठनिक पुष्टीकरण तथा उनके काम की गुणावस्था पर पडा। थोडे ही समय के भीतर यह सम्भव हो गया कि गावो को शेष सोवियत विरोधी तत्वो से, जो वरावर तोडफाड की हरकत किये जात थे, मुक्त कर दिया जाये। पूण रूप से यह काम जिसका उद्देश्य कृषि उत्पादिता का वढाना था, वडी हद तक सफल हुग्रा जैसा कि निम्नलिखित ग्राकडा स जाहिर होता है।

१९३४ म भूतपूव व्यक्तिगत किसानो के ७१ प्रतिशत से ग्रधिक चक सामूहिक फार्मों मे शामिल कर लिये गय थे जा देश की कुल जोत की जमीन के ८७ प्रतिशत पर खेती करते थे। पशुग्रा की सख्या म काफी वडी वद्धि हुई ग्रौर कृपि की पूण व्यवस्था म २,६१,००० ट्रक्टर, ३३,००० कम्वाइन हार्वेस्टर ग्रौर ३४,००० लारिया थी। नयी मशीना से काम लेन के लिए जरूरी था कि तकनीकी पाठ्यक्रम जारी किये जायें ग्रौर ट्रैक्टर चलान का प्रशिक्षण पूरे देश म हजारो ग्रादमियो का दिया जाय जिनमे सामूहिक फार्मों के ग्रध्यक्ष, मशीन-ट्रक्टर स्टेशना के निदेशक तथा जिला ग्रौर प्रादेशिक पार्टी समितिया के मत्री भी शामिल हा। उन दिना ग्रगेलिना की ख्याति घर घर पहुच गई उन्होने सोवियत सघ म नारी ट्रक्टर चालका का पहला जत्था सगठित किया। जब ग्रगेलिना ने पहल पहल ट्रैक्टर चलाना शुरू किया तो बहुत स लोगा ने नारिया द्वारा इस तरह का काम करन पर ग्रापत्ति की। ग्रगेलिना तथा उनकी साथी नारी ट्रैक्टर चालका का केवल वुरा भला सुनना नही पडा। उनपर हमल भा किय गये। लकिन नय समाज की प्रगतिशील ग्राचार विधि की जीत हुइ ग्रौर

शीघ्र ही हजारा औरता न अगेलिना की मिसाल पर अमल किया और पूणत प्रशिक्षित ट्रक्टर चालक बन गइ जा स्वीकृत कोटे स भी अधिक काम कर सकती थी।

श्रम अनुशासन म भी सुधार हुआ। १६३८ म प्रत्येक समथाग सामूहिक किसान न औसतन १६६ काय दिवस इकाई काम किया था जा १६३२ के औसत स ४८ इकाइया अधिक था, और इनम से प्रत्यक काय दिवस इकाई का मतलब था करीबन तीन किलो अनाज। अगुआ आर्टेल प्रति काय दिवस इकाई म १२-२६ किलो अनाज, आलू और नकद धन भी दिया करत थे।

लेकिन कुछ अनुत्पादक आर्टेल भी थे जिनकी आमदनी कम थी। उनका हाना ही इस बात का सबूत था कि बहुतर सामूहिक फार्मों की सामूहिक अथव्यवस्था अभी काफी विकसित नहीं थी। यहा सामूहिक किसान बडी हद तक अपन निजी जमीन क टुकडे पर निभर करत थे जिनम वे आलू, सब्जी-तरकारी तथा सूरजमुखी उपजात थ। इनमे वे अपन परिवार का पट पालते और उपज का एक अश बेचते भी थे। यह बात ध्यान म रखनी चाहिए कि इन प्लाटा पर कर अपक्षाकृत कम था।

प्रारम्भ की विभिन्न कठिनाइया के बावजूद सामूहिक फाम व्यवस्था ने शीघ्र ही जड पकड ली और इसका फल मिलने लगा। १६३४ मे राज्य का अनाज का भुगतान १६३२ की तुलना म तीन महीने पहले ही पूरा हो गया था। अब आपातकालीन कारवाइया का सहारा लेने की कोई जरूरत नही रही। राजनीतिक विभागा की भी जरूरत नही रही थी। मशीन-ट्रैक्टर स्टेशना म उन्ह विगठित कर दिया गया और केवल राजकीय फार्मों पर वे परिवर्तित रूप म १६४० तक रह गये। १६३३-१६३४ म राज्य का अनाज का भुगतान १६३२ से कही अधिक हुआ और इसका ६२ प्रतिशत सामूहिक तथा राजकीय फार्मों से मिला था। सोवियत कृषि की बढती हुई क्षमता का सबसे प्रभावी सबूत यह था कि रोटी तथा विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों पर १६२८ म जो राशन लागू किया गया था, जब अनाज का मुख्य स्रोत व्यक्तिगत किसानो के खेत थे, उसे अब उठा दिया गया। नयी आर्थिक व्यवस्था शहरी और ग्रामीण क्षेत्रा म माल सचलन के विस्तार के अनुकूल थी।

फरवरी, १९३५ में सामूहिक फाम के अग्रणी कमियो की दूसरी अखिल सघीय काग्रेस मास्को म आयोजित हुई। सारे देश के प्रतिनिधि आये। वे ५१ जातियो के प्रतिनिधि थे और उनमे कोई एक तिहाई महिलाए थी। इन आकडा से सामूहिक कृषि की प्रगति स्पष्ट थी, जो अब पूरे देश मे, उसकी तमाम जातियो तथा उपजातीय अल्पसख्यको म फैल गयी थी। काग्रेस ने सामूहिक फार्मों के नये नियम स्वीकार किये जिनमे यह पैरा भी था "श्रमजीवी किसानो के लिए एकमात्र सही रास्ता समूहीकरण और समाजवाद का रास्ता है। आर्टेलो के सदस्य स्वय यह जिम्मेदारी लेते हैं कि वे आर्टेल को सुदृढ बनायेंगे, ईमानदारी से काम करेंगे, श्रम के हिसाब से सामूहिक आय का वितरण करेंगे, सामूहिक सपत्ति की रक्षा करगे, अपने फाम के उपकरणो, इमारतो, ट्रक्टरो, मशीनो और घोडो की पूरी देखभाल करेंगे तथा मजदूरो और किसानो के राज्य द्वारा निर्धारित कायभार को पूरा करगे, इस तरह अपने सामूहिक फाम को सचमुच एक बोल्शेविक उद्यम बनायेंगे और उन सभी लोगो की समृद्धि को सुनिश्चित करेंगे जो उसपर काम करते हैं।"

१९३५ की गर्मियो मे जन कमिसार परिषद ने "कृषिक आर्टेलो को भूमि के स्थायी उपयोग का सरकारी पट्टा प्रदान करने के सबध म" एक निणय लिया और इसके शीघ्र बाद ही ये पट्टे जारी कर दिये गये। यह एक महत्त्वपूर्ण अवसर था जिसके लिए सबधित सामूहिक फाम के सभी सदस्य एकत्रित हुआ करते थे। १९३७ तक सभी सामूहिक फार्मों को इस तरह के पट्टे मिल गये थे। करीबन ९२ करोड एकड जमीन सामूहिक फार्मों को निशुल्क उनके अविच्छिन्न इस्तेमाल के लिए दे दी गई और यह इलाका उस जमीन से जिसपर श्रमजीवी किसान १९१७ के पहले खेती करते थे, ढाई गुना अधिक था।

पूरे देश म किसानो के जीवन म बुनियादी परिवतन हो गया था। आकडो की मुख्य भाषा से विदित था कि किसानो द्वारा अडे, दूध और मास और चर्बी दानो के सम्मिलित उपभोग म क्रातिपूर्व के काल की तुलना म क्रमश ३०० प्रतिशत, ८०तथा ७० प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। चीनी जो क्राति से पहले एक दुलभ वस्तु थी, अब किसानो के घरो की मेज पर साधारणत नजर आने लगी थी। निर्मित सामानो यानी जूते, कपडे और साबुन का किसानो द्वारा उपभोग कई गुना बढ़ गया। बाइसिकिल,

मोटर-साइकिल, घडी, रेडियो, ग्रामोफोन और कैमरे की माग देहाती आबादी मे थोडे ही दिना म बहुत बढ गई।

यह प्रगति सोवियत किसानो के त्यागपूर्ण काम का नतीजा थी। समाजवादी प्रतियोगिता जो औद्योगिक केंद्रो मे मजदूर जीवन का एक परिचित पहलू थी, कृषि मे भी जोरो से फैल गई। उक्रइनी सामूहिक किसान नारी देमचेको ने चुकन्दर की रिकाड फसल – २० टन प्रति एकड – उपजायी। उज्बेकिस्तान मे यूनुसोव एक सामूहिक फाम के पहले किसान थे जिन्हाने दो टन प्रति एकड कपास की फसल उपजायी। एक साइबेरियाई अनाज उत्पादक येफ्रेमोव ने १५ टन प्रति एकड अन्न पैदा किया। इन पथ प्रदशको ने अपनी मिसाल से लाखा को प्रेरित किया। आज तक नारी ट्रैक्टर चालक अगेलिना, कम्बाइन हार्वेस्टर चालक बोरिन तथा उन वर्षों के समाजवादी प्रतियोगिता अभियान के अन्य प्रमुख विजेताग्रा के नाम सम्मान के साथ लिये जाते है क्योकि उनकी मिसाल ने सभी सामूहिक किसानो को बता दिया कि सामूहिक खेती म कितनी सम्भावनाए और लाभ निहित ह। इन पथ प्रदशको का अनुसरण करने के प्रयास म सोवियत ग्रामीण जनगण ने कृषि मे समाजवाद की निश्चित विजय को सफल बनाया।

सास्कृतिक क्राति की महान प्रगति

चौथे दशक म ज्या ज्यो उद्योगीकरण ने प्रगति की और कृषि की सामूहिक फाम व्यवस्था का सुदृढीकरण हुआ, लोगो ने शिक्षा तथा कला के क्षेत्र म भी विजय प्राप्त की जो कम महत्वपूण नही थी।

यह कोई छिपी हुई बात नही कि १९१७ म समाजवादियो मे भी बहुता को यकीन था कि रूस मे सवहारा क्राति विफल होगी अगर किसी और कारण नही तो इसलिए कि श्रमजीविया म अधिकाश अनपढ थे। शिशिर प्रासाद पर धावा बोलने से चन्द दिन पहले एक प्रतिक्रियावादी पत्र न लिखा था "अगर हम थोडी देर के लिए मान ले कि बोल्शविक हमे परास्त कर देंगे, तो हम पर शासन कौन करेगा? शायद बावर्ची, ये कबाब और पुलाव के विशेषज्ञ, या साइस ग्रार कायला झाकनेवाले? या शायद आयाए बच्चा का कपडा धोते धाते राज्य परिपद की बैठका म पहुच

जाया करेगी ? नये राजनयिक कहा से आयेंगे ? शायद लोहार थियेटर चलायेंगे, नल बनानेवाले कूटनीति करगे और बढई डाकतार सेवा का काम करेगे ? क्या ऐसी हालत हो जायेगी ? क्या यह स्थिति सम्भव है? इस पागलपन के सवाल का जवाब इतिहास बाल्शेविका को देगा।"

कम्युनिस्ट पार्टी खूब जानती थी कि अनपढ नर नारिया देश के राजनीतिक जीवन मे सक्रिय भाग नही ले सक्ते और न समाजवाद के सचेत निर्माता हो सकते है। लेकिन कम्युनिस्टा को विश्वास था कि अपने पुराने शोषको स अपने को मुक्त कर लेने के बाद किसानो और मजदूरा का व्यापक जन समूह अपने पिछडेपन को दूर कर लेगा और यह कि पुराने बुद्धिजीविया के सभी प्रगतिशील हिस्से उनकी तरफ आ जायेंगे।

अक्तूबर, १९१७ ने देश के राजनीतिक और आर्थिक जीवन मे ही नही बल्कि इसके सास्कृतिक विकास म भी विभाजक रेखा का काम किया जिसके साथ ऐसी गहरी और व्यापक तब्दीलिया आयी जो वास्तव मे एक सास्कृतिक क्राति थी।

लेनिन के नजदीक इस सास्कृतिक क्राति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्र की सस्कृति को बदलकर एक ऐसी चीज बना देना था जो सचमुच, उस शब्द के व्यापकतम अथ मे लोक सस्कृति हो। इस ध्येय के लिए सबसे पहले यह जरूरी था कि देश के सास्कृतिक खजानो को, कलात्मक तथा वैज्ञानिक उपलब्धिया को एक छोटे से विशेष सुविधा प्राप्त गुट क बजाय पूरे जनगण के लिए सुलभ बनाया जाये, और तब श्रमजीवी जनता के सास्कृतिक स्तर का ऊचा उठाना और उह बेहतर शिक्षा प्रदान करना था ताकि लोगा की योग्यताआ को विकसित होने का अवसर मिले।

इसी लिए लेनिन राज्य के शैक्षणिक और सास्कृतिक काम को निर्णायक महत्व की चीज मानते थे। चौथे दशक के अत तक क्राति के नेता द्वारा निर्धारित, विश्व के प्रथम सवहारा राज्य की सास्कृतिक उन्नति के मुख्य कायभार पूरे हो चुके थे।

चौथे दशक क प्रारम्भ तक शैक्षणिक तथा सास्कृतिक सस्थाआ के कायकर्ताआ का शहर और गावा म केन्द्र तथा जातीय छोरवर्ती इलाक़ा, दाना म, निरक्षरता निवारण का काफी अनुभव प्राप्त हो चुका था।

इस प्रसग म कबार्दा-बल्कार स्वायत्त सावियत समाजवादी जनतत्र म एक दिलचस्प प्रयाजना पर अमल किया गया। उत्तरी काकेशिया क उस इलाक़े म

सध्या पाठशालाओं का पाठयक्रम पूरा करने के बाद उच्च शिक्षा से लाभान्वित होने की ओर कदम बढाया।

लेकिन इस प्रसग मे "नया जीवन" आरम्भ करना पुरानी पीढीवालों के लिए ज्यादा कठिन था। अर्द्धआनोव ने जब अपने जत्थे के अन्य सदस्यों के साथ पढना लिखना सीखना शुरू किया तो उस समय वे ४३ वर्ष के हो चुके थे। कानून के अनुसार वे सब लोग जो इस पाठ्यक्रम म शरीक थे, अपने काय दिवस मे दो घटा कम कर सकते थे, मगर अट्आनाव का जत्था अकसर स्वेच्छापूवक डटा रहता और अधिक समय काम करता। और थके मादे होने के बावजूद वे पढाई की कक्षा मे जाते और किताबें लेकर पढाई शुरू करते।

फिलीपोव पुरानी बाते याद करके कहते हैं "मैं दूसरे मजदूरा को अखबारो मे मग्न, शब्दो को दोहराते देखा करता और मुझे ईर्षा होती। मुझे पढने का तनिक भी ज्ञान नही था और मुझे यकीन था कि सभी पुस्तको मे अवश्य बहुत दिलचस्प बाते लिखी होगी

"मैं चालीस के लगभग हो चला था जब मैंने अक्षर ज्ञान प्राप्त करना शुरू किया। पहले पहल पेंसिल चलाना जमीन पर कुदाल चलाने से अधिक कठिन मालूम होता था। पढना लिखना सीखने मे मुझे कितनी बार गपती आस्तीन से माथे का पसीना पोछना पडा यद्यपि अपने काम को पूरी पाली के बाद भी मेरी कमीज कभी पसीने से भीगी नही था। परन्तु अत मे मैं सफल हुआ। मगर इसके लिए मुझे अक्सर अपनी नीद त्यागनी पडी। लेकिन जब पहली बार मैंने समाचारपत्र के शब्दा को अक्षर अक्षर करके पढा तो मानो मेरा दूसरा जन्म हो रहा था। मुझे ऐसा लगा मानो मेरी आखो के सामने से पर्दा हट गया हो। मेरा ख्याल है आजकल छात्रो को अपनी स्नातक की उपाधि मिलने पर भी उतना हर्ष नहीं होता जितना मुझे यह जान कर हुआ था कि अब मैं पढ सकता हू।"

निरक्षरता निवारण का अभियान चौथे दशक मे अपने शिखर पर पहुच गया। जहा पहली पचवर्षीय योजना की अवधि म देश मे चारो ओर नये निर्माण स्थलो के मचान दिखाई दिया करते थे वहा अब लोग कहा करते कि सारा देश किताबो मे चिपका हुआ है। और इसम कोई अतिशयोक्ति नही थी। हर आयु के लोग किसी न किसी प्रकार की पढाई म लगे हुए थे।

आर्थिक क्षेत्र मे सफलता के कारण यह सम्भव हुआ कि स्कूलो की इमारतो, शिक्षको के प्रशिक्षण तथा शिक्षण व्यवस्था के आम सुधार पर अधिकाधिक निधि लगाई जा सके। उस समय तक युवको के अलावा पुरानी पीढी के अधिकाश लोगो ने भी पढना लिखना सीख लिया था। इसका श्रेय केवल लिकबेज (निरक्षरता निवारण) अभियान तथा विभिन्न अध्ययन मडलो और फैक्टरियो मे सगठित सामान्य विषयो के कोर्सो का ही नही वल्कि पूरी आर्थिक व्यवस्था को था जो मेहनतकशो से उच्चतर कुशलता तथा बेहतर शिक्षा की माग कर रही थी और जो इन दोनो को प्राप्त करने के लिए आवश्यक सुविधाए भी मुहैया कर रही थी।

एक अतिथि इटालियन प्राध्यापक ने द्नेपर विजलीघर के निर्माण मे काम करनेवाले एक निर्माण अधिकारी से पूछा कि उनके तहत काम करनेवाले मजदूरो मे कितने लोग किसी न किसी प्रकार का पाठ्यक्रम पढ रहे थे।

"दस हजार।" जवाब मिला।

"और आपके तहत मजदूर कितने है?"

"दस हजार।"

"तो काम कौन करता है?"

'वही लोग जो पढते हैं।"

१६३६ की जनगणना से पता चला कि आबादी मे नौ वरस से ऊपरवालो मे साक्षरता का प्रतिशत जो १८६७ मे २४ और १६२६ मे ५१ था, अब ८१ तक पहुच गया था। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध (१६४१–१६४५) के प्रारम्भ म लिकबेज की धारणा ही इतिहास की चीज बन गई थी।

सास्कृतिक रगभूमि मे परिवतन जातीय छोरवर्ती इलाको मे खासकर सुस्पष्ट था।

१६३० मे दस वर्षीय यादगार स्कूल नही जाती थी। जब फरगाना घाटी मे एक बोडिंग स्कूल खुला तो वह उसकी छात्रा बन गई। एक दिन जब वह अपनी मा से मिलने गई तो स्थानीय मुल्ला और उसके सौतले बाप न परिवारवालो से मिलन आने से मना कर दिया। उसकी मा के आसू भी कुछ नही कर सके। स्कूल से निकलने पर यादगार जो उस समय तक कोम्सोमोल सदस्य बन चुकी थी, ताशकन्द रेल परिवहन

सस्थान मे दाखिल हो गई। यह उज्बेक लडकी जिसने कभी यश्माक और बुर्का नही पहना था, ५०० और १,५०० मीटर की दौड प्रतियोगिता मे उज्बेकिस्तान की चैम्पियन बनी और अतर्राष्ट्रीय खेलकूद समारोहा म शरीक हुई। सस्थान से वह इजीनियर बनकर निकली और उसने रेलवे लाइना और पुला का निर्माण किया। यही वह यादगार नसरूद्दीनोवा थी जो आगे चलकर उज्बेकिस्तान की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष मडल का अध्यक्ष बनी।

किगिज लडकी उसमानोवा का जीवन भी कोई आसान नही था। तेरह वष की अवस्था मे वह एक स्थानीय धनी आदमी की दूसरी पत्नी बनाकर बेच दी गई। जब उसने स्कूल मे पढने की कोशिश की तो उसे मारा पीटा गया, उसपर केरासीन तेल छिडका गया और जिन्दा जला दने का धमकी दी गई। लेकिन हिंसा के बावजूद उसने हिम्मत नही हारी। चौथे दशक मे उसमानोवा पहली किगिज महिला थी जो सरकार की सदस्य बनी।

यद्यपि गैर-रूसी इलाको मे स्कूल की पढाई का स्तर केन्द्रीय इलाको के स्तर के करीब पहुच रहा था, लेकिन चौथे दशक के अत तक अभी बहुत कुछ करना बाकी था। पारिवारिक जीवन और रोजमर्रा रीति रिवाज मे अतीत के बहुत से चिह्न बाकी थे।

सास्कृतिक मोर्चे की मुख्य प्रगति और सामान्य रूप से समाजवादी निर्माण की उपलब्धिया सोवियत कला और साहित्य मे जो अपने उद्देश्या और भावना मे पहले की कला और साहित्य से मूलत भिन्न थे, सजीव बनकर सामने आयी। लेखका और कवियो, अभिनेताओ और सगीतज्ञो, चित्रकारा और मूर्तिशिल्पियो फिल्म निर्माताओ और पत्रकारा की एक नयी पीढी विकसित हो रही थी। उन सबोंने कम्युनिस्ट नतिकता को कायम करने तथा समाजवाद के निर्माण मे योगदान करने म जो कुछ बन पडा किया। उनके सृजन की मुख्य विशेषता जनगण से उनकी अगाध आत्मीयता उनके आये दिन के दुख दद मे उनका सक्रिय सबध था। मक्सिम गार्की ने एक बहुखडीय "गृह युद्ध का इतिहास" की प्रयोजना बनायी, रूसी भाषा की पत्रिकाए "निर्माणरत सोवियत सघ", "विदेश के समाचार' छपने लगी, 'प्रमुख व्यक्तिया के जीवन" नामक पुस्तक माला तथा फैक्टरिया और कारखाना के इतिहास के बारे मे अनक पुस्तका

का प्रकाशन शुरू हुआ जिनको तैयार करने मे स्वय मेहनतकश जनता ने सहायता की।

इस दौर के साहित्य का गहरा सबध देश के द्रुत जीवन से था जिसका एक प्रमुख नमूना मयाकोव्स्की की कविताओ म मिलता है।

मयाकोव्स्की की परम्परा का अनुसरण करते हुए देश के सवश्रेष्ठ लेखक और कवि मजदूरो की सभाओ मे भापण करते, देश के विभिन्न क्षेत्रो की यात्रा करते और समाचारपत्रो के अमले मे काम करते। "प्राव्दा" मे नियमित रूप स पोगोदिन, कोलत्सोव के लेख तथा प्रबध, ईल्फ और पेत्रोव के व्यगात्मक लेख, बेद्नी की कविताए तथा येफीमोव के व्यग चित्र छपा करते थे।

अनेक मेधावी लेखको साहित्यकारो तथा पत्रकारो ने कई बरस उराल, साइबेरिया तथा मध्य एशिया के मजदूरो के साथ रहकर काम किया। इन्ही अनुभवो से अनेक कृतियो का जन्म हुआ जसे कतायेव की कहानी 'काल कदम रके नही'", पौस्तोव्स्की की "कोल्खीदा" और "करा-बुगाज़", एरेनबुग का उपन्यास "दूसरा दिन" और "एक सास मे", यासेन्स्की का "कायाकल्प" तथा दजनो और कृतिया।

उन दिनो लेबेदेव-कुमाच, सुर्कोव और इसाकोव्स्की की सजीव आशापूण कविताओ की बडी धूम थी। उनकी कविताओ को सगीतबद्ध किया दुनायेव्स्की, पोक्रास, ब्लातेर और सोलोव्योव-सेदोई ने। प्रात काल रेडियो कायक्रम का प्रराम्भ शास्ताकोविच द्वारा रचित गान से होता था

> नीद के माते जाग उठो
> घन तुम्हारी राह देख रहा है
> देश की धरती सूय का स्वागत करने
> करवटें ले रही है
> प्रकाशमय, प्रसन्न और महान

कवियो और लेखको ने फक्टरी समाचारपत्रो के प्रकाशन मे सहायता की और शीघ्र ही यह एक परम्परा बन गई। उनकी कविताए, वत्तकथाए सूक्तिया, तुकबदिया और व्यगात्मक लेख मजदूरो को अपनी योजना के लक्ष्य पूरा करने, नये जीवन का निर्माण करने तथा

समाजवादी सस्कृति को विकसित करने मे सारी शक्ति लगा देने के लिए प्रेरित करते।

जनता के साथ इस निकट सबध से कला और साहित्य के कमियो को ऐसे पात्रो का सृजन करने मे सहायता मिली जिनमे असाधारण गहराई, जीवन के प्रति अगाध निष्ठा हो और जिनकी विशेषता पार्टी तथा उच्च सिद्धातो के प्रति गहरी वफादारी हो।

फर्मानोव ने जो सफेद गार्डों के खिलाफ चापायेव के साथ मिलकर लडे थे, उस प्रसिद्ध कमाडर तथा जन नायक का सजीव चित्र प्रस्तुत करके साहित्यिक जगत मे बडा नाम किया।

१६३४ मे फूर्मानोव के उपयास के आधार पर एक फिल्म भी बनाई गई। "चापायेव" के एक निदेशक सेर्गेई वसील्येव क्राति के दिनो मे सरकारी तथा सैनिक चिट्ठिया पहुचाने का काम करते थे। क्राति के बाद यह भूतपूर्व पत्रवाहक उच्च शिक्षा सस्थान मे दाखिल हुए, उपाधि ली और फिर सिनेमा मे काम करने लगे। गेओर्गी वसील्येव के साथ मिलकर उन्होने "चापायेव" फिल्म बनायी जिसकी ससार भर मे ख्याति हुई।

क्रातिकारी विषयो को अनूठे शिल्पकौशल के साथ सयोजित करने की बदौलत अनेक सोवियत फिल्म निर्माताओ ने समाजवादी यथार्थवाद की महान कृतिया की रचना की। आइजेन्स्तेइन की "पोत्योम्किन युद्धपोत" की गणना ससार की महानतम फिल्मो मे की गई है। १६२७ म पेरिस मे अतर्राष्ट्रीय कला प्रदशनी मे इसे प्रथम पुरस्कार मिला। दो साल बाद यह मडली जिसने इस फिल्म का निर्माण किया था सयुक्त राष्ट्र अमरीका की यात्रा पर गई। वहा चार्ली चैपलिन ने पूछा "आप लोग अमरीका क्या करने आये है?' आइजेन्स्तेइन के सहयोगी निदेशक अलेक्साद्रोव को यह प्रश्न सुनकर अचभा सा हुआ और वह धीमे स्वर म बोले कि वे देखने आये ह कि अमरीका मे फिल्म कस बनायी जाती है। इसपर महान चैपलिन न उत्तर दिया "फिल्म तो मास्को मे बनायी जाती ह, यहा लोग पसा बनात ह।'

१६३२ मे एक्क के "जीवन माग" का प्रथम वेनिस अतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह म शानदार सफलता प्राप्त हुई, और वेनिस के अगले समारोह म अलेक्साद्रोव की "जिन्दादिल लाग' दिखायी गयी और उसे प्रथम पुरस्कार मिला।

मास्को मे प्रथम फिल्म समारोह जिसमे विदेशी प्रतिनिधियो का आमन्त्रित किया गया, १६३५ मे आयोजित हुआ था। वाल्टर डिसने की प्रसिद्ध कार्टून फिल्मे पेश की गयी और फ्रासीसी निदेशक रेने क्लेर ने भी अपनी एक फिल्म भेजी। आस्ट्रिया ने कामेडी "पीटर" (अभिनेता के रूप मे फ्रासिस्का गाल) पेश की जिसे जोरदार सफलता मिली। इन सभी फिल्मो की उचित प्रशसा की गई फिर भी अतर्राष्ट्रीय जूरी ने पहला पुरस्कार "चापायेव" तथा "मैक्सिम की यूवावस्था" (एक फिल्मत्रय का पहला भाग, जिसे कोजिन्त्सेव और त्राऊबेग ने १६३६ मे पूरा किया) को देने का निणय किया।

इसके तुरत बाद सावियत सिनेमा की मुख्य उपलब्धियो मे रोम्म की फिल्मे "अक्तूबर मे लेनिन" (१६३७ मे) और "१६१८ मे लेनिन" (१६३६ म) हैं। लेनिन की भूमिका दोनो फिल्मो मे श्चूकिन ने अदा की है।

नाटको मे भी नये विषय वस्तु पेश किये जाने लगे। नाटक की नयी प्रवत्तियो के मागदशको मे प्रमुख थे स्तानिस्लास्की, नेमिराविच-दानचेको, मेयेरहोल्द, वख्तागोव, मिखोएल्स, ओख्लोप्कोव तथा चेर्कासोव।

मूतिकला मे मूत्तिकर्त्री मूखिना की "मजदूर और सामूहिक किसान नारी" नामक मूति को विश्व व्यापी मान्यता प्राप्त हुई। इसे पेरिस की अतर्राष्ट्रीय औद्योगिक प्रदशनी (१६३७) के सोवियत पैविलियन के लिए तैयार कराया गया था। प्रकृतिवादी और रूपवादी प्रवत्तियो के विरुद्ध सघष करने के अपने प्रयासो के जरिए देइनेका, पीमेनोव, नीस्सकी तथा कोरिन जैसे कलाकार प्रौन्ता के नये शिखर पर पहुच गये। कोचालोस्की, युओन, सार्यान तथा ग्रबार ने प्रेरणा के नये स्रोत उद्घाटित किये।

१६३४ मे मास्को मे सोवियत लेखको की पहली काग्रेस हुई। सोवियत लेखक सघ ने जिसके सदस्यो की सख्या २,५०० थी, ५५७ प्रतिनिधि भेजे जो ५२ भिन्न जातियो के थे। इस काग्रेस से सावियत सस्कृति का द्रत विकास प्रदशित हो रहा था जिसका रूप जातीय और अतय समाजवादी था।

इस काग्रेस मे भाषण करते हुए मक्सिम गोर्की ने सोवियत लेखको की गत १७ वर्षों की उपलब्धियो का विश्लेषण किया। उन्होने कहा "हमारे सभी जनतत्रा की अनेक भिन्न भिन्न भाषाओ का साहित्य सोवियतो की

मजदूर तथा सामूहिक किसान नारी।
मूखिना की कृति

धरती के सर्वहारा वर्ग, सभी देशों के क्रांतिकारी सर्वहारा वर्ग और सारे संसार में उन लेखकों के सामने जो हमारे शुभ चिंतक हैं, एक सामंजस्यपूर्ण साहित्य के रूप में सामने आता है।”

जाहिर है कि माध्यमिक और उच्च शिक्षा तथा विज्ञान और संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में इतनी द्रुत गति से विस्तार के लिए काफी धन की आवश्यकता थी। दूसरी पंचवर्षीय योजना (१९३३–१९३७) के दौरान इस क्षेत्र में ८० अरब रूबल लगाने का इरादा था मगर व्यवहार में सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाओं तथा संगठनों के विस्तार में करीबन

११० अरब रूबल लग गया, याने पहली पचवर्षीय योजना म कुल जितना खच किया गया था उसका लगभग पाच गुना ज्यादा। नय समाज क भौतिक आधार का अच्छा खासा सुदृढीकरण हुआ जिसस स्कूल, विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, रगमच, म्युजियम तथा मुद्रण व्यवस्था का विस्तार करने मे आसानी हुई। प्रत्येक सोवियत नागरिक पर औसत खच १६२८-१६२६ के ८ रूबल से बढाकर १६३८ मे ११३ कर दिया गया। शीघ्र ही स्कूल पाठ्यक्रम की अवधि बढ़ाकर सात वप स दस वष कर दी गई। १६३५ म दस वर्षीय पाठ्यक्रम पूरा करनेवाले स्कूली छात्रा की पहली टोली न अपनी अतिम स्कूल परीक्षा दी। छात्रा को सात वष की अनिवाय पढाई पूरी करने के बाद यह अख्तियार था कि तीन वष और स्कूल मे पढें और उसके बाद विश्वविद्यालय मे प्रवश-परीक्षा दें।

माध्यमिक स्कूला म प्रशिक्षण के उच्च स्तर की बदौलत १६३३-१६३७ के वर्षों म तीन लाख ७० हजार इजीनियर, शिक्षक, चिकित्सक, भूविशेषज्ञ, अथशास्त्री, इत्यादि सोवियत उच्च शिक्षा सस्थाना से स्नातक होकर निकले। अपन से पहले के छात्रो के विपरीत इन स्नातका का किताब, कापियो तथा शिक्षा के अय सामाना के अभाव का सामना नही करना पडा था। इन छात्रा ने व्यावहारिक प्रशिक्षण द्नेपर पनबिजलीघर, "अजोवस्ताल" तथा मग्नितागोर्स्क इस्पात कारखान, खिबीनी के खनन रासायनिक फैक्टरी म, पहली पचवर्षीय योजना के दौरान निर्मित विशालकाय आधुनिक कारखाना मे प्राप्त किया।

पार्टी और सरकार ने अगुआ मजदूरो, समाजवादी प्रतियोगिता के विजेताओ की ओर विशेष ध्यान दिया। प्रबध कर्मियो को नवस्थापित औद्योगिक अकादमिया मे जाकर अपनी योग्यता का स्तर ऊचा करने के लिए विशेष सुविधाए दी गइ। इन अकादमिया के स्नातको म राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त नवप्रवतक भी शामिल थे जैसे खनिक] इजोतोव, लोहार बुसीगिन, इजन ड्राइवर क्रिवोनास, बुनकरिन विनोग्रादोवा, इस्पात ढालनेवाले मजाई, आदि थे।

सोवियत उच्च शिक्षा की प्रगति के कारण दश क बुद्धिजीवियो का रूपातरण हो गया जिसका मुख्य हिस्सा अब मजदूरो और किसाना के बेटे-बेटियो का था। उनके आदर्शों का निरूपण अपनी समाजवादी

मातृभूमि की सेवा करने की देशभक्तिपूर्ण भावना से होता था। श्रमजीवियों को अब विज्ञान के सभी क्षेत्रों में प्रवेश के व्यापक अवसर प्राप्त थे। कुप्रेविच ने किसान की हैसियत से जीवन का प्रारम्भ किया और फिर बाल्टिक नौसेना में नौसैनिक बने थे। आगे चलकर उन्होंने वनस्पति विज्ञान और शरीरक्रिया विज्ञान में महत् शोधकार्य किया और बेलोरूसी विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष बने। अकादमीशियन पेत्रोव जो आधुनिक स्वचलित प्रणालियों के संस्थापकों में हैं, पहले एक सामूहिक फार्म पर हिसाब किताब लिखने का काम करते थे और फिर मास्को पावर इंजीनियरी इंस्टीट्यूट में दाखिल होने से पहले टर्नर थे। एक और अकादमीशियन अन्तरिक्षयानों के प्रसिद्ध डिजाइनर कोरोल्योव ने भी एक औद्योगिक मजदूर की हैसियत से काम शुरू किया था।

वायुयान डिजाइनिंग के भावी महारथियों में अन्तोनोव, लावोच्किन, अर्त्योम मिकोयान तथा याकोव्लेव उन दिनों विद्यार्थी थे और अपने जीवन क्रम का प्रारम्भ ही कर रहे थे।

लेनिनग्राद में इयोफे के तहत भौतिकी इंजीनियरी संस्थान की स्थापना १६१८ में हुई थी। यहां कापित्सा, सेम्योनोव, कुचातोव, अर्त्सीमोविच, स्कोबेल्त्सीन तथा फ्रेंकेल ने अपना शोध कार्य शुरू किया। उस समय तक इन लोगों का नाम नहीं हुआ था। मगर बाद में उनकी ख्याति सारे संसार में फैल गई। लन्दाऊ अलेक्सान्द्रोव तथा कोन्द्रात्येव जो आगे चलकर अकादमीशियन हुए, इस संस्थान के शोधकर्ताओं के दल में शामिल हो गये थे। इनमें से बहुतेरे वैज्ञानिक बाद में मास्को, द्नेप्रोपेत्रोव्स्क, खारकोव, उराल और जार्जिया चले गये, वहां उन्होंने नये संस्थान स्थापित किये जिन्होंने आनेवाले दिनों में महान उपलब्धियों के लिए रास्ता साफ किया।

सोवियत जेट इंजीनियरी तथा गगारिन और उनके अनुवर्ती कमियों द्वारा अंतरिक्ष उड़ान से संसार आश्चर्यचकित रह गया। पहले यह बात आश्चर्यजनक लगती है कि सोवियत जनगण ने ही संसार में सर्वप्रथम परमाणु बिजलीघर का निर्माण किया, अपने देश की रक्षा के लिए पहला हाइड्रोजन बम बनाया, पहला स्पुत्निक छोड़ा इस सूचि को और आगे बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं। अगर हम दुबारा यह देखें कि चौथे दशक में शिक्षा और विज्ञान के लिए किस पैमाने पर धन का विनियोग

किया जा रहा था और उस समय युवा वैज्ञानिकों की कैसी पीढ़ी तैयार हो रही थी, तो न सिर्फ सोवियत विज्ञान और प्रविधि की आगे की उपलब्धियों का आधार स्पष्ट हो जाता है बल्कि यह बात भी आसानी से समझ में आ जाती है कि समाजवाद ने वैज्ञानिक शोध कार्य के लिए कैसी अनुकूल स्थितियां मुहैया कर दी थीं।

इन नये युवा विशेषज्ञों तथा पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधियों का सहयोग बहुत लाभप्रद सिद्ध हुआ। विश्व प्रसिद्ध वायुयान डिज़ाइनर तूपोलेव की निम्नलिखित टिप्पणी से उस दौर के वातावरण पर उचित प्रकाश पड़ता है "वह क्या चीज़ थी जिसने इन इंजीनियरों को समाजवाद की सेवा करने पर बाध्य किया? हम जिस चीज़ ने प्रेरित किया वह थी समस्त मानवजाति के भले के लिए काम करने की भावना, हमारी सृजन शक्ति के लिए अभूतपूर्व गुंजाइशें तथा मौलिक महत्व के अति विविधतापूर्ण तकनीकी शोध कार्य में भाग लेने का अवसर।"

अकादमीशियन येव्गेनी पतोन ने अपने संस्मरण में लिखा है कि बहुत दिनों तक पंचवर्षीय योजनाओं की पूरी धारणा को वह अत्यंत संदेह की दृष्टि से देखा करते थे। "ज्यों ज्यों समय गुज़रता गया और दनेपर पन-बिजलीघर प्रयोजना पर काम शुरू हुआ जो पिछले शासन काल में सर्वथा असम्भव था, तो मैं महसूस करने लगा कि मैं गलती पर था। जब मेरे सामने पार्टी और सरकार द्वारा चलायी गई नयी निर्माण योजनाएं, मास्को के पुनर्निर्माण तथा अन्य कामों की प्रयोजनाएं आयीं तो मेरी विचारधारा में अधिकाधिक गहरा परिवर्तन होता गया। मुझे एहसास होने लगा कि मैं सोवियत व्यवस्था को स्वीकार करने लगा था क्योंकि इसने मेहनत को सर्वोच्च स्थान दिया था, और मेहनत सदा से मेरे जीवन का केन्द्रबिन्दु थी। मुझे व्यवहार में इसका विश्वास होता गया और यह एहसास होने लगा कि एक नयी जीवन पद्धति के प्रभाव से मेरे विचारों का पुनर्निरूपण हो रहा था।"

सोवियत वैज्ञानिकों द्वारा विश्व संस्कृति के विकास में योगदान की विदेशों में बड़ी सराहना की गई। सोवियत संघ के प्रतिनिधि लगभग सभी अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक कांग्रेसों में शरीक होने लगे थे। जिन सोवियत वैज्ञानिकों ने अनेक अवसरों पर इस प्रकार की कांग्रेसों में भाग लिया, उनमें गूबकिन, इयोफ़े, फ़्रूमकिन, वाविलोव, बोलगिन, लुकीन और

पश्चातोवा उल्लेखनीय है। १५वीं अंतर्राष्ट्रीय शरीरक्रिया विज्ञान का उदघाटन सुप्रसिद्ध पावलोव ने किया। १९३७ म अंतर्राष्ट्रीय भूविज्ञान कांग्रेस मास्को म आयोजित हुई और गूबकिन इस कांग्रेस क अध्यक्ष चुने गये। वावीलाव, आनुवंशिकी तथा वरण विशेषज्ञ, अनेक वदेशिक विज्ञान अकादमियों के सम्माननीय सदस्य चुने गये।

सोवियत संस्कृति, विज्ञान और कला की अति द्रुत प्रगति के बावजूद अभी बहुत सी समस्याओं का समाधान बाकी था। सोवियत संघ में सांस्कृतिक क्रांति उद्योगीकरण अभियान तथा कृषि क समूहीकरण के साथ साथ हो रही थी और वह भी ऐसे समय जब अंतर्राष्ट्रीय स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी। राज्य बजट से सांस्कृतिक विकास के लिए उदार विनियोग के बावजूद, कभी कभी अनेक चीजों के अभाव का सामना करना पड़ता था। स्कूलों क्लबों तथा सिनेमाघरों की संख्या मे तेजी से वृद्धि होने के बावजूद श्रमजीवी जनता की सांस्कृतिक आवश्यकताएं और भी तेजी से बढ रही थी। अकसर स्कूलों मे तीन पालों की व्यवस्था थी और शिक्षकों, अभिनेताओं तथा संगीतज्ञों का बड़ा अभाव था। उदाहरण के लिए रूसी संघ मे १९३८ तक शहरों म एक तिहाई और गांवों म आधे शिक्षक ऐसे थे जिन्हें शिक्षक की विशेष ट्रेनिंग नहीं थी।

१९३८ के प्रारम्भ मे देश मे कुल २८,५०० फिल्म प्रोजेक्टर थे और इनमे से आधे से कम सवाक् चित्रों के लिए उपयुक्त थे। उस साल तक देश मे रेडियो की कुल संख्या ४० लाख तक पहुंच गई थी। यह एक बड़ी कामयाबी थी। मगर इसपर भी देश मे बहुतेरे परिवार खासकर गांवों मे ऐसे थे जिनके पास अपना रेडियो नहीं था।

लेकिन हर दिन शिक्षा और संस्कृति के फल आबादी के अधिकाधिक व्यापक हिस्सों तक पहुंचते जा रहे थे। सोवियत वैज्ञानिकों, लेखकों, संगीतज्ञों, फिल्मकारों की प्रेरणात्मक उपलब्धियां, रेडियो तथा शिक्षण व्यवस्था का वास्तव मे करोड़ों आदमियों ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया।

शौकिया कला की जनप्रियता सारे देश म बेहद बढ़ती जा रही थी। सभी कारखानों, शहरों और गांवों के क्लबों म, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और सैनिक इकाइयों म शौकिया कला मंडलियों की स्थापना हुई और उनके सदस्यों ने नाटकों का प्रदर्शन किया और विविध प्रकार की सरगर्मियों म भाग लिया। अपने मुख्य पेशे के साथ इन

सरगमियो मे भाग लेकर इन मडलियो के सदस्यो ने न केवल अपने सास्कृतिक अनुभव को समृद्ध और मानसिक क्षितिज को विस्तारित किया बल्कि जिन लोगो के साथ रहते और काम करते थे उनको सास्कृतिक प्रेरणा प्रदान की। १९३६ मे एक विशेष लोक कला का केन्द्रीय गृह स्थापित किया गया ताकि लोगो को इन गैर-पेशेवर मडलियो के सचालन का प्रशिक्षण दिया जाये और शीघ्र ही ट्रेड-यूनियनो ने इनके कामो का जनतत्रीय तथा प्रादेशिक पैमाने पर सर्वेक्षण शुरू किया। यह बात दिलचस्प है कि प्रसिद्ध गायक कोजलोव्स्की, लेमेशेव और म्मीर्या की प्रतिभा का राज इन्ही शौकिया मडलियो मे खुला। सगीतकार ब्लान्तर ने पहले पहल मन्नितोगोर्स्क मे गैर पेशेवर सगीत गोष्ठियो मे ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित किया। उपन्यासी प्लेनर गार्बातोव, और साथ ही ट्रेन ड्राइवर अव्देयेन्को तथा मजदूर लिवेदीन्स्की लेखक बने। मास्को और लेनिनग्राद कोम्सोमोल थियेटर भी मूलत शौकिया मडलियो से ही विकसित हुए और यही बात सोवियत सेना की गायन तथा नृत्य की मण्डली के साथ जिसके निदेशक अलेक्साद्रोव थे तथा राजकीय रूसी लोक वाद्यवृन्द के साथ हुई।

चौथे दशक के मध्य तक गैर पेशेवर कला मण्डलियो मे जो पूरे देश मे फैली हुई थी ३० लाख से अधिक लोग भर्ती हो चुके थे। सोवियत सघ की बहुजातीय आबादी की सभी जातियो के लोग इन सरगमियो मे भाग ले रहे थे और यह सोवियत सघ मे सपन्न सास्कृतिक क्रान्ति की अथाह शक्ति का सबूत था।

वास्तव मे देश आश्चर्यजनक हद तक कम समय मे ज्ञानहीन पिछडेपन से जो शताब्दियो से चला आ रहा था छलाग लगाकर प्रगति तथा ज्ञानोद्दीप्ति के नये युग मे पहुच गया था।

क्राति के पूर्व लेनिन ने लिखा था "तोलस्तोय जैसे कलाकार से रूस मे भी एक नगण्य अल्पमत ही परिचित है। अगर उसकी महान कृतियो को वास्तव मे सब की सम्पदा बनाना है तो समाज की इस व्यवस्था के खिलाफ सघर्ष करना होगा जो लाखो करोडो लोगो को अज्ञानता, अधकार, कठोर नित्यश्रम तथा दरिद्रता का शिकार बनाती है — समाजवादी क्राति करनी होगी।"*

---

*व्ला० इ० लेनिन, सगृहीत रचनाए, खड २० पृष्ठ १९

समाजवादी निर्माण के दौरान यह क्राति सपन्न हुई। विश्व का तमाम श्रेष्ठ कृतिया ही की तरह तोलस्ताय की कृतिया का प्रकाशन करान श्रमजीवी जनता के लिए विशाल सख्या म किया जा रहा था। जहा १६१३ म पूरी आबादी म प्रति व्यक्ति ०७ के हिसाब स पुस्तका का प्रकाशन हो रहा था, वहा १६३८ मे प्रति व्यक्ति ४१ के हिसाब से पुस्तक प्रकाशन हो रहा था और वह भी ऐसी स्थिति म जब कि इस बीच म जनसख्या बहुत बढ गई थी। किताबें सोवियत सघ की सभी जातिया की भाषाओ म छप रही थी (जातिया की सख्या १०० से अधिक थी और इनम ४० से अधिक ऐसी थी जिनकी कोई लिखित भाषा अक्तूबर क्राति क पूव नही थी)। पुश्किन, गोर्की, तोलस्तोय तथा चेखोव की कृतिया विशाल सख्या मे और इसी प्रकार विदेशी श्रेष्ठ कृतिया भी विशाल सख्या मे छापी गयी जिनमे कुछ के नाम हैं, बायरन, गेटे, हाइने, डिकेन्स और सेर्वान्तेस।

पुस्तको की सख्या तथा मुद्रण सख्या दोनो के हिसाब से प्रथम स्थान राजनीतिक तथा सामाजिक-राजनीतिक साहित्य का था। इससे यही परिलक्षित हाता था कि विज्ञान और सस्कृति की उपलब्धिया को जनता तक पहुचाने के प्रयासो मे, सामाजिक विकास के स्वरूप और प्रवृत्तिया का बोध प्राप्त करने की उसकी आकाक्षा, तथा सामाजिक जीवन मे सक्रिय भाग लेन की उसकी इच्छा और क्षमता मे एक ही बुनियादी आदश काम कर रहा था। समय आ गया था जब वे ही लोहार, कोयला खोदनेवाले तथा बढई जिनके बारे मे पूजीवादी पत्रकार कहा करते थे कि उनका पिछडेपन तथा निरक्षरता बोल्शेविका के पतन का कारण बनेगी, राज्य के कामकाज मे प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने लगे।

चौथे दशक के मध्य तक सोवियत जनगण के सास्कृतिक स्तर म जो सुधार हुआ वह सस्कृति क्षेत्र की साधारण प्रगति से कही बडी चीज थी। अज्ञानता अन्य देशो मे भी दूर हो रही थी गरचे उसकी रफ्तार बहुत धीमी थी, हर जगह अधिकाधिक सख्या मे वैज्ञानिका की व्युत्पत्ति हो रही थी तथा अधिकाधिक सख्या मे पुस्तक और समाचारपत्र प्रकाशित हो रहे थे। परन्तु सोवियत सघ मे यह प्रगति एक छलाग मे, बहुत ही कम समय म सपन्न हुई और इसके साथ-साथ नये, समाजवादी विचारा का प्रचार हुआ। सोवियत नर नारिया ने ज्या ज्या विज्ञान तथा सस्कृति के क्षेत्र मे कदम रखा उनका पुनजन्म समाजवादी समाज के सक्रिय सदस्यो, सच्चे सोवियत देशभक्तों की हैसियत से हुआ।

समाजवादी निर्माण की पूर्ति

सक्रमणकाल के परिणाम

जब कोई बच्चा पहला कदम उठाता है, तो बडा की उगली पकडकर चलता है। जब सोवियत राज्य का जन्म हुआ, तो उसे न केवल अपने सिवा किसी का सहारा नही था, बल्कि वह चारा ओर दुश्मना से घिरा हुआ था। रूस के सामाजिक आर्थिक, तकनीकी और सास्कृतिक पिछडेपन के कारण स्थिति और जटिल हो गयी थी। इस पिछडेपन को दूर करने के लिए समय की जरूरत थी। अक्तूबर क्राति से बहुत पहले वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सिद्धातकारा ने चेता दिया था कि सवहारा वग के सत्ता धारण कर लेने के बाद पुराने समाज का एक नये समाजवादी समाज मे बदलने म काफी समय लगेगा। उनके अनुसार इसके लिए एक सक्रमणकाल की जरूरत पडेगी, जिसके दौरान मजदूर वग अपनी सत्ता को सुदृढ बनायेगा, निजी सपत्ति तथा मानव द्वारा मानव के शोषण का अत करेगा।

१९१७ म ही सोवियत जनगण ने पुराने समाज को परिवर्तित करने का काम शुरू कर दिया था। कोई भी पहले से नही कह सकता था कि सक्रमणकाल कितना लम्बा चलेगा, मगर बोल्शेविका को क्राति की शक्ति पर दृढ विश्वास था और उन्हे यकीन था कि उन्होने जो रास्ता चुना है, वह विजय की मजिल तक पहुचायेगा। माक्स ने अकारण ही क्राति का "इतिहास का इजन" नही कहा था। १९१७ मे स्वय अपने आपके तथा अपने देश के मालिक बन जाने के बाद सोवियत जनगण ने कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे आर्थिक और सामाजिक प्रगति के माग पर बडे लम्बे डग भरे। सोवियत सघ की श्रमजीवी जनता ने अपने महान नेता लेनिन के आदेश को पूरा करके समाजवादी उद्योगीकरण, कृषि के

समूहीकरण की नीति पर अमल किया तथा एक सास्कृतिक क्रांति का सूत्रपात किया, और चौथे दशक के मध्य तक उनके देश म पूजीवाद पर समाजवाद की विजय पूरी हो चुकी थी। इतिहास म पहली बार मजदूरो और किसानो के बहुजातीय समाजवादी राज्य की स्थापना हुई थी।

चौथे दशक के मध्य म सोवियत सघ ससार म सबसे बडा देश था, जो जनसख्या की दष्टि से (चीन तथा भारत के बाद) ससार का तीसरा सबसे बहुसख्यक देश था। देश अब विदेशी और देशी पूजी के प्रभुत्व से आजाद हो चुका था। औद्योगिक माल की पैदावार की मात्रा के हिसाब से सोवियत सघ का स्थान अब ससार मे, सयुक्त राज्य अमरीका के बाद, दूसरा हो गया था।

सोवियत अथव्यवस्था की मौलिक विशेषता न तो केवल बडे पमाने पर उसकी वद्धि और न उसके विस्तार की अभूतपूव गति थी। यह विशेषता थी सोवियत अथव्यवस्था मे गुणात्मक परिवतन जिसने समाजवादी अथव्यवस्था का रूप ग्रहण कर लिया था। देश के अदर आर्थिक प्रतियोगिता मे समाजवाद ने अय सभी आर्थिक व्यवस्थाओ – पूजीवादी तथा लघु माल उत्पादन आदि – पर विजय प्राप्त कर ली थी। १६२४ म प्रति १०० रूबल राष्ट्रीय आय मे अथतत्र के समाजवादी क्षेत्र का भाग केवल ३५ रूबल था। मगर १६३७ तक उसका भाग ६६ रूबल हो गया था। राष्ट्रीय आय के सजन मे राजकीय उद्योग तथा मजदूर वग की भूमिका अब निर्णायक हो गयी थी।

मौलिक परिवतन अथतत्र मे ही नही, बल्कि आबादी की वर्गीय बनावट मे भी हो गया था। तीसरे दशक के मध्य मे आबादी के प्रत्यक सौ व्यक्तियो मे से पाच पूजीपति मुख्यतया कुलक थे। १६३७ मे पूजीपति वग का वैसे तो अस्तित्व नही रह गया था, मगर सौ व्यक्तियो मे से छ ऐसे किसान थे, जो अलग अलग व्यक्तिगत रूप से खेती करते थे। बाकी सब लोग या तो समाजवादी उद्योग मे या सामूहिक या राजकीय फार्मों मे काम करते थे। जनसख्या म ३६ प्रतिशत लोग औद्योगिक मजदूर तथा दफ्तरी कमचारी थे।

इन परिवतनो की मूल विशेषता शोषक वर्गों की बेदखली तथा निजी स्वामित्व का विलोपन ही नही था। श्रमजीवी जनगण के वर्गों म भी

तबदीली नजर आने लगी थी। क्रांति के पहले मजदूर उत्पादन के साधनों के मालिक नहीं होते थे और वास्तव में सभी अधिकारों से वंचित थे। इसके विपरीत सोवियत संघ में मजदूर वर्ग आप अपना स्वामी बन गया था। वह समाजवादी समाज की मुख्य शक्ति हो गया था। क्रांति, गृह युद्ध, हस्तक्षेप, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार और समाजवादी पुनर्निर्माण के दौरान मजदूर ही वर्ग वह शक्ति था, जिसने बाकी श्रमजीवी जनता को रास्ता दिखलाया। वह सबसे संगठित और एकताबद्ध वर्ग था।

बोल्शेविकों के दुश्मन तथा सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के विरोधी रूस के भविष्य का रोना व्यर्थ ही रोया करते थे। जब रूस के राजनीतिक और आर्थिक जीवन का मार्गदर्शन मजदूरों ने करना शुरू किया, ठीक तभी अर्थव्यवस्था ने अभूतपूर्व गति से तरक्की की, उच्चतर जीवन स्तर सुनिश्चित हुआ और देश की राजनीतिक प्रतिष्ठा बहुत बढ गयी।

प्रारम्भ मे मजदूर वर्ग जनसख्या का बहुत छोटा सा अश था। क्रांति के दस वर्ष बाद भी राज्य कार्ययंत्र के अमले मे कोई ४० लाख आदमी काम करते थे। और यह सख्या बडे पैमाने के उद्योग मे काम करनेवाले मजदूरों की सख्या से कहीं अधिक थी। लेकिन राजकीय कार्ययंत्र, देश के पूरे आर्थिक जीवन, देश के सामाजिक राजनीतिक विकास की पूरी प्रक्रिया पर मजदूरों का वास्तविक प्रभाव केवल मजदूर वर्ग की सख्या पर ही निर्भर नहीं करता था, बल्कि उसके सगठन की मात्रा, उसकी एकता और प्रतिष्ठा तथा अंत मे सोवियत समाज मे मजदूरों के हिरावल, कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका पर भी निर्भर करता था। १९२७ मे मजदूर वर्ग से सबंध रखनेवाले करीबन दो लाख कम्युनिस्ट राजकीय कार्ययंत्र मे काम करते थे और इनमे से ८५ प्रतिशत उच्च पदों पर थे। राजकीय और सहकारी संस्थाओं, आर्थिक ट्रस्टों तथा औद्योगिक उद्यमों आदि के निदेशकों मे अधिकाश ऐसे लोग थे, जो मजदूर वर्ग से आये हुए थे।

लाल सेना मे सर्वहारा वर्ग के लोगों की सख्या निरंतर बढती चली गयी, १९३० मे सोवियत सेना मे ३१.४ प्रतिशत सैनिक तथा ५० प्रतिशत राजनीतिक कमिसार मजदूर वर्ग के लोग थे।

तीसरे दशक के अंत तथा चौथे दशक के प्रारम्भ मे राजकीय कार्ययंत्र तथा आर्थिक कार्ययंत्र की अदर से सफाई की गयी, जिसका उद्देश्य सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को सुगठित करना था। इससे बडी हद

तक सर्वहारा वर्ग के विरोधी तत्वो को, नौकरशाहो तथा स्वार्थवादियो को, ऐसे लोगो को, जो नयी आर्थिक नीति के दौर म बहक गये थे और अब मजदूर वर्ग के समर्थक नही रहे थे, कार्यालयो और कारखानो से निकालने मे सुविधा हुई। इसी के साथ एक और समानान्तर प्रक्रिया भी चल रही थी। उच्च स्तरीय पदो पर अधिकाधिक ऐसे लोग नियुक्त किये जाने लगे थे, जो सिर्फ यही नही कि मजदूर वर्ग से आये हुए थे, बल्कि उच्च विद्यालयो के स्नातक थे, जिनमे से अधिकाश मजदूर वर्ग से आये थे। इसका मतलब यह था कि चौथे दशक के मध्य तक अधिकाश कारखानो के निदेशक मजदूर वर्ग से सबंध रखते थे और अनेक कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे।

सोवियतो, ट्रेड-यूनियनो तथा कोम्सोमोल के सगठनो म भी ऐसी ही स्थिति थी। इसी समय सैन्य शक्तियो मे भी पार्टी सदस्यो और मजदूरो की नयी भर्ती हुई। १९३४ के प्रारम्भ मे लाल सेना मे लगभग ४६ प्रतिशत सैनिक मजदूर वर्ग से आये हुए थे और करीबन आधे सैनिक और कमाडर कम्युनिस्ट और कोम्सोमोल के सदस्य थे।

मजदूर वर्ग समाजवादी निर्माण मे अग्रणी भूमिका अदा कर रहा था, मगर वह कभी भी अपना प्रभुत्व या विशेषाधिकार जमाना नही चाहता था। ज्यो ज्यो समाजवादी व्यवस्था सबल होती गयी मजदूर वर्ग ने उन सुविधाओ को छोडना शुरू किया, जो १९२४ के सोवियत सविधान ने उसे प्रदान की थी। चौथे दशक के मध्य तक सोवियत सघ मे निर्वाचन अधिकार आबादी के सभी हिस्सो के लिए समान नही थे। निर्वाचन खुले मतदान के आधार पर और परोक्ष होता था। दूसरे शब्दो मे स्वय जनता केवल स्थानीय सत्ता के निकायो के लिए उम्मीदवारो को प्रत्यक्ष रूप से चुनती थी और वे अपने उच्चतर निकायो के लिए सदस्य चुना करते थे। ये प्रतिबध उस समय लागू किये गये थे, जब शोषक वर्गो तथा उत्पादन साधनो के निजी स्वामित्व का अस्तित्व अभी बाकी था (खासकर कृषि मे)। प्राथमिक निर्वाचन इकाई शहरो मे क्षेत्रीय नही थी, वह थी उत्पादन सबधी आर्थिक इकाई जैसे फैक्टरी कार्यालय या ट्रेड-यूनियन। उत्पादन के सिद्धात की बदौलत राजकीय कार्ययत्र तथा अग्रणी मजदूरो, पूरे मजदूर वर्ग या सबंध मजबूत हुआ। सोवियत सघ तथा सभी सघीय सविधानो

मे यह निश्चित कर दिया गया था कि सावियतो की काग्रेसो मे किसाना और मजदूरा का प्रतिनिधित्व एक और पाच के अनुपात म हो।

लेनिन ने सोवियत सविधान मे मजदूर वग के लिए ये विशेपाधिकार निधारित करने की वस्तुनिप्ठ तथा ऐतिहासिक आवश्यकता पर जोर दिया और उसकी व्याख्या इस प्रकार की "सवहारा वग का सगठन किसाना के सगठन की तुलना मे कही अधिक तेजी से हुआ, जिस स्थिति ने मजदूरा को क्राति की आधारशिला बना दिया और उन्ह एक वास्तविक सुविधा प्रदान की

"हमारे सविधान मे इस असमानता का लागू करना अनिवाय था, क्योकि सास्कृतिक स्तर नीचा है और क्याकि हमारा सगठन कमजार है।"*

१९२६ के निर्वाचन अभियान मे मजदूर वग ने आबादी के अय हिस्सो की तुलना मे अधिक सक्रिय भाग लिया। यही बात १९२७ के निर्वाचन पर लागू होती थी, जिसमे ४७ प्रतिशत लोगा ने भाग लिया। १ करोड की शहरी आबादी मे ६० लाख ने निर्वाचन अधिकार को इस्तमाल किया। मास्को, लेनिनग्रद, तूला और स्तालिनग्राद के बडे कारखाना मे ६० प्रतिशत से लेकर १०० प्रतिशत तक लोगा ने निर्वाचना मे भाग लिया। इन निर्वाचना म धातुकर्मी तथा छापेखानो के कमचारी विशेप रूप से सक्रिय थे, जो मजदूर वग के सबसे योग्य, शिक्षित तथा राजनीतिक तौर पर चेतन दस्त थे। १९२९ मे ६३ प्रतिशत मे अधिक लोगा ने वोट दिया, १९३१ मे शहरो मे वोट देनेवालो की सख्या ७९ ६ प्रतिशत और देहातो मे ७० ४ प्रतिशत थी। तीन साल बाद ये आकडे क्रमश ९१ ६ प्रतिशत और ८३ ३ प्रतिशत थे।

समाजवादी व्यवस्था की जडे ज्यो-ज्या मजबूत होती गयी, उन लोगा की सख्या, जो वोट के अधिकार स वचित थे, कम होती गयी। १९३१ और १९३४ के बीच उन लोगो का अनुपात, जो वोट के अधिकार से वचित थे, शहरा मे ४९ प्रतिशत से कम होकर २४ प्रतिशत और ग्रामीण क्षेत्रो म ३७ प्रतिशत से कम होकर २६ प्रतिशत रह गयी।

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड ३८, पृष्ठ १७२।

कृषि के समाजवादी पुनर्गठन के सम्पन्न होने से सोवियत किसानों के स्वरूप में मौलिक परिवर्तन हुआ। अब वह लघु माल उत्पादकों का वर्ग नहीं रहा था, जो लेनिन के शब्दों में स्वतःस्फूर्त ढंग से और व्यापक पैमाने पर पूंजीवाद और पूंजीवादी तत्वों को प्रोत्साहन दिया करता है वह सामूहिक किसानों का एक समाजवादी वर्ग बन गया था। जहां व्यक्तिगत रूप से खेती करनेवाले किसानों के वर्ग में भिन्न सामाजिक समूह हुआ करते थे, वहां चौथे दशक के मध्य में सामूहिक खेती करनेवाले किसान सभी सामाजिक विभेदों से मुक्त हो चुके थे। वह एक ठोस वर्ग था, जिसे समाजवादीकृत कृषि उत्पादन ने एकताबद्ध कर दिया था।

उस समय ग्रामीण आबादी में सामूहिक किसान, राजकीय फार्मों तथा मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनों के कर्मी और ग्रामीण बुद्धिजीवी शामिल थे। उस समय तक सोवियत किसानों में नये समूहों की व्युत्पत्ति हो चुकी थी, जिनका अस्तित्व क्रांतिपूर्व रूस में सम्भव ही नहीं था देहातों में सामूहिक फार्म-उत्पादन के संगठन कर्ताओं की एक पूरी सेना विकसित हो गयी थी– कृषि आर्टेलों के अध्यक्ष, ब्रिगेडों तथा टोलियों के मुखिया, दुग्धशालाओं तथा पशुशालाओं के प्रबंधक आदि। सामूहिक फार्मों के कर्मियों में उस समय तक मशीन चालक भी बड़ी संख्या में शामिल हो चुके थे ट्रैक्टर चालक, कम्बाइन हार्वेस्टर चालक तथा लारी ड्राइवर, मरम्मत करनेवाले मिस्त्री आदि। १९३७ में सामूहिक फार्मों में मशीन चालकों की संख्या १० लाख से अधिक थी।

किसानों के श्रम का स्वरूप भी उस समय तक बदल चुका था। भूमि के छोटे अलग अलग चकों तथा हाथ के औजारों का स्थान अब सामूहिक फार्म और मशीनों ने ले लिया था। किसानों का श्रम अब सामाजिक आधार पर होता था। गांव में पहले निजी स्वामित्व की व्यक्तिवादी भावना व्याप्त थी उसका स्थान अब ऐसी भावना ले रही थी, जो मूलतया सामूहिकता से ओतप्रोत थी। उस समय तक ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और संस्कृति के लिए अभियान में निर्णयात्मक सफलताएं प्राप्त हो चुकी थीं। दूसरी पंचवर्षीय योजना के अंत तक देहाती आबादी में लगभग तीन चौथाई लोग पढ और लिख सकते थे जब कि केवल बीस बरस पहले ज़ारशाही रूस में अधिकांश किसान अनपढ थे।

ग्रामीण जीवन के क्रातिकारी परिवतन का एक प्रमुख लक्षण यह था कि सामूहिक फार्मों के किसान समाजवादी प्रतियागिता मे, सामूहिक उत्पादन बढाने के लिए कृषि के अग्रणी कमिया के अभियान मे सक्रिय भाग लेने लगे थे। सामूहिक किसान चुनाव अभियाना मे, सावियत कायकारी निकायो के काम मे अधिकाधिक भाग लेने लगे।

समाजवादी सम्पत्ति के दोना रूपो (राष्ट्रीय सम्पत्ति तथा सहकारी और सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति) की समानता के कारण मजदूर वग तथा किसानो म एक दूसर की जरूरता और हिता की अधिक गहरी समझ पैदा हुई और उनकी एकता और सुदढ हुई। शीघ्र ही सोवियत सघ मे न तो कोई विरोधी, बैरी वग रहे और न तीक्ष्ण वर्गीय अतविरोध। सोवियत समाज दो मुख्य दोस्ताना वर्गो—मजदूरा और किसानो—तथा बुद्धिजीविया का समाकलन बन गया।

सावियत सत्ता के प्रथम दो दशका मे बुद्धिजीविया के भी सामाजिक स्वरूप और बनावट मे मौलिक परिवतन हुआ। क्राति की पूववेला मे बुद्धिजीविया मे मुख्यत रूस के पूजीवादी तथा जमीदार वर्गो के लोग थे, मगर १९३९ के अत तक ८० से ९० प्रतिशत तक बुद्धिजीवी मजदूर वग या किसाना मे से आये हुए लोग थे। १९२६ म सोवियत सघ म कुल २,२५ ००० इजीनियर और टेक्नीशियन थे। मगर जनवरी १९३९ की जनगणना से पता चला कि इस बीच म यह सख्या सात गुना बढकर १६,५६,००० तक पहुच गयी थी। इसी अवधि म कृषि के विशेषज्ञा की सख्या ४५,००० से बढकर २९४,००० हो गयी थी। चिकित्सा कमिया की सख्या बढकर १,८२ ००० स ६७९,००० तक पहुच गयी थी। वास्तव मे यही स्थिति सभी क्षेत्रो म थी। ये ठोस फल सास्कृतिक क्राति के थे, जिसने अन्य बाता के अलावा किसाना और मजदूरा के बीच स आय नये बुद्धिजीवियो की सष्टि की थी। पुराने बुद्धिजीविया को सावियत व्यवस्था का समथक बनाने और उन्हे पुन शिक्षित करने का काम भी सफलतापूवक सम्पन्न किया गया। चौथे दशक के अत म बुद्धिजीविया के इस हिस्से मे कोई १,५० ००० स २,००,००० तक लाग थे।

उसी समय जब समाजवाद अपनी अतिम विजय प्राप्त कर रहा था सोवियत सघ के अन्दर नयी समाजवादी जातिया का निश्चित निरूपण हो रहा था। इस सबध मे निर्णायक महत्व की बात थी भूतपूव रूसी

साम्राज्य की उन पिछडी जातियो का समाजवाद मे सक्रमण, जो पूजीवाद की मजिल से बचते हुए आगे समाजवाद के युग म पहुच गया। यह सर्वहारा वग के अधिनायकत्व की स्थापना के कारण सभव हुआ और उन जबदस्त सहायता की बदौलत, जो देश के अधिक उन्नत इलाको के मेहनतकश लोगो ने अपने साथियो को मध्य एशिया, कजाखस्तान, काकेशिया के विभिन्न क्षेत्रो तथा अन्य इलाको मे पहुचायी थी। सोवियत सत्ता ने रूस की समस्त जातियो को उन्मुक्त किया, जातीय उत्पीडन का अत किया और एक सुसगत नीति पर अमल किया, जिसका उद्देश्य देश की समस्त जातियो के राजनीतिक, आर्थिक तथा सास्कृतिक विकास को प्रोत्साहित करना था।

भूतपूर्व रूसी साम्राज्य मे बसी हुई अनेक जातियो न पहली बार राष्ट्रीय राज्यत्व प्राप्त किया। भूमि और सिचाई व्यवस्थाओ म सुधारो की बदौलत वे इस योग्य हुईं कि उत्पादन के पूजीवादपूव सबधो का अत कर सके और समाजवादी परिवतनो के लिए जमीन तैयार कर सके। सोवियत सघ के उद्योगीकरण के दौरान राष्ट्रीय जनतत्रो और प्रदेशो मे उद्योग का विकास विशेष रूप से तेजी से हुआ। नये कारखानो, खदानो तथा अन्य उद्यमो के विकास के साथ-साथ इन इलाको मे एक राष्ट्रीय मजदूर वग विकसित हुआ और नयी समाजवादी जातियो के निर्माण की निर्णायक शक्ति बन गया। किसानो के खेतो का समूहीकरण आम कृषक समूह के लिए—काश्तकारो और भूतपूर्व खानाबदोशो, दोनो के लिए—समाजवाद मे सक्रमण की निर्णयात्मक सामाजिक आर्थिक शत था। सास्कृतिक क्राति ने भी इन जातियो के जीवन मे आश्चयजनक परिवतन कर दिये।

सक्रमणकाल का अत होने तक, क्राति के बीस बरस बाद सोवियत सघ मे बसनेवाली जातियो की आर्थिक और सास्कृतिक असमानता को, जो अतीत की विरासत थी, कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे मिटा दिया गया। समाजवादी जातियो के विकास के आधार पर सोवियत सघ की जातियो मे अटूट बधुत्व पैदा हुआ, रचनात्मक सहयोग के सबध स्थापित हुए और सर्वहारा अतर्राष्ट्रीयतावाद की विचारधारा अत्यत कारगर ढग से अमल मे लायी गयी।

सक्रमणकाल का अत दूसरे पचवर्षीय योजना की पूर्ति के साथ साथ हुआ। वह नयी आर्थिक नीति की समाप्ति का परिचायक था, जिसका

उद्देश्य पूंजीवादी तत्वो पर समाजवादी तत्वो को विजयी बनाना था। इसका मतलब यह था कि सोवियत सघ मे मुख्यतया एक समाजवादी समाज स्थापित हो चुका था।

अग्रगामियो के रास्ते मे हमेशा विशेष रूप से अनेक समस्याए उठा करती है। जो लोग पथप्रदशन करते है और अपन बाद आनेवालो के लिए अपने अनुभव छोड जाते हैं, उसमे केवल विजयें ही नही, बल्कि शिकस्ते और कटु नुकसान भी होते हैं। समाजवादी समाज की ओर जानेवाले माग पर सोवियत सघ के लोगो को वडी छोटी बहुत सी वाधाओ का सामना करना पडा।

इनमे से अनेक का सवध स्तालिन की व्यक्तिपूजा से था। कम्युनिस्ट पार्टी और समस्त सोवियत जनगण स्तालिन का आदर करते थे कि वह क्राति के पहले गुप्त रूप से चलनेवाले वोल्शेविक आदोलन के नेताओ मे से एक थे और अक्तूबर के सशस्त्र विद्रोह गहयुद्ध तथा हस्तक्षेप के दौर के एक महत्वपूण व्यक्ति थे। १६२२ मे स्तालिन को अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बाल्शेविक) की केंद्रीय समिति का महासचिव चुना गया। लेनिन ने जहा क्रातिकारी आदोलन के प्रति स्तालिन की प्रमुख सेवाओ की सराहना की, वहा उन्हे इस बात का डर भी था कि कही स्तालिन महासचिव की हैसियत से उस शक्ति का जो उनके हाथ मे थी, दुरुपयोग न करे। लेनिन न सुझाव दिया कि "साथीगण कोई उपाय स्तालिन का उस पद से हटाने का और उनके स्थान पर किसी दूसरे आदमी को नियुक्त करने का सोचे, जो अन्य सभी पहलुओ से कामरेड स्तालिन से एक ही गुण मे भिन्न हो, यानी साथिया के प्रति उनसे अधिक उदार, अधिक सद्निष्ठ, अधिक विनम्र और साथियो का अधिक खयाल रखनेवाला और कम सनकी हो।"

१६२४ मे पार्टी की १३वी काग्रेस मे प्रतिनिधिया ने लेनिन के सुझाव पर विचार किया। उस समय की ऐतिहासिक परिस्थिति, लेनिनवाद विरोधी गुटो के प्रति स्तालिन के अनम्य व्यवहार तथा त्रोत्स्कीवाद के विरुद्ध सघष मे उनके अनुभव को ध्यान मे रखते हुए प्रतिनिधिया ने निश्चय किया कि स्तालिन के लिए पार्टी की केंद्रीय समिति का महासचिव बना रहना युक्तियुक्त है।

आनेवाले वर्षों मे स्तालिन ने अन्य पार्टी और राज्य नताओ के साथ

मिलकर पहले एक देश मे समाजवाद की विजय के सबध म लेनिन क सिद्धात का प्रतिपादन करन के लिए दृढतापूवक सघप किया और एसा करने मे उनकी प्रतिष्ठा बहुत बढ गयी। उस समय तक वास्तव म उनक हाथ मे जबदस्त शक्ति केद्रित हो गयी थी, लेकिन इसे उस स्थिति मे स्वाभाविक समझा गया जब कि देश पूजीवादी देशो से घिरा हुआ था और शोषक वर्गों के अवशेषो के विरुद्ध तीव्र अदरूनी सघप चल रहा था। स्तालिन को "आज का लेनिन" समझा जाने लगा। ससार क प्रथम सवहारा राज्य के नेता और निर्माता को जो स्नेह और सम्मान प्राप्त था, अनेक पहलुओ से स्तालिन को मिल गया, जिन्हे लेनिन का विश्वासी शिष्य समझा जाता था, जो सक्रिय रूप से लेनिन के महान उद्देश्य की पूर्ति कर रहे थे।

सोवियत जनगण भली भाति अवगत थे कि सवहारा अधिनायकत्व स्थापित किये जानेवाले प्रथम देश को जटिल अदरूनी और अतर्राष्ट्रीय स्थिति का सामना करना है। जासूसी तथा सोवियत विरोधी तोड फोड, जिसके पीछे उन वर्गों के अवशेषो का हाथ था, जिन्हे उनकी पुरानी सत्ता से वचित कर दिया गया था तथा विदेशो द्वारा उकसावे की शत्रुतापूर्ण कारवाइया कल्पना की सष्टि मात्र नही थी। त्रोत्स्की, बुखारिन, जिनोव्येव, कामेनेव रीकोव तथा उनके समथको द्वारा गुटबाजी की पार्टी विरोधी हरकते समाजवादी निर्माण के विकास मे बडी बाधा थी। इस कारण पार्टी के प्रसिद्ध भूतपूव नेताओ को जिम्मेदारी के पदो से हटाया जाना तथा कम्युनिस्ट पार्टी से उनका निकाला जाना बिल्कुल औचित्यपूर्ण जान पडता था। लोग देख रह थे कि जीवन स्तर बराबर ऊचा हो रहा है और इस आम प्रगति को उन्होने स्तालिन के कायकलाप से, उनके सैद्धातिक वक्तव्यो और व्यावहारिक नेतृत्व से जोड दिया।

इस बीच स्तालिन की वे त्रुटिया, जिनसे लेनिन ने चेता दिया था, अधिकाधिक उभरती आ रही थी। स्तालिन ने पार्टी तथा सावजनिक जीवन के लेनिनवादी प्रतिमानो का उल्लघन शुरू किया। उनका यह सिद्धात कि समाजवादी निर्माण म ज्यो-ज्यो अधिक सफलताए प्राप्त होगी, वग सघप और तीव्र होगा, बहुत हानिकारक सिद्ध हुआ। १६३७ म स्तालिन ने बाकायदा यह सिद्धात पश किया, जिसके अनुसार बावजूद इसके कि सोवियत सघ म शोषक वर्गों का उन्मूलन कर दिया गया था और मुख्यतया

समाजवादी निर्माण पूरा हो चुका था, वग सघष तीव्र होता जा रहा था। व्यवहार म इस सिद्धात के परिणामस्वरूप पार्टी, सेना, उद्योग, कृषि, विज्ञान और सस्कृति के क्षेत्र की प्रमुख हस्तियो का अनुचित दमन किया गया।

परिस्थिति की पेचीदगी इस बात म थी कि पहले ही की तरह स्तालिन का नाम समस्त समाजवादी सफलताग्रो का प्रतीक माना जाता था और इसलिए उनकी हरकतो की आलोचना के सारे प्रयत्नो को सुना अनसुना कर दिया गया। अनेक वर्षों के बाद ही यह जाहिर हुआ कि स्तालिन की व्यक्तिपूजा से कितना नुकसान हुआ था। केवल १९५३ मे बेरिया पर, जो कई बरसो तक राज्य सुरक्षा विभाग का सचालक था, मुकदमा चलाने के बाद यह बात सामने आयी कि बहुतेरे मद और औरते, जो पार्टी, सेना और अथव्यवस्था मे प्रमुख स्थान रखते थे, मिथ्या झूठी निन्दा का शिकार हुए।

लेकिन यह बात कई बरस के बाद हुई और चौथे दशक के अत मे स्थिति बिल्कुल भिन्न थी। स्तालिन उस समय सवमान्य नेता थे, जिनपर जनता को अगाध विश्वास था। पचवर्षीय योजनाग्रो को स्तालिन योजनाए तथा १९३६ के सविधान को स्तालिन सविधान कहा जाता था। तब से आज तक जो समय बीत चुका है, उससे हमारे लिए यह सम्भव हो गया है कि सच और झूठ मे, खरे और खोटे म फक कर सके। सच तो यह है कि आज भी स्तालिन को बोल्शेविक पार्टी का एक प्रमुख व्यक्ति और उस समय का सवमान्य नेता स्वीकार किया जाता है। इसी के साथ स्तालिन की व्यक्तिपूजा तथा इससे पैदा होनेवाले नकारात्मक नतीजो की तीव्र निन्दा की जाती है, जिनकी अभिव्यक्ति सवप्रथम सामूहिक [illegible] के सिद्धातो से पथभ्रष्ट होने मे, पार्टी और सावजनिक [illegible] के लेनिनवादी प्रतिमानो का उल्लघन करने मे, दमन की अनुचित [illegible] म हुई।

यह बात स्पष्ट कर देनी चाहिए कि कम्युनिस्टो [illegible] व्यक्तियो की भूमिका से कभी इनकार नही [illegible] कि मजदूर वग अपने नेताग्रो का, जनता [illegible] बहुत आदर करता है। उन लोगो की [illegible] होगा, जिन्हे सामाजिक विकास [illegible]

घटनाओं के ऐतिहासिक विकास पर वस्तुनिष्ठ ढग से प्रकाश डालने तथा विश्व के क्रांतिकारी परिवर्तन का निर्धारित करनेवाले मौलिक नियमों को पहचान लेने की अपनी योग्यता, तथा जनता के मुक्ति संघर्ष में उसका नेतृत्व करने की अपनी कुशलता के कारण प्रमुख स्थान प्राप्त होता है। ऐसे नेताओं के बिना वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सिद्धांत को विकसित करना, शोषकों को परास्त करना तथा वर्गहीन समाज का निर्माण करना असम्भव होता। प्रतिभाशाली विचारक तथा महान व्यावहारिक कर्मी–मार्क्स, एगेल्स और लेनिन ठीक ऐसे ही लोग थे। उनमे से हर एक का जीवन इस बात का पक्का सबूत है कि सर्वहारा नेताओं की प्रतिष्ठा में ऐसी कोई बात नही, जो व्यक्तियो की पूजा के प्रयत्नों के समान हो और यह कि व्यक्तिपूजा की कल्पना ही मूलत मार्क्सवाद लेनिनवाद के प्रतिकूल है।

आज समाजवाद के बहुतेरे विरोधी अक्सर यह कहते सुनाई देते हैं कि उन्होने स्तालिन की हरकतो की निन्दा उन्हीं दिनों की थी, जब सोवियत संघ के लोग उनकी आलोचना सुनने को तैयार नहीं थे। वे यह भूल जाते हैं कि स्तालिन के कार्यकलाप के मूल्यांकन के प्रति सोवियत संघ के लोगों का दृष्टिकोण कम्युनिज्म के दुश्मनों के दृष्टिकोण से मुख्यतया भिन्न है। स्तालिन को पदच्युत करने के अपने प्रयासो मे, चौथे दशक मे भी और आज भी, कम्युनिज्म के शत्रुओं ने समाजवादी निर्माण के पूरे मार्ग को बदनाम करने और एक तरह से यह दिखाने की चेष्टा की कि व्यक्तिपूजा सोवियत समाज के विकास की वस्तुगत नियमितता है। सोवियत जनगण और वे सभी लोग, जो ईमानदारी से इस समस्या का समाधान करना चाहते है, बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण अपनाते है। ऐतिहासिक तथ्यों और घटनाओं के अवधानपूर्ण विश्लेषण से प्रकट होता है कि स्तालिन की व्यक्तिपूजा के कारण सोवियत संघ का विकास अवरुद्ध नही हुआ। व्यक्तिपूजा के बावजूद देश कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे आगे बढ़ता रहा और इसकी समाजवादी व्यवस्था के स्वरूप मे कोई अंतर नहीं हुआ। इसका सबसे ज्वलंत प्रमाण देश की बढती हुई ताकत, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे इसकी प्रतिष्ठा तथा सोवियत सत्ता के प्रथम बीस वर्षों के दौरान का उपयोगी अनुभव था और इसकी ठोस अभिव्यक्ति १९३६ के संविधान में हुई।

१६३५ के शुरू म कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति के एक पूर्णाधिवशन म प्रस्ताव पास किया गया कि सोवियता की अगली काग्रेस के सामने विचाराथ सोवियत सघ क सविधान म अनेक मौलिक सशाधना का सुझाव पश किया जाये, जिनका उद्देश्य उसमे समाजवादी निर्माण के दौरान प्राप्त बुनियादी सामाजिक आर्थिक प्रगति का स्थान देना था। समाजवादी निर्माण उस समय तक मुख्यतया पूरा हा चुका था। इन सशोधना म निर्वाचन प्रणाली को और अधिक जनवादी बनाने, सबको निर्वाचन सबधी समान अधिकार देने, परोक्ष के बजाय प्रत्यक्ष चुनाव तथा खुले मतदान के बजाय गुप्त मतदान जारी करने की व्यवस्था की गयी थी। शीघ्र ही सावियता की सातवी काग्रेस ने इस समस्या पर विचार किया और सोवियत सघ के सविधान का बदलने का प्रस्ताव स्वीकार किया।

जून, १६३६ म एक नये सविधान का मसविदा अखबारा म प्रकाशित हुआ। पाच महीनो स अधिक तक उस ऐतिहासिक दस्तावेज पर आबादी क सभी स्तरो पर और सभी हिस्सा द्वारा बहस की गयी। दूसर शब्दा म इतिहास म अभी तक किसी भी सविधान पर ऐसी राष्ट्रव्यापी बहस नही हुई थी। यह कहना काफी होगा कि श्रमजीवी लोगा न सविधान के प्रारूप म सशोधन और परिवद्धन करने के लिए १,७०,००० से अधिक सुझाव पश किये। इस राष्ट्रव्यापी बहस की बदौलत जनता म राजनीतिक तथा श्रमिक उत्साह उत्पन्न हुआ। यह सही है कि उस समय भी उन लोगा की आवाज़े सुनाई पडती थी, जो शोषक वर्गों, पूजीवादी और राष्ट्रवादी पार्टियो के प्रतिनिधि थे, जिन्ह क्राति ने तितर बितर कर दिया था। लेकिन ऐसी आवाजा की सख्या नगण्य थी। ऐसी हालत म जब कि आबादी के विशाल बहुमत ने सविधान के प्रारूप को स्वीकार किया था, ये कुछ बिखरी और अलग-थलग आवाज़ें केवल यही साबित कर रही थी कि पुराने रूस के शोषक वर्गों को समाजवाद के विरुद्ध सघष मे पूरी शिकस्त हुई थी।

२५ नवम्बर १६३६ को सोवियत सघ की सोवियता की आठवी असाधारण काग्रेस मास्को मे आयोजित की गयी, ताकि नये सविधान पर

विचार और उसको स्वीकार किया जाये। इसके पहले सोवियता की जिला, प्रदेशीय, क्षेत्रीय तथा जनतत्रीय काग्रेसे हो चुकी थी। सविधान के प्रारूप मे काग्रेस के प्रतिनिधियो ने, जो सशोधन स्वीकार किये, उनमें से अधिकाश का सबध शब्दप्रयोग से था। लेकिन कुछ जगहो पर सिद्धात के सवाल भी उठ गये थे मिसाल के लिए एक जगह एक अनुपूरक जोडकर इस बात पर बल दिया गया था कि सामूहिक फार्म को जमीन केवल सदा के लिए ही नही दे दी गयी है, बल्कि मुफ्त इस्तमाल के लिए भी दी गयी है। यह भी जोडा गया कि नागरिको की अपने काम से प्राप्त आय और बचत और एक रिहाइशी मकान पर अपनी निजी सम्पत्ति के रूप मे अधिकार साथ ही निजी सम्पत्ति विरासत मे पाने का उनका अधिकार कानून द्वारा सुरक्षित होगा। काग्रेस ने उन सशोधनो को भी स्वीकार किया, जिनका सबध गैर-रूसी जातीय जनतत्रो और प्रदेशो के प्रतिनिधियो की निर्वाचन प्रणाली से था। यह भी व्यवस्था की गयी कि सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा स्वीकृत कानूनो का सभी सघीय जनतत्रो की भाषाओ मे प्रकाशित किया जायेगा।

५ दिसम्बर, १९३६ को सोवियतो की आठवी काग्रेस ने सोवियत सघ के सविधान का मूलपाठ अतिम रूप मे स्वीकृत किया और तब से ५ दिसम्बर को एक राष्ट्रीय पर्व – सविधान दिवस – के रूप मे हर साल मनाया जाता है।

१९३६ का सविधान सोवियत सघ मे समाजवादी व्यवस्था की विजय की कानूनी अभिव्यक्ति था। सविधान के प्रथम परा मे कहा गया था "सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ मजदूरो और किसानो का समाजवादी राज्य है।' उसमे आगे चलकर बताया गया था कि सोवियत सघ में समाजवादी समाज का राजनीतिक आधार मेहनतकशो के प्रतिनिधियो की सोवियते है तथा सोवियत सघ का आर्थिक आधार इसकी समाजवादी अर्थव्यवस्था तथा उत्पादन के औजारो और साधनो का समाजवादी स्वामित्व है जिसके दो रूप हैं राजकीय सम्पत्ति (जो समस्त जनगण की है) तथा सहकारी और सामूहिक फार्मों की सम्पत्ति। सविधान ने व्यक्तिगत किसानो और दस्तकारो के छोटे निजी कारोबारो की भी आज्ञा दी जो स्वय उनके अपने श्रम पर आधारित हो और जिनमे दूसरो के श्रम के शोषण की गुजाइश नहीं हो।

सविधान के अनुसार सावियत सघ मे। ग्यारह सघीये जनतंत्र। शामिल थे, जिनमे सभी का समान अधिकार प्राप्त थे।* देश मे राज्यसत्ता की सर्वोच्च सस्था सोवियत सघ की सर्वोच्च सावियत है। इसके दो सदन है–सघ की सोवियत तथा जातियो की सावियत और दोनों के अधिकार बराबर है। सावियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमडल दानो सदनो की सयुक्त बैठक म चुना जाता है और इसी प्रकार सोवियत सरकार–सोवियत सघ का जन कमिसार परिषद–भी चुना जाता है।

सविधान म कहा गया है कि सभी नागरिका का काम, अवकाश, शिक्षा वृद्धावस्था म तथा बीमारी या अक्षमता की हालत म आर्थिक निर्वाह का समान अधिकार प्राप्त है। उसमे यह भी कहा गया है कि नर-नारियो को आर्थिक, राजकीय, सास्कृतिक तथा सामाजिक-राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रो मे समान अधिकार हासिल है। सविधान मे इन अधिकारा की जमानत नागरिको को व्यापक पमाने पर इनके पूरे इस्तेमाल की भौतिक सुविधाए सुनिश्चित करके की गयी थी। वह अश खास तौर स महत्वपूण था, जिसका सबध सोवियत सघ के तमाम नागरिका के समान अधिकारो से था, चाहे वे किसी कौम या नस्ल के हो। नस्ली या जातीय श्रेष्ठता की भावना फलाना या नस्ल और जातीयता के आधार पर नागरिका के अधिकारा को सीमित करना नय सविधान म कानून द्वारा दडनीय घापित कर दिया गया।

१६३६ के सविधान मे सावियत राज्य के जीवन म कम्युनिस्ट पार्टी की अग्रणी भूमिका को सवैधानिक रूप दिया गया। इस खास विषय से सबधित पैरा मे कहा गया है "मजदूर वग तथा श्रमजीवी जनगण के अय हिस्सा की पक्तियो म से सबसे सक्रिय और राजनीतिक चेतन नागरिक अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बाल्शेविक) मे एकताबद्ध होत है, जो समाजवादी व्यवस्था का सुदृढ और विकसित करने के लिए

---

*नये सविधान के अनुसार सोवियत सघ म निम्नलिखित सघीय जनतत्र शामिल थे रूसी सोवियत सघात्मक समाजवादी जनतत्र, बेलारूसी, उक्रइनी, आजरबैजानी, आर्मीनियाई, जाजियाई, (इन तीना को मिलाकर पहले ट्रास काकेशियाई सोवियत सघात्मक समाजवादी जनतत्र बना दिया गया था), उजबेक, तुकमान, ताजिक, कजाख तथा किर्गिज सोवियत समाजवादी जनतत्र।

श्रमजीवी जनगण के सघष म उनकी हिरावल है, तथा श्रमजीवी जनता के सभी सगठना, सावजनिक और राजकीय दोनो सगठना का नतत्वकारी केद्र है।"

नये सविधान की स्वीकृति का मतलब यह था कि पूजीवाद से समाजवाद मे सक्रमण अब पूरा हो चुका है। सोवियत इतिहास के प्रथम दो दशको का यह दौर सवहारा अधिनायकत्व का दौर था। चौथे दशक के मध्य तक समाजवादी समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार का निर्माण मुख्यतया हो चुका था और वास्तव म शोषक वर्गों का उन्मूलन कर दिया गया था। इससे उत्पन्न स्थिति मे अब देश के अदर शत्रुतापूर्ण तत्वो का दमन करने की आवश्यकता नही रह गयी थी, और राज्य के सबसे महत्वपूर्ण काम इस अवस्था मे सवप्रथम सगठनात्मक, आर्थिक तथा सास्कृतिक थे। सवहारा अधिनायकत्व का स्थान धीरे धीरे समस्त जनगण का राज्य ले रहा था।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के चुनाव दिसम्बर, १९३७ म नये सविधान के अनुसार किये गये। समान मताधिकार तथा गुप्त मतदान के आधार पर इन प्रत्यक्ष चुनावो के परिणाम इस प्रकार थे कुल १,१४३ प्रतिनिधियो मे ४१ ५ प्रतिशत मजदूर, २९ ५ प्रतिशत किसान तथा २९ प्रतिशत सोवियत बुद्धिजीवियो के नुमाइदे थे। इस प्रसग मे दो तुलनात्मक उदाहरण बहुत अथपूर्ण हैं अतिम क्रातिपूर्व दूमा मे केवल ११ मजदूर तथा शिल्पकार थे, उनमे से पाच बोल्शेविक मजदूर थे, जिन्हे जारशाही सरकार ने प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भ म गिरफ्तार करके साइबेरिया भेज दिया था।

१९३७ के चुनावो मे कुल ९,४१ ३८,१५९ रजिस्टड मतदाताओ में से ९६ ८ प्रतिशत ने मतदान म भाग लिया, और इनमे स ९८ ६ प्रतिशत ने कम्युनिस्टो तथा गर पार्टी लोगो को वोट दिया। प्रतिनिधियो की कुल सख्या मे ८७० अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के सदस्य थे और २७३ गैर पार्टी लोग थे। उनमे १८७ महिलाए थी। सर्वोच्च सोवियत के सदस्यो म ६२ जातियो के लोग शामिल थे। कालीनिन सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमडल के अध्यक्ष चुने गये। कालीनिन जो कम्युनिस्ट पार्टी के बहुत पुराने सदस्य थे, प्रारम्भ म त्वेर गुबेनिया म किसान और फिर पेत्रोग्राद म धातुकर्म मजदूर थे।

समाजवाद के निर्माण मे सोवियत सघ की उपलब्धिया से सारी दुनिया के प्रगतिशील नर-नारिया प्रभावित हुए। १६३७ मे प्रमुख जमन लेखक हाइनरिक मान ने "एक भाव का साकार रूप" के शीषक से एक लेख प्रकाशित किया, जिसम लिखा था "समाजवाद ससार के सबसे बडे देश मे विजयी सिद्ध हुआ है और उसने अपनी प्रबल जीवन शक्ति का परिचय दिया है अब से मानवजाति के समस्त इतिहास मे प्रगति का एक ही माग होगा।"

उसी साल एक और प्रसिद्ध लेखक तथा फासिज्म के विरोधी लिग्रोन फ्ख्तवागर ने भी मास्को की यात्रा की। उन्होने लिखा "मैं जब मास्को के लिए रवाना हुआ, ता हमदद था लेकिन शुरू से ही मेरी हमदर्दी मे कुछ सन्देह भी मिला हुआ था।" सोवियत सघ से विदा होते समय लेखक निम्नलिखित निष्कप पर पहुच चुके थे जब पश्चिम के असह्य वातावरण से निकलकर "आप सोवियत सघ की ताजा हवा म पहुचते है, तो यकायक आप अधिक मुक्त रूप से सास लेने लगत है कूडाकरकट और गदी शहतीरे अभी भी इधर-उधर पडी दिखाई देती ह, लेकिन आलीशान इमारत की उज्ज्वल बाह्य रेखाए दूर स ही उभरी हुई दिखाई देने लगती है पश्चिम के अरुचिकर दश्य के बाद ऐसी कृति को देखना कितना सुखद है, जिसका आप तहेदिल से स्वागत किये विना नही रह सकत'।

समाजवादी निर्माण, सास्कृतिक प्रगति तथा मेहनतकशा के [illegible] जनसमूह के आम जीवनस्तर को ऊचा करने मे सोवियत [illegible] उपलब्धिया न माक्स, एगेल्स और लेनिन के वैज्ञानिक सिद्धात [illegible] शक्ति सिद्ध कर दी। सोवियत जनगण, जिन्होने समा[illegible] समाजवादी परिवतनो के माग पर कदम रखा, [illegible] बन गय।

अक्तूबर क्राति की बीसवी जयती क [illegible] जुलूस, जन सभाए और समारोह हुए। [illegible] और गावो मे ही नही, बल्कि विदेशा [illegible] ने उस जयती को एक महान त्यागर [illegible] अतराष्ट्रीय सवहारा वग की एक[illegible] था हर जगह लोग १६१७ को [illegible]

व्यवस्थाओं – पूंजीवाद और समाजवाद – के विकास के परिणामों की तुलना कर रहे थे। वे सचेष्ट थे कि उन्हें सोवियत समाज के जीवन को प्रत्यक्ष आंखों से देखने का अवसर मिले। सोवियत संघ असंख्य विदेशियों, खासकर मजदूरों के प्रतिनिधिमंडलों का तीर्थस्थान बन गया। १ मई को दिवस तथा अक्तूबर क्रांति जयंती के समारोहों में भाग लेने के लिए लोग बड़ी संख्या में आये।

१ मई, १९३८ को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल के अध्यक्ष कालीनिन ने विदेशी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा "हम की धरती पर आपको दूध और शहद की नदियां बहती नहीं मिलतीं। हमारा राज्य मेहनतकशों का है। हमने अपना काम अत्यंत दरिद्रता की स्थिति में शुरू किया, या अधिक सजीव ढंग से या कहेंगे कि रात्रिनिवास कुंजों की हस्त निर्मित कुटियां से शुरू किया शायद इस काम में बहुत सी गलतियां की गयी हैं, शायद कुछ काम हमने गलत ढंग से किये, यह मैं मानने को तैयार हूं। लेकिन एक बात मुझे आपसे कहनी जरूरी है सर्वहारा जगत जन्म ले रहा है सोवियत संघ सर्वहारा वर्ग का मसला है।"

बीस वर्ष की अवधि एक व्यक्ति के जीवन में भी छोटी अवधि है और जब किसी ऐसे देश के इतिहास की बात हो, जो अपने स्वतंत्र पथ पर अन्य किसी राज्य की सहायता के बिना अग्रसर हुआ हो, तो यह समय और भी छोटा हो जाता है। इसी लिए उन प्रथम दशाब्दियों के नतीजे और भी अधिक महत्वपूर्ण मालूम पड़ते हैं। विश्व के प्रथम राज्य में, जहां सर्वहारा अधिनायकत्व स्थापित हो चुका था, समाजवादी परिवर्तन एक ऐतिहासिक वास्तविकता बन चुका था।

सोवियत संघ महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध की पूर्ववेला में १९३८–१९४१

सोवियत संघ का शांति के लिए संघर्ष

जनवरी, १९३३ में जर्मनी के वयोवृद्ध जर्मन राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग ने फासिस्टों के नेता अडोल्फ हिटलर को जर्मन राज्य का चांसलर नियुक्त कर दिया। उस समय से जर्मनी ने युद्ध की तैयारियां तेज कर दी।

पश्चिमी राष्ट्रों की सहयोग करने की अनिच्छा के बावजूद सोवियत संघ ने अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ करने के अपने प्रयास जारी रखे। १९३३ में राष्ट्र संघ की सुरक्षा समिति में सोवियत संघ ने आक्रमण तथा हमलावर पक्ष या आक्रमणकारी की व्याख्या करने का एक प्रस्ताव रखा। ३ जुलाई, १९३३ को अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने लंदन में सोवियत प्रस्ताव पर आधारित एक करारनामे पर हस्ताक्षर किये जिसमें "हमले" की धारणा की व्याख्या की गयी थी।

१९३३ में सोवियत संघ से राजनयिक संबंध रखनेवाले देशों की संख्या में और वृद्धि हुई। जुलाई में सोवियत संघ ने स्पेनी जनतंत्र के साथ, तथा अगस्त में उरुग्वे के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किये। सितम्बर में सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमरीका के बीच राजनयिक संबंध की स्थापना की बाबत एक सरकारी घोषणा प्रकाशित हुई।

यह पूछा जा सकता है कि संयुक्त राज्य अमरीका के रवैये में परिवर्तन का क्या कारण था, खासकर यह देखते हुए कि वह देश कई वर्षों से सोवियत संघ की 'अमान्यता' की नीति पर डटा हुआ था। इसके अनेक कारण थे सोवियत संघ के प्रति अमरीकी जनगण के व्यापक भाग की सहानुभूति, सोवियत संघ के साथ लाभदायक ठेके करने की अमरीकी उद्योगपतियों की आशाएं, और किसी हद तक अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र के

घटनाचक्र। अन्य देशों में भी बड़ी सख्या म लोगा न सावियत सघ ् सयुक्त राज्य अमरीका के बीच राजनयिक सबध स्थापित करन पर ब दिया।

विश्व निशस्त्रीकरण आयोग के मई १९३४ के अधिवेशन म प्रतिनिधिमडल ने सुझाव रखा कि इस स्थाई शाति सम्मेलन में कर दिया जाये। उस दौर म जब कि जर्मनी और इटली का सरकार अपनी आक्रमणकारी योजनाओ को अमल मे लाने की तयारी रही थी और सैन्यवादी जापान न चीन पर हमला शुरू कर दिया था यह अत्यावश्यक था कि शाति सम्मेलन शस्त्रास्त्रा म कटौती तथा प्रतिबं की समस्याओ पर पुन विचार करता रहे, यूरोपीय और केवल यूरोप ही नही, सुरक्षा को सुदृढ करने के उपाय ढूढे तथा सनिक टकरावो को रोकने के रास्ते निकाले।

यद्यपि सोवियत सुझावो को स्वीकार नही किया गया और सम्मेलन ने अपना काम वास्तव मे बद कर दिया, सोवियत सुझावा ने समार को आक्रमण रोकने के वास्तविक उपाय दिखला दिये।

अधिक दूरदर्शी पश्चिमी राजनीतिज्ञो ने यूरोप में जर्मनी और इटली तथा सुदूर पूव म जापान की आक्रामक आकाक्षाओ के विरुद्ध सोवियत सघ के सघर्ष के महत्व को समझ लिया था। राष्ट्र सघ मे सावियत सघ के दाखिले का सवाल उठ खडा हुआ। १५ सितम्बर, १९३४ को फ्रांस की पहल पर मास्को भेजे गये एक तार म सोवियत सघ को तीस देशों के नाम पर राष्ट्र सघ मे शामिल होने का निमत्रण दिया गया था।

युद्ध के खतरे को दूर करने के लिए सभी साधनो को जुटाने की जरूरत को देखते हुए सोवियत सघ ने राष्ट्र सघ की स्पष्ट कमजोरियों के बावजूद उसके साथ सहयोग करने का निश्चय किया। निमत्रण के जवाब म सोवियत सरकार ने घोषणा की कि "वह प्राप्त सदेश को स्वीकार करने तथा अनुकूल स्थान धारण करने पर राष्ट्र सघ का सदस्य बनने को तथा राष्ट्र सघ के सदस्या के लिए आवश्यक अतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों और निश्चयो को पूरा करने पर तैयार है "

राष्ट्र सघ के १५ वे महाधिवेशन मे सावियत प्रतिनिधिमडल के नेता लित्वीनोव ने इस अतर्राष्ट्रीय सगठन में सोवियत सघ के दाखिले के सवाल पर बोलते हुए बताया कि सोवियत सघ राष्ट्र सघ की सभी कार्रवाइयों

से सहमत नही है और "सगठन मे शामिल होनेवाले हर नये सदस्य की तरह वह उन्ही प्रस्तावो को नैतिक स्वीकार करता है जा उसकी शिरकत तथा सहमति से स्वीकार किये गये हैं।"

ज्या ही सोवियत सघ राष्ट्र सघ का सदस्य बना उसने निशस्त्रीकरण की समस्या के समाधान सम्बधी कारवाइया करने का सवाल उठाया। यह बात खासकर इसलिए महत्वपूण थी कि १६३५ म जमन सरकार ने सार्विक सैनिक सेवा लागू करने की घोषणा कर दी थी। उसी समय इटली अपनी सेनाए अबीसीनिया (इथियोपिया) की सीमा पर जमा कर रहा था। सोवियत सघ ने आक्रमण को रोकन के लिए सभी शातिप्रेमी शक्तिया को एकजुट करन की अपील की। मगर अबीसीनिया पर इटली के हमले के बाद ही राष्ट्र सघ की परिषद ने इटली का आक्रमणकारी घोषित किया और उसके विरुद्ध वित्तीय तथा आर्थिक कारवाई करने का प्रस्ताव स्वीकार किया। लेकिन १६३६ की गमियो मे ही ब्रिटिश प्रतिनिधिमडल की पहलकदमी पर राष्ट्र सघ ने उनको रद्द करने का फसला किया।

१६३६ के वसत से दानो फासिस्ट शक्तिया—जमनी और इटली—ने यूरोप मे अपनी योजनाम्रा को कार्यान्वित करना शुरु किया। ७ माच का जमन सेनाम्रो ने असैनिकीकृत राइनलैंड मे प्रवेश किया। फासिस्ट जमनी ने आक्रमण का अपना पहला कदम उठाया। लगता था कि पश्चिमी शक्तिया अब आक्रमणकारियो के खिलाफ निणयकारी कदम उठायेगी और युद्ध का रास्ता रोकने के लिए राष्ट्र सघ से काम लेगी। बलिन से जमन सेनाम्रा को यह आदेश भी जारी कर दिया गया था कि फ्रासीसी सेनाम्रो से मिलने पर उनसे लडना नही, बल्कि वापस लौट आना। मगर फासीसी सेनाए कही विद्यमान नही थी।

१६३६ के वसत मे आक्रमणकारिया का पीछे हटने पर बाध्य करना आसान था। यूरोप तथा ससार भर को आनेवाले युद्ध से बचाने के लिए निणयात्मक फौरी कारवाई करनी जरुरी थी। ठीक इसी प्रकार की कारवाई करने का सुझाव सोवियत सरकार कर रही थी। लेकिन पश्चिमी देशो के शासक हल्का की सोवियत सघ से सहयोग करने की कोई इच्छा नही थी और उनकी कारवाइया से वास्तव मे आक्रमणकारिया को प्रोत्साहन मिला। परिस्थितिवश राष्ट्र सघ भी कोई अमली कदम नही उठा सकता था।

स्पेन की जुझारू जनता के समर्थन में लाल चौक में एक जन सभा।
मास्को, १९३६

आक्रमणकारी मनमाना करने लगे। १८ जुलाई, १९३६ को स्पेन की वैधानिक सरकार के विरुद्ध बगावत का झंडा उठाया गया। फासिस्ट जर्मनी और इटली ने प्रत्यक्ष हस्तक्षेप करके उसका समर्थन किया। सोवियत संघ एकमात्र देश था जिसने फासिज्म तथा आक्रमण के विरुद्ध स्पेनी जनता के समर्थन की सुसंगत नीति अपनाई।

पश्चिमी शक्तियां आक्रमणकारियों को प्रोत्साहन देती रहीं। १९३६ के अंत में बर्लिन में जर्मनी और इटली में सहयोग संबंधी एक संधिपत्र पर हस्ताक्षर हुए जो "बर्लिन-रोम धुरी" के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके बाद जर्मनी ने जापान के साथ एक तथाकथित कमिंटर्न विरोधी संधि पर हस्ताक्षर किया, और अगले वर्ष इटली इस संधि का तीसरा पक्षधर बन गया। इस तरह तीनों आक्रमणकारी देशों में एक सैनिक राजनीतिक संघ बनाया गया जिसे आम तौर से "रोम-बर्लिन-टोकियो त्रिकोण" कहा जाता था। कम्युनिस्ट इंटरनेशनल के विरुद्ध संघर्ष में सहयोग की घोषणा करके जर्मनी, इटली और जापान ने अपनी दूरव्यापी हस्तक्षेपकारी योजनाओं को पूरा करने के लिए कमिंटर्न विरोधी संधि का इस्तेमाल किया।

युद्ध के बढ़ते खतरे और सैन्यवाद-विरोधी भावनाओं के तेज होने की परिस्थितियों में पश्चिम के शासक हल्के यूरोपीय सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने के सोवियत सुझावों को बराबर रद्द नहीं कर सकते थे। १९३५ में फ्रांसीसी सरकार ने सोवियत संघ के साथ एक परस्पर सहायता की संधि की।

उसी समय सोवियत संघ ने फ्रांस के मित्र राष्ट्र चेकोस्लोवाकिया के साथ भी एक परस्पर सहायता की संधि की। सोवियत-चेकोस्लोवाक संधि में एक शर्त यह थी कि परस्पर सहायता उसी समय दी जायेगी जब फ्रांस आक्रमण के शिकार देश की मदद के लिए आयेगा। इन दो संधियों के संपन्न होने से यूरोप में सामूहिक सुरक्षा की व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करने की दिशा में एक कारगर कदम उठाया गया। लेकिन पश्चिमी शक्तियां इसमें आगे जाने को तैयार नहीं थी।

सुदूर पूर्व में शांति को सुदृढ़ करने की खातिर सोवियत सरकार ने १९३६ में मंगोली जनवादी जनतंत्र के साथ एक परस्पर सहायता संधिपत्र पर हस्ताक्षर किये। अगस्त १९३७ में चीन के साथ एक अनाक्रमण संधि पर हस्ताक्षर हुए।

सोवियत संघ द्वारा शांति को प्रशस्त करने के स्पष्ट प्रयासों के बावजूद जापानी सरकार सोवियत सीमा पर उकसावा भरी कार्रवाइयां करती रहती थी। १९३८ की गर्मी में जापानी सैनिक नेताओं ने हसन झील के निकट सोवियत इलाके पर हमला बोल दिया। जापानी आक्रमणकारियों को मुंह की खानी पड़ी और उन्हें सोवियत संघ से खदेड़ दिया गया।

इस बीच यूरोप में आक्रमण के नये कदम उठाने की तैयारियां हो रही थी। १९३८ की वसंत में जर्मनी ने आस्ट्रिया को हड़प लिया और शीघ्र ही चेकोस्लोवाकिया के कुछ इलाकों पर दावे पेश किये।

जब यह बात स्पष्ट हो गई कि फ्रांस चेकोस्लोवाकिया के साथ अपनी संधि के बावजूद उसकी सहायता के लिए नहीं आयेगा, तो सोवियत संघ ने ऐलान किया कि अगर चेकोस्लोवाक सेना आक्रमण का सामना करने के लिए उठ खड़ी हो और चेकोस्लोवाक सरकार सोवियत संघ से सहायता मांगे, तो सोवियत संघ उसकी सैनिक सहायता करने के लिए तैयार है। पूंजीवादी चेकोस्लोवाकिया के शासकों ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार किया। पेरिस और लंदन में हिटलर से एक और सौदेबाजी की गई। सितम्बर, १९३८ के अंत में म्यूनिक में फासिस्ट तानाशाहों हिटलर और मुसोलीनी

ने ब्रिटिश प्रधान मंत्री चेम्बरलेन तथा फ्रांसीसी सरकार के प्रत्यक्ष दबाव से भेंट की। परिणामस्वरूप चेकोस्लोवाकिया के एक भाग पर जर्मनी ने बिना किसी प्रतिरोध के दखल कर लिया। "म्यूनिख" शब्द एक [illegible], हमलावरों से गठजोड़, विश्वासघात का प्रतीक बन गया।

हसन झील के नजदीक जाग्राज्योर्नाया पहाडी पर लाल झंडा पहराया गया

जैसा कि आशा की जानी चाहिए थी ब्रिटेन तथा फ्रांस की इस रिआयत से नाज़ियों के कदम नहीं रुके। १५ मार्च, १९३९ को उन्होंने पूरे चेकोस्लोवाकिया पर कब्ज़ा कर लिया।

उस समय जब नाज़ी जर्मनी यूरोप मे एक के बाद एक आक्रमणकारी कारवाई कर रहा था, ब्रिटिश और फ्रांसीसी सरकारा ने सोवियत सघ से बातचीत शुरू करने का प्रस्ताव किया। लेकिन यह केवल एक चाल थी जिसका उद्देश्य, एक ओर इन दोना देशो और सारे ससार म जनता को धोखा देना, उन सरकारो द्वारा अपनाये गये राजनीतिक मार्ग की असली दिशा को छिपाना था और दूसरी ओर, सोवियत सघ के साथ इन दोना देशो के मेल मिलाप का डर दिखाकर जर्मनी से राजनयिक सौदेबाज़ी मे अपने लिए अधिक लाभदायक स्थिति को सुनिश्चित करना था।

सोवियत सघ ने जर्मन आक्रमण के खिलाफ सयुक्त कारवाइ करने के लिए ब्रिटेन और फ्रास से समझौता करने का कोई प्रयास उठा नही रखा। लेकिन ब्रिटेन और फ्रास के साथ अगस्त, १९३९ म मास्को मे जो वार्तालाप शुरू हुआ, उससे पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि लन्दन और पेरिस वास्तव मे सोवियत सघ के साथ सहयोग करने के इच्छुक नही थे।

ब्रिटेन और फ्रास दोनो अभी तक नाज़ी आक्रमण का रुख पूर्व की ओर मोडने के सपने देख रहे थे। उनके इस रवैये के कारण बाध्य होकर सोवियत सघ को हिटलरी जर्मनी द्वारा प्रस्तुत अनाक्रमण सधि का सुझाव स्वीकार करना पडा। अगस्त, १९३९ में यह सधि सपन्न हुई। "इज्वेस्तिया" के एक सवाददाता को एक इटर्व्यू म मार्शल वोरोशीलाव न बताया "ब्रिटेन तथा फ्रास से हमारी बातचीत इसलिए नही टूटी कि सोवियत सघ न जर्मनी से अनाक्रमण सधि की, वास्तव मे सोवियत सघ को जर्मनी के साथ अनाक्रमण सधि करने पर मजबूर होना पडा क्योकि अपार मतभेदो के कारण फ्रास और ब्रिटेन से सैनिक वार्तालाप जिच पर पहुच चुका था।"

आगे के समस्त घटनाचक्र ने यह सिद्ध कर दिया कि १९३९ की गर्मी के उस तनावपूर्ण और जटिल वातावरण म सोवियत सरकार ने एकमात्र सही रास्ता अपनाया।

उस समय घटनाए एक पर एक बडी तेज़ी के साथ हो रही थीं। १ सितम्बर, १९३९ को जर्मनी ने पोलैंड पर हमला कर दिया। केवल उसके बाद ही ब्रिटेन और फ्रास ने जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने का निश्चय किया। लेकिन कोई बडी सैनिक कारवाई करने का उनका

कोई इरादा नही था। इस बीच हिटलर की सेनाओ ने डेनमार्क और नार्वे पर अधिकार कर लिया और मई, १९४० म वे हालड, बेलजियम और लुक्जमबग से होती हुई फ्रास मे बढी।

उसी समय सावियत सघ और फिनलैंड म टक्राव हुआ। बात यह है कि सावियत फिनिश सीमा लेनिनग्राद से, देश के दूसरे सबसे बडे नगर से ३२ किलोमीटर की दूरी पर थी। फिनलडवालो न सीमा पर भारी तोपखानेवाली मोर्चेबन्दिया स्थापित कर दी थी। विश्वयुद्ध की स्थितियो मे साम्राज्यवादी शक्तिया अपनी सोवियत विरोधी योजनाओ में फिनलैंड को इस्तेमाल करके लेनिनग्राद को सख्त जोखिम म डाल सकती थी। सोवियत सरकार ने फिनिश सरकार से एक परस्पर सहायता सधि करने का प्रस्ताव पेश किया। लेकिन इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया। तब सोवियत सरकार ने यह सुझाव रखा कि सोवियत फिनिश सीमा रखा को लेनिनग्राद से कुछ दूर पीछे हटा दिया जाये और उसके बदले मे उसका दोगुना इलाका करेलिया मे देने का सुझाव रखा। मगर फिनलड के प्रतिक्रियावादी हल्के, जिन्हे पश्चिमी देशो की सरकारो द्वारा सक्रिय रूप म उक्साया जा रहा था बराबर अडे रहे तथा सावियत फिनिश सीमा पर छेड छाड की कारवाइया करते रहे, जिन्होंने अन्त में सशस्त्र टक्राव का रूप ले लिया। मार्च, १९४० मे सोवियत सघ और फिनलैंड के बीच शाति सधि पर हस्ताक्षर हुए जिसके अनुसार लेनिनग्राद के उत्तर-पश्चिम का इलाका सावियत सघ को मिला और करेलिया का एक बडा क्षेत्र फिनलड को दे दिया गया।

उस समय की तनावपूण अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति मे सोवियत सघ न अपनी सुरक्षात्मक क्षमता को सुगठित करने मे पूरा जोर लगा दिया।

तीसरी पचवर्षीय योजना का प्रारम्भ

जनवरी, १९३८ म दश के नये सविधान के अनुसार निर्वाचित सावियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का प्रथम अधिवेशन मास्को म हुआ। प्रतिनिधियो न कालीनिन की अध्यक्षता म सोवियत सघ की सर्वोच्च सावियत का अध्यक्षमडल चुना। फिर सावियत सघ की सरकार–जन कमिसार परिषद–की रचना की गई मालातोव उसके अध्यक्ष चुन

गये। राज्य सत्ता के नवनिर्वाचित निकाया के समक्ष महान और जटिल कायभार थे। उस समय तक आथिक विकास के क्षेत्र म प्राप्त सफलताए सवविदित थी। कुल औद्योगिक उत्पादन की दष्टि से सोवियत सघ का स्थान यूरापीय राष्ट्रा म प्रथम और ससार म (सयुक्त राज्य अमरीका के बाद) दूसरा था। मगर जनसख्या के प्रति व्यक्ति पैदावार की मात्रा सयुक्त राज्य अमरीका ही नही, ब्रिटेन, जमनी और फ्रास से भी कम थी। जहा तक बिजली शक्ति का सबध है, फ्रास, ब्रिटेन और जमनी की पैदावार सोवियत सघ की तुलना मे क्रमश १०० प्रतिशत से अधिक, लगभग २०० प्रतिशत और २५० प्रतिशत ऊपर थी। उपभोग सामान के मामले मे भी यही स्थिति थी।

परन्तु सोवियत अथव्यवस्था उस समय तक ऐसे स्तर पर पहुच चुकी थी जहा उन लक्ष्याका की पूर्ति के लिए निश्चित समय निर्धारित करना सम्भव हो गया जिनसे समाजवाद के सारतत्व की अधिकतम सपूण अभिव्यक्ति हागी और पूजीवादी अथव्यवस्था पर उसकी श्रेष्ठता का परिचय मिलेगा।

सोवियत जनगण के सामन अब वह कायभार था जिस लेनिन कइ वष पूव बता चुके थे और वह था प्रति व्यक्ति औद्योगिक उत्पादन की दष्टि से सबसे उन्नत पूजीवादी देशा तक पहुच पाना और उनसे आगे निकल जाना। यह कायभार—अब व्यावहारिक रूप मे—माच, १९३९ मे कम्युनिस्ट पार्टी की १८वी काग्रेस म पेश किया गया। इससे कुछ ही पहले (जनवरी, १९३९ मे) राष्ट्रव्यापी जनगणना से सोवियत समाज की सम्भावनाओ का पक्का सबूत मिल गया था जो महान, ऐतिहासिक दृष्टि स परिपक्व कायभार को पूरा करनेवाला था। १९३९ की जनगणना दूसरी अखिल सघीय जनगणना थी पहली १९२६ के अत मे की गई थी जब अथव्यवस्था का समाजवादी पुनर्निमाण अभी शुरू ही किया गया था। दोना जनगणनाओ मे प्राप्त आकडा से १९२६–१९३९ के परिणाम देखे जा सकत थ।

१९३९ मे कुल जनसख्या १७,०६,००,००० थी, यान १९२६ की तुलना म काई २,४०,००,००० अधिक। विचाराधीन अवधि मे आबादी मे सालाना वृद्धि सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रास और जमनी की तुलना म काफी अधिक थी। १२ वर्षों म शहरी आबादी दागुनी से अधिक हा गई

थी और लगभग एक तिहाई आबादी शहरो मे रहने लगी थी। नये औद्योगिक केंद्र उत्पन्न हो गये थे जैसे कराग़दा, कोम्सोमोल्स्क-आन आमर, मग्नितोगोस्क, मगादान, खिबीनोगोस्क (जिसका नाम बाद मे कीरोव्स्क पडा), चिरचीक (ताशकन्द के पास) तथा अन्य दजनो शहर। यह बात ध्यान देने योग्य है कि लगभग इन सब केंद्रो का निर्माण देश के पूर्वी भाग मे किया गया था जो पहले रूसी साम्राज्य के सबसे पिछडे इलाके थे। आबादी की सबसे अधिक वृद्धि सोवियत सघ के गैर रूसी जनतत्रो म हुई थी।

मजदूर और दफ्तरी कमचारी (अपने परिवारो समेत) पूरी जनसख्या म आधे के बराबर थे। जनगणना के अन्य आकडो स भी एक नई जीवन पद्धति स्थापित करने मे सोवियत राज्य की उपलब्धियो का पता चलता था। चौथी दशाब्दी के अत तक आठ और पचास के बीच की आयु के लगभग सभी सोवियत नागरिक पढ लिख सकते थे और आबादी का करीब छठा भाग माध्यमिक या उच्च शिक्षा पूरी कर चुका था।

इस जनगणना के विश्लेषण तथा इसी प्रकार की अन्य सामग्री के वैज्ञानिक विश्लेषण से सोवियत सरकार के लिए यह सम्भव हो गया कि १०–१५ वर्षों की अवधि के लिए देश के आर्थिक विकास की दीघकालीन योजना की तैयारी का काम शुरू करे। इस उद्देश्य की दिशा मे पहला कदम १९३८–१९४२ की अवधि की एक पचवर्षीय योजना थी। इस अवधि के भीतर औद्योगिक उत्पादन की दोगुनी, कृषि उत्पादन की डेढगुनी वृद्धि और सभी लोगो की भौतिक स्थिति मे काफी उन्नति करनी थी।

निर्धारित लक्ष्याको की पूर्ति का काम जटिल स्थिति मे हुआ। चौथी दशाब्दी के अत मे देश के आर्थिक विकास के रास्ते की बाधाओ का दूर करने के लिए पूरा जोर लगाने की जरूरत थी। कृषि की अपनी गम्भीर समस्याए थी जिन्हे हल करना था। ट्रैक्टरो तथा अन्य कृषि मशीनो का उत्पादन बहुत घट गया था। १९३३–१९३७ की अवधि म मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो को औसतन प्रति वष ४८,५०० ट्रैक्टर दिये गय थे, मगर तीसरी पचवर्षीय योजना के दौरान यह आकडा घटकर १४,००० रह गया था। खनिज खाद की पैदावार भी कम हो गई।

इसके कारण प्रत्यक्ष थे। द्वितीय विश्वयुद्ध छिड चुका था और सनिक आक्रमण के खतरे की वजह से यह जरूरी हो गया था कि लाल सना

के लिए सामान के उत्पादन मे बहुत विस्तार किया जाये और देश की प्रतिरक्षा क्षमता को प्रबल किया जाये। उद्योग की अनेक शाखाओ और अलग अलग उद्यमो का पुनगठन करना पडा तथा विशिष्टीकरण और सहकारिता की व्यवस्था को भग करना पडा और उन उद्यमो का उत्पादन सीमित करना पडा जिनमे अत्यावश्यक कच्चा माल और साज सामान इस्तेमाल किया जाता था। उपलब्ध राज्य कोष सीमित था और इसके अलावा बहुत थोडे समय मे उसका पुन वितरण करना था। जो जनतत्र और प्रदेश १९३९ और १९४० मे सोवियत सघ में शामिल हुए थे (देखिये पृष्ठ २७५), उनमे समाजवादी अर्थव्यवस्था का सघटन और समायोजन करने के लिए बडे पैमाने पर अतिरिक्त धनविनियोजन की जरूरत थी।

सरकार तथा कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति ने अनेक विशेष निणय किये जिनकी तामील ने औद्योगिक उत्पादन के विकास म बडी महत्वपूण भूमिका अदा की। उद्योग मे प्रबध के स्वरूपो को समानुकूल बनाया गया। उदाहरण के लिए मशीन निर्माण उद्योग की काफी विस्तारित जन कमिसारियत को भारी, मध्यम तथा सामान्य मशीन निर्माण की तीन जन कमिसारियता मे बाट दिया गया। इसी प्रकार भारी मशीन निर्माण उद्योग की जन कमिसारियत को कोयला, तल, लौह धातु तथा रासायनिक आदि उद्योगो की अनेक अलग-अलग जन कमिसारियतो मे विभाजित कर दिया गया। निर्माण की एक ही अखिल सघीय जन कमिसारियत गठित की गई। वेतन प्रणाली की सुव्यवस्था से, खासकर भारी उद्योग मे, मेहनतकशो के विशाल समूह के लिए भौतिक प्रेरणा मे वृद्धि हुई। राज्य और ट्रेड-यूनियनो ने अग्रणी मजदूरो को प्रोत्साहन के रूप मे अवकाश गृहो तथा सेनेटोरियमो और बेहतर रिहाइशी मकानो आदि की व्यवस्था की।

१९३९ मे अर्थव्यवस्था की विभिन्न शाखाओ के बीच राष्ट्रव्यापी समाजवादी प्रतियोगिता ने फिर जोर पकडा। भौतिक प्रोत्साहन के साथ ही साथ विशेष लाल ध्वजाए, सम्मानसूचक बैज और प्रमान पत्र, प्रशसा-पत्र, समाचारपत्रो मे लेख और चित्र, रेडियो कार्यक्रम, सम्मान फलक, पदको और विशेष रूप से स्थापित तमगो ("सम्मानित श्रम के लिए' तथा "श्रम वीरता के लिए') से भी लोगो के श्रम प्रयत्न को तेज करने मे सहायता मिली। १९३८ मे श्रम म असाधारण सफलता प्राप्त करनेवालो के लिए

"समाजवादी श्रम वीर" की एक उच्चतम उपाधि जारी की गई। जिन लोगों को इस उपाधि से विभूषित किया गया उन्हें लेनिन पदक तथा स्वर्ण सितारा जिसपर हंसिया और हथौड़ा खुदा हुआ था, प्रदान किया गया।

देश के सर्वश्रेष्ठ मजदूरों द्वारा प्रदर्शित पहलकदमी का व्यापक प्रचार किया गया और शीघ्र ही उनका अनुसरण करनेवालों की संख्या बहुत बढ़ गई। क्रिवोई रोग के ड्रिलर सेमिवालास ने जब एक के बजाय अनेक कोयला निकास स्थानों की सेवा करनी शुरू की तो देश भर से कोयला खदानों के मजदूर तथा इंजीनियर उनका काम देखने के लिए आने लगे। हजारों खान मजदूरों ने सेमिवालास का तरीका अपना लिया। शीघ्र ही उनके कई शिष्य उनसे भी आगे निकल गये। रेलवे इंजन दलों ने अपने रोजमर्रे की मरम्मत का काम स्वयं करना आरम्भ किया। इसका ख्याल सबसे पहले नोवोसिबीर्स्क के इंजन ड्राइवर लूनिन को आया और रेलवे तथा देश के भीतरी जलमार्गों और समुद्री बेड़ों के हजारों श्रमिक दलों ने उनका अनुसरण किया।

१९४० में कृषि में राज्य द्वारा खरीदारी की एक नई व्यवस्था जारी की गई। उससे पहले तक सामूहिक फार्मों द्वारा अनिवार्य सप्लाई की मात्रा का अंदाजा बुवाई के क्षेत्रफल और मवेशियों की संख्या पर निर्भर था। अब कृषि पैदावार की सप्लाई की मात्रा सामूहिक फार्म के पास कुल जमीन के क्षेत्रफल पर निर्भर थी। इससे अपनी जमीन के बेहतर इस्तेमाल तथा पशुपालन के विकास में सामूहिक फार्मों को प्रोत्साहन मिला। कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति की सिफारिश पर जारी की गई कृषि उत्पादन तथा मवेशी की संख्या में वृद्धि के लिए अतिरिक्त अनुदानों और बोनसों की व्यवस्था के भी अच्छे परिणाम निकले। इन सभी कारवाइयों से सामूहिक फार्मों को सुदृढ़ करने में सहायता मिली और सामूहिक किसानों की समृद्धि बढ़ी।

कृषि उत्पादन में राजकीय फार्मों की भूमिका भी बराबर बढ़ती जा रही थी। १९४० में अनाज की राजकीय खरीदारी में उनका दसवां हिस्सा था, मांस में छठा हिस्सा और कपास में ६ प्रतिशत था।

१ अगस्त, १९३९ को मास्को में सोवियत संघ की कृषि प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया जिसने व्यापक पैमाने पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उसने सोवियत देश की कृषि व्यवस्था की बढ़ती हुई क्षमता का प्रदर्शित

किया और साथ ही उन्नत काय पद्धतियो के प्रचार केंद्र का काम भी दिया।

१९४० के आकडा ने सिद्ध कर दिया कि सोवियत अथव्यवस्था का और अधिक विस्तार हुआ है। उस एक साल मे कुल पैदावार म काफी वृद्धि हुई थी। खनिज लोहे और मैंगनीज़ की निकासी १९३९ की तुलना मे ३० लाख टन अधिक थी, कोयले की लगभग दो कराड टन और तल की लगभग २० लाख टन अधिक थी। कच्चे लोहे और इस्पात का पिघलाव तथा मशीन टूल उद्योग का उत्पादन भी तजी से बढ रहा था। अनाज की कुल पैदावार दूसरी पचवर्षीय याजना के वर्षो स अधिक थी। १९३८ से १९४० तक राज्य द्वारा अनाज की सालाना खरीदारी लगभग ३ कराड ३० लाख टन थी जबकि १९३३ से १९३७ तक के वर्षो म २ करोड ७५ लाख टन थी। चुकन्दर फ्लेक्स और आलू जैसी फसला की पैदावार और सुपुर्दगी मे भी बडी वद्धि हुई। १९४० मे कपास की कुल पैदावार १९१३ की तुलना मे तिगुनी अधिक थी।

इस आर्थिक प्रगति का अटूट सबध जनता के सजनात्मक कायकलाप के आम उभार से तथा कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय सगठनात्मक और विचारधारात्मक काम से था। उन दिना श्रमजीविया की आम राजनीतिक शिक्षा का काम बहुत बडे पैमाने पर हो रहा था। लोग देश के राज नीतिक जीवन को तथा अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र की घटनाओ का अच्छी तरह समझना चाहते थे और बोल्शेविक पार्टी की रणनीति और कायनीति मे बहुत दिलचस्पी ले रहे थे। इसमे उन्ह "अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का सक्षिप्त इतिहास" से बडी सहायता मिली, जिसका प्रकाशन १९३८ मे हुआ था। वह पुस्तक सुबोध ढग से लिखी गई थी और अगरचे उसमे स्तालिन के व्यक्तित्व पर बहुत ज़ोर दिया गया था, फिर भी उस किताब ने श्रमजीवी जनता की देशभक्तिपूण शिक्षा मे महत्वपूण भूमिका अदा की, उसन उन्ह समाजवादी विचारा की विजय के लिए सघप करना सिखाया तथा अपने ध्येय मे उनकी आस्था को पक्का करने मे सहायता दी।

१९४०–१९४१ के शैक्षणिक वप मे प्रायमिक तथा माध्यमिक स्कूला म छात्रा की सख्या ३ करोड ५५ लाख तक पहुच गई। गैर-रूसी जातिया के बच्चा को मातृभापा म शिक्षा दी जाती थी। साथ ही १९३८ से सभी

जनतन्त्रो मे रूसी भाषा पढाई जाने लगी। १६४० मे सरकार ने सभी माध्यमिक स्कूलो मे विदेशी भाषाओ की अनिवार्य शिक्षा लागू कर दी। सोवियत संघ मे सफल शैक्षणिक कार्य की बदौलत ग्रामीण इलाको मे अनिवार्य ७ वर्षीय स्कूली शिक्षा तथा शहरो मे १० वर्षीय स्कूली शिक्षा को लागू करने के सवाल पर विचार करना सम्भव हुआ।

उच्च शिक्षा तथा विशेषज्ञो के प्रशिक्षण मे भी नई सफलताए प्राप्त हुइ। युद्धपूर्व के तीन वर्षो मे उच्च शिक्षा सस्थानो की सख्या मे ११७ की वद्धि हुई। १६४१ मे ८१७ उच्च शिक्षा संस्थान और विश्वविद्यालय थे जिनमे छात्रो की कुल सख्या ८ लाख १२ हजार थी। इनके अलावा लगभग १० लाख छात्र विशिष्ट माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। १६४१ के प्रारभ मे कुल ६ लाख ८ हजार उच्च शिक्षाप्राप्त विशेषज्ञ सोवियत सघ मे काम कर रहे थे। इनमे २६० हजार इजीनियर, ७० हजार कृषिविद मवेशीविद तथा सलोतरी, १ लाख ४१ हजार डाक्टर, (दात चिकित्सको को छोडकर) ३ लाख शिक्षक, लाइब्रेरियन तथा सास्कृतिक क्षेत्र के अन्य कर्मी शामिल है। उस जमाने मे भी सोवियत सघ मे सयुक्त राज्य अमरीका से अधिक उच्च शिक्षाप्राप्त इजीनियर थे।

सोवियत विज्ञान भी तेजी से उन्नति कर रहा था। युद्ध से ठीक पहले के वर्षों मे सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी की सस्थाओ मे कार्यकर्ताओ की कुल सख्या ४,७०० थी। विज्ञान अकादमी की शाखाए ट्रास काकेशिया कजाखस्तान और उराल मे पहले से ही काम कर रही थी, और नई शाखाए उजबेकिस्तान और तुर्कमानिस्तान मे खुली। सोवियत सघ तथा विदेशो के मुख्यतम वैज्ञानिक केंद्रो के जैसे नये वैज्ञानिक केंद्र उन जनतन्त्रो मे स्थापित किये गये जहा अभी कल तक पढे लिखे लोगो की सख्या नगण्य थी। इन सभी सस्थानो ने वैज्ञानिक विचारो के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की तथा उद्योग और कृषि मे सबसे महत्वपूर्ण आविष्कारो के व्यावहारिक प्रयोग को प्रोत्साहित किया। उन्होने देश की प्राकृतिक सम्पदा की खोज की, उनके इस्तमाल के नये तरीके निकाले, तथा नये खोजकर्ताओ को प्रशिक्षित किया।

निस्सन्देह युद्धपूर्व वर्षों की कठिनाइयो के कारण सास्कृतिक तथा प्रशिक्षण कार्य की आम प्रगति मे बाधा पडी। फिर भी काफी महत्वपूर्ण सफलताए प्राप्त हुइ। यह कहना काफी होगा कि १६३८ और १६४१ के

बीच सार्वजनिक पुस्तकालया की सख्या लगभग दोगुनी हो गई और सवाक फिल्म प्रोजेक्टरो की सख्या लगभग चौगुनी हो गई। १९४० में ८,८०६ विभिन्न समाचारपत्र प्रकाशित होते थे, जिनकी दैनिक बिक्री की प्रति-सख्या ३ करोड ३४ लाख थी, और १,८२२ पत्रिकाए जिनकी बिक्री प्रतिया की कुल सख्या २४ करोड ५० लाख से अधिक थी। देश म ५० लाख से अधिक लाउडस्पीकर और लगभग १० लाख रेडियो सेट थे। एक टेलीविजन व्यवस्था कायम करने का काम शुरू कर दिया गया था।

प्राकोफ्यव, शोस्ताकोविच, ख्रेनिकोव और कावालेव्स्की के सगीत को उस समय तक व्यापक ख्याति प्राप्त हो चुकी थी। दुनयेव्स्की के गीत देश भर में गूज रहे थे। उस समय के सबसे जनप्रिय लेखक थे गोर्की, अलक्सेई तोलस्तोय, फदेयव, शोलोखाव, फूर्मानोव, निकोलाई ओस्त्रोव्स्की और गैदार। उनकी कृतिया का अनुवाद सोवियत सघ म बसी दजना जातिया की भाषाओ में हो चुका था। कवि सीमोनोव और त्वर्दोव्स्की की ख्याति दूर-दूर तक पहुच गई थी और सोवियत पियानोवादक गीलेल्स और फिलएर ब्रसल्स तथा वियेना की अतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर चुके थे। लाल सेना की गीत-नृत्य मण्डली के प्रदशन सोवियत सघ म ही नही, बल्कि अन्य देशा म भी बहुत सफल हुए थे।

यह सास्कृतिक प्रगति देश की आम आर्थिक उपलब्धिया का प्रतिबिब थी। तीसरी पचवर्षीय योजना सफ्लतापूवक पूरी की जा रही थी। १९४१ के मध्य तक ३,००० से अधिक बडे औद्योगिक उद्यम चालू हो चुके थे। यह कह देना आवश्यक है कि य सफ्लताए ऐसे समय प्राप्त की जा रही थी जबकि दूसरा विश्वयुद्ध छिड चुका था और प्रतिरक्षात्मक कारवाइया अधिकाधिक जार पकड रही थी।

सोवियत सघ मे नये जनतत्रो और प्रदेशा का शामिल होना

१ सितम्बर, १९३९ को प्रात काल नाज़ी जमनी की फौजा ने पालैंड पर धावा बोल दिया। उस समय पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरूस जिन्ह १९२० मे बलपूवक सोवियत सघ से अलग कर लिया गया था, पोलड का भाग थे। उस स्थिति म उन प्रदेशों क लाग जो पहले ही पोलिश पूजीपतियो और जमीदारो के अत्याचार का शिकार रह चुके थे,

18

पर नाजी जर्मनी की फासिस्ट शासन व्यवस्था के अधीन हो जाते। सोवियत सघ के श्रमजीवियों के लिए यह नामुमकिन था कि पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरूस के अपने भाइयों को इस नसावे स मुक्ति दिलाने के बजाय हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे। सोवियत सघ ने पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरूस को अविलब मुक्त करना अपना पुनीत कर्तव्य समझा।

१७ सितम्बर १९३९ को सोवियत सेनाए उन प्रदेशों मे दाखिल हुईं और जनगण ने लाल सेना का भव्य स्वागत किया। नव स्वाधीन शहरो और गावो का जीवन सोवियत जनतत्र मे १९१७ की क्रांति के बाद के प्रथम महीनो के जीवन की याद दिला रहा था। शहरो मे श्रमिक गार्ड गावो मे किसान मिलीशिया तथा कारखानो मे मजदूर नियत्रण समितिया स्थापित की गयीं। पुराने जमीदारो और चर्च की जागीरो का वितरण किया जाने लगा। जो परिवार झोपडियो और तहखानो मे रहा करते थे, पुराने शोषको के मकानो मे लाकर बसाये गये।

हर नागरिक को शासन व्यवस्था के बारे मे अपनी राय प्रकट करने का अवसर दिया गया। अक्तूबर मे पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरूस की लोक सभाओ के लिए चुनाव किये गये। ९० प्रतिशत से अधिक मतदाताओ ने उन उम्मीदवारो के लिए वोट दिया जो पूजीपतियो और जमीदारो के शासन का उन्मूलन तथा सोवियत सत्ता की स्थापना की माग कर रहे थे। नव निर्वाचित लोक सभाओ ने बैंको और बड़े कारखानो का राष्ट्रीयकरण करने, बडे जमीदारो और मठो की जमीनो को जब्त करने तथा समस्त भूमि को राज्य की सम्पत्ति बनाने का निश्चय किया। सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ मे शामिल होने की व्यापक श्रमजीवी जनता की इच्छा प्रकट करने के लिए विशेष प्रतिनिधिमण्डल मास्को भेजे गये।

१ और २ नवम्बर, १९३९ को सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के एक विशेष अधिवेशन मे नये प्रदेशो को सोवियत सघ मे शामिल कर लिया गया। बलपूर्वक अलग की गई जातियो का पुनर्मिलन हो गया। १ करोड २० लाख से अधिक लोग जिनमे ६० लाख उक्रइनी और कोई ३० लाख बेलोरूसी थे, सोवियत नागरिक बन गये।

उसी समय सोवियत सघ की पहलकदमी पर एक ओर एस्तोनिया,

लाटविया और लिथुआनिया की सरकारो और दूसरी ओर सोवियत सघ की सरकार के बीच पारस्परिक सहायता सधिया सम्पन्न हुई। दाना पक्षा ने यह सकल्प किया कि दूसरे पक्ष के किसी विरोधी गुट मे शामिल नही होगे और किसी यूरोपीय शक्ति द्वारा उनमे से किसी पर भी आक्रमण होने पर दूसरा पक्ष उसकी मदद को आयेगा। बाल्टिक क्षेत्र पर सोवियत सनिक अडडे कायम किये गये जिससे सोवियत सघ की रण कौशल सबधि स्थिति मे प्रत्यक्ष सुधार हुआ।

उस समय बाल्टिक देशो के श्रमजीवी लोगा की आर्थिक स्थिति काई सतोपजनक नही थी। वेरोजगारी वढ रही थी और छोटे किसाना की जमीन का नीलाम होना आय दिन की बात थी। लाटविया, लिथुआनिया और एस्तोनिया की प्रतिक्रियावादी सरकारो द्वारा अपनाई गई घरेलू और वर्देशिक नीति के विरुद्ध श्रमजीवी जनता के असतोप के कारण १९४० के वसत मे बहुत तनावपूण स्थिति उत्पन हो गई थी। य सरकार हिटलर के आगे झुकने के लिए तत्पर थी। बाल्टिक देशा की श्रमजीवी जनता के क्रातिकारी आदालन ने इन सरकारो का तख्ता उलटने का बीडा उठाया। वहा एक जन फासिस्ट विरोधी मोर्चा कायम किया गया। श्रमजीविया ने जन मोर्चे की सरकार की स्थापना की माग के समथन मे व्यापक हडताले तथा राजनीतिक प्रदशन सगठित किये।

इस बीच फासिस्ट गुट भी चुप नही वैठे थे। वे सत्ता पर कब्जा करने तथा जनवादी सगठनो से बदला लेने की तयारी कर रहे थे। यह मालूम हुआ कि फासिस्ट तत्व जमनी से यह अनुराध करनेवाले है कि वह अपनी सेनाए लाटविया, लिथुआनिया और एस्तोनिया मे ले आय। सोवियत सघ पर हमला करने के लिए नाजिया के हमले के अड्डे मे यह विस्तार सोवियत सरकार बर्दाश्त नही कर सकती थी। उसन तीना बाल्टिक राज्यो की सरकारा से फासिस्ट प्रवतिवाले तत्वा का निकाल वाहर करने की माग की। साथ ही उन देशो म स्थित लाल सेना के दस्ता को और बढाने का सवाल उठ खडा हुआ।

श्रमजीवी जनता की मक्रिय कारवाइया के लिए अनुकूल स्थिति उत्पन्न हुई। लिथुआनिया, लाटविया और एस्तोनिया म जन असतोप की एक महान लहर ने क्रमश १६, २० और २१ जून को फासिस्ट प्रवृत्तिवाली तानाशाही का सफाया कर दिया।

यह घडी जब जनता ने अपनी किस्मत स्वय अपने हाथो म ली मुख्यत तीनो देशो मे समान थी मेहनतकश लोगो के विशाल प्रदर्शन हुए, पुलिस को निशस्त्र कर दिया गया और राजनीतिक बन्दी रिहा कर दिये गये। वह समाजवादी क्रांति थी। एक महीने बाद बाल्टिक देशो म ससदीय चुनाव हुए। मतदाता अभूतपूर्व सख्या मे आये और उनके विशाल बहुमत ने श्रमजीवियो के उम्मीदवारो – मजदूरो, किसानो और बुद्धिजीवियों के प्रतिनिधियों के लिए वोट दिये। नवनिर्वाचित ससदो ने तीनो जनतन्त्रों मे सोवियत सत्ता की पुन स्थापना की घोषणा की। अगस्त १९४० के प्रारभ मे सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत ने लिथुआनिया, लाटविया और एस्तोनिया को उनकी सरकारो के निवेदन पर समानाधिकारप्राप्त जनतन्त्रो की हैसियत से सोवियत सघ मे शामिल किया। सोवियत राज्यचिह्न की फीतियो म, जिनमे सुनहरी बालियो की माला लिपटी हुई है, चार और फीतियो की वृद्धि हुई। इनमे से प्रत्येक पर सघीय जनतन्त्रो की जातीय भाषाओ मे "दुनिया के मजदूरो, एक हो।" लिखा हुआ है। उनम से तीन बाल्टिक जनतन्त्रो के प्रतीक थे और चौथे पर मोल्दावियाई भाषा म लिखा था। मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र का जन्म इस प्रकार हुआ। रूमानियाई राजतन्त्र ने जो सोवियत सघ की दक्षिण पश्चिमी सीमा पर स्थित था, सोवियत सघ के प्रति स्पष्ट रूप से शत्रुतापूर्ण रुख अपनाया। दूसरे विश्वयुद्ध के शुरू की घटनाओ से जाहिर हुआ कि रूमानिया जर्मनी की आक्रामक नीति मे खीचा जा रहा था। सोवियत सरकार ने अपनी दक्षिणी सीमाओ की सुरक्षा को सुदृढ करने के उद्देश्य से रूमानिया की सरकार के सामने यह सुझाव रखा कि वह सोवियत सघ को बेसाराबिया लौटा दे जिसे १९१८ म ही सोवियत देश से जबदस्ती हडप लिया गया था, और साथ ही उत्तरी बुकोवीना भी हवाले कर दे जहा मुख्यतया उक्रइनी बसे हुए है। यह माग स्वीकार कर ली गई और मोल्दावियाई तथा उक्रइनी जातियो को सोवियत सघ के भीतर पुन एकताबद्ध होने का अवसर मिल गया।

१९४० मे फिनलैंड के साथ शाति सधि पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद करेली स्थलडमरूमध्य तथा कुछ और इलाके फिनलैंड से सोवियत सघ को मिल गये। इन्हे करेली स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतन्त्र म शामिल कर लिया गया जो बाद मे करेली फिनिश सोवियत समाजवादी जनतन्त्र बना।

इन कारवाइया के फलस्वरूप सोवियत सघ की पश्चिमी सीमाए काफी दूर बढा दी गई थी। नये इलाको मे भौतिक तथा सास्कृतिक जीवन के सभी क्षेत्रो मे समाजवादी परिवतन जारी किय गये। जाहिर है इसके लिए अतिरिक्त धन राशि की जरूरत थी जिसे राज्य न पूरा किया। पश्चिमी बेलोरूस तथा पश्चिमी उक्रइना म प्रथम सामूहिक फाम १६३६ की पतझड मे कायम किये गये, और फिर १६४० मे राजकीय फाम और मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन स्थापित किये गये। राष्ट्रीयकृत कारखाना, तेल क्षेत्रो और कोयला खाना की उत्पादन क्षमता शीघ्र ही बढ रही थी। नि शुल्क चिकित्सा सेवा लागू करना, स्कूला तथा सास्कृतिक शैक्षणिक सस्थाओ का तेजी से विकास और निरक्षरता उन्मूलन अभियान इन सभी इलाका के लिए महत्वपूण कारवाइया थी। विमुक्त इलाको मे राजकीय समाजवादी उद्योग के साथ ही साथ सहकारी उत्पादन की व्यवस्था भी जारी की गई— दस्तकारो तथा कारीगरो को बडी सख्या मे उत्पादन आर्टेलो म सगठित होन का मौका मिल गया। उस समय तक एक पूजीवादी क्षेत्र भी कायम था जिसम मुख्यत छोटे दस्तकारी कारखाने थे। कुल उत्पादन म उसका कोई महत्वपूण स्थान नही था। भूतपूव शोपक वर्गों क बाकी रह गय तत्वा ने कई बार तोड फोड की तथा सोवियत विरोधी कारवाइया करने का प्रयास किया, मगर इनका आम घटनाक्रम पर कोई खास असर नही पडा। इन नये सोवियत जनतन्त्रो और प्रदेशा मे श्रमजीवी जनता पूरे देश के आर्थिक सास्कृतिक तथा सामाजिक-राजनीतिक जीवन म अधिकाधिक सक्रिय तथा चेतन भाग लेने लगी। कम्युनिस्ट पार्टी, ट्रेड-यूनियनो तथा कोम्सामोल सदस्यो की सख्या म तेजी से वद्धि हुई। मजदूरा, किसाना तथा जनवादी बुद्धिजीवियो का जीवन स्तर काफी ऊचा हुआ। हर जगह मजदूरी बढाई गई, औरता के लिए मजदूरी की समान दर जारी की गई, सामाजिक बीमे की राजकीय व्यवस्था की गई किराया काफी घटा दिया गया। समाजवादी प्रतियोगिता, जिसन देश मे अक्तूबर क्राति के कोई बारह बरस बाद ही एक व्यापक आदोलन का रूप धारण कर लिया था, इन क्षेत्रा मे १६४०-१६४१ म ही तेजी से जड पकडन लगी।

समाजवादी परिवतना का जारी करना कोई आसान काम नही था। नये जनतन्त्रा तथा प्रदेशो के श्रमजीवी बरसो से पूजीवादी-जमीदाराना शासन व्यवस्था के अतगत रहत और काम करते चले आ रहे थे, जहा प्रचड

राष्ट्रीयतावाद और धार्मिक प्रचार का वातावरण छाया हुआ था। उन्हें बेरोजगारी, कृषि अतिजनसख्या और सभी जनवादी आन्दोलनो के समर्थकों को पुलिस दमन का सामना करना पडता था। अतीत की सारी भयंकर विरासत को थोडे ही समय मे जड से उखाड फेंकना असम्भव था। बहुत ध्यानपूर्वक, सावधानी से काम करने की जरूरत थी। यह काम इसलिए और भी कठिन हो गया था कि युद्ध की तूफानी घटाए भितिज पर छाती जा रही थी।

प्रतिरक्षा की तयारिया

१९३८ मे जब तीसरी पचवर्षीय योजना पर काम शुरू हुआ तो कोई भी यह कह नही सकता था कि महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध को छिडने मे केवल तीन वर्ष रह गये है। नई पचवर्षीय योजना पूर्णत शातिकालीन रचनात्मक श्रम की ओर दिशामान थी। परन्तु फासिस्ट जर्मनी की आक्रामक कारवाइया ने, जिनके कारण दूसरा विश्वयुद्ध छिड गया था, सोवियत सरकार को देश के आर्थिक विकास के मार्ग म भारी परिवर्तन करने पर मजबूर कर दिया। जापानी सैन्यवादियो द्वारा सोवियत सघ के सुदूर पूर्व मे हसन झील के पास १९३८ म तथा खाल्खिन गोल नदी के तटवर्ती क्षेत्र मे १९३९ म जो छेड छाड की गई थी, तथा १९३९ के अत तथा १९४० के प्रारभ म फिनलैंड से जो सशस्त्र मुठभेड हुई, उनसे यह साबित हो गया था कि लाल सेना तथा सुरक्षा उद्योग को सुदृढ करने और देश म युद्ध आधार का निर्माण करने के काम पर अधिक ध्यान देना जरूरी है। जो निधि शातिकालीन निर्माण कार्य के लिए निर्धारित की गई थी, उसे दूसरे काम म लगाना पडा। १९३८ म सुरक्षा व्यय २३ अरब रूबल, यानी राजकीय बजट के व्यय हिस्से का १८ ७ प्रतिशत था। दो ही साल बाद यह रकम बढकर ५७ अरब रूबल, अथवा राज्य व्यय के एक तिहाई तक पहुच गयी थी। पूरे औद्योगिक उत्पादन म वृद्धि की औसत सालाना दर १३ प्रतिशत थी मगर सुरक्षा उद्योग का उत्पादन इससे तिगुना रफ्तार से बढ रहा था। सुरक्षा उद्योग की जन कमिसारियत को विमानन जहाज निर्माण, शस्त्रास्त्र और गोला-बारूद की चार अलग जन कमिसारियतो म बाट दिया गया।

खासकर युद्धकालीन जरूरतों को पूरा करने के लिए उराल, साइबेरिया और सुदूर पूर्व में नये कारखाने स्थापित किये गये। अनेक उद्यम जो पहले गैर फौजी सामान तैयार करते थे अब पूर्णत या आंशिक तौर पर फौजी साज सामान तयार करने लगे। अनेक मोटर कारखाने विमान इजन बनाने लगे। कई ट्रैक्टर बनानेवाले कारखाने टैंकों को तैयार करने लगे। देश के जहाज निर्माण कारखानों ने तिजारती जहाजों के बजाय युद्धपोत बनाना शुरू किया। चौथी दशाब्दी के अंत में देहातों को पहले से कम कृषि मशीनें मिलने लगीं। फुटकर बिक्री के लिए घडियां, रेडियो सेट, बाइसिकिल, सिलाई मशीन और कैमरे का उत्पादन बहुत कम कर दिया गया। आरोप लगाया जाने लगा कि देश में धातु नहीं है और कई प्रकार के कच्चे माल और साज सामान की कमी पड गई है। मगर असल में यह सब लाल सेना को तेजी से सुसज्जित करने और उसकी जुझारू ताकत बढाने के लिए सामान इकट्ठा करने का नतीजा था।

१९३९ के प्रारम्भ में सोवियत संघ की सरकार ने नये लडाकू विमानों, बमबारों तथा आक्रामक विमानों के डिजाइन और उत्पादन के काम को तेज करने के उपायों पर विचार करने के लिए एक विशेष सम्मेलन आयोजित किया। उसी वर्ष डिजाइनर इल्यूशिन ने टैंकों और थल सेना के खिलाफ इस्तेमाल करने के लिए इल-२ बख्तरबंद आक्रामक विमान तयार किया। यह नया विमान विश्व विमान डिजाइनकारी की एक प्रमुख उपलब्धि थी। इल २ ४००-६०० किलोग्राम वजन के बम ले जा सकता था। इसमें दो तोपें, दो मशीनगनें और ४-८ मिसाइल यूनिटें थीं। अकारण ही नहीं नाजियों ने इस विमान को 'काली मौत' का नाम दिया।

१९४० के प्रारम्भ में डिजाइनर याकोव्लेव द्वारा निर्मित नये याक लडाकू विमान सेना को सुपुर्द कर दिये गये। बाद में, युद्ध के दौरान जब फ्रांसीसी विमान चालकों को, जो "नार्मांडी नेमन" स्क्वाड्रन में सोवियत विमान चालकों के साथ साथ युद्ध में भाग ले चुके थे, अमरीकी ब्रिटिश या सोवियत विमानों में से किसी एक को चुनने को कहा जाता, तो वे सब निरपवाद याकोव्लेव का विमान चुनते।

सोवियत त ३४ टक ने भी ऐसी ही ख्याति पायी। इस मशीन के पहले दो नमूने १९४० के प्रारम्भ में आये। इस टैंक की विशेषता यह थी कि वह शक्तिशाली बख्तरवाला, सुगठित, नीचा और फुर्तीला था।

और अगर हथियारो का प्रयोग अनुभव के आधार पर दक्षता के साथ किया जाये तो वे अधिक कारगर हो जाते है। इसी लिए कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ने सेनाओ के प्रशिक्षण पर, युद्ध क्षमता और राजनीतिक चेतना पर बराबर जोर दिया। बिगडती हुई अतर्राष्ट्रीय स्थिति के कारण सोवियत सघ को मजबूरन अपनी सैन्य शक्तिया म वद्धि करनी पडी। जनवरी १६३६ और जून १६४१ के बीच इनमें ढाई गुना वद्धि हुई। कुल मिलाकर वे ५० लाख हो गई थी।

१६३६ की पतझड मे एक सार्विक सैनिक सेवा कानून जारी किया गया जिसमे सैनिक सेवा के लिए बुलावे की आयु १६ वर्ष निश्चित की गई थी, सनिक सेवा की अवधि बढा दी गई थी तथा सैनिक रजिस्टरी और भर्ती से पहले प्रशिक्षण व्यवस्था का बेहतर बनाया गया था।

सेना के लिए कुमक जुटाने का काम हो रहा था। अग्रणी मजदूरो, सबसे अच्छे छात्रो, सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओ को कोम्सामोल द्वारा सैनिक स्कूलो मे विशेष प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। और यह एक साधारण सा कायदा बन गया कि नौजवान लोग काम का दिन समाप्त होने पर अपनी फक्टरियो मे निशानाबाजी सीखें, मशीनगन चलाने का दो महीने का प्रशिक्षण या नर्स का प्रशिक्षण हासिल करे। लडके-लडकिया के लिए गेतेओ का बैज प्राप्त करना सम्मान का बात थी। ये अक्षर उन रूसी शब्दा के सूचक है जिनका अर्थ है श्रम तथा प्रतिरक्षा के लिए तैयार। इससे यह विदित होता कि उन्होने अनेक विशेष अभ्यास पूरे किये है जिनसे उनकी ताकत, फुर्ती और सहन शक्ति का पता चलता है।

विशेष मडलिया जहा स्कूली छात्रा और बालिगा का रासायनिक हथियारा से बचाव के उपाय तथा हवाई हमला से प्रतिरक्षा के तरीके सिखाये जाते थे बहुत लोकप्रिय थी। विशेष रूप से प्रसिद्ध हवाई क्लबा म हर साल कई हजार हवाबाजो का प्रशिक्षण दिया जाता था। प्रसिद्ध विमान चालक इवान कोजेदूब न भी, जिन्ह सोवियत सघ के वीर के तीन स्वण सितारे प्रदान किये गये, पहले पहल ऐसे ही एक हवाई क्लब मे उडना सीखा।

लाल सेना का सम्मान और उसपर गौरव की भावना तथा अपनी मातृभूमि की रक्षा के देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य की चेतना सोवियत लोगा मे

दुश्मन युद्ध के वर्षों मे भी इस तरह की कोई मशीन बनाने मे सफल नही हो सका। जमन जनरलो ने स्वीकार किया कि रूसी त ३४ के नमून के टैंक बनाने के प्रयास असफल रहे।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध शुरू होने से चौबीस घंटे से भी कम समय पहले पार्टी तथा सरकार के नेताओ ने उस अभूतपूर्व हथियार की जाच की जिसे आगे चलकर सोवियत सैनिक प्यार से "कात्यूशा"* कहा करते थे। ससार ने इससे पहले इस तरह का हथियार कभी नही देखा था। मिसाइल प्रक्षेपको को तैयार करने का काम कई साल तक पहले से चल रहा था। सोवियत लडाकू विमानो द्वारा इस्तेमाल किये गये प्रथम मिसाइल ने खाल्खिन-गोल की लडाइया मे अपनी श्रेष्ठता साबित की। बाद में इन मिसाइल यूनिटो को लारियो पर लगाया गया और उनपर भी य बहुत कारगर साबित हुए।

राइफलो के डिज़ाइन पर, आधुनिकतम तोपो के आविष्कार तथा नौसेना के निर्माण पर भी काफी ध्यान दिया गया। १६३७ मे ही एक विशाल जलपोत निर्माण कायक्रम शुरू कर दिया गया था। सबसे पहला स्थान बडे जहाजो जैसे भारी युद्धपोतो और क्रूजरो का दिया गया था। जहाज निर्माण मे तीन से पाच साल का समय लग जाता था और फिर खर्च बहुत पडता था, इसलिए १६४० की वसत मे इस कायक्रम म परिवतन किय गये। स्थल सेनाओ के लिए शस्त्रास्त्र के उत्पादन म तेज़ी से विस्तार किया गया जिसके लिए धातु की जरूरत बराबर बढती गई। भारी युद्धपोतो तथा क्रूज़रो का निर्माण रोक दिया गया, लेकिन पनडुब्बिया, विध्वसक पोता, सुरग ट्रेलर पोता और टरपीडो बोटो का निर्माण तेज़ी से चल रहा था। १६४० मे ही इस प्रकार के एक सौ से अधिक जहाज उतारे गये और अन्य २६६ का निमाण काय जारी था। १६४१ तक सोवियत सघ के पास कुल मिलाकर लगभग ६०० लडाकू जहाज़ थ जिनमे १० भारी युद्धपोत और क्रूज़र ५६ विध्वसक पात और २१८ पनडुब्बिया शामिल थी।

सोवियत सनिक वैज्ञानिको ने अपनी योजनाओ का आधार इस मान्यता पर रखा था कि अगला युद्ध इजनो का, यन्त्रसज्जित सेनाओ का युद्ध होगा। लेकिन निस्सन्देह आदमियो के बिना मशीन बेकार है। और दूसरा

---

*औरतो के रूसी नाम कात्या का प्यारभरा लघु रूप।

ग्रोर ग्रगर हथियारो का प्रयोग ग्रनुभव के ग्राधार पर दक्षता के साथ किया जाये तो वे ग्रधिक कारगर हो जाते हैं। इसी लिए कम्युनिस्ट पार्टी ग्रौर सोवियत सरकार ने सेनाग्रो के प्रशिक्षण पर, युद्ध क्षमता ग्रौर राजनीतिक चेतना पर बराबर जोर दिया। बिगडती हुई ग्रतर्राष्ट्रीय स्थिति के कारण सोवियत सघ को मजबूरन ग्रपनी सैन्य शक्तियो म वृद्धि करनी पडी। जनवरी १९३९ ग्रौर जून १९४१ के बीच इनमे ढाई गुना वद्धि हुई। कुल मिलाकर व ५० लाख हो गई थी।

१९३९ की पतझड मे एक सार्विक सैनिक सेवा कानून जारी किया गया जिसम सैनिक सेवा के लिए बुलावे की ग्रायु १९ वष निश्चित की गई थी, सैनिक सेवा की ग्रवधि बढा दी गई थी तथा सैनिक रजिस्टरी ग्रौर भर्ती से पहले प्रशिक्षण व्यवस्था को बेहतर बनाया गया था।

सेना के लिए कुमक जुटाने का काम हो रहा था। ग्रग्रणी मजदूरो, सबसे ग्रच्छे छात्रो, सक्रिय सामाजिक कायकर्ताग्रो को कोम्सोमोल द्वारा सैनिक स्कूलो मे विशेष प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। ग्रौर यह एक साधारण सा कायदा बन गया कि नौजवान लोग काम का दिन समाप्त होने पर ग्रपनी फैक्टरियो मे निशानाबाजी सीखें, मशीनगन चलाना का दो महीने का प्रशिक्षण या नस का प्रशिक्षण हासिल कर। लडके-लडकियो के लिए गेतेग्रो का बैज प्राप्त करना सम्मान की बात थी। ये ग्रक्षर उन रूसी शब्दो के सूचक हैं जिनका ग्रथ है श्रम तथा प्रतिरक्षा के लिए तैयार। इससे यह विदित होता कि उन्होने ग्रनेक विशेष ग्रभ्यास पूरे किये हैं जिनसे उनकी ताकत, फुर्ती ग्रौर सहन शक्ति का पता चलता है।

विशेष मडलियो जहा स्कूली छात्रो ग्रौर बालिगो को रासायनिक हथियारो से बचाव के उपाय तथा हवाई हमलो से प्रतिरक्षा के तरीके सिखाये जाते थे बहुत लोकप्रिय थी। विशेष रूप से प्रसिद्ध हवाई क्लबो म हर साल कई हजार हवाबाजो का प्रशिक्षण किया जाता था। प्रसिद्ध विमान चालक इवान कोजेदूब ने भी, जिन्हे सोवियत सघ के वीर के तीन स्वण सितारे प्रदान किय गये, पहले पहल ऐसे ही एक हवाई क्लब मे उडना सीखा।

लाल सेना का सम्मान ग्रौर उसपर गौरव की भावना तथा ग्रपनी मातृभूमि की रक्षा के देशभक्तिपूण कतव्य की चेतना सोवियत लोगो में

स्कूली वर्षों से ही जगाई जाती थी। युद्धपूर्व काल मे जो पीढी पलकर बडी हुई, उसके दिला म एक पुस्तक का विशेष स्थान था और वह थी गृहयुद्ध के वीर निकोलाई श्रोस्त्रोव्स्की का उपयास "ग्रग्नि-दीक्षा" और उसकी जनप्रिय फिल्म "चापायेव" थी। उन दिनो के एक बहुत जनप्रिय गाने की कुछ पक्तिया ये हैं "हम शातिप्रिय लोग ह, मगर हमारी बख्तरबन्द रेलगाडी तैयार खडी है।" युद्ध के ठीक पहले सेनानायक सुवोरोव, बोग्दान खमेल्नीत्स्की तथा गहयुद्ध वीर श्चोस के बारे मे फिल्म और क्रातिकारी मजदूर मक्सिम से सबधित प्रसिद्ध त्रिकाड फिल्म माला दिखाई गई। शोलोखोव ने अपना प्रसिद्ध उपन्यास "धीरे बहे दोन रे" तथा अलेक्सेई तोलस्तोय ने अपना "अग्नि परीक्षा" पूरा किया। इसी समय क्राति के पारखोमेको और कोचुबेई जैसे प्रसिद्ध वीरो के बारे मे भी उपयास प्रकाशित हुए।

पत्र पत्रिकाए, रेडियो, सिनेमा और साहित्य सभी का प्रयत्न सोवियत देशभक्ति की भावना तथा फासिज्म के प्रति घणा की भावना पैदा करना था।

देश की प्रतिरक्षा क्षमता मे वृद्धि करने के उद्देश्य से जो जोरदार काय किया जा रहा था, उसकी राह म अनेक कठिनाइया थी। चालू कारखाना का पुननिर्माण और नये कारखानो का निर्माण करने के सबध मे सरकार की विज्ञप्ति को पूरा करना सम्भव साबित नही हुआ। आधुनिकतम विमानो, टका, टक्मार तथा स्वचालित शस्त्रा तथा कुछ प्रकार की तोपा के बडे पैमाने पर उत्पादन का काम बहुत धीरे धीरे हो रहा था। आमड मोटरचालित तथा छतरीबाज सनिक दस्ता के निर्माण का काय अभी शुरू ही हुआ था।

युद्ध के ठीक पहले की स्थिति के कारण सोवियत जनगण के जीवन मे तथा देश की प्रतिरक्षा क्षमता को सुदढ करने की नीतिया म महत्वपूण परिवतन करने पडे। बहुतेरी गलतिया को सुधारा गया और सीमावर्ती इलाका म मुठभेडो को रोकने, और सम्भव हमले को टालने के लिए भरसक सब कुछ किया गया। चालू काम का पूरा करने, विद्यमान त्रुटिया का दूर करने तथा शक्ति और साधना को जुटाने के लिए समय दरकार था। इस दौरान देश की आम नीति—शान्ति के लिए सघष के साथ ही प्रतिरक्षा क्षमता को सुदढ करना था। जब असाधारण कारवाइया की जरूरत

पडी तो लोगो ने पार्टी और सरकार के निश्चयो को समझबूझ के साथ स्वीकार किया।

१९४० की गर्मियो मे सोवियत सघ मे काय दिवस सात से बढाकर आठ घटे कर दिया गया और छ दिन के बजाय सात दिन का सप्ताह जारी किया गया (पहले हर महीने की ६, १२, १८, २४ तथा ३० तारीख छुट्टी का दिन होती थी)। इसका मतलब यह था कि मजदूर तथा दफ्तरी कर्मचारी महीने मे ३३ अतिरिक्त घटे, या महीने मे चार अतिरिक्त दिन, और साल मे डेढ महीने से ज्यादा अतिरिक्त काम किया करते थे। देश की औद्योगिक क्षमता को सुदृढ करने मे श्रमजीवी जनता का यह काफी बडा योगदान था। इस योगदान का मतलब था उद्योग मे ही लगभग १० लाख मजदूरो की वृद्धि।

वेतन मे कोई तब्दीली नही हुई। श्रमजीवी जनता के नाम एक अपील मे ट्रेड-यूनियन नेताओ ने घोषणा की कि "राष्ट्र की प्रतिरक्षा क्षमता को और भी सुदृढ करने के लिए सोवियत सघ के मजदूर वर्ग को अनिवार्य कुर्बानिया करनी पडेंगी।" श्रमजीवियो ने अनेक जन सभाओ मे पार्टी तथा सरकार के इन फैसलो का सहर्ष अनुमोदन किया।

उसी वर्ष पतझड मे राजकीय श्रम रिजर्व के निर्माण का फैसला किया गया। व्यावसायिक स्कूलो तथा फैक्टरी प्रशिक्षण केंद्रो की कुल व्यवस्था के जरिए नौजवान मजदूरो को प्रशिक्षित करने के लिए एक विशेष अभियान राष्ट्रव्यापी पैमाने पर सगठित किया गया।

१९४० मे ही सरकार ने एक आज्ञप्ति जारी करके मजदूरो तथा दफ्तरी कर्मचारियो के काम बदलने पर प्रतिबध लगा दिया। बिना आज्ञा अनुपस्थिति के लिए कडी सजा रखी गई। थोडे ही दिनो बाद जन कमिसारो को इजीनियरो तथा दक्षताप्राप्त मजदूरो को उनकी पसद-नापसद पर ध्यान दिए बिना देश के किसी भी भाग मे किसी भी उद्यम मे बदली करके भेजने का अधिकार दिया गया। ये कडी, कठोर कारवाइया थी और सोवियत सत्ता के दुश्मनो ने अक्सर उनके असली महत्व को तोड-मरोडकर पेश करने मे कोई कसर उठा नही रखी। लेकिन सोवियत लोग इन कारवाइयो के असली कारणो से भली भाति परिचित थे। सोवियत राज्य की आजादी कायम रखने, देश के प्रतिरक्षार्थ बलिदान देने तथा पूजीवादी घेरे मे ही नही, बल्कि युद्ध के खतरे की स्थिति मे एक नये समाज का

निर्माण करने का सवाल था। क्रियाशीलता, अनुशासन और रोजमर्रे के कायभारा के प्रति जिम्मेदारी सवत्र देखने मे आती थी।

१६४० म जब फासिस्टा का आक्रमण कोई छ मास दूर रह गया था, आर्थिक विकास के क्षेत्र मे उपलब्धियो का खुलासा इस प्रकार था कच्चे लाहे का उत्पादन — लगभग १ कराड ५० लाख टन, इस्पात — १ करोड ८३ लाख टन, तेल — ३ करोड १० लाख टन से अधिक और कोयला लगभग १७ करोड टन। यह बात उल्लेखनीय है कि इस्पात, रालिंग स्टाक तथा कोयले की पैदावार का एक तिहाई भाग सोवियत सघ के पूर्वी क्षेत्रो से आया था। वोल्गा क्षेत्र और उराल मे तेल के उत्पादन म काफी वद्धि हुई थी। मध्य एशिया, कजाखस्तान, साइबेरिया और सुदूर पूव की आर्थिक क्षमता बडी तेजी से बढ रही थी। कृषि मे उनति के कारण रई, गेहू, जई, आटा तथा अय कृषि पदार्थों का राजकीय सचय करना सम्भव हुआ।

५ जून, १६४१ को कालीनिन ने अत्यत अथपूण शब्द कहे "हम नही जानत कि कब हमे लडना पडेगा — कल या परसा। ऐसी स्थिति में आज ही तैयार रहना जरूरी है।" लेकिन प्रतिरक्षा की तैयारिया को पूरा करना सम्भव नही हुआ। युद्ध की आग सावियत भूमि पर ऐस समय फैल गई जबकि देश अभी फासिस्टो का मुकाबला करने के लिए पूरा तरह तैयार नही हुआ था। परन्तु मुख्य कायभार पूरा हो चुका था — पार्टी तथा जनता न समाजवाद का निर्माण पूरा कर लिया था। महान देशभक्तिपूण युद्ध के प्रारम म यही सावियत सघ की निणयात्मक श्रेष्ठता थी।

नवां अध्याय

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध
१९४१–१९४५

युद्ध के प्रारंभिक महीने

२२ जून, १९४१ की तिथि ऐसी है, जिसको सोवियत जनगण अपने देश के इतिहास के एक मोड़ बिंदु के रूप में हमेशा याद रखेंगे।

उस दिन प्रातःकाल नाज़ी जर्मनी की सेनाओं ने अनाक्रमण संधि का उल्लंघन करके सोवियत सीमा पार की और सोवियत देश पर हमला कर दिया। यह एक कठोर युद्ध की शुरुआत थी, जिसने समस्त जनगण के जीवन को बदल दिया, उनसे मांग की कि अपने प्रयत्नों में कोई कसर उठा नहीं रखें, जिसने लाखों-लाख लोगों का जीवन-दीप बुझा दिया और देश के बड़े इलाकों को तबाह-बर्बाद कर दिया।

आक्रामक नाज़ी नीति का उद्देश्य संसार पर प्रभुत्व कायम करना था। सोवियत संघ पर हमला इस नीति का स्वाभाविक नतीजा था। यूरोप के अधिकांश भाग के लोगों को गुलाम बना लेने के बाद हिटलर ने देखा कि उसकी अपहारक योजनाओं को और आगे कार्यान्वित करने में मुख्य बाधा सोवियत संघ है। उसने सोचा कि सोवियत संघ को परास्त करके वह उन जातियों का, जो अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष कर रही थीं, आखिरी सहारा भी तोड़ देगा, समाजवाद और प्रगति के किले को ढा देगा और इस प्रकार उसे एक विशाल आधार भी मिल जायेगा, जहां से वह विश्व पर अधिकार करने का अभियान संगठित कर सकेगा।

इस युद्ध के लिए जर्मनी ने पूरी पूरी तैयारी की। उसके पास बेहिसाब साधन मौजूद थे। यूरोप में अधीन बनायी गयी जातियां भी उसके पास इस प्रकार के साधन के रूप में मौजूद थीं। पूरी तरह संगठित और प्रशिक्षित जर्मन सेना ने, जो आधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित थी और

निर्माण करने का सवाल था। क्रियाशीलता, अनुशासन और राजमर्रे के कायभारो के प्रति जिम्मेदारी सवत्र देखने मे आती थी।

१९४० म जब फासिस्टो का आक्रमण कोई छ मास दूर रह गया था, आर्थिक विकास के क्षेत्र म उपलब्धिया का खुलासा इस प्रकार था कच्चे लाहे का उत्पादन—लगभग १ कराड ५० लाख टन, इस्पात—१ कराड ८३ लाख टन, तेल—३ कराड १० लाख टन स अधिक और कोयला लगभग १७ करोड टन। यह बात उल्लेखनीय है कि इस्पात, रालिंग स्टाक तथा कोयले की पैदावार का एक तिहाई भाग सोवियत सघ क पूर्वी क्षेत्रो से आया था। वोल्गा क्षेत्र और उराल मे तेल के उत्पादन म काफ़ी वृद्धि हुई थी। मध्य एशिया, कजाखस्तान, साइबेरिया और सुदूर पूव की आर्थिक क्षमता वडी तेज़ी से बढ रही थी। कृषि मे उन्नति के कारण रई, गेहू जई, आटा तथा अय कृषि पदार्थो का राजकीय सचय करना सम्भव हुआ।

५ जून, १९४१ को कालीनिन ने अत्यत अथपूण शब्द कहे "हम नहा जानते कि कब हमे लडना पडेगा—कल या परसो। ऐसी स्थिति म आज ही तैयार रहना जरूरी है।' लेकिन प्रतिरक्षा की तैयारिया को पूरा करना सम्भव नही हुआ। युद्ध की आग सोवियत भूमि पर ऐसे समय फैल गई जबकि देश अभी फासिस्टो का मुकाबला करने के लिए पूरी तरह तैयार नही हुआ था। परन्तु मुख्य कायभार पूरा हो चुका था—पार्टी तथा जनता ने समाजवाद का निर्माण पूरा कर लिया था। महान देशभक्तिपूण युद्ध के प्रारभ मे यही सोवियत सघ की निणयकारी श्रेष्ठता थी।

नवां अध्याय

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध

१९४१–१९४५

युद्ध के प्रारंभिक महीने

२२ जून, १९४१ की तिथि ऐसी है, जिसको सोवियत जनगण अपने देश के इतिहास के एक मोड़ बिंदु के रूप मे हमेशा याद रखेंगे।

उस दिन प्रातःकाल नाज़ी जर्मनी की सेनाओं ने अनाक्रमण संधि का उल्लंघन करके सोवियत सीमा पार की और सोवियत देश पर हमला कर दिया। यह एक कठोर युद्ध की शुरूआत थी, जिसने समस्त जनगण के जीवन को बदल दिया, उनसे मांग की कि अपने प्रयत्नो मे कोई कसर उठा नही रखें, जिसने लाखो-लाख लोगो का जीवन-दीप बुझा दिया और देश के बड़े इलाको को तबाह-बर्बाद कर दिया।

आक्रामक नाज़ी नीति का उद्देश्य संसार पर प्रभुत्व कायम करना था। सोवियत संघ पर हमला इस नीति का स्वाभाविक नतीजा था। यूरोप के अधिकांश भाग के लोगों को गुलाम बना लेने के बाद हिटलर ने देखा कि उसकी अपहारक योजनाओं को और आगे कार्यान्वित करने में मुख्य बाधा सोवियत संघ है। उसने सोचा कि सोवियत संघ को परास्त करके वह उन जातियो का, जो अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष कर रही थीं, आखिरी सहारा भी तोड़ देगा, समाजवाद और प्रगति के किले को ढा देगा और इस प्रकार उसे एक विशाल आधार भी मिल जायेगा, जहां से वह विश्व पर अधिकार करने का अभियान संगठित कर सकेगा।

इस युद्ध के लिए जर्मनी ने पूरी पूरी तैयारी की। उसके पास बेहिसाब साधन मौजूद थे, यूरोप में अधीन बनायी गयी जातियां भी उसके पास इस प्रकार के साधन के रूप में मौजूद थीं। पूरी तरह संगठित और प्रशिक्षित जर्मन सेना ने, जो आधुनिकतम हथियारों से सुसज्जित थी और

"देश को आप की जरूरत है!"
१९४१ का एक पास्टर

जिसन उस समय तक आधुनिक युद्ध करने का काफी अनुभव प्राप्त कर लिया था, इटली फिनलड रूमानिया, हगरी और स्लोवाकिया की सेनाओं सहित सोवियत सघ पर हमला कर दिया। चूकि १९४१ मे पश्चिमी मोर्चे पर कोई बडी कारवाइया नही हुई, इसलिए नाजी कमान के लिए पूव मे अपनी शक्तियो के बडे भाग को सकेद्रित करना सम्भव हुआ।

सोवियत सघ पर इस आक्रमण की योजना, जिसे हिटलर के जनरलो ने तैयार किया और जिसका नैतिक नाम " योजना" था ब्लिटजक्रिग के नमूने पर थी। कि लाल सना

या एक "अत्यत द्रुत गति से सैनिक कारवाई" करके परास्त कर दिया जाय और अर्खांगेल्स्क से आस्त्रखान तक मार्चा कायम कर दिया जाये।

सोवियत सीमा पर बारेंट सागर से काले सागर तक एक बहुत विशाल शक्ति एकत्रित कर ली गई थी। यह १६० डिवीजना की सेना थी जिनके पास ५०,००० तापें तथा मार्टर, ३,५०० टैंक और ५,००० विमान थे।

२२ जून को प्रात काल स पहले जमन विमान उडे, तोपें गरजन लगी और अत मे स्थल सेनाम्रा ने सीमा पार किया। आक्रमण शुरू हा गया था। युद्ध के प्रथम दिनो मे नाजी सेनाम्रा को बडी सफलताए प्राप्त हुई। जमन वायु सना के प्रहारा मे सोवियत विमाना को भारी क्षति पहुची। २२ जून की दोपहर तक १,२०० विमान नष्ट कर दिये गये थे और इनमे ८०० उडने भी नही पाये थे।

वायु क्षेत्र म शत्रु की प्रधानता निर्विवाद थी और धरती पर भी पहलकदमी उसी को हासिल थी। सोवियत सेनाए सीमावर्ती इलाका मे जमन डिवीजना को आगे बढने से रोकने मे असमथ थी। जमन टैंका की कतारें तजी स सोवियत सघ की धरती पर बढती गयी।

आनवाले तीन सप्ताह के दौरान नाजी सेनाए ३०० से ५५० किलोमीटर तक बढ गयी और उन्हाने लाटविया, लियुआनिया तथा उक्रइना, बेलारूस और मोल्दाविया के बडे भाग पर कब्जा कर लिया। आनेवाले सप्ताहा म भी उनका आगे बढना जारी रहा, अगरचे इसकी रफ्तार कुछ धीमी हा गयी थी।

१६४१ के पतझड तक हमलावरो ने एस्तोनिया पर अधिकार कर लिया और लेनिनग्राद के नजदीक पहुच गये। पूरे बेलोरूस को पार करने और स्मोलेंस्क पर कब्जा करने के बाद शत्रु की सेनाम्रो से मास्को के लिए खतरा पैदा हा गया था। उस समय तक वे लगभग पूर उक्रइना पर अधिकार करने और रोस्तोव आन-दोन तक पहुचने मे सफल हो चुकी थी।

इन प्रारम्भिक सप्ताहो मे युद्ध की गति पर कई बातो का असर पडा। सबसे महत्वपूण बात यह थी कि जमन हमला अचानक हुआ था और जमन सेना पूरी तरह सगठित और लडाई के लिए तैयार थी और आधुनिक युद्ध करने का काफी अनुभव प्राप्त कर चुकी थी। उधर अनेक सोवियत

19—1960

"देश को आप की जरूरत है!"
१९४१ का एक पोस्टर

जिसने उस समय तक आधुनिक युद्ध करने का काफी अनुभव प्राप्त कर लिया था, इटली, फिनलैंड, रूमानिया, हंगरी और स्लोवाकिया की सेनाओं सहित सोवियत संघ पर हमला कर दिया। चूंकि १९४१ में पश्चिमी मोर्चे पर कोई बड़ी कार्रवाइयां नहीं हुईं, इसलिए नाजी कमान के लिए पूर्व में अपनी शक्तियों के बड़े भाग को संकेंद्रित करना सम्भव हुआ।

सोवियत संघ पर इस आक्रमण की योजना, जिसे हिटलर के जनरलों ने तैयार किया और जिसका सांकेतिक नाम "बारबरोसा योजना" था, ब्लिट्जक्रिग के नमूने पर आधारित थी। योजना यह थी कि लाल सेना

को एक "अत्यंत द्रुत गति से सैनिक कारवाई" करके परास्त कर दिया जाये और अर्खांगेल्स्क से आस्त्रखान तक मार्चा कायम कर दिया जाये।

सोवियत सीमा पर बारेंट सागर से काले सागर तक एक बहुत विशाल शक्ति एकत्रित कर ली गई थी। यह १६० डिवीजनों की सेना थी जिनके पास ५०,००० तोपें तथा मार्टर, ३,५०० टैंक और ५००० विमान थे।

२२ जून को प्रातःकाल से पहले जर्मन विमान उडे, तोपें गरजने लगी और अंत में स्थल सेनाओं ने सीमा पार किया। आक्रमण शुरू हो गया था। युद्ध के प्रथम दिनों में नाज़ी सेनाओं को बडी सफलताएं प्राप्त हुईं। जर्मन वायु सेना के प्रहारों से सोवियत विमानों को भारी क्षति पहुंची। २२ जून की दोपहर तक १,२०० विमान नष्ट कर दिये गये थे और इनमें ८०० उडने भी नही पाये थे।

वायु क्षेत्र में शत्रु की प्रधानता निर्विवाद थी और धरती पर भी पहलकदमी उसी को हासिल थी। सोवियत सेनाएं सीमावर्ती इलाकों में जर्मन डिवीजनों को आगे बढने से रोकने में असमर्थ थी। जर्मन टैंकों की कतारें तेज़ी से सोवियत संघ की धरती पर बढती गयी।

आनेवाले तीन सप्ताह के दौरान नाज़ी सेनाएं ३०० से ५५० किलोमीटर तक बढ गयी और उन्होंने लाटविया, लिथुआनिया तथा उक्रइना, बेलोरूस और मोल्दाविया के बडे भाग पर कब्ज़ा कर लिया। आनेवाले सप्ताहों में भी उनका आगे बढना जारी रहा, अगरचे इसकी रफ्तार कुछ धीमी हो गयी थी।

१९४१ के पतझड तक हमलावरों ने एस्तोनिया पर अधिकार कर लिया और लेनिनग्राद के नज़दीक पहुंच गये। पूरे बेलोरूस को पार करने और स्मोलेंस्क पर कब्ज़ा करने के बाद शत्रु की सेनाओं से मास्को के लिए खतरा पैदा हो गया था। उस समय तक वे लगभग पूरे उक्रइना पर अधिकार करने और रास्तोव-आन-दोन तक पहुंचने में सफल हो चुकी थी।

इन प्रारम्भिक सप्ताहों में युद्ध की गति पर कई बातों का असर पडा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि जर्मन हमला अचानक हुआ था और जर्मन सेना पूरी तरह संगठित और लडाई के लिए तैयार थी और आधुनिक युद्ध करने का काफी अनुभव प्राप्त कर चुकी थी। उधर अनेक सोवियत

19—1960

डिवीजना का शत्रु की गोलाबारी के बीच युद्ध के लिए अपने मार्च ।
थे। सोवियत सेना में बुनियादी दस्ता का संगठन युद्ध शुरू होने के बाद
जा रहा था, जिसका मतलब यह था कि थोडे समय में शत्रु के व
सेना मैदान में उतारना असम्भव था। सोवियत सेना की एक बडी कम
यह थी कि अनेक जनरलो, अफसरो और सैनिको को लडाई का अ
नही था। इसके अतिरिक्त युद्ध के पहले निराधार दमन के कारण अ
अफसरो की कमी हो गयी थी।

सोवियत संघ उस समय तक एक महान औद्योगिक शक्ति बन
था, उसके पास अपनी सेना को आधुनिक शस्त्रास्त्र से सुसज्जित कर
आवश्यक साधन मौजूद थे। लेकिन युद्ध छिडने के समय सेना को
शस्त्रास्त्रो की दृष्टि से पुनसज्जित करने का काम पूरा नही हुआ
नवीनतम टैंक कम थे और हवामार तथा टैंकमार तोपो का अभाव
युद्ध के शुरू मे केवल १७ प्रतिशत सोवियत विमान नवीनतम किस्म के थे।

१६३६ की सीमा की पुरानी किलाबंदियो से हथियार छीन लिया
गया और उनकी जगह नयी सीमा की बहुत तेजी से किलाबन्दी का जा
रही थी, मगर यह काम समय पर पूरा नही हो सका।

अनेक चेतावनियो के बावजूद कि जर्मन हमला जल्द ही होनेवाला
है, स्तालिन को अंतिम क्षण तक विश्वास था कि युद्ध को टालना अभी
भी सम्भव है। इसलिए वह सेना मे फौरी भर्ती करने के लिए
कोई आपातिक कारवाई करना नही चाहते थे। वह समझते थे कि इससे
हिटलर को युद्ध की घोषणा करने का बहाना हाथ आ जायेगा।

उन प्रारम्भिक सप्ताहो की कठिन स्थितियो मे लाल सेना के जवानो
ने शत्रु की संख्या की दृष्टि से बडी सेनाओ का साहसपूर्वक मुकाबला
किया। उन्होने शत्रु को भारी नुकसान पहुचाया। दुश्मन की शक्तियो
को बढने से रोकने या उन्हे पीछे हटाने के लिए जो कुछ हो सकता था,
उसको पूरा किया। यह जमाना लाल सेना के जवानो और अफसरो द्वारा
वीरता के अनगिनत कारनामो के लिए प्रसिद्ध है। सनिक अंतिम गोलीतक
लडते रहे और उन्होने अपनी रक्षा-पात छोडने से इनकार कर दिया। वे
दुश्मन से वीरतापूर्वक आमने सामने लड रहे थे। सैनिको ने जब देखा कि
उनका पिल-बाक्स (किलाबंदी बुर्जी) घिर गया है, तो हथियार
डालने के बजाय उन्होने पिल-बाक्स सहित अपने आपको उडा दिया।

विमान चालको के पास जब गोले नही रहे, तो वे शत्रु के विमानो से सीधे भिड गये। अक्सर ऐसा हुआ कि विमान जब लडाई मे गोले लगने के कारण उडने के लायक नही रह, तो विमान चालको ने उन्हे जान-बूझकर शत्रु की सेनाओ पर गिरा दिया। पहला विमान चालक, जिसने ऐसा किया कप्तान गस्तेल्लो थे। २६ जून, १९४१ को उनकी पट्रोल की टकी दुश्मन के गोले का टुकडा लगने से टूट गयी और गस्तेल्लो अपने जलते हुए विमान को उस दिशा म ले चले, जहा दुश्मन की मोटरगाडिया और पट्रोल टकिया का दस्ता खडा था।

सोवियत सैनिको के असाधारण साहस का लोहा दुश्मन ने भी माना। यह जमन सनिको की चिट्ठिया और रोजनामचो से तथा उनके संस्मरणो से जाहिर होता है, जो युद्ध के बाद प्रकाशित हुए।

अनेक प्रतिरक्षात्मक लडाइया मे, जो १९४१ की गर्मी और पतझड म लडी गयी, सोवियत सैनिको ने दुश्मन को थकाने मे कोई कसर नही छोडी और फासिस्ट सैन्य दलो को बहुत क्षति पहुचायी। अनेक अवसरो पर उन्होने सफलतापूर्ण प्रत्याक्रमण किया। प्रतिरक्षात्मक लडाइयो मे सबसे महत्वपूर्ण थी स्मोलेन्स्क की लडाई, जो दो महीने तक चली, कीयेव की लडाई, जो ७३ दिन चली, और लेनिनग्राद के निकटवर्ती क्षेत्र की लडाई।

युद्ध के इन प्राथमिक महीनो की एक मुख्य विशेषता यह थी कि अनेक शहरो और किलो के रक्षक जब दुश्मन से घिर गये, तो उन्होने अत्यत दृढतापूर्वक उसका प्रतिरोध किया। इस प्रकार का प्रतिरोध सही माना मे वीरतापूर्वक था। सोवियत सैनिको ने इन परिस्थितियो म अभूतपूर्व धय तथा साहस से काम लिया और मौत की तनिक परवाह नही की। ब्रेस्त के सीमावर्ती किले का गरीजन पूरे एक महीने तक शत्रु के हमलो का प्रतिरोध करता रहा, हालाकि मुख्य जमन सेना के तेजी से आगे बढ जाने के कारण शीघ्र ही वह दुश्मन के पिछवाडे मे रह गया था।

खाको प्रायद्वीप के नौसनिक अड्डे का २५,००० सैनिक गैरीजन, जो फिनलैड की खाडी के उत्तर के निकटवर्ती भाग की रक्षा कर रहा था, १५० दिनो तक डटा रहा। काले सागर तट पर ओदेस्सा की बन्दरगाह चारो ओर से बिल्कुल घिर जाने पर भी १८ रूमानियाई और जमन डिवीजनो को फसाये रही। नौसैनिको, सिपाहियो और नागरिको ने १० अगस्त से १६ अक्तूबर, १९४१ तक शहर की रक्षा की।

यद्यपि १९४१ की गर्मी और पतझड में नाजी सेनाओं ने बड़ी सफलताएं प्राप्त की, लेकिन वे अपनी मुख्य रणनीतिक योजना को कार्यान्वित करने में समर्थ नहीं हुई। सोवियत सेनाओं के मुख्य भाग को पराजित नहीं किया गया था और न कोई ब्लिट्जक्रिग हासिल किया जा सका था। दुश्मन को लम्बी, कठिन लड़ाइयां लड़ने पर बाध्य होना पड़ा था और इस कारण युद्ध के आगे के घटनाक्रम में मौलिक परिवर्तन हुआ।

जब ये लड़ाइयां चल रही थी, सोवियत राज्य ने अपनी समस्त सर्वांगीण शक्तियों और साधनों को राष्ट्रव्यापी पैमाने पर जुटाने का प्रबंध किया, इसके लिए सोवियत समाज में अंतर्निहित सुविधाओं से पूरा लाभ उठाया और हमलावर को परास्त करने के लिए आम जनगण की दृढ प्रतिज्ञा को आधार बनाया।

इस लामबन्दी और युद्धकालीन संगठन में कम्युनिस्ट पार्टी ने एक मौलिक भूमिका अदा की थी। युद्ध के प्रथम छः महीनों में लगभग १० लाख कम्युनिस्ट सेना तथा नौसेना में शामिल हुए। कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति का कोई एक तिहाई भाग मोर्चे पर था। ब्रेज्नेव, बुल्गानिन, वोरोशीलोव, ज्दानोव, इग्नातोव, काल्नबेजिन, कुज्नत्सोव, मनुईल्स्की, सूस्लोव, ख्रुश्चेव और श्चेर्बाकोव सहित प्रमुख पार्टी नेताओं ने केन्द्रीय समिति के सदस्यों तथा उम्मीदवार सदस्यों, प्रदेशीय समितियों तथा संघीय जनतंत्रों की केन्द्रीय समितियों के मंत्रियों ने सेना के नियंत्रण में सक्रिय भाग लिया।

पार्टी के जो अग्रणी कार्यकर्ता मोर्चों से दूर पिछवाड़े में रह गये थे, उन्होंने आम कम्युनिस्टों में त्याग, एकजुटता तथा उत्साह के साथ अधिकतम काम करने की भावना का समावेश किया, ताकि मोर्चे पर लोगों को पर्याप्त रसद पहुंचाने का निश्चित प्रबंध हो।

३० जून, १९४१ को अखिल रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमंडल तथा जन कमिसार परिषद ने स्तालिन की अध्यक्षता में एक राजकीय प्रतिरक्षा समिति स्थापित करने का संयुक्त निश्चय किया। यह समिति एक असाधारण संस्था थी, जिसमें सारी सत्ता संकेन्द्रित कर दी गयी थी और जिसके अन्तर्गत राजकीय और सैनिक संस्थाओं, पार्टी तथा अन्य संगठनों का काम सम्मिलित किया गया था।

एक सर्वोच्च कमान के जनरल हेडक्वाटरस स्थापित किया गया और ८ अगस्त को स्तालिन सर्वोच्च प्रधान सेनापति नियुक्त किये गये।

अर्थव्यवस्था को युद्धकालीन आधार पर संगठित करने के लिए जबदस्त प्रयास करने की जरूरत थी। कारखाना ने सामरिक उत्पादन आरम्भ कर दिया और जहा तक सम्भव था अधिकतम घटे काम करने लगे। कारखाना मे स्त्रिया, बूढे अवकाशप्राप्त लोगो तथा लडके-लडकिया न उन आदमिया की जगह सभाली, जो मोर्चे के लिए रवाना हा गये थे।

दुश्मन की सेनाए बढती आ रही थी और उन्होने औद्योगिक इलाको पर कब्जा कर लिया था और आदमिया, मशीना और औद्योगिक साज सामान स भरी रेलगाडिया का अतहीन काफिला मोर्चे से पूव की ओर चला जा रहा था। उद्योगा का बडे पमाने पर स्थानातरण कराया जा रहा था। जुलाई और नवम्बर १९४१ के बीच १५२३ औद्योगिक उद्यम हटाये गये और इसमे कुल मिलाकर १५ लाख मालगाडियो को काम करना पडा।

इस काम का एक विशेष स्थानातरण परिषद न सगठित किया जिसके प्रधान श्वेनिक तथा उनके सहायक कोसीगिन थे।

ये ट्रेनें पूव मे—उराल, वाल्गा क्षेत्र, साइबेरिया, मध्य एशिया और कजाखस्तान के सुदूर स्थाना के लिए रवाना होती थी जहा पहुचकर इन कारखाना का नयी जगहा पर तुरत दोबारा खडा कर लिया जाता था। मजदूरा का अक्सर खुली हवा मे बारिश और जाडे पाले म काम करना और तहखानो और खेमो मे रहना पडता था। काम दिन-रात अविराम गति से चलता रहा। बहुतेर उद्यम आश्चयजनक तौर पर कम समय यानी तीन चार सप्ताह मे ही काम शुरू करन क लिए तैयार हो जात थे।

उन दिनो उद्योग म परिस्थिति बहुत कठिन थी। बडे औद्योगिक केद्रा के दुश्मन के हाथ म चल जाने के बाद अवश्य हा युद्ध के प्रथम महीनो म उत्पादन गिर गया। लेकिन ऊपर उल्लिखित कारवाइया की बदौलत दिसम्बर, १९४१ तक यह गिरावट रुक गयी और जनवरी १९४२ स औद्योगिक उत्पादन म आम वृद्धि शुरू हुई।

युद्ध क प्रारम्भिक काल की सभी कठिनाइयो और असफलताओ के बावजूद सोवियत जनगण ने सत्रास और निराशा का राह नही दी। सोवियत नर-नारिया को अतिम विजय का विश्वास था और उसको निकटतर लाने

तूला और नरवीरा से होकर) और पश्चिम से (व्याज्मा, मोजाइस्क और वोलोकोलाम्स्क से होकर)।

३० सितम्बर को जनरल गुडेरियन के कमान मे जर्मन दूसरे टैंक ग्रुप ने ब्रियान्स्क के दक्षिण मे अपना आक्रमण शुरू किया, जिसका उद्देश्य आवान तक निकल पहुचना था। २ अक्तूबर को मुख्य जर्मन सेनाओ ने बढ़ना शुरू किया। यह मास्को पर कूच का प्रारम्भ था। अक्तूबर मे जर्मन डिवीजनों ने बडी सफलताए प्राप्त की। कालीनिन (मास्को–लेनिनग्राद रेलवे पर स्थित) ले लेने के बाद वे उत्तर से मास्को को अपने घेरे म लेने लगा। ओर्योल और कलूगा पर उनका कब्जा होने के बाद मास्को के लिए दक्षिण से सीधा खतरा पैदा हो गया। मोर्चे के केन्द्रीय भाग से जर्मन सचमुच मास्को के निकट पहुच गये। व्याज्मा के निकट और ब्रियान्स्क के दक्षिण मे अनेक सोवियत सेनाए दुश्मन से घिर गयी थी।

नयी कुमक पहुचाने के बाद जर्मन सर्वोच्च कमान ने १५–१६ नवम्बर को एक और हमला बोल दिया। जर्मन टैंक राजधानी के निकटतर होते जा रहे थे और मास्को के आस पास के इलाको मे लडाइया हो रही थी। कुछ जगहो पर जर्मन नगर के २५ – ३० किलोमीटर के भीतर पहुच गये थे।

पूरे देश के लिए ये अत्यंत तनावपूर्ण कठिनाई के दिन थे। सभी नर नारिया स्थिति को सास रोके देख रहे थे। इससे पहले देश को कभी इतने बडे खतरे का सामना नही करना पडा था।

पर यही वह घडी थी जब सोवियत जनगण ने धैर्य और साहस का सबूत दिया, अपनी समाजवादी मातृभूमि के प्रति उनकी निष्ठा की गहरी भावना उभरकर सामने आयी उसकी रक्षा के हेतु उन्होने सारी कठिनाइयो का मुकाबला करने की अपनी तत्परता प्रकट की। और इसी समय सोवियत व्यवस्था की श्रेष्ठता निर्णायक क्षण मे अत्यावश्यक साधनो को सकेन्द्रित करने की सोवियत राज्य की क्षमता ने अपना चमत्कार दिखाया।

मास्को के निकट लडी गयी प्रतिरक्षात्मक लडाइया की विशेषता था, उनसे पहले की लडाइया की तुलना मे कही अधिक, सोवियत अफसरो और जवानो की व्यापक वीरता। इस प्रकार की अनेक मिसालो म एक दुबोसेकोवो रलवे स्टेशन (मास्को से कोई १०० किलोमीटर उत्तर-पश्चिम मे) की लडाई थी। १६ नवम्बर का ३१६वी पैदल डिवीजन के २८ सैनिको ने

(जिसको बाद मे उसके कमाडर जनरल पफीलोव के नाम पर, जो मास्को की लडाई मे शहीद हुए, पफीलोव डिवीजन कहा जाने लगा था) सब मशीनगना से लैस सैनिको के साथ अग्रसर हो रहे दुश्मन के ५० टको के प्रहार का मुकाबला किया। सैनिक अपने राजनीतिक निदेशक क्लोच्कोव की अगुआई मे अपनी जगह डटे रहे। क्लोच्कोव ने अपने जवाना स कहा "रूस बडा है, परतु पीछे हटने की जगह नही, क्योकि हमारे पीछे मास्को है।" ये शब्द मास्को के सभी रक्षको के लिए एक सूत्र बन गये। लडाई चार घटे चली और इसके दौरान क्लाच्कोव मारे गये। बुरी तरह घायल होने के बाद वह हथगोलो का एक गुच्छा बनाकर शत्रु के एक टक के नीचे लेट गये और उसे उडा दिया। उनके लगभग सभी जवान दुश्मन के १८ टको और दजनो सैनिका को नष्ट करने के बाद मारे गये।

व्याज्मा के निकट और ब्रियान्स्क के दक्षिण जो सोवियत सनिक शत्रु द्वारा घिर गय थ, उन्होने जमकर प्रतिरोध किया। उन्होन बहुत से जमन सनिका को फसाये रखा, उनका दम निकाल दिया और उनका घेरा तोडकर लडते हुए बाहर निकलने मे सफल हो गये।

जमन सेनाओ को भारी क्षति उठानी पडी। १६ नवम्बर और ५ दिसम्बर के बीच उनके ५५,००० आदमी मारे गये और घायल होकर और पाले के मारे इनके अलावा एक लाख स अधिक आदमी बेकार हुए। इसी अवधि मे उनके ७७७ टैंक, ३०० तोपें और माटर नष्ट हुए। इससे जमन रेजिमेटा और बटालियना की शक्ति काफी क्षीण हुई, उनकी आगे बढन की गति धीमी पडी तथा अफसरो और जवाना के मनोबल को बडा धक्का लगा।

इस बीच अत्यत गुप्त रूप से सोवियत सर्वोच्च कमान ने मास्को क्षेत्र म ताजा कुमक पहुचा दी। तीन सोवियत मोर्चो पर बडी कुमक पहुचायी गयी कालीनिन (मोर्चा सेनापति जनरल कोयेव), पश्चिमी (मार्चा सेनापति जनरल जूकाव) और दक्षिण-पश्चिमी (मोर्चा सेनापति माशल तिमोशेंको)। स्वय मास्को और उसके नगराचल मे बैरीकेड और टैंकमार प्रतिरक्षा प्रबध खडे किये जा रहे थे। ५ लाख से अधिक मास्कोवासी नगर की प्रतिरक्षा मोर्चाबदी करने आगे आये और नयी स्वयसेवक बटालियनें बनायी गयी। बावजूद अधिकाधिक हवाई हमला के मास्को के कारखान जारो से काम कर रह और मोर्चे के लिए हथियार बना रहे थे।

७ नवम्बर, १९४१ को लाल चौक मे सनिक परेड

अक्तूबर क्राति की २४ वी जयती की पूववेला मे मास्को सावियत की एक समारोही सभा मास्को भूमिगत रेलवे के एक स्टेशन के हाल मे आयोजित हुई जिसमे स्तालिन ने एक महत्वपूण भाषण दिया।

दूसरे दिन ७ नवम्बर को लाल चौक मे परम्परागत सैनिक परेड हुआ। पैदल और सवार सेना के दस्ते, तोपें और टैंक क्रेमलिन की दीवारा के सामने वफ से ढके मैदान से गुजरे और स्तालिन ने लेनिन के मकबरे के ऊपर से सेनाओ से अपील की कि वे अपना महान उत्तरदायित्व पूरा करे, हमलावरो को खदेड दें तथा यूरोप के लोगा को गुलामी से आजाद कर।

बर्फीली, तेज हवा लाल झडा से टकरा रही थी। जिन सैनिका न उस परेड मे भाग लिया, वे अपनी लडाई की वर्दी मे आये थे। लाल चौक से वे सीधे मोर्चे की ओर रवाना हो गये।

दिसम्बर, १९४१ के प्रारम्भ मे मास्को की प्रतिरक्षा करनेवाली सेनाओ ने प्रत्याक्रमण कर दिया। ५ दिसम्बर का प्रात काल सोवियत तोपखाने

ने कालीनिन मोर्चे पर वफ से ढकी वोल्गा नदी किनारे गोलाबारी शुरू की। तोपा से गोलावारी के बाद पैदल डिवीजना न वफ को पार करके शत्रु के ठिकाना पर धावा बोल दिया। ६ दिसम्बर का पश्चिमी मोर्चे तथा दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे के दाहिने पक्ष की सेनाग्रा न हमला कर दिया।

मास्को के तीन ग्रोर एक विशाल ग्रद्धवत्ताकार मोर्चे पर जो कालीनिन स यलेत्स (लीपेत्स्क के नजदीक) तक सैकडा किलोमीटर तक फैला हुग्रा था, भयकर लडाइया शुरू हुई। इस बार पहल सोवियत सेनाग्रा के हाथ म थी। जमन सेनाग्रा का कई गम्भीर शिकस्त उठानी पडी। इस हमले के दौरान सोवियत सेनाए १९४२ के वसत तक जमना को ग्रनेक स्थाना पर ३५० किलोमीटर तक पीछे धकेलने मे सफल हुई। जमन सेनाग्रा के कोई ५ लाख ग्रादमी मारे गय। सेना ग्रुप "केन्द्र" का लगभग ८० प्रतिशत हथियार ग्रौर सामान बर्बाद हुग्रा। बफ से ढकी सडको पर जमना की छोडी हुई मोटरगाडिया, टक ग्रौर तोपें विखरी पडी थी।

यह बात उल्लेखनीय है कि मास्को के निकट इस प्रत्याक्रमण म सोवियत सेनाग्रा की सख्या ग्रपेक्षाकृत ग्रधिक नही थी। उनके पास शत्रु की तुलना म कम सैनिक, ग्रफसर, तोपें माटर ग्रौर टक थे। केवल विमान ही ऐसे थे, जिन्ह सोवियत सर्वोच्च कमान ग्रपनी सेनाग्रा को शत्रु से ग्रधिक सख्या मे मुहैया कर सका था। मास्को की लडाई मे विजय का श्रेय सवप्रथम सोवियत सेनाग्रा के निस्स्वाथ साहस को जाता है, जिनका मनोबल निस्सन्देह ग्राक्रमणकारी सेनाग्रा से कही ज्यादा ऊचा था। इसका निस्सन्देह श्रय सोवियत सर्वोच्च कमान को भी है, जिसने प्रत्याक्रमण की योजना शानदार दक्षता से तैयार की थी ग्रौर उसे कार्यान्वित किया था।

मास्को के निकट लडाई मे जनरल रोकोस्सोव्स्की, जनरल गोवोरोव, जनरल लेल्युशेंको, जनरल येफ्रेमोव ग्रौर जनरल बोल्दिन की सेनाग्रा ने विशेषकर बडा नाम कमाया। जनरल बेलोव ग्रौर जनरल दोवातार के घुडसवार कोरो तथा कनल कतुकोव ग्रौर जनरल गेत्मान की टक सेनाग्रो न भी महत्वपूण सफलताए प्राप्त की। कुछ सबसे श्रेष्ठ कोरो, डिवीजना, ब्रिगेडो ग्रौर रेजिमेंटा को गाड की पदवी से सम्मानित किया गया।

मास्को की लडाई केवल सैनिक दृष्टि से ही नही, बल्कि राजनीतिक दृष्टि स भी ग्रत्यत महत्वपूण थी। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान पहली बार जमन सेनाग्रो को केवल यही नही कि रोक दिया गया था, बल्कि काफी

क्षति उठाकर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया गया था। यह स्पष्ट हो गया कि जर्मन सेनाओं को, जो कुछ ही दिनों पहले तक अजेय लगती थीं, शिकस्त दी जा सकती है। यह दूसरे विश्वयुद्ध में एक नयी मंजिल का मार्गचिह्न साबित हुआ।

इस हार का मतलब यह भी था कि हिटलर का मुख्य रणनीतिक उद्देश्य यानी ब्लिटज़क्रिग करने और जाड़ा पड़ने से पहले सोवियत सेनाओं को खदेड़ने का उद्देश्य नाकाम रहा। ज़ाहिर था कि अब लड़ाई बहुत तूल पकड़नेवाली थी और जर्मनी के लिए इसकी सम्भावनाएं कुछ उत्साहवर्धक नहीं थीं।

१९४१–१९४२ के पतझड़ और जाड़े में मास्को के निकट तथा सोवियत-जर्मन मोर्चे के अन्य स्थानों में जो सैनिक कारवाइयां हुईं उनमें कभी सोवियत पक्ष का, तो कभी शत्रु का पलड़ा भारी रहा। १९४१ के पतझड़ में जर्मन सेनाएं उक्रइना में और आगे बढ़ गयीं तथा उत्तरी काकेशिया तक जा पहुंचने और रोस्तोव आन-दोन पर अधिकार करने में सफल हुईं। लेकिन उसी साल नवम्बर और दिसम्बर में दक्षिणी मोर्चे की सोवियत सेनाओं ने भारी प्रत्याक्रमण किया और रोस्तोव को मुक्त कर लिया।

जर्मन सेनाओं ने लगभग पूरे क्रीमियाई प्रायद्वीप पर भी दखल कर लिया था। इस समय तक केवल सेवास्तोपोल बंदरगाह और महत्वपूर्ण नौसैनिक अड्डा कारगर प्रतिरोध कर रहा था। सेवास्तोपोल का घिराव २५० दिन रहा। जुलाई, १९४२ में बहुत दिनों की कठोर लड़ाई के बाद फ़ील्ड मार्शल फ़ान मानश्टैन के तहत ११ वीं जर्मन सेना ने उस नगर पर कब्ज़ा कर लिया।

युद्ध की इस मंज़िल पर लेनिनग्राद के निकट भी स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी। अगस्त के अंत और सितम्बर के प्रारम्भ में जर्मन सेना ग्रुप "उत्तर" के सैनिक फ़ील्ड मार्शल लेयेब के कमान में उस नगर के निकट पहुंच गये थे, जो सोवियत संघ का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण नगर था और जिसकी जनसंख्या मास्को के बाद सबसे बड़ी थी। ३० अगस्त को म्गा रेलवे स्टेशन पर दखल कर लेने के बाद जर्मन सैनिकों ने बाकी देश के साथ लेनिनग्राद का अंतिम रेल-संबंध भी काट दिया। ८ सितम्बर को जर्मनों ने श्लीसेलबुर्ग पर कब्ज़ा कर लिया जो उस स्थान पर स्थित है,

नही डालेगें। विजय हमारी होगी।" प्रतिरक्षा उद्योग के लिए जो फैक्टरिया सबसे महत्वपूर्ण थी, उन्हे चालू रखा गया और नयी किलाबन्दिया की गयी। वीर लेनिनग्राद उन किलो मे था, जिन्होने सफलतापूर्वक जर्मन डिवीजनो के प्रहार का मुकाबला किया।

स्तालिनग्राद की लडाई

युद्ध के दूसरे वर्ष के दौरान सोवियत जनगण को नयी अग्नि परीक्षाओ और लम्बी कठिन लडाइयो के बीच से गुजरना पडा। सोवियत सघ ने अपने आपको जिस सैनिक तथा अतर्राष्ट्रीय स्थिति मे पाया वह अत्यत जटिल और अतर्विरोधो मे भरी हुई थी।

एक ओर अतर्राष्ट्रीय हिटलर विरोधी एकता बढ रही और शक्तिशाली होती जा रही थी। दिसम्बर, १९४१ मे पर्ल-हार्बर के अमरीकी नौसैनिक अड्डे पर जापानी हमले के बाद जापान, जर्मनी और इटली से सयुक्त राज्य अमरीका का युद्ध छिड गया। अन्य देश भी फासिस्ट राज्यो के खिलाफ युद्ध मे शामिल हुए। १९४२ की गर्मियो तक २८ देश हिटलर विरोधी सयुक्त मोर्चे मे शामिल हो गये। मई, १९४२ म लदन मे एक एंग्लो सोवियत सश्रय सधि पर हस्ताक्षर हुए और एक महीने बाद सोवियत अमरीकी सश्रय सधि भी सम्पन्न हुई। सयुक्त राज्य अमरीका ने सोवियत सघ को वायुयान, टैंक तथा अन्य प्रकार के हथियार और सामरिक सामान देने का वादा किया। इस लिहाज से अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे सोवियत सघ की स्थिति मजबूत हुई और सोवियत सघ का विलगाव करने की हिटलर की आशाओ पर पानी फिर गया। उलटे, फासिस्ट गुट का ही विलगाव हो गया।

लेकिन इस बीच ब्रिटेन और अमरीका के शासक क्षेत्रो ने सोवियत सघ के साथ सबधो मे नेकनीयती के अभाव का परिचय दिया, हथियारो की रसद पहुचाने म देरी की और सबसे गम्भीर बात यह थी – १९४२ मे एक दूसरा मोर्चा खोलने के बारे मे अपना वादा पूरा नही किया, जिससे सोवियत सघ की स्थिति काफी खराब हुई। स्तालिन ने १३ अगस्त १९४२ को लिखा "सोवियत सर्वोच्च कमान ने गर्मी और पतझड के लिए कारवाइयो की अपनी योजनाए इस विश्वास के साथ तैयार की थीं कि १९४२ म यूरोप मे दूसरा मोर्चा खुल जायेगा।

खाद्यान, इंधन और गोला-बारूद लादोगा झील के रास्ते लेनिनग्राद लाया जाता था। सामान से भरे बजरे दुश्मन के विमानों की गोलाबारी मे झील की तूफानी लहरो से होकर आया करते थे। नवम्बर के अन्त में झील पर बर्फ जम गयी और तब उसपर लारिया चलने लगी। इस तरह बर्फ का रास्ता या लेनिनग्रादवासियो के शब्दो में "जीवन मार्ग" आरम्भ हुआ था। जाडे की अधेरी रातो मे लारिया कई दर्जन किलोमीटर की लम्बी सडक पर सफर तय करती, जिसपर बर्फ होती और जगह जगह दरारें होती। लादोगा झील पर अक्सर तूफान आया करते, जिनके कारण बर्फ अपनी जगह से सरक जाया करती और कही बर्फ के टीले बन जाते और कही बीच से पानी निकल आता। बर्फीली हवाए लारी के मार्ग चिह्न मिटा देती और रास्ते मे बर्फ के ऊचे ढेर आगे बढने मे बाधा डालते। इसके बावजूद, इन भयकर कठिनाइयो का मुकाबला करते हुए लारिया लेनिनग्राद में सामान पहुचाती रही।

इन सभी प्रयत्नो के बावजूद इस एक रास्ते से आवश्यक मात्रा में खाद्यान्न और ईंधन शहर मे पहुचाना असम्भव था और १९४१-१९४२ के जाडो का समय अत्यत कठिन और मुसीबतो से भरा हुआ था। घरो को गर्म करने के लिए पर्याप्त ईंधन नही था, नगर का परिवहन ठप्प पड़ गया था और पानी के नलो मे पानी नही था और मलप्रणाली की व्यवस्था काम नही कर रही थी। दैनिक राशन मे रोटी का छोटा सा टुकडा मिला करता, जिसका आधा भाग गेहू के आटे के बजाय किसी और चीज का होता था। डिस्ट्रोफी और स्कर्वी के रोग फैल गये थे और दिसम्बर मे बहुत से लोग भूख से मर गये। लगभग प्रत्येक परिवार मे लोग मर रहे थे। हजारो चिट्ठियो-पत्रियो में रोजनामचो और कहानियो मे लोगो ने इस दुखद स्थिति का आखो देखा हाल लिखा है। निस्सहाय माताओ की आखो के सामने बेटे-बेटियो ने दम तोड दिया और अक्सर ऐसा हुआ कि मा-बाप मरे पडे है और उनके नन्हे मुन्ने बालक वही लेटे बिलख रहे है। और इस पूरे समय जर्मन सेनाओ ने शहर के रिहायशी इलाको की बमबारी बराबर जारी रखी।

१९४२ के पूर्वार्द्ध मे घिरे हुए लेनिनग्राद मे छ लाख से अधिक लोग मरे, लेकिन शहर ने हथियार नही डाले। भूखे, प्यासे, रोग पीडित लेनिनग्रादवासियो ने ऐलान किया कि ' हम लडते रहेगे। हम कभी हथियार

नही डालगे। विजय हमारी होगी।" प्रतिरक्षा उद्योग के लिए जा फक्टरिया सबसे महत्वपूण थी, उन्ह चालू रखा गया और नयी किलाबदिया की गयी। वीर लेनिनग्राद उन किला म था, जिन्होने सफलतापूवक जमन डिवीजना के प्रहार का मुकावला किया।

स्तालिनग्राद की लडाई

युद्ध के दूसरे वप के दौरान सावियत जनगण का नयी अग्नि परीक्षाओ और लम्बी कठिन लडाइया के बीच से गुजरना पडा। सावियत सघ ने अपन आपका जिस सनिक तथा अतर्राष्ट्रीय स्थिति मे पाया वह अत्यत जटिल और अतविरोधा से भरी हुई थी।

एक ओर अतर्राष्ट्रीय हिटलर विरोधी एकता बढ रही और शक्तिशाली हाती जा रही थी। दिसम्बर, १९४१ म पल हावर के अमरीकी नौसैनिक अड्डे पर जापानी हमले के बाद जापान, जमनी और इटली से सयुक्त राज्य अमरीका का युद्ध छिड गया। अन्य देश भी फासिस्ट राज्या के खिलाफ युद्ध म शामिल हुए। १९४२ की गमिया तक २८ देश हिटलर विरोधी सयुक्त मोर्चे म शामिल हो गये। मई, १९४२ मे लदन म एक एग्लो-सावियत सश्रय सधि पर हस्ताक्षर हुए और एक महीन बाद सोवियत-अमरीकी सश्रय सधि भी सम्पन्न हुई। सयुक्त राज्य अमरीका ने सोवियत सघ का वायुयान, टैंक तथा अन्य प्रकार के हथियार और सामरिक सामान देने का वादा किया। इस लिहाज से अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे सोवियत सघ की स्थिति मजबूत हुई और सोवियत सघ का विलगाव करने की हिटलर की आशाओ पर पानी फिर गया। उलटे, फासिस्ट गुट का ही बिलगाव हो गया।

लेकिन इस बीच ब्रिटेन और अमरीका के शासक क्षेत्रा ने सोवियत सघ के साथ सबधा मे नेकनीयती के अभाव का परिचय दिया, हथियारो की रसद पहुचाने म देरी की और सबस गम्भीर बात यह थी—१९४२ मे एक दूसरा मोर्चा खोलने के बारे मे अपना वादा पूरा नही किया, जिससे सावियत सघ की स्थिति काफी खराब हुई। स्तालिन ने १३ अगस्त, १९४२ का लिखा 'सोवियत सर्वोच्च कमान ने गर्मी और पतझड के लिए कारवाइयो की अपनी योजनाए इस विश्वास के साथ तैयार की थीं कि १९४२ म यूरोप मे दूसरा मोर्चा खुल जायेगा।

"यह बात सहज ही समझी जा सकती है कि यूरोप म १९४२ म एक दूसरा मोर्चा खोलन मे ब्रिटिश सरकार का इनकार सोवियत जनमत के लिए एक नैतिक चोट है, जिसन आशा की थी कि दूसरा मोर्चा खोला जायेगा, दूसरे मोर्चे पर लाल सेना की स्थिति जटिल होती है और सोवियत सर्वोच्च कमान की योजनाओ को नुकसान पहुचता है।"

दूसरे मोर्चे की अनुपस्थिति स लाभ उठाते हुए जमनी, शीतकालीन अभियान की शिकस्त के बावजूद, सोवियत सघ म विशाल शक्तिया सकेंद्रित करन मे सफल हुआ। १ मई, १९४२ तक सोवियत-जमन मोर्चे पर १७७ जमन डिवीजन, ९ ब्रिगेड और ४हवाई बेडे और जमनी क सहयोगियो द्वारा भेजी गयी ३९ डिवीजन, १२ ब्रिगेड और वायुसेना जमा कर ली गयी थी। तुलना के लिए यह उल्लेख दिलचस्प होगा कि उत्तरी अफ्रीका १९४१ और १९४२ की लडाइयो मे, जहा कभी एक पक्ष को तो कभी दूसरे पक्ष को सफलताए मिलती, इटली और जमनी न कभी १०-१२ स अधिक डिवीजन इस्तमाल नही किये।

१९४२ की गर्मियो के अभियान मे जमन सर्वोच्च कमान अब इस स्थिति म नही थी कि पूरे रूसी मोर्चे पर हमला कर सके, इसलिए उसने मुख्य प्रहार मोर्चे के दक्षिणी क्षेत्र म वोरोनेज, स्तालिनग्राद तथा उत्तरी काकेशिया पर किया। गर्मियो की घमासान लडाइयो मे जमन सेनाओ को फिर अनेक बडी सफलताए प्राप्त हुइ। अगस्त मे फान पाउलुस की कमान मे छठी सेना स्तालिनग्राद के निकट वोल्गा जा पहुची। उस गर्मी और पतझड के दौरान जमन सेनाओ ने उत्तरी काकेशिया के एक बडे इलाके पर दखल कर लिया और मुख्य काकेशियाई पर्वतमाला के दर्रों मे भी लडाइया हुइ। जमन सबसे आगे यही तक पहुच पाये। ट्रास काकेशिया पहुचने की उनकी चेष्टा विफल हुई।

इस बीच वोल्गा की लडाई अधिकाधिक रणनीतिक महत्व ग्रहण करती जा रही थी। स्तालिनग्राद (जिसे अब वोल्गोग्राद कहा जाता है) के निकट लडाई लम्बी और बहुत भयकर थी।

अगस्त के अत मे जमन वायुसेना ने स्तालिनग्राद पर हमला करने के लिए कई सौ बमवार भेजे। कई घटो की लगातार बमबारी के बाद छ लाख की आबादी का यह शहर एक विशाल भट्ठी की तरह जल रहा था। लोग, जिनका न घर रह गया था और न ही सामान जलती सडको स

दौडते हुए वोल्गा नदी की ओर भाग रहे थे। उनको लगातार शत्रु की गोलावारी की हालत मे शहर के बाहर पहुचाया गया। तीन लाख से अधिक आदमी सफलतापूर्वक नदी पार कर पूर्वी तट पर पहुचे। लेकिन इस समय तक जर्मन वटालियने शहर पर प्रहार कर रही थी और सडको पर लडाइया हो रही थी।

स्तालिनग्राद की ऐतिहासिक लडाई के बाद शहर क्या रह गया था।

स्तालिनग्राद की रक्षा इस कारण और भी जटिल हो गयी थी कि वह शहर वाल्गा के पश्चिमी तट पर ६० किलोमीटर तक अपेक्षाकृत पतली सी पट्टी के रूप म फैला हुआ था। भारी लडाइयो के बाद (मसलन रलवे स्टेशन १३ बार कभी इस हाथ तो कभी उस हाथ पहुचता रहा) जमन सेना न सितम्बर तक नगर के अधिकाश भाग पर कब्जा कर लिया और कई स्थाना पर नदी तक जा पहुची। सोवियत रेजिमेंटो के कब्जे म नदी किनारे एक पतली सी पट्टी रह गयी थी, मगर उसको भी शत्रु कई जगहा से भेदने मे सफल हुआ था। उस रक्षा क्षेत्र की चौडाई २०० मीटर से १५ किलोमीटर तक थी। जमीन का चप्पा चप्पा शत्रु की गोलावारी का निशाना बना हुआ था। लगता था कि ऐसी स्थिति मे एक दिन भी डटा

"यह बात सहज ही समझी जा सकती है कि यूरोप म १९४२ म एक दूसरा मोर्चा खालने से ब्रिटिश सरकार का इनकार सोवियत जनमत के लिए एक नैतिक चोट है, जिसने आशा की थी कि दूसरा मोर्चा खोला जायेगा, इससे मोर्चे पर लाल सेना की स्थिति जटिल हाती है और सोवियत सर्वोच्च कमान की योजनाओ का नुकसान पहुचता है।"

दूसरे मोर्चे की अनुपस्थिति से लाभ उठाते हुए जमनी, शीतकालीन अभियान की शिकस्त के बावजूद, सोवियत सघ म विशाल शक्तिया सकेंद्रित करने मे सफल हुआ। १ मई १९४२ तक सोवियत-जमन मोर्चे पर १७७ जमन डिवीजन, ६ ब्रिगेड और ४ हवाई बेडे और जमनी के सहयोगिया द्वारा भेजी गयी ३६ डिवीजन, १२ ब्रिगेड और वायुसेना जमा कर ली गयी थी। तुलना के लिए यह उल्लेख दिलचस्प होगा कि उत्तरी अफ्रीका १९४१ और १९४२ की लडाइया मे, जहा कभी एक पक्ष को तो कभी दूसरे पक्ष को सफलताए मिलती, इटली और जमनी ने कभी १०-१२ स अधिक डिवीजन इस्तेमाल नही किये।

१९४२ की गर्मियो के अभियान म जमन सर्वोच्च कमान अब इस स्थिति मे नही थी कि पूरे रूसी मोर्चे पर हमला कर सके, इसलिए उसने मुख्य प्रहार मोर्चे के दक्षिणी क्षेत्र म, वारोनेज, स्तालिनग्राद तथा उत्तरी काकेशिया पर किया। गर्मियो की घमासान लडाइया मे जमन सेनाओ का फिर अनेक बडी सफलताए प्राप्त हुईं। अगस्त मे फान पाउलुस की कमान म छठी सेना स्तालिनग्राद के निकट वाल्गा जा पहुची। उस गर्मी और पतझड के दौरान जमन सेनाओ ने उत्तरी काकेशिया के एक बडे इलाके पर दखल कर लिया और मुख्य काकेशियाई पवतमाला के दर्रों मे भी लडाइया हुईं। जमन सबसे आगे यही तक पहुच पाये। ट्रास काकेशिया पहुचने की उनकी चेष्टा विफल हुई।

इस बीच वोल्गा की लडाई अधिकाधिक रणनीतिक महत्व ग्रहण करती जा रही थी। स्तालिनग्राद (जिसे अब वोल्गोग्राद कहा जाता है) के निकट लडाई लम्बी और बहुत भयकर थी।

अगस्त के अत मे जमन वायुसेना ने स्तालिनग्राद पर हमला करने के लिए कई सौ बमबार भेजे। कई घटो की लगातार बमबारी के बाद छ लाख की आबादी का यह शहर एक विशाल भट्टी की तरह जल रहा था। लाग, जिनका न घर रह गया था और न ही सामान जलती सडका स

दौड़ते हुए वोल्गा नदी की ओर भाग रहे थे। उनको लगातार शत्रु की गोलाबारी की हालत में शहर के बाहर पहुंचाया गया। तीन लाख से अधिक आदमी सफलतापूर्वक नदी पार कर पूर्वी तट पर पहुंचे। लेकिन इस समय तक जर्मन बटालियनें शहर पर प्रहार कर रही थीं और सड़कों पर लड़ाइयां हो रही थीं।

स्तालिनग्राद की ऐतिहासिक लड़ाई के बाद शहर क्या रह गया था।

स्तालिनग्राद की रक्षा इस कारण और भी जटिल हो गयी थी कि वह शहर वोल्गा के पश्चिमी तट पर ६० किलोमीटर तक अपेक्षाकृत पतली सी पट्टी के रूप में फैला हुआ था। भारी लड़ाइयों के बाद (मसलन रेलवे स्टेशन १३ बार कभी इस हाथ तो कभी उस हाथ पहुंचता रहा) जर्मन सेना ने सितम्बर तक नगर के अधिकांश भाग पर कब्जा कर लिया और कई स्थानों पर नदी तक जा पहुंची। सोवियत रेजिमेंटों के कब्जे में नदी किनारे एक पतली सी पट्टी रह गयी थी, मगर उसको भी शत्रु कई जगहों से भेदने में सफल हुआ था। उस रक्षा क्षेत्र की चौड़ाई २०० मीटर से १५ किलोमीटर तक थी। जमीन का चप्पा-चप्पा शत्रु की गोलाबारी का निशाना बना हुआ था। लगता था कि ऐसी स्थिति में एक दिन भी डटा

"यह बात सहज ही समझी जा सकती है कि यूरोप म १९४२ म एक दूसरा मोर्चा खोलने से ब्रिटिश सरकार का इनकार सोवियत जनमत के लिए एक नैतिक चोट है, जिसने आशा की थी कि दूसरा मोर्चा खोला जायेगा, इससे मोर्चे पर लाल सेना की स्थिति जटिल हाती है और सोवियत सर्वोच्च कमान की योजनाओ को नुक्सान पहुचता है।"

दूसरे मोर्चे की अनुपस्थिति से लाभ उठाते हुए जमनी, शीतकालान अभियान की शिकस्त के बावजूद, सोवियत सघ म विशाल शक्तिया सकेंद्रित करने मे सफल हुआ। १ मई, १९४२ तक सोवियत जमन मोर्चे पर १७७ जमन डिवीजन ९ ब्रिगेड और ४ हवाई बेडे और जमनी के सहयो गिया द्वारा भेजी गयी ३९ डिवीजन, १२ ब्रिगेड और वायुसेना जमाकर ली गयी थी। तुलना के लिए यह उल्लेख दिलचस्प होगा कि उत्तरी अफ्रीका १९४१ और १९४२ की लडाइया मे, जहा कभी एक पक्ष को तो कभी दूसरे पक्ष को सफलताए मिलती इटली और जमनी ने कभी १०–१२ से अधिक डिवीजन इस्तेमाल नही किये।

१९४२ की गमिया के अभियान मे जमन सर्वोच्च कमान अब इस स्थिति मे नही थी कि पूरे रूसी मोर्चे पर हमला कर सके, इसलिए उसन मुख्य प्रहार मोर्चे के दक्षिणी क्षेत्र मे, वोरोनेज, स्तालिनग्राद तथा उत्तरी काकेशिया पर किया। गमिया की घमासान लडाइया मे जमन सेनाओ को फिर अनेक बडी सफलताए प्राप्त हुइ। अगस्त मे फान पाउलुस की कमान म छठी सेना स्तालिनग्राद के निकट वोल्गा जा पहुची। उस गर्मी और पतझड के दौरान जमन सेनाओ ने उत्तरी काकेशिया के एक बडे इलाके पर दखल कर लिया और मुख्य काकेशियाई पवतमाला के दर्रों मे भी लडाइया हुइ। जमन सबसे आगे यही तक पहुच पाये। ट्रास काकेशिया पहुचन की उनकी चेष्टा विफल हुई।

इस बीच वोल्गा की लडाई अधिकाधिक रणनीतिक महत्व ग्रहण करती जा रही थी। स्तालिनग्राद (जिसे अब वोलगाग्राद कहा जाता है) के निकट लडाई लम्बी और बहुत भयकर थी।

अगस्त के अत मे जमन वायुसेना ने स्तालिनग्राद पर हमला करने क लिए कई सौ बमबार भेजे। कई घटा की लगातार बमबारी के बाद छ लाख की आबादी का यह शहर एक विशाल भट्ठी की तरह जल रहा था। लोग, जिनका न घर रह गया था और न ही सामान, जलती सडका स

दौडते हुए वोल्गा नदी की ओर भाग रहे थे। उनको लगातार शत्रु की गोलाबारी की हालत मे शहर के बाहर पहुचाया गया। तीन लाख से अधिक आदमी सफलतापूवक नदी पार कर पूर्वी तट पर पहुचे। लेकिन इस समय तक जमन बटालियनें शहर पर प्रहार कर रही थी और सडको पर लडाइया हो रही थी।

स्तालिनग्राद की ऐतिहासिक लडाई के बाद शहर क्या रह गया था।

स्तालिनग्राद की रक्षा इस कारण और भी जटिल हो गयी थी कि वह शहर वोल्गा के पश्चिमी तट पर ६० किलामीटर तक अपेक्षाकृत पतली सी पट्टी के रूप म फैला हुआ था। भारी लडाइया के बाद (मसलन रेलवे स्टेशन १३ बार कभी इस हाथ तो कभी उस हाथ पहुचता रहा) जमन सेना ने सितम्बर तक नगर के अधिकाश भाग पर कब्जा कर लिया और कई स्थाना पर नदी तक जा पहुची। सोवियत रेजिमटो के कब्जे मे नदी किनारे एक पतली सी पट्टी रह गयी थी, मगर उसको भी शत्रु कई जगहा से भेदने मे सफल हुआ था। उस रक्षा क्षेत्र की चौडाई २०० मीटर से १५ किलोमीटर तक थी। जमीन का चप्पा-चप्पा शत्रु की गोलावारी का निशाना बना हुआ था। लगता था कि ऐसी स्थिति मे एक दिन भी डटा

रहना असम्भव होगा। मगर स्तालिनग्राद के रक्षकों ने जीतकर ही दम लिया।

खुद स्तालिनग्राद मे लडाई का असली भार जनरल चुइकोव के तहत ६२वी सेना उठा रही थी यह सेना स्तालिनग्राद मार्चे का एक भाग थी। इस मोर्चे के कमाडर जनरल येर्योमको थे। जनरल बत्यूक, कनल गूर्त्येव, जनरल ल्यूदनिकोव और जनरल रोदीम्त्सेव आदि की रजिमटो और डिवीजनो ने विशेष रूप से नाम कमाया।

भयकर लडाइया रात या दिन कभी भी एक क्षण के लिए नही रुकी। स्तालिनग्राद की प्रतिरक्षा (शहर के आसपास की लडाइया सहित) १२५ दिन चली और शहर की सडको पर लडाई ६८ दिन।

वोल्गा के ऊचे तट पर खादी हुई खन्को मे, मकानो के खडहरो म और बमो से बर्बाद घरो के तहखानो मे सोवियत सैनिको न आखिरी दम तक शहर की रक्षा की। जमन सेनाओ न ७०० से अधिक हमल किये और हर कदम की, जो उन्होंने बढाया, भारी कीमत उन्हें अदा करनी पडी। तोपें मोर्चे की पात के आर पार गरज रही थी, माटर शेलो और टको का स्वर सुनाई दे रहा था। ऊपर विमानो का शोर एक क्षण के लिए बन्द नही होता था (जमन रोज १०० से २,५०० उडानें करते थे)। मामाई पहाडी की ढलान पर, जो लडाई का एक मुख्य केन्द्र था, स्तालिनग्राद की लडाई के बाद बमो, गोलो, माटर शेलो और हथगोलो के ५०० से १,२०० तक टुकडे प्रति वग मीटर मे पाये गये थे।

सोवियत सैनिको का साहस और सहनशक्ति अविश्वसनीय थी। फैक्टरी वकशापो और बमबारी से बर्बाद घरो म कई कई दिन घोर लडाइया होती रही। हर कमरे, हर कारखाने, हर सीढी के लिए लडाई हुई।

'पाव्लोव गृह" की रक्षा की कहानी बहुत प्रसिद्ध है। इस आधे विध्वस्त चारमंजिला मकान पर, जो जमन पक्तियो के अदर धस गया था, सितम्बर के अत मे साजट पाव्लोव के मातहत सैनिको के एक दस्ते न दखल कर लिया। ये सनिक उस घर मे ५८ दिन तक डटे रहे और जमनो न अनत हमलो के बाद आखिर उसपर कब्जा करने का प्रयत्न छोड दिया।

स्तालिनग्राद की रक्षा का इतिहास निस्स्वार्थ साहस, सहनशक्ति और सामरिक दक्षता के उदाहरणो स भरा पडा है। सभी सैनिक और

अफसर निशानेबाज जाइत्सेव के इन शब्दो को दुहराने के अधिकारी थे "हमारे लिए वोल्गा के परे कही धरती नही है। हम डटे रहे हैं और अत तक डटे रहेगे।"

जर्मन सेनाए स्तालिनग्राद मे फस गयी थी और सफलता उनकी पहुच से बाहर थी। उनकी सबसे बढिया डिवीजनो को स्तालिनग्राद म और उसके आसपास भारी क्षति उठानी पडी थी और जो विशाल सेना इस लडाई के लिए वहा जमा की गयी थी, वह अब फस गयी थी। सोवियत सैनिको के वीरतापूर्ण कारनामो ने जर्मन सर्वोच्च कमान की योजनाओ को विफल कर दिया। अब सोवियत सेनाओ के लिए प्रत्याक्रमण करने का समय आ गया था।

जब सेवास्तोपोल, वोरोनेज और स्तालिनग्राद के निकट और काकेशिया मे घमासान की लडाइया हो रही थी, तो बाकी देश मे युद्ध सबधी उद्योग विकसित करने के लिए अथक प्रयास किया जा रहा था।

ऊपर यह उल्लेख किया जा चुका है कि अनेक मुख्य आर्थिक क्षेत्रो पर शत्रु का कब्जा हो जाने के बावजूद जनवरी, १९४२ के बाद सोवियत औद्योगिक उत्पादन मे कुल मिलाकर वृद्धि होती जा रही थी। उस वर्ष के दौरान यह वृद्धि तेजी से जारी थी। देश के पूर्वी क्षेत्रो—उराल, वोल्गा क्षेत्र तथा मध्य एशिया—मे युद्ध सबधी उद्योग की पैदावार मे कई गुना वृद्धि हुई। उराल मे यह औद्योगिक उत्पादन युद्धपूर्व की तुलना मे पाच गुना, वोल्गा क्षेत्र मे ९ गुना और पश्चिमी साइबेरिया मे २७ गुना अधिक हो गया था। १९४२ के मध्य तक १,२०० फैक्टरिया, जो पश्चिम से हटा दी गयी थी, काम करने लगी थी और नयी फक्टरिया अभूतपूर्व तेजी से बैठायी जा रही थी। १९४२ मे १०,००० से अधिक निर्माण-कार्य चालू थे। यहा यह बताने की कोई विशेष आवश्यकता नही है कि इतने विराट कार्य के लिए कितने भारी प्रयासो की जरूरत पडी होगी।

१९४२ मे २५,००० से अधिक विमानो, २४,००० टको और कोई ५७,००० तोपो का उत्पादन हुआ। सेना को, जिसमे १९४२ के पतझड तक ६० लाख से अधिक सैनिक और अफसर थे, अब पर्याप्त मात्रा मे हथियारो और गोले-बारूद की रसद निश्चित हो चुकी थी। इस प्रकार युद्धकालीन स्तर पर अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन से प्रत्याक्रमण का मार्ग प्रशस्त हुआ और यह युद्ध के लिए एक मोड बिंदु सिद्ध हुआ।

सितम्बर मे ही सर्वोच्च प्रधान सेनापति स्तालिन, उनके सहायक जनरल जूकोव और चीफ ग्राफ जनरल स्टाफ जनरल वसिलेव्स्की ने स्तालिनग्राद के निकट आक्रामक कारवाई की योजना बनानी शुरू कर दी थी। दिन बीत रहे थे और स्तालिनग्राद मे प्रतिरक्षात्मक लडाई निरतर जारी थी। साथ ही प्रत्याक्रमण की योजना तैयार की जा रही थी, जिसमे विभिन सबधित मोर्चो तथा सेनाओ के प्रतिनिधियो ने सीधे भाग लिया और नवम्बर के प्रारम्भ मे "उरान" नामक इस योजना का अतिम रूप मे अनुमोदन कर दिया गया।

नये सोवियत सैन्य कोर और डिवीजन वोल्गा के पूव स्तेपी म, दोन तथा स्तालिनग्राद के उत्तर-पश्चिम मे पहुचा दिये गये। कुछ जगहो पर सेना के आवागमन के लिए नयी रेलवे लाइनें बनानी पडी। दूसरे सैनिक दस्ते ३०० से ४०० किलोमीटर की दूरी तय करके सयोजन स्थान पर आ पहुचे। फौज के दस्ते रात मे चला करते थे और मोटरगाडिया अपनी बत्तिया जलाये बिना चलती थी। टैंक और मोटरगाडियो को वोल्गा के पार ले जाने के लिए स्तालिनग्राद के उत्तर और दक्षिण म खास तरह के पुल रात मे लगा दिये जाते थे।

नवम्बर के उत्तराध तक लगभग १० लाख सोवियत सैनिक स्तालिनग्राद क्षेत्र मे जमा कर दिये गये थे। वे शत्रु पर, जिसकी सख्या १० लाख से कुछ अधिक थी, हमला करने के लिए तयार थे। १९ नवम्बर, १९४२ को स्तालिनग्राद के उत्तर-पश्चिम मे दोन तटवर्ती स्तेपी मे घना, ठडा कोहरा छाया हुआ था। सुबह ७ बजकर ३० मिनट पर इस कोहरे को चीरत हुए सैकडो मिसाइल दुश्मन के ठिकाना की ओर उडे। इन "कात्यूशा" मिसाइल प्रक्षेपको को सोवियत सेनाओ ने पहले १९४१ म इस्तेमाल किया था और वे बहुत कारगर सावित हुए थे। इन्ही मिसाइल की बौछार से स्तालिनग्राद मे सोवियत प्रत्याक्रमण शुरू हुआ। "कात्यूशाओ" के बाद तोपखाना तथा मोटरा ने गोलावारी की और एक घटे बीस मिनट बाद टक और पदल सेना आगे बढने लगी।

"उरान' कारवाई की योजना क्या थी?

स्वय स्तालिनग्राद म और उसके ठीक आसपास जमन, इतालवी और रूमानियाई सनाओ का बडा जमाव था फान पाउलुस क मातहत छठी जमन सेना, चौथी जमन टैंक सेना, आठवी इतालवी सेना

और तीसरी रूमानियाई सेना। इतालवी और रूमानियाई सेनाए मुख्य सेना के दोनो ओर स्तालिनग्राद के उत्तर पश्चिम और दक्षिण मे खडी थी।

सोवियत सर्वोच्च कमान ने एकसाथ शत्रु के उत्तर पक्ष पर हमला करने तथा इसके लिए जनरल वतूतिन के तहत दक्षिण पूर्वी मोर्चे के और जनरल रोकास्सोव्स्की के मातहत दोन मार्चे के सैनिको से काम लेने और दक्षिण पक्ष पर स्तालिनग्राद मोर्चे के सैनिको से काम लेकर हमला करने और इस प्रकार शत्रु की मुख्य सेना को घेर लेने और अपने चगुल मे पकड लेने का फैसला किया।

इस योजना पर सफलतापूवक काम हुआ। उत्तर और दक्षिण दोनो मे शत्रु के रक्षा प्रवध को तोडकर घुसने के बाद सोवियत टैंक चालको और सवार सेना ने शत्रु को पीछे से घेर लिया। २३ नवम्बर को शाम के चार बजे घेरा पूरा हो गया। ३ लाख से अधिक शत्रु सैनिक और उनके साथ ढेरो हथियार और फौजी सामान इस विशाल "कडाहे' मे फास लिये गये।

हिटलर के व्यक्तिगत आदेश के अनुसार घिरी हुई सेनाओ ने हथियार डालने से इनकार किया, यद्यपि सैकडो जमन सैनिक भूख, पाले और बमबारी से मर रहे थे। १० जनवरी को जनरल रोकोस्सोव्स्की और जनरल वोरोनोव के तहत सोवियत सेनाओ ने जमन ठिकानो पर प्रहार शुरू किया। २ फरवरी को लडाई के अतिम गोले चलाये गये। मानवजाति के इतिहास की यह एक महानतम लडाई समाप्त हो गयी। बदियो की अनन्त पातियो बफ से ढकी स्तेपी को पार करके देश के भीतर की ओर चली। उनकी सख्या ९०,००० से अधिक थी।

वोल्गा की इस विजय ने युद्ध का रुख मोड दिया। जमनी को जितनी भारी क्षति पहुची, उससे उसकी सैन्य शक्ति बहुत कम हो गयी थी। रणनीतिक पहल जमन सर्वोच्च कमान के हाथ से निकल गया था।

स्तालिनग्राद की लडाई का ऐतिहासिक महत्व सारी दुनिया न स्वीकार किया। सयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट ने लिखा कि "उनकी शानदार विजय ने हमले की लहर को रोक दिया और आक्रमण की शक्तियो के खिलाफ मित्र राष्ट्रो के युद्ध का मोड बिन्दु साबित हुई।'

वोल्गा की लडाई के बाद लाल सेना ने उत्तरी काकेशिया म मोर्चे के केन्द्रीय भागो म और लेनिनग्राद क्षेत्र मे बडे पैमाने पर हमला किया। सोवियत सेनाओ ने शत्रु के ११३ डिवीजनो को परास्त किया और यह उस

व्यापक हमले की शुरुआत थी, जिसने हमलावरों को सोवियत धरती से निकाल बाहर किया। सोवियत सेनाएं कई जगहों पर ६००-७०० किलोमीटर तक बढ़ गयीं और रास्ते में उन्होंने पूरे के पूरे प्रदेशों और अनेक बड़े शहरों को मुक्त किया।

लेकिन अभी भी जर्मनी के पास काफी शक्ति थी और लगभग पूरे पश्चिमी और मध्य यूरोप पर उसका कब्जा था। सोवियत संघ में भी बहुत बड़ा इलाका शत्रु के हाथ में था। नाज़ी जर्मनी पर विजय पाने के लिए अभी लम्बा और कठिन रास्ता तय करना बाकी था।

युद्ध, जिसके मोर्चे की रेखा कहीं नहीं थी

सोवियत संघ पर फासिस्ट आक्रमण के तुरंत बाद ही सभी अधिकृत क्षेत्रों में एक जन प्रतिरोध आंदोलन शुरू हुआ। यह एक ऐसा युद्ध था, जिसके मोर्चे की रेखा कहीं नहीं थी, मगर जो मुख्य लड़ाई के समान ही तीव्र और कठोर था। सोवियत नर-नारियों ने, जिन्हें जर्मन अधिकार के अंतर्गत जीवन व्यतीत करना पड़ रहा था, अपने देश, सोवियत सत्ता और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति अपनी श्रद्धा और वफादारी का काफी सबूत दिया।

पाठकों के सामने सोवियत जनगण द्वारा प्रतिरोधी संघर्ष का स्पष्टतर चित्र पेश करने के लिए आवश्यक है कि भूमिका के रूप में नाज़ियों द्वारा अधिकृत इलाकों में स्थापित शासन व्यवस्था का संक्षिप्त विवरण किया जाये। यह क्रूर, निर्मम हिंसा तथा आतंक का शासन था। नाज़ियों का उद्देश्य यह था कि सभी कम्युनिस्टों, कोम्सोमोल सदस्यों तथा स्थानीय सोवियत और ट्रेड-यूनियन संगठनों के कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी जाये। यहूदी आबादी औरतों, बच्चों और बूढ़ों सहित मार डाली जाये। कीयेव में कोई २ लाख नागरिक मार गये। युद्ध के वर्षों में सोवियत भूमि में कुल मिलाकर कोई एक करोड़ नागरिक और युद्धबंदी कालकवलित हुए तथा यातनाओं का शिकार हुए। अधिकृत इलाकों में नजरबंदी कैम्पों का जाल सा बिछा हुआ था, जहां बंदियों के भाग्य में भूख या मारपीट और यन्त्रणाओं से मर जाना बदा था। गांवों और शहरों में लोगों को बड़ी संख्या में मौत के घाट उतारा गया। ज़रा-ज़रा सी बात नहीं मानने पर कड़े से कड़ा दंड दिया जाता और खुले प्रतिरोध पर तो कहना ही क्या।

गाव के गाव जला दिये जाते और बन्धक बनाये गये व्यक्तियो को गोली मार दी जाती।

अधिकृत इलाको को नियमित रूप से लूटा जाता था। एक के बाद एक रेलगाडियो मे भर भरकर मास, चर्बी, अनाज और चीनी जमनी भेजी जाती। औद्योगिक उद्यमो तथा वैज्ञानिक सस्थानो से छीना हुआ सामान और उसके साथ सचित कोयला, कच्चा लोहा, इमारती लकडी आदि भी देश से बाहर भेज दी जाती। बहुमूल्य कलाकृतिया और ऐतिहासिक यादगारे भी जमनी भेज दी जाती थी।

१९४१ के अत मे जमनो ने काम करने योग्य नर-नारिया (खासकर नौजवान पीढी के लोगो) को अपने कारखाना और खेता मे काम करने के लिए ले जाना शुरू किया। उनके कब्जे की अवधि मे कोई ५० लाख आदमी जमनी भेजे गये।

नाज़ी हमलावरा को आशा थी कि इस तरह के आतक का राज स्थापित करके वे लोगो के मनोबल तथा प्रतिरोध की प्रतिज्ञा को कमज़ोर कर सकेगे। लेकिन निमम अत्याचार अधिकाश लोगा का भयभीत करने म असफल रहा और यही नही, इसके विपरीत लोगा के मन मे हमलावरो से घृणा और तेज हो गयी।

इन इलाको के रहनेवालो ने हमलावरा से लडने के अत्यत विविध उपाय निकाले। प्रतिरोध का मुख्य रूप गुरिल्ला (छापामार) आदोलन था। १९४१ मे ही गुरिल्ला दस्ते शत्रु की पाता के पिछले भागा मे सक्रिय हो गये। स्कूल की छात्रा ज़ोया कोस्मोदेम्यास्काया, कोम्सोमोल कायकर्त्री लीज़ा चाइकिना तथा गुरिल्ला जवान अलेक्सान्द्र चेकालिन के नाम देश भर म प्रसिद्ध हो गये। इन सभी ने युद्ध के पहले महीनो मे ही दुश्मन की पाता के पिछले भागो मे लडाई की और बाद मे नाजियो ने उन्ह यन्त्रणाए दे देकर मार डाला।

१९४२-१९४४ म गुरिल्ला आदोलन बहुत व्यापक हो गया। १९४३ के अत तक गुरिल्ला दस्तो मे कुल मिलाकर कोई २,५०,००० सशस्त्र योद्धा थे।

छोटे गुरिल्ला दस्ता के अलावा काफी सख्या मे अत्यत सगठित दस्ते भी स्थापित होन लगे। इनमे से कुछ बडे छापेमार दल, जिनमे १ हज़ार या उससे अधिक आदमी होते थे, शत्रु की पातो के पिछले भागो मे बडे पैमाने पर छापे मारा करते थे। सबूरोव और बोगातीर की कमान मे जितोमिर

गुरिल्ला दल ने, जिसमे १,६०० आदमी थे, १६४२ के पतझड म ब्रियास्क के जगलो से दनेपर के पश्चिमी तट तक ६०० किलोमीटर की दूरी सारे रास्ते लडते हुए तय की। कोपाक और रूदनेव के तहत १,००० व्यक्तियो के सूमी गुरिल्ला दल ने उन्ही दिनो छापा मारा, जिसमे वे देस्ना, दनेपर और प्रिप्यात नदियो से होते हुए पोलेस्ये इलाके मे सार्नी रेलवे जक्शन तक पहुच गये। १६४३ के प्राथमिक महीनो मे कोव्पाक दल ने कीयेव के पास शत्रु की सेना पर प्रहार किया और उस साल की गर्मियो मे उसने कारपेथियस के इलाके पर प्रहार किया। यह गुरिल्ला हमला सबसे बडा था। कुल मिलाकर गुरिल्ला दस्तो ने २,००० किलोमीटर की दूरी तय की और रोज दुश्मन से मुठभेड करते रहे। उन्होने दुश्मन के सत्रह बडे गरीजन नष्ट किये और ५,००० से अधिक सैनिको और अफसरो को मारा। कोव्पाक का दल एक एक कदम पर लडते हुए आगे बढता रहा और अत मे कारपेथियन तेल क्षेत्र तक पहुचने मे सफल हुआ।

कोव्पाक ने लिखा "तो हम आखिर द्रोगोबिच तेल क्षेत्र मे पहुच ही गये है। इतनी दूर आने मे एक महीने से अधिक समय लग गया। रास्ते मे दजनो बडी छोटी लडाइया लडनी पडी। मगर आखिर हम मजिल पर आ ही पहुचे। जनता के धन को इस तरह नष्ट करते हुए मन बहुत दुखी होता है। मगर युद्ध के नियम बडे निमम होते ह। आज हमे यह करना ही पडता है। दुश्मन को कमजोर करने और विजय का दिन नजदीक लाने के लिए यह जरूरी है। लगभग एक सप्ताह तक पहाडो मे कभी अधेरा नही हुआ। वित्कूव-याब्लुनोव तेल क्षेत्र मे आग के शोले भडक रहे थे।"

और भी दस्तो ने वीरतापूवक अनेक छापे मार, जसे नाऊमोव और अनीसिमेको के तहत उक्राइनी स्तेपी मे सवार दलो और मेल्निक के तहत वीनित्सा दल ने।

अनेक क्षेत्रो मे जमन गैरीजनो और प्रशासकीय निकायो को नष्ट करने के बाद गुरिल्ला दस्तो ने वास्तव मे दोबारा सोवियत सत्ता स्थापित कर दी। १६४३ की गमियो मे गुरिल्ला दस्तो द्वारा नियत्रित इलाका २,००,००० वग किलोमीटर था।

सभी अधिकृत इलाको मे—करेलिया और बाल्टिक क्षेत्र से लेकर उत्तरी काकेशिया तक सकडो गुरिल्ला दस्तो न जमनो को आतकित कर दिया

था। वे दुश्मन के गैरीजनो पर प्रहार करते, पुल उडाते, दुश्मन की सैनिक रेलगाडियो को पटरी से गिराकर नष्ट करते और मोटर-सडको पर घात लगाकर हमले किया करते।

अगस्त, १९४३ मे एक कारवाई, जिसे बाद मे "रेल युद्ध" कहा जाता था, शुरू हुई। अनेक क्षेत्रो खासकर बेलोरूस में सक्रिय गुरिल्ला दस्ता ने दुश्मन के रेल परिवहन को नष्ट करने के लिए व्यापक पैमाने पर कारवाई प्रारम्भ की। थोडे ही समय मे उन्होने केवल एक बेलोरूस मे २,११,००० रेले उडा दी।

गुरिल्ला कारवाइया की बदौलत १९४३ मे दुश्मन की लगभग ९ हज़ार ट्रेनें बर्बाद हो गयी। ६ हज़ार रेलवे-इजन और मालगाडियो के लगभग ४० हज़ार डिब्बे बेकार कर दिये गये। ५५ हज़ार पुल और २२ हज़ार से अधिक मोटरगाडिया नष्ट कर दी गयी। यह कल्पना करना कठिन नही कि इन कारनामो का पूरा करन के लिए कितनी जाना की बाजी लगानी पडी होगी, कितनी भयकर लडाइया लडनी पडी होगी, कितना प्रयत्न करना और कितनी क्षति उठानी पडी होगी!

जून, १९४४ मे बेलोरूसी गुरिल्ला दस्तो न अनेक मुख्य रेलवे लाइना पर रेल परिवहन को नष्ट कर दिया। गुरिल्ला आदोलन का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि १९४३ मे जमन सर्वोच्च कमान ने छापेमारो के खिलाफ बाकायदा सेना के २५ डिवीजन भेजे। पुलिस और उसके सहकारी दस्ते उसके अलावा थे।

नाज़ी विरोधी प्रतिरोध का एक और रूप था शहरा, बस्तियो तथा गावो का अडरग्राउड आदोलन (गुप्त रूप से काय)। लगभग सभी अधिकृत नगरो और क्षेत्रो मे फासिस्ट विरोधी अडरग्राउड सगठन कायम हुए और उनकी सरगमियो का दायरा बहुत व्यापक था। इस अडरग्राउड प्रतिरोध-आदोलन के सदस्य स्थानीय नाज़ी अधिकारियो के काम मे, जो खाद्यान्न तथा अन्य बहुमूल्य सामान इकट्ठा करके जमनी भेजा करत, गडबडी पैदा करते। वे कारखाना और परिवहन मे तोड फोड कराते, गुरिल्ला दस्ता की सहायता करते, सोवियत नागरिका के विदेश ले जाने मे बाधा डालते, तोड फोड की कारवाइया करत सोवियत परचे और समाचारपत्र छापते और बाटते, तथा जमन सेनाओ की आमद रफ्त के बारे मे सूचना इकट्ठा करते।

इनमे से कुछ ग्रडरग्राउड सगठना के बारे मे आज तक बहुत कम जानकारी प्राप्त हो सकी है, क्याकि उनके सदस्य नाजियो द्वारा मार डाले गये थे।

ग्रडरग्राउड प्रतिरोध ग्रादोलन का इतिहास नि स्वाथ वीरता के उदाहरणो से भरा पडा है। पूर्वी उक्रइना के छोटे कोयला खान नगर क्रास्नोदोन मे एक ग्रडरग्राउड सगठन "तरण गाड" के नाम से था। इसके नेताग्रा मे थे कोम्सोमोल सदस्य कोशेवोई, तुर्केनिच, त्रेत्याकेविच, ग्रोमोवा, ज़ेम्नुखोव, त्युलेनिन ग्रौर शेव्त्सोवा—इन सब को गेस्टापो ने भयकर यातनाए देने के बाद एक खान की सुरग मे जिदा डाल दिया।

रोव्नो नगर मे जहा उक्रइना के लिए राइख्सकमिसार एरिख कोख का सरकारी निवास स्थान था, ग्रडरग्राउड प्रतिरोध ग्रादोलन के सदस्य जमन जनरल फान इल्गेन को, जो उक्रइना मे स्थित विशेष दडाधिकारी सेना का कमाडर था, सफलतापूवक भगा ले गये। इस कारवाई को कुज्नेत्सोव ने सगठित किया था, जिन्होने उक्रइना मे नियुक्त मुख्य नाजी न्यायाधीश ग्रल्फेड फुक ग्रौर कोख के सहायक जनरल हरमान कनुत को भी मौत के घाट उतार दिया।

१६४३ म सितम्बर महीने की एक रात को प्रतिरोध ग्रादालन की एक वीर महिला मजानिक ने बेलोरूस के लिए हिटलर के हाई कमिश्नर विल्हेल्म कूबे के मीन्स्क निवास-स्थान को उडा दिया।

नाजी हमलावर जितने दिना सावियत धरती पर रह, उन्ह डर के मारे अपनी जान के लाले पडे रहते थे। उनके गरीसना, हेडक्वाटरों, गोदामा, हवाई ग्रड्डो ग्रौर परिवहना पर गुरिल्ला दस्तो तथा ग्रडरग्राउड प्रतिरोध ग्रादोलन के सदस्या द्वारा निताात हमले किय जाते थे। इसम कोई ग्राश्चय की बात नही क्याकि नाजी हमलावरो के खिलाफ सघष म लाखा सावियत नागरिका ने सक्रिय भाग लिया था। केवल एक बेलोरूस म ४,४०,००० से ग्रधिक नर-नारिया गुरिल्ला ग्रौर ग्रडरग्राउड ग्रादोलनो मे भाग ले रहे थे।

दुश्मन के पिछवाडे म फासिज्म के विरुद्ध वास्तव म इस राष्ट्रव्यापी लडाई का नतत्व कम्युनिस्ट सगठन कर रहे थे। लगभग सभी ग्रधिकृत क्षेत्रा ग्रौर शहरा मे ग्रडरग्राउड पार्टी समितिया ग्रौर प्राथमिक पार्टी सगठन

कायम हो गये थे और प्रतिरोध को सगठित करने मे सक्रिय भाग ले रहे थे। युद्ध के इन्ही वर्षो की बात है कि अधिकृत इलाका मे हजारो नर-नारिया कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हुए।

सोवियत सघ से हमलावरो को निकाल भगाया गया

सोवियत-जमन मोर्चे पर कुछ दिनो की मदगति के बाद १९४३ की गमियो मे फिर एक बडे पैमान पर लडाई हुई।

जमन सर्वोच्च कमान ने गमियो मे एक और हमले का प्रयास करने का निश्चय किया। जमनी मे "सर्वव्यापी" लामबन्दी की गयी, जिससे सेना का और २० लाख सैनिक मिल गये। इस बीच जमन उद्योग मे युद्ध सामान की पैदावार बढ रही थी। नये शक्तिशाली "टाइगर" और "पैंथर" टैंक और "फडिनाड ' स्वत चालित तोपें मोर्चे पर आने लगी। लेकिन अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे जमनी की स्थिति निश्चित रूप से बिगडती जा रही थी। ब्रिटिश और अमरीकी सेनाए (नवम्बर, १९४२ मे) उत्तरी अफ्रीका म और बाद मे (जुलाई, १९४३ मे) सिसिली म उतारी जा चुकी थी, जिससे फासिस्ट गुट की रणनीतिक स्थिति काफी कमजोर हुई। लेकिन इन कारवाइया से जमन सेनाओ के एक बहुत छोटे से भाग को ही आकृष्ट किया जा सका। जमन डिवीजनो का विशाल भाग पहले की ही तरह अभी भी सोवियत जमन मोर्चे पर था। वहा जमन सर्वोच्च कमान के पास २३२ डिवीजन थे, जिनके बल पर उसे विजय की आशा थी। फिर भी नये हमले की योजना अपेक्षाकृत छोटे क्षेत्र पर बनायी गयी। कारवाई 'सिटाडेल" का उद्देश्य कूस्क के इलाके मे सोवियत सेनाओ को घेर लेना था और उसके बाद देश के अन्दर और आगे बढना था। उस क्षेत्र मे सोवियत सेनाए धरती की एक ऐसी पट्टी पर जमा थी, जो जमन मोर्चे मे घुसी हुई थी। इसे "कूर्स्क की लडाई" कहते थे।

५ जुलाई, १९४३ को प्रात काल जमन सेनाओ ने आक्रमण शुरू किया। उन्होने सैकडो टैंक लडाई म झोक दिये। इससे उन्हे आशा थी कि सोवियत रक्षा व्यवस्था को शीघ्र तोडकर आगे बढना सम्भव होगा। लेकिन यह नही होना था। जनरल रोकोस्सोव्स्की के तहत केन्द्रीय मोर्चे और जनरल

वतूतीन के तहत वारोनेज मार्चे की सोवियत सेनाम्रा ने पहल से म्रच्छी तरह तैयार रक्षा-व्यवस्था से पूव काम लेकर सग्न मुकाबला किया। जमन सेनाए भारी क्षति उठाकर एक सप्ताह मे सिफ १२–३५ किलोमीटर म्रागे बढ सकी।

१२ जुलाई को लडाई म्रपनी चरम-सीमा पर पहुच गयी। उस दिन कूर्स्क के दक्षिण म प्रोखारोव्का के निकट घमासान टैंक लडाई छिड गयी। दुश्मन के श्रेष्ठतम टक डिवीजन "तातनकोप्फ', "राइख" म्रौर "म्रडोल्फ हिटलर" एक पहाडी मैदान से होकर म्रागे बढे। जनरल रोतमिस्त्रोव क ५वीं गाड टक सेना के टैंक उनका सामना करने चले म्रौर शीघ्र ही १,१०० टैंक जीवन मरण की लडाई मे एक दूसरे से भिड गय। छ खडीय "महान देशभक्तिपूण युद्ध के इतिहास" म उस लडाई का वणन इन शब्दा मे किया गया है "रणक्षेत्र टैंका से खचाखच भरा था। दोनों पक्षा के लिए म्रलग हाकर पुन पाति जमाने के लिए न तो समय था म्रौर न ही स्थान। थोडी दूरी से चलाय गये गोले टैंका के सामने म्रौर बगल की दीवारा म छेद करत हुए म्रन्दर घुस जाते थे, जिससे म्रक्सर गोले-बारूद का धमाका होता म्रौर टक टरेट उडकर टूटे-फूटे टैंका से कई मीटर की दूरी पर म्रा गिरते थोडी ही देर मे सारा म्राकाश जलते टका के धुए से भर गया। काली, झुलसी हुई धरती पर जलते टैंका के शोले चमक रहे थे।"

कूर्स्क की लडाई म रूसी सेना को काटकर म्रलग कर देने के जमना के प्रयत्न सफल नही हो पाये। इस बीच सोवियत सेनाम्रो ने शत्रु को दम लेने का म्रवकाश दिये बिना स्वय हमला बोल दिया। जमन सेनाम्रो को मजबूरन पीछे हटना पडा। म्रगस्त मे उन्होंने म्रोर्योल, बेलगारोद म्रौर खारकोव को त्याग दिया। इन्ही जगहा से उन्होंने म्रपना कूर्स्क म्राक्रमण शुरू किया था। कूर्स्क की लडाई मे सोवियत सेनाम्रो को शानदार विजय हुई। पचास दिनो मे जमन सेना के पाच लाख म्रादमी मारे गये, घायल हुए या लापता हो गये (सरकारी जमन म्राकडो के म्रनुसार)। कूर्स्क के हमले मे ७० जमन डिवीजन इस्तेमाल किये गये थे, जिनमे से ३० बर्बाद हो गये।

उस समय से लेकर युद्ध के ठीक म्रत तक रणनीतिक पहल सोवियत सेनाम्रो के हाथो मे रही। लगभग २०० किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर व्यापक म्राक्रमण किया गया।

अगस्त और सितम्बर मे जनरल मलिनोव्स्की और जनरल ताल्बूखिन की सेनाओं ने दोनेत्स बेसिन को, जो देश मे कोयले और धातुकर्म का एक मुख्य केन्द्र था, मुक्त कर लिया।

सोवियत आक्रमण का एक महत्वपूर्ण मार्गचिह्न द्नेपर के लिए लडाई थी। नाज़ी सर्वोच्च कमान ने इस बीच लम्बी खिंची लडाई और रणनीतिक रक्षा की नीति अपना ली। उसे भरोसा था कि द्नेपर के मोर्चे पर वह अपनी स्थिति को और मजबूत बना लेगा। हिटलर के प्रचारक द्नेपर की अपनी रक्षा व्यवस्था को "महान पूर्वी दीवार" कहा करते थे।

लेकिन सोवियत सेनाओं ने लडते-लडते द्नेपर तक पहुच जाने के बाद तुरत उस चौडी, तेज़ी से बहनेवाली नदी को पार करने की तैयारी शुरू कर दी। रात के अधियारे म और दिन को कृत्रिम धुए के बादलो की आड म छोटे छोटे प्रहारक दलो और सारी बटालियनो ने द्नेपर को पार किया। जर्मनो ने द्नेपर मे सभी सोवियत जहाजो और नौकाओ को या तो डुबो दिया था या उनपर कब्जा कर लिया था, इसलिए सोवियत सैनिको को जो कुछ हाथ आया, वही साधन इस्तेमाल करना पडा। मछलीमारो के बजरे, लकडी के लट्ठो, तख्तो या खाली पीपो को बाधकर बनाये बेडे, टूटे फूटे घरो क दरवाज़े, भूसा भरी तबू तिरपाल – सोवियत सैनिको ने सब कुछ इस्तेमाल किया। उनके पीछे-पीछे इजीनियर दस्ते चले, जिन्होने टैंको, तोपो और मोटरगाडियो के लिए मजबूत नाव-पुल बनाये। द्नेपर के उस क्षेत्र म, जो ७०० किलोमीटर लम्बा था, यह वीरतापूर्वक हमला इतना आश्चर्यजनक था कि जर्मन सेनाओ के होश उड गये। नदी पार करनेवाले सोवियत सैनिको पर वे बराबर गोलियो की बौछार करते रहे, उन सोवियत दस्तो पर, जो द्नेपर के पश्चिमी तट पर उतरे, उन्होने सख्त प्रहार किये, मगर स्थिति को सभालना उनके बस म नहीं था।

उस साल सितम्बर और अक्तूबर मे द्नेपर के पश्चिमी तट पर सोवियत सेनाओ के कई महत्वपूर्ण अड्डे स्थापित किये गये। आगे हमले की तैयारी करने के लिए कई प्रहारक सेनाए जमा की गयी। जनरल वतूतिन ने उक्रइना की राजधानी कीयेव के उत्तरी भाग मे अपनी सेनाए एकत्रित की। ३ नवम्बर के भोर मे हमला शुरू हुआ। सोवियत सैनिक कीयेव को मुक्त करना चाहते थे। कर्नल स्वोबोदा के नेतृत्व म प्रथम चेकोस्लोवाक पृथक ब्रिगेड ने इस लडाई म सोवियत सैनिको के सग कधे से कधा मिला-

कर भाग लिया। स्वोबोदा ने अपने सैनिकों से कहा कि "कीयेव के लिए इस तरह लडो जैसे प्राग और ब्रातिस्लावा के लिए लड रहे हो।"

शत्रु ने जबदस्त मुकाबला किया और सोवियत पक्ष से जनरल रिबाल्को के नेतृत्व म तीसरी गाड टैंक सेना भेजी गयी। एक रात टक हमले के दौरान यह सेना जमन प्रतिरक्षा पात को तोडकर आगे बढ गयी। ५ नवम्बर को सोवियत सैनिक कीयेव के छोर तक पहुच गये और उसी रात शहर के अदर भी सडको और गलियो म लडाइया छिड गयी। प्रातकाल चार बजे लडाइया समाप्त हो गयी और उक्रइना की राजधानी, "रूसी नगरो की मा' आखिर मुक्त हो गयी।

१९४३ मे सोवियत सेनाओ को मुख्य सफलताए प्राप्त हुइ। युद्ध का पलडा हिटलर के खिलाफ भारी हो गया था। हमलावरो को सोवियत धरती से अधिकाधिक तेजी से खदेडकर निकाला जा रहा था। लाल सेना सकडो किलोमीटर पश्चिम की ओर बढ गयी थी और जमन कब्जे से कोई दो तिहाई सोवियत इलाका आजाद कर लिया था।

पीछे हटती हुई जमन सेनाओ ने नियमित रूप से "भूमिध्वस" नीति अपनायी कारखाने, बिजलीघर, रेलवे स्टेशन, अनुसधान सस्थाए तथा रिहायशी इमारते उडा दिये और पूरे के पूरे गावो को जला डाला। विशेष विध्वसक दल बारूद बिछाते और घरो पर पेट्रोल छिडकते चलते। जितनी मशीनें, सामान और कच्चा माल ट्रेनो मे ले जाया जा सकता, जमनी भेज दिया गया।

विशाल क्षेत्रो को बिल्कुल नष्ट कर दिया गया था। इन इलाको के लोगो की हालत, जिन्हे जमन कब्जे की मुसीबते झेलनी पडी थी, और खराब हो गयी। बीसियो लाखो आदमियो को तहखानो और झोपडियो म शरण लेनी पडी। नगरो मे पानी या बिजली का कोई प्रबध नही था।

सोवियत सरकार ने इन पूर्वाधिकृत इलाको के लोगो को हर प्रकार की सहायता देने के लिए सक्रिय कारवाइया की। अगस्त, १९४३ म "जमन कब्जे से मुक्त इलाको की अथव्यवस्था के पुनरुद्धार के लिए तत्काल कारवाइयो' के बारे मे एक विशेष विज्ञप्ति निकली। आवश्यक सामान और खाद्यान की सप्लाई के मामले म इन इलाको को प्राथमिकता दी गयी। कारखानो, बिजलीघरो, खदानो, धमन भट्टियो और रिहायशी इमारतो के पुनरुद्धार का काम शुरू किया गया। देहाती क्षेत्रो को ट्रैक्टर, अन्य

तेहरान। १६४३

कृषि-उपकरणो और मवेशी भी भेजे गये। बडी कठिनाइयो का सामना करने के बावजूद धीरे धीरे जीवन साधारण रास्ते पर आने लगा था।

१६४३ मे सोवियत सेनाओ द्वारा प्राप्त सफलताओ के कारण फासिस्ट गुट अधिकाधिक कमजोर होता गया। सोवियत-जमन मोर्चे पर इटली के श्रेष्ठतम डिवीजनो की शिकस्त से मुस्सोलिनी की फासिस्ट तानाशाही का सकट और भी तीव्र हो उठा। इससे सिसिली मे और आगे चलकर (१६४३ की गर्मियो मे) स्वय एपीनाइन्स प्रायद्वीप मे ब्रिटिश और अमरीकी सेनाए उतारना आसान हो गया और शीघ्र ही इटली ने हथियार डाल दिये। वह युद्ध से बाहर हो गया। लेकिन जमन सेनाए देश के एक बडे भाग पर दखल करने मे कामयाब हुई और इतालवी फासिस्टो की सहायता से उन्होने अग्रेजो तथा अमरीकनो का आगे बढना रोक दिया।

इस बीच हिटलर विरोधी सयुक्त मोर्चा अपनी शक्ति को सुदढ कर रहा था, सोवियत सघ, ब्रिटेन और सयुक्त राज्य अमरीका के बीच कारवाइयो के सबध मे पहले से अधिक गहरा समन्वय हो गया था। इसकी

अभिव्यक्ति खासकर तहरान म त्रिदेशीय सम्मेलन म हुई। स्तालिन, चर्चिल और रूजवेल्ट पहली बार सम्मेलन की मेज के चारा ओर तहरान ईरान का राजधानी म (२८ नवम्बर से १ दिसम्बर, १९४३ तक) मिले। इस समय भी चर्चिल ने दूसरा मोर्चा खोलन (फ्रास मे बडी सेनाए उतारने) म टाल मटोल करना चाहा, और भूमध्य सागर के पूर्वी भाग म सामरिक कारवाई तेज करने पर अधिक ज़ोर दिया, हालाकि सैनिक दृष्टि से इस कारवाई का महत्व गौण था। सोवियत प्रतिनिधिमडल ने जोर दिया कि फ्रास मे सेनाए उतारने मे मई, १९४४ से अधिक देर नही की जाये, क्याकि वह जानता था कि युद्ध का शीघ्रातिशीघ्र अत करने के लिए यह जरूरी था। और ठीक यही बात थी, जिसपर तेहरान सम्मेलन मे तीना देश एकमत हुए जैसा कि सम्मेलन की घोषणा मे उल्लिखित है।

फासिस्ट गुट का बिल्कुल परास्त करने के लिए जिस सयुक्त कारवाई को कार्यान्वित करना था, उसका उल्लेख त्रिदेशीय घोषणा मे इन शब्दो मे किया गया था "ससार मे कोई शक्ति हमे जमन स्थल सेनाओ को, समुद्र म उनकी पनडुब्बियो का और विमाना द्वारा उनके सामरिक कारखानो को नष्ट करने से नही रोक सकती। हमारा हमला निमम और अधिकाधिक विस्तृत होगा।"

१९४४ के प्रारम्भ तक मोर्चे से दूर नागरिको के सफल निस्स्वार्थ श्रम की बदौलत सोवियत सेना के पास जमनो से अधिक तोपे, टैंक और विमान हो चुके थे। फिर भी जमन सेना अभी बहुत शक्तिशाली थी। १९४४ की गर्मियो तक जमनी अपने सामरिक उद्योग की पैदावार का विस्तार करता रहा। सोवियत जमन मोर्चे पर लगभग ५० लाख अफसर और सनिक श्रेष्ठतम शस्त्रो से लैस थे। जमनी और उसके मित्र राष्ट्रो की मुख्य सेनाए — कोई ७० प्रतिशत — अभी भी सोवियत धरती पर थी। सोवियत जमन मोर्चा अभी भी युद्ध का मुख्य और निर्णायक मोर्चा था।

१९४४ के प्रारम्भ म सोवियत सनाओ ने अनेक बडे हमल किये। विजय के पथ पर एक महत्वपूण माग शिला लेनिनग्राद को घेरनेवाली शत्रु की फौजो की हार थी। ये फौजे वहा १९४१ की पतझड के समय से जमी हुई थी। जनवरी, १९४३ मे जबदस्त प्रयास कर सोवियत सेनाए आठ-नौ किलोमीटर चौडी पट्टी पर कब्जा करने मे सफल हुइ, जिससे लादोगा झील से दक्षिण शहर तक जान का स्थलीय रास्ता मिल गया।

यह शहर को बचाने की दिशा मे एक महत्वपूण कदम था, लेकिन इससे घेरा समाप्त नही हुआ। जमन तोपखाना शहर के रिहायशी इलाका पर निरतर बमबारी करता रहा। जमन सेना ग्रुप "उत्तर" ने जनरल कूखलेर के तहत शहर के उपनगर की सीमा पर शक्तिशाली प्रतिरक्षा पात कायम कर रखी थी, कवच, कक्रीट और पत्थर से सुरक्षित अनक प्रतिरोधी अड्डे बनाये थे। रेलवे की मेडें, बाध, नहरे और पत्थर के मकान–इन सबसे स्थायी प्रतिरोध का काम लिया जा रहा था। जमन इस प्रतिरक्षा-पात को "उत्तरी दीवार" और "इस्पात का चक्र" कहा करते थे।

मगर जनरल गोवोरोव और जनरल मेरेत्स्कोव के तहत लेनिनग्राद और वाल्खोव मार्चो की सेनाए १४ जनवरी, १९४४ को शुरू किये गये अपने हमले के दौरान शत्रु की प्रतिरक्षा-पात का तोडने मे मफल हुई। आखिरकार लेनिनग्राद का घेरा, जा ९०० दिन तक रहा और जिसके कारण नगरवासियो को इतना कष्ट और मुसीबत उठानी पडी, समाप्त हा गया।

इस बीच मार्चे के दक्षिणी भाग मे जनरल कोयव और वतूतिन की सेनाए शत्रु पर वीरतापूवक प्रहार कर रही थी और अत मे कार्सुन-शेव्चेकोव्स्की के निकट (कीयेव के दक्षिण मे) वे एक बडे जमन सनिक ग्रूप को घेरन और नष्ट करने म सफल हुइ। शत्रु के ७० ००० से अधिक सैनिक हताहत हुए या बदी बना लिय गये। वसत मे बफ पिघलने से पैदा हुई कठिनाइयो के कारण सोवियत सेनाओ को तज वहती हुई अनगिनत छोटी-वडी नदिया पार करनी पडी। इसके वावजूद वे पश्चिम की ओर वढी और उक्रइना और माल्दाविया की भूमि पर पहुची। २६ माच को अग्रणी दस्ता को अगूर की बेलो से ढकी पहाडियो स प्रूत नदी का चौडा पाट दिखाई दिया। सोवियत सघ की राज्य-सीमा इसी नदी के साथ साथ जाती थी।

अप्रैल के प्रारम्भ मे क्रीमिया मे तापे गरजने लगी। जनरल येर्योमेको और जनरल ताल्बूखिन की सेनाए और काले सागर स्थित नौसेना के (एडमिरल ओक्त्याब्रस्की की कमान मे) तथा अज़ोव सागर सनिक बेडे के (एडमिरल गोर्श्कोव के तहत) जहाज क्रीमिया प्रायद्वीप को मुक्त करने के लिए आगे वढे। कुछ ही दिना मे क्रीमिया का मुख्य भाग मुक्त कर दिया गया। शत्रु ने सेवास्तोपाल म मोर्चाबदी करने की कोशिश की। पूरी तैयारी

के बाद सोवियत सेनाओ ने अंतिम हमला शुरू किया। ७ मई को सेवास्तोपोल के निकट सपून पहाडी के लिए घमासान लडाई हुई। यह पहाडी जमनो का मुख्य प्रतिरोध केंद्र थी, जिसपर छ परता म खन्दके खुदी हुई थी, सुरगें बिछी थी और कटीले तारो की कई कतारे बाधी गयी थी। सोवियत सनिक लाल झडे उडाते गोलियो की बौछार मे बढते गये। झडावरदार गिरते, मगर दूसरे सैनिक आगे वढकर झडे थाम लेते। दिन समाप्त होते-होते ये झडे सपून पहाडी की चोटी पर फहरा रहे थे। ९ मई को सेवास्तोपोल पूरी तरह मुक्त हो गया।

सोवियत सैनिका द्वारा प्राप्त सफलताओ से यह निर्विवाद रूप स प्रकट हो गया था कि नाज़ी जमनी की मुकम्मल शिकस्त दूर नही है और यह कि सोवियत सघ इस स्थिति मे था कि पूणतया अपने साधनो के बल पर उस शिकस्त को सुनिश्चित करे और यूरोप की अधीन जातियो को मुक्त करे। तब कही सयुक्त राज्य अमरीका और ब्रिटेन के राजनीतिक और सैनिक नेताओ ने यह तय किया कि अब दूसरा मोर्चा खोलने म टाल मटोल से काम नही लेना चाहिए। ६ जून का आइज़नहावर के तहत ब्रिटिश और अमरीकी सेनाए नामाडी (उत्तरी फ्रास) मे उतरी। पतझड के समय तक वे फ्रासीसी प्रतिरोध आदोलन की सहायता से जमन सेनाओ को फ्रास से और फिर बेल्जियम, लक्ज़ेम्बग और हालैंड के भी एक काफी बडे हिस्से से निकालकर बाहर करने मे सफल हुइ। उन्हे कोई ६० जमन डिवीजनो का मुकाबला करना था, जबकि उस समय सोवियत मोर्चे पर शत्रु के २२८ डिवीजन और २२ ब्रिगेड थे।

१९४४ की गमियो मे सोवियत आक्रमण ने वडी तेज़ी से ज़ोर पकडा। उत्तर-पश्चिम मे बडे पैमाने की एक कारवाई के फलस्वरूप सोवियत फौजो ने मनेरहाइम रेखा की मज़बूत किलाबदियो को ताड दिया और फिनिश सेनाओ को परास्त कर दिया। तब फिनलड ने युद्ध विराम का आग्रह किया और उस मोर्चे पर लडाई की कारवाइया ४ सितम्बर को रोक दी गयी।

युद्ध की उस मजिल की बडी कारवाइया मे से एक थी जुलाई और अगस्त, १९४४ म बेलोरूस म हमले की कारवाई। इसका मोर्चा कोई ५०० किलोमीटर तक फला हुआ था। जनरल बग्रम्यान, जनरल चेर्याखोव्स्की जनरल जखारोव और जनरल राकोस्सोव्स्की के तहत सोवियत सेनाओ ने एक सबसे शक्तिशाली जमन

फौज को नष्ट कर दिया। यह फील्ड माशल मोडेल के तहत सेना ग्रूप "केन्द्र" था। जनरल वेलिग के तहत प्रथम पोलिश सना ने, जो सोवियत भूमि पर सगठित की गयी थी, इस कारवाई मे भाग लिया, जिसमे शत्रु के ५,४०,००० आदमी काम आये। उस समय तक पूरा बेलोरूस और लिथुआनिया का बडा भाग मुक्त हो चुका था। शत्रु का पीछा करती सोवियत सेनाओ ने पोलिश क्षेत्र मे प्रवेश किया।

उस साल गर्मी और पतझड के दौरान सोवियत सेना ने बाल्टिक जनतत्रो—एस्तोनिया, लाटविया तथा लिथुआनिया—को मुक्त कर लिया और अगस्त तथा सितम्बर म सफल यास्सी किशिनेव कारवाई की बदौलत काफी प्रगति हुई। जनरल मलिनोव्स्की और जनरल तोल्बूखिन की सेनाओ ने यास्सी-किशिनेव इलाके मे २२ जमन डिवीजनो को घेरकर नष्ट कर दिया, जिससे वे पूरे मोल्दाविया को मुक्त कर सके और उन्हे रूमानिया के भीतर होकर जाने का रास्ता मिल गया। २३ अगस्त को रूमानिया मे देशभक्तिपूण शक्तियो ने अन्तोनेस्कू फासिस्ट तानाशाही का तख्ता उलट दिया और उसके स्थान पर नयी रूमानियाई सरकार बनी, जिसने नाजी जमनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

सोवियत सेनाओ ने रूमानिया पार कर जाने के बाद बल्गारिया मे प्रवेश किया और इससे उस जन विप्लव को और अधिक बल मिला, जिसकी तैयारी बल्गारिया के कम्युनिस्ट दिमीत्रोव के नेतृत्व मे कर रहे थे। बल्गारियाई गुरिल्ला दस्ते पहाडो से नीचे आने और शहरो तथा गावो पर कब्जा करने लगे। ६ सितम्बर को सोफिया रेडियो ने घोषणा की कि विप्लव सफल हुआ और पितभूमि मोर्चे की सरकार कायम हो गयी है। उसके बाद बल्गारिया ने जमनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।

२३ सितम्बर को सोवियत पैदल सेनाओ ने यूगोस्लाविया की क्रान्तिकारी सरकार की सहमति से यूगोस्लाविया की सीमा पार की। तीन साल से अधिक मुद्दत से जमन नाजियो द्वारा अधिकृत यूगोस्लाविया म एक राष्ट्रीय मुक्ति-सघष चलता आ रहा था और कम्युनिस्टो के नेतृत्व मे श्रमजीवी जनता ने काफी सफलताए प्राप्त की थी। लेकिन अब भी जर्मन फौजें यूगोस्लाविया मे महत्वपूण स्थानो पर दखल किये हुए थी और जमनो के अतिम प्रतिरोध को कुचलने के लिए सोवियत सेनाओ की सहायता जरूरी थी।

पहाडा मे लडते और दो नदिया डेन्यूब तथा मोरावा पार करते हुए सोवियत डिवीजन तीतो की कमान म यूगोस्लाव राष्ट्रीय मुक्ति सेना के सग बेलग्रेड की ओर बढे और २० सितम्बर का यूगोस्लाविया की राजधानी मुक्त हो गयी।

उस समय पोलड मे हृदयविदारक घटनाए हो रही थी। पोलिश जनगण हमलावरो के विरुद्ध वीरतापूर्वक लडाई लड रहे थे। पोलैंड के मेहनतकशो ने स्वय अपने सशस्त्र दस्ते और अडरग्राउड सत्ता निकाय ("रादा नरोदोवा") कायम कर लिये थे। जब १९४४ की गर्मिया मे पूर्वी पोलड मुक्त हुआ, तो "क्रायोवा (केन्द्रीय) रादा नरोदोवा" ने राष्ट्रीय मुक्ति की एक पोलिश समिति स्थापित की, जिसे आगे चलकर अस्थायी सरकार के रूप मे पुनर्गठित किया गया। इस समिति मे विभिन्न प्रगतिशील राजनीतिक दलो और सगठनो के प्रतिनिधि शामिल थे। वह केन्द्रीय कार्यकारिणी सस्था थी, जिसकी जडें जन मुक्ति सग्राम म जमी हुई थी और जिसका आम जनता से गहरा सबध था। लेकिन उस समय एक और समानान्तर सरकार भी थी और वह थी लन्दन म प्रवासी सरकार। लन्दन सरकार ने पोलैंड मे स्वय अपनी अडरग्राउड फौज बनायी, जिसका नेतृत्व प्रतिक्रियावादी शक्तियो के हाथ मे था। वे सशस्त्र फासिस्ट विरोधी सग्राम करने का विरोध करती और अपनी ताकत भविष्य के लिए बचाकर रखना चाहती थी। "अच्छा है सोवियत सेनाए और पोलिश गुरिल्ला जर्मनो के खिलाफ लडाइयो म अपना खून बहायें। जब वे जर्मनो को निकाल बाहर कर देंगे, तो हम ताजादम और अपनी शक्ति को ज्यो का त्यो लेकर सत्ता पर अधिकार करने आयेंगे।" इसी आधार पर प्रतिक्रियावादियो का मन काम करता था।

१९४४ की गर्मियो मे उन्होंने सोचा कि समय आ गया है सोवियत सेनाए पोलड म प्रवेश कर चुकी थी और वारसा की ओर बढ रही थी।

१ अगस्त को लन्दन सरकार की ओर से जनरल बुर कोमारोव्स्की ने वारसा म विद्रोह शुरू करने का आदेश जारी किया। पोलिश राजधानी के निवासियो न, जिन्हे विद्रोह सगठित करने के पीछे असल उद्देश्यो का पता नही था, शत्रु के विरुद्ध वीरतापूर्वक सघर्ष शुरू किया। वे दो महीने तक लडते रहे, लेकिन शत्रु की तुलना म उनकी शक्ति नगण्य थी। हिटलर

के खास आदेशानुसार शहर का हवाई बमबारी और तोपा की गोलाबारी के ज़रिये मलियामेट कर दिया गया और वारसा के निवासिया की बेदर्दी से हत्या की गयी। वारसा काड में लगभग २ लाख पोल मौत के घाट उतारे गये। "प्रतिक्रियावाद लाशा के अम्बार को सत्ता की प्राप्ति का केवल एक साधन मानता था।" ये शब्द कम्युनिस्टा के नेता गामूल्का ने लिखे।

यद्यपि जनरल बूर-कामाराव्स्की न विद्रोह के सबध मे अपनी योजना को सोवियत सर्वोच्च कमान के साथ समन्वित नही किया था और अपने निश्चय की सूचना भी नही दी थी, फिर भी सावियत सेना ने यथाशक्ति विद्राहियो की सहायता करने मे कोई कसर नही छोडी। सावियत विमाना ने जमन ठिकाना पर बमबारी की और विद्रोहियो के लिए हथियार, गोला बारूद और दवादारू का सामान गिराया। सावियत डिवीजन लडते हुए आगे बढते आ रहे थे, लेकिन स्थिति बहुत पचीदा थी। चालीस दिन तक आक्रमण मे कभी कोई ढिलाई नही की गयी थी, सोवियत सेनाए बराबर लडती हुई ५०० से ७०० किलामीटर तक बढ आयी थी। वे थकी मादी थी और रसद और तापखानवाले दस्ते पीछे रह गये थे। पदल सेना के पास गोला-बारूद की बहुत कमी थी टका म इधन नही रहा था और वायसना के दस्ता का नये हवाई अड्डा पर अपनी शक्ति पुनगठित करने का मौका नही मिला था। इसके विपरीत जमन सर्वोच्च कमान ने वारसा के बाहर विस्तुला नदी तट पर शक्तिशाली प्रतिरक्षा पात कायम कर रखी थी, उस क्षेत्र मे नयी सेनाए भेज दी थी और कई जवाबी हमले किये थे। यही कारण था कि सोवियत सेनाए वारसा मे घुस नही सकी। उन्ह भारी क्षति उठानी पडी (अगस्त म और सितम्बर, १९४४ के पूर्वार्द्ध मे प्रथम बेलोरूसी मोर्चे के १,६६,००० आदमी पोलैंड म हताहत हुए और केवल अगस्त म प्रथम उक्रइनी मोर्चे के १,२२,००० आदमी काम आये) और अत मे उन्हें रक्षात्मक नीति अपनानी पडी। एक नये हमले की तयारी करने के लिए काफी समय की जरूरत थी।

१९४४ का वष जिसमे सोवियत सेनाओ ने बडी विजयें प्राप्त की थीं, जब समाप्त होने लगा, तो पूरा सावियत सघ नाजी अधि-कारिया से मुक्त हो चुका था (केवल लाटविया के पश्चिम मे ...

मास्को मे जमन युद्धबन्दी। १९४४

घिरा हुआ जमन ग्रूप समुद्र की ओर पीठ किये युद्ध के ठीक अत तक डटा रहा)।

अपनी मुक्ति भूमिका को पूरा करने के दौरान सोवियत सेनाओ न फासिस्टो को पूर्वी और दक्षिण पूर्वी यूरोप के अनक देशो से खदेडा। फासिस्ट गुट वास्तव मे छिन भिन हो चुका था।

इन सभी सफलताओ के लिए सोवियत सेनाओ को भारी कीमत चुकानी पडी। शत्रु ने बडा जबदस्त प्रतिरोध किया था। फासिस्ट प्रचार द्वारा अधिकाश जमन सैनिको और अफसरो को यह विश्वास दिला दिया गया था कि अगर जमनी की हार हुई, तो सोवियत इलाके मे की गयी बर्बादी और हिसा का बदला लेने के लिए उन्हे एक-एक करके नष्ट कर दिया जायेगा। इस बीच फासिस्टो ने अपनी सेनाओ मे अनुशासन कायम रखन के लिए अपने आतक के शासन का अभूतपूव सीमा तक पहुचा दिया था।

सपूण विजय प्राप्त करने, फासिज्म का नामोनिशान मिटाने और यूराप की जातियो को हिटलर के आतक से मुक्त करन के लिए सोवियत सेनाओ की दढ प्रतिज्ञा फासिस्ट सेनाओ की क्रूरता से जिनका विनाश

अब स्पष्ट सामने था, सर्वथा भिन्न थी। यही कारण था कि सोवियत सैनिको ने इन आखिरी दिनो के आक्रमण के दौरान भी पहले ही की तरह, युद्ध की पहले दौर की रक्षात्मक लडाइयो के दौरान की ही तरह साहस का परिचय दिया। ऐसी कितनी ही घटनाए हुइ, जिनमे सैनिको ने शत्रु के पिल-बाक्सा मे मशीनगना के लिए बने सूराखो को अपने शरीर से ढाक दिया (इसका एक उदाहरण सैनिक मत्रोसोव का कारनामा है) या अपनी जान देकर शत्रु के टैका को उडा दिया। इस युद्ध का इतिहास सभी सेनाओ के प्रतिनिधियो—पैदल सैनिको, सफरमैना के लोगो, टैक चालका तथा विमान चालका, तोपचियो और नौसैनिको—के निस्वाथ साहस के आश्चयजनक, अविस्मरणीय कारनामो से भरा पडा है।

युद्ध की अतिम मजिल

१६४५ मे आक्रमणकारी अतिम रूप म पराजित हुए और दूसरे विश्व-युद्ध का अत हुआ। सोवियत-जमन मार्चे पर लडाइया अत तक तीव्र रही। अतिम लडाइया भी उतनी ही भयकर थी जितनी पहले की और उनमे दोना पक्षा को भारी क्षति पहुची।

निर्णायक सोवियत हमला जनवरी मे दूसर सप्ताह के मध्य मे शुरू हुआ। वह निश्चित दिन से कुछ पहले ही शुरू किया गया, ताकि पश्चिमी मोर्चे पर ब्रिटिश और अमरीकी सेनाओ की स्थिति का, जो दिसम्बर, १६४४ के उत्तराद्ध मे फील्ड माशल मोडेल के २५ डिवीजना द्वारा अर्डेनस पहाडा (बेल्जियम) म बुरी तरह दबी हुई थी, कुछ सुधारा जा सके। चचिल ने ६ जनवरी, १६४५ को स्तालिन को सूचित किया कि "पश्चिम म लडाई बहुत भयकर हो रही है" और मित्र-राष्ट्रा के लिए सहायता मागी। स्तालिन ने तुरत उत्तर दिया कि "पश्चिमी मार्चे पर अपने मित्र-राष्ट्रो की स्थिति को देखते हुए सर्वोच्च कमान के जनरल हेडक्वाटरस न फसला किया कि जल्दी से तयारिया पूरी कर ली जायें और शत्रु पर बडे पैमाने पर प्रहार शुरू किया जाये।"

ये प्रहार अभूतपूव पमाने पर किये गये। वे क्रमोत्तेश एकसाथ बाल्टिक सागर से कारपेथियन्स तक १,२०० किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर शुरू हुए। सारा रास्ता लडाइया लडते हुए माशल जूकोव माशल कोनेव, जनरल

रोकोसाव्स्की और जनरल चेर्न्याखोव्स्की की सेनाए तेजी से पश्चिम की ओर बढी। १७ जनवरी को वारसा मुक्त हुआ।

युद्ध द्वारा नष्ट पोलड मे सोवियत सेनाओ को फासिस्टो के अपराधो के नये अकाट्य प्रमाण मिले। जब उन्होने आस्वीत्सिम नगर के निरोधयन्त्रा शिविर मे प्रवेश किया, तो उन्होने अविश्वसनीय लोमहर्षक दृश्य देखे। नाजियो को गैस कोठरिया नष्ट करने का अवसर नही मिला था, जहा वे रोज लगभग १० हजार आदमियो को मार डालते थे। दाह गृह, जहा शव जलाये जाते थे, अभी गर्म थे। गोदामो मे ७ टन इनसानी बाल थे, जो दसियो हजार औरतो के मरो से काटे गये थे और आदमियो की हड्डियो के पाउडर से भरे सदूक थे, जिन्हे जर्मनी भेजा जानेवाला था। मई, १९४० से युद्ध का अत होने तक नाजियो ने आस्वीत्सिम मृत्यु शिविर मे ४० लाख से अधिक लोगो को मार डाला। इनमे कितने ही सोवियत नागरिक भी थे।

पोलड को मुक्त करने के बाद सोवियत सेनाओ ने सीमा पार करके जर्मनी के विभिन्न भागो, पूर्वी प्रशा, पोमेरानिया और सिलेशिया मे प्रवेश किया। इस बीच जनरल मलिनोव्स्की और जनरल तोल्बूखिन के तहत सोवियत सेनाओ ने शत्रु के एक बडे सेना ग्रुप को पराजित करने के बाद हगरी की राजधानी बुडापेस्ट को मुक्त किया और तब चेकोस्लोवाकिया और आस्ट्रिया मे प्रवेश किया, जहा उन्होने ब्रातिस्लावा और वियना को मुक्त किया।

जर्मन सर्वोच्च कमान ने इस बढाव को रोकना चाहा, प्रत्याक्रमण सगठित किये और पश्चिमी मोर्चे से नये डिवीजन पूर्व की ओर भेजे। जब ब्रिटिश और अमरीकी सेनाओ ने १९४५ के वसत मे पश्चिम मे आक्रामक कारवाइया शुरू की, तो उन्हे केवल ३५ डिवीजनो का सामना करना था, जिनके पास सैनिक भी नियत सख्या मे नही थे और जो स्वीटजरलैंड से उत्तरी सागर तक एक विशाल मोर्चे पर फले हुए थे। मित्र राष्ट्रो ने शीघ्र ही राइन को पार कर लिया और जर्मनी के भीतर तेजी से घुसने लगे।

इस समय युद्ध की अतिम लडाइया लडी जा रही थी। नाजी जर्मनी की आमूलचूल पराजय को इने गिने दिन रह गये थे। सोवियत सेनाए, जो ओडर और नाइसे नदियो तक पहुच गयी थी, अतिम मुकाबले के लिए

–बर्लिन पर धावा बोलने के लिए–तैयार थी, जो अब केवल ६०–७० किलोमीटर दूर रह गया था।

नाजी नेता, जिनकी पराजय अब करीब थी, बेमतलब प्रतिरोध करते रहे। युद्ध को लम्बा चलाकर वे जर्मन जनगण को और अधिक मुसीबत और क्षति का शिकार बनाते रहे। बर्लिन में, जहां पहले ही से शक्तिशाली किलाबन्दियां मौजूद थीं, जिनमें कोई ३७ मीटर की गहराई पर लोहे और कंक्रीट से बने रक्षागार भी थे, सैनिक और नागरिक जोरों पर खन्दकें खोद रहे थे, बैरीकेड खड़े कर रहे और पिल-बाक्सों का निर्माण कर रहे थे। घरों को गोले चलाने का स्थान बनाया जा रहा था।

बूढ़ों और किशोरों की भर्ती की गयी। हिटलर का एक अंतिम छायाचित्र उसके इस आदेश के भयंकर सत्य को प्रकट करता है कि "आखिरी आदमी और आखिरी गोली तक मुकाबला करते रहो।" चित्र में हिटलर के गाल पिचके हुए हैं और कन्धे धंस गये हैं, कोट का कालर खड़ा किया हुआ है और फौजी टोपी आंखों के ऊपर आ गयी है। वह बेतरतीब पांतों में खड़े किशोरों के सामने, जो फौजी वर्दी पहने हैं खड़ा है। यह फासिस्ट तानाशाह अपनी बर्बादी को टाल देने के लिए इन किशोरों की जिन्दगी कुर्बान करना चाहता था।

१५ अप्रैल की रात में बर्लिन के पूर्व जर्मन ठिकानों पर गोलों की लगातार बौछार होने लगी। इस गोलाबारी के बाद बड़ी संख्या में तेज सर्चलाइटस चमक उठीं और रात के अंधेरे को चीरते हुए इस चकाचौंध करनेवाले प्रकाश में सोवियत टैंक और पैदल सेना आगे बढ़ी। यह बर्लिन पर आक्रमण की शुरूआत थी। मार्शल जूकोव की फौजें एक-एक बस्ती के लिए लड़ाई करते हुए जर्मन राजधानी की ओर बढ़ीं। सैनिकों का एक भाग उत्तर की तरफ से नगर को घेर रहा था। मार्शल कोनेव की फौजें दक्षिण से बर्लिन का घेर रही थीं। २५ अप्रैल को घेरा पूरा हो गया। लेकिन उस समय भी नाजी नेताओं ने प्रतिरोध रोकने का आदेश नहीं दिया। उन्हें आशा थी कि सोवियत संघ और पश्चिमी राष्ट्रों के मतभेदों के कारण उन्हें अंतिम क्षण में बच निकलने का मौका मिल जायेगा।

स्वयं बर्लिन में लड़ाई दस दिन चली, जिसमें दोनों पक्षों के बहुत से लोग हताहत हुए। लड़ाई के दौरान असंख्य इमारतें बर्बाद हुईं। बर्लिन के केन्द्र में लड़ाई सबसे तीव्र थी, जहां सोवियत सेनाओं ने मुख्य सरकारी

इमारतो पर, राइखसकाज़ली पर, जहा हिटलर छिपा हुआ था और राइखस्ताग पर हमला किया। ३० अप्रैल की रात मे साजट येगाराव और सैनिक कतारिया ने राइखस्ताग पर लाल झडा – विजय-पताका – फहरा दिया।

उससे चन्द घटे पहले नाजी जमनी के फ्यूहरर हिटलर ने राइख्सकाजली की इमारत के नीचे एक कई मजिला तहखाने म आत्महत्या कर ली थी। वलिन के गैरीजन की बिल्कुल हतात्साहित बची खुची टुकडिया हथियार डालने लगी। जमन सैनिका के समूह तहखाना गुप्त स्थानो और खडहरो से सफेद झडे लिये सडको पर निकल आने लगे।

"विजय! राइख्स्ताग हमारा है!"

यूराप मे युद्ध की अतिम कारवाई चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग की मुक्ति थी। उस समय तक चेकास्लोवाकिया का बडा भाग सोवियत सेनाओ द्वारा मुक्त कराया जा चुका था, मगर एक बडा जमन समूह, कोई ६,००,००० आदमिया की फौज, चेक भूमि पर था।

५ मई को एक फासिस्ट विरोधी विद्रोह शुरू हुआ और जमन कमान ने टका, तोपा और विमाना का उपयाग करत हुए विद्रोहिया को कठोरता पूवक दवाना शुरू किया।

सोवियत टैंक सेना को प्राग की सहायता के लिए तुरत रवाना होने का आदेश मिला। टैंक चालक इस समय तक लम्बे अरसे की निरतर लडाई से थक कर चूर हो रहे थे और बहुतेरे टैंको को मरम्मत की जरूरत थी। लेकिन अपने चेक भाइयो की सहायता के जोश मे वे सारी कठिनाइयो को भूलकर निकल पडे। जनरल रिवाल्को और जनरल लेल्युशेंको की टैंक सेनाए बडी तेजी से प्राग की ओर उत्तर से ड्रेस्डेन तथा पहाडो की चढाइया पार करती हुई बढी। ८ मई की रात मे उन्हाने प्राग म प्रवेश किया और दूसरे दिन सुबह तक शहर को मुक्त कर दिया। इस तरह चेकोस्लोवाकिया की मुक्ति पूरी हो चुकी थी। कारपथियन्स मे दुक्ला दर्रे मे, स्लोवाकिया और मोराविया मे और प्राग के पास १,४०,००० सोवियत सैनिको और अफसरो ने अपनी जानें दी।

युद्ध की समाप्ति को कानूनी रूप दिया गया, जब बर्लिन के एक उपनगर काल्सहोस्ट मे बिलाशत आत्मसमपण पत्र पर हस्ताक्षर हो गये।

हस्ताक्षर समारोह दोमजिला मकान के हाल मे हुआ, जो जमन सनिक इजीनियरो के एक स्कूल का भोजनालय हुआ करता था। सोवियत सर्वोच्च कमान का प्रतिनिधित्व माशल जूकोव कर रहे थे और मित्र-राष्ट्रो की सनिक शक्तियो का प्रतिनिधित्व ब्रिटेन की वायुसेना के मुख्य माशल टेड्डर तथा सयुक्त राज्य अमरीका के वायुसेना कमाडर जनरल स्पाटस तथा फासीसी सेना के चीफ आफ स्टाफ जनरल दलातर दे तास्सियी ने किया।

जमनी की सैन्य शक्तियो के प्रधान सेनापति फील्ड माशल कैंतल, एडमिरल फ्रीदेबुग और कनल जनरल श्तुम्फ ने स्थल, सागर तथा वायु म सारी जमन शक्तियो के तत्काल और बिलाशत आत्मसमपण पत्र पर हस्ताक्षर किये।

दूसरे दिन सोवियत सघ ने विजय दिवस मनाया। सभी
गावो मे सोवियत जनगण युद्ध की समाप्ति पर खुशी मनान
निकल आये। सोवियत नर-नारिया १,४१७ दिन मोर्चे पर
से दूर कठिन मुसीबते उठाते रहे थे। उन कठोर दिना मे भी
हटना या शिकस्त उठानी पडती थी, वे बिना हिम्मत
काम करते रहे और भावी विजय के लिए कोई
था। २ करोड सोवियत लोग इस युद्ध मे काम

ऐगा नही था, जिसका कोई व्यक्ति युद्ध म काम नहा ग्राया हा। प्रत्यर व्यक्ति ने इसलिए अब खुशी मनायी कि उसे यह एहसास था कि अब जब कि युद्ध का अत ग्रामूलचूल विजय म हुग्रा, वे कुर्बानिया बेकार नही गयी।

अगरचे यूराप म सैनिक कारवाइया समाप्त हा गयी थी, मगर अभी दूसरे विश्वयुद्ध का अत नही हुआ था। प्रशात महासागर के क्षेत्र म एक ओर जापान और दूसरी ओर चीन, सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन तथा उनके मित्र राष्ट्रा म लडाई जारी थी। १९४५ म यद्यपि जापान को कई भारी शिकस्त हुई थी, मगर उसके पास अभी भी शक्तिशाली स्थल सनाए थी। जापानी नेता युद्ध को लम्बा चला देना और इस प्रकार समझौता करना चाहते थे। १९४५ तक सोवियत सघ ने जापान के खिलाफ युद्ध म भाग नही लिया था। लेकिन साम्राज्यवादी जापान ने कई वर्षों स सोवियत सघ के प्रति शत्रुतापूर्ण नीति अपना रखी थी। मचूरिया पर दखल करने के बाद जापानियो ने वहा एक बडी सेना जमा कर दी थी और सुदूर पूर्व मे सोवियत सघ की सीमाओ पर बराबर सैनिक झगडा की आग भडकाते रहते थे। वस्तुस्थिति यह थी कि सुदूर पूर्व म प्रशात महासागर मे सोवियत सघ का रास्ता जापान ने बद कर रखा था। उस समय जापानी जनरल स्टाफ सोवियत सघ पर हमले की योजना तैयार कर रहा था। इन्ही सब कारणो से सोवियत सघ की आक्रमण के इस स्रोत–जापानी सैन्यवाद–को खत्म करने मे दिलचस्पी थी। साथ ही सोवियत सघ चाहता था कि दूसरा विश्वयुद्ध जल्दी से जल्दी समाप्त हो जाये, सर्वव्यापी शाति कायम हो और इस तरह मानवजाति की पीडाओ का अत हो। और वह अपने मित्र राष्ट्रो की सहायता भी करना चाहता था, जिन्होने जर्मन फासिज्म के विरुद्ध लडाई म उसका साथ दिया था।

इन्ही कारणो से याल्ता मे फरवरी, १९४५ मे दूसरे त्रिराष्ट्रीय सम्मेलन मे जिसमे सोवियत सघ, ब्रिटेन और सयुक्त राज्य अमरीका का प्रतिनिधित्व स्तालिन, चर्चिल और रूजवेल्ट कर रहे थे, सोवियत सघ जर्मनी के आत्मसमर्पण के दो या तीन महीने बाद ही जापान के खिलाफ युद्ध म शामिल होने पर राजी हो गया। एक विशेष समझौते द्वारा जिसपर तीनो नेताओ के हस्ताक्षर थे यह तय पाया कि सखालीन द्वीप का दक्षिणी

भाग (जिसे बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रूस से छीन लिया गया था) और क्यूराइल द्वीप समूह, जिनसे प्रशांत महासागर को जानेवाले मार्ग की रक्षा होती है, सोवियत संघ के हवाले कर दिये जायें।

८ अगस्त, १९४५ को सोवियत संघ ने जापान के खिलाफ युद्ध की घोषणा की। उस रात १५ लाख से अधिक सोवियत सैनिकों और अफसरों ने ४,००० किलोमीटर लम्बे मोर्चे पर हमला बोल दिया। यह कारवाई मार्शल वसिलेव्स्की की कमान में हुई और उनकी फौजें शत्रु की बरसों में मजबूत बनायी हुई किलाबन्दियों को तोड़ने में सफल हुईं। कुछ ही दिनों में सोवियत फौज ने क्वांतुंग सेना की मुख्य शक्तियों को चकनाचूर कर दिया, कई गहरी नदियां पार कीं, पर्वतमालाओं और रेगिस्तानों से गुज़रते हुए सैकड़ों किलोमीटर का फासला तय किया। और इस तरह उत्तर-पूर्वी चीन और उत्तर कोरिया के विशाल इलाके मुक्त किये गये।

उसी समय जब कि नर-नारियां आनेवाली विजय तथा दूसरे विश्वयुद्ध के अंत की कल्पना करके खुश हो रहे थे, एक ऐसी घटना घटी, जिसने मानवजाति के इतिहास को कलंकित कर दिया। ६ अगस्त को प्रातःकाल दो अमरीकी बी २९ बमवार हिरोशीमा के जापानी नगर के ऊपर दिखाई दिये और ८ बजकर १५ मिनट पर उनमें से एक ने पैराशूट के साथ एक बम गिराया। इसके कुछ ही मिनट के भीतर धमाका हुआ और चकाचौंध करनेवाली रोशनी चमकी और उसके बाद विशाल कुकुरमुत्ते की तरह का बादल नगर के ऊपर फैल गया। हिरोशीमा पर यह एक परमाणविक बम फटा। तीन दिन बाद ९ अगस्त को नागासाकी नगर पर एक और परमाणविक बम गिराया गया। इन दो बमों के धमाकों से ४ लाख ४७ हज़ार नागरिक मरे गये और अपंग हो गये। परमाणुशस्त्र के प्रयोग को सैनिक आवश्यकता की दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता। यह नागरिकों के प्रति अक्षम्य क्रूरता की हरकत और अमरीका की परमाणु धमकियों की भावी नीति की दिशा में पहला कदम था।

कोरिया और मचूरिया में सोवियत फौज द्वारा जापानी सेना की शिकस्त के बाद जापान के लिए कोई आशा नहीं रह गयी थी। २ सितम्बर को जापान के बिलाशर्त आत्मसमर्पण पत्र पर टोकियो खाड़ी में खड़े अमरीका के युद्धपोत "मिस्सूरी" में हस्ताक्षर हो गये। ... ५ करोड़ मानवों की आहुति लेने के बाद समाप्त हो ...

उस युद्ध मे सोवियत सघ ने निर्णायक भूमिका अदा की। उसने नाजी जमनी के खिलाफ लडाई का अधिकाश भार उठाया और भयकर लडाई मे अकेले उसकी सेनाओ को शिकस्त दी थी। इस प्रकार फासिस्ट गुलामी का जो खतरा मानवजाति के सरो पर मडरा रहा था, दूर हो गया। युद्ध, जो सोवियत सघ के लिए एक कठिन घडी मे आया था, सोवियत सामाजिक व्यवस्था के लिए एक कठिन परीक्षा साबित हुआ। इस परीक्षा ने सोवियत सामाजिक तथा राजकीय व्यवस्था और उसके समाजवादी अर्थतन्न की ताकत और जीवन की शक्ति तथा सोवियत सघ की जातियो के बीच अटूट मैत्री की मजबूती को प्रकट कर दिया।

सोवियत जनगण की देशभक्ति और समाजवादी पितृभूमि के प्रति उसकी निष्ठा की अभिव्यक्ति युद्ध के दौरान उनके आम वीरतापूर्ण कारनामो मे हुई। ७० लाख से अधिक सोवियत अफसरो और सैनिको को पदक और तमगे मिले।

युद्ध के फलस्वरूप सोवियत सघ ने केवल यही नही कि विश्व साम्राज्यवाद की सबसे आक्रामक शक्तियो के हमले को परास्त किया, बल्कि अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे अपनी स्थिति को सुदृढ भी बनाया। अवश्य ही युद्ध ने, जिसके कारण देश को अविवर्णीय कष्ट उठाने, बलिदान करने पडे और बर्बादी सहनी पडी, देश की प्रगति के मार्ग मे एक भारी बाधा का काम किया।

मगर इन कठिनाइयो और हानियो के बावजूद युद्धकाल मे सोवियत व्यवस्था और मजबूत हुई। जनता की नैतिक-राजनीतिक एकजुटता बढी। कम्युनिस्ट पार्टी की मार्गदर्शक भूमिका और प्रतिष्ठा बहुत बढ गयी। मोर्चे पर और मोर्चे से दूर कम्युनिस्ट ही थे, जिन्होने हमेशा आगे बढकर सबसे कठिन कार्यभारो को पूरा किया। ३० लाख से अधिक पार्टी सदस्य हमलावरो के विरुद्ध सघर्ष मे काम आये। हर महीने पार्टी मे शामिल होनेवाले नये सदस्यो की सख्या बढती गयी। मोर्चे पर स्थिति जितनी कठिन होती गयी, उतनी ही अधिक सख्या मे लोग पार्टी मे शामिल होते गये। युद्ध के दौरान ५० लाख लोग पार्टी के उम्मीदवार और ३५ लाख सदस्य बने।

बडी लडाइयो के पूर्व हजारो अफसरो और सैनिको की ओर से इस तरह की दरखास्ते आती "मैं लडाई पर जा रहा हू और अनुरोध करता

हू कि मुझे कम्यनिस्ट पार्टी मे शामिल कर लिया जाये।" इससे जाहिर है कि कम्युनिस्ट पार्टी की, जो उस कठिन सघप के वर्षो मे जनगण का नेतत्व कर रही थी, प्रतिष्ठा कितनी वडी थी।

उस युद्ध मे सोवियत जनगण की विजय विश्व ऐतिहासिक महत्व का कारनामा थी। अपनी मातभूमि की, जहा समाजवाद सबसे पहले विजयी हुआ था, सफल रक्षा करके, सोवियत जनगण ने विश्व प्रगति के किले को सुरक्षित और सुदढ कर लिया था।

सोवियत जनगण ने फासिज्म को परास्त करने तथा अधीन जातिया को मुक्त करने मे निर्णायक भूमिका अदा की। इसने सारे ससार मे श्रमजीवी जनता के मुक्ति सग्राम को बहुत सुगम बनाया।

सोवियत सघ में समाजवाद की सपूर्ण विजय की दिशा में प्रगति १९४६–१९५८

अतर्राष्ट्रीय स्थिति मे मौलिक परिवतन

दूसरे विश्वयुद्ध के उपरात अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे मौलिक परिवतन हुए। शाति, जनवाद और समाजवाद की शक्तिया का सुदढीकरण और विकास और पूजीवाद की शक्तिया की कमजोरी उनकी विशेपता थी। औपनिवेशिक व्यवस्था के पतन से भी, जिसकी शुरुआत युद्ध के बाद हुई पूजीवादी जगत को जबदस्त धक्का पहुचा।

यूरोप मे जमन और इटालियन फासिस्टा और सुदूर पूव म जापानी सैयवाद पर विजय की बदौलत सारी दुनिया मे जनवादी और प्रगतिशील शक्तियो की सक्रियता म वद्धि की सम्भावनाए पैदा हो गई थी। पालड, वल्गारिया, अल्वानिया, हगरी, रूमानिया चेकोस्लोवाकिया और यूगोस्लाविया के आथिक और राजनीतिक जीवन मे वुनियादी तवदीलिया के कारण इन देशा मे जनवादी शासन व्यवस्था की स्थापना सम्भव हो गई। अक्तूवर, १९४९ मे जमन जनवादी जनतत्र का ज म हुआ जिसन समाजवादी विकास का रास्ता अपनाया।

जनवादी शासन व्यवस्था कोरिया और वियतनाम के एक भाग म भी विजयी हुई, जहा कोरियाई लोक जनतत्र और वियतनामी जनवादी जनतत्र की स्थापना हुई। चीन म क्राति की विजय के फलस्वरूप अक्तूवर, १९४९ म चीनी लाक जनतत्र स्थापित हुआ।

लाक जनवाद के इन जनतत्रा की स्थापना की वदौलत समाजवाद ने एक विश्व व्यवस्था का रूप ले लिया। शाति, प्रगति और जनवाद के

लिए सघप तथा सोवियत सघ के पूजीवादी घेरे के अत के लिए अधिक अनुकूल स्थितिया उत्पन्न हुइ।

अतर्राष्ट्रीय स्थिति म परिवतन से विश्व की युद्धोत्तर समस्याओ के शातिपूण समाधान पर गहरा असर पडा। इन समस्याओ पर युद्ध के दौरान और युद्ध के वाद भी अनेक कार्फ्रेसो और सम्मेलनो मे विचार विमश होता रहा था।

वलिन के निकट पोटसडाम म तीन महान शक्तियो की सरकारो के प्रधानो की कार्फ्रेस अत्यत महत्वपूण रही। पोट्सडाम (बर्लिन) कार्फ्रेस १७ जुलाई से २ अगस्त, १६४५ तक हुई और इसमे स्तालिन, ट्रुमैन और चर्चिल ने भाग लिया (ससदीय चुनावो के वाद एटली)। पोट्सडाम कार्फ्रेस न एक स्थायी निकाय, पाच देशो (सोवियत सघ, सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रास और चीन) की विदेश मत्री परिषद स्थापित करने का निश्चय किया जिसके जिम्मे नाजी जमनी के यूरोपीय मित्र-राष्ट्रो के साथ शाति सधियो के प्रारूप तैयार करना, यूरोप म युद्ध की समाप्ति से उत्पन्न होनेवाले अनिर्णीत भूक्षेत्रीय सवालो के समाधान सम्बन्धी सुझाव तयार करना और जमनी के शातिपूण निबटारे की शर्तो की रूपरेखा भी बनाना था। कार्फ्रेस ने जमनी के सबध मे मित्र-राष्ट्रो की आम नीति के आधारभूत राजनीतिक तथा आर्थिक सिद्धातो की व्याख्या भी की, जो देश के जनवादीकरण, असैनिकीकरण तथा नाजीवाद उन्मूलन पर आधारित थे। तीनो महान शक्तिया इस नतीजे पर पहुची कि आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से जमनी को एक अभिन्न इकाई मानकर चलना चाहिए।

पोलैंड की पश्चिमी सीमाओ के बारे म एक फैसला भी किया गया भूतकाल मे उसके जिन इलाको का जर्मन आक्रमणकारियो ने हडप लिया था, वे पोलड को लौटा दिये गये।

पाटसडाम कार्फ्रेस के फैसलो के अनुसार जमनी के पक्ष मे युद्ध मे भाग लेनेवाले देशो – इटली, फिनलड, वल्गारिया, रूमानिया और हगरी के साथ शाति सधियो सम्पन्न करन के लिए प्रारम्भिक काम शुरू कर दिया गया। सोवियत सघ यह मानकर चलता था कि प्रत्येक दश के ऐतिहासिक विकास की विशेषताओ को ध्यान मे लेना जरूरी है। इन देशो के जनगण को शातिपूण जनवादी विकास का रास्ता अपनाने और अपनी-अपनी राष्ट्रीय

अर्थव्यवस्था को विस्तारित करने का अवसर मिलना चाहिए। पश्चिमी शक्तियां इन शांति संधियों में ऐसी शर्तें रखना चाहती थीं, जिनसे इटली, फिनलैंड बल्गारिया, रूमानिया और हंगरी की प्रभुसत्ता पर पाबंदी लग जाती और उन्हें इन देशों के आर्थिक और राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल जाता। लेकिन पश्चिमी शक्तियों की यह कोशिश असफल रही। फरवरी, १९४७ में गर्मागर्म बहसों के बाद शांति संधियों पर हस्ताक्षर कर दिये गये।

इन संधियों पर हस्ताक्षर करना शांतिप्रिय शक्तियों की उल्लेखनीय विजय था। मुख्यत ये दस्तावेजें हस्ताक्षर करनेवाले देशों के हितों के अनुकूल थीं और उनसे शांति तथा यूरोप में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के सुदृढ़ीकरण में सुविधा हुई।

लेकिन वांछित शांति से अंतर्राष्ट्रीय तनाव में कमी नहीं हुई।

जनवरी, १९४६ में संयुक्त राष्ट्र संघ की जनरल असेम्बली का प्रथम अधिवेशन हुआ। यह संगठन शांति बनाये रखने और उसको सुदृढ़ करने के लिए एक स्वैच्छिक संस्था के रूप में कायम किया गया था। इसके पहले ही अधिवेशन में सोवियत प्रतिनिधिमंडल ने शस्त्रास्त्र में सार्विक कटौती का सुझाव रखा मगर वाशिंगटन और लन्दन वास्तव में इन सुझावों के विरुद्ध थे। संयुक्त राज्य अमरीका परमाणविक शस्त्र का एकमात्र स्वामी था और वह अपने इस एकाधिपत्य को कायम रखना चाहता था। सोवियत संघ द्वारा उठाया गया परमाणविक शस्त्र निषेध का सवाल हल नहीं हो पाया। पश्चिमी शक्तियां, खासकर संयुक्त राज्य अमरीका युद्ध के तुरंत ही बाद सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के प्रति "बल प्रयोग" की नीति का अनुसरण करने लगे। इसके लक्षण पोट्सडाम कान्फ्रेंस में और पराजित राष्ट्रों के साथ शांति संधियों की तैयारी के काम के दौरान भी साफ दिखाई दिये। इसी से सोवियत संघ तथा अन्य समाजवादी देशों के विरुद्ध पश्चिमी शक्तियों के तथाकथित "शीत युद्ध" की शुरुआत हुई। मार्च, १९४६ में अमरीका के फुल्टन नगर में संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति ट्रूमैन की उपस्थिति में चर्चिल का भाषण शीत युद्ध का वास्तविक कार्यक्रम बन गया।

फुल्टन भाषण के बाद संयुक्त राज्य अमरीका ने अन्य पश्चिमी देशों से मिलकर समाजवादी शिविर के खिलाफ कई कारवाइयां कीं जिनका

उद्देश्य था यूरोपीय जनवादी जनतत्रो मे पूजीवाद को बहाल करना, सोवियत सघ के साथ उनके सहयोग को तोडना और साथ ही पश्चिमी यूरोप के देशो मे, खासकर फ्रास और इटली मे, प्रगतिशील शक्तियो के विकास और सुदृढीकरण को रोकना।

सितम्बर, १९४७ मे सयुक्त राज्य अमरीका तथा लैटिन अमरीका के देशो के बीच एक सैनिक सधि पर हस्ताक्षर हुए जो साम्राज्यवाद का विश्व प्रभुत्व कायम करने की नीति का एक कदम था।

मार्च, १९४८ मे ब्रिटिश राजनयिको ने ब्रसेल्स म ब्रिटेन, फ्रास, हालैंड, बेल्जियम और लक्जेम्बर्ग के बीच आर्थिक, सामाजिक, सास्कृतिक तथा सैनिक सहयोग की सधि सम्पन्न करवाई।

४ अप्रैल, १९४९ को वाशिंग्टन म १२ देशो (सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रास, इटली, कनाडा, आइसलैंड, नार्वे, डेनमार्क, हालैंड, बेल्जियम, लक्जेम्बर्ग और पुर्तगाल)* ने उत्तर-एटलेंटिक सैनिक सगठन (नाटो) स्थापित करने की सधि पर हस्ताक्षर किये। इस सगठन की कल्पना और स्थापना सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो के विरुद्ध आक्रमणकारी अस्त्र के रूप म इस्तेमाल करने के लिए की गई थी। शीत युद्ध का असर सोवियत सघ तथा अन्य समाजवादी देशो से व्यापार पर प्रतिबध तथा पूँजीवादी और समाजवादी देशो के बीच व्यवसायी और सास्कृतिक सबध तोडने के प्रयत्नो मे भी जाहिर हुआ।

लेकिन साम्राज्यवादियो की कोई भी चालबाजी विश्व समाजवादी व्यवस्था के सुदृढीकरण को रोक नही सकी। थोडे ही समय के भीतर यूरोप तथा एशिया के समाजवादी निर्माण के मार्ग पर अग्रसर हो रहे देशो ने राजनीतिक, आर्थिक और सास्कृतिक विकास मे बडी सफलताए प्राप्त की।

भविष्य के अतर्राष्ट्रीय सबधो के बारे म लिखते हुए वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सस्थापक कार्ल मार्क्स ने कोई एक सौ वर्ष पहले ही यह कह दिया था " आर्थिक दरिद्रता और राजनीतिक पागलपन सहित पुराने समाज के मुकाबले मे एक नया समाज जन्म ले रहा है जिसका

---

*बाद मे इसम तुर्की, यूनान और सघात्मक जर्मनी शामिल हुए।

अतर्राष्ट्रीय सिद्धात होगा – शांति, क्योंकि हर राष्ट्र का एक ही शासक होगा – श्रम।"*

दूसरे विश्वयुद्ध के अत और प्रारम्भिक युद्धोत्तर वर्षों मे समाजवादी देशो के बीच अनेक पारस्परिक लाभदायक समझौतो और सधियो पर हस्ताक्षर हुए। दिसम्बर, १९४३ मे सोवियत सघ ने चेकोस्लोवाकिया स मैत्री, परस्पर सहायता और युद्धोत्तर सहयोग की सधि सम्पन्न की। इसी प्रकार की सधिया अप्रल, १९४५ म यूगोस्लाविया और पोलैंड से भी सम्पन्न हुइ। इन सधियो मे सोवियत सघ और जनवादी जनतता मे एक दूसरे की स्वाधीनता और प्रभुसत्ता के सम्मान तथा एक दूसरे के अदरूनी मामलो मे अहस्तक्षेप के आधार पर घनिष्ठ सहयोग की व्यवस्था की गई थी। हस्ताक्षर करनेवालो ने अपने ऊपर यह जिम्मेदारी भी ली कि जमनी या किसी और राज्य द्वारा जो आक्रमण करने के उद्देश्य से जमनी से मिल गया हो, आक्रमण की स्थिति मे एक दूसरे की सहायता करेगे।

बाद मे सोवियत सघ ने अन्य समाजवादी देशो से भी समझौते किये अल्बानिया (नवम्बर, १९४५), मगोलिया (फरवरी, १९४६), रूमानिया (फरवरी, १९४८), हगरी (फरवरी, १९४८), बल्गारिया (मार्च, १९४८) और चीन (फरवरी, १९५०)। साथ ही अन्य समाजवादी देशो के बीच, जैसे पोलड और चेकोस्लोवाकिया मे, बल्गारिया और रूमानिया, आदि मे कई सधियो पर हस्ताक्षर हुए।

पहले तो समाजवादी देशा के अतर्राजकीय सबधो का विकास द्विपक्षीय आधार पर हुआ। लेकिन उन बरसो मे भी समाजवादी देशो की सयुक्त कारवाई की अनेक मिसाले सामने आने लगी थी।

व्यापार के क्षेत्र मे भी समाजवादी देशो के बीच के सबध सुदढ हुए। आगे चलकर समाजवादी देशा के बीच आर्थिक सहयोग म विस्तार होने की बदौलत जनवरी, १९४९ मे पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद की स्थापना हुई, जिसने पारस्परिक तक्नीकी सहायता देने तथा कच्चे माल, खाद्य पदार्थ, मशीनरी तथा अन्य औद्योगिक साज-सामान की पारस्परिक सप्लाई का नियतण करने का बीडा उठाया।

---

*मार्क्स तथा एगेल्स, रचनाए, दूसरा रूसी सस्करण, खड १७, पृष्ठ ५

सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धांतों को मानकर चलते हुए सोवियत संघ ने पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के काम में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कहना काफी होगा कि पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया ने १९५०-१९५५ की अवधि में अपनी खनिज लोहे की क्रमशः ६४ तथा ७४ प्रतिशत आवश्यकता सोवियत निर्यात के जरिये पूरी की। सोवियत संघ ने अनेक औद्योगिक उद्यमों का निर्माण करने में सभी समाजवादी देशों की सहायता की। इस सहायता के कारण समाजवादी देशों में औद्योगिक विकास की रफ्तार तेज हुई। १९५६ तक पोलैंड का औद्योगिक उत्पादन युद्धपूर्व के स्तर से चारगुना ज्यादा था, और बल्गारिया, हंगरी, रूमानिया और चेकोस्लोवाकिया के लिए यह आंकड़े क्रमशः पांचगुना से ज्यादा, साढ़े तिगुना, लगभग तिगुना और दोगुना से अधिक थे।

समाजवादी शिविर द्वारा प्राप्त सफलताओं ने साम्राज्यवादियों को अधिकाधिक भयभीत कर दिया। उनके देखते-देखते तथा उनके प्रयत्नों के बावजूद, शांति समर्थकों का आंदोलन बढ़ रहा था साथ ही उपनिवेशवाद विरोधी राष्ट्रों का स्वाधीनता संग्राम दिनोदिन फैलता जा रहा था। ठीक उसी समय पांचवें दशक के अंत तथा छठे के शुरू में, पश्चिम के अनेक राजनीतिक और सामरिक नेताओं ने सोवियत संघ के खिलाफ युद्ध का खुला आवाहन किया। संयुक्त राज्य अमरीका ने नाटो के अपने साझीदारों से मिलकर समाजवादी राज्यों की सीमाओं के साथ-साथ सैनिक अड्डों का एक पूरा जाल सा बिछा दिया और पश्चिमी जर्मनी का पुनः सैनिकीकरण करना शुरू किया।

१९५० की गर्मियों में दक्षिणी कोरिया के प्रतिक्रियावादियों और संयुक्त राज्य अमरीका के साम्राज्यवादी हल्कों ने कोरियाई लोक जनवादी जनतंत्र के विरुद्ध एक जंग छेड़ दी। अमरीकी शासक हल्कों की नीतियों की बदौलत खतरा था कि यह युद्ध एक स्थानीय युद्ध न रह और इसके शोले एक देश की सीमाओं से बाहर बहुत दूर तक फैल जायें। सोवियत सरकार ने तुरंत सुझाव पेश किये जिनका उद्देश्य लड़ाई को जल्दी से जल्दी रोकना और शांतिपूर्ण ढंग से कोरियाई सवाल को हल करना था। बातचीत १९५१ की गर्मियों में ही शुरू हुई और केवल अमरीकी तथा दक्षिणी कोरियाई प्रतिनिधियों द्वारा अपनाये गये दृष्टिकोण के कारण कोरिया में युद्ध का अंत कहीं दो साल बाद हुआ।

इस बीच पश्चिमी यूरोपीय शक्तिया पश्चिमी जमनी का पुन सैनिकीकरण करने की दिशा मे नये कदम उठा रही थी। १६५४ का पतझड के दिना म लदन म ६ देशा (सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, फ्रास, सघात्मक जमनी इटली, बेल्जियम, हालैंड, लक्जेम्बग और कनाडा) की एक कान्फ्रेंस हुई जिसम इन देशा ने बिना सोवियत सघ से समझौता किये अपने आप ही एक निणय कर लिया कि पश्चिमी जमनी का ५,०० ००० की सेना, १,५०० विमान और स्वय अपनी नौसेना रखन की अनुमति दी जाये। १६५५ की वसत मे सघात्मक जमनी नाटो म शामिल हो गया।

समाजवादी देशा को अपनी प्रतिरक्षा क्षमता का सुदढ करन के लिए जवाबी कारवाई करनी पडी। इस उद्देश्य से मई, १६५५ म वारसा में एक सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमे सोवियत सघ, पालैंड, चेकोस्लोवाकिया, रुमानिया, बल्गारिया, जमन जनवादी जनतत्र, हगरी और अल्बानिया ने भाग लिया। इस सम्मेलन म वारसा सधि पर हस्ताक्षर हुए जिसम समाजवादी देशा का एक सैनिक प्रतिरक्षात्मक सघ बनाने की बात थी। इसके अलावा उस सधि मे, जिसमे कोई देश भी शामिल हो सकता था, उल्लिखित था कि ज्या ही यूरोप मे सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था स्थापित हो जायेगी वह सधि रद्द हो जायेगी। इससे एक बार फिर जाहिर हो गया कि इस सधि का एकमात्र प्रतिरक्षात्मक स्वरूप है।

१६५५ म सोवियत सघ ने अनेक कारवाइया शुरू की जो अतर्राष्टीय सबधो के विकास मे बहुत महत्वपूण साबित होनेवाली थी। इन कारवाइया मे कुछ ऐसी थी—सोवियत सैन्य शक्ति मे कटौती, हथियारो मे कटौती के लिए नये सुझाव, परमाणविक और हाइड्रोजन शस्त्रो पर निषेध तथा आस्ट्रिया के साथ एक राज्य सधि सम्पन्न करना।

१६५६ की घटनाओ से यह भलि भाति स्पष्ट हो गया था कि अतर्राष्ट्रीय तनाव कम करने के सभी सुझावा को पश्चिमी शक्तिया क्या अस्वीकार कर देती हैं। २६ जुलाई १६५६ को मिस्र की सरकार ने स्वेज नहर कम्पनी का राष्ट्रीयकरण कर लिया। इस बिल्कुल कानूनी कारवाई से पूजीवादी इजारेदारो म बडा रोष फला और ब्रिटेन फ्रास और इस्राइल ने ता मिस्री जनता के खिलाफ फौजी हस्तक्षेप तक कर दिया।

उन्ही दिनो हगरी मे एक प्रतिक्रातिकारी बलवा शुरू हुआ जिसकी तैयारी मे देशी और विदेशी प्रतिक्रियावादी शक्तिया ने भाग लिया था। षड्यन्त्रकारियो ने हगरी मे सफेद आतक शुरू कर दिया लेकिन प्रतिक्रियावादिया ने गलत अनुमान लगाया था। हगरी के श्रमजीविया के अनुरोध पर सोवियत सघ सहायतार्थ आया। सोवियत सघ ने अपना अतर्राष्ट्रीय कर्तव्य पालन किया और सोवियत सेना ने हगेरियाई सैनिक दस्ता तथा श्रमजीवी जनता के सशस्त्र दस्तो के साथ मिलकर बलवाइयो को कुचल दिया तथा देश मे सुव्यवस्था बहाल कर दी।

साथ ही सोवियत सघ ने मिस्री जनता की भी कारगर सहायता की और इससे मिस्र विरोधी हस्तक्षेप का दिवाला निकल गया।

छठे दशक के अत तक यह बात स्पष्ट हो चुकी थी कि साम्राज्यवाद की शक्तिया की आक्रमणकारी नीति असफल रही। क्या कारण था कि शीत युद्ध की नीति असफल रही? मध्य पूर्व मे प्रतिक्रियावादियो की योजनाए विफल क्या हुई थी? हगरी की जनता प्रतिक्रातिकारी शक्तिया के मुकाबले मे विजयी क्या रही थी? इन सब सवाला का एक ही जवाब था विश्व मे मौलिक परिवर्तन हो चुके थे और अब मानवजाति की भाग्य निर्णायक भूमिका पूजीवाद नही, बल्कि समाजवादी शिविर अधिकाधिक अदा कर रहा था।

पुन शातिकालीन निर्माण

फासिज्म के खिलाफ सोवियत जनगण के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध ने देश के जीवन को मानो दो कालावधियो मे विभक्त कर दिया। घटनाओ के सबध मे अभी तक कहा जाता कि युद्ध के पहले की बात है या बाद की। यद्यपि उन स्मरणीय दिना को एक शताब्दी की चौथाई से अधिक का समय बीत चुका है, लोग अक्सर इन वर्षो को युद्धोत्तर काल कहा करते हैं। अगर हम इन वर्षो को वैज्ञानिक दष्टि से देखें ताकि उन सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओ का विश्लेषण किया जाये जो महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के बाद सोवियत सघ के जीवन की विशेषता रही ह, तो दा मुख्य मजिले देखने म आती हैं। इनमे से पहली १९४६–१९५८ के दौर पर हावी है जो देश के युद्धपूर्व आर्थिक स्तर पर पहुचने तथा उससे आगे भी बढने के लिए काफी था। विश्व समाजवादी व्यवस्था

की स्थापना और सोवियत संघ की आर्थिक और प्रतिरक्षात्मक क्षमता के सुदढीकरण से समाजवाद के हित में अंतर्राष्ट्रीय शक्ति संतुलन में परिवर्तन हुआ था। उसने सोवियत संघ में पूंजीवाद की बहाली के खिलाफ एक शक्तिशाली जमानत मुहैया कर दी और समाजवाद की अंतिम विजय सुनिश्चित कर दी थी।

छठे दशक के अंत तक यह स्पष्ट हो गया कि सोवियत संघ के सामाजिक विकास की एक नयी मंजिल नजदीक आ पहुंची है। जनवरी, १९५९ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २१वीं कांग्रेस ने इस प्रस्थापना का निरूपण किया और इसे अपने फैसलों में शामिल किया। आइये, उन अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं पर नजर डालें जो उस दौर में सोवियत जनगण के जीवन में घटीं और उस रास्ते को देखें जिसे देश ने शांतिकालीन विकास के १२ वर्षों में तय किया।

* * *

८ मई १९४५ की रात को किसी सरकारी घोषणा से पहले ही घरों घर, कानों कान खबर फैल गयी "बस! युद्ध समाप्त हो गया!" प्रत्येक व्यक्ति लाउडस्पीकर से चिपका बैठा इन शब्दों को सुनने के लिए बेताब था जिसकी प्रतीक्षा बहुत दिनों से की जा रही थी कि "जर्मनी ने हथियार डाल दिये" कुछ ही मिनट बाद राष्ट्रव्यापी हर्षोल्लास शुरू हुआ। खिडकियों में बत्तियां जल उठीं और लोग सडकों पर उमड पड़े। मास्कोवासी लाल मैदान की ओर बढे और वहां सूर्योदय तक रहे। ९ मई का दिन छुट्टी का दिन घोषित कर दिया गया और अभूतपूर्व महोत्सव बन गया। यह बात केवल राजधानी में ही नहीं दिखाई दे रही थी। लेनिनग्राद के ऊपर विमानों से अभिनंदन पर्चे छितराये गये। कीयेव मींस्क तथा अन्य नगरों और छोटे बडे गांवों में समारोह सभाएं जुलूस तथा हर्षोल्लास का दृश्य चारों ओर दिखाई दे रहा था।

२४ मई, १९४५ को सोवियत सरकार ने सोवियत सेनानायकों के सम्मान में क्रेमलिन में एक स्वागत समारोह आयोजित किया। ठीक एक महीने बाद मास्को में विजय परेड हुआ। २४ जून को, रविवार के दिन सभी मोर्चों के प्रतिनिधि सैनिकों ने लाल मैदान में मार्च किया। जोरों की वर्षा हो रही थी (नागरिकों का जुलूस तक रद्द कर दिया गया

था), मगर कोई भी मच से हटा नही। हजारो मास्को निवासी चौको ग्रौर सडको मे हर जगह विजेताग्रो का स्वागत कर रहे थे।

लाल मैदान मे ग्रार्केस्ट्रा बजना यकायक बद हो गया ग्रौर ढोलो की टकोर मे सोवियत सैनिक पराजित शत्रु के २०० झडो को लिये, लेनिन समाधि तक गये, वहा घूमकर झडा को धरती पर पटक दिया। मूसलधार बारिश हो रही थी, फासिस्ट झडे कीचड मे लत-पत हो गये। यह दृश्य लाक्षणिक भी था।

सध्या समय नगरो ग्रौर गावो के निवासी फिर उत्सव मनाने घरा से निकल पडे। मास्को विजय परेड के बाद ग्राम उत्सव मनाया जाने लगा। ग्रब सभी लोग विजेताग्रो के घर वापस ग्राने की राह देखने लगे।

हा, युद्ध के ग्रसर ग्रभी भी दिखाई दे रहे थे। पराजित हिटलरी सेना के बचे खुचे गिरोहो ने ग्रभी तक हथियार नही डाले थे। सोवियत
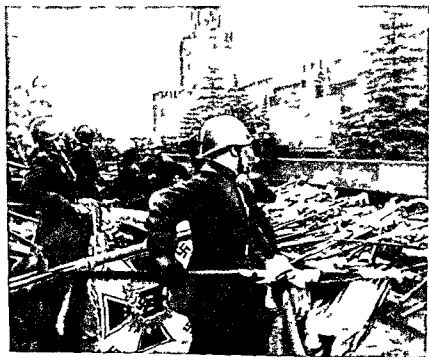
हिटलर के ग्राक्रमण का यह ग्रत !

सूचना विभाग को अभी भी सामरिक घटना-वर्णन जारी करना पड़ता था। बाल्टिक जनतन्त्रों, पश्चिमी उक्रइना और पश्चिमी बेलोरूस के कुछ भागों मे राष्ट्रवादी गद्दारों के गिरोह अभी भी घूम रहे थे।

बहुत कुछ अभी भी युद्ध की याद दिलाया करता। मगर सभी लोग अब शातिपूर्ण श्रम मे सलग्न थे।

समाचारपत्रों मे फैक्टरी तथा खेतिहर जीवन से सबधित लेख अधिक स्थान ले रहे थे, और सभी ओर अर्थव्यवस्था की शीघ्रातिशीघ्र बहाली के लिए अपीलें सुनाई दे रही थी। अब हवाई हमलों का खतरा नही रह गया था और रातों को अधेरा करने की कोई जरूरत भी नही थी। गैस तथा बम रक्षाघर बने तहखाने अब फिर कारखानों और दफ्तरों के हवाले कर दिये गये। मास्को, लेनिनग्राद, तूला तथा और बहुतेरे औद्योगिक केंद्रों के आसपास की टैंकरोधक मोर्चेबन्दियां तोड दी गईं, खाइयां और खन्दकें भर दी गईं। अधिकाधिक लोग फिर शातिपूर्ण श्रम मे लगते गये।

१७ जुलाई, १९४५ को मास्को ने प्रथम सेना वियोजित दस्ते का स्वागत किया। दजनों सैनिक रेलगाड़ियां घर लौट रही थी और हर जगह उनका वीरों की तरह हार्दिक स्वागत किया जा रहा था। पर शायद ही कोई ऐसा परिवार था जिसके लिए खुशी की यह घडी दुख भी साथ न लाती हो, उन प्रियपात्रों और सगे सबधियों की दुख भरी याद, जिन्होंने मातृभूमि के नाम पर वीरगति पायी।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में सोवियत जनगण को विजय की भारी कीमत चुकानी पडी थी। १ जनवरी, १९४० को सोवियत सघ की जनसख्या १९,४१,००,००० थी, लेकिन १९४५ में १७ करोड से कम थी। दस वर्ष बाद, १९५५ मे ही, वह युद्धपूर्व के स्तर तक पहुची। उक्रइना की जनसख्या १२ वर्ष बाद और बेलोरूस की जनसख्या १८ वर्ष से भी अधिक के बाद ही युद्धपूर्व स्तर तक पहुची। १९५९ तक की जनगणना के अनुसार लेनिनग्राद, नोवोरोस्सीय्स्क, स्मोलेन्स्क, केर्च, वीतेब्स्क, र्ज़ेव, क्रेमेनचुग जैसे नगरों की आबादी १९३९ से कम थी।

२ करोड से अधिक सोवियत नागरिक लडाई मे काम आये। फासिस्टों द्वारा अस्थाई रूप से अधिकृत इलाकों या जर्मनी के नजरबद कैम्पों मे मारे गये। असख्य लोग पगु बन गये।

१३ सितम्बर, १९४५ को "प्राव्दा" म फासिस्ट हमलावरो के अत्याचारा क सबध म असाधारण राज्य आयाग की एक सूचना प्रकाशित हुई। इस आयाग द्वारा जमा किये गये आकडा के अनुमार आक्रमणकारिया न सोवियत सघ म १,७१० नगरा और बस्तिया और ७०,००० से अधिक गावा का तहस-नहस किया, जलाया और लूटा, ३१ ८५० औद्योगिक उद्यमा और ६५,००० किलोमीटर रेलवे लाइन का पूणत या अशत बर्बाद किया, और ९८,००० सामूहिक फार्मों, १८,०७६ राजकीय फार्मों और २८९० मशीन-ट्रैक्टर स्टेशना का लूटा फासिस्टा के अपराधा की सूची से समाचारपत्र के कई पष्ठ भर गय। मानवजाति के इतिहास मे कभी किसी देश को इतनी अधिक क्षति नही उठानी पडी थी। कुल मिलाकर १९४१–१९४५ म सावियत सघ की क्षति का अनुमान २६ खरब रूबल (युद्धपूव के दामा म) लगाया गया था। इन आकडा का पूरा अन्दाजा करने के लिए यह बता दें कि १९४० मे सपूण राज्य आय १८ खरब रूबल थी। दूसरे शब्दा म सोवियत सघ की क्षति युद्धपूव की सालाना राज्य आय की कोई पद्रह गुना थी।

जिन इलाको पर शत्रु ने कब्जा कर लिया था वहा युद्ध से पहले देश का एक तिहाई औद्योगिक उत्पादन और कृषि की आधी उपज हुआ करती थी। अभूतपूव क्षति के कारण अथव्यवस्था कठिन स्थिति म पड गयी। सीमेंट और इमारती लकडी का उत्पादन १९२८–१९२९ के स्तर पर पहुच गया था, ट्रैक्टर का उत्पादन, तेल की निकासी और कच्चे लाहे का पिघलाव १९३०–१९३३ के स्तर पर, और कायले, इस्पात और लौह धातु का उत्पादन १९३४–१९३७ के स्तर पर पहुच गया था। दूसरे शब्दा मे युद्ध न सावियत अथव्यवस्था का कम से कम दस वष पीछे कर दिया था।

सवाल था कि कैसे और किन साधना के जरिये सोवियत सघ की राष्ट्रीय अथव्यवस्था का शीघ्रातिशीघ्र बहाल किया जा सकता है?

पश्चिमी देशा के पूजीवादी अखबार दावा करते थे कि अमरीकी कर्जों के बिना सोवियत रूस की बहाली म दजना वष लगेंगे। फिर से उनका अन्दाजा गलत साबित हुआ। कम्युनिस्ट पार्टी के निर्देशन मे और एकमात्र अपने साधना पर निभर करते हुए समाजवादी देश ने अपनी आर्थिक बहाली की समस्या को आश्चयजनक रूप से कम समय मे हल कर लिया।

सोवियत सेना वियोजन १६४५ की गर्मियों में ही शुरू हो गया था। सितम्बर, १६४५ मे सैन्यवादी जापान की शिकस्त के बाद इसकी रफ्तार खासकर तेज हो गई। साल के अंत तक ३० लाख से अधिक लोग गर फौजी कामो मे लौट चुके थे। १६४८ के शुरू तक कुल मिलाकर ८५ लाख आदमी सेना वियोजित हो चुके थे। उस समय तक सोवियत सेना जिसमे मई, १६४५ मे ११३ लाख लोग थे, अपनी युद्धपूर्व सख्या पर पहुच गई थी।

इसका विशेष ध्यान रखा गया कि वियोजित सैनिकों को काम मिल जाये। बडे पैमाने पर प्रशिक्षण का प्रबंध किया गया ताकि कल के सिपाहियो तथा अफसरो को गैर फौजी पेशा का प्रशिक्षण दिया जा सके अथवा उनकी युद्धपूर्व की गैर-फौजी पेशे की योग्यता को बेहतर बनाया जा सके।

साथ ही अर्थव्यवस्था को शातिकालीन आधार पर वापस ले जाने के लिए कई कदम उठाये गये। मई, १६४५ मे ही राज्य प्रतिरक्षा समिति ने शस्त्र उत्पादन मे कटौती के सबध मे उद्योग को पुनर्गठित करने का फैसला किया। बहुत से कारखाने और फैक्टरिया जो सामरिक साज सामान का उत्पादन करते थे, पुन गैर फौजी उत्पादन करने लगे। भारी उद्योग के विभिन्न उद्यमो मे उपभोग का माल पैदा करने के लिए वर्कशाप खोल दिये गये। १६४५ की पतझड तक ही गैर फौजी जरूरते पूरी करनेवाला उत्पादन कुल सैनिक उत्पादन से बढ गया था।

राष्ट्रीय बजट मे उल्लेखनीय परिवर्तन हो गये। १६४६ म प्रतिरक्षा व्यय बजट का २४ प्रतिशत था, जो युद्धपूर्व के अतिम वर्ष के आकडे से काफी कम था।

युद्धोत्तर उद्योग ढाचे के बारे मे सभी कारखानो, अनुसधान सस्थानो और दफ्तरो म विजय दिवस के बहुत पहले ही सोच विचार किया गया था। यही कारण था कि १६४५ की गर्मियो मे ही स्तालिनग्राद ट्रैक्टर कारखाने मे ५००वा कैटरपिलर ट्रैक्टर बनकर तैयार हो चुका था, लेनिनग्राद म "क्रास्नी ओक्तयाब्र" फैक्टरी की ब्लूमिंग मिल पुन काम करने लगी येफ्रेमोवो (तूला प्रदेश) मे सश्लिष्ट रबड का फिर से उत्पादन होने लगा था, ल्वोव नगर मे बिजली बाल्व बनने लगे, क्रियूकोवो (पोल्तावा प्रदेश) से रेल के डिब्बे और खारकाव से ग्राइडिंग मशीनें आदि बनने लगी।

शातिकालीन उत्पादन की स्थिति मे वापस लौटना कठिन कायभार साबित हुआ। उद्योग की विभिन्न शाखाओ मे सबध पुन स्थापित करना, उत्पादन का विशिष्टीकरण और सहकारिता को फिर से गठित करना था और सामानो और मशीनो की नियमित सप्लाई व्यवस्था ठीक करनी थी। समस्या थी युद्धपूव उत्पादन की बहाली पुराने रूप मे नही, बल्कि प्राप्त अनुभव तथा आधुनिकतम वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियो को ध्यान मे रखते हुए अधिक ऊचे स्तर पर करनी थी। स्थिति इस कारण और जटिल हो गई कि साज-सामान का काफी बडा भाग घिस पिस गया था और बहुत दिनो से उसकी ठीक से मरम्मत नही की गई थी। काफी मशीनरी पुरानी पड गई थी।

निर्माण मजदूरो को विराट निर्माण काय करना पडा। उनका काम इसलिए और भी बहुत कठिन था कि इमारती सामान की बहुत कमी पड गयी थी। १९४५ मे सीमेंट का उत्पादन कम होकर १९२८ के स्तर पर पहुच गया था। इटो का हाल इससे भी बुरा था और शीशे का उत्पादन क्रातिपूव से भी कम था।

मशीनें और साज सामान भी बहुत कम था। इस क्षेत्र में बडे पैमाने पर उत्पादन अभी सगठित करना था। ऊचे निर्माण क्रेनो की नगण्य तादाद थी। १९४५ मे कुल १० एक्सकेवेटर और १७ मोटरचालित क्रेन जोडकर तैयार हुए। प्लास्तरिंग और रगसाजी की तो बात ही क्या, खोदाई और कक्रीट का काम भी अधिकाशत हाथो से करना पडता था।

सबसे नाजुक सवाल था श्रमिको का अभाव। युद्ध पूव की अवधि की तुलना मे मजदूरो और दफ्तरी कमचारियो की कुल सख्या ५० लाख से अधिक घट गई थी (१९४० मे ३ करोड ३९ लाख थी, १९४५ मे २ करोड ८६ लाख रह गई थी)। उद्योग मे लगभग १४ प्रतिशत और परिवहन व्यवस्था म ९ प्रतिशत की कमी हो गई थी। किसानो की आबादी १५ प्रतिशत घट गई थी और कृषि का अधिकाश काम औरत बूढे लोग और किशोर किया करते थे।

उद्योग म काम करनेवालो की योग्यता कम हो गई थी। १९४५ मे इजीनियरो और टेक्नीशियनो की कुल सख्या १९४० की तुलना मे १२६,००० कम थी। औद्योगिक मजदूरो मे आधे से ज्यादा औरतें थी और बडी सख्या मे किशोर थे। कुशलताप्राप्त मजदूरो की सख्या काफी कम हो गई।

ऐसी स्थिति मे युद्धोत्तर अथतन्न के पुनगठन मे वडी कठिनाई हुई। १९४६ म औद्योगिक उत्पादन की कुल मात्रा मे ही नही, बल्कि श्रम उत्पादकता मे भी कमी हुई और पैदावार की लागत बढ गई।

नये मजदूरा के प्रशिक्षण के लिए, उनकी कुशलता बढान के लिए, नइ मशीनो से काम लेन के लिए समय और अतिरिक्त खच की जरूरत थी और इसके अलावा जीवन स्तर को ऊचा करना आवश्यक था।

यह बात ध्यान मे रखनी जरूरी है कि दिसम्बर, १९४७ तक शहरा मे महान देशभक्तिपूण युद्ध के समय ही की तरह खाद्य पदार्थो और उपभोग के बहुत से सामान की राशनबदी थी। यद्यपि इससे औद्योगिक मजदूरो और दफ्तरी कमचारिया को आवश्यक चीजें मिली (और वह भी युद्धपूव के दामो पर), मगर उपभोग का काटा कायम था।

देश भर मे रिहायशी मकाना की कमी थी। १९४६ के शुरू मे कुजनतस्क बेसिन के मजदूरो की वडी सख्या होस्टलो मे रहती थी। वे दो तले बिस्तरा पर सोया करते और वास्तव मे प्रति व्यक्ति रिहायशी क्षेत्रफल दो वग मीटर से अधिक नही था। मग्नितोगोर्स्क, नीज्नी तगील और अनेक अय शहरो मे स्थिति इससे भिन्न नही थी। जिन इलाका पर फासिस्टो का कब्जा रह चुका था वहा लाग अभी तक प्राय तबाहबरबाद घरो मे या नमदार तहखानो मे रहा करते थे।

सोवियत जनता ने युद्धोत्तर तबाही की कठिनाइया का दढता स मुकाबला किया। सभी लोग कठिनाइयो के कारणो से पूरी तरह अवगत थे।

एक बार मास्का के मोटर कारखाने के व्यावसायिक स्कूल म एक ब्रिटिश प्रतिनिधिमडल आया। विदेशिया ने छात्रा से सवाल किये

'क्या आपके घरा म गम पानी की व्यवस्था है?'

"आप के पिता के पास कितन सूट हैं?"

'क्या आप के घर म गस व्यवस्था है?'

तब स्कूल के निर्देशक न उन लडका से उठ खडे हान का कहा, जिनके पिता युद्ध म खेत रहे। एक क सिवा सभी लडके उठ खडे हुए। परेशान हाकर विदेशिया न उस लडक स पूछा

'क्या तुम्हार पिता युद्ध म लडे नही थे?'

मेरे पिता जीवित ह लेकिन युद्ध म उनकी दाना टागें बेकार हा गइ

फिर घरेलू सुविधाओं के बारे में सवाल नहीं उठे।

सोवियत लोगों को मालूम था कि कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार अर्थव्यवस्था के शीघ्रातिशीघ्र विकास के लिए, श्रमजीवी जनता की भौतिक स्थितियां सुधारने के लिए और युद्ध के सभी अवशेषों को मिटाने के लिए दृढतापूर्वक कदम उठा रहे हैं।

प्रथम युद्धोत्तर वर्ष में ही फिर से आठ घंटे का काम दिवस जारी किया गया, श्रम की लामबन्दी तथा अनिवार्य अतिरिक्त काम बन्द कर दिया गया नियमित और अनुपूरक छुट्टियों की व्यवस्था फिर से शुरू की गई और बच्चों के लिए रोटी का राशन बढाया गया। १९४३ में ही सरकार ने यह निश्चय कर लिया था कि वीर-नगर स्तालिनग्राद, रास्तोव आन दोन, स्मोलेंस्क, ओर्योल जैसे बड़े केन्द्रों को शीघ्रातिशीघ्र पुनर्निमित कर दिया जायगा। १९४४ में दोनेत्स बेसिन तथा लेनिनग्राद की बहाली के लिए फौरी कार्रवाइयों का विशेष निर्णय किया गया। इसका मतलब यह था कि युद्ध का अंत होने से पहले ही बहाली का काम शुरू कर दिया गया।

अर्थव्यवस्था की युद्धोत्तर बहाली तथा आगे के विकास के कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम का देश भर में सहर्ष स्वागत किया गया। उस कार्यक्रम की मुख्य स्थापनाएं स्तालिन द्वारा ९ फरवरी, १९४६ को मतदाताओं के सामने एक भाषण में पेश की गई (१० फरवरी को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रथम युद्धोत्तर चुनाव हुए थे)।

दीर्घकालीन दृष्टि से (पन्द्रह वर्षों की अवधि के लिए) सोवियत जनता के सामने अर्थव्यवस्था के व्यापक विस्तार, जिससे औद्योगिक उत्पादन को युद्धपूर्व स्तर के मुकाबले में तिगुना ऊंचा किया जा सके, करने का कार्यभार पेश किया गया था। इस कार्यक्रम की पूर्ति की दिशा में पहला कदम चौथी पंचवर्षीय योजना (१९४६–१९५०) थी।

युद्ध जनित स्थितियों में अर्थव्यवस्था का विकास १० वर्षों के लिए ठप्प हो गया था, इसलिए १९४० के स्तर को पार करने और उससे काफी आगे प्रगति करने का विचार सोवियत लोगों को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता था। उन्होंने बड़ी दिलचस्पी और ध्यान के साथ सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के उस अधिवेशन के काम को देखा जिसे चौथी पंच-वर्षीय योजना को स्वीकार करना था।

ऐसी स्थिति म युद्धोत्तर अर्थतन्त्र के पुनगठन मे बडी कठिनाई हुई। १९४६ मे औद्योगिक उत्पादन की कुल मात्रा मे ही नही, बल्कि श्रम उत्पादकता मे भी कमी हुई और पैदावार की लागत बढ गई।

नये मजदूरा के प्रशिक्षण के लिए, उनकी कुशलता बढाने के लिए, नई मशीनो से काम लेने के लिए समय और अतिरिक्त खर्च की जरूरत थी और इसके अलावा जीवन स्तर को ऊचा करना आवश्यक था।

यह बात ध्यान मे रखनी जरूरी है कि दिसम्बर, १९४७ तक शहरा म महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के समय ही की तरह खाद्य पदार्थों और उपभोग के बहुत से सामान की राशनबन्दी थी। यद्यपि इससे औद्योगिक मजदूरो और दफ्तरी कर्मचारियो को आवश्यक चीजें मिली (और वह भी युद्धपूर्व के दामा पर), मगर उपभोग का कोटा कायम था।

देश भर मे रिहायशी मकानो की कमी थी। १९४६ के शुरू मे कुज्नेत्स्क बेसिन के मजदूरो की बडी सख्या होस्टलो म रहती थी। वे दो तले बिस्तरा पर सोया करते और वास्तव मे प्रति व्यक्ति रिहायशी क्षेत्रफल दो वग मीटर से अधिक नही था। मग्नितागोर्स्क, नीज्नी तगील और अनेक अन्य शहरो मे स्थिति इससे भिन्न नही थी। जिन इलाको पर फासिस्टो का कब्जा रह चुका था वहा लोग अभी तक प्राय तबाहबरबाद घरो मे या नमदार तहखानो मे रहा करते थे।

सोवियत जनता ने युद्धोत्तर तबाही की कठिनाइयो का दृढता से मुकाबला किया। सभी लोग कठिनाइयो के कारणो से पूरी तरह अवगत थे।

एक बार मास्को के मोटर कारखाने के व्यावसायिक स्कूल म एक ब्रिटिश प्रतिनिधिमडल आया। विदेशिया ने छात्रो से सवाल किये

"क्या आपके घरो मे गर्म पानी की व्यवस्था है?'

"आप के पिता के पास कितने सूट हैं?"

क्या आप के घर म गैस व्यवस्था है?'

तब स्कूल के निर्देशक न उन लडको मे उठ खडे होने को कहा, जिनके पिता युद्ध म खेत रहे। एक के सिवा सभी लडके उठ खडे हुए। परेशान होकर विदेशिया न उस लडके से पूछा

'क्या तुम्हारे पिता युद्ध म लडे नही थे?'

' मेरे पिता जीवित है लेकिन युद्ध म उनकी दोनो टागें बेकार हो गई

फिर घरेलू सुविधाश्रो के बारे मे सवाल नही उठे।

सोवियत लोगा को मालूम था कि कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार अर्थव्यवस्था के शीघ्रातिशीघ्र विकास के लिए, श्रमजीवी जनता की भौतिक स्थितिया सुधारने के लिए और युद्ध के सभी अवशेषो को मिटाने के लिए दृढतापूर्वक कदम उठा रहे हैं।

प्रथम युद्धोत्तर वर्ष मे ही फिर से आठ घटे का काय दिवस जारी किया गया, श्रम की लामबन्दी तथा अनिवाय अतिरिक्त काम बन्द कर दिया गया, नियमित और अनुपूरक छुट्टियो की व्यवस्था फिर से शुरू की गई और बच्चो के लिए रोटी का राशन बढाया गया। १९४३ मे ही सरकार ने यह निश्चय कर लिया था कि वीर नगर स्तालिनग्राद, रास्ताव-आन दोन, स्मोलेस्क, ओर्योल जैसे बडे केन्द्रो को शीघ्रातिशीघ्र पुननिर्मित कर दिया जायेगा। १९४४ म दोनेत्स बेसिन तथा लेनिनग्राद की बहाली के लिए फौरी कारवाइया का विशेष निणय किया गया। इसका मतलब यह था कि युद्ध का अत होन से पहले ही बहाली का काम शुरू कर दिया गया।

अर्थव्यवस्था की युद्धोत्तर बहाली तथा आगे के विकास के कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा प्रस्तुत कायक्रम का देश भर मे सहष स्वागत किया गया। उस कायक्रम की मुख्य स्थापनाए स्तालिन द्वारा ९ फरवरी, १९४६ का मतदाताश्रो के सामने एक भाषण मे पश की गइ (१० फरवरी का सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रथम युद्धोत्तर चुनाव हुए थे)।

दीघकालीन दृष्टि से (पन्द्रह वर्षों की अवधि के लिए) सोवियत जनता के सामने अर्थव्यवस्था के व्यापक विस्तार, जिसस औद्योगिक उत्पादन को युद्धपूव स्तर के मुकाबले मे तिगुना ऊचा किया जा सके, करने का कामभार पेश किया गया था। इस कायक्रम की पूति का दिशा म पहला कदम चौथी पचवर्षीय योजना (१९४६–१९५०) थी।

युद्ध जनित स्थितियो मे अर्थव्यवस्था का विकास १० वर्षों के लिए ठप्प हो गया था, इसलिए १९४० के स्तर को पार करने और उससे काफी आगे प्रगति करने का विचार सोवियत लोगो को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता था। उन्होंने बडी दिलचस्पी और ध्यान के साथ सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के उस अधिवेशन के काम को देखा जिसे चौथी पच-वर्षीय योजना को स्वीकार करना था।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के द्वितीय बुलाव का वह पहला अधिवेशन था। वह १२ माच से १८ माच, १९४६ तक चला। उसन सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमडल चुना। अध्यक्षमडल के अध्यक्ष (कालीनिन के स्थान पर, जो सख्त बीमार थे) श्वेरनिक चुने गये। सर्वोच्च सोवियत न जन कमिसार परिषद का नाम बदलकर मत्रि परिषद रखे जान और इस परिवतन के अनुरूप सघीय और जनतत्रीय स्तर पर सभी जन कमिसारियता को मत्रालय बना दिये जाने का कानून पास किया। स्तालिन सोवियत सघ की मत्रि परिषद के अध्यक्ष हो गये। नवनियुक्त मत्रियो मे वैंवाकोव, वानिकोव, वाखुशेव, येफ़ेमोव, लोमाको, मालिशेव, पेवूखिन, तेवोस्यान, उस्तीनोव तथा सोवियत अथव्यवस्था के अन्य कई अनुभवी सगठनकर्ता थे। उन सभी को समाजवादी उद्योगीकरण तथा कृषि के समूहीकरण के वर्षों मे आथिक अनुभव मिला था और महान देशभक्तिपूण युद्ध के कठोर स्कूल से होकर गुजरे थे। ये अनुभवी विशेषज्ञ आथिक और सावजनिक सगठना के सक्रिय कायकर्ताओ की सहायता और नान पर निभर करते थे।

१८ माच, १९४६ को सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत ने १९४६-१९५० की अवधि के लिए सोवियत सघ के राष्ट्रीय अथव्यवस्था की वहाली और आगे के विकास के लिए पचवर्षीय योजना स्वीकार कर ली जिसे राज्य नियोजना आयोग ने तैयार किया और सरकार ने पास कर लिया था।

चौथी पचवर्षीय योजना का प्रारम्भिक काल वहाली के काम को अपित किया गया था। अकारण ही नही १९४६-१९५० की अवधि का लगभग आधा पूजी विनियोजन युद्ध से बर्बाद इलाको की वहाली के लिए निर्धारित कर दिया गया था।

औद्योगिक केन्द्रो की बहाली खासकर इधन और बिजली शक्ति सप्लाई के विस्तार के लिए सबसे वडी रकम लगाई जा रही थी। कोयले और तेल की वडी कमी थी जिससे बिजली उत्पादन मे भी बाधा पड रही थी। अनेक शहरा और बस्तियो मे बिजली आवादी के रहन सहन की जरूरता के लिए दिन रात मे कुछ घटा के लिए ही उपलब्ध थी।

इधन की सख्त कमी को दूर करने के लिए तेज़ कदम उठाना जरूरी था। कोयला उद्याग को, जिसका पहले भी सोवियत सघ के ईंधन बलम म एव महत्वपूण स्थान था, प्राथमिकता दी गई। दोनत्स बेसिन की

बहाली, जो देश का प्रधान कोयला खनन केंद्र था, सवप्रथम कायभार बन गया था। जमना का ज्या ही इस क्षेत्र मे मार भगाया गया, वहा बहाली का काम शुरू कर दिया गया। दजना खदाना म पानी भरा हुआ था और अय कामो के अलावा कोई ६० करोड घन मीटर पानी को पम्प करके बाहर निकालना पडा। वह पानी सारी दुनिया के चारो ओर ५ मीटर चौडी और ३ मीटर गहरी नहर को भरने के लिए काफी हो सकता था। इस कायभार का पूरा करने के लिए सचमुच एक कारनामे की जरुरत थी और लोगा न उसे कर भी दिखाया। चौबीसा घटे काम होता रहा और अगरचे १९४५ मे काय दिवस घटाकर ६–८ घटे कर दिया गया था, मगर इससे उत्साही लोगा की राह मे कोई बाधा नही पडी। औरता और किशोरो के लिए भूमिगत काम करना कानूनन मना था। लेकिन युद्धपूव के प्रथम वर्षों मे जसे युद्ध के दौरान भी, खान मजदूरा के टोप और बूट पहने और कोयला काटने के भारी न्यूमेटिक हैम्मर हाथ म लिए खाना मे युवा चेहरे दिखाई देते थे। लोगा ने एडी चोटी का पसीना एक करके श्रम किया। हजारो श्रमिको को सावियत सघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा स्थापित "दोनेत्स बेसिन की बहाली के लिए" विशेष तमगे प्रदान किय गये।

दनेपर पनविजलीघर पर भी जटिल निर्माण काय चल रहा था। शत्रु उस समय के यूरोप के सबसे बडे पनविजलीघर को पूण रूप से उडा देने मे सफल नही हुआ था और सावियत सफरमनावाले दस्ता ने उसम से सैकडा टन विस्फाटक पदाथ निकाला। हजारा आदमी उस बिजलीघर का पुन चालू करने के लिए वहा स्वेच्छापूण गये। बहुतो को वहा जाकर पुरानी दास्ती ताजा करन का अवसर मिला क्योकि उन्हाने बिजलीघर के निर्माण काय के समय भी वहा काम किया था।

४ मई, १९४७ का इस पुनर्निर्माणाधीन द्नेपर पनबिजलीघर का प्रथम टर्बाइन चालू हुआ। उसके तीन साल बाद बिजलीघर अपनी पूरी क्षमता से काम करन लगा था। १९५० तक बिजलीघर का केवल पुनर्निर्माण ही नही, बल्कि लेनिनग्राद म बने अधिक शक्तिशाली ९ टर्बोजनरेटरा की मदद से उसका नवीकरण भी हो चुका था।

उल्लेखनीय बात यह है कि फासिस्ट जनरल श्तुल्पनागेल न, जिसकी फौज को सोवियत सेनाओ ने १९४३ म द्नपर के तट पर खदेड दिया

थे, जबकि सयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्रपति सोवियत सघ को कर्ज देने पर प्रतिबध लगा रहे थे। एक पूर्व सम्पन्न सधि का उल्लघन करते हुए सयुक्त राज्य अमरीका के व्यापार मत्रालय ने तक्नीकी साज सामान की सोवियत सघ को रवानगी बन्द कर दी और बाद मे सोवियत सघ से अन्न और कुछ प्रकार के पोस्तीनो की खरीदारी पर भी रोक लगा दी।

अपनी ओर से सोवियत सरकार ने देश की इतनी कठिनाइयो के बावजूद फ्रास को बडी मात्रा मे अनाज भेजा। १९४७ मे सोवियत जनगण ने चेकोस्लोवाकिया के सहायतार्थ भी ६,००,००० टन अनाज भेजा। प्राग के समाचारपत्रो ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाया कि यह अनाज ससार भर मे सबसे कम दाम पर भेजा गया था। सोवियत सघ ने और भी कई देशो की सहायता की जिन्हे फासिज्म के खिलाफ युद्ध मे क्षति उठानी पडी थी। उदाहरण के लिए चीन को बहुत सुविधाजनक शर्तों पर कर्ज दिया गया।

यह बता देना भी आवश्यक है कि सोवियत जनगण को अपनी अर्थव्यवस्था की बहाली दूसरी बार करनी पड रही थी पहली बार गृहयुद्ध और हस्तक्षेप के बाद करनी पडी थी जो १९१४–१९१८ के प्रथम विश्वयुद्ध के उपरात हुए थे। अब दूसरी बार फासिज्म की पराजय के बाद इस बार बहाली का काम आधे समय मे पूरा हो गया। इस समय तक सोवियत अर्थव्यवस्था का भौतिक और तक्नीकी आधार और स्वय मजदूर वर्ग भी बदल चुका था। १९४५ मे उराल और पश्चिमी साइबेरिया ही १९१३ मे सारे रूस की पैदावार का लगभग दोगुना कोयला और इस्पात पैदा कर रहे थे, और इन दो इलाको मे खरादो का उत्पादन क्रातिपूर्व रूसी साम्राज्य से ४४७ प्रतिशत अधिक था।

यह भी मालूम है कि तीसरे दशक के शुरू मे इस्पात कारखाना और दानेत्स बेसिन की खानो की बहाली एक अत्यत जटिल समस्या साबित हुई, उधर वोल्खोव बिजलीघर का निर्माण कार्य बहुत धीरे धीरे हो रहा था। यह ऐसा समय था जब सोवियत सघ के प्रथम ट्रैक्टर, मोटरकार, रेलवे इजन ही नही बल्कि तथाकथित "लाल विशेषज्ञ" भी सामने आये। उन्हे न विशेष ज्ञान था और न व्यावहारिक अनुभव, उन्हे अध्ययन का समय नही मिला था। उनमे से विशेषज्ञो की सख्या बहुत कम थी।

दो दशको के बाद परिस्थिति बिलकुल बदल गई। हा, कठिनाइया अब भी थी मगर अब सोवियत अर्थव्यवस्था के पास उन कठिनाइया को थोडे समय मे दूर करने के साधन हो गये थे। शातिकालीन मोर्चे के सबसे महत्वपूण क्षेत्रा का निदेशन करने का काम समाजवादी उद्योगीकरण की प्रथम परियोजनाग्रा मे अनुभव प्राप्त लोगा को सौपा गया। नौजवान राइजेर मैग्नितोगोस्क निर्माण परियाजना म साधारण सुपरिटेंडेंट थे। युद्ध के बाद वह धातु और रसायन उद्याग निमाण के मत्री बने। दीमशित्स और कोम्जिन ने चौथे दशक मे एक जैसा रास्ता तय किया था। १६४५ मे पहले को जपोरोज्ये के विशाल उद्यमा की बहाली की जिम्मेदारी सौंपी गई और दूसरे न सेवास्तोपोल के पुननिर्माण का निदेशन किया।

१६४७ मे दिगाई एक निर्माण मत्रालय के प्रधान थे। यह युवा इजीनियर उन्नति करके एक साधारण मजदूर से बडे औद्योगिक ट्रस्ट का मेनेजर बना था। जस्यादको जब मत्रिपद पर नियुक्त हुए तो उनकी आयु और भी कम थी। उनका जम १६१० मे एक मजदूर परिवार मे हुआ था। नौजवान फिटर को कम्युनिस्ट पार्टी सगठन ने उच्च शिक्षा लेने के लिए भेजा। इजीनियर होकर वह दोनेत्स बेसिन लौट आये और युद्ध का ग्रत होने के कुछ ही दिनो बाद वह कायला उद्योग मत्री नियुक्त हुए।

स्तखानाव आदालन के पथ-प्रदशका की जीवनी भी इनसे कम उल्लेखनीय नही ह। यह आदालन चौथे दशक के मध्य मे शुरु हुआ था। बुनकर विनोग्रादोवा ने औद्यागिक अकादमी मे एक पाठयक्रम पूरा किया और उसके बाद एक सूती कपडा मिल की उपनिदेशक बनी। इजन ड्राइवर वोग्दानोव इजीनियर बने और मास्को–कीयव रलवे के प्रधान नियुक्त हुए। खनक स्तखानाव और इजन चालक क्रिवोनोस को भी प्रशासकीय पदा पर नियुक्त किया गया। बुसीगिन ने १६३५ मे क्रेमलिन मे हुए नवप्रवतको के एक सम्मेलन म कहा था कि "म कम पढा हू मेरी इससे बडी और कोई इच्छा नही कि अध्ययन कर सक। मै केवल एक लोहार नही बनना चाहता, बल्कि यह भी जानना चाहता हू कि हथौडा मशीन कसे बना है और म उसे खुद बनाना चाहता हू।" पाचवे दशक के अत मे वह गोर्की मोटर कारखाने की उसी वर्कशाप के निदेशक थे जहां उन्हाने अमरीकी लोहारो के काम का रिकाड तोडा था।

उद्योग के सभी प्रबंधकर्ताओं ने काफी अनुभव प्राप्त कर लिया था। जनता के राजनीतिक और श्रम अनुभव का संपूर्ण स्तर आश्चर्यजनक रूप से ऊपर उठ चुका था।

प्रथम बहाली अभियान के दौरान मजदूर वर्ग को बेरोजगारी तथा श्रम शक्ति के बिखराव का सामना करना पड़ता था। उस समय तक निजी तौर पर उजरती श्रम से काम लेने की सरकारी आज्ञा थी, कुछ कारखानों में श्रम संबंधी टकरावों के कारण हड़तालें भी हुई थीं। समाजवादी क्रांतिकारी और मेंशेविक संगठनों के अवशेष अभी भी कानूनी तौर पर काम कर रहे थे और मध्य एशिया और कजाखस्तान के कुछ इलाकों में जमींदार और धनी लोग अभी मौजूद थे।

१९२१ में कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की संख्या बस ७ लाख से कुछ ऊपर थी और कोम्सोमोल सदस्यों की संख्या २५० हजार तक भी नहीं पहुंची थी। आधे या आधे से भी कम मतदाता सोवियतों के चुनावों में भाग लिया करते थे।

पांचवें दशक तक इस स्थिति में मौलिक परिवर्तन हो चुका था। उस समय तक समाजवादी निर्माण पूरा हो गया था। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान सोवियत समाज का अगुआ दस्ता—सोवियत संघ का मजदूर वर्ग—भारी क्षति उठाने के बावजूद और भी शक्तिशाली तथा तपकर इस्पाती बन चुका था। उस समय तक कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों की संख्या ६० लाख तक पहुंच गई थी और कोई १ करोड़ तरुण कोम्सोमोल में शामिल हो चुके थे। ९९ प्रतिशत से अधिक मतदाता नियमित रूप से सभी चुनावों में भाग लिया करते थे।

इन सब बातों से जनता के स्वतःस्फूर्त रचनात्मक प्रयास की एक विशाल लहर उठी और समस्त सोवियत जनगण में युद्धोत्तर वर्षों में देशभक्तिपूर्ण उत्साह की भावना जाग उठी और इससे उन्हें उल्लेखनीय सफलताएं प्राप्त करने में सहायता मिली।

चौथे पंचवर्षीय योजना काल (१९४६–१९५०) के दौरान कुल ६२०० उद्यम निर्मित या बहाल हो चुके थे, यानी औसतन रोज तीन से अधिक बड़ी औद्योगिक परियोजनाओं का निर्माण पूरा हो रहा था। उद्योग में काम करनेवाले मजदूरों और दफ्तरी कर्मचारियों की संख्या में ३० लाख से अधिक की वृद्धि हुई। मजदूर वर्ग की बनावट में

उल्लेखनीय परिवतन हुए। बहुत से पुराने अनुभवी लोग पेशनयाफ्ता हो चुके थे और उनका स्थान युद्ध से लौटनेवाले सैनिको ने सम्भाल लिया था। उद्योग मे स्त्रियो और किशोरो का अनुपात घट गया। वे कोयला खानो और खनिज लौह खदानो मे काम करते और लारियो और रेलवे इजन चलाते बहुत कम दिखाई देते थे। जो लोग योग्यता प्राप्त करना या बढाना चाहते थे, उनके लिए बडी सुविधाए उपलब्ध थी। नयी मशीनो के चालू होने से नये पेशो के मजदूरो की सख्या बढ गई।

पहले ही की तरह अब भी गैर-रूसी जातीय जनतत्रो और प्रदेशो मे औद्योगिक विकास की ओर बहुत ध्यान दिया जा रहा था। आर्मीनिया मे (सेवान झील पर), जाजिया मे (ख्रामी और सुखूमी) और उज्बेकिस्तान मे (फरहाद) सबसे पहले पनबिजलीघर बनाये जा रहे थे। ट्रान्स-काकेशिया और मध्य एशिया मे इस्पात उत्पादन केन्द्र स्थापित किये जा रहे थे।

वोल्गा और उराल के बीच तेलकूपो के ऊपरी ढाचो का जाल-सा बिछा जा रहा था। यह तेल केन्द्र सोवियत अथव्यवस्था मे उतनी ही महत्वपूण भूमिका अदा करने लगा जितनी भूमिका तेल उद्योग का सवमान्य केन्द्र आजरबैजान अदा किया करता था।

उन दिनो प्रथम लम्बी गैस पाइप लाइनें बनाई गईं जिनके जरिये मास्को, लेनिनग्राद, कीयेव, तथा अनेक अन्य केन्द्रो को इस ईंधन की सप्लाई सुनिश्चित हो गई।

सबसे तेज औद्योगिक विकास उक्राइना बेलोरूस, मोल्दाविया के पश्चिमी भागो और बाल्टिक जनतत्रो मे हो रहा था जो १९४० मे सोवियत सघ मे शामिल हो गये थे। १९४० तक ये सभी दस्तकारी उद्योग के इलाके थे, बेरोजगारी का दौर दौरा था। बाल्टिक जनतत्रो मे भी जहा प्रथम विश्वयुद्ध से पहले उद्योग का स्तर रूसी साम्राज्य के अन्य भागो से ऊचा था, उद्योग का पतन हुआ था और पूजीवादी-जमीदाराना पार्टियो के सत्तारूढ होने के जमाने मे औद्योगिक विकास का स्तर बहुत गिर गया था।

फासिस्ट हमलावर शक्तियो के निकाल बाहर किये जाने के तुरत बाद ही इन नवजात सोवियत जनतन्त्रो और प्रदेशो मे उद्योग का समाजवादी पुनर्निर्माण फिर से शुरू हुआ जिसमे महान देशभक्तिपूण युद्ध
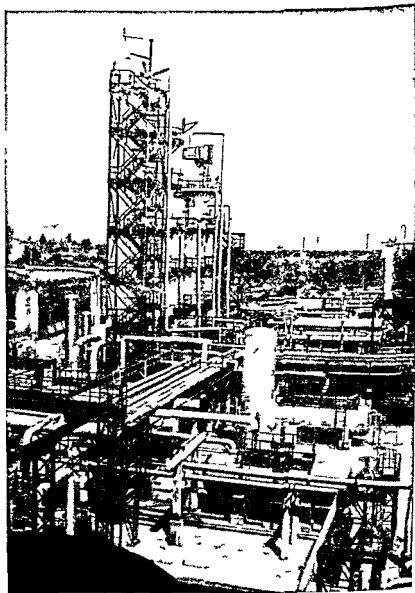
बाशकिर जनतन्त्र म
तल शोधक कारखाना

के कारण बाधा पड गई थी। ये जातिया अन्य सावियत जनतत्रा की सहायता से थोडे ही दिना म अपने आर्थिक पिछडेपन को दूर करने मे सफल हुइ। इसके लिए पूरे दश की ओर से काफी प्रयास और अतिरिक्त धन की ज़रूरत पडी। प्रथम युद्धोत्तर पचवर्षीय योजना के सामने वैसे भी बडे-बडे कायभार थे, इसके बावजूद केवल बाल्टिक जनतत्रा मे अर्थव्यवस्था के तज विकास के लिए जा पूजी निवेश कर दी गयी थी, वह उस रकम से काफी अधिक ही थी जो १९१८-१९३२ के बीच पूरे मध्य एशिया और कज़ाखस्तान के लिए की गई थी। उदाहरणाथ १९४६-१९५० की अवधि मे एस्तोनियाई उद्योग को उससे अधिक पूजी निवेश मिला जितना पूरे युद्धपूव दौर म आर्मीनिया का दिया गया था। उक्रइना का पुराना शहर ल्वोव एव प्रधान औद्योगिक केद्र बनता जा रहा था। पश्चिमी मोल्दाविया की अर्थव्यवस्था भी बदल रही थी।

युद्ध के घावा को दूर करत हुए सोवियत सरकार देश के सभी भागो म समान स्तर पर समाजवादी निर्माण को बडा महत्वपूण समझती थी।

छठे दशक के प्रारम्भिक वर्षो म आर्थिक प्रगति की मुख्य विशेपता थी विशालकाय पनबिजलीघरा का निर्माण। कामा, वोल्गा, दोन और दनपर नदिया के बिजलीघरा का निर्माण विशेप ज़ोरा पर हा रहा था। वाल्गा और दान को मिलानेवाली जहाजरानी याग्य एक नहर तथा कूइबिशेव और स्तालिनग्राद म विशालकाय पनबिजलीघरा के निर्माण के सबध म सरकार ने अनेक विशेप निश्चय किय। निर्माण मजदूरो को सोवियत सघ मे निमित आधुनिकतम मशीनरी की – २५ टन तक का बोझ उठा सकनेवाली टीप अप-लारिया बुलडाजर और सक्शन ड्रेज मशीने, हर तरह के क्रेन तथा अय मशीना की – नियमित रूप स सप्लाइ हा रही थी। ख्यातिप्राप्त ड्रैगलाइन एक्सकेवेटर का डिजाइन और उत्पादन स्वेर्दलोव्स्क म "उरालमाश" कारखाने मे किया गया था। इनमे स हर एक की ऊचाई एक पाच मजिला मकान के बराबर थी। उनकी १०० मीटर लम्बी बूम के ज़रिये १५,००० घन मीटर मिट्टी रोज़ खोदी और हटाई जा सकती थी। वाल्गा-दोन नहर के निमाण म इही विशालकाय मशीनो से काम लिया गया। अथशास्त्रियो ने अनुमान लगाया था कि १७ मजदूरो की एक टोली ऐसे एक एक्सकेवेटर की सहायता से एक साल मे इतना काम कर सकती थी जितना हाथ स करने मे ५०० साल लग जाते।

१९५२ की गमियो मे १०१ क्लिोमीटर लम्बी वाल्गा-दोन नहर खुल गई। उसन दोन तटवर्ती मैदाना की सिचाई की और पाच सागरा (सफेद, बाल्टिक, अजोव, काले, कास्पियन सागरा) को एक जल-परिवहन व्यवस्था मे जोड दिया।

देश के मध्य क्षेत्रा म और मध्य एशिया मे नहरे खादन स और खेतो की सुरक्षा के लिए बडे वन क्षेत्र लगाने से आखिरकार सूखे से बचना और मैदानी हवाओ और भूक्षरण को रोकना सम्भव हो गया। कृषि के विकास को तेज करने की इच्छा अधिक प्रबल थी क्याकि अर्थव्यवस्था की इस शाखा की बहाली मे जितनी आशा थी उससे अधिक समय लग रहा था। सामूहिक और राजकीय फार्मों का विकास कठिन साबित हो रहा था। युद्ध से सोवियत देहात को बडी क्षति पहुची। जब प्रसिद्ध ट्रैक्टर चालक अगेलिना युद्ध के बाद उक्रइना लौटकर आयी तो उसने देखा कि उसके खेतो पर गाये हल चला रही थी और खेता म चारो ओर खदकें खुदी पडी थी। मागिल्योव प्रदेश के एक सामूहिक फाम मे जहा सावियत सघ के वीर ओर्लोव्स्की न युद्ध के बाद फाम अध्यक्ष की हैसियत से आने का निश्चय किया, न घोडे थे न गायें और न बीज ही उपलब्ध थ। युद्ध के पहले ये दोनो आदश सामूहिक फाम माने जाते थे जिनके पास मशीनें और आवश्यक साज-सामान था और उनके सामूहिक किसाना को बडी आमदनी होती थी।

युद्ध के दौरान जिन इलाका पर शत्रु का कब्जा हुआ, वहा १९४१ के पहले देश की आधी उपज हुआ करती थी। जैसा कि पहले कहा जा चुका है फासिस्ट सेनाओ ने ९८ ००० सामूहिक फाम, १८,०७६ राजकीय फाम और २८९० मशीन-ट्रैक्टर स्टेशन लूट लिये। मवेशिया की सख्या भी बहुत कम रह गई थी।

औद्योगिक व्यवस्था जो अभी अपने आपका शातिकालीन स्थितिया के अनुकूल ढालने की प्रक्रिया से गुजर रही थी, इस योग्य नही हुई थी कि फार्मों को मशीनें, खाद, घासपात तथा कीट नाशक रसायन मुहैया कर सके जिनकी उन्ह जरूरत थी। उदाहरण के लिए १९४५ मे केवल ३०० अनाज हारवेस्टर बनाय गये, जबकि १९३७ म उनकी सख्या लगभग ४४,००० थी और केवल ७,७०० ट्रैक्टर बनाये गये, जबकि १९३६ मे १,१३,००० बनाये गये थे। चुकन्दर, आलू, मकई, कपास और

फ्लैक्स की फसल काटने के लिए मशीनें उपलब्ध नही थी। मोटरगाडियो और खनिज खाद का उत्पादन भी ५०-६५ प्रतिशत कम हो गया था।

सवाल था प्राथमिकता किसे दी जाये। कम्युनिस्टो, अगेलिना तथा ओर्लोव्स्की जैसे अनुभवी कृषि सगठनकर्ताग्रा ने पहला कदम अपने-अपने सामूहिक फार्मों के सदस्यो को एकत्रित करने के लिए उठाया। उन्होने कठिनाइया नही छिपाई, कायभारा की व्याख्या की, निस्स्वाथ श्रम के उदाहरण पेश किये। सामूहिक किसानो ने देखा कि अगेलिना अथक रूप से नौजवानो को ट्रक्टर चलाना तथा खेत जोतना और रात मे टैक्टरा की मरम्मत करना सिखाती है। ओर्लोव्स्की की अथक मेहनत न औरो को भी प्रभावित किया। लडाई मे उनका एक हाथ कट गया था लेकिन उन्होने अपनी पेंशन की ग्रामदनी पर मास्को मे आराम का जीवन बिताने का ख्याल छोड दिया। उन जैसे और भी अनक सगठनकर्ता थे जिनका अनुसरण किसाना ने उत्साहपूवक किया और थोडे ही दिना मे काफी फार्मों की हालत सुधरने लगी।

परतु यह स्थिति हर जगह नही थी। हजारो आर्टेला को चालू करने के लिए बाहरी सहायता की जरूरत पडी। राज्य के पास इतनी निधि और साधन नही थे कि सभी सामूहिक आर राजकीय फार्मों को फौरन काफी सहायता दे पाता। उद्योग को, उत्पादन साधना के उत्पादन को ही पहले पहल सहायता देनी थी। राजकीय बजट म फार्मो को उनकी जरूरत से बहुत कम अनुदान दिया गया था। १९४६–१९५० की याजना के अनुसार कृषि पर राज्य व्यय २,००० करोड रूबल था, दूसरे शब्दो म उद्योग म लगाई गई रकम से आठगुना कम। स्वय सामूहिक फार्मों ने जो पूजी लगाई, वह ३,८०० करोड रूबल थी।

फार्मों पर अनुभवी अमले की बडी कमी थी। १९४६ मे सामूहिक फार्मों के लगभग आधे अध्यक्षा, दल नेताग्रा और पशुपालन फार्मो के निदेशको को यह काम करते हुए एक साल से अधिक समय नही हुआ था। औसतन सामूहिक फार्मों के २५ अध्यक्षा मे केवल एक माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त था। सगठनकर्ताग्रा की अक्सरियत ऐसी थी जिसे केवल चार साला स्कूली शिक्षा मिली थी।

१९४६ के सूखे से सोवियत कृषि को बडा धक्का लगा।

उन दिना कृषि के प्रशासन मे जिन बातो का रिवाज था, वे कई

लिहाज से बहुत असतोषजनक थी। योजनाए केन्द्र से बनाकर भेजी जाती थी और उनमे अलग अलग इलाको की ठोस सम्भावनाश्रो और खास स्थितियो की श्रोर ध्यान नही दिया जाता था। आर्थिक प्रोत्साहन क उमूल का गलत इस्तेमाल होता था।

इन बातो को सुधारने के लिए पार्टी और सरकार ने तात्कालिक कारवाइयो का एक व्यापक कायक्रम तैयार किया। उन्होने इस बात पर जोर दिया कि सामूहिक और राजकीय फार्मो को मशीनो और सामान की सप्लाई बढाई जाये और अनुभवी और प्रशिक्षित कायकर्ता वहा भेजे जायें। कृषि मशीनो की सप्लाई मे वद्धि हुई। युद्ध से पहले ट्रैक्टरा का उत्पादन स्तालिनग्राद, खारकोव और चेल्याबिन्स्क मे तीन कारखाना मे हुआ करता था। लेकिन अब उनकी सख्या बढाई गई–अब उनमे लीपेत्स्क, व्लादीमिर, रुबत्सोव्स्क (अल्ताई इलाका) और बाद मे कुछ और गये। १९५० मे युद्धपूव के किसी भी साल की तुलना म अधिक मशीनें फार्मो को भेजी गयी। नय डिजाइन के ट्रैक्टर और मशीनें, चुकन्दर, आलू, कपास और फ्लक्स की फसले काटने के कम्बाइन भी खेतो मे देखने मे आये।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमडल ने कृषि म अग्रणी श्रमिका को पदवा से विभूपित करने की पद्धति निधारित की। इनमें जा सबसे अच्छे थे, उन्हे समाजवादी श्रम वीर की पदवी प्रदान की गई।

धीरे धीरे इन कारवाइयो के नतीजे सामने श्रान लगे बोआई अधिक बडे क्षेत्र मे की जाने लगी अनाज, आलू और औद्योगिक फसला की पैदावार बढी। इससे १५ दिसम्बर, १९४७ को खाद्य की राशनबदी उठाना सम्भव हो गया। इसका मतलब यह था कि युद्ध का एक और अवशेप अतीत की बात बन गया।

पाचवे दशक के अत तक सामूहिक फार्मो पर १९४० से कम लाग काम कर रहे थ, मगर सामूहिक फाम अपने युद्धपूव के उत्पादन स्तर पर पहुच गये थे और राजकीय फाम ता उसम भी आगे बढ गय थे। राजकीय फार्मों के मजदूरा का राज्य द्वारा निश्चित एक निम्नतम वतन मिलता था और जब योजना के लक्ष्याका की अतिपूर्ति हाती तो और बहुत कुछ मिलता था। राजकीय फार्मो को श्रेष्ठतम मशीना से सुसज्जित किया गया था और श्रम व्यवस्था वहा सामूहिक फार्मो की तुलना म ज्यादा ऊच स्तर की थी।

उस दौर मे बाल्टिक जनतन्त्रा, तथा उक्रइना, बेलोरूस और मोल्दाविया के पश्चिमी भाग मे कृषि मे मौलिक परिवतन हुए। वहा पाचव दशक के उत्तराद्ध मे फार्मों को समाजवादी आधार पर पुनर्गठित करने का काम जो नाज़ी आक्रमण की वजह से रुक गया था, फिर शुरू किया गया। राज्य ने नये राजकीय तथा सामूहिक फार्मो का नयी मशीनरी और इमारती सामान का खासा बडा हिस्सा भेजा और अतिरिक्त कर्ज और बीज भी दिया। स्थानीय राष्ट्रवादिया और कुलको ने, भूतपूव पुलिसवाला और पदाधिकारिया ने समूहीकरण का विरोध किया। ऐसी स्थिति पैदा हो गई जो कई लेहाज से प्रथम पचवर्षीय योजना के समय की याद दिलाती थी। इस सघष के दौरान काफी बडी सख्या मे कम्युनिस्ट पार्टी और कोम्सोमोल कायकर्ता मारे गये। लेकिन इन बातो से नयी जीवन पद्धति को जन्म लेने से नही रोका जा सकता था। पिछडे हुए अलग-अलग व्यक्तिगत खेतो के बजाय बडे सामूहिक फाम लहलहाने लगे। समाजवादी कृषि की परम्परा, सामूहिक फार्मो की जीवन पद्धति, और पास पडोस (पूव) के इलाको का अनुभव वग दुश्मना तथा सदियो पुराने पूर्वाग्रहा से अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए। १९५० तक सभी नये क्षेत्रो मे समूहीकृत कृषि की जीत हो चुकी थी। यह समाजवादी कृषि की एक अत्यत महत्वपूण विजय थी जो ऐसी कठिन स्थिति मे प्राप्त की गई थी जब एक एक ट्रैक्टर, एक एक हारवेस्टर, एक एक किलोग्राम अनाज एक एक किलाग्राम रूई का बडा मूल्य था।

उन वर्षो की सबसे महत्वपूण उपलब्धि कपास उत्पादका ने प्राप्त की थी। मध्य एशिया, कजाखस्तान और आजरबैजान के सैकडा सामूहिक फार्मो ने कपास की अभूतपूव फसल हासिल की। १९५० मे ३७,००,००० टन कपास राज्य को बेचा गया, जो योजना के लक्ष्य से ६,५०,००० टन अधिक था। इसका कारण केवल यही नही था कि कपास उपजानवाले क्षेत्रो का युद्ध के समय उतनी क्षति नही पहुची थी जितनी उन जनतन्त्रो और क्षेत्रो को जिनपर शत्रु ने अधिकार कर लिया था। कपास उपजानेवालो की आमदनी उन फार्मों से अधिक थी जिनकी विशिष्टता अनाज उपजाना और पशुपालन थी। ट्रास काकेशिया के उन सामूहिक फार्मों की आमदनी भी औसत से काफी अधिक थी जा अगूर और साइटस उपजाते थे।

अधिक खराब स्थिति उन फार्मों की थी जिनसे राज्य अनाज, मांस तथा आलू खरीदता था क्योंकि इन चीजों का दाम अक्सर उनपर लगे श्रम के अनुकूल नहीं होता था।

इस अदायगी पद्धति के कारण उत्पादन के विकास में बाधा पड़ रही थी और बहुतेरे सामूहिक किसानों की प्रवृत्ति यह थी कि सामूहिक क्षेत्र में यथासम्भव कम श्रम करें और अधिक से अधिक समय अपने निजी खेत के टुकड़े में लगायें।

निस्सन्देह युद्धोत्तर वर्षों की उन कठिन स्थितियों में भी, जो अक्सर अंतरविरोधों से भरी होती थी, स्थानीय पार्टी संगठन, सार्वजनिक संस्थाएं जिनका कृषि से संबंध था और अगुआ कृषि संगठनकर्ता लगातार कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए, भौतिक प्रोत्साहन और नैतिक प्रेरणा में सही तालमेल बिठाने के लिए और आधुनिक कृषि प्रविधि जारी करने के लिए पूरी ताकत से काम करते रहे। १९५० और १९५३ के बीच सामूहिक फार्मों को मिलाकर बहुत बड़े फार्म बनाये गये। फार्मों की कुल संख्या २,५४,००० से घटकर ९३००० रह गई। छोटे आर्टेलों के मिल जाने से कृषि मशीनों का ज्यादा उचित उपयोग किया जाने लगा और प्रशासकीय खर्च में कमी की गई। फिर भी कृषि उत्पादन में उतनी अधिक वृद्धि नहीं हुई जितनी पूरी अर्थव्यवस्था के हितार्थ आवश्यक थी। प्रगति अवश्य हुई, मगर जरूरत उससे बहुत ज्यादा की थी। योजना के लक्ष्य, खासकर जहां तक पशुपालन का संबंध था पूरे नहीं हो पाये। समूहीकृत कृषि में जो जबदस्त सम्भावनाएं निहित थी, उनका पूरा उपयोग नहीं किया गया था उसका उद्योग के काम पर तथा पूरी आबादी के लिए विभिन्न सामान और खाद्य पदार्थों की सप्लाई पर बुरा प्रभाव पड़ रहा था।

लेकिन कुल मिलाकर श्रमजीवी जनता का जीवन-स्तर बराबर ऊंचा हो रहा था। हर साल आम उपभोग की चीजों के दाम कम होते रहते थे और काम करने और रहन-सहन की परिस्थितियां बराबर सुधरती जा रही थी। हर साल शहरों में २ करोड़ से ज्यादा वर्ग मीटर रिहायशी क्षेत्रफल की वृद्धि की जा रही थी (देहातों में बनाये जानेवाले रिहायशी मकानों को छोड़कर)। सेनेटोरियमों अवकाश गृहों, अस्पतालों, जच्चाखानों, किंडरगार्टनों और शिशुगृहों की संख्या भी बढ़ रही थी। मलेरिया, तपेदिक, पोलियो पीड़ित रोगियों की संख्या बहुत घट गयी

थी और जनसख्या मे वृद्धि (आबादी के प्रत्येक १,००० व्यक्तियो पर) सयुक्त राज्य अमरीका, ब्रिटेन, स्वीडन, जर्मन सघात्मक गणराज्य से अधिक थी।

युद्धपूर्व के स्कूलो की सख्या १९४५-४६ के शिक्षा वर्ष मे ही प्राप्त कर ली गई थी। फिर शहरो और देहातो मे अनिवार्य सार्विक सातसाला स्कूली शिक्षा जारी कर दी गयी थी। जो लोग स्कूल म दस साल पूरा कर लेते, उनके लिए दूसरे दरजे की स्कूली सनद और जो विद्यार्थी प्रमुख स्थान प्राप्त करे, उनके लिए स्वर्ण तमगे जारी किये गये जो उच्च शिक्षा सस्थाओ मे प्रवेश पाना सुगम बनाते थे।

१९५० म देश म कुल ८८० उच्च शिक्षा सस्थाए थी जिनमे छात्रा की कुल सख्या १२,४७,००० थी। युद्ध से ठीक पहले की तुलना मे यह सख्या डेढ गुनी थी। उन वर्षों के प्रतिभाशाली छात्रो को तो गिनना भी मुश्किल है। उनमे नोवल पुरस्कार विजेता अकादमीशियन बासोव, विज्ञान के डाक्टर अतरिक्षयात्री फेओक्तीस्तोव, और फिल्म निर्देशक चुखराई शामिल है।

सोवियत सघ का सास्कृतिक जीवन प्रतिवर्ष अधिक विविधतापूर्ण और समृद्धशाली होता जा रहा था। फदेयेव, पोलेवोय तथा कज़ाकेविच की कृतिया जिनमे महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के वीरो का गुणगान किया गया था, अत्यधिक सख्या मे छापी जा रही थी। इस दौर के साहित्य, फिल्म, नाटक तथा चित्र कला पर युद्ध सबधी विषय हावी थे। सोवियत कलाकारो ने अपनी समस्त मेधा और प्रतिभा फासिज्म के विरुद्ध सघर्ष के उन वीरतापूर्ण दिनो को अमर बनाने मे लगा दी ताकि आनेवाली पीढियो के दिलो मे उनकी स्मृति सदा बनी रहे। साथ ही सभी सास्कृतिक कृतियो ने शाति के ध्येय का समर्थन किया। चाहे सीमोनोव की कविताए हो, येफीमोव के और कुक्रिनीक्सी व्यग्यकारो के कार्टून हो, वूचेतिच की मूर्ति कला हो, शोस्ताकोविच का सगीत हो या एरेनबुर्ग की रचनाए हो, वे सब के सब देश के भीतर और बाहर बहुत लोकप्रिय हो जाती थी।

सोवियत वैज्ञानिको, आविष्कारको और डिज़ाइनरो ने अपना कार्य शाति की रक्षा को समर्पित किया। १९४६ के वसत मे प्रथम सोवियत जेट लडाकू विमानो की परीक्षा की गई और विमान दिवस के उपलक्ष्य

खुद योजनाओ मे भी कुछ त्रुटिया मौजूद थी। शुरू म उनम बडी सख्या मे कम क्षमतावाले विजलीघर बनाने का प्रबध था। आधुनिक रसायन के महत्व को कम करके आका जाता था, खासकर उन क्षेत्रो के महत्व को जिनका सबध प्लास्टिक, कृत्रिम रेशे और सश्लिष्ट रबड म था। प्राकृतिक रबड पर तथा भूमिगत कोयले के गैसीकरण पर बेबुनियाद ज्यादा जोर दिया गया था।

इससे पूजी विनियोजन मे भी गलतिया हुइ। ऐसा भी हुआ कि उद्योग की जिन शाखाओ मे विशेष सम्भावनाए निहित थी, उन्ह पर्याप्त मात्रा म धन नही मिलता था और उत्पादन की कम लाभदायक शाखाओ के विस्तार पर काफी धन खच कर दिया जाता था।

कुछ भूतपूव प्रशासको ने इस स्थिति का उचित बताने का प्रयत्न भी किया। उदाहरण के लिए कागानोविच ने जो परिवहन व्यवस्था के लिए जिम्मेदार थे, बिजली और डीजल रेलवे इजनो का विरोध किया। १९५४ तक वह यही कहते रहे कि "मै वाष्प रेलवे इजनो का समथक हू और उन हवाई किले बनानेवालो का विरोधी हू जो समझते है कि इनके बिना काम चल सकता है।'

कुछ ऐसे लोग भी थे जो पार्टी और जनता से सच्चाई छिपाने का प्रयत्न करते थे। मिसाल के लिए मलेकोव ने जिन्ह सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने कृषि के लिए जिम्मेदार बनाया था, १९५२ मे सरकारी तौर पर यह घोषणा की कि सोवियत सघ म अनाज की समस्या हल कर ली गई है, जबकि वस्तुस्थिति यह थी कि अनाज की कुल उपज १९४० से कम थी और देश की आवश्यकताए पूरी नही हुई थी।

विज्ञान और प्रविधि म सोवियत सघ की उपलब्धियो के महत्व को कम आकने का खूब विरोध किया जाने लगा, लेकिन साथ ही विदेशो की अनेक सफलताओ को प्राय महत्व नही दिया जाता था।

आज यह जानकर आश्चय होगा कि उदाहरण के लिए साइबरनेटिक्स जैसे विषयो के अध्ययन का उस समय प्रोत्साहन नही दिया जाता था। आनुवशिकी के कुछ क्षेत्रो म भी अनुसधान काय ठप पड गया था। अथशास्त्र मे गणितीय विधियो को लागू करने की ओर गम्भीरतापूवक ध्यान नही दिया गया। इन क्षेत्रो म सोवियत वैज्ञानिको के कामो को जो कई वष पूव सफलतापूवक शुरू हो चुके थे, उचित समथन नही मिला।

इन सब कारणा से सावियत अर्थव्यवस्था के तेज विकास मे वाधा पडी और कुछ हद तक विषमता उत्पन्न हो गई जिसको दूर करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना पडा।

इससे इनकार नही किया जा सकता कि अर्थव्यवस्था की युद्धात्तर बहाली और एक नये विश्वयुद्ध का रोकने तथा शांति का सुदृढ करने के निरंतर सघर्ष की आवश्यकता से सबधित वस्तुनिष्ठ कठिनाइया बहुत अधिक थी। युद्ध के दौरान जनहानि को भी अनदेखा नही किया जा सकता। राज्य बजट मे इतनी गुजाइश नही थी कि देश के समक्ष सभी तात्कालिक कार्यभारा का एकसाथ समाधान किया जा सके। स्थिति इस कारण और भी जटिल हो गई थी कि इन वस्तुनिष्ठ कठिनाइया के रहते हुए समाजवादी जनवाद के सिद्धाता से पथभ्रष्टता के कारण सामाजिक जीवन के कुछ प्रतिमाना का उल्लघन भी हो रहा था।

सोवियत लाग इस बात के आदी हा गये थे कि समाजवादी निर्माण से सबधित सभी मुख्य समस्याआ पर कम्युनिस्ट पार्टी काग्रेसा, पूर्णाधिवेशना, सम्मेलनो और बैठको मे विचार-विमर्श किया जाये। अलग-अलग उद्यमा और जिला, प्रदेशा और जनतत्रा म पार्टी की बैठके और सम्मेलन नियमित रूप से आयोजित हाते रहे, मगर राष्ट्रीय स्तर पर सर्वमान्य प्रतिमाना का स्पष्टत उल्लघन होने लगा था। कम्युनिस्ट पार्टी की १८वी काग्रेस को १९३७ मे होना था मगर वह कही १९३९ मे आयोजित की गई और उसके उपरात अगली काग्रेस १३ वर्ष बाद ही हुई।

जब १९वी पार्टी काग्रेस आखिरकार अक्तूबर, १९५२ मे आयोजित हुई तो देश भर म लागो ने इसके काम को सतोष की दृष्टि से देखा। काग्रेस ने उन घटनाआ का खुलासा किया जो १९३९ के बाद घट चुकी थी और उसने १९५१-१९५५ की पचवर्षीय योजना के निर्देश स्वीकार किये। उसमे और अधिक आर्थिक विकास, जनता के जीवन स्तर मे वृद्धि तथा सास्कृतिक विकास की व्यवस्था की गई। काग्रेस द्वारा स्वीकृत फैसले तथा राष्ट्र की पूरी जीवन पद्धति वर्गहीन समाज की दिशा मे सोवियत सघ की अनिवार्य प्रगति का सबसे स्पष्ट सबूत था।

नयी आर्थिक नीति के प्रारम्भिक वर्षों से १९३९ तक कम्युनिस्ट पार्टी की नियमावली म मजदूरो तथा श्रमजीवी लोगो के अन्य तबका के लिए पार्टी मे शामिल होने की विभिन्न शर्तें थी। १९वी काग्रेस तक

नियमावली मे पार्टी की व्याख्या करते हुए कहा गया था कि वह "सोवियत सघ के मज़दूर वग का अगुआ, सगठित दस्ता, उसके वग सघटन का सर्वोच्च रूप है।" लेकिन चूकि सोवियत सघ म शहरा और देहाता म समाजवाद की पूण विजय हो चुकी थी और उसके आधार पर सोवियत समाज की सामाजिक तथा राजनीतिक एकता उत्पन हुई, इस लिए १८वा पार्टी काग्रेस मे ही कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल होने की समान शर्तें निश्चित कर दी गई थी चाहे अमुक व्यक्ति का सामाजिक मूल या हैसियत कुछ भी क्यो न हा। यह निश्चय इस ऐतिहासिक तथ्य का प्रतिविम्व था कि श्रमजीवी लोगा के गैर-सवहारा हल्को के जीवन की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितिया मे ही नही, वल्कि उनकी चेतना तथा मनोवत्ति मे भी मूलभूत परिवतन हुए। ये सव समाजवाद की विजय और सुदढीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम थे।

१९वी पार्टी काग्रेस ने अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (वोल्शेविक) की नयी नियमावली अनुमोदित की तथा पार्टी का नाम वदलकर सावियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी रखने का फसला किया। एक साथ "कम्युनिस्ट" और "वोल्शेविक" शब्दो के प्रयोग का प्रारम्भिक महत्व अव नही रह गया था, क्याकि देश मे अव कोई मशेविक नही थे और न किसी नये मेशेविक आदोलन के शुरू होने की सम्भावना ही थी। समाजवादी निर्माण काल के दौरान देश मे मज़दूर वग के विरोधी तथा मज़दूर वग और पूजीपति वग के वीच ढुलमुल वग तथा सामाजिक तबके थे। उस समय पार्टी सवहारा वग की वर्गीय स्थितिया का मूत रूप थी। उसन समस्त जनगण द्वारा मज़दूर वग के रुख अपनाने के लिए कठिन तथा अडिग सघप किया था। जैसे-जैसे यह सघप सफल होता गया, कम्युनिस्ट पार्टी समस्त जनगण की पार्टी वनती गई।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की १९वी काग्रेस के शीघ्र ही वाद ५ माच १९५३ को स्तालिन का देहात हो गया। समाजवाद के शत्रुआ न आशा वाधी कि पार्टी और जनगण म घवराहट पैदा होगा और सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की आम लाइन की तामील करने म डगमगाहट हागी। एक वार फिर उनकी इन आशाआ स प्रकट हुआ कि वे समाजवादी समाज के स्वरूप को, कम्युनिज्म की दिशा म उसके अडिग वढाव के स्वरूप का, समझ नही पाये थे। पार्टी

के सामन जो कायभार सामने आये उनका समाधान करन में वह सफल रही।

पार्टी जीवन के लेनिनवादी प्रतिमानो पार्टी और राज्य के सभी स्तरो पर सामूहिक नेतत्व के लेनिनवादी सिद्धातो को बहाल करने तथा उनका अधिक विस्तार करने का कायभार इस दौर मे बहुत महत्वपूण हो गया। १९५३ की गर्मिया मे पार्टी की केद्रीय समिति ने बेरिया और उसके सहकारियो की मुजरिमाना गतिविधियो का खात्मा कर दिया। राज्य सुरक्षा निकायो के ये नेता इन निकायो को पार्टी और राज्य के नियत्रण से बाहर लाना और देश का नेतत्व अपने हाथो म लेना चाहते थे। सोवियत सघ के श्रमजीवी जनगण न इन दुस्साहसिकतावादियो के खिलाफ निर्णायक कारवाई का अनुमोदन किया।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति ने ऐसा रास्ता अख्तियार किया जिसका उद्देश्य समाजवादी जनवाद के सिद्धातो से सभी भटकावो का शीघ्रातिशीघ्र अत सुनिश्चित करना था। पार्टी की केद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन तथा औद्योगिक, कृषि सबधी तथा सास्कृतिक विकास पर विचार करने के लिए अखिल सघीय और जनतत्रीय बैठके नियमित रूप से होने लगी। सभी स्तरो पर सोवियतो, ट्रेड-यूनियनो और कोम्सामोल का काम अधिक सक्रिय हो गया।

थोडे ही समय मे उन नागरिको के हक बहाल कर दिये गये जिन्ह अन्यायपूण ढग से दमन का शिकार बनाया गया था। चेचेन, इनगुश, कलमीक, बाल्कर और कराचाई जातियो को पुन राष्ट्रीय स्वायत्त शासन का अधिकार दिया गया जिससे उन्ह पाचवे दशक के प्रारम्भ मे वचित कर दिया गया। बाबेल, कोल्त्सोव और यासेन्स्की की पुस्तके फिर प्रकाशित होने लगी और इसी तरह वबीलोव और तुलाइकोव जसे वैज्ञानिको तथा विज्ञान और सस्कृति के जगत की प्रमुख हस्तियो की कृतिया भी, जिनके नाम बहुत दिनो से विस्मृति के गभ म थे, फिर से प्रकट होने लगी। तुखाचेव्स्की, ब्लूखेर, यकीर तथा लाल सेना के अन्य सेनापति गहयुद्ध के प्रसिद्ध वीरो की पक्ति मे अपने उचित स्थान पर वापस पहुचा दिये गये, जिन्ह पहले बदनाम तथा गरकानूनी दमन का शिकार बनाया गया था।

१९५७ मे सरकार न लेनिन पुरस्कार पुन जारी किये जो १९२५ मे ही प्रचलित किये गये थे और जो विज्ञान और प्रविधि, कला और

साहित्य म श्रेष्ठ कृतियो के लिए प्रदान किये जाते थे। १९३९ म जारी किये गये स्तालिन पुरस्कार राज्य पुरस्कार कहलाने लगे।

जनता को स्तालिन द्वारा की गई गलतिया बताना बडे साहस का काम था क्योकि तीस साल से अधिक मुद्दत तक वही पार्टी और राज्य के कणधार रहे थे, उन्होने लेनिन के शिष्य और सच्चे उत्तराधिकारी की हैसियत से, सभी प्रकार के विरोध पक्ष के कट्टर दुश्मन और बुनियादी पार्टी लाइन के जोशीले समर्थक की हैसियत से नाम कमाया था।

अगर सभी तथ्यो को जनता के सामने प्रकट करने से कडवाहट, गहरे दुख और कभी कभी हताशापूर्ण भावना न पैदा होती तो वह अस्वाभाविक ही होता। साथ ही ऐसा भी हुआ कि गलतिया को सुधार करने मे पिछली घटनाओ का गलत मूल्याकन किया गया और पहले के प्राप्त अनुभव की निराधार आलोचना भी सामने आयी।

फरवरी, १९५६ मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वी काग्रेस हुई जिसमे केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव ख्रुश्चेव ने पेश की। इस काग्रेस ने पार्टी के जीवन और सोवियत समाज के विकास म एक नयी महत्वपूर्ण मजिल शुरू की। ७२,००,००० कम्युनिस्टो के प्रतिनिधियो ने जो प्रस्ताव स्वीकृत किये, उनमे इस बात पर विशेष जोर दिया गया था कि वर्तमान विकासक्रम की इस मजिल की खास विशेषता यह है कि समाजवाद अब एक देश के अन्दर सीमाबद्ध नही रहकर एक विश्व व्यवस्था बन गया है। पार्टी ने विश्वयुद्ध को रोकने के लिए यथार्थवादी उपाय भी पेश किये। समाजवाद मे सक्रमण के विभिन्न रूपो के बारे मे, जिन्हे विभिन्न देश अपना सकते हैं, तथा समाजवादी क्राति के शातिपूर्ण विकास की सम्भावना के बारे मे लेनिन के सिद्धात को इस काग्रेस म और भी विकसित किया गया।

२०वी काग्रेस ने विगत पाच वर्षों के दौरान आर्थिक विकास का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया और छठी पचवर्षीय योजना (१९५६–१९६०) के मुख्य उद्देश्यो पर विचार विमर्श किया।

पार्टी काग्रेस ने स्तालिन की व्यक्ति पूजा के असर को मिटाने के लिए कारवाइयो को स्वीकृति दी। इसके शीघ्र ही बाद केन्द्रीय समिति ने एक विशेष निर्देश दिया जिसम विस्तारपूर्वक बताया गया कि किन परिस्थितियो मे और क्या व्यक्ति पूजा को पनपने का मौका मिला और किन रूपो म

यह प्रकट हुई और यह भी बताया गया कि स्तालिन के कार्यकलाप के कौनसे पहलू लाभदायक थे और कौनसे हानिकारक।

जो लोग अभी भी नतत्व क पुरान समाजवादी जनवाद और वैधता को सीमित करनेवाले तौर-तरीकों के समर्थक थे, वे सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वीं कांग्रेस में घोषित नीति के विरुद्ध उठ खड़े हुए। इनमें ऐसे लोग थे जो बरसों पार्टी और राज्य में प्रमुख पदों पर नियुक्त थे, जैसे मोलोतोव, कागानोविच और मालेनकोव। लेकिन उनके समर्थकों की संख्या नगण्य थी। १९५७ की गर्मियों में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन में उनके द्वारा अपनाई गई लाइन की निन्दा की गई और वे लोग केन्द्रीय समिति से निकाल दिये गये।

सोवियत जनगण ने उन कार्रवाइयों के अमली महत्व को समझा जिनका उद्देश्य विगत गलतियों और विकृतियों को सुधारना और यह सुनिश्चित करना था कि भविष्य में उनके दोबारा होने की सम्भावना न रहे। इस लाभप्रद कदम का थोड़े ही दिनों में नतीजा यह हुआ कि आर्थिक विकास की रफ्तार तेज हो गई, श्रमजीवियों का जीवन-स्तर काफी ऊंचा हुआ तथा विज्ञान और संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण, नयी उपलब्धियां हुई।

आर्थिक प्रगति।
परती जमीन का विकास

कालीनिन से एक बार किसी ने पूछा "सोवियत सत्ता के लिए किस का महत्व अधिक है मजदूर का या किसान का?" और उन्होंने बुद्धिमत्तापूर्ण जवाब दिया "किसी आदमी के लिए किसका महत्त्व अधिक है, उसके दाहिने पैर का या बायें पैर का? मैं कहूंगा कि यह कहना कि क्रान्ति के लिए मजदूर का महत्व किसान से अधिक है वैसा ही है जैसा किसी आदमी का दाहिना या बायां पैर काट लेना।"

यहां बहुत ठोस रूप से बताया गया है कि कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत राज्य मजदूरों और किसानों की एकता को कितना महत्व देते हैं। इसी लिए पांचवें दशक के अंत और छठे के प्रारम्भ में कृषि के पिछड़ जाने से कम्युनिस्ट घबराये बिना नहीं रह सके। शीघ्रातिशीघ्र कृषि के विकास को तेज करने के लिए आवश्यक कार्यक्रम तैयार किया गया।

१९५३ की गतखड म केन्द्रीय समिति का एक पूर्णाधिवेशन कृषि की स्थिति पर विचार करने के लिए मास्को मे आयोजित किया गया। उस समय जो विश्लेषण किया गया, उससे यह प्रकट हुआ कि बहुत समय से सरकार कृषि के विकास के लिए उतना ही अनुदान नही कर सकी थी जितना भारी और हलके दोनो उद्योग के लिए किया गया था। १९२९ से—जब व्यापक समूहीकरण शुरु हुआ—१९५२ तक राज्य ने बुनियादी निर्माण काय और भारी उद्योग के साज-सामान पर ३,६८ अरब रूबल, परिवहन व्यवस्था पर १,९३ अरब रूबल, हलके उद्योगा पर ७२ अरब रूबल खच किया था जबकि कृषि को ९४ अरब रूबल मिला था, याने केवल अकेले भारी उद्योग पर ही जितनी रकम लगाई गई, उससे चौगुना कम। लगभग उसी अवधि मे कुल औद्योगिक पैदावार मे (मूल्य के हिसाब से) १६ गुना वद्धि हुई थी जबकि कृषि की उपज कमोबेश उतनी ही रह गई थी। कृषि पर युद्ध का असर भी बेहद बुरा पडा था और प्रशासन मे त्रुटियो तथा योजना मे खराबियो के कारण स्थिति और जटिल हो गई थी।

सितम्बर, १९५३ के सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के पूर्णाधिवेशन के बाद कृषि उत्पादन मे वद्धि करने का अभियान राष्ट्रव्यापी पैमाने पर चलाया गया। फार्मो को बहुत बडी रकम और अभूतपूव सख्या मे मशीनरी दी गई। कृषि के लिए नियोजन व्यवस्था मे भी परिवतन किया गया और सामूहिक तथा राजकीय फार्मों से ज्यादा अधिकार दिये गये। राज्य ने कृषि की उपज की खरीदारी का दाम बढा दिया और शहरा से बहुत से अनुभवी प्रशासक गावो मे काम करने भेजे गये। १९५४ से १९५८ के बीच सामूहिक फार्मो मे कम्युनिस्ट पार्टी सदस्या की सख्या म लगभग २ ५ लाख की वद्धि हुई। अब सभी फार्मों मे पार्टी सगठन मौजूद थे, जबकि युद्ध से पहले केवल आठ मे से एक फाम मे पार्टी सगठन हुआ करता था।

उसी अवधि मे उद्योग ने मौजूद ट्रक्टरा और अन्य कृषि मशीना की जगह नये और ज्यादा आधुनिक नमूने के ट्रैक्टर और मशीने दी। १९५८ मे १० लाख से अधिक ट्रक्टर और ५ लाख से अधिक अनाज हारवेस्टर काम कर रहे थे। उस समय तक प्रति किसान बिजली शक्ति की उपलब्धि १९४० की तुलना म लगभग तिगुनी बढ गई थी। लगभग आधे सामूहिक फार्मों का बिजलीकरण हो चुका था।

इन कारवाइया का उत्साहवद्धक फल मिला। १९५७ तक एक सामूहिक

फाम की औसत आमदनी १२,५०,००० रूबल हो गई थी, जबकि १९४९ मे वह १११,००० रूबल थी। उद्योग के लिए कृषि से कच्चे माल तथा आबादी के लिए खाद्य पदार्थों की रसद म काफी वृद्धि हुई।

सामूहिक फाम व्यवस्था के सुदृढीकरण म एक और कारवाई से बहुत लाभ हुआ और यह था मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो को पुनगठित करने का फैसला। चौथे और यहा तक कि पाचवे दशक मे भी, वे देहातो मे तकनीकी प्रगति के मुख्य साधन थे और बडे पैमाने पर सामूहिक कृषि का सगठन करने म उन्होंने प्रमुख भूमिका अदा की थी। जिस समय कृषि का समाजवादी आधार पर पुनगठन किया जा रहा था मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो की राजनीतिक भूमिका भी उतनी ही महत्वपूण थी। लेकिन छठे दशक म जब समाजवादी कृषि अपने विकास की एक नयी मंजिल पर पहुच गई थी, यह बात अधिकाधिक स्पष्ट होने लगी थी कि कृषि मशीनरी खुद सामूहिक फार्मों के हवाले कर देनी चाहिए। शहर और देहात मे आम जनगण द्वारा इस सवाल पर व्यापक विचार किये जाने के बाद माच, १९५८ मे सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन ने एक फैसला किया जिसम मशीन ट्रैक्टर स्टेशनो के पुनगठन और सीधे सामूहिक फार्मों को कृषि मशीनें बेचने का निणय किया गया था। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के उसी अधिवेशन मे ख्रुश्चेव को सोवियत सघ के मत्रिपरिषद का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। साथ ही वह सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव भी बने रहे जिस पद पर वह सितम्बर, १९५३ म चुने गये थे। लेकिन आगे चलकर यह जाहिर हुआ कि इन दो मुख्य पदो पर एक ही व्यक्ति की नियुक्ति अनुचित और अनावश्यक भी थी। इससे एक व्यक्ति के हाथ मे बहुत अधिक सत्ता सिमट आयी जिससे आगे चलकर सामूहिक नेतत्व के सिद्धात का उल्लघन हुआ और कई समस्याओ के समाधान मे आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाया गया।

१९५८ के उत्तराद्ध मे सोवियत कृषि जीवन मे बडे बडे परिवतन हुए। अधिकाश सामूहिक फार्मों ने कृषि मशीनें खरीदी थी जो पहले मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो की, यानी राज्य की सम्पत्ति हुआ करती थी। इस तबदीली का मतलब यह भी था कि १० लाख से अधिक मैकेनिक और विशेषज्ञ जो पहले मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो के अमले से सबध रखते थे अब सामूहिक फार्मों के स्थायी सदस्य बन गये।

इन्ही दिनो कृषि पैदावार की वसूली की व्यवस्था मे एक और परिवर्तन किया गया। राज्य अब सीधे सामूहिक फार्मों से उनकी उपज खरीदने लगा।

उसी समय देश के पूर्वी क्षेत्र कृषि उन्नति म खासी बडा भूमिका अदा करने लगे थे, जहा परती जमीन का विकसित करने का अभियान चलाया गया।

देश के पूर्व, खासकर साइबेरिया और कजाखस्तान म विशाल प्राय गैर-आबाद इलाके पडे हुए थे जिनपर कभी खेती नही की गई थी। इसके कई कारण थे—इन इलाको म प्राकृतिक स्थितिया अनुकूल नही थी, वे आबाद केंद्रो से बहुत दूर थे, उन तक पहुचना कठिन था, वहा पानी का अभाव था, आदि। जमीन को विकसित करने के लिए सख्त प्रयासो की जरूरत थी और बडी मात्रा मे आधुनिक मशीनो की सहायता स ही यह काम किया जा सकता था।

विशेष सर्वेक्षण दलो ने साइबेरिया और कजाखस्तान के इन विशाल इलाको का पर्यवेक्षण किया। अर्थशास्त्रियो, कृषि विशेषज्ञो और पार्टी कार्यकर्ताओ ने विस्तारपूर्वक इस योजना पर विचार किया।

१९५४ के प्रारम्भ म ही यह बात साफ हो चुकी थी कि परती जमीन के व्यापक इलाको के विकास से बडे अच्छे परिणाम होगे और समूची सोवियत अर्थव्यवस्था के विकास की दृष्टि से यह जरूरी था। ३२० लाख एकड *जमीन पर खेती करने की योजना बनायी गयी। थोडे समय म इतने बडे* क्षेत्र को कृषियोग्य बनाने के लिए सचमुच महान प्रयास की जरूरत थी। और वह किया भी गया।

सर्वप्रथम कम्युनिस्ट पार्टी ने देश के नौजवानो को *सम्बोधित किया।* लेकिन इस अपील पर आनेवालो मे केवल नौजवान ही नही थे। १९५४-१९५५ मे कई लाख आदमी परती जमीन की ओर चल पडे। इनमे ३,५०,००० कोम्सोमाल के भेजे हुए थे। उनको पहले से काफी *रुपये दिये* गये वहा तक मुफ्त म जाने और रहन-सहन की सुविधाओ का प्रबध पहले से ही कर दिया गया था। प्रारम्भ मे काफी कठिनाइयो का सामना करना पडा जिनको दूर करके ही इस विशाल क्षेत्र पर खेती की जा *सकती थी।* श्रमिक इतनी बडी सख्या मे आ रहे थे जिनको ठहराने का उचित प्रबध नही हो पाता था सडक निर्माण का काम धीरे धीरे हो रहा था और पानी का भी कभी अभाव होता था। भोजन व्यवस्था ठीक करना, दुकानें

खोलना, सिनेमाघरा, क्लबा, पुस्तकालया आदि का प्रबध करना अभी बाकी था। स्वय प्रकृति इस योजना की विरोधी मालूम पडती थी। गमिया म धूप असहनीय होती थी परन्तु जाडे म कडाके की सरदी पडती थी और प्रचण्ड तूफान चलते थे।

जोशीले जवाना ने जो इस परती ज़मीन को विकसित करने आये थे, धीरे धीरे इन कठिनाइया पर काबू पा लिया और इन इलाका का आबाद करने के लिए दृढतापूर्वक काम करने लगे। नौजवान पीढी के लोगा को अक्सर अपने पूर्वजा से ईर्ष्या होती थी जिन्ह अपने देश की वीरतापूर्वक सेवा करने का मौका मिला था—उन्हाने खिबीनी खनिज खाद के स्रोता को विकसित किया था, दनेपर को काबू म किया था, मग्नितोगोर्स्क औद्योगिक उद्यम का निर्माण किया था और साइबेरियाई जगला के वीरान म कोम्सोमोल्स्क आन आमूर नगर खडा कर दिया था। मगर अब की नौजवान पीढी को भी ऐसे कारनामे करने का मौका मिल गया जिनमे क्रातिकारी रोमाटिकता का पुट था, जो श्रम वीरता से ओत प्रोत थे। एक के बाद एक राजकीय फार्म वहा पर म बनते गये। ये ऐसे फ़ार्म थे जिन्हें परती ज़मीन के विकास के प्रयोजन के लिए सबसे उपयुक्त बताया गया था। वहा अच्छी बस्तिया बनाई गइ। जब फसल काटने का समय आया तो स्थानीय किसाना की सहायता के लिए देश के बडे शहरा से विद्यार्थी और उक्रइना तथा उत्तरी काकेशिया, कुबान से मकेनिक और ट्रैक्टर चालक आ गये। १९५५ म पहली बार अन्य समाजवादी देशो से युवक दल सोवियत सघ के नौजवाना के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने आये। नये फार्म शीघ्र ही श्रम-वीरता, मैत्री और भ्रातृत्व का दृश्य प्रस्तुत करने लगे।

परती ज़मीन के विकास के लिए जो प्रारम्भिक लक्ष्य निश्चित किये गये थे, उन्ह शीघ्र ही कई गुना पूरा कर दिया गया। यह केवल एक मुख्य उपलब्धि ही नही थी। इससे अनेक भारी समस्याए भी उत्पन्न हुई। यह पता चला कि योजना बनानेवालो के कई फसले बहुत जल्दबाजी मे किये गये थ और इतने व्यापक पैमाने के प्रयोजन पर जितना ध्यानपूर्वक विचार करने की जरूरत थी वह नही किया गया था। स्थानीय स्थितियो का पर्याप्त विश्लेषण नही किया गया था, इन इलाको मे पशुपालन के कम विकास का असर भी पडा और श्रम का मौसमी स्वरूप भी बाधा डालता था। लेकिन इसमे उन लोगा के कारनामे का महत्व कम नही होता जिन्हाने परती ज़मीन के विकास का बीडा उठाया था।

इस प्रयोजन का निर्णायक पहलू यह था कि इससे अनाज की उपज में काफी वृद्धि करना सम्भव हुआ, जो समस्त कृषि उत्पादन की आधारशिला थी। राज्य ने १९५६–१९५८ में जितना अनाज खरीदा, उसका आधे से ज्यादा भाग इन नवविकसित इलाकों से खरीदा गया था। परती जमीन से देश को केवल अनाज ही नहीं मिला। लाखों नौजवानों ने वहां जीवन का बहुमूल्य अनुभव प्राप्त किया। १९५७ में सरकार ने काम्सामोल को परती जमीन के विकास में उसकी भूमिका के लिए लेनिन पदक प्रदान किया। ३० हजार से अधिक नवयुवकों और नवयुवतियों को उनकी सेवाओं के लिए पदकों और तमगों से विभूषित किया गया और २६२ व्यक्तियों को समाजवादी श्रम के वीर की पदवी प्रदान की गई।

१९५८ में अनाज की कुल उपज क्रांति के बाद से सबसे अधिक, लगभग १३,४० लाख टन थी। राज्य द्वारा अनाज की खरीदारी १९५३ की कोई दोगुना थी। मांस का उत्पादन ७७ लाख टन और दूध का ५,८७ लाख टन था और ये दोनों आंकड़े भी १९५३ से बहुत अधिक थे। कुल मिलाकर कृषि उत्पादन में ५१ प्रतिशत की वृद्धि हुई थी।

इस उल्लेखनीय प्रगति का संबंध इस बात से था कि सभी संघीय जनतंत्रों में कृषि का सफल विस्तार हुआ था और समस्त सोवियत किसानों का जीवन-स्तर ऊंचा हुआ था। किसानों की प्रति व्यक्ति आय – सामूहिक फार्म और निजी जोतों दोनों काम से – १९५३ से ५० प्रतिशत और १९४० के स्तर से १२० प्रतिशत अधिक थी। पहले सामूहिक किसानों को आमदनी केवल साल के अंत में मिलती थी जब राज्य को जो कुछ मिलना था, वह सब दे दिया जाता। १९५६ से सामूहिक किसानों को हर महीने और तिमाही के अंत में नियमित रूप से निश्चित आमदनी मिलने लगी। कृषि वर्ष के अन्त में अंतिम हिसाब किताब करते समय इसके परिणामों के अनुसार उनकी आमदनी तय की जाने लगी।

मगर कृषि की पैदावार बढ़ाने सम्बन्धी सभी फैसले सही नहीं निकले। उनमें कुछ आर्थिक दृष्टि से गलत थे। परती जमीन की योजना का जितनी बड़ी मात्रा में धन और मशीनें दी गई, उसका नतीजा यह हुआ कि देश के केंद्रीय भाग में खेती और पशुपालन के परम्परागत क्षेत्रों में कृषि उत्पादन की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया। यद्यपि मवेशी, मुर्गे-मुर्गियां, दूध मक्खन, सब्जी अनाज और औद्योगिक फसलों की राज्य द्वारा

खरीदारी का दाम लगभग तिगुना बढा दिया गया था, मगर वह अब भी लागत से कम था। पर इन त्रुटियो के बावजूद कृषि मे ग्राम सुधार सर्वविदित था। फसले पहले से कही अच्छी थी, चारे की सप्लाई कही ज्यादा नियमित रूप से होती थी, पशुग्रो की सख्या म बहुत वृद्धि हुई थी और इसी के अनुसार मास, दूध और मक्खन का उत्पादन बढा था।

कृषि की यह प्रगति उन तबदीलियो का बहुत ठोस प्रतिबिम्ब थी जिन्होने पूरे राष्ट्र के जीवन का, राज्य की बढती हुई क्षमता को प्रभावित किया था। जहा कृषि के विस्तार को प्राथमिकता दी गई थी, वही इस बात का ध्यान भी रखा गया था कि उद्योग का विस्तार जारी रहे। अर्थतन्त्र की इन दोना शाखाग्रो के अतरसम्बधित विकास से देश की पूरी अर्थव्यवस्था के विकास का प्रोत्साहन मिला।

१९५५ की गर्मियो मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सरकार ने निर्माण-कर्ताग्रो, उद्योग के प्रवधको और अग्रणी मजदूरो का सम्मेलन इस उद्देश्य से बुलाया कि उस समय तक प्राप्त अनुभव का विश्लेषण किया जाय, त्रुटियो के कारण और नये ध्येयो की व्याख्या की जाये। कई मत्रालयो और विभागो के कामो की त्रुटियो की बडी आलोचना की गई। द्रुत तकनीकी प्रगति को मुख्य काय बताया गया और नवीकारको और आविष्कारको तथा मजदूरो और किसानो के पूरे समुदाय की रचनात्मक पहलकदमी को प्रोत्साहन दिया गया। सरकार ने उत्पादन मे नयी तकनीक का इस्तेमाल करने से सबधित एक नया नियम जारी किया। ट्रेड-यूनियनो न आविष्कारको तथा नवीकारको की अखिल सघीय सस्था स्थापित की।

इस बीच आर्थिक प्रवध के अधिक कारगर रूपो और तरीको की खोज जारी रही। १९५४ के अत म "प्राव्दा" ने इस विषय पर एक लेख-माला प्रकाशित की – उद्योग तथा निर्माण काय के प्रवध मे सुधार, नियोजन व्यवस्था म सशोधन तथा आर्थिक योजनाग्रो की तैयारी और तामील मे जनता की शिरकत की भूमिका बढाने की समस्याए। सघीय जनतत्रो के आर्थिक अधिकारो का विस्तार करने से और उन्ह कई औद्योगिक शाखाग्रो का निरीक्षण करने की अनुमति देने से (यह तबदीली १९५४–१९५६ मे की गई थी) बहुत लाभ हुआ। लेकिन इससे भी ज्यादा बुनियादी कारवाई की जरूरत थी। १९५७ मे देश मे कुल मिलाकर २ लाख से अधिक राज्य उद्यम और १ लाख से अधिक निर्माण परियोजनाए चालू थी। इतने व्यापक

क्षेत्र मे अत्यत तीव्र गति से होनवाले काम का कारगर ढग से निराक्षण करना केद्रीय मत्रालया के लिए अधिकाधिक कठिन हाता जा रहा था। अत्यधिक केद्रीयकरण स्थानीय कार्यकर्ताओ की पहलकदमी के रास्त म रुकावट वना हुआ था।

१६५७ मे इस क्षेत्र मे सुधार, यानी मत्रालया के स्थान पर राष्ट्रीय आर्थिक परिपदा की स्थापना के सम्बन्ध म देश भर म विचार विमर्श हुआ। यह सुझाव दिया गया था कि कुछ मत्रालयो को नही तोडना चाहिए। उदाहरण के लिए अकादमीशियन वी०तर के विचार म बिजलीघरा, कृषि और परिवहन मत्रालयो को कायम रखना जरूरी था। ऐसे सुझाव भी पश किये गये थे कि अतिम फैसला करने से पहले अनेक आजमायशी राष्ट्रीय आर्थिक परिपदें (मिसाल के लिए मास्को, लेनिनग्राद और स्वेदलास्क म) कायम की जायें। लेकिन बहुमत का विचार कुछ और था जो, जसा कि हम देखेंगे, गलत साबित हुआ। मई, १६५७ मे सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन मे एक कानून स्वीकृत हुआ जिसके अनुसार उद्योग और निर्माण काय का प्रबध क्षेत्रीय आधार पर, आर्थिक प्रशासकीय आधार पर पुनर्गठित किया गया। अधिकाश मत्रालया को ताड दिया गया और जो उद्यम तथा निर्माण परियोजनाए उनकी परिधि मे आती थी अब राष्ट्रीय आर्थिक परिपदा के सुपुर्द कर दी गइ।

उद्यमा के प्रबन्धको को योजना बनान, बुनियादी निर्माण कार्यो और वित्तीय मामलो मे विस्तृत अधिकार दिये गये। श्रम सघटन और वतन व्यवस्था को परिष्कृत किया गया।

ट्रेड-यूनियनो की ११वी काग्रेस और कोम्सोमाल की १२वी काग्रेस ने जो १६५४ मे आयोजित की गई थी, इस सवाल पर भी विचार किया था कि सावजनिक सगठनो के काम मे श्रम की उत्पादिता बढान, मशीनरी का अधिकतम उपयोग करने और आबादी का सास्कृतिक स्तर और जीवन स्तर ऊचा करने के सघप मे श्रमजीविया के व्यापकतर हिस्सा को कसे शरीक किया जाये।

समाजवादी प्रतियोगिता अधिकाधिक व्यापक पैमान पर चल रही थी। लगभग रोज ही समाचारपत्रा म नवीकारका के नाम और अगुआ श्रमिक दला की उपलब्धिया के बार म लेख छपा करत थे। अब, जबकि नव विकसित इलाका मे निर्माण काय तजी स हा रहा था, श्रम के कारनाम

सोवियत देश के रोज़मर्रे के जीवन का आम दस्तूर बन गये थे। रेडियो और समाचारपत्रों मे वोल्गा, द्नेपर और कामा के पनबिजलीघरो के निर्माण सबधी समाचार नियमित रूप से छपा करते थे। ब्रात्स्क म एक विशाल निर्माण काय के समाचार आने लगे थे।

इस क्षेत्र के बारे मे इस समय से पहले बहुत कम जानकारी थी। १९५१ मे प्रकाशित बहत सोवियत विश्वकोष मे निम्नलिखित सूचना थी "ब्रात्स्क अगारा नदी के बायें तट पर एक गाव है। इसकी स्थापना १६३१ मे एक किले–ब्रात्स्की ओस्त्रोग–के रूप मे हुई थी।" छठे दशक के मध्य म ब्रात्स्क साइबेरिया का औद्योगिक रूपातरण करनेवाला केंद्र बनता जा रहा है। पहले कम ही लोगो ने मास्को से ४००० किलामीटर दूर जगल म उस स्थान का नाम सुना होगा मगर अब घर-घर इसकी चर्चा होने लगी। १९५५ मे इस स्थान पर एक विराटतम पनबिजलीघर का निर्माण काय शुरू हुआ।

यही वह समय था जब सोवियत सघ के उत्तर पश्चिमी भाग म चेरपावेत्स मे नये धातुकम केंद्र का निर्माण काय शुरू हुआ। दक्षिणी उराल और ट्राम काकेशिया मे भी अभी अभी निर्मित धातु कारखाने चालू हुए। भूवज्ञानिको ने लेना नदी के क्षेत्र याकूतिया मे बडी मात्रा म तेल की खोज की। याकूतिया म ही हीरे के इतने ही विशाल स्रोत खोज निकाले थे जिनके सामने ट्रासवाल तथा ओरेंज नदी के प्रसिद्ध खजाने फीके पड गये थे।

औद्योगिक मोर्चे से रोज मन को उमगित करनेवाले समाचार आ रहे थे। स्तावोपोल तथा मास्को के बीच यूरोप की सबसे बडी गैस पाइप लाइन चालू हो चुकी थी। वाल्गा नदी पर लेनिन बिजलीघर का जो उस समय तक ससार का सबसे बडा पनबिजलीघर था, बहुत जोरदार समारोहो के बीच उदघाटन किया गया। नये-नये सागर, नयी नयी नहरे नये-नये माग तथा नयी नयी रेलवे लाइनें नक्शे पर प्रकट हो रही थी, नये-नये हवाई माग चालू किये जा रहे थे।

इसी अवधि म नय प्रकार की प्रतियोगिता का श्रीगणेश करनेवाला ने बडा नाम कमाया। १९५६ म दोनत्स बेसिन के एक खनक मामाई ने अपने ब्रिगेड के अन्य सदस्यो से मिलकर यह सुझाव पेश किया कि हर खनक को रोज अपने कोटे की निश्चित मात्रा से एक टन अधिक कोयला काटना चाहिए ताकि हर खान मे जितने खनक है, उतना टन अधिक कोयला

रोज मिला करे। इस सुझाव को दोनेत्स बेसिन मे ही नही, केवल कोयला खानो मे ही नही अपनाया गया। विभिन्न पेशा और अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओ के श्रमिको ने अपने-अपने सामान्य कोटा से अधिक टन या मीटर उत्पादन करना या अधिक एकड ज़मीन जोतना शुरू कर दिया।

इस प्रकार की समाजवादी प्रतियोगिता मे बडी सख्या म लोगा ने भाग लिया। कोलचिक के ब्रिगेड के खनको ने एक और सुझाव दिया, वह यह कि प्रत्यक अतिरिक्त टन कोयले का उत्पादन अधिकतम कार्यकुशलता के साथ किया जाये ताकि राज्य को प्रत्येक टन पर एक रूबल की बचत हो। इसका मतलब यह था कि उत्पादन मात्रा सबधी आकडो के साथ ही उत्पादन के गुणात्मक आकडे भी सामने आयें।

मामाई, कोलचिक और उनके सहकर्मियो द्वारा चलाये गये अभियान जनगण की तीव्र रचनात्मक सरगर्मी उनके अधिक ऊचे सास्कृतिक और तकनीकी स्तर से सबधित थे। नवीकारको ने अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओ मे उत्पादन योजनाओ का ध्यानपूवक अध्ययन किया और सामूहिक फसले किये कि सुलभ श्रम शक्ति तथा विभिन्न प्रकार के सामानो का अधिक अच्छा प्रयोग कैसे किया जाय। मजदूर अपने काम से सबधित अन्य पेशा मे दक्षता प्राप्त करते और उद्योग की अपनी खास शाखा के अर्थशास्त्र का अध्ययन करते। इससे उत्पादन प्रबध के काम मे मजदूरो की प्रत्यक्ष शिरकत जाहिर हुई। यह इस बात का सबूत था कि व्यक्तिगत तौर पर मजदूरो मे अपने देश की प्रतिष्ठा और भविष्य के प्रति जिम्मेदारी की भावना बढ रही है। उस समय की स्थिति का जीता-जागता चित्र निम्नलिखित आकडो से मिलता है युद्ध क पहले नवीकारको तथा आविष्कारको की सख्या ५,२६००० थी, १६५० म ५,५५,००० और उसके बाद के आठ वर्षो म ये आकडे तिगुना से अधिक बढकर १७,२५००० तक पहुच गये थे। प्रत्येक नवीकरण सबधी सुझाव का भौतिक प्रोत्साहन मिला। राज्य ने उद्यमो के प्रबधको के लिए अनिवार्य घोषित कर दिया कि इनमे स सबसे महत्वपूर्ण सुझावो का व नयी प्रविधि जारी करने की अपनी भावी योजनाओ मे शामिल करें।

१९५८ मे सोवियत सघ के उद्योग मे कोई २ करोड मजदूर और दफ्तरी कमचारी काम कर रहे थे, जबकि १९४० मे उनकी सख्या १ करोड १० लाख से कम थी। उनमे ४० प्रतिशत से अधिक लोगो ने १० साल से अधिक काम किया। इसका मतलब यह था कि देश के पास अत्यत योग्यताप्राप्त श्रम शक्ति थी। उसे अपने पेशे का बडा अनुभव प्राप्त था और वह प्रथम पचवर्षीय योजनाओ के उद्योगीकरण अभियान के वीरो, युद्ध के वर्षो तथा युद्धोत्तर बहाली के दिनो के अगुआ मजदूरो की श्रेष्ठ परम्पराओ की वारिस थी। सोवियत उद्योग द्वारा प्राप्त सफलताए मजदूर वग की परिपक्वता का सबसे पक्का सबूत थी। देश उचित ही अपनी उपलब्धियो पर गौरव कर सकता था।

१९५४ मे ससार के सवप्रथम परमाणु बिजलीघर ने मास्को के निकट ओब्निन्स्क मे बिजली का उत्पादन शुरू किया। चार साल बाद एक और परमाणु बिजलीघर की पहली मजिल के निर्माण का काम शुरू हुआ। यह बिजलीघर कही अधिक बडी क्षमतावाला था। कुछ ही दिन पहले ससार का प्रथम परमाणु चालित वफ तोडक जहाज "लेनिन" का जलावतरण हुआ था।

इस दौर की वैज्ञानिक और तक्नीकी प्रगति की सर्वोच्च उपलब्धि थी सोवियत धरती से ४ अक्तूबर, १९५७ को ससार मे प्रथम कृत्रिम उपग्रह का अतरिक्ष मे भेजा जाना। एक साल बाद तीसरा सोवियत कृत्रिम स्पुतनिक जिसका वजन १,३२७ किलोग्राम था और जो वास्तव म एक वज्ञानिक-अनुसधान प्रयोगशाला था, पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगा रहा था।

सोवियत आर्थिक विकास की द्रुत गति, जो तक्नीकी प्रगति की तेज रफ्तार, कृषि की सामूहिक फाम व्यवस्था के सुदढीकरण, परती जमीन के विकास और यह सबसे अहम बात है, जनगण के तेज रचनात्मक कायकलाप और गलतियो के उन्मूलन से जुडी हुई थी, की बदौलत सोवियत सघ की भौतिक तथा सास्कृतिक जीवन की परिस्थितियो के सभी पहलुओ मे जबदस्त परिवतनो का माग प्रशस्त हुआ।

विदेशी यात्री जो पाचवे दशक के अत और छठे दशक के प्रारम्भ म सोवियत सघ आये थे और फिर १९५८ मे लौटकर आये, वे अनक परिवतनो को देखकर आश्चयचकित रह गये

टू १०४ विमान की मास्को के पास व्नूकोवो हवाई अड्डे पर उतरते देखकर यात्री को छठे दशक के अत मे जो चीज अपनी ओर

आकर्षित करती थी वह थी इल १८, अन १० और तू ११४ विमानों की भरमार, अगरचे कुछ ही वर्ष पहले सोवियत संघ के पास एक भी जेट वायुयान नहीं था।

आगंतुक ज्यों-ज्यों राजधानी की ओर बढ़ते, उन्हें उस जगह चारों ओर बड़ी-बड़ी इमारतें, पार्क और सुंदर रिहाइशी मुहल्ले दिखाई देते जहां १९५० में वीरान मैदान और लकड़ी के छोटे घरों के सिवा और कुछ नहीं था, और जहां बस ट्रेड-यूनियनों की अखिल संघीय केंद्रीय परिषद की पांच मंजिला इमारत अकेली खड़ी दिखाई देती थी। अब वह कई मंजिला इमारतों के झुंड में नज़रों से ओझल हो गई थी और शहर की सीमा कई किलोमीटर आगे बढ़ गई थी।

१९५८ में यात्रियों ने मास्को की प्रथम गगनचुम्बी इमारतें देखी जिनकी नींवें १९४९ में डाली जा रही थीं, उन्होंने लुज्निकी स्टेडियम देखा जहां १ लाख से अधिक आदमी बैठ सकते हैं। बड़ी संख्या में नयी इमारतें और राजधानी के निवासियों की लिबास-पोशाक देखकर यात्रियों को काफी आश्चर्य हुआ होगा जब उन्होंने १९५८ की हालत की तुलना पांचवें दशक के अंत की हालत से की होगी। छठे दशक के अंत में मास्को की सड़कें ऐसे लोगों से भरी हुई थीं जो रंग बिरंगे, अच्छे किस्म के कपड़े, फैशनेबुल सूट और कृत्रिम रेशे की बनी चीज़ें पहने होते थे। युद्धपूर्व के फैशन के कपड़ों, फौजी कोटों, ऊंचे बूटों और रूईदार जैकेटों का अब कोई सवाल नहीं था।

१९५८ में मास्को के यात्री जो १० वर्ष पहले शहर को देख चुके थे, शहर के बहुतेरे भागों को इतना बदला हुआ पाते थे कि उन्हें पहचानना मुश्किल होता था, और यही हाल कीयेव और मीन्स्क, वोल्गोग्राद और नोवोसिबीर्स्क, ताशकंद और अश्खाबाद का था। जहां कहीं वे जाते, उन्हें नये रिहायशी मुहल्ले, अस्पताल, थियेटर, स्कूल और क्लब दिखायी देते। अंगार्स्क, ब्रात्स्क, वोलज्स्की, दुब्ना और जिगुल्योव्स्क जैसे शहरों में जिनका अभी जन्म ही हुआ सैकड़ों निर्माण क्रेन हवा में सर उठाये दिखाई देते थे।

लेनिनग्राद भूमिगत रेलवे जो देश में दूसरी थी, १९५८ तक चालू हो चुकी थी और कीयेव में निर्माणाधीन थी। १९५८ तक टेलीविज़न के एरियल चारों ओर दिखाई देने लगे थे (उस समय तक देश में ७० से
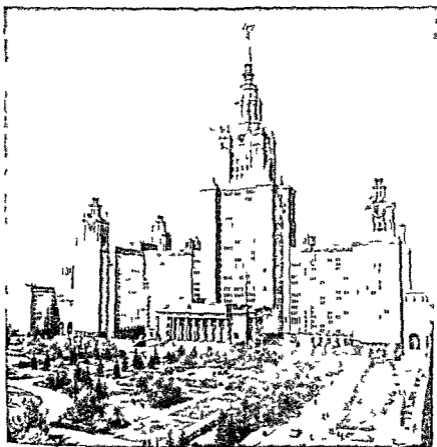
मास्को विश्वविद्यालय

अधिक टेलीविजन केंद्र हो गये थे, जबकि १९५० म केवल २ थे, और कायक्रम सप्ताह मे केवल दो बार प्रसारित हुआ करते थे)। सडका पर रगीन पोस्टरो की चमक दमक थी जो थियेटरा और स्टेडियमा म लोगा को आमत्रित करते थे। विदेशी कलाकारो और खिलाडिया का नियमित रूप से आगमन होने लगा था। पत्र-पत्रिकाओ तथा असख्य क्लबा मे आधुनिक साहित्य, भावी मानव, साइबरनेटिकी तथा अथशास्त्र मे गणितीय पद्धतिया को लागू करन पर गर्मागम बहस-मुबाहिसे चल रहे थे।

विदेशी यात्री जब पूछते कि क्रेमलिन को देखने का क्या उपाय हो सकता है ता उह बताया जाता कि वहा जाने की कोई मनाही नही है,

और जब वे कहते कि वे लडको या लडकियो का कोई माध्यमिक स्कूल देखना चाहते हैं तो उनसे कहा जाता कि १९५४ से सारे स्कूलो में सहशिक्षा है।

स्पुतनिक उस दौर का प्रतीक था। उस स्मरणीय दिन से जब उनमे से पहला अक्तूबर क्राति की चालीसवी जयती के अवसर पर छोडा गया था, ससार के सभी जनगण ने इस शब्द को अपना लिया था, और सोवियत सघ को आनेवाले यात्री चाहे किसी भी देश के हो, चाहे उनकी व्यक्तिगत दिलचस्पिया कुछ ही क्यो न रही हो, वे सब प्रथम सोवियत स्पुतनिक का माडेल देखने जरूर जाते। आर्थिक उपलब्धियो की प्रदर्शनी देखनेवालो की सख्या बहुत बढ गई। इसमे कोई सन्देह नही रह गया था कि अतरिक्ष यात्रा की दिशा मे पहला कदम धरती के वासियो ने उठा लिया था। प्रथम स्पुतनिक का अतरिक्ष मे भेजा जाना समाजवाद की औद्योगिक शक्ति का प्रतीक था।

सयुक्त राज्य अमरीका के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चेस्टर बाउल्स का भी कहना पडा कि "प्रथम सोवियत स्पुतनिक के पहले प्राय किसी को अमरीका की औद्योगिक, सामरिक और वैज्ञानिक श्रेष्ठता पर सन्देह नही हुआ था। तब एकाएक स्पुतनिक आ गया जिसने ससार मे धूम मचा दी और करोडो आदमी पूछने लगे कि क्या आखिर कम्युनिज्म की जीत तो नही होकर रहेगी ?'

लेकिन क्या वास्तव मे प्रथम स्पुतनिक की उत्पत्ति कोई आकस्मिक बात थी ?

सोवियत इतिहास के प्रारम्भ मे लेनिन ने नेक्रासोव की पक्तियो की याद दिलाई थी जिनमे कवि ने देश की दुर्दशा से दुखित होकर अपने मन की पीडा को व्यक्त किया था और साथ ही मातृभूमि की अतर्निहित शक्ति मे अपना प्रबल विश्वास प्रकट किया था। उन्नीसवी शती मे उस कवि ने लिखा था

> ओ दरिद्रिणी,
> रत्न गर्भिणी
> शक्ति-युता तू,
> सत्व हृता तू
> जननि रूस हे!

लेनिन का कहना था कि यह काम बोल्शेविकों का है कि रूस "दरिद्रिणी और सत्व-हृता न रह जाये बल्कि सदा के लिए रत्न गर्भिणी और शक्ति-युता बन जाये।"*

सोवियत जनगण के जबदस्त सृजनात्मक प्रयत्नों तथा उनके द्वारा समाजवादी निर्माण की बदौलत दरिद्रता, पिछड़ापन और निबलता शीघ्र ही अतीत की बात बन गई। इसकी अभिव्यक्ति खासकर छठे दशक के अत म महान अक्तूबर क्राति की चालीसवी जयती के अवसर पर हुई।

१९५८ मे इस्पात का उत्पादन ५ करोड ५० लाख टन, तेल का उत्पादन ११ करोड ३० लाख टन तक पहुच गया था और २,३३ अरब किलोवाट घटे बिजली पैदा होने लगी दूसर शब्दा मे उस वष के एक ही महीने इस्पात और तेल का इतना उत्पादन हुआ जितना १९१३ के पूरे साल म नही हुआ था। १९५८ मे तीन दिनो में इतनी बिजली पैदा हुई जो साम्राज्य के दिनो मे साल भर की कुल पैदावार के बराबर थी।

ससार के किसी भी देश का विकास इतनी तेजी से नही हुआ था। लेनिन न यह बता दिया था कि क्राति का हर महीना, साधारण "शातिकालीन" (यानी गैर-क्रातिकारी) विकास के बरसो के बराबर होता ह। सोवियत सघ ने जो रास्ता अपनाया, उससे इस विचार का औचित्य केवल बुनियादी सामाजिक परिवतनो के सबध मे नही, बल्कि आर्थिक परिवतनो के सबध मे भी सावित हो गया। १९१७ मे जो क्रातिकारी विकास शुरू हुआ, वह जारी था।

सोवियत जनगण ने समाजवादी निर्माण के प्रथम चालीस वर्षों म आगे की ओर जो जबदस्त छलाग लगाई थी, उसे पूजीवादी अखबारो को भी मानना ही पड़ा। अक्तूबर, १९५७ मे "टाइम्स" ने लिखा "जब शिशिर प्रासाद पर धावा बोला जा रहा था और सोवियतो की अखिल रूसी काग्रेस के अधिवेशन ने विजय घोषणा की तो रूसी कैलेडर पर तिथि २५ अक्तूबर थी। रूस—तब पश्चिमी कैलेडर से १३ दिन पीछे—पश्चिमी उद्योग से एक सौ साल पीछे और उसके राजनीतिक और सामाजिक ढाचे से कम से कम डेढ सौ साल पीछे था। अब सोवियत सघ और उसके मित्र राष्ट्र ७ नवम्बर को महान अक्तूबर क्राति की चालीसवी जयती की तयारी करते

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २७, पृष्ठ १३४

हुए अपनी महान उपलब्धियो का लेखा जोखा ले रहे है। उनके पास जो कुछ है, उसपर उन्हे गर्व होना यकीनन उचित है।"

"टाइम्स" को यह स्वर उस समय अपनाना पडा जब सोवियत सघ ने ससार मे पृथ्वी का प्रथम कृत्रिम उपग्रह छोडा था, हालाकि विगत वर्षो मे असख्य अवसरो पर पूजीवादी समाचारपत्रो ने भविष्यवाणी की थी कि बोल्शेविको का विनाश अवश्यम्भावी है

सोवियत विकास के प्रथम चालीस वर्ष इतिहास मे शिशिर प्रासाद पर धावे से लेकर अतरिक्ष पर धावे तक के दिन वीरता का परिचय देनेवाली प्रगति के दिन माने जायेगे। जब देश ने छठे दशक मे प्रवेश किया तो सोवियत विकास के एक नये युग का श्रीगणेश हुआ।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के जयती अधिवेशन के अवसर पर सभी समाजवादी देशो से पार्टी तथा सरकारी प्रतिनिधिमडल, ६४ बिरादराना कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधि और ट्रेड-यूनियनो, नवयुवको तथा महिलाओ के अतर्राष्ट्रीय सगठनो के प्रमुख व्यक्ति मास्को मे एकत्रित हुए। इस अधिवेशन मे गत चालीस वर्षो के सामाजिक आर्थिक तथा सास्कृतिक परिवर्तनो का खुलासा पेश किया गया। ऐतिहासिक दृष्टि से चालीस साल की अवधि भले ही अत्यल्प प्रतीत हो, यह बात अवश्य ध्यान मे रखनी चाहिए कि उन चालीस वर्षो मे से अठारह वर्ष युद्ध और युद्धोत्तर आर्थिक बहाली के वर्ष थे। इससे सोवियत जनगण की उपलब्धियो की महत्ता और भी उभर कर सामने आती है। इस अत्यत छोटी अवधि मे सोवियत सघ के लोगो ने अपने देश का रूप इतना बदल दिया था कि उसे अब पहचानना असम्भव था। उन्होने उसे औद्योगिक और सामूहिक कृषि शक्तिवाला एक प्रमुख देश बना दिया था।

ग्यारहवा अध्याय

सोवियत सघ में कम्युनिज्म का व्यापक निर्माण १९५९-१९७०

दुनिया मे प्रगति और समाजवाद की शक्तियो का और अधिक सुदृढीकरण

सोवियत सघ ने कम्युनिज्म का व्यापक निर्माण ऐसे समय शुरू किया जब विश्व समाजवादी व्यवस्था को दुनिया मे एक बडी शक्ति के रूप मे माना जाने लगा था। १९५९ की एक अत्यत महत्वपूण घटना क्यूबा मे जनता की साम्राज्यवाद विरोधी क्राति की विजय थी। पश्चिमी गोलाध म यह पहला राज्य था जिसन समाजवादी विकास का रास्ता अपनाया था।

विश्व समाजवादी व्यवस्था का आर्थिक और राजनीतिक विकास दिनादिन जारी था। समाजवादी देशा के अनुभव म यह प्रत्यक्ष हो गया था कि समाजवादी व्यवस्था का विकास निम्नलिखित बुनियादी नियमा के अनुसार हाता है सानुपातिक आर्थिक विकास, जनता मे सजनात्मक पहलकदमी का प्रबल होना, अतराष्ट्रीय समाजवादी श्रम विभाजन को बराबर दोपरहित और उन्नत करते रहना, समाजवादी समुदाय के तमाम देशा के सामूहिक अनुभव का अध्ययन, हर देश की विशेष स्थितिया और राष्ट्रीय विशेषताओ पर ध्यानपूवक विचार, सहयाग तथा भ्रातत्वपूण पारस्परिक महायता का सुदढीकरण।

समाजवादी देशा के बीच आर्थिक सबधा मे सबसे महत्वपूण तत्व इस समय तक यह था कि हर देश के हिता का ध्यान रखत हुए उत्पादन मे सहयाग, आर्थिक योजनाओ मे सामजस्य, उत्पादन का विशिष्टीकरण और तालमेल स्थापित किया जाये। १९६७ के लिए सयुक्त राष्ट्र सघ के आकडा क अनुसार पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के दशा न आपसी महयाग मे स्वय अपन उत्पादन और परस्पर विनिमय पर निभर करत हुए मशीना

और उपारणा की अपनी ६८ प्रतिशत जरूरत पूरी कर ली। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशों ने अभी ही यह तय कर लिया था कि इंजीनियरिंग उद्योग की २००० से अधिक वस्तुओं और रसायन उद्योग की २,००० से अधिक पदार्थों का उत्पादन विशेष देशों के दायरे में रहेगा। अन्य क्षेत्रों में भी विशिष्टीकरण को सफलतापूर्वक लागू किया जा रहा है। इन सबसे समाजवादी देशों के आर्थिक विकास की रफ्तार तेज होती है। संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया है कि सोवियत संघ में तथा यूरोप के अन्य समाजवादी देशों में १६५६ और १६६६ के बीच राष्ट्रीय आयों में वृद्धि की सालाना दर विकसित पूंजीवादी देशों के सर्वाधिक आंकड़ों से कोई ८० प्रतिशत ज्यादा थी, कि उनमें औद्योगिक और कृषि उत्पादन में वृद्धि की दर क्रमशः ८० प्रतिशत और १३० प्रतिशत अधिक थी, और दोनों देश समूहों में निर्माण कार्य में वृद्धि की दर में सोवियत संघ का पलड़ा ११० प्रतिशत भारी था।

समाजवादी देशों की आर्थिक क्षमता में वृद्धि से यूरोप में तथा संसार भर में शांति को सुदृढ़ करने के लिए एक विश्वसनीय जमानत हो गई। यह बात खासकर इसलिए महत्वपूर्ण थी कि सातवें दशक के प्रारम्भ में अंतर्राष्ट्रीय स्थिति बहुत तनावपूर्ण हो गई थी। संयुक्त राज्य अमरीका ने, जो ऐसे घिनौने तरीके अपनाने पर उतारू था जो अंतर्राष्ट्रीय कानून के बिल्कुल विपरीत थे, मई, १६६० में एक गुप्तचर विमान सोवियत संघ के इलाके में भेजा। अप्रैल, १६६१ में संयुक्त राज्य अमरीका ने क्यूबा पर सैनिक आक्रमण संगठित कराया। इसमें उसे मुंह की खानी पड़ी। १६६२ के वसंत में संयुक्त राज्य अमरीका ने पुनः पृथ्वी के वायुमंडल में परमाणु बमों का परीक्षण शुरू किया और उस वर्ष के पतझड़ में उस देश के प्रतिक्रियावादी क्षेत्र क्यूबा पर दोबारा आक्रमण की योजना बनाने लगे और अमरीकी युद्धपोतों ने उसकी नाकाबंदी कर दी। सोवियत संघ की सुदृढ़ मगर लचकदार नीति की बदौलत ही इस झगड़े का निपटारा शांतिपूर्ण ढंग से किया जा सका।

इस दौर में सोवियत संघ ने अंतर्राष्ट्रीय तनाव में कमी करने के उद्देश्य से व्यावहारिक कार्रवाइयां शुरू करने के लिए अपनी कोशिशें एक दिन के लिए बंद नहीं की और जनवरी १६६० में उसने अपनी सैन्य शक्तियों में एकपक्षीय कटौती करने का फैसला किया और पश्चिमी देशों

सोवियत सघ ने वियतनाम मे अमरीकी आक्रमण का बन्द करने के लिए जो प्रयत्न किये उनका स्थान सातवे दशक मे इसकी वैदेशिक नीति मे बडा है। १९६४ की गर्मियो मे सयुक्त राज्य अमरीका ने वियतनाम मे बडी सेनाए भेजकर और वियतनाम के जनवादी जनतत्र के शहरो और गावो की बमबारी शुरू करके अपने हस्तक्षेप का बहुत बढा दिया। परतु अमरीकी साम्राज्यवाद की ये बर्बरतापूर्ण हरकत वियतनामी जनता की दृढ प्रतिज्ञा को कमजोर नही कर सकी। वियतनाम मे अमरीकी आक्रमण की निन्दा ससार के सभी प्रगतिशील लोगो ने की। इस "गन्दे युद्ध" के खिलाफ प्रतिरोध की लहर स्वय सयुक्त राज्य अमरीका मे फैल गई। सोवियत सघ ने विदेशी आक्रमणकारियो के विरुद्ध बिरादराना वियतनामी लोगो का सर्वांगीण सहायता करना हमेशा अपना दायित्व समझा और उनकी सहायता की।

वियतनाम की वीर जनता ने अपनी आम वीरता की बदौलत तथा सोवियत सघ, अन्य समाजवादी देशो और दुनिया के सभी ईमानदार लोगो की सहायता प्राप्त करके एक बडी विजय हासिल की। जनवरी, १९७३ मे युद्ध को बद कर देने की सधि पर हस्ताक्षर किये गये। वियतनाम की धरती पर पुन शाति स्थापित की गई।

जटिल अतर्राष्ट्रीय समस्याओ के समाधान के प्रति वस्तुवादी दृष्टिकोण सोवियत सरकार की विदेश नीति की हमेशा विशेषता रहा है। इसका एक ज्वलत उदाहरण था पृथ्वी के वायुमडल मे अतरिक्ष मे तथा समुद्र के भीतर न्यूक्लियर शस्त्रो के परीक्षण पर प्रतिबध लगानेवाली मास्को सधि। प्रारम्भ मे इस सधि पर सोवियत सघ, सयुक्त राज्य अमरीका और ब्रिटन के हस्ताक्षर थे मगर शीघ्र ही एक सौ से अधिक राज्यो ने इसपर हस्ताक्षर कर दिये। न्यूक्लियर शस्त्रास्त्र के भूमिगत परीक्षणो पर भी प्रतिबध लगाने के लिए सोवियत राजनीतिज्ञो का प्रयत्न जारी है।

सातवे दशक के उत्तरार्द्ध मे सोवियत सरकार ने अपनी विदेश नीति पर अमल ऐसे समय किया जब सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी क्षेत्र इतिहास की घडी की सूई को एक बार फिर पीछे ले जाने का प्रयास कर रहे थे। उस दशक मे सयुक्त राज्य अमरीका वियतनाम मे युद्ध की आग भडकाता रहा जिसके शोले समूचे हिन्दचीन मे फैल गये। सरकारो मे प्रतिक्रियावादी उलटफेर घाना (१९६६) मे और यूनान मे (१९६७ मे) हुए। १९६७

की गर्मी मे इजराइल ने अरब जातियो के विरुद्ध आक्रमणकारी युद्ध छेड दिया जिसपर सोवियत सघ ने तुरत सयुक्त राष्ट्र सघ की जनरल असेम्बली का असाधारण अधिवेशन बुलाने की माग की। परन्तु सयुक्त राज्य अमरीका और उसके सामरिक मित्रा के बाधा डालने के कारण असेम्बली ने सोवियत सुझाव को स्वीकार नही किया जिसमे अधिकृत इलाका स इजराइली सेना की बिना शत वापसी और क्षतिपूर्ति के लिए हरजाना देने की माग की गई थी। सोवियत सरकार तथा ससार भर की सभी प्रगतिशील शक्तिया की कोशिशा से नवम्बर, १९६७ मे सुरक्षा परिषद ने समस्त अधिकृत अरब इलाका से इजराइली सेना की वापसी की माग करते हुए एक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। परतु इजराइल ने सयुक्त राज्य अमरीका के समथन से विश्व के जनगण के विशाल बहुमत की इच्छा का पालन नही किया।

१९६८ की गमिया मे चेकोस्लोवाकिया की समाजवाद विरोधी शक्तियो ने अपनी कारवाई तेज कर दी और प्रतिक्रियावादी साम्राज्यवादी शक्तिया ने खुल्लम-खुल्ला उनका समथन किया। यह समाजवाद के हित के लिए भयकर खतरा था। इस समय से बहुत पहले यूरोपीय समाजवादी देशा ने जो वारसा सधि के सदस्य थे, प्रत्येक सदस्य देश मे समाजवाद की सयुक्त रक्षा के लिए एक प्रस्ताव स्वीकार किया था। और अब निर्णायक कदम उठाने का समय आ गया था। अगस्त, १९६८ मे बल्गारिया, हगरी जमन जनवादी जनतन्त्र, पोलैंड और सोवियत सघ की सेनाओ न चेकोस्लोवाकिया मे प्रवेश किया और इससे अदरूनी प्रतिक्राति तथा अतर्राष्ट्रीय साम्राज्यवाद की शक्तिया द्वारा चेकोस्लोवाकिया मे समाजवादी व्यवस्था का तख्ता उलटने तथा समाजवादी समुदाय की शक्ति को खोखला करने की चेष्टाओ का नाकाम कर दिया गया।

जून, १९६९ मे मास्को म कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टिया का अतर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन म ७५ कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टिया के प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सम्मेलन मे विचार विमश का मुख्य विषय वतमान युग की मूल समस्या – साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघप था। इस सम्मेलन म विचारा के आदान प्रदान से माक्सवादी-लेनिनवादी सिद्धात समृद्ध हुआ, और मजदूर वग की अपनी मुक्ति के लिए तथा सवहारा अतर्राष्ट्रीयतावाद के उसूला के आधार पर अतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आदोलन

की एकजुटता के लिए मजदूर वर्ग के संघर्ष की वर्तमान अवस्था की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं के स्पष्टीकरण में सुविधा हुई। सम्मेलन ने साम्राज्यवाद के विरुद्ध समस्त क्रांतिकारी शक्तियों के संयुक्त संघर्ष में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत संघ की नेतृत्वकारी भूमिका की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उसने अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन के भीतर दिखाई देनेवाली समस्त अवसरवादी और राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों पर निर्णायक चोट की। चीनी नेताओं की गुटबंदी की कार्रवाइयों के हानिकारक प्रभाव पर विशेषकर जोर दिया गया। सम्मेलन ने यह स्पष्ट कर दिया कि कम्युनिस्ट आंदोलन विभिन्न कठिनाइयों के बावजूद आधुनिक जगत की सबसे प्रबल राजनीतिक शक्ति, समस्त साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों का अगुआ दस्ता है।

सोवियत कम्युनिस्टों ने सम्मेलन के नतीजों को सर्वसम्मति से स्वीकार किया। सभी सोवियत जनगण स्वयं यह देख सकते थे कि विश्व समाजवादी व्यवस्था, अंतर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग तथा समस्त क्रांतिकारी शक्तियां मानवजाति की प्रगति के मुख्य रास्ते को निर्धारित कर रही थीं।

सातवर्षीय योजना का प्रारंभ

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २१वीं कांग्रेस मास्को में जनवरी, १९५९ में हुई। कांग्रेस इस नतीजे पर पहुंची कि सोवियत संघ में समाजवाद की संपूर्ण और अंतिम विजय हो चुकी है। विगत चार दशकों के दौरान सोवियत जनगण ने पूंजीवादी संबंधों का अंत करने के बाद सामाजिक उत्पादन की समस्त व्यवस्था को बदल दिया और समाजवाद में संक्रमण की दिशा में कदम उठाये। छठे दशक के अंत तक समाजवादी निर्माण पूरा हो चुका था और एक उन्नत समाजवादी समाज की उत्पत्ति हो चुकी थी। अन्य समाजवादी देशों की उत्पत्ति से शत्रुतापूर्ण पूंजीवादी घेरा टूट गया। उस समय तक सोवियत संघ का जीवन एक ऐसी मंजिल पर पहुंच चुका था जब देश के भीतर या बाहर ऐसी कोई शक्ति नहीं रह गई थी जिसमें सोवियत संघ को वापस पूंजीवाद के रास्ते पर ले जाने की क्षमता हो। यह सही है कि साम्राज्यवाद का शिविर अभी कायम है और इसकी कोई शत प्रतिशत जमानत नहीं है कि पूंजीवादी जगत के नेता किसी अत्यंत

खतरनाक मुहिम का जोखिम नहीं उठायेंगे, लेकिन इस समय तक कोई चीज़ सोवियत संघ में पूंजी और निजी स्वामित्व के राज को पुनः स्थापित नहीं कर सकती। सोवियत संघ में समाजवाद हमेशा हमेशा के लिए स्थापित हो चुका है।

२१वीं कांग्रेस के आयोजन से कुछ ही पहले सोवियत संघ में २० वर्ष के बाद राष्ट्रीय जनगणना हुई। विगत जनगणना १६३६ में हुई थी। इस जनगणना के दौरान जो सामग्री जमा की गई उससे यह सम्भव हो गया कि आबादी की बनावट में हुए परिवर्तनों के स्वरूप का निश्चित किया जाय तथा देश के श्रम साधन की स्थिति का विश्लेषण किया जाये। पिछली जनगणना के बाद के बीस वर्षों के दौरान जनसंख्या १७,०६,००,००० से बढ़कर २०,८८,००,००० हो गई थी। इस वृद्धि में आधे से कुछ अधिक लाटविया, लिथुआनिया, माल्दाविया, एस्तोनिया तथा बेलोरूस और उक्रइना के पश्चिमी भागों के लोग थे जो युद्ध से कुछ पूर्व सोवियत संघ में शामिल हो गये थे। मगर दूसरी ओर अगर युद्ध के दौरान इतनी भयंकर क्षति नहीं उठानी पड़ती तो आबादी में स्वाभाविक वृद्धि कहीं अधिक होती।

१६५६ में ४८ प्रतिशत लोग शहरों में रहते थे। देश के पूर्वी भागों में जनसंख्या में विशेषकर अधिक वृद्धि हुई। जनसंख्या में कुल वृद्धि ६.५ प्रतिशत हुई मगर उराल में ३२ प्रतिशत, पश्चिमी साइबेरिया में २४ प्रतिशत, पूर्वी साइबेरिया में ३४ प्रतिशत, सोवियत सुदूर पूर्व में ७० प्रतिशत और मध्य एशिया और कज़ाखस्तान में ३८ प्रतिशत वृद्धि हुई।

जैसा कि पिछली जनगणना के समय प्रतीत हुआ था, उसी तरह १६५६ में भी सोवियत संघ में कोई आदमी बेरोजगार नहीं था। प्रत्येक व्यक्ति के लिए व्यावहारिक रूप से यह सम्भव था कि काम करने के अपने अधिकार का उपयोग करे और जनगणना से यही साबित हुआ कि आबादी की श्रम सरगर्मी का स्तर बहुत ऊंचा है। औसतन काम करने योग्य प्रत्येक १०० नागरिकों में ८३ भौतिक तथा बौद्धिक मूल्यों के सृजन में हाथ बटा रहे थे।

इस जनगणना की एक और मुख्य विशेषता यह थी कि इससे जनगण का उच्च शैक्षणिक स्तर जाहिर हुआ। लगभग ५ करोड़ ६० लाख लोग उच्च, माध्यमिक या अपूर्ण माध्यमिक (सात साल से कम नहीं) शिक्षा पूरी कर चुके थे, और मजदूर वर्ग में ३२ प्रतिशत लोग इसी श्रेणी में आते थे।

१६५६ तक आबादी मे तीन चौथाई लोग ऐसे थे जिनका जन्म क्रांति के बाद हुआ था जिसका मतलब यह था कि अधिकाश श्रमजीवी जनता के शिक्षा-दीक्षा के वर्ष और सारा बालिग जीवन समाजवाद के अतर्गत बीता था। उस समय तक सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य सख्या ६० लाख तक, काम्सोमोल के सदस्यो की सख्या कोई दो करोड और ट्रेड-यूनियन की सदस्य सख्या छ करोड तक पहुच गई थी।

लेनिन ने अपने जमाने मे सकेत किया था कि सोवियत सघ के पास पर्याप्त मात्रा मे प्राकृतिक साधन और श्रम भडार मौजूद है और जनगण के पास काफी सृजनात्मक क्षमता है जिससे देश के समाजवादी विकास के अनन्त समृद्धशाली भविष्य को सुनिश्चित किया जा सके। क्राति के बाद के प्रथम चालीस वर्षों के दौरान समाजवादी निर्माण की सफल प्रगति से सोवियत जनगण की भौतिक समृद्धि तथा मनोबल को जबदस्त बढावा मिला और भविष्य मे और भी शानदार प्रगति का माग प्रशस्त हुआ। १६५६ मे ही सोवियत सघ मे विश्व औद्योगिक उत्पादन का पाचवा भाग पैदा होने लगा था जब कि १६१३ और १६३७ मे क्रमश केवल ३ प्रतिशत से कुछ अधिक और लगभग १० प्रतिशत हुआ करता था।

पार्टी की २१वी काग्रेस ने देश की अदरूनी स्थिति और अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे उसकी अवस्था का विश्लेषण करने के बाद घोषणा की कि सोवियत सघ विकास की एक नयी मजिल मे दाखिल हो चुका है और वह व्यापक कम्युनिस्ट निर्माण की मजिल है। बताया गया कि देश का मुख्य कायभार कम्युनिज्म की भौतिक और तकनीकी बुनियाद के निर्माण तथा सोवियत जीवन के सभी क्षेत्रो म कम्युनिस्ट सिद्धातो के सुदढीकरण का अभियान है।

विकास की इस नयी ऐतिहासिक मजिल म प्रवश करनवाले जनगण के सामने विशाल रचनात्मक कायभार था। इसको पूरा करन के लिए जरूरत थी एक दीघकालीन योजना तयार करन की जिसम कम्युनिज्म के व्यापक निर्माण क सन्दभ म देश क आर्थिक विकास की मुख्य प्रवत्तिया और ध्येयो की व्याख्या की जाय। इस दिशा म पहला कदम १६५६–१६६५ की सातवर्षीय योजना थी जिसकी तैयारी १६५७ म ही शुरू कर दी गयी थी। आर्थिक प्रबध के ढाच की नय [illegible] का जा उस समय जारी कर दी ग [illegible] मतलब [illegible] सघीय

ानता तथा आर्थिक प्रशासकीय क्षेत्रा मे योजना तैयार करने का काम
ात महत्वपूण हा गया ह। पहले की योजना ने पूव म अनेक महत्वपूण
निज पदार्थों की खोज को ध्यान मे नही लिया था जिसका पता योजना
ार हान के बाद लगा था और न उसमे १६५७ और १६५८ के फमला
पूरा करने का प्रवध किया गया था जिनका उद्देश्य रिहायशी घरो के
र्माण का विस्तार तथा रासायनिक और अय उद्योगा के विकास को तेज
ना था। इसकी वजह से यह फैसला किया गया कि छठी पचवर्षीय
जना के पूरा होने से पहले ही १६५६-१६६५ की योजना के लक्ष्याक
ार किये जाये (यानी छठी पचवर्षीय योजना की शेष अवधि तथा पूरी
ली पचवर्षीय योजना का तखमीना तैयार किया जाये)।

सावियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २१वी काग्रेस न याजना के
याको पर, जो अखवारा मे छप चुके थे, राष्ट्रव्यापी विचार विमश
दौरान प्राप्त नतीजा की समीक्षा की और सवसम्मति से नयी योजना
स्वीकार किया। नये आर्थिक कायक्रम के ध्येय सावियत सघ के लिए
असाधारण थे। अगले सात वर्षो के दौरान आर्थिक विकास के लिए
भग उतना ही धन लगाने का निश्चय किया गया जितना १६१७ के बाद
अवधि मे अब तक लगाया गया था। बिजलीघरा के निमाण, तल
र गस के उत्पादन, रासायनिक उद्याग के विकास और अथव्यवस्था
सभी शाखाग्रा के बिजलीकरण पर विशेष ज़ोर दिया गया था। योजना
कृपि उत्पादन म भी काफी वद्धि का प्रवध किया गया था। इसकी
स्था भी की गयी थी कि काय सप्ताह का कम किया जाये, एक विशाल
ायशी गह निर्माण कायक्रम शुरू किया जाये तथा सावियत नागरिका की
तक तथा सास्कृतिक आवश्यकताओ को यथासम्भव पूरा करन के उद्देश्य
और अनेक उद्यमा का निर्माण किया जाये।

सातवर्षीय योजना के उदात्त ध्येया तथा पार्टी द्वारा निर्धारित नये
ा को जीतने के लक्ष्य ने सावियत जनगण का मन उत्साह से भर दिया।
स का अधिवेशन अभी शुरू भी नही हुआ था कि हजारा मेहनतकश
हा न अपनी श्रम कारगुजारी मे और अधिक वद्धि करन का
ा उठाया।

काग्रेस का उदघाटन जिस जनोत्साह के माहौल मे हुआ वह पहल
समान परिस्थितिया से बिल्कुल भिन्न था यह ताज़ातरीन समाजवादी

प्रतियोगिता उस समय शुरू की जा रही थी जब देश आर्थिक विकास में बहुत ऊंचे स्तर पर पहुंच गया था। जब १९३५ में स्तखानोवी आन्दोलन की शुरुआत हुई तो इसके प्रवर्तक को १०२ टन कोयला काटने में छः घंटे लगे थे जो उन दिनों के लिए आश्चर्यचकित कर देनेवाला रिकार्ड था। बीस साल बाद एक "दोनबास २" कोयला काट मशीन की मदद से उतना कोयला एक घंटे से भी कम समय में काटा जा सकता था।

१९३५ में रेलवे इंजन चालक क्रिवानोस अपनी मालगाड़ी को ३२ से ३४ किलोमीटर तक प्रति घंटे की रफ्तार से न जाने में सफल हुआ था जबकि आम तौर से स्वीकृत रफ्तार २४ किलोमीटर प्रति घंटा थी। इस प्रकार उसने एक रिकार्ड कायम किया था। इस बीच १९५९ तक सोवियत मालगाड़ियों के चलने की औसत रफ्तार ४० किलोमीटर प्रति घंटा हो गई थी।

१९३५ में समाचारपत्र "प्राव्दा वोस्तोका" ने दोनों हाथों से रूई चुनने के एक प्रगतिशील तरीके के बारे में एक लेख प्रकाशित किया। चौथाई शती बाद तुरसुनाई आखुनोवा, उज्बेकिस्तान की रूई फसल चुननेवाली मशीन चलानेवाली प्रथम महिला ने लिखा "आज हम भी दोनों हाथों से एकसाथ काम लेते हुए रूई की फसल चुनते हैं लेकिन हमारे हाथ एक आज्ञापालक मशीन को चलाते होते हैं। मिसाल के लिए एक मेरी ही मशीन औसत कायकौशल के सौ रूई चुननेवालों का काम करती है।'

यह उस असाधारण प्रगति की चन्द मिसालें हैं जो अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओं में उस समय तक हासिल हो चुकी थी। चौथे दशक के रिकार्ड १९५९ तक साधारण हो चुके थे, पीछे छूट चुके थे। तबदीली केवल मशीनों में नहीं हुई थी। सातवर्षीय योजना के समय तक जनता का शिक्षा स्तर बिल्कुल बदल चुका था। चौथे दशक के प्रमुख श्रम वीरों को अधिकांशतः केवल प्राथमिक शिक्षा मिली थी यानी उन्होंने केवल चार वर्ष स्कूल में पढ़ा था। छठे दशक के अंत में समाजवादी प्रतियोगिता अभियान में भाग लेनेवाले प्रमुख मजदूर ऐसे नर नारियां थे जिन्होंने दसवर्षीय स्कूल की शिक्षा पूरी कर ली थी या स्कूल में सात साल पढ़ने के बाद किसी तकनीकी स्कूल में भी चार साल का पाठ्यक्रम पूरा किया था। १९३९ की जनगणना के अनुसार प्रत्येक हजार मजदूरों में औसतन ८२ कम से कम सातवर्षीय स्कूल पास थे, और जनवरी, १९५९ तक यह आंकड़ा ३८६

तक पहुच गया था और टनर, इजन ड्राइवर और मिलिग मशीन चालको क लिए ये आकडे क्रमश ६६७, ६०२ और ६८३ थे।

श्रमजीविया की शैक्षणिक और तक्नीकी याग्यता ही नही बहुत बढी थी वल्कि इस अवधि मे उनकी राजनीतिक चेतना, देश के औद्योगिक तथा सामाजिक जीवन मे सक्रिय भाग लेने की प्रेरणा वही ज्यादा प्रबल हो चुकी थी। उस समय के आम वातावरण से प्रभावित होकर मास्को सोर्तीरोवोच्नाया रेलवे स्टेशन के नौजवान मजदूरा ने सुझाव पेश किया कि समाजवादी प्रतियोगिता को अधिक व्यापक पैमाने पर सगठित करना चाहिए, लक्ष्याको की अधिपूति की परम्परागत जिम्मेदारी के साथ यह भी जिम्मेदारी होनी चाहिए कि नियमित पाठ्यक्रम शुरू किया जाय और निर्दोष जीवन बिताया जाये। उन्होने यह भी सुझाव दिया कि प्रमुख दस्ता का आपस म प्रतियोगिता करनी चाहिए और जो सफलतापूवक तीनो जिम्मदारिया पूरी करे उन्ह कम्युनिस्ट श्रम दल की उपाधि देनी चाहिए। अखवार "कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" ने नौजवान मजदूरा के सुझावा का समथन किया और पत्र पत्रिकाओ, रेडियो, और पार्टी, ट्रेड-यूनियन तथा कोम्सोमाल सगठना द्वारा चलाये गये सगठनात्मक कायकलाप सभी न नये समाजवादी प्रतियोगिता अभियान को शुरू करने मे अपनी अपनी भूमिका अदा की। हजारा दला, वकशापा, फैक्टरिया तथा निर्माण जत्था ने नौजवान रेलवे मजदूरा के पदचिह्नो पर चलते हुए नयी जिम्मेदारिया स्वाकार की। इस नये प्रतियोगिता अभियान ने अभूतपूव पैमाने पर योजनाओ की अधिपूति के उद्देश्य से श्रमजीवी जनता को नित्य नये प्रयत्न के लिए प्रेरित किया और बडी सख्या मे मजदूरा को प्रोत्साहित किया कि रात्रि पाठशालाओ मे नाम लिखायें, तकनीकी स्कूलो और इस्टीटयूटो मे बाहरी पाठयक्रम म शामिल हो और व्यावसायिक स्कूलो मे दाखला ले। अनक शहरा और गावा मे जन सास्कृतिक विश्वविद्यालयो की स्थापना हुई जिनमे महनतकश जनगण को वैज्ञानिक, तक्नीकी, साहित्यिक, कला सबधी आदि अनेक विषया पर नियमित रूप से भाषण सुनने का मौका मिला। हर जगह निवासिया की समितिया सगठित की गई जिनका काम मुहल्ला म वक्ष और पौधे लगाना, बच्चो के खेल के मैदान तैयार करना और यह देखना था कि सामाजिक व्यवस्था के नियमा का पालन किया जाये।

वीश्नी वोलोचोक से वाले तीना गागानोवा द्वारा पेश की गई एक स्कीम शीघ्र ही देश भर मे प्रसिद्ध हो गई। वह एक बुनकर थी और उन्हे सामाजिक जिम्मेदारी का बडा ख्याल था। उनका श्रम दल काम म सबसे आगे रहता था लेकिन उन्होने अपनी इच्छा से उस दल को छोडकर एक ऐसे दल के साथ काम करना शुरू किया जो पिछडा हुआ था। अपने नये सहयोगियो को अपने व्यापक अनुभव से अवगत करके गागानोवा न उन्हें उनकी मशीनो की बेहतर जानकारी करायी। और इसका नतीजा यह हुआ कि उनके सूती कारखाने मे वह श्रम दल सब पर बाजी ले गया। शुरू मे इस दल मे आने पर गागानोवा का वेतन कम हो गया था। मगर गागानोवा ने हिम्मत नही हारी। गागानोवा की निस्वार्थता से प्रेरित होकर देश के सभी भागो मे कितने ही लोगो ने उनका अनुसरण किया।

कम्युनिस्ट श्रम दल या कम्युनिस्ट ढग से श्रम करनेवाले मजदूर की उपाधि का योग्य साबित होना कोई आसान बात नही थी। यह उन्ही उद्यमो या अलग अलग मजदूरो को प्रदान की जाती थी जो सचमुच इसके योग्य होते थे। इस उपाधि के लिए प्रतियोगिता मे भाग लेनेवालो की सख्या शीघ्र ही सभी जनतत्रो मे बहुत बढ गई। १९६१ के अत तक इस प्रकार की समाजवादी प्रतियोगिता मे सोवियत सघ के शहरो और देहातो के १ करोड आदमी शामिल हो गये थे। उनके कडे परिश्रम की पैदावार ने सोवियत आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन नर-नारियो का काम और इनकी आकाक्षाए सोवियत समाज के विकास मे एक नयी मजिल की शुरूआत का सकेत कर रही थी।

जनता द्वारा प्राप्त अनुभव के सहारे और सामाजिक विकास के नियमो के विश्लेषण के आधार पर कम्युनिस्ट पार्टी ने फैसला किया कि कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण के लिए एक दीर्घकालीन योजना तैयार करना सम्भव और वास्तव म आवश्यक है। सोवियत जनगण जो उस समय निस्वार्थ कम्युनिस्ट निर्माण कार्य म लगे हुए थे, यह जानने का अधिकार रखते थे कि कितने समय म और किन उपायो से यह युग परिवर्तनकारी ध्येय प्राप्त होगा और उस मजिल तक पहुचने के रास्ते म किन मुख्य पूर्वदर्शित मार्गचिह्नो से गुजरना होगा। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नये तीसरे कार्यक्रम ने उस मजिल का रास्ता दिखाया।

देश भर म प्रत्येक स्तर पर राष्ट्रव्यापी विचार विमश के बाद सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेम ने १६६१ मे कायक्रम को स्वीकार कर लिया।

सोवियत सघ की
कम्युनिस्ट पार्टी का नया कायक्रम

कम्युनिस्ट पार्टी के तीसरे कायक्रम के महत्व को पूरी तरह समझने क लिए जरूरी है कि इससे पहले के दोना कायक्रमो का कुछ ब्यारा दिया जाये।

जुलाई–अगस्त, १६०३ मे रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी की दूसरी काग्रेस हुई थी और २६ पार्टी सगठना के ४३ प्रतिनिधिया ने रूस की मजदूर पार्टी क प्रथम कायक्रम के मसविदे पर विचार किया। उस कायक्रम म उस समय की पश्चिमी यूरोपीय सामाजिक जनवादी पार्टिया द्वारा तैयार की हुई उसी तरह की दस्तावेजो की कोई बात नही थी। वह एक अस्त्र था जिसे पहले पूजीवादी-जनवादी और फिर एक समाजवादी क्राति को विजयी बनाने के सघप म इस्तेमाल करना था और वह उस समय का एकमात्र कायक्रम था जिममे सवहारा अधिनायकत्व की धारणा निरूपित की गई थी। उस काग्रेस मे अवसरवादिया के विरुद्ध कडे सघप के दौरान "बोल्शेविक" शब्द का जन्म हुआ। इसके प्रारम्भिक मानी बहुत स्पष्ट थे। इसका प्रयोग उन लोगो के लिए किया गया था जो लेनिन का समथन करनेवाले बहुमत मे शामिल थे और जिन्होने लेनिन द्वारा प्रस्तुत कायक्रम के पक्ष मे वोट दिया था। वह शब्द, "सारी सत्ता सोवियतो को दो!" के नारे ही की तरह अभी बाकी दुनिया को नही मालूम था। उस समय किसी क सपने मे भी यह बात नही होगी कि रूस मे क्रातिकारी मार्क्सवादियो का वह छोटा सा दल शीघ्र ही एक विशाल सगठन का रूप धारण कर लेगा जिस करोडा जनसाधारण का नेतृत्व करके एक ऐसे क्रातिकारी भविष्य मे ले जाना है जो शेष मानवजाति के लिए ऐतिहासिक प्रगति का रास्ता रौशन करेगा।

माच, १६१६ मे रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की आठवी काग्रेस ने दूसरा कायक्रम स्वीकार किया क्योकि पहला कायक्रम पूरा हो चुका था। उस समय कम्युनिस्ट पार्टी सत्तारूढ हो चुकी थी, नये जनतत्र की

क्रातिकारी उपलब्धिया की रक्षा और समाजवादी निर्माण का कायभार पूरा करने मे जनगण का नेतत्व कर रही थी। उस काग्रेस म ४०३ प्रतिनिधियो ने भाग लिया जो ३,१३,००० कम्युनिस्टो का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वे नये कायक्रम पर विचार करने इक्ट्ठा हुए थे जिसमे पूजीवाद से समाजवाद मे सक्रमण के पूरे दौर के लिए पार्टी के कायभार व्यक्त किये गये थे। काग्रेस समाप्त होन पर प्रतिनिधि देश के विभिन भागो मे अपने घरो का लौटे जिसकी हालत उस समय एक ऐसे किले की थी जो दुश्मन के घेरे मे हो। नये कायक्रम पर अमल करने से पहले प्रतिक्रातिकारिया और वैदेशिक हस्तक्षेपकारियो से समाजवाद को बचाने के लिए अभी कितनी ही सगीन लडाइया लडनी थी।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस अक्तूबर, १९६१ म क्रेमलिन के काग्रेस प्रासाद मे हुई। इस बार ४,८१३ प्रतिनिधि लगभग १ करोड कम्युनिस्टो का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इस काग्रेस ने सोवियत सघ मे कम्युनिस्ट निर्माण का कायक्रम स्वीकार किया। इस कायक्रम का मसविदा काग्रेस से ढाई महीने पहले प्रकाशित कर दिया गया था ताकि पार्टी तथा सावजनिक सगठना के सभी स्तरा पर इसपर विचार विमश किया जा सके। पार्टी कायक्रम पर विचार करने के लिए विभिन बठका और सभाओ मे कोई ६० लाख आदमी शरीक हुए। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति और स्थानीय पार्टी सगठना के पास तीस हजार चिट्ठिया मे तरह-तरह के सुझाव भेजे गय।

इस कायक्रम की तैयारी वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सिद्धात और व्यवहार मे एक महत्वपूण योगदान थी। सबसे पहले कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एगेल्स ने कम्युनिस्ट समाज के सबसे बुनियादी पहलुओ और उसके विकास की दो मजिलो की व्याख्या की थी। आगे चलकर लेनिन ने एक मजिल से दूसरी मजिल म, समाजवाद से कम्युनिज्म म विकास के मौलिक नियमो का पता लगाया। 'पूजीवाद से गुजरकर मानवजाति सीधे केवल समाजवाद म जा सकती है, यानी उत्पादन साधनो पर सामाजिक स्वामित्व तथा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किये गये काम की मात्रा के अनुसार पैदावार के वितरण की अवस्था म। हमारी पार्टी इससे आगे देखती है समाजवाद अनिवायत विकसित होकर धीरे धीरे कम्युनिज्म का रूप लेगा जिसके

परचम पर लिखा होगा, 'हर एक से उसकी क्षमता के अनुमार और हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।'" *

लेनिन ने इस बात पर जोर दिया कि "कम्युनिज्म समाज का एक उच्चतर रूप है और उसका विकास तभी हो सकता है जब समाजवाद की पूरी तरह स्थापना हो चुकी हो।"** उन्होंने बताया " समाजवाद और कम्युनिज्म मे एकमात्र वैज्ञानिक अतर यह है कि पहला शब्द पूजीवाद की कोख से उत्पन्न होनेवाले नये समाज के लिए इस्तेमाल होता है, जबकि दूसरे का मतलब उससे अगली और उच्चतर मजिल है।"*** सोवियत सघ का अनुभव बतलाता है कि एक से दूसरे मे सक्रमण एक लगातार ऐतिहासिक प्रक्रिया है। महान अक्तूबर क्राति के बाद के प्रथम चार दशको म एक उन्नत समाजवादी समाज की उत्पत्ति हुई। उन वर्षो म सोवियत जनगण ने समाजवाद का निर्माण करते हुए भावी कम्युनिस्ट समाज के तत्वो की रचना भी की, और इस प्रकार कम्युनिज्म मे धीरे-धीरे सक्रमण का रास्ता साफ किया।

छठे दशक के अत और सातवे दशक के प्रारम्भ मे कम्युनिज्म का फौरी निर्माण ही सोवियत जनगण का मुख्य सजनात्मक काम बन गया।

सोवियत सघ की कम्यनिस्ट पार्टी के कायक्रम मे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की ठोस मजिले बतायी गई है और यह कि इस कायभार को किस प्रकार पूरा करना चाहिए। इस निर्माण के दौरान तीन परस्पर सबधित ऐतिहासिक कार्यों को पूरा करना है कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण करना है कम्युनिस्ट सामाजिक सबध विकसित करने है, लोगो की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा करनी है। सवप्रथम कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार तैयार करना जरूरी है जिससे सभी नागरिको के लिए भौतिक और सास्कृतिक धन की बहुतायत होगी। इस आधार को तैयार करने का मतलब है देश का सपूर्ण बिजलीकरण, और इस आधार पर देश के बिजलीकृत उद्योग और कृषि को, यानी अथव्यवस्था की सभी शाखाओ

---

*ब्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २४, पृष्ठ ६२

**वही, खड ३०, पृष्ठ २६०

***वही खड २६, पृष्ठ ३८७

क्रांतिकारी उपलब्धियों की रक्षा और समाजवादी निर्माण का कार्यभार पूरा करने मे जनगण का नेतृत्व कर रही थी। उस कांग्रेस म ४०३ प्रतिनिधियों ने भाग लिया जो ३,१३,००० कम्युनिस्टों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वे नये कार्यक्रम पर विचार करने इकट्ठा हुए थे जिसम पूंजीवाद से समाजवाद मे संक्रमण के पूरे दौर के लिए पार्टी के कार्यभार व्यक्त किये गये थे। कांग्रेस समाप्त होने पर प्रतिनिधि देश के विभिन्न भागों मे अपने घरों को लौटे जिसकी हालत उस समय एक ऐसे किले की थी जो दुश्मन के घेरे मे हो। नये कार्यक्रम पर अमल करने से पहले प्रतिक्रांतिकारियों और वैदेशिक हस्तक्षेपकारियों से समाजवाद को बचाने के लिए अभी कितनी ही संगीन लड़ाइयां लड़नी थी।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी कांग्रेस अक्तूबर १९६१ मे क्रेमलिन के कांग्रेस प्रासाद मे हुई। इस बार ४,८१३ प्रतिनिधि लगभग १ करोड़ कम्युनिस्टों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। इस कांग्रेस ने सोवियत संघ मे कम्युनिस्ट निर्माण का कार्यक्रम स्वीकार किया। इस कार्यक्रम का मसविदा कांग्रेस से ढाई महीने पहले प्रकाशित कर दिया गया था ताकि पार्टी तथा सार्वजनिक संगठनों के सभी स्तरों पर इसपर विचार विमर्श किया जा सके। पार्टी कार्यक्रम पर विचार करने के लिए विभिन्न बैठकों और सभाओं मे कोई ६० लाख आदमी शरीक हुए। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और स्थानीय पार्टी संगठनों के पास तीस हजार चिट्ठियों मे तरह-तरह के सुझाव भेजे गये।

इस कार्यक्रम की तैयारी वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सिद्धांत और व्यवहार मे एक महत्वपूर्ण योगदान थी। सबसे पहले कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने कम्युनिस्ट समाज के सबसे बुनियादी पहलुओं और उसके विकास की दो मंजिलों की व्याख्या की थी। आगे चलकर लेनिन ने एक मंजिल से दूसरी मंजिल मे, समाजवाद से कम्युनिज्म म विकास के मौलिक नियमों का पता लगाया। "पूंजीवाद स गुजरकर मानवजाति सीधे केवल समाजवाद म जा सकती है, यानी उत्पादन साधनों पर सामाजिक स्वामित्व तथा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किये गये काम की मात्रा के अनुसार पैदावार के वितरण की अवस्था मे। हमारी पार्टी इससे आगे देखती है समाजवाद अनिवार्यत विकसित होकर धीरे धीरे कम्युनिज्म का रूप लेगा, जिसके

परचम पर लिखा होगा, 'हर एक से उसकी क्षमता के अनुसार और हर एक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।'"*

लेनिन ने इस बात पर जोर दिया कि "कम्युनिज्म समाज का एक उच्चतर रूप है और उसका विकास तभी हो सकता है जब समाजवाद की पूरी तरह स्थापना हो चुकी हो।"** उन्होंने बताया " समाजवाद और कम्युनिज्म मे एकमात्र वैज्ञानिक अतर यह है कि पहला शब्द पूजीवाद की कोख से उत्पन्न होनेवाले नये समाज के लिए इस्तेमाल होता है, जबकि दूसरे का मतलब उससे अगली और उच्चतर मजिल है।"*** सोवियत सघ का अनुभव बतलाता है कि एक से दूसरे मे सक्रमण एक लगातार ऐतिहासिक प्रक्रिया है। महान अक्तूबर क्राति के बाद के प्रथम चार दशको मे एक उन्नत समाजवादी समाज की उत्पत्ति हुई। उन वर्षों म सोवियत जनगण ने समाजवाद का निर्माण करते हुए भावी कम्युनिस्ट समाज के तत्वों की रचना भी की, और इस प्रकार कम्युनिज्म मे धीरे-धीरे सक्रमण का रास्ता साफ किया।

छठे दशक के अत और सातवे दशक के प्रारम्भ मे कम्युनिज्म का फौरी निर्माण ही सोवियत जनगण का मुख्य सृजनात्मक काम बन गया।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कायक्रम म कम्युनिस्ट समाज के निमाण की ठोस मजिले बतायी गई ह और यह कि इस कायभार को किस प्रकार पूरा करना चाहिए। इस निर्माण के दौरान तीन परस्पर सबधित ऐतिहासिक कार्यों को पूरा करना है कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण करना है कम्युनिस्ट सामाजिक सबध विकसित करने हैं, लोगो की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा करनी है। सवप्रथम कम्युनिज्म का भौतिक और तकनीकी आधार तैयार करना जरूरी है जिससे सभी नागरिको के लिए भौतिक और सास्कृतिक धन की बहुतायत होगी। इस आधार का तयार करने का मतलब है देश का सपूण बिजलीकरण और इस आधार पर देश के बिजलीकृत उद्योग और कृषि को, यानी अथव्यवस्था की सभी शाखाओ

---

*व्ला० इ० लेनिन सग्रहीत रचनाए, खड २४, पृष्ठ ६२

**वही, खड ३०, पष्ठ २६०

***वही, खड २६ पष्ठ ३८७

मे सामाजिक उत्पादन की मशीनरी, प्रविधि और सगठन काय को उच्चतर स्तर पर ले आना। इसके अलावा इसके लिए यह भी जरूरी होगा कि उत्पादन का सर्वागीण मशीनीकरण और स्वचलीकरण किया जाये, रासायनिक उपायो का व्यापक प्रयोग किया जाये, नयी प्रकार की ऊर्जा और सामग्री द्रुत गति से विकसित की जायें जिनमे प्राकृतिक, भौतिक तथा श्रम साधना का रगारग और विवेकसंगत प्रयोग किया गया हो, विनान और उत्पादन मे निकट सवध हो, वैज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति तजी से हो तथा श्रम की उत्पादिता मे काफी वद्धि हो।

इस काय की पूर्ति से जो देश मे निर्मित उत्पादन शक्तिया की लगा तार प्रगति की रोशनी मे सम्भव है, सोवियत सघ आथिक दष्टि से ससार का सबसे शक्तिशाली देश बन जायेगा। इस कायक्रम म दिये गये ध्येय ज्यो-ज्यो पूरे होगे शहरो और गावा के मेहनतकश जनगण की खुशहाली बढेगी जिसका मुख्य रूप वेतन मे नियमित वद्धि के साथ कीमतो मे कमी और धीरे धीरे कर व्यवस्था का उन्मूलन होगा। एक साधारण नागरिक के जीवन मे सामाजिक उपभोग निधियो की भूमिका अधिकाधिक महत्वपूर्ण होती जायेगी और उनकी वृद्धि की दर वेतन म बढोतरी की दर से अधिक होगी। इन सामाजिक उपभोग निधिया से किडरगाटना और बोडिग स्कूला मे बच्चो के मुफ्त रहने-सहने का प्रबध किया जायेगा, रिहायशी मकान, सावजनिक सेवाए, परिवहन, आदि मुफ्त हो जायेंगे। प्रत्येक परिवार को सुसज्जित फ्लेट दिया जायेगा और काय सप्ताह और काय दिवस ससार मे सबसे छोटा होगा। इन चीजा से सस्कृति विकास की रफ्तार और तेज होगी और व्यक्ति की क्षमता के सर्वांगीण विकास तथा सामाजिक जीवन के तमाम क्षेत्रा मे उसकी सजनात्मक शिरकत को आवश्यक स्थितिया सुनिश्चित हो जायेंगी।

उत्पादक शक्तिया के इस विकास तथा देश के आथिक ढाचे म तबदीली से कम्युनिस्ट सामाजिक सबधो के सुदढीकरण को प्रोत्साहन मिलेगा। उनकी उत्पत्ति का मतलब यह होगा कि वग भेदभाव शहर और देहात के, मानसिक और शारीरिक श्रम के बीच मौलिक अतर मिट जायेगा। इन पेचीदा प्रक्रियाओ की शुरूआत १९१७ म हुई, सवहारा अधिनायकत्व द्वारा उठाये गये पहले कदमा म, उन प्रारम्भिक कारवाइया मे हुई जिनका उद्देश्य उत्पादन साधनो पर निजी स्वामित्व का उन्मूलन था।

जैसा कि लेनिन ने बताया था, "वर्गों को मिटाने का मतलब है **तमाम** नागरिकों को जहा तक **उत्पादन के साधनों** का सबध है जो समस्त समाज की सम्पत्ति हैं, समान आधार पर खडा कर देना।"* सोवियत सघ मे १९१७ के बाद स्वामित्व के दो रूपों—राजकीय स्वामित्व और सामूहिक सहकारी स्वामित्व—का जन्म हुआ। इनके साथ-साथ विकास से अत मे दोनो का विलयन समस्त जनगण के एकमात्र कम्युनिस्ट स्वामित्व के रूप मे हो जायेगा। यह परिघटना मजदूर वर्ग और किसानों के अतर को दूर करने की आर्थिक शर्त है।

इसी प्रक्रिया के समानातर शहर और गाव के सामाजिक आर्थिक और सास्कृतिक भेद भी रहन सहन की स्थितियों के भेद के साथ मिट जायेंगे। कृषि श्रम भी बस एक प्रकार का औद्योगिक श्रम हो जायेगा। शारीरिक काम करनेवाले मजदूरों की भी शैक्षणिक तथा तकनीकी योग्यता मानसिक काम करनेवाले श्रमिकों के स्तर पर पहुच जायेगी। मानसिक तथा शारीरिक श्रम करनेवालों मे श्रमजीवियों का वास्तविक विभाजन मिट जायगा। उसके बाद मजदूरों, सामूहिक किसानों और बुद्धिजीवियों के सहयोग के बजाय एक वर्गहीन कम्युनिस्ट समाज के कार्यकारी सदस्यों के बीच सहयोग कायम होगा।

विभिन्न जातियो के मानवों के बीच भी सबधों के विकास मे एक नयी मजिल का प्रादुर्भाव होगा। समाजवाद ने जातीय प्रश्न मे दो परस्पर *सबधित प्रवत्तियों को जन्म दिया एक है प्रत्येक जाति के सर्वांगीण विकास* की प्रवत्ति और दूसरी है विभिन्न जातियों के अधिकाधिक मिलाप, और एक दूसरे पर उनके अधिकाधिक प्रभाव की प्रवृत्ति। देश की आर्थिक क्षमता मे ज्यों-ज्यों वद्धि होती है और सामाजिक भेद मिटते जाते हैं, सघीय जनतत्रों और स्वायत्त क्षेत्रों के बीच भौतिक तथा सास्कृतिक मूल्यों का आदान प्रदान बढना चाहिए।

सोवियत सघ की जातियों की सस्कृति का समाजवादी, अतर्राष्ट्रीय अतय एक है जातीय रूप मे भी उसका भेद कम होता जायेगा। एक सयुक्त अतरजातीय समुदाय की उत्पत्ति होगी जातीय भेदभाव, खासकर भाषा के भेद का मिटने मे वर्गीय भेदभावों के उन्मूलन मे अधिक समय

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २०, पृष्ठ १२८

लगेगा। लेकिन यह भी एक वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो बुनियादी तौर से प्रगतिशील है। जब सारी दुनिया में कम्युनिज्म की विजय हो जायेगी तो विश्व की जातिया अलग अलग इकाइया के रूप मे नही रहेंगी तथा जातीय भेद धीरे धीरे मिट जायेंगे। सर्वहारा अधिनायकत्व से समस्त जनगण के समाजवादी राज्य म राज्य के विकास और उसके एक कम्युनिस्ट स्वशासित समाज म विकास से सबधित सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम की प्रतिपत्ति वास्तव मे समस्त समार के लिए एक ऐतिहासिक महत्व रखती है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम मे कहा गया है "कम्युनिज्म के पहले दौर—समाजवाद की पूर्ण और अन्तिम विजय प्राप्त करने तथा पूरे परिणाम म कम्युनिज्म के निर्माण की ओर समाज का सक्रमण सुनिश्चित करने के बाद, सर्वहारा अधिनायकत्व अपना ऐतिहासिक मिशन पूरा कर चुका है और अब वह अन्दरूनी विकास के कार्यभारो की दृष्टि से सोवियत सघ मे अनिवार्य नहीं रहा। वह राज्य जो सर्वहारा अधिनायकत्व के राज्य के रूप म उत्पन्न हुआ था, नये, आधुनिक दौर म समस्त जनगण का राज्य बन गया है।"* समस्त जनगण का राज्य समस्त सोवियत जनगण की इच्छा का मूर्तिमान होगा, समस्त सोवियत समाज की सामाजिक एकता को प्रतिबिम्बित करेगा हालाकि उसमे निर्णयकारी भूमिका मजदूर वर्ग की होगी। वह कम्युनिज्म की अतिम विजय तक कायम रहेगा और इसके अस्तित्व का कारण ही उस विजय को प्राप्त करना है।

कार्यक्रम मे सोवियतो के कार्यकलाप को, सार्वजनिक सगठनो के अधिकारो और कार्यों म विस्तार को तथा समाजवादी जनवाद को सुधारने की दिशा म सभी सम्भव प्रयासो को विशेष महत्व दिया गया है क्योकि इन्ही उपायो के माध्यम से राज्य के प्रशासन मे, आर्थिक और सास्कृतिक विकास के निरीक्षण मे, राजकीय अमले के काम मे तथा जनगण द्वारा उसके कार्यकलाप के नियत्रण म सभी नागरिको की शिरकत सुनिश्चित की जा सकती है। आखिरकार सभी मेहनतकश जनगण सार्वजनिक प्रशासन और सार्वजनिक मामलो मे भाग लेने लगेंगे और इसके परिणामस्वरूप जनवाद के विस्तार से शत प्रतिशत कम्युनिस्ट स्वशासन का माग प्रशस्त होगा।

---

*सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम, विदेशी भाषा प्रकाशन गृह, मास्को, १९६२, पृष्ठ ११३

कम्युनिस्ट निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण कायभार नये मानव की शिक्षा-दीक्षा है। पार्टी ने इस बात का बीडा उठाया है कि व्यक्ति के सवतोमुखी विकास के लिए जिसम बौद्धिक सम्पन्नता, नैतिक कमनिष्ठता और शारीरिक चुस्ती शामिल है, काफी गुजाइश मुहैया की जाये। जहा तक रोजमर्रे के काम का सबध है यह एक मुख्य कायभार है जिसका उद्देश्य सभी लोगो मे उच्चतम वैचारिकता तथा कम्युनिज्म के ध्येय के प्रति अत्यत निष्ठा की भावना, काम तथा समस्त अथव्यवस्था के प्रति कम्युनिस्ट दष्टिकोण पैदा करना है। नये मानव, वगहीन समाज के सक्रिय निर्माता की शिक्षा-दीक्षा के लिए आवश्यक है कि सभी सोवियत नर नारिया मे माक्सवादी लेनिनवादी विश्व दष्टिकोण विकसित किया जाये, स्वय अपने देश के जीवन तथा विश्व के भावी विकास की सम्भावनाओ का गहरा अवबोधन कराया जाये। पार्टी के कायक्रम मे कम्युनिज्म के निर्माता की नैतिक सहिता है, जिसके मिद्धात सोवियत जनगण के अनुभव पर, मारे ससार के मेहनतकशो के रोजमर्रे के जीवन पर आधारित हैं। इनमे सनिहित है मजदूर वग की क्रातिकारी नैतिकता, व्यक्तिगत और सावजनिक हितो की समानता जिसकी तह मे यह उसूल है एक सबके लिए, सब एक के लिए।

समस्त मानवजाति के विकास की वतमान अवस्था और उसके कम्युनिस्ट भविष्य का सर्वेक्षण करते हुए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस ने युद्ध और शाति के प्रसग मे अपना दष्टिकोण स्पष्ट किया। कम लोग इस बात से इनकार करेगे कि वतमान युग की यही सबसे प्रधान समस्या है। हमारी धरती पर थरमो न्यूक्लियर युद्ध का खतरा मडरा रहा है जिससे पूरे के पूरे देश और जातिया नष्ट हो सकती हैं। इसी लिए काग्रेस ने इस बात पर जोर दिया कि श्रमजीवी जनता का मुख्य कायभार साम्राज्यवादिया पर समय रहते लगाम कसना है और उन्हे विनाशकारी हथियारो का उपयोग करने तथा थरमो न्यूक्लियर युद्ध छेडने से रोकना है।

काग्रेस ने विश्वाम प्रकट किया कि मारी दुनिया मे समाजवाद की अतिम विजय से पहले भी, ससार के एक भाग मे पूजीवाद के कायम रहने पर भी पृथ्वी के जीवन स विश्वयुद्ध के खतरे को दूर कर देने की सम्भावना मौजूद है। जबतक साम्राज्यवाद है युद्ध का खतरा बना रहेगा।

मगर वतमान अतर्राष्ट्रीय वातावरण की विशेषता है सारी दुनिया म समाजवाद, जनवाद और शाति की शक्तिया की स्पष्ट वृद्धि। विश्व के विकास की मुख्य धारा का अब साम्राज्यवाद नही बल्कि समाजवाद निश्चित करता है।

एक बार फिर पार्टी न यह स्पष्ट किया कि उसकी समझ मे सावियत सघ म कम्युनिज्म का निर्माण सावियत जनगण का महान अतर्राष्ट्रीय कायभार है, जिससे पूरी विश्व समाजवादी व्यवस्था, अतर्राष्ट्रीय सवहारा वग और समस्त मानवजाति का हितसाधन होना है।

सातवर्षीय योजना की पूर्ति

सावियत जनगण ने कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस म स्वीकृत सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कायक्रम को समस्त जनगण का कायक्रम माना। इससे उन्ह सातवर्षीय योजना के ध्येया को पूरा करन के लिए, जिसे उन्होंने कम्युनिज्म के निर्माण के अपन प्रयत्ना के तात्कालिक मार्गचिह्न के रूप मे देखा, और अधिक लगन से काम करने की प्रेरणा मिली।

१९६२ मे मग्नितोगोर्स्क के मजदूरा की श्रम उत्पादिता सयुक्त राज्य अमरीका के अगुआ इस्पात कारखानो के स्तर तक पहुच गई। दोनेत्स बेसिन के खनिका ने एक महीने मे ८०,००० टन से अधिक कायला काटकर ससार भर मे एक नया रिकाड कायम किया। तातार जनतत्र के अगुआ तेल मजदूर उसी १९६५ साल के योजना ध्येय की काफी ज्यादा अधिपूर्ति करन मे सफल हुए।

युद्ध के पूव की पचवर्षीय योजनाओ के दौरान सारे दश ने समाजवादी उद्योगो के प्रथम उद्यमो की उत्पत्ति का उत्सव मनाया था। सातवे दशक के दौरान उनसे कही अधिक क्षमता की फैक्टरियो कारखाना विजलीघरा, आदि का निर्माण तथा उन्ह चालू होना साधारण सी घटना हो गया। अखबार मे ऐसी घटनाओ के समाचार को अपेक्षाकृत कम स्थान दिया जाता। अग्र लेखा का विषय अब कम्युनिस्ट निर्माण के विशालकाय प्रयोजन होते हैं जस साइबेरिया मे बननेवाले जबदस्त पन बिजलीघर, द्रूज्बा (मत्री) तेल पाइपन-लाइन जो वोल्गा से पोलड,

चेकोस्लोवाकिया, जमन जनवादी जनतंत्र और हगरी तक फैली हुई है। सातव दशक मे ही बुखारा से उराल तक कई हजार किलोमीटर लम्बी गैस पाइपलाइन का निर्माण हुआ और मास्को से बाइकाल झील तक रेलवे लाइन का बिजलीकरण किया गया। ब्रात्स्क पनबिजलीघर १९६४ तक ससार का सबसे बडा पनबिजलीघर था। उसके निर्माण मे केवल तीन वप लगे।
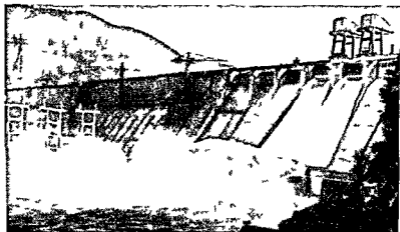
येनीसेई नदी पर क्रास्नोयास्क पनबिजलीघर का निर्माण

सोवियत सघ के नक्शे पर नये-नये शहर उत्पन्न होते रहे। उनमे से एक दिव्नोगोर्स्क था जिसका नाम सातवर्षीय योजना से पहले किसी ने नही सुना था। जब एक नौजवान निर्माता मजदूर के परिवार के लोग उसके साथ रहने के लिए आये—और उस शहर के इतिहास म वह पहला परिवार था—तो उन्ह कोम्सोमोल समिति के दफ्तर मे ठहराना पडा। लेकिन १९६३ के प्रारम्भ तक इस शहर मे एक हजार से अधिक विवाह हो चुके थे और १,८०० बच्चा—दिव्नोगोर्स्क के असली निवासियो—को जन्मपत्र दिये जा चुके थे। २५ माच, १९६३ को मास्को म यह तार पहुचा "१७ ३० क्रास्नोयास्क समय येनीसेई बाध तैयार हो गया नदी कम्युनिज्म के लिए काम आने लगी।" इसके शीघ्र बाद ही एक ऐसे बिजलीघर मे यत्रो का असेम्बली-काय शुरू हुआ जिसकी क्षमता विशालकाय ब्रात्स्क से भी अधिक होनेवाली थी।

पुन मिलाकर शतवर्षीय योजना सफलतापूर्वक पूरी की जा रही थी। रासायनिक उद्योग तेजी से प्रगति कर रहा था और गैस और तेल उस समय तक देश के ऊर्जा-साधना में निर्णायक स्थान प्राप्त कर चुके थे। रेलवे में अधिकाश काम बिजली और डीजल इजन करने लगे थे। निर्माण कार्य में लोह कक्रीट के बने पूर्वनिमित हिस्सा का इस्तेमाल सचमुच बहुत व्यापक पैमाने पर होने लगा था। गृहनिर्माण कायक्रम तेजी से प्रगति कर रहा था और उसका बराबर विस्तार किया जा रहा था। १९६१ में देश की शहरी आबादी पहली बार देहाती आबादी के बराबर हो गई।

इस औद्योगिक प्रगति के आधार पर १९६१ में चेष्टा की गई कि योजना के मुख्य ध्येयो पर पुन विचार किया जाय ताकि उन्हे और बढाया जाये। लेकिन बाद की घटनाओ ने योजना बनानेवालो का अपना ध्यान दूसरे सवालो की ओर आकृष्ट करने पर मजबूर किया। ये सवाल थे पूजी विनियोग का बिखर जाना, उद्योग के समान प्रगति करने में कृषि की असफलता, उत्पादन साधनो के उत्पादन तथा उपभोग माल के उत्पादन में अतर और श्रम उत्पादिता में वृद्धि की मद गति के कारण।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कायक्रम में अधिक सर्वेद्रित आर्थिक विश्लेषण की ओर, आर्थिक योजनाओ को वैज्ञानिक आधार प्रदान करने की आवश्यकता की ओर अधिक ध्यान देने पर जोर दिया था। अखबारो में बडी सख्या में लेख छापे गये जिनमे उत्पादन के ज्यादा कारगर तरीको की और ज्यादा होशियारी से योजना बनाने और दाम व्यवस्था निर्धारित करने की माग की गई थी। वैज्ञानिको प्रबध अधिकारियो और पार्टी कायकर्ताओ ने अलग फक्टरियो, निर्माण-स्थलो प्रबध विभागो और आर्थिक परिषदो में सुअवसरो की उपेक्षा की बाबत लिखा। १९५७ में आर्थिक प्रशासन की जो व्यवस्था अपनाई गई थी उसमे बहुत सी त्रुटिया देखने में आयी। शुरू में आर्थिक परिषदो ने अपने निरीक्षण के खास क्षेत्र के भीतर उद्यमो की सफल पहलकदमी को प्रोत्साहित करने में काफी तत्परता दिखाई दी, मगर बाद में इस नयी व्यवस्था से स्थानीय हितो को प्रधानता देने की भावना को बढावा मिला। अलग अलग शाखाओ के अनुसार आर्थिक प्रशासन से विचलन के कारण अर्थव्यवस्था के प्रबध का काम अनावश्यक रूप से जटिल हो गया, बडी सख्या में आर्थिक सस्थायें स्थापित हो गई थी जिनपर विशेष शाखाओ के विकास की जिम्मेदारी नही थी।

देश के आर्थिक प्रशासन के ढाचे मे बार-बार उलट फेर स्पष्टन आवश्यक नही था। ऐसी स्थिति पैदा हो गई थी जिसमें उद्योग और कृषि को सुधारने का साधन प्रशासकीय कार्ययंत्र के पुनर्गठन को माना जाने लगा था। अगरचे आर्थिक परिषदो को विस्तारित करने का प्रयास किया गया और नये विभागो की व्यवस्था कायम की गई, वाछनीय परिणाम नही हासिल हुआ। थोडे ही दिना मे निम्नलिखित रूप म गतिरोध की स्थिति उत्पन्न हो गई उत्पादन और पूजीगत निर्माण की योजनाओ पर नजरसानी एक तरह की सस्थाए करती थी, सप्लाई का काम दूसरी तरह की, और नयी प्रविधि जारी करन और सीखने का काम तीसरी तरह की सस्थाए करती थी। व्यवहार मे उसका मतलब यह हुआ कि कोई एक केंद्र ऐसा नही रह गया था जहा किसी एक उद्योग के विकास का परिवेक्षण किया जाता। इसका नतीजा यह हुआ कि यद्यपि इस अवधि मे अनेक फैसले किये गये मगर प्रगति की रफ्तार धीमी थी और वैज्ञानिक अनुसधान तथा वैज्ञानिक और तक्नीकी आविष्कारो को लागू करने का कायक्रम पूरा नही हो पाया। यह बात नयी मशीना के उत्पादन और स्वचलीकरण तथा सवतोमुखी मशीनीकरण की मद गति के सबध मे बिल्कुल स्पष्ट थी।

यद्यपि समग्र रूप से सातवर्षीय योजना के ध्येय पूरे हो गये थे, उद्योग की कुछ शाखाओ मे प्रगति सतोषजनक नही थी। १९५३-१९५८ की अवधि की कृषि की सफलताओ के बाद कुछ सचालको के दृष्टिकोण म आत्मसतोष की झलक दिखाई देने लगी थी। सातवर्षीय योजना बनानेवालो ने सोचा था कि मशीन-ट्रैक्टर स्टेशनो के भग होने और उनकी मशीनो के सामूहिक फार्मों के हाथ बेच दिये जाने के बाद कृषि मशीनो का इस्तेमाल पहले से ज्यादा अच्छी तरह होने लगेगा। इसलिए कृषि मशीनो के उत्पादन मे कुछ कमी करने का फैसला किया गया था।

योजना के प्रथम वर्षो में इस मिथ्या अनुमान के असर को दुरुस्त करने के लिए कारवाई करनी पडी। १९६२ म कुछ प्रकार के पशु उत्पादन का खरीदारी का दाम बढाना पडा, जिसकी वजह से मास और मक्खन का फुटकर दाम बढ गया। ट्रैक्टर अनाज हार्वेस्टर और खनिज खाद का उत्पादन बढाने के लिए अतिरिक्त धन हासिल करने का प्रयास करना पडा। कृषि प्रशासन के पुनगठन से उस समय बडे परिवतनो की आशा

की गई थी मगर कोई खास सुधार नही हुआ, उलटे इसका नतीजा यह हुआ कि बहुत से अनुभवी फाम नेता व्यावहारिक काम छोडकर केवल प्रशासन के काम मे लग गये।

१९६३ मे मौसम की खराबी से सामूहिक फार्मों और राजकीय फार्मों की अर्थव्यवस्था का बडा धक्का लगा। कडाके की सरदी के बाद गर्मी के सूखे के कारण फसल बहुत कम हुई, और सोवियत सघ को मजबूरन अपनी जरूरत के अनाज का एक हिस्सा विदेशो से खरीदना पडा। जाहिर है प्रकृति के उतार चढाव का अनुमान लगाना किसी के वस की बात नही, मगर इससे यह बात और उभरकर सामने आयी कि देश की कृषि व्यवस्था को विकास के उस स्तर पर पहुचाना जरूरी है जहा मौसम के उतार चढाव का उसपर असर नही पडे और आवश्यक मात्रा म अनाज हमेशा गोदामो मे रहे। अगरचे १९५५–१९५९ की अवधि मे कृषि की कुल पैदावार मे औसतन ७ ६ प्रतिशत सालाना वृद्धि हुई थी, सातवर्षीय योजना के प्रथम पाच वर्षों म २ प्रतिशत की वृद्धि भी नही हुई और अनाज की उपज मे बहुत थोडी वृद्धि देखने मे आयी।

जीवन ने खुद यह बताया था कि कृषि और औद्योगिक दोना पैदावार के सबध म सही दाम निश्चित करने की नीतिया पर अमल करना तथा आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से की गई सभी कारवाइयो का वैज्ञानिक विश्लेषण कितना जरूरी है। इस माग से हर भटकाव का नतीजा यह हुआ कि कम्युनिस्ट निर्माण मे बाधाए पडने लगी।

इसका एक स्पष्ट सबूत सभी कम्युनिस्ट पार्टी, सोवियत, ट्रेड-यूनियन और कोम्सोमोल सगठनो का दो भागो मे विभाजन था, एक कृषि के लिए और एक उद्योग के लिए, जिसपर १९६३ के प्रारम्भ मे अमल किया गया। इस तबदीली के समथकों का विश्वास था कि केन्द्र और प्रातो दोना जगह इससे आर्थिक प्रशासन ज्यादा कारगर उद्देश्यपूण और कायसाधक हो जायेगा। लेकिन वे गलती पर थे। इस विभाजन से कुछ हद तक उद्योग और कृषि का नाता टूट गया जिससे शहर और देहात के सम्पक या मजदूर वग और किसाना के सहयोग को सुदढ करने म काई सुविधा नही हुई।

इन बातो से देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने मे कोई सहायता नही मिली और इन्हे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २०वी, २१वी

और २२वी काग्रेसा द्वारा निर्धारित आम लाइन के अनुकूल भी नही कहा जा सकता था। सच तो यह है कि इनसे सोवियत जनगण के कामो मे बाधा पड रही थी। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के नये कायक्रम म आर्थिक प्रशासन के प्रति, जनता की सृजनात्मक पहलकदमी के सगठन के प्रति एक नये दृष्टिकोण की माग की गई थी। यही कारण था कि पूरे देश ने केन्द्रीय समिति की अक्तूबर (१९६४) के पूर्णाधिवेशन के फसलो का उत्साहपूवक स्वागत किया। इसके फैसला से पार्टी जीवन के लेनिनवादी प्रतिमानो तथा पार्टी नेतृत्व के लेनिनवादी सिद्धाता को विकसित करने, सख्ती के साथ उनका पालन करने की पार्टी की दढ प्रतिज्ञा जाहिर हुई। पार्टी ने आर्थिक प्रबध मे आत्मनिष्ठता की सभी अभिव्यक्तियो की कडी आलोचना की और इस सबध मे की गई गलतियो को ठीक करना आवश्यक माना। पूर्णाधिवेशन न ख्रुश्चेव को सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव की जिम्मेदारियो से मुक्त कर दिया। उन्होने सोवियत सघ के मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष पद से भी त्याग पत्र दे दिया। लेओनीद इल्यीच ब्रेज्नेव सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव चुने गये और अलेक्सेई निकोलायेविच कोसीगिन सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमडल द्वारा सोवियत सघ के मन्त्रिपरिषद के अध्यक्ष चुने गये।

उस समय ब्रेज्नेव ५८ वष के थे। उनका जन्म एक मजदूर परिवार मे हुआ था और एक तकनीकी स्कूल म भूमि व्यवस्था का अध्ययन करने के बाद वह एक धातुकम सबधी सस्थान के स्नातक हुए। १९३१ म वह सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हुए। उन्होने कृषि मे काम किया और कारखाने मे इजीनियर भी रह चुके थे। बाद मे वह द्नेप्रोपेत्रोव्स्क मे पार्टी सगठन के प्रधान थे और महान देशभक्तिपूण युद्ध के दौरान मोर्चे पर राजनीतिक काम कर रहे थे। १९५२ मे वह केन्द्रीय समिति के एक मत्री चुने गये थे।

कोसीगिन का जन्म भी एक मजदूर परिवार मे हुआ था। वह १९०४ मे पैदा हुए और २३ वष की आयु मे कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो गये। वह भी उच्च शिक्षा प्राप्त है। उनका कायकारी जीवन एक सूती कारखाने मे शुरू हुआ जहा वह फोरमैन से उन्नति करके वकशाप के निदेशक बने, और उसके बाद कपडा उद्योग के जन कमिसार

हुए। आगे चलकर उन्होने गोसप्लान (राजकीय नियोजन आयोग) के अध्यक्ष, वित्त मत्रालय के प्रधान, सोवियत सघ के मत्रिपरिषद के उपाध्यक्ष के पद पर काम किया।

ब्रेज्नेव और कोसीगिन कई बार केन्द्रीय समिति म चुन गये और सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य भी रहे ह। राज्य ने अनेक मौको पर उनकी सेवाओ का उचित मान्यता प्रदान की है और दानो समाजवादी श्रम के वीर भी हैं।

अक्तूबर, १९६४ मे कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा लिये गये फैसलो का शीघ्र ही सोवियत सघ के जीवन के सभी पहलुओ पर प्रभाव पडा। १९६४ के अत मे पार्टी सगठनो मे कृषि और उद्योग का कृत्रिम विभाजन समाप्त कर दिया गया। एकीभूत पार्टी सगठना के पुनर्स्थापन से पार्टी सगठना की भूमिका बढी और उनका काम अधिक प्रभावशाली हो गया। कोम्सोमाल सगठना मे भी इसी तरह के परिवतन किये गये।

१९६५ के वसत मे श्रमजीवी जनगण के प्रतिनिधियो की स्थानीय सोवियता के चुनाव हुए। कृषि और औद्योगिक विभागो मे सोवियता के विभाजन का भी अत कर दिया गया। सोवियते अपने कायकलाप मे आम जनगण की सहायता ले सकती है। १९६५ मे ऐसे स्वैच्छिक सहायका का सख्या २ करोड ३० लाख थी। (१९६१—लगभग २ करोड)। श्रम जीवी जनगण के अधिकाधिक व्यापक हिस्सा को देश के रोजमर्रे के सावजनिक मामला म, राजकीय निकाया और अथव्यवस्था की सभी शाखाओ के काम म शरीक करने के प्रयास मे कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार ने पार्टी और राज्य नियत्रण के सगठनो को (जो १९६२ मे केन्द्र और प्राता दोना मे स्थायी समितियो के रूप मे स्थापित की गई थी) जन नियत्रण के रूप मे पुनगठित किया। उनके नाम से ही उनके कायकलाप का स्वरूप अधिक स्पष्टत और पूणत व्यक्त था और उस कायकलाप का उद्देश्य था आम जनता को राज्य के प्रशासकीय काय म शरीक करना और यह निश्चित करना कि सरकारी फैसला की तामील पर नियमित नियत्रण रहे।

जनता के निश्चित समथन तथा सावजनिक मामला मे शहरा और गावा दोना के निवासियो की अधिकाधिक सरगर्मी पर भरोसा करते हुए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सोवियत सरकार ने आर्थिक सबधा को दोषरहित बनाने, आर्थिक प्रबध और आयोजन की

व्यवस्था को सुधारने तथा उत्पादन को तेज करने पर ध्यान केंद्रित किया। इससे १९६५ मे ही उपलब्ध श्रम शक्ति और रिजव का पुन बटवारा किया गया, कृषि और उद्योग दोना के उत्पादन मे वृद्धि हुई और जनगण का जीवन स्तर ऊचा हो गया।

सोवियत अथव्यवस्था के सगठन मे समाजवाद के आथिक नियमा को और पूरी तरह लागू करने के प्रयासा का मतलब पूजीवादी देशो मे बिल्कुल गलत और पूवकल्पित ढग से लगाया गया। सोवियत सघ मे जो कुछ होता है उसे पूजीवादी अखबारो ने हमेशा काफी स्थान दिया है। यह आशा करना हिमाकत होगी कि उनमे एक वगहीन समाज के निर्माण का वणन शातचित्त और निर्पेक्ष भाव से किया जायेगा। १९६५ मे पूजीवादी अखबार इस प्रकार की घोषणा करने लगे कि सोवियत सघ "अब वास्तव मे सनसनीखेज आथिक पुनगठन की देहली पर है।" बहुत से पत्र-पत्रिकाओ ने इस प्रकार के लेख केवल अपने पाठको को भरमाने के लिए छापे, क्योकि वास्तव मे किसी को आश्चयचकित कर देनेवाली कोई बात नही हुई थी। अगर पूजीवादी अखबारो का उद्देश्य सोवियत सघ के जीवन का सच्चा चित्रण करना होता तो वे आसानी से सोवियत अखबारो, रेडियो और टेलीविजन सामग्री का प्रयोग कर सकते थे।

अनेक वर्षों से सोवियत वैज्ञानिक और आथिक अधिकारी नियोजन, दाम निर्धारण और आथिक प्रबध की सारी व्यवस्था मे सुधार लाने के ठोस उपायो पर विचार कर रहे थे। लोग योजना बनाने के प्रति किसी सकीण विभागीय दृष्टिकोण के, नियोजन को जरूरत से ज्यादा सीमित रखने के खिलाफ थे। विचाराधीन समस्या थी तकनीकी प्रगति के लिए, प्रत्येक नये आविष्कार को लागू करने के प्रति एक सचमुच राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए सबसे अनुकूल परिस्थितिया मुहैया करना। वैज्ञानिक मामलो तथा सपूण अथव्यवस्था के विकास मे नालायक प्रशासको द्वारा हस्तक्षेप की कडी निंदा की गई।

अक्तूबर, १९६४ मे केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के बाद विशेषकर गम्भीर वैज्ञानिक विचार विमश शुरू हुआ। इससे पार्टी को देश के आथिक जीवन के सगठन के प्रति एक नया दृष्टिकोण तैयार करने मे, सोवियत राज्य के, वतमान जरूरतो के अनुकूलतम आथिक सिद्धातो की व्याख्या करने मे सहायता मिली।

दिसम्बर, १९६४ मे अगले साल की योजना और बजट पर सोवियत सघ की सर्वोच्च सावियत के अधिवेशन म विचार किया गया। सदस्या ने आर्थिक परिषद व्यवस्था की त्रुटिया और गत वर्षों मे कृषि सबधी नीति की गलतिया के ठोस उदाहरण दिये। अधिवेशन ने अपने प्रस्ताव तैयार करत समय उनकी आलोचनाओ को ध्यान मे रखा।

मार्च, १९६५ मे *केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन ने सावियत कृषि के* भावी विकास के सबध म फौरी कारवाइया पर विचार किया। केन्द्रीय समिति के सभी सदस्या ने सामूहिक और राजकीय फार्मों की उत्पादन वृद्धि दर को तेज करने के उद्देश्य से एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया। फैसला किया गया कि देहाती इलाका मे अधिक कृषि मशीनरी मुहैया की जाये और कई साल पहले से (१९७० तक के लिए) कृषि उपज की वसूली की निश्चित योजनाए तयार की जायें।

इन नयी कारवाइया का लाभदायक असर साल पूरा होने से पहले सामन आने लगा। उस साल सूखे से भी कृषि उत्पादन की कुल वद्धि मे कमी नही हुई। इतनी वृद्धि उससे पहले कभी नही हुई थी। नतीजा यह हुआ कि सामूहिक फार्मों की कुल आय और सामूहिक किसाना की आमदनियो मे १६ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

उद्योग मे भी मौलिक परिवतन किये गये। अब विचाराधीन सवाल यह था कि वतमान स्थिति मे राजकीय नियोजन के लिए तथा अलग अलग उद्यमा के काम पर नियत्रण रखने के लिए किन आकडा को आधार बनाया जाये। इसका पक्का बदोबस्त करना था कि फैक्टरियो के पास न तो कच्चे माल, इधन और अद्ध तैयार सामान का अभाव हो, और न दूसरी ओर इनका जरूरत से ज्यादा उत्पादन हो, और फिर यह भी, कि जिन चीजो की माग न रहे फक्टरिया उनका उत्पादन बद कर दें। यह निश्चित करने के उपाया पर विचार किया गया कि देश के *प्रत्येक श्रमिक और प्रत्येक उद्यम का हित पूरे राज्य के हितो के साथ कसे* मिलाया जाये। बीसियो ऐसे सवाला पर वैज्ञानिका, आर्थिक अधिकारियो, पार्टी कायकर्ताओ और ट्रेड-यूनियन कर्मियो ने विचार किया। उनम स कुछ लोगा का विचार था कि अर्थव्यवस्था का विकास नियोजन के उस दायरे से बढ गया था जिसे हिसाब-किताब के परम्परागत ससाधना तथा पुरान गणना यत्रा द्वारा चलाया जाता था। उनका कहना था कि नयी प्रविधि

जरूरी है और तब यह बिल्कुल ठीक होगा कि केन्द्र मे प्रत्येक उद्यम की योजनाए तैयार की जाती रह जिनम उनके तफ्सीली कायभार और उनके कायकलाप का दायरा निश्चित किया जाये।

इस विचार विमश मे भाग लेनेवाले अय लागो की राय थी कि देश के विकास की पहले की अवस्थाओ म जिस प्रकार का कठोर प्रशासकीय नियत्रण अनिवाय था यह अब नये ध्येय यानी कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण और इससे सबधित फौरी काय के अनुकूल नही रह गया था। वतमान स्थिति म जबकि माल मुद्रा सबध अभी तक जारी थे और देश की अथव्यवस्था विकास के बहुत ऊचे स्तर पर पहुच गयी थी केन्द्रीयकृत नियोजन का काम केवल सर्वोपरि (यानी सबसे महत्त्वपूण) प्रवृत्तिया तथा सूचकाको की ओर सकेत करना है। विभिन्न प्रकार के दसिया हजारा पदार्थों का विभाजन अब केन्द्रीय आधार पर करना जरूरी नही था। यह आवश्यक हो गया था कि अलग अलग उद्यमो का अधिक आजादी और जिम्मेदारी दी जाये और चीजा का सगठन इस तरह किया जाये कि उनका अधिक स्थिर स्वाथ अपने कारखाने को लाभदायक ढग से चलाने मे, उनकी पैदावार के गुण, मात्रा और विविधता मे निहित हो।

इन प्रश्नो के उत्तर की खोज मे सरकार ने प्रयोग के तौर पर १९६४–१९६५ म अनेक उद्यमो मे नियोजन के नये तरीको और आर्थिक प्रोत्साहना से काम लिया। पहले इन कारखाना के काम का मूल्याकन सवप्रथम उनकी कुल पैदावार के अनुसार किया जाता था, यानी सबसे अधिक ध्यान उनके द्वारा उत्पादित माल के कुल मूल्य की ओर दिया जाता था। अब कुल पैदावार के अलावा नये सूचकाक भी जोडे गये बिक्री और मुनाफे के ध्येय की प्राप्ति भी अब जरूरी थी। इन प्रयोगा के सिलसिले मे मास्को और गोर्की मे अनेक कपडा फैक्टरियो को आज्ञा दी गई कि वे दुकाना के सीधे आडर के अनुसार माल पैदा कर। इन फैक्टरिया और दुकानो के मजदूरो और कमचारिया को स्वय यह फैसला करने की आज्ञा दी गई कि सूटो के लिए कैसे फैशन और रग के कपडे तैयार करे और कब और कितनी मात्रा मे उन्हे ग्राहको के हाथ बेचा जाये। यह प्रयोग सही साबित हुआ और इन कारखाना का मुनाफा बढा। इसके अतिरिक्त बोनसो की एक विशेष व्यवस्था जारी की गई जिससे मजदूरो तथा दफ्तरी कमचारियो के मासिक वेतन का लगभग ४०–५०

प्रतिशत उन्हें नियमित वेतन अनुपूरक के रूप मे देना सम्भव हुआ। मास्को और लेनिनग्राद की मोटर परिवहन सेवाओ और उक्रइना की खदानो म भी इसी तरह के परिणाम हासिल हुए। उसका नतीजा यह हुआ कि मशीनो का बेकार पडा रहना बन्द हो गया और योजना से काफी अधिक मुनाफा मिलने लगा। वेतन मे भी काफी वृद्धि हुई और इसके अलावा उद्यमो के निवेदन पर मुनाफे का एक भाग उत्पादन को सुधारने और उसके नवीकरण पर, सामाजिक और सास्कृतिक कार्यों और सेवाओ पर खर्च किया गया।

इन्ही प्रयोगो तथा योजना व्यवस्था और आर्थिक सगठन को सुधारने के लिए पार्टी के कुल प्रयासो के कारण १९६५ की गर्मियो मे पूजीवादी अखबार इतने उत्तेजित हो उठे थे।

लेकिन खुद सोवियत जनगण के लिए इन कारवाइयो म कोई रहस्यमय या सनसनीखेज़ बात नही थी। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति और सरकार के शात, विश्वासपूर्ण कार्यकलाप मे सोवियत लोगो को इस अडिग सकल्प के सिवा और कोई चीज़ नज़र नही आयी कि वर्गहीन समाज के निर्माण को तेज़ करने के लिए समाजवादी व्यवस्था की सुविधाओ से अधिकतम लाभ उठाया जाय। सितम्बर, १९६५ मे जब एक नया आर्थिक सुधार लागू किया गया तो देश उसके लिए भली भाति तैयार था और उसने तबदीलियो को आसानी से स्वीकार कर लिया। व्यावहारिक अनुभव से ज़ाहिर हो गया था कि आर्थिक परिषदो को भग करके मत्रालय कायम करना ज्यादा लाभदायक था जो अर्थव्यवस्था की अलग अलग शाखाओ के लिए जिम्मेदार हो और जिनका काम एक ही आर्थिक नीति पर, जिस रूप म वह उनकी विशेष शाखाओ मे लागू होती हो, अमल करना था। जिन लोगो को यह भ्रम था कि उसका मतलब प्रशासन की उस पुरानी प्रथा की ओर लौटना है जो १९५७ से पहले कायम थी, वे गलती पर थे। वे सितम्बर, १९६५ मे केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन के फैसलो की तह तक पहुचने म असमर्थ रहे थे।

१९६५ की पतझड मे जो आर्थिक सुधार पहले पहल जारी किया गया, उसका तकाजा था कि आर्थिक प्रशासन के शाखा और क्षेत्रीय सिद्धातो को एक दूसरे के अनुकूल और अनुपूरक होना चाहिए और समग्र आर्थिक विकास के अतर-शाखा ध्येयो के ससग म लागू होना चाहिए।

परन्तु स्थिति का एक और पहलू भी था। वह था योजना व्यवस्था मे परिवर्तन, अलग अलग उद्यमो की पहलकदमी में बढाव तथा भौतिक प्रोत्साहन का बढा हुआ महत्व।

नयी व्यवस्था से उद्यमो को लाभदायक कारोबार का रूप धारण करने का प्रोत्साहन मिला। सुधार से पहले मेनेजरा और मजदूरो ने भी श्रम की उत्पादिता मे वृद्धि के लिए अभियान चलाया था ताकि उद्योग की कोई शाखा घाटे पर नही चले और अधिक मुनाफा मिले और सामाजिक उपभोग निधि मे वृद्धि हो। लेकिन सुधार के पहले लागत खाता जारी करना सम्भव नही था। भौतिक प्रोत्साहन के रूप और पैमाना श्रम के अनुसार वितरण प्रणाली और सोवियत अर्थव्यवस्था की सम्भावनाओ के अनुकूल नही थे। उदाहरण के लिए १९५९–१९६३ मे उद्योग मे प्रति व्यक्ति मुनाफे मे ४४ प्रतिशत वृद्धि हुई मगर उद्यम फड केवल १० प्रतिशत वढा, और इस फड से प्रोत्साहन के रूप मे दिये गये वोनस तथा अतिरिक्त प्रतिदान सिर्फ २ प्रतिशत बढे। यह अतर एक ऐसा कारण था जिससे औद्योगिक विकास दर कम होकर १९५९ मे ११४ प्रतिशत और १९६४ मे ७३ प्रतिशत हो गयी थी। उद्योग मे श्रम की उत्पादिता म भी वृद्धि निर्धारित दर से कम हुई। १९६१–१९६५ की अवधि म इसका औसत ४६ प्रतिशत था जब कि इससे पहले के पाच वर्षो की अवधि मे ६५ प्रतिशत वृद्धि हुई थी।

उद्योग को अब उत्पादन कोप तथा पूजी विनियाग का उपयाग अधिक कारगर ढग से करना था और यह निश्चित करना था कि पैदावार उच्च कोटि की हो। यह आर्थिक प्रवध व्यवस्था के जनवादी आधार का विस्तार किय बिना असम्भव था। नये आर्थिक सुधार न उत्पादन सगठन मे श्रमजीवी जनगण को भाग लेने का ज्यादा व्यापक अवसर प्रदान किया।

इस सबध मे एक महत्वपूर्ण काम यह था कि अर्थशास्त्र के ज्ञान का अधिक प्रचार किया जाये तथा आर्थिक विशेषज्ञो का प्रशिक्षण किया जाये। १९६५ के प्रारम्भ म स्नातका की कुल सख्या मे अर्थशास्त्र के स्नातको की सख्या ६ प्रतिशत से अधिक नही थी। सरकार ने उच्च शिक्षा के सस्थानो को आदेश दिया कि सभी मुख्य औद्योगिक उद्यमा मे सुशिक्षित आर्थिक विशेषज्ञ मुहैया करने के लिए कदम उठाये जायें।

जब कम्युनिस्ट पार्टी ने इस आर्थिक सुधार को लागू करने का काम शुरू किया जिसमे कई वष लगे, तो उसन इस क्षेत्र मे बहुत अनुभव प्राप्त कर लिया था। वह विशेषज्ञो की बडी सख्या की सलाह और सहयोग पर निर्भर कर सकती थी। १९६५ म २० लाख से अधिक औद्योगिक कार्यकर्ता विशिष्ट माध्यमिक या उच्च शिक्षा प्राप्त थे, और ४० लाख से अधिक कम्युनिस्ट उद्योग मे काम कर रहे थे। १९२८ म जब समाजवादी उद्योगीकरण अभी शुरू ही हो रहा था तो प्रत्येक सौ मजदूरो पर औसतन केवल चार इजीनियर और टेक्नीशियन थे और इनमे केवल एक स्नातक होता था। सातवे दशक के मध्य तक प्रत्येक सौ मजदूरो पर १४ इजीनियर और टेक्नीशियन थे और इनमे आठ स्नातक थे।

१९६५ म उद्योग मे २ करोड २० लाख से अधिक मजदूर काम कर रहे थे और इसका मतलब यह था कि सातवर्षीय योजना के प्रारम्भ की तुलना म ५० लाख मजदूरो की वृद्धि हुई थी। उस समय तक अनुभवी दक्ष मजदूरो की बडी सख्या जिनका जन्म इस शताब्दी के प्रारम्भ म हुआ था, अवकाश ग्रहण कर चुके थे और उनका स्थान नयी पीढी के लोगो ने ले लिया था जो युद्ध के बाद बडे हुए थे। इन नौजवान मजदूरो को अभी औद्योगिक अनुभव प्राप्त करना बाकी था लेकिन इनम से अधिकाश को अच्छी स्कूली शिक्षा मिली थी और सावजनिक जीवन मे वे सक्रिय भाग लेते थे। उदाहरण के लिए, इजीनियरी उद्योग मे आधे नौजवान मजदूरो (२८ वष से कम आयुवाले) ने दसवर्षीय स्कूल पूरा कर लिया था। इनमे ७० प्रतिशत कोम्सोमोल के सदस्य थे और १० प्रतिशत पार्टी सदस्य थे और विशाल बहुमत को उद्योग मे काम करने का तीन से पाच वष का अनुभव प्राप्त था। सक्षेप मे इन नौजवान मजदूरो म आगे आनेवाले वर्षों के लिए बडी सम्भावनाए मौजूद थी।

१९६५ म जो आर्थिक प्रबध व्यवस्था तयार की गई उसम औद्योगिक और कृषि उत्पादन दोनो मे अधिक आर्थिक प्रोत्साहन का बन्दोबस्त था। उसन सिफ उद्यम मेनजरो को ही नही बल्कि आम श्रमजीवी जनगण को भी अपना प्रयत्न तेज करने पर प्रोत्साहित किया ताकि यह निश्चित किया जा सके कि समस्त पदावार उच्च कोटि की हो और यह कि उद्यम अधिकाधिक मुनाफा कमानेवाले कारोबार बन जायें। सातवर्षीय योजना के अतिम वष न साबित कर दिया कि ये कदम ठीक समय पर उठाये

गये थे। १९६५ के समग्र आर्थिक सूचकाक १९६३ और १९६५ की तुलना मे काफी ज्यादा थे।

१९६४ के अत और १९६५ के प्रारम्भ मे मास्को की अगुआ फैक्टरियो ने यह बीडा उठाया कि हर प्रकार की वस्तु से, जिसका उत्पादन किया जाये, मुनाफा हासिल हो। इसके थोडे ही दिना बाद मास्को और लेनिनग्राद के अगुआ श्रमिक दस्ता ने वैज्ञानिका के सहयोग से इस बात का बीडा उठाया कि ३–४ साल की अवधि के भीतर मुख्य उत्पादन का सिलसिला अतर्राष्ट्रीय स्तरा तक पहुच जायेगा। ये महत्वपूण सुझाव व्यक्तिगत आविष्कारका या दलो ने नही बल्कि पूरी की पूरी फैक्टरियो और उद्यम समूहा ने पेश किये थे। ऐसा अकारण ही नहीं हुआ। उनके सुझाव जिनकी तैयारी और जाच सामूहिक आधार पर की गई थी, व्यापक पमाने पर कारगर थे क्योकि उनमे इन फैक्टरिया अगुआ दस्ता और वकशापा के श्रेष्ठतम अनुभव से फायदा उठाया गया था। इन अगली पक्ति के उद्यमा मे मजदूर सामूहिक रूप से अपनी उत्पादन योजनाओ पर नजरसानी करते और सुधारते तथा उद्यम कायक्रमो मे दिये गये काम को पूरा करने के बाद ऐसे सागठनिक और तकनीकी कदम उठाते जिनका उद्देश्य कायक्रम की तामील मे आसानी पैदा करना था। अपनी ओर से प्रबधकर्ताओ ने केवल साधारण सहयोग और नैतिक समथन की ही नही बल्कि इस बात की गारटी भी की कि समाजवादी प्रतियोगिता अभियान में भाग लेनेवाले दस्ता का जितने अतिरिक्त कच्चे माल, मशीनरी और सामान की आवश्यकता होगी, सब मुहैया किया जायेगा।

१९६५ तक ३ करोड मजदूर तथा प्रशासकीय अमला इस उच्चतम प्रतियोगिता अभियान यानी कम्युनिस्ट श्रम आदोलन में भाग ले रहे थे। जनता के इस सजनात्मक कायकलाप और आर्थिक प्रबध व्यवस्था के प्रति इस नये दष्टिकोण के कारण सोवियत अथव्यवस्था के विकास की रफ्तार तज हो गई। औद्योगिक विकास दर ८६ प्रतिशत तक पहुच गयी जो १९६४ के सूचकाक से काफी अधिक थी। सामूहिक और राजकीय फार्मो की कुल पैदावार भी उस साल के सूखे के बावजूद देश के इतिहास मे सबसे अधिक थी (जिसका सबसे बडा कारण पशुपालको की सफलताए थी)।

१९६५ की गर्मियो मे अखबारो, रेडियो और टेलीविजन ने यह घोषणा शुरू कर दी कि सातवर्षीय योजना के ध्येय अपने नियत समय से पहले

ही पूरे हो गये हैं। समय से पूव ध्येय को पूरा करनेवालो मे सबसे आगे थे लेनिनग्राद के बिजली इजीनियर, द्नेप्रोपेत्रोव्स्क प्रदेश के धातुकर्मी और तातार और बाशकिर जनतन्त्रो के तेल मजदूर। उस साल देश महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध मे नाजी जमनी पर सोवियत सघ की विजय की २०वी जयती मना रहा था। मास्को, लेनिनग्राद, कीयेव, वोल्गोग्राद, सेवास्तापोल तथा ओदेसा के वीर नगरो और ब्रेस्त के वीर गढ को देश के उच्चतम पदक, सैनिक पदक, लेनिन पदक तथा स्वण सितारा पदक प्रदान किये गये। पायनियरो तथा कोम्सोमोल सदस्यो के अनेक दस्तो ने प्रसिद्ध युद्ध स्थलो की यात्रा की। इस उपलक्ष्य मे शहरो और गावो म कई नये सग्रहालय खोले गये और कई यादगारे कायम की गईं। देश भर मे लोगा ने उन वीरा को श्रद्धाजलि अपित की जिन्होंने १९४१ से १९४५ के वर्षों मे नाजी आक्रमणकारिया से अपनी सोवियत जन्मभूमि की आजादी और स्वाधीनता की रक्षा की थी। पुराने कारनामो की याद ताजा होने से सोवियत जनगण को नयी सफलताए प्राप्त करने मे प्रेरणा मिली। सोवियत जनगण ने देखा कि उनकी शातिपूण श्रम उपलब्धिया तथा आर्थिक योजनाओ की सफल पूर्ति ही उनके देश के और आगे बढने की, उसकी प्रतिरक्षा क्षमता की और पूरे ससार मे शाति की रक्षा की गारटी है।

अगस्त, १९६५ मे मास्को के श्रमजीवी जनगण ने ही सवप्रथम नियत समय से पहले कुल औद्योगिक उत्पादन का सातवर्षीय योजना कायक्रम पूरा किया। उनके बाद शीघ्र ही लेनिनग्राद स्वेदलोव्स्क प्रदेश तथा आगे चलकर देश के अन्य भागो मे भी औद्योगिक मजदूरो और दफ्तरी कमचारियो ने इसी तरह की सफलताए प्राप्त की। सातवर्षीय योजना अथव्यवस्था की पूरी की पूरी शाखाओ तथा पूरे के पूरे क्षेत्रो और जनतत्रा के लिए इसी आशावादी वातावरण म समाप्त हुई। इस प्रकार निश्चित कठिनाइयो और सोवियत सघ की प्रतिरक्षा क्षमता को सुदृढ बनान (खासकर कैरीबियन सकट तथा वियतनाम मे सयुक्त राज्य अमरीका द्वारा युद्ध छेड दिये जाने के कारण) के हेतु सैनिक खर्चों मे अनिवाय वृद्धि के बावजूद, सोवियत सघ के आर्थिक विकास ने बडी प्रगति की।

१ जनवरी, १९६६ श्रमजीवी जनगण के लिए दो समाचार लायी। पहला समाचार यह था कि उस दिन से देहाती इलाको मे चीनी, मिठाई, सूती कपडे, बुनी हुई पोशाको और कुछ अन्य सामाना का दाम कम करके उसी स्तर

पर ले आया जायेगा जो शहरो मे प्रचलित है (इसका महत्व समझने के लिए यह ध्यान मे रखना जरूरी है कि उन दिनो लगभग आधी आबादी देहातो मे रहा करती थी)। दूसरी घटना का सबध केन्द्रीय समिति के इस फैसले से था कि अनेक फैक्टरिया द्वारा पेश किये गये इस सुझाव का समथन किया जाये जिसमे सामान को किफायत से खच करने मे प्रतियोगिता सगठित करने का आह्वान किया गया था।

सोवियत स्त्री और पुरुष जो एक ऐसे देश मे बडे हुए है जहा अयव्यवस्था नियोजित है और उत्पादन के साधन सारे समाज की सम्पत्ति है, भली भाति जानते हैं कि अगर सामान को किफायत से इस्तेमाल किया जाये तो कितनी बचत हो सकती है। कडी किफायत की नीति पर अमल करने से अतिरिक्त धातु, ईंधन और कच्चे माल की बचत हो सकती है जिससे आथिक विकास का आशिक आधार मुहैया हो सकता है तथा आम खुशहाली मे वृद्धि हो सकती है। इसी को ध्यान मे रखकर श्रमजीवी जनगण ने १९६६–१९७० की अवधि के लिये नये पचवर्षीय योजना पर विचार विमश शुरू किया। जाहिर है कि काफी ध्यान गत सात वर्षों मे प्राप्त अनुभव तथा परिणामो के विश्लेषण को दिया गया। यह वही समय था जब नये लक्ष्याक तैयार किये जा रहे थे। ये सवाल सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की अगली काग्रेस मे भी विचार विमश का केन्द्रबिन्दु थे।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वी काग्रेस का उद्घाटन २९ माच, १९६६ को क्रेमलिन के काग्रेस प्रासाद मे हुआ। इसमे लगभग १ करोड २५ लाख कम्युनिस्टो के प्रतिनिधियो ने भाग लिया।

लगभग ५ हजार प्रतिनिधि देश के कोने-कोने से मास्को मे एकत्रित हुए थे। पार्टी के सवश्रेष्ठ सदस्य जो देश का गौरव थे, सोवियत सघ की राजधानी मे इसलिए आये थे कि मिलकर आगे के कायभारो का पुनर्वेक्षण करे तथा सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और समस्त सोवियत समाज के राजनीतिक और आथिक काम की मुख्य प्रवत्तिया को निर्धारित करे। केन्द्रीय समिति की मुख्य रिपोट ब्रेज्नेव ने पेश की और कोसीगिन ने १९६६–१९७० की अवधि के सोवियत आथिक विकास के लिए पचवर्षीय योजना के प्रस्तावित निर्देशो की घोषणा की।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति द्वारा उठाये गये कायभार का समस्त प्रतिनिधियो ने सवसम्मति से समथन किया।

पूरी पार्टी की ओर से उन्होंने दो वर्ष पहले केन्द्रीय समिति के अक्तूबर पूर्णाधिवेशन द्वारा लिये गये फैसलो के बुनियादी महत्व पर जोर दिया। उन्होंने सोवियत समाज के जीवन मे कम्युनिस्ट पार्टी की राजनीतिक और संगठनात्मक भूमिका मे वृद्धि की ओर ध्यान आकृष्ट किया। नेतृत्व की कार्यशैली तथा कार्यविधि मे आत्मनिष्ठ गलतियो का सुधार करने के लिए जो सुझाव रखे गये थे, वे भी सर्वसम्मति से स्वीकार किये गये। काग्रेस ने १९६५ मे हुए केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशना द्वारा स्वीकृत फसला का भी सर्वसम्मति से समर्थन किया जिनसे युक्तिसगत ढग से उन त्रुटियो को प्रकट करने म सहायता मिली थीं जो समाजवादी अर्थव्यवस्था के विकास मे बाधक हो रही थी। इन फैसलो ने आर्थिक प्रबध काय के प्रति एक नया दृष्टिकोण अपनाया।

काग्रेस २९ माच से ८ अप्रैल, १९६६ तक जारी रही। इसका सारा काम कारोबारी ढग से और सिद्धातयुक्त वातावरण मे पूरा हुआ। प्रतिनिधियो ने विगत सात वर्षों मे सोवियत अर्थव्यवस्था की समुचित उपलब्धियो की बडी प्रशसा की। इन सात वर्षों के दौरान पूरे अर्थ व्यवस्था के मुख्य कोपो मे ९० प्रतिशत और उद्योग के कोप मे १०० प्रतिशत की वृद्धि हो गई थी। औद्योगिक उत्पादन की मात्रा मे ८४ प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि योजना मे केवल ८० प्रतिशत की वात की गई थी। यद्यपि सामूहिक और राजकीय फार्मों के उत्पादन सूचकाको को पूरा करने मे कुछ कमी रह गई थी, मगर इस क्षेत्र मे भी कुल उन्नति शानदार रही। ऐतिहासिक दृष्टि से, सोवियत सघ के पास १९५९ मे जो आर्थिक और प्रतिरक्षा क्षमता मौजूद थी, उसके निर्माण मे ४० साल लग गये, और अगर युद्ध के वर्षों को निकाल दिया जाये तो भी ३२ वर्षों की कडी मेहनत लगी, जबकि १९५९ से १९६५ के सात वर्षों मे सोवियत सघ के श्रमजीवी जनगण ने कम्युनिस्ट पार्टी के निदेशन मे उस उपलब्धि को सफलतापूर्वक दो गुना कर दिया था। जिस काम मे कभी ३२ वप लगे थे, उसम अब केवल सात वप लगे। कम्युनिस्ट निर्माण की अवस्था म सोवियत आर्थिक विकास की गति का इससे अदाजा किया जा सकता है।

इस परिमाणात्मक वृद्धि से ज्यादा शानदार इसी अवधि म अर्थव्यवस्था की गुणात्मक प्रगति थी। उदाहरण के लिए, देश के ईंधन साधनो मे निर्णायक तत्व अब तेल और गैस थे। गैस उद्योग पर सातवर्षीय योजना

की पूरी अवधि मे जितना खर्च किया गया था, अब उससे दागुनी आमदनी हो रही थी। अब देश मे रेल परिवहन मे ८५ प्रतिशत डीजल और बिजली के इंजनो का प्रयोग होता था जबकि १९५६ मे इनका प्रयोग केवल २६४ प्रतिशत था। सश्लेषित पदार्थों से बनी चीजा का उत्पादन अभूतपूर्व गति से बढ रहा था और सातवे दशक के मध्य तक रेडियो इजीनियरी और इलेक्ट्रोनिकी देश के इजीनियरी उद्योग पर हावी हो गये थे। उद्योग की तीन सबसे किफायतवाली शाखाओ–बिजली उत्पादन, रसायन तथा इजीनियरी उद्योग का उत्पादन १९६५ म कुल औद्योगिक उत्पादन का ३५ प्रतिशत था जबकि १९५८ म २७ प्रतिशत था। वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति जो अतरिक्ष म सोवियत सघ की ऐतिहासिक उपलब्धिया मे मतिमान हो चुकी थी, सोवियत जीवन के सभी क्षेत्रो म शानदार उपलब्धिया को साथ लायी थी।

सैकडा मिसाले देकर बताया जा सकता था कि कृपि और उद्याग से शारीरिक श्रम का किस हद तक त्याग किया जा रहा था, अथव्यवस्था म स्वचालित उत्पादन लाइने तथा प्रक्रमित मशीनें जारी की जा रही थी, जेट विमानो की बदौलत विमान यात्री सेवा मे क्रातिकारी परिवतन लाये जा रहे थे और तेज रफ्तारवाले सोवियत जहाज समुद्रो पर चल रहे थे।

मातवर्षीय योजना के शुरू तक सोवियत व्यापारिक बेडा (टनभार की दप्टि से) ससार मे बारहवा था और उस समय तक विश्वयुद्ध का प्रभाव, जिसके दौरान इसके आधे स अधिक जहाज नप्ट हो गये थे, अभी देखने म आता था। लेकिन १९६५ तक सोवियत व्यापारिक बेडा छठे स्थान पर पहुच गया था इसके प्रत्यक दस मे आठ जहाजा का निर्माण सातवे दशक मे किया गया था। सोवियत ध्वजयुक्त आधुनिक जलयान अब ९८ देशा की बन्दरगाहा म दिखाई देने लगे थे।

रिहायशी और औद्योगिक इमारतो का निर्माण भी उस समय बडी तेजी से हो रहा था। गोर्की, नोवोसिबीस्क, ताशकन्द, बाकू और खारकोव अब देश के प्रमुख प्रशासकीय तथा औद्योगिक केन्द्रो जैसे मास्को, लेनिनग्राद और कीयेव के टक्कर के हो चुके थे जिनमे मे प्रत्येक की आबादी सातवर्षीय योजना से पहले ही १० लाख से अधिक हो चुकी थी। सोवियत सघ के नक्शे पर १७८ नये नगरा का उदय हो चुका था जिनमे सबसे प्रसिद्ध बेलोरूस मे सोलीगोस्क, लिथुआनिया मे नरिगा, रोस्तोव के

नज़दीक त्सिमल्यास्क, कज़ाखस्तान मे शाखतिस्क, आदि थे। इनके अलावा उराई, जेलेज्नोगोस्क-इलीम्स्की और नोवोचेबोक्सास्क, आदि का तो कहना ही क्या जिनके बारे मे अभी हाल ही मे कम ही लोग जानते थे। लेकिन इसी तरह कुछ वष पहले अगास्क, ब्रात्स्क और दिव्नोगोस्क भी बहुत प्रसिद्ध नही थे, हालाकि १९६५ तक वे नये होने पर भी सोवियत साइबेरिया के प्रसिद्ध औद्योगिक केद्र बन चुके थे। इन तीना शहरो का भविष्य बहुत शानदार है उराई, त्युमेन इलाके मे विशाल तेल क्षेत्र है, जेलेज्नोगोस्क-इलीम्स्की के *निकट पूर्वी साइबेरिया* के जगलो मे छोटी कोर्शुनीखा नदी के तट पर बहुत कच्चा लोहा पाया गया। नोवोचेबोक्सास्क चुवाशिया मे, जो पहले केवल कृषि क्षेत्र था, रसायन उद्योग का एक नया केद्र बन गया।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, सातवर्षीय योजना के सभी ध्येय पूरे नही हुए मगर मुख्यतया उन सात वर्षों का दौर प्रगति का दौर था। सातवर्षीय योजना की कल्पना कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार के निर्माण मे पहले कदम के रूप मे की गई थी। सब मिलाकर देश की आर्थिक और प्रतिरक्षा क्षमता मे वृद्धि हुई थी और लोगो का जीवन स्तर बराबर ऊचा होता गया था।

१९५९-१९६५ की अवधि के दौरान कायसप्ताह घटा दिया गया, कारखानो और दफ्तरो दोनो जगह छ और सात घटे काय दिवास लागू किया जाने लगा, जबकि उद्योग मे औसत मासिक वेतन ७८ से ९५ रूबल तक हो गया था। सामाजिक उपभोग कोष से मिलनवाले बोनस और भत्त मे भी वद्धि हुई थी। अगर इन वद्धिया को जोडा जाये तो वास्तविक वेतन १०४ से १२८ रूबल मासिक औसत तक पहुच गया था। १९६५ मे सामूहिक किसानो के लिए पेंशन की व्यवस्था जारी की गई, जिसका मतलब यह था कि सभी सोवियत नागरिका को—स्त्रिया के लिए ५५ वष और पुरुषो के लिए ६० वष की आयु के बाद पेंशन मिलन लगी थी (*कई पेशे ऐसे भी थे जिनमे पेंशन पाने की आयु और कम थी*)। १९६५ मे ३ करोड १० लाख नागरिका को पेंशन मिल रही थी। १९५८ के मुकाबले १ करोड २० लाख की वृद्धि हुई थी।

उसी अवधि मे शहरा और देहात म १ करोड ७० लाख फ्लैट और निजी घरा का निर्माण हुआ जिसका मतलब यह था कि देश के रिहायशी
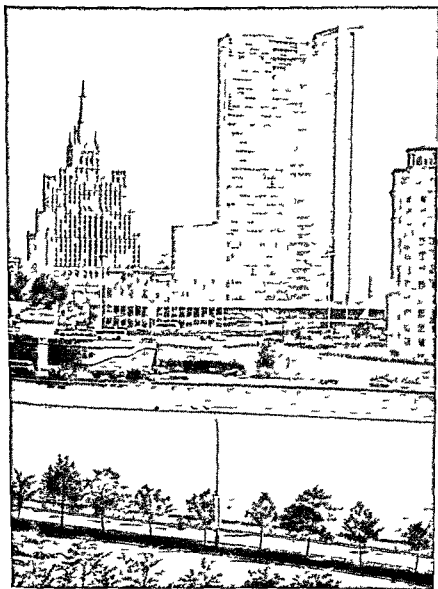
मास्को मे परस्पर आर्थिक सहायता परिषद का भवन

मकानों में ४० प्रतिशत की वृद्धि हुई। अधिक मात्रा में आधुनिक सुविधाओं की व्यवस्था की जा रही थी और १९६५ तक मास्को में प्राय: १०० निवासियों में, ८२ के फ्लैटों में गुसलखाने थे, ८८ के यहां घर गर्माने की केन्द्रीय व्यवस्था थी और ९५ के घरों में पानी के नल थे।

हाल के वर्षों की उपलब्धियों की प्रशंसा करने के साथ-साथ सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वीं कांग्रेस के प्रतिनिधियों ने उन त्रुटियों पर गहरी चिंता प्रकट की जो सोवियत आर्थिक विकास में कांग्रेस से पहले के सात वर्षों के दौरान सामने आयी थीं। नयी पंचवर्षीय योजना पर बहस करते हुए इस बात पर ध्यान दिया गया कि पिछली गलतियों से सबक लिया जाय। योजना की तैयारी के सारे प्रारम्भिक काम में, उसके मसविदे में संशोधन करते या कुछ जोड़ते समय लेनिन के इस निर्देशन को सामने रखा गया कि "कांग्रेस में आर्थिक निर्माण का व्यावहारिक अनुभव लाया जिसपर पार्टी के तमाम सदस्यों के संयुक्त श्रम और संयुक्त प्रयास द्वारा विचार कर लिया गया है और जिसका ध्यानपूर्वक विश्लेषण कर लिया गया है"।*

अब तक की उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए कम्युनिस्ट पार्टी ने सोवियत जनगण का आह्वान किया कि वर्गहीन समाज की दिशा में १९६६–१९७० की अवधि में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया जाय। २३वीं कांग्रेस में कहा गया – नयी पंचवर्षीय योजना का मुख्य आर्थिक कार्यभार है विज्ञान और प्रविधि की उपलब्धियों का पूरा उपयोग करके तथा समस्त सामाजिक उत्पादन के उद्योगीकरण और कारगरता में वृद्धि करके उद्योग का काफी विस्तार करना तथा कृषि में विकास की उच्च तथा सुस्थिर दर प्राप्त करना और इस तरह इस बात की सम्भावना पैदा करना कि जनगण का जीवन स्तर काफी ऊंचा हो और समस्त सोवियत जनगण की भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताएं और अधिक पूरी की जा सकें।

साधनों का बड़ी मात्रा में पुनर्विभाजन करने का फैसला किया गया ताकि उपभोग के मालों का उत्पादन बढ़ाया जा सके, भारी और हलके उद्योगों की विकास दर के अंतर को बड़ी हद तक कम किया जाये, तथा

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड ३०, पृष्ठ ३७९

सावजनिक सेवाओं की ओर अधिक ध्यान दिया जाये। अथव्यवस्था मे ३,१० अरब रूवल का मूल विनियोग होना था जो पिछले पाच वर्षों की तुलना म ५० प्रतिशत अधिक था। औद्योगिक उत्पादन म ५० प्रतिशत वृद्धि तथा कृपि उत्पादन मे २५ प्रतिशत वृद्धि होनी थी। सामूहिक और राजकीय फार्मों के मुख्य उत्पादन कोप को दो गुना करना था। ऐसा प्रवध किया गया कि इस क्षेत्र मे श्रम की उत्पादिता मे उद्योग की तुलना म अधिक वृद्धि दर सुनिश्चित हो जाये। इससे यह आशा की जाती थी कि शहर और देहात की जीवन तथा काय की स्थितियो म मौलिक अतर के उन्मूलन की रफ्तार तेज की जा सकेगी और इस तरह देहाती और शहरी आबादियो की भौतिक और सास्कृतिक सुविधाओ के बीच की खाई को पाटने की दिशा मे यह एक बडा कदम उठाया जा सकेगा।

पार्टी ने यह ध्येय निर्धारित किया कि १९७० तक राष्ट्रीय आय मे ३८-४१ प्रतिशत वद्धि हो, प्रति व्यक्ति वास्तविक आय ३० प्रतिशत बढे, निम्नतम वेतन ६० रूवल हो और काय सप्ताह कम करके पाच दिन का कर दिया जाये। इसका भी आयोजन किया गया कि शिक्षा व्यवस्था, स्वास्थ्य सेवाओ, सावजनिक सुविधाओ, खुदरा बिक्री की व्यवस्था मे सुधार करने, तथा रिहायशी गह निर्माण कायक्रम मे और भी विस्तार करने के लिए बहुत से कदम उठाये जायें।

सक्षेप मे १९६६-१९७० की अवधि की पचवर्षीय योजना म कृपि, उद्योग, परिवहन व्यवस्था या निर्माण प्रयोजनाओ, विज्ञान या वैदेशिक आर्थिक नीति, श्रम साधन अथवा साइबेरिया और सुदूर पूव के आर्थिक विकास के सबध मे जो भी कायभार पेश किये गये थे, उन सव का अतिम उद्देश्य सोवियतो की धरती की लगातार प्रगति और समृद्धि था।

आठवी पचवर्षीय योजना को दुनिया के अखबारो मे काफी स्थान दिया गया। १९१७ के फौरन बाद बोल्शेविको और सवहारा अधिनायकत्व पर और फिर पचवर्षीय योजनाओ, सामूहिक फार्मों और तथाकथित "लौह आवरण" पर जिस तरह कीचड उछाला गया, उसकी कल्पना करना कठिन है। अब फिर उसी तरह की बातो ने जोर पकडा मगर यह उल्लेखनीय है कि अब इन बातो मे "यथाथ" और "कारोबारी" जैसे शब्दो की बहुतायत थी, और उनमे "सुविचारित प्रस्थापनाए" जसे

वाक्यांश भी नजर आते थे। संयुक्त राज्य अमरीका के एक प्रवक्ता ने लिखा "नयी योजना ऐसी नहीं कि पश्चिम हाथ पर हाथ धरे बैठा रहे।" एक ब्रिटिश अखबार ने इसका उल्लेख किया कि "नयी पंचवर्षीय योजना विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन तथा उन देशों के लिए जिन्होंने हाल ही में स्वतन्त्रता प्राप्त की है, नमूने का काम देती है।"

स्वभावतः सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वीं कांग्रेस ने आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्राष्ट्रीय महत्व का मूल्यांकन बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण से किया। "निर्देशों में दिये हुए लक्ष्यों की पूर्ति विश्व शांति और सुरक्षा को सुदृढ़ करने तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओंवाले राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के लेनिनवादी सिद्धांत को व्यापक रूप से लागू करने की दिशा में एक भारी योगदान होगी।" आगे चलकर कांग्रेस के प्रस्ताव में यह भी कहा गया था कि "पंचवर्षीय योजना की पूर्ति इस बात का ताजा सबूत मुहैया करेगी कि सोवियत जनगण बिरादराना समाजवादी देशों, अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा तथा विश्व मुक्ति आंदोलन के प्रति अपना अंतर्राष्ट्रीय दायित्व पूरा कर रहे हैं।"

२३वीं कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टी की एकता तथा संघर्षशीलता, जनगण के साथ उसके गहरे, अटूट संबंध का प्रमाण थी। पार्टी नियमावली में कई परिवर्तन किये गये जिनका उद्देश्य पार्टी की सदस्यता को और भी अधिक गौरव की बात बनाना, पार्टी संगठनों की पहलकदमी को तेज करना, और प्रत्येक पार्टी सदस्य को अपने विशेष संगठन तथा पूरी पार्टी के काम के लिए अधिक जिम्मेदार बनाना था। यह भी निश्चय किया गया कि केंद्रीय समिति के अध्यक्षमंडल का नाम बदल कर केंद्रीय समिति का राजनीतिक ब्यूरो (पोलिट ब्यूरो) कर दिया जाये। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव के पद का नाम प्रथम सचिव के बजाय फिर महासचिव बना।

कांग्रेस द्वारा निर्वाचित केंद्रीय समिति ने पोलिट ब्यूरो के सदस्य तथा उम्मीदवार सदस्य चुने। पोलिट ब्यूरो में ११ सदस्य थे ब्रेज्नेव, किरिलेंको, कोसीगिन, माजुरोव, पेल्शे, पोदगोर्नी, पोल्यान्स्की, शेलेपिन, शेलेस्त, सूस्लोव तथा वोरोनोव। ब्रेज्नेव सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव चुने गये।

यह कहना सही होगा कि समस्त जनगण ने इस काग्रेस के काम मे भाग लिया। काग्रेस के उद्घाटन के उपलक्ष मे फैक्टरिया, राजकीय और सामूहिक फार्मों, निर्माण स्थलो, खदाना, तेलकूपो तथा अन्य सस्थाना ने, उस समय तक की स्थापित परम्परा के अनुसार, अपने लिए उच्च ध्येय निश्चित किये, विशेप पालिया सगठित की, तथा जी जान से कम्युनिस्ट श्रम आदोलन मे शरीक हो गये। काग्रेस द्वारा स्वीकृत प्रस्तावा ने लोगा को आगे के कायभार पूरा करने मे और अधिक प्रयत्न करने के लिए प्रेरित किया।

१९६६ मे अखिल सघीय लेनिन कोम्सोमाल की १५वी काग्रेस मास्को मे हुई। कोम्सोमोल के २ करोड ३० लाख सदस्या के प्रतिनिधि क्रेमलिन मे जमा हुए। उन्ह बहुत सी वातो और विपयो पर विचार करना था। पिछली काग्रेस चार साल पहले हुई थी। तव से १५,००,००० कोम्सोमोल सदस्य कम्युनिस्ट पार्टी मे शामिल हो गये थे और लगभग ५ लाख नवयुवको और नवयुवतियो को उनकी जिला कोम्सोमोल समितिया न सबसे तात्कालिक महत्व की निर्माण प्रायोजनाम्रो पर काम करन के लिए भेजा था। उन्होंने रेलवे लाइनें बिछाने म, बिजलीघरा और रासायनिक कारखाना के निर्माण मे, सास्कृतिक केन्द्र और अस्पताल खडा करने म हाथ वटाया था और सुदूर उत्तर मे, साइवेरिया और सुदूर पूव म खनिज खजाने को खोदकर वाहर लाने मे बडे साहस का परिचय दिया। कम्युनिस्ट निर्माण मे सक्रिय सहयोग के लिए ब्रात्स्क, वोल्ज्स्की, क्रिवोई रोग, नोरील्स्क, ज्दानोव और रुदनी के कोम्सोमोल सगठना को १९६६ म श्रम की लाल पताका का पदक प्रदान किया गया।

सारे देश के कोम्सोमोल सदस्या ने अपने श्रेष्ठतम सदस्य काग्रेस म भेजे। ऐसा ही एक प्रतिनिधि गोर्वाचोव था जिसने कालूगा नगर की कोम्सोमोल जिला समिति के प्रतिनिधि की हैसियत से अवाकान-ताइशेत रेलवे के निर्माण मे भाग लिया था। उसने अनेक प्रकार के काम किये थे। किसी समय वह अकुशल मजदूर रह चुका था, फिर उसने खुदाई मजदूर, लकडहारे और कक्रीट बिछानेवाले का काम भी किया था। एक प्रथम श्रेणी के मजदूर की हैसियत से उसे रहने के लिए शहर म एक फ्लैट दिया गया और एक स्थायी, निश्चित नौकरी। सभी मानते थे कि उसने हर तरह की कठिन कायस्थिति म अपनी दढता का परिचय देकर इन सुविधाम्रा का

अधिकार प्राप्त किया था। एकमात्र गोर्बाचोव इसका स्वीकार करने वा विरोधी था और एक बार फिर वह साइबेरियाई जंगलो मे पहुच गया जहां ऊस्त इलीम पनबिजलीघर को मेन लाइन स जोडने के लिए एक रलवे का निर्माण किया जाना था।

प्रतिनिधियो म एक था करासेव। १९६२ म २४ वर्ष की आयु म उसे रियाजान के समीप एक पिछडे हुए सामूहिक फाम का प्रधान बनाकर भेजा गया। इस सामूहिक फाम म बीज, खाद और कृषि मशीनरी का अभाव था। लेकिन इस नौजवान काम्सोमोल सदस्य न इसमें नयी जान डाल दी और फाम को अधिक कामकुशलता के आधार पर पुन सगठित किया। थोडे ही दिनो मे स्थिति सुधर गई तथा काम के पारिश्रमिक की दर काफी ऊची हो गई। नवयुवक अध्यक्ष भोर स साय तलक काम म जुटा रहता था। लगता था कि उस विश्राम का तनिक समय नहीं मिलता था। लेकिन १९६५ म उसे "काम्सोमोल्स्काया प्राव्दा" द्वारा सगठित एक कविता प्रतियोगिता म प्रथम पुरस्कार मिला।

नोवोसिबीर्स्क के प्रतिनिधियो मे एक नवयुवक था भौतिकी तथा गणित विज्ञानो का डाक्टर तथा नवयुवक वैज्ञानिको की अखिल सघीय परिषद का अध्यक्ष जुरावल्योव। बेल्कोविच जो देश की सवश्रेष्ठ रसोइया मानी जाती थी रीगा से इस काग्रेस म भाग लेन आयी तथा शतरज की नारी विश्व चैम्पियन गपरिदाश्वीली, जो 'शतरज की बिसात की रानी' कही जाती थी, त्बिलीसी से आयी।

कुल मिलाकर ४ हजार प्रतिनिधि मास्को म एकत्रित हुए। उनमे विभिन्न जातियो के लोग थे। उनका शिक्षा स्तर उनकी दिलचस्पिया स्वभाव और अनुभव एक दूसरे से बहुत भिन्न थे। लेकिन इन सबसे महत्वपूर्ण वह चीज थी जो उनको एकताबद्ध करती थी। उनके विचार और सिद्धात एक थ। वे कम्युनिस्ट पार्टी का सघर्षशील रिजव दस्ता थे। इसी लिए उन्होंने जिस केन्द्रीय विषय पर विचार किया वह था नौजवानो की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा। इस सबध मे प्रतिनिधियो ने इस बात पर विचार किया कि कम्युनिस्ट की हैसियत से अपने काम, अपने अध्ययन तथा प्रशिक्षण मे बेहतरीन परिणाम कैसे प्राप्त किये जा सकते है। उन्होंने इस बात पर विचार किया कि आर्थिक निर्माण मे और देश के सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन मे कोम्सोमोल की भूमिका कैसे बढाई जाये।

काग्रेस ने पार्टी नियमावली मे इस नयी धारा को जोडने का समथन किया कि २३ वप से कम आयु के लोग कम्युनिस्ट पार्टी मे तभी लिये जायेंगे जब कोम्सोमाल उनकी सिफारिश करेगा। इसका मतलब यह था कि पार्टी म दाखिला चाहनेवालो से अब ज्यादा कडी शर्तो की माग की जा रही थी और कम्युनिस्ट पार्टी के रिजव दस्ते के रूप मे कोम्सोमोल की भूमिका का वजन बढ गया था।

इस सबध मे यह बात उल्लेखनीय है कि १९६६ मे २६ वप से कम आयु के लोगा की सख्या आबादी मे लगभग आधे तक पहुच गयी थी। इस पीढी के लोगो को महान देशभक्तिपूण युद्ध का ज्ञान केवल पुस्तको, फिल्मा या बडे बूढो की कहानियो द्वारा ही हुआ था और अधिक सम्भव यही है कि उन्हे अन्न राशनिग की बाबत कुछ याद ही न हो। एक देश में समाजवादी निर्माण की विशेष समस्याए और स्थितिया उनके लिए केवल इतिहास का अग भर थी।

लेकिन निकट भविष्य मे इसी पीढी के लोगो को औद्योगिक उद्यमो तथा सामूहिक फार्मों के प्रबध की जिम्मेदारी अपने कधा पर लेनी थी, अनुसधान सस्थानो मे मुख्य भूमिका अदा करनी थी तथा देश का नेतृत्व करना था। इसका मतलब यह था कि जो लाग इस पीढी की शिक्षा-दीक्षा कर रहे तथा उसको कम्युनिस्ट समाज के निर्माता के रूप मे अपनी भूमिका अदा करने के लिए तैयार कर रहे थे, उनके कधो पर एक बडी भारी जिम्मेदारी आ गयी थी। यही कारण है कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २२वी काग्रेस और फिर १५वी कोम्सोमोल काग्रेस के कामा मे विचारधारात्मक समस्याओ की ओर विशेष ध्यान दिया गया। एक और बात जिसकी वजह से श्रमजीवी जनगण ने राजनीतिक काम मे बडी दिलचस्पी ली, यह थी कि महान अक्तूबर क्राति की पचासवी जयती करीब आ रही थी। यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि लोग बार-बार १९१७ से एकत्रित पचास वर्षों के अनुभव का अध्ययन करे, उससे लाभदायक सबक ल, एक नये समाज की उत्पत्ति को निर्धारित करनेवाले मौलिक नियमा का ज्ञान प्राप्त करे और इस प्रकार इस योग्य बनें कि कम्युनिज्म के खुले और छिपे सभी शत्रुओ को, विभिन्न प्रकार के सशोधनवादिया तथा कठमुल्लाओ को निर्णयात्मक रूप से पराजित करे जो सोवियत जनगण के ऐतिहासिक अनुभव के तात्पय और महत्व को तरह-तरह से बिगाड कर और तोड-मरोड कर पेश करते हैं।

आनेवाले अवसर के उपलक्ष मे उचित समारोहो की तैयारी करने मे पार्टी, कोम्सोमोल तथा ट्रेड-यूनियनो ने रास्ता दिखाया। बिना किसी अतिशयोक्ति के यह कहा जा सकता है कि समस्त देश ने आनेवाली जयती की तैयारी मे भाग लिया।

१९६६ की गर्मियो मे सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के नियमित चुनाव हुए। नवनिर्वाचित सदस्यो ने अपनी बारी मे सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमडल चुना। अध्यक्षमडल के अध्यक्ष पोदगोर्नी चुने गये। चुनाव अभियान का सगठन करने के दौरान कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने प्रचार का आधार सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वी काग्रेस के उन निर्देशो को बनाया जिनका सबध समाजवादी जनवाद के विकास को प्रोत्साहित करने तथा राजकीय और सार्वजनिक सगठनो को अधिक निपुणता से चलाने की जरूरत से था। समय के प्रवाह के साथ यह बात उभरकर सामने आ चुकी थी कि समाजवादी जनवाद की सपूर्ण अभिव्यक्ति श्रमजीवी जनगण के प्रतिनिधियो की सोवियतो मे होता है जो राज्य सत्ता की सस्थाए तथा व्यापकतम सार्वजनिक सगठन दोनो है। पार्टी के नेतृत्व मे सोवियते जनता को एकताबद्ध तथा एकत्रित करती है तथा देश के आर्थिक तथा सास्कृतिक जीवन के नियोजित सगठन को बढावा भी देती है। १९३६ के सविधान की स्वीकृति के बाद से १,८०,००,००० चुने हुए प्रतिनिधि राज्य प्रशासन के इस लेनिनवादी स्कूल से गुजर चुके थे। यही एक आकडा यह सिद्ध करने के लिए काफी है कि सोवियत सघ मे एक तथाकथित शासक श्रेणी के सबध मे पूजीवादी प्रचार कितना निराधार है।

रूसी सोवियत सघीय समाजवादी जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत की एक सदस्या सिसोयेवा ने १९६६ मे एक युवा प्रतिनिधिमडल के सदस्य के रूप मे सयुक्त राज्य अमरीका की यात्रा की थी। उन्होने बताया है कि एक बार उनके प्रतिनिधिमडल की कुछ अमरीकी सीनेटरो से भेंट हुई। सिसोयेवा ने जब उन्हे बताया कि वह मास्को के निकट एक राजकीय फार्म मे दूध दूहने का काम करती है तो उन लोगो की प्रतिक्रिया देखते ही बनती थी। "मुझे आज भी याद है कि यह सुनते ही उनके मुह लटक गये थे और यह समझना कठिन नही था कि उनकी काग्रेस म कोई दूध दूहनेवाली नही है।" बाद मे एक फाम पर सिसोयेवा से यह

दिखाने को कहा गया कि रूस मे गायें कैसे दूही जाती ह। वे इस परीक्षा म पूरी तरह उत्तीण हुई। आगे चलकर २५ वर्षीया मिसोयेवा ने अपनी यात्रा में यह नतीजा निकाला "आपको शायद आश्चय हो कि मैंन वह घटना क्यो सुनाई। अमरीका मे मरा यह अनुभव कोई आकस्मिक बात नही थी। पूजीवादी प्रचार मे यह धारणा पैदा करन का प्रयास किया जाता है कि हमार दश मे साधारण जनगण का केवल अकुशल काम करने का अधिकार है और कम्युनिस्ट, उनका कहना है, शासन करत हैं। व जनता का शासक वग यानी पार्टी तथा श्रमिक जनता म विभाजित करते ह। परन्तु आप अगर उम राजकीय फाम की बात ल जहा मैं काम करती हू ता हर पाचवा मजदूर कम्युनिस्ट है। हम खुद शासक वग हैं।"

१९६६ मे सावियता मे मदस्या की कुल सख्या २० लाख थी और कोई ढाई करोड स्वयमेवक भी ममय मिलन पर उनक काम मे हाथ बटाया करत थे। इसका मतलब यह है कि मतदाताओ मे हर सातवा आदमी सावियता से सबधित नाना प्रकार की सावजनिक समितिया म भाग ले रहा था।

आठवी पचवर्षीय योजना के दौरान यह निश्चय किया गया कि श्रमजीवी जनगण के प्रतिनिधियो की सावियता का राष्ट्र के रोज़मर्रे के जीवन मे अधिक महत्वपूण भूमिका अदा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। यह तय किया गया कि सावियत सघ की मत्रि परिषद की रिपोर्टों पर सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवशन म विचार किया जाये तथा सघीय जनतत्र और स्वायत्त जनतत्र के स्तर पर भी ऐसा ही किया जाय। स्थानीय सावियते भी अपने नियमित अधिवेशना का अधिक महत्व दन लगी और अपने विचार विमश की तालिका म अधिक व्यापक क्षेत्र के विषया को शामिल करने लगी। इन विषयो का सबध था सभी स्तरा पर सरकारी फैसलो के परिपालन की जाच-पडताल से, वित्तीय, भूमि व्यवस्था तथा नियोजन की समस्याओ के समाधान से, औद्योगिक उद्यमा के सचालन के नियत्रण से तथा जनगण की रोज़मर्रे की सामाजिक तथा सास्कृतिक आवश्यकताओ की पूर्ति से।

जनगण के प्रति प्रतिनिधिया तथा अधिकारिया मे ज़िम्मेदारी की बढती हुई भावना उस समय बहुत स्पष्ट रूप से सामने आयी जब सोवियत सत्ता के पचासवे वष, १९६७ के लिए आर्थिक विकास की योजना तथा

राजकीय बजट को स्वीकार किया गया। दिसम्बर, १९६६ म अधिवेशन के प्रारम्भ होने से कई सप्ताह पहले उन प्रतिनिधियो को जो सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत की स्थायी समितियो के सदस्य थे, अपने नियमित कामो से मुक्त कर दिया गया। वे अधिवेशन म इन दो दस्तावेजो की तैयारी से सबधित बहस म भाग लेने मास्को आये। राजकीय नियोजन आयोग के अध्यक्ष बैबाकोव, तथा वित्त मत्रि गार्बुजोव ने एकत्रित समिति सदस्यो के समक्ष रिपोर्ट पश की जिसके बाद क्रेमलिन के काग्रेस प्रासाद के हाल तथा लाबी प्रतिनिधियो के कार्यालय बना दिय गये। पूरे वातावरण पर विचारो का आदान प्रदान तथा बहस का प्रभाव था, विभागीय प्रधानो, वैज्ञानिको, मजदूरो तथा विशिष्ट आमत्रित परामशदाताओ, आविष्कारो तथा विभिन्न प्रयोजनाओ के सकलनकर्ताओ की बैठकें की गईं। भावी दस्तावेजो के एक-एक शब्द और आकडे का खूब जाच की गयी और इस प्रकार अतिम प्रस्तावो का रूप धीरे धीरे निखर कर सामने आया। पहले यह तय किया गया था कि मध्य एशिया तथा देश के मध्य भाग को जोडनेवाली एक गैस पाइप लाइन १९६८ म चालू कर दी जायेगी, लेकिन विचार विमश के बाद वह तिथि १९६७ के अन्त मे नियत की गयी। अनेक वज्ञानिक अनुसधान केन्द्रो को अतिरिक्त धन प्रदान करने का निश्चय किया गया तथा अन्य कई प्रयोजनाए तयार की गईं।

विशेष ध्यान उन औद्योगिक उद्यमो द्वारा प्राप्त परिणामो की ओर दिया गया जिन्होने नियोजन की नयी व्यवस्था अपना ली थी। १९६६ क प्रारम्भ मे पूरे देश मे इस प्रकार के केवल ४३ कारखाने थे। वे एस कारखाने थे जो सुधार के पहले भी मुनाफा कमा रहे थे और अपनी पैदावार की श्रेष्ठता के लिए प्रसिद्ध थे। प्रथम सुधारोत्तर वष के अन्त तक ७०४ कारखाने, जिनमे मजदूर तथा प्रशासकीय अमला कुल मिलाकर २० लाख आदमी काम करते थे, नयी व्यवस्था को अपना चुके थे। इन तबदीलियो के परिणाम उत्साहवद्धक थे। उस वष के दौरान समस्त उद्योग की योजना की अतिपूर्ति हो गई औद्योगिक उत्पादन की मात्रा म ८६ प्रतिशत वद्धि हुई थी जबकि उन कारखानो मे जिन्होने नियोजन तथा आर्थिक प्रोत्साहन की नयी व्यवस्था अपनाई थी, उत्पादन मे १०२ प्रतिशत वद्धि हुई। इसका अथ यह हुआ कि उनके बोनस कोष म इसी

के अनुसार वद्धि हुई तथा गृह निर्माण, अवकाश गह, किंडरगाटना, शिशु भवना आदि के निर्माण मे भी इसी हिसाब से वद्धि हुई। इसमे कोई सदेह नही था कि आर्थिक सुधार से अच्छे परिणाम निकल रहे थे और यह तय किया गया कि अनेक पूरे के पूरे उद्योग फौरन नयी कायपद्धति को अपनायें।

अत मे आर्थिक योजना तथा बजट के मसविदा के सभी भागो का अध्ययन किया गया और उचित सिफारिशे स्वीकृति के लिए पेश की गइ। समितियो ने अपने अतिम फैसले तैयार किये और तब दिसम्बर, १९६६ मे सारे देश को यह अवसर मिला कि सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के काम की रिपोर्टें पढे तथा राजकीय नियोजन आयोग के मुख्य सदस्या तथा वित्त मत्रालय के प्रमुख लोगा की तथा सोवियता से सम्बद्ध स्थायी समितिया की रिपोर्टो का अध्ययन करे। ये सारी चीजे तथा तमाम बहसो की सामग्री तत्काल प्रकाशित हो गई, पहले समाचारपत्ना तथा पुस्तिकाओ के रूप मे और फिर अलग पुस्तक के रूप मे। फैसला का दढ आधार तथा वस्तुवादी स्वरूप सबके लिए स्पष्ट था। प्रत्येक सोवियत नागरिक जानता था कि १९६७ का वष समाजवाद की समस्त उपलब्धिया के परिवेक्षण का वष होगा, कि अक्तूबर क्राति की पचासवी जयती को प्रमुख श्रम उपलब्धियां द्वारा मनाना चाहिए। और वास्तव मे सोवियत इतिहास म १९६७ के वष को इसी रूप म याद रखा जायेगा।

क्रान्ति के पचास वष

जनवरी, १९६७ मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति न महान अक्तूबर समाजवादी क्राति की पचासवीं जयती की तैयारी के सबध मे एक निणय किया। पार्टी न एक बार फिर सोवियत जनगण का आह्वान किया कि सोवियता की भूमि के जन्म की पचासवी सालगिरह इस तरह मनायें कि वह सोवियत सघ के तमाम जनगण का, कम्युनिस्ट विचारा की विजय का समाराह हो। इस अपील पर अमल करते हुए एक नया प्रतियोगिता आदालन पचासवी सालगिरह के उपलक्ष म शुरू किया गया जिसमे लोगा ने विशेष श्रम उत्साह, खासकर उच्च

कोटि की राजनीतिक चेतना का परिचय दिया। इसकी एक और विशषता यह थी कि आर्थिक लक्ष्यो को राजनीतिक शिक्षा-दीक्षा के काय के साथ मिलाने का व्यापक प्रयास किया गया।

उन दिनो पुराने मजदूरो, पार्टी के पुराने सदस्यो की ओर लोगो का ध्यान विशेष रूप स आकृष्ट हुआ। क्रांति में जिन ३,५०,००० कम्युनिस्टो ने भाग लिया था उनम से जयती के समय तक कोई ६ हजार जीवित थे। पूरे देश मे कारखाना, कार्यालयो तथा स्कूलो म लोगो से उनकी मुलाकात आयोजित की गई। आम लोग उनकी बात सुनना चाहते थे जिन्होंने शिशिर प्रासाद पर धावा बोला था, सफेद गार्डों तथा हस्तक्षेपकारियो के छक्के छुडा दिये थे और स्वय लेनिन के पथ प्रदशन मे काम किया था। जयती की तैयारी के दौरान सारे देश में क्रांति के वीरो, उद्योगीकरण तथा कृषि-समूहीकरण के दौर के अग्रणी मजदूरो तथा उन लोगो का जिन्होंने महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध मे भाग लिया था, स्वागत सत्कार किया गया। सोवियत समाज के लिए यह एक युक्तिसगत घटना थी क्योकि वह क्रांतिकारी भावना को जगाये रखते हुए पीढी-दर-पीढी चली आनेवाली परम्पराओ को प्रतिबिम्बित करती थी। जयती के वष म एक महान घटना थी अज्ञात सैनिक की समाधि की स्थापना जिसपर ८ मई, १९६७ को अमर ज्योति जलाई गई। वह लेनिनग्राद के अक्तूबर के वीरो की समाधि से विशेष अनुरक्षको द्वारा मास्को लायी गयी थी। यह ज्योति एक सग ममर की तख्ती के पास सदा जलती रहेगी जिसपर ये शब्द खुदे ह "तेरा नाम कोई नही जानता पर तेरा कारनामा अमर है।" राजधानी को आनेवाले सभी यात्री राष्ट्र के शहीदो को श्रद्धाजलि चढाने यहा जरूर आते है।

क्रांति तथा समाजवादी निर्माण मे नई पीढी की बढती हुई दिलचस्पी को देखते हुए कोम्सोमोल ने क्रांतिकारी लडाइयो, गहयुद्ध तथा महान देशभक्तिपूण युद्ध की लडाइयो के स्थलो तथा विशालकाय औद्योगिक उद्यमो को जिनका निर्माण तीसरे दशक के अतिम भाग तथा चौथे दशक मे उद्योगीकरण के दौरान हुआ था किशोरो की यात्राओ का प्रबध किया। इन यात्राओ मे कोई २ करोड किशोर छात्र छात्राओ ने भाग लिया।

इस दौर मे श्रमजीवी जनगण की राजनीतिक परिपक्वता का जीवत परिचय उन अनगिनत दरख्वास्तो से मिलता था जो सोवियत सघ की

अक्तूबर क्राति की पचासवी जयती पर
लाल चौक मे प्रदशन

कम्युनिस्ट पार्टी मे दाखले के लिए दी जा रही थी। कडी जाच पडताल के बाद ६,६८,६९७ लोग उम्मीदवार सदस्य के रूप मे कम्युनिस्ट पार्टी म लिये गये। विगत वप की तुलना मे यह सख्या १,५८,००० अधिक थी। इनमे आधे से अधिक मजदूर थे, १४ प्रतिशत किसान तथा बाकी मे अधिकाश इजीनियर, तकनीशियन, कृपिविद, शिक्षक तथा अन्य पशा के लोग थे। लगभग तीन चौथाई कम्युनिस्ट उस समय भौतिक उत्पादन काय मे जुटे हुए थे।

१ ३ करोड कम्युनिस्टा के प्रत्यक्ष नतृत्व मे समस्त जनगण उस महान जयती के लिए तैयार हो रहे थे। क्रातिकारी युग के अरुणोदय के समय लेनिन ने कहा था "क्राति की सालगिरह मनाते हुए उचित है कि हम एक निगाह उस रास्ते पर डाले जिससे होकर क्राति को गुजरना पडा है। हमे अपनी क्राति असाधारण तौर पर कठिन परिस्थितिया में शुरू करनी पडी जिनका सामना ससार मे किसी और मजदूर क्राति का नही करना पडेगा। इसलिए यह और भी महत्वपूण है कि हम उस पूरे रास्ते का

कोटि की राजनीतिक चेतना का परिचय दिया। इसकी एक और विशेषता यह थी कि आर्थिक लक्ष्यो को राजनीतिक शिक्षा-दीक्षा के साथ के साथ मिलाने का व्यापक प्रयास किया गया।

उन दिनो पुराने मजदूरो, पार्टी के पुराने सदस्यो की ओर लोगा का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट हुआ। क्रांति मे जिन ३,५०,००० कम्युनिस्टा ने भाग लिया था उनमे से जयती के समय तक कोई ६ हजार जीवित थे। पूरे देश म कारखानो, कार्यालयो तथा स्कूलो मे लोगो से उनकी मुलाकाते आयोजित की गइ। आम लोग उनकी बात सुनना चाहते थे जिन्होंने शिशिर प्रासाद पर धावा बोला था, सफेद गार्डों तथा हस्तक्षेपकारियो के छक्के छुडा दिये थे और स्वय लेनिन के पथ प्रदशन म काम किया था। जयती की तैयारी के दौरान सारे देश मे क्राति के वीरा, उद्योगीकरण तथा कृषि-समूहीकरण के दौर के अग्रणी मजदूरो तथा उन लोगा का जिन्होन महान देशभक्तिपूण युद्ध मे भाग लिया था, स्वागत सत्कार किया गया। सोवियत समाज के लिए यह एक युक्तिसगत घटना थी क्योकि वह क्रातिकारी भावना को जगाये रखते हुए पीढी-दर-पीढी चली आनेवाली परम्पराओ को प्रतिबिम्बित करती थी। जयती के वष मे एक महान घटना थी अज्ञात सैनिक की समाधि की स्थापना जिसपर ८ मई, १९६७ को अमर ज्योति जलाई गई। वह लेनिनग्राद के अक्तूबर के वीरो की समाधि से विशेप अनुरक्षको द्वारा मास्को लायी गयी थी। यह ज्योति एक सग ममर की तख्ती के पास सदा जलती रहेगी जिसपर ये शब्द खुद ह "तेरा नाम कोई नही जानता पर तेरा कारनामा अमर है।" राजधानी को आनेवाले सभी यात्री राष्ट्र के शहीदो को श्रद्धाजलि चढाने यहा जरूर आते ह।

क्राति तथा समाजवादी निर्माण मे नई पीढी की बढती हुई दिलचस्पी को देखते हुए कोम्सोमोल ने क्रातिकारी लडाइया, गहयुद्ध तथा महान देशभक्तिपूण युद्ध की लडाइयो के स्थलो तथा विशालकाय औद्योगिक उद्यमा को जिनका निर्माण तीसरे दशक के अतिम भाग तथा चौथे दशक म उद्योगीकरण के दौरान हुआ था, किशोरा की यात्राओ का प्रबध किया। इन यात्राओ मे कोई २ करोड किशोर छात्र छात्राओ ने भाग लिया।

इस दौर मे श्रमजीवी जनगण की राजनीतिक परिपक्वता का जीवत परिचय उन अनगिनत दरख्वास्तो से मिलता था जो सोवियत सघ की

अक्तूबर क्राति की पचासवी जयती पर
लाल चौक मे प्रदर्शन

कम्युनिस्ट पार्टी मे दाखले के लिए दी जा रही थी। कडी जाच पडताल के बाद ६,६८,६६७ लाग उम्मीदवार सदस्य के रूप मे कम्युनिस्ट पार्टी मे लिये गये। विगत वप की तुलना मे यह सख्या १,५८,००० अधिक थी। इनम आधे से अधिक मजदूर थे, १४ प्रतिशत किसान तथा बाकी मे अधिकाश इजीनियर, तकनीशियन, कृपिविद, शिक्षक तथा अन्य पेशा के लोग थे। लगभग तीन चौथाई कम्युनिस्ट उस समय भौतिक उत्पादन काय म जुटे हुए थे।

१ ३ करोड कम्युनिस्टो के प्रत्यक्ष नेतत्व मे समस्त जनगण उस महान जयती के लिए तैयार हो रहे थे। क्रातिकारी युग के अरुणोदय के समय लेनिन ने कहा था "क्राति की सालगिरह मनाते हुए उचित है कि हम एक निगाह उस रास्ते पर डाले जिससे होकर क्राति को गुजरना पडा है। हमे अपनी क्राति असाधारण तौर पर कठिन परिस्थितिया मे शुरू करनी पडी जिनका सामना ससार मे किसी और मजदूर क्राति को नही करना पडेगा। इसलिए यह और भी महत्वपूण है कि हम उस पूरे रास्ते का

जिसे हमने तय किया है, परिवेक्षण करें, इस अवधि मे अपनी उपलब्धियो की पडताल कर "* राष्ट्र ने अपने नेता की इस सलाह को याद किया, वह इसके तात्पर्य मे भली भाति अवगत था। लोग जानते थे कि जयती वर्ष म उठाया गया हर कदम पचास वर्षों के विकास का फल है।

सितम्बर, १९६७ मे राजकीय आयोग ने उच्चतम अक देकर क्रात्स्क पनबिजलीघर को "पास" किया। उस समय अगारा नदी का यह विशालकाय पनबिजलीघर ससार म सबसे बडा था। वह पहला पनबिजलीघर था जिसकी क्षमता ४० लाख किलावाट से अधिक थी। लगभग इतना बडा पनबिजलीघर इतनी अविश्वसनीय तजी के साथ कही भी नही बनाया गया था। लेकिन इतिहास म एक ऐसा व्यक्ति था जिसने सोवियत सत्ता के कठिनतम दौर म, गृहयुद्ध तथा हस्तक्षेप के युद्ध के दौरान, जब भूख और आर्थिक अव्यवस्था का जोर था, इस असाधारण प्रगति को पहले से देख लिया था और पूरे विश्वास के साथ कहा था कि एक दिन समस्त रूस का विजलीकरण होगा। १९२० म अग्रेज लेखक एच० वेल्ज ने लेनिन से भेंट करने के बाद लिखा था "रूस के इस धुधले शीशे मे मुझे तो ऐसी कोई बात होती दिखाई नही देती मगर क्रेमलिन म यह छोटा सा आदमी उसे देख रहा है, वह देख रहा है कि टूटी फूटी रेलो की जगह बिजली की नयी ट्रेनें होगी, देश भर में नयी सडको का जाल सा बिछा होगा, वह देख रहा है कि एक नया और सुखमय कम्युनिस्ट उद्योगीकृत राज्य उठ खडा होगा।"

भावी घटनाओं ने क्राति के बाद देश के सफल बिजलीकरण की बाबत लेनिन की भविष्यवाणियो को सही कर दिखाया। जब बाल्टिक जनतत्र १९४० मे सोवियत सघ म शामिल हुए तो लियुआनिया मे बिजली का प्रति व्यक्ति उत्पादन पूजीवादी डेनमाक से २० गुना कम था (जिसकी आबादी तथा क्षेत्रफल लगभग उतना ही था और अर्थव्यवस्था भी समान शाखाओ पर आधारित था)। लियुआनिया के भूतपूर्व शासको का अनुमान था कि डेनमाक के १९३९ के बिजलीकरण के स्तर पर पहुचने के लिए कम से कम ५० वर्ष लगेगे और लियुआनिया के ग्रामो का बिजलीकरण

---

*व्ला० इ० लेनिन, सग्रहीत रचनाए, खड २८ पृष्ठ ११७

करने मे कई दशाब्दिया लग जायेंगी। लेकिन वास्तव मे हुआ कुछ और ही। सातवे दशक के मध्य तक लिथुआनिया डेनमाकवाला से इस मामले म काफी आगे बढ चुका था और कृषि का पूरा बिजलीकरण हो चुका था। पाठक एक बार फिर इस बात को ध्यानपूवक नोट कर लेगे कि यह केवल समाजवाद के अतगत ही सम्भव हुआ।

यह कल्पना करना दिलचस्प होगा कि अगर वेल्ज १९६७ तक जीवित होते तो वह क्या कहते। उस समय तक सोवियत सघ अक्तूबर काति की पूववेला की तुलना मे ३०० गुना अधिक बिजली शक्ति का उत्पादन कर रहा था। और १९६७ के कुल आकडे ब्रिटेन, फ्रास, पश्चिमी जमनी तथा इटली जसे औद्योगिक रूप से उनत देशो के बिजली उत्पादन के सयुक्त आकडो से भी अधिक थे।

उस वप देश ने सोवियत धातुकर्मिया की भी एक महत्वपूण विजय मनायी इस्पात उत्पादन को उन्होंने १० करोड टन तक पहुचा दिया। यह आकडा तब विशेषकर शानदार मालूम होगा जब हम यह याद करेगे कि १९१७ मे देश का युद्ध मे बर्बाद उद्योग केवल ४ लाख टन सालाना इस्पात पैदा कर रहा था। इस उपलब्धि की प्राप्ति मे—दोनेत्स बेसिन की बहाली, मग्नितोगोर्स्क और कुज्नेत्स्क, कोम्सोमोल्स्क-आन आमूर तथा एलेक्त्रोस्ताल, क्रिवोई रोग और चेरेपोवेत्स के निर्माण मे—बेहिसाब धन तथा जबदस्त प्रयत्न लगाना पडा था। इन पचास वर्षों के दौरान धातुकर्मियो की पूरी की पूरी पीढिया प्रशिक्षित हो चुकी थी और अपने कठिन पेशे मे दक्षता प्राप्त कर चुकी थी। सोवियत सघ लगातार इस्पात ढलाई की जन्मभूमि बनता चला गया। वह धमन भट्ठियो मे प्राकृतिक गैस का प्रयोग करनेवाला मे पहला था। वह पहला देश था जिसने ९०० टन की खुली भट्ठिया का इस्तेमाल किया। अगर सोवियत सघ मे धातु उद्योग का विकास उसी रफ्तार से हुआ होता जिससे १९१७ के बाद सयुक्त राज्य अमरीका मे हुआ तो उसके उत्पादन का स्तर १९६७ म जितना था उससे छ गुना कम होता।

गैस उद्योग मे भी इसी महत्व की उपलब्धिया प्राप्त की गई। उस उद्योग मे काम करनेवाले लोगो ने पतझड के मौसम मे अपना वायदा पूरा कर दिया जो उन्होंने जयती के उपलक्ष म किया था। मध्य एशिया का सोवियत सघ के केन्द्रीय भाग से जोडनेवाली ट्रास-महाद्वीपीय गस

पाइप लाइन चालू कर दी गयी। अब आवश्यक ईंधन लगभग ३ हजार किलोमीटर की दूरी तय करके तुर्कमानिस्तान तथा उज्बेकिस्तान मे रूस के यूरोपीय भागो तक पहुचाया जा सकता था। पाइप लाइन का मुख्य भाग जलहीन रेगिस्ताना, रेतीले टीलो, पथरीली ऊध्वभूमि तथा अन्य प्रकार की उबड-खाबड जमीनो मे से होकर ले जाना पडा था। इस विशेष प्रयोजना मे आधुनिक मशीनरी ने अपना कमाल दिखाया (कम से कम ६६ प्रतिशत काम मशीनो के द्वारा हुआ) और यहा निर्माणकर्मियो के उत्साह का एक अभिन्न अग उनकी उच्च कोटि की दक्षता थी, और यह तब
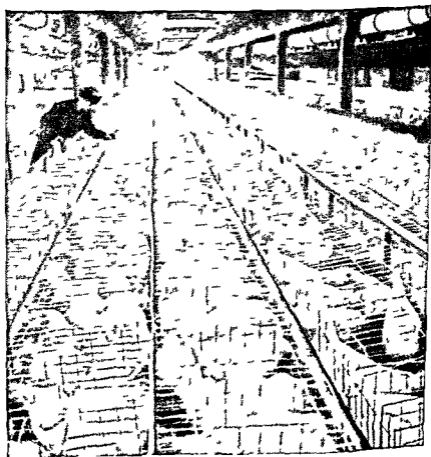
राजकीय मुर्गीखाना

जबकि गैस उद्योग सोवियत सघ के उद्योग की सबसे नयी शाखाग्रो मे है। यहा १६१७ के ग्राकडा से कोई तुलना सम्भव नही है क्योकि गस उद्योग का जन्म ही महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान हुग्रा था।

१६४२ म निश्चय किया गया कि बुगुरुस्लान के निकट से कुइबिशेव क्षेत्र मे गैस पहुचाई जाये ताकि युद्ध उद्योग का ग्रावश्यक इधन की ग्रापूर्ति निश्चित की जा सके। इस काम के लिए कुशल कमिया तथा निपुणता का ही ग्रभाव नही था वल्कि पाइप बाकू तथा बातुमी के बीच की तेल पाइप लाइन से लाया गया जो उस समय वेकार पडा था ग्रौर बाकी पाइप एज्बेसटस सीमट से बनाया गया। प्रथम सोवियत गैस पाइप लाइन को उचित ही "१६० किलोमीटर लम्बा कारनामा" नाम दिया गया था। चौथाई शती बाद देश मे सालाना १८,६०० करोड घन मीटर प्राकृतिक गैस का उत्पादन हो रहा था तथा सोवियत सघ के पास गैस पाइप लाइनो की ऐसी व्यवस्था थी जिसमे देश के यूरोपीय भाग, मध्य एशिया तथा उराल को मिला दिया गया था। यह इधन सबस सस्ता है ग्रौर इसकी सप्लाई केवल उद्योगो के लिए ही नही वल्कि फ्लैटो मे गैस पाइप लाइन पहुच जाने के बाद घरेलू उपभोग के लिए भी निश्चित कर दी गई है।

जयती वप मे सोवियत कृषि न भी प्रभावोत्पादक प्रगति की। सामूहिक तथा राजकीय फार्मों को ग्रब ठीक-ठीक मालूम था कि उन्ह प्रति वप राज्य का कितना कुछ देना है ग्रौर इस भुगतान का रूप ग्रब दो तरफा ज़िम्मेदारी का हो गया था क्योकि राज्य निश्चित मात्रा से ग्रधिक ग्रनाज ले नही सकता। फार्मों का ग्रनेक वित्तीय सुविधाए दी गईं। राज्य न पशुग्रा, गेहू, राई, बाजरा तथा सूरजमुखी का खरीद मूल्य बढा दिया ग्रौर सामूहिक किसानो से ग्राय कर वसूलने की व्यवस्था मे सुधार किया गया। ग्राठवी पचवर्षीय योजना के प्रारम्भ मे राजकीय तथा सामूहिक फार्मों ने ट्रैक्टर, लारिया तथा कृषि मशीनें तथा उनके लिए फाज़िल पुर्ज़े सरकार से कम दाम पर खरीदना शुरू किया (ग्राम तौर पर उसी दाम पर जो फैक्टरिया के लिए तय था)। सामूहिक तथा राजकीय फार्मों को चलाने के लिए बिजली भी सस्ती कर दी गयी। इस ग्रवधि म काश्तयोग्य जमीन को सुधारने तथा ग्रधिक फसले उपजाने के लिए एक व्यापक कायक्रम पूरा किया जाने लगा।

सोवियत सघ के पास विशाल भूमि जरूर है परन्तु कम लोगो को यह मालूम है कि काश्तयोग्य जमीन औसतन प्रति व्यक्ति ढाई एकड से अधिक नही है। कृषि की स्थिति की कठिनाई इसलिए और भी बढ जाता है कि देश के सबसे महत्वपूण अनाज केन्द्र—दक्षिणी उक्रइना, वोगा क्षेत्र, रूसी सघ तथा कजाखस्तान की परती जमीन तथा उत्तरी काकेशिया का भाग—बहुत अधिक सूखाग्रस्त रहते हैं। खराब मौसम के कारण कई मौका पर करोडा टन अनाज बर्बाद हुआ है। सातवे दशक के उत्तराध तक देश के खेतो के केवल बीसवे भाग की सिचाई की जा सकी थी। इस स्थिति मे स्वभावत ग्रामीण आबादी ने सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत सरकार द्वारा लिये गये इस फैसले का स्वागत किया कि सूखा, हवा और पानी के असर से भूक्षरण को रोकने के लिए अधिक कोष और मशीनरी उपलब्ध की जाये तथा खेतो की रक्षा के लिए अधिक वनपट्टिया लगाई तथा विस्तारित की जायें।

सामूहिक फार्मों के विकास मे एक नयी मजिल उस समय आयी जब सामूहिक किसानो के लिए निश्चित वेतन उसी स्तर पर जारी किये गये जिस स्तर पर वेतन राजकीय फार्मों के मजदूरो को दिये जाते थे। यह नयी व्यवस्था १६६६ की गमिया मे जारी की गई और १६६७ के प्रारम्भ तक अधिकाश सामूहिक किसानो को निश्चित मासिक वेतन मिलने लगा था। इसके अलावा हर गर्मी के अत मे, जब फसल कटने के बाद पूरा हिसाब किताब होने पर पूरक पारिश्रमिक भी (रुपये पैसे या जिन्स के रूप मे) दिया जाता था। इस पारिश्रमिक की मात्रा प्रत्येक सदस्य के काम की मात्रा तथा गुण और उस वष सामूहिक फाम की आमदनी पर निभर करती थी।

भौतिक प्रोत्साहना मे यह वृद्धि कृषि के विकास के व्यापक कायक्रम का जिसपर उन दिना अमल किया जा रहा था, सबसे महत्वपूण पहलू था। अधिक सख्या म लारियो, ट्रैक्टरा, कम्बाइन हार्वेस्टरा तथा खनिज खाद की सप्लाई की गई। १६६६ मे अपने अपने विशेष क्षेत्र म सामूहिक तथा राजकीय फार्मों के अमला का नया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शुरू हुआ। उच्चतर कृषि सस्थाना मे विशेष विभाग तथा कोस सगठित किये गय ताकि राजकीय फार्मों के निदेशक, सामूहिक फार्मों के अध्यक्ष, ब्रिगेड नेता, खेत दल नेता, कृषिविद पशुधन विशेषज्ञ तथा अथशास्त्री, आदि

अपनी दक्षता का स्तर ऊचा करने के लिए नियमित रूप से कई महीना का प्रशिक्षण प्राप्त कर सके। इन सब बातो से खेतो मे काम करनेवाला को इस चीज मे बडी सहायता मिली कि वे अच्छे मौसम से खूब फायदा उठायें और १६६६ म १७ करोड १० लाख टन अनाज हासिल करे। इससे पहले देश मे इतनी बडी फसल कभी नही हुई थी। गद के तूफान और गर्मी म अत्यत सूखे मौसम के कारण अगले साल यानी १६६७ मे इतनी बडी सफलता दोहराई नही जा सकी मगर सब मिलाकर कृषि की प्रगति जारी रही। औद्योगिक फसला, सब्जी-तरकारी तथा फलो की उपज पिछले साल से अच्छी हुई। अनाज, कपास, चुकदर तथा अय कई प्रकार की पदावार की खरीदारी की राजकीय योजना की अतिपूर्ति हुई। पशुधन पालन से प्राप्त सभी तरह के पशुजनित उत्पादन मे भी वद्धि हुई।

श्रमजीवी जनगण की भौतिक खुशहाली म नई प्रगति अथव्यवस्थ के सुस्थिर, नियमित विकास की परिचायक थी। १६६७ के अत तक पाच दिन का काय सप्ताह नियमित रूप से जारी हा चुका था, दफ्तरी तथा फक्टरी कामगारो के लिए ६० रूबल निम्नतम वेतन निश्चित हो गया था तथा निम्नतम सालाना अवकाश १५ काय दिवस तय कर दिया गया था।
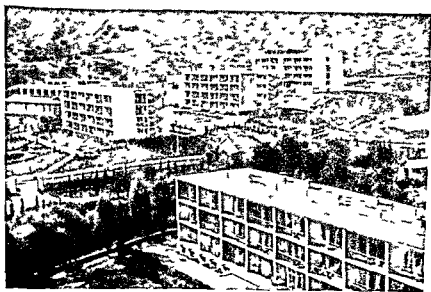
क्रीमिया के पूर्वी तट पर ल्वोव के रेलवे मजदूरो का अवकाश गृह

उत्तरी सीमात या सुदूर पूव मे काम करनेवालो के लिए राज्य ने वेतन मे वद्धि की व्यवस्था लागू की। सामूहिक फार्मों के किसाना के लिए अवकाश ग्रहण करने की आयु मे पाच वष की कमी कर दी गई। वे भी अव शहरी मजदूरो की उम्र मे अवकाश ग्रहण कर सकते थे। अस्वस्यकर पेशो मे काम करनेवाले मजदूरो, कुछ खास कोटि के अवकाशवृत्ति पानेवालो तथा अशक्त लोगो को अनेक नयी सुविधाए दी गयी।

लोगो की वास्तविक आय प्रत्याशित दर से अधिक तेजी से वढी, तथा शहर और गाव के वेतन स्तरो का फक कम हुआ। इसमे नकद आमदनी की वृद्धि से आसानी हुई। समय की एक उत्साहवद्धक विशेषता यह थी कि किसाना की उस आमदनी मे खासकर वृद्धि हो रही थी जो उन्ह सामूहिक फाम से तथा राजकीय सगठनो से प्राप्त होती थी। केवल पाच ही वष पूव व्यक्तिगत जोत से सामूहिक किसान की औसत आमदनी का ४० प्रतिशत हासिल होता था, जबकि १९६७ मे इसका हिस्सा १० प्रतिशत से कम रह गया था। किसान अपनी आमदनी का शेष ९० प्रतिशत सामूहिक फाम मे काम करके या राज्य से कमाते थे।

अवश्य ही अन्य देशो मे भी जीवन के कई पहलुओ मे १९१७ के वाद के पचास वर्षों मे परिवतन हो गये थे। यह कोई छिपी हुई वात नही थी कि कई आर्थिक सूचकाको मे सोवियत सघ अनेक पूजीवादी देशा के स्तर तक नही पहुचा था। लेकिन इनमे से कोई भी देश इतनी तेजी से तथा इतनी वहुमुखी उन्नति नही कर पाया था। सोवियत जनगण को अपनी इन उपलब्धियो पर—जैसे काम और आराम का निश्चित अधिकार, बेरोजगारी का उन्मूलन, निशुल्क माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा, मुफ्त स्वास्थ्य सेवा, काफी अवकाशवृत्ति, ससार मे निम्नतम घर भाडा तथा ससार की सबसे व्यापक (आबादी के प्रत्येक १,००० व्यक्तियो के हिसाव से) गृह निर्माण योजना—गौरव करने का उचित अधिकार था। यह सब उस देश मे हुआ था जहा पहले पूजीपतिया तथा जमीदारा के राज मे श्रमजीवी जनता को इनमे से एक भी सुविधा प्राप्त नही थी। ये सब अक्तूबर, १९१७ मे महान विजय की वदौलत सम्भव हो पाये थे जिसने समाजवाद के युग का प्रादुर्भाव किया था।

जिस समय सोवियतो की धरती अपनी पचासवी जन्म तिथि मनाने की तैयारी कर रही थी, दुनिया मे बहुत से लोग वडे इच्छुक थे कि

सोवियत सघ की उपलब्धियो को, देश द्वारा की गई आर्थिक, वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक प्रगति का कम करके दिखायें। निस्सन्देह आज भी ऐसी सरकारें मौजूद हैं जो अपने देश मे सोवियत नागरिको के प्रवेशाधिकार पर प्रतिबंध लगाती हैं और अपने नागरिको को सोवियत सघ की यात्रा नही करने देती, वे सोवियत पुस्तको तथा फिल्मो की खरीदारी पर रोक लगाती तथा सास्कृतिक सपर्क मे विस्तार मे बाधा डालती हैं। इन्ही कारवाइयो का निवारण करने के लिए रेडियो, टेलीविजन तथा आम सूचना के अन्य साधन मौजूद हैं। और फिर करोडो आदमियो ने स्वय अपनी आखो से अतरिक्ष मे सोवियत स्पुतनिक की उडान देखी, ससार मे अब शायद ही कोई देश ऐसा रह गया हो जहा लोगो ने अतरिक्ष मे प्रथम मानव, यूरी गगारिन तथा उनके साथी अतरिक्षयात्रियो का नाम नही सुना होगा।

यह ऐतिहासिक उडान १२ अप्रैल, १९६१ को हुई। कजाख जनतत्र के इलाके से एक शक्तिशाली वाहक राकेट उडा और उसने अतरिक्षयान को पृथ्वी के परिक्रमापथ पर पहुचा दिया। पृथ्वी का चक्कर लगाने के बाद वह वोलगा क्षेत्र मे सरातोव से कुछ ही दूरी पर उतरा। प्रथम अतरिक्ष उडान १०८ मिनट रही और अतरिक्षयान ने २८ हजार किलोमीटर प्रति घटा की रफ्तार से उडान की।

मानव द्वारा पहली बैलून उडान तथा पहले वायुयान के निर्माण के बीच ठीक १५० वर्ष का समय बीता था। पचहत्तर वर्ष बाद लोगो ने जाना कि पृथ्वी के उपग्रह के मानी क्या हैं और सोवियत जनगण को अतरिक्ष मे मानव को भेजने मे और साढे तीन वर्ष लगे। पहला अतरिक्ष यात्री एक सोवियत नागरिक, कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य यूरी गगारिन था। उसके ४ महीने बाद ६ अगस्त, १९६१ को अतरिक्षयान "वोस्तोक २" अतरिक्ष मे भेजा गया तथा गेर्मान तितोव की उडान २४ घटे से अधिक रही। फरवरी, १९६२ मे पहला अमरीकी अतरिक्षयान पृथ्वी के परिक्रमापथ पर भेजा गया। इसके बाद दो अतरिक्षयानो की सयुक्त उडान हुई और ससार ने पहली बार आद्रियान निकोलायेव तथा पावेल पोपोविच के नाम सुने। तब जून, १९६३ मे वालेन्तीना तेरेश्कोवा, अतरिक्ष मे प्रथम महिला, तथा वालेरी बिकोव्स्की ने इस काम को जारी रखा। ससार के अखबारो ने अतरिक्षयान "वोसखोद" की बाबत लिखा
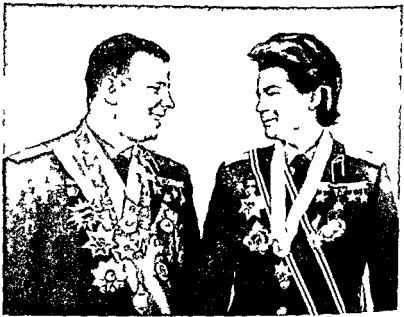
अतरिक्षयात्री यूरी गगारिन तथा वालेतीना तेरेश्कोवा

कि यह बीसवीं शती का एक चमत्कार है। इस अतरिक्षयान की दिशा स्वय चालक द्वारा निर्धारित की जा सकती है। इसके कर्मीदल मे तीन जन थे पायलट व्लादीमिर कोमारोव, वैज्ञानिक और इजीनियर कोस्तातीन फेओक्तीस्तोव तथा डाक्टर बोरीस येगोरोव। उनके अनुसधान के बल पर आगे चलकर पहली बार मार्च, १९६५ को मानव के लिए अतरिक्षयान से अतरिक्ष म बाहर निकलना सम्भव हुआ। यह अभूतपूर्व कारनामा एक और सोवियत नागरिक अलेक्सेई लेओनोव न भी कर दिखाया। उनके अतरिक्षयान को व्लादीमिर बेल्यायेव चला रहे थे।

यूरोविजन तथा इटरविजन के जरिये अनेक देशो के करोडो आदमियो ने अतरिक्षयान द्वारा भेजे गए प्रथम टेलीविजन चित्र देखे।

अतरिक्ष पर विजय के सबध मे अत्यत महत्व की घटनाए ये थी क चद्रमा, शुक्र तथा मगल ग्रहो की दिशाओ म स्वचालित अतरिक्षस्टेशनो को भेजा गया था। अतरिक्ष की वैज्ञानिक छानबीन मे सवप्रथम स्वचालित उपकरणो तथा अतरिक्षयान का प्रयोग ही प्रधान स्थान बन गया। इन्हीं तरीको की मदद से १९६५ की गर्मियो मे चद्रमा के उस पक्ष का चित्र
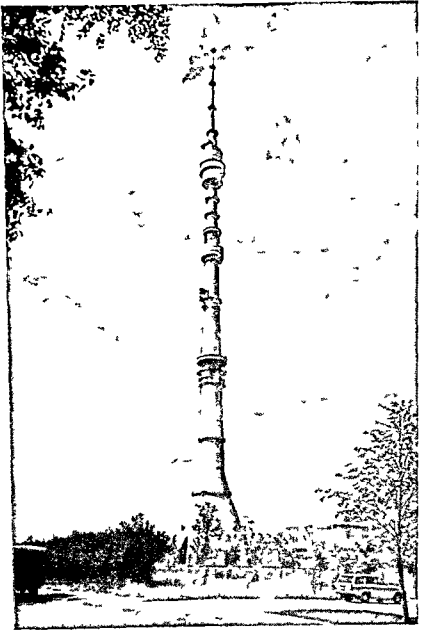
ओस्तांकिनो, मास्को मे टेलीविजन केंद्र

लेने मे सफल हुए जो पृथ्वी की ओर से आखो से ओझल रहता है। ३ फरवरी, १९६६ को पहली बार चद्रमा पर सफलतापूर्वक सहज अवतरण हुआ और वहा भेजे गये उपकरणो ने चद्रमा के चित्र पृथ्वी को भेजे। इसके कुछ समय बाद अमरीकी अतरिक्षयात्रियो ने चद्रमा पर उतरने के बाद, यूरी गगारिन तथा उनके साथियो के काम तथा सोवियत स्वचालित अतरिक्ष स्टेशनो की उडानो की सहायता से प्राप्त सूचनाओ के व्यावहारिक महत्व पर जोर दिया।

१९६६ की वसत मे जब सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वी काग्रेस का अधिवेशन हो रहा था, चद्रमा के प्रथम कृत्रिम उपग्रह ने "इटरनेशनल" गीत की ध्वनि अतरिक्ष से सचारित की। कितनी प्रतीकात्मक थी यह बात कि अतरिक्ष मे जो पहली ध्वनि सुनाई दी वह थी सर्वहारा के, कम्युनिस्ट आदोलन के एकता गान की।

अक्तूबर, १९६७ मे एक और मजिल पार की गई जब पहली बार एक उपकरण उडकर शुक्र ग्रह पर सहज रूप से उतरा और इस उपलब्धि के बाद पृथ्वी का चक्कर लगानेवाले दो सोवियत स्पुतनिक स्वत जुडे और फिर अलग हुए।

अतरिक्ष मे ये सफलताए सोवियत विज्ञान तथा सस्कृति की शानदार उपलब्धियो की, सोवियत सघ की आर्थिक शक्ति तथा विश्व सभ्यता को उसके योगदान की परिचायक है।

सितारो तक इस सफर की शुरूआत स्कूल की कक्षाओ, विश्वविद्यालयो के लेक्चर हालो, देश के वैज्ञानिक केद्रो तथा सस्थानो, पुस्तकालयो, सग्रहालयो, अनुसधानालयो, कारखानो तथा खदानो से हुई।

समाचारपत्र "मस्कोव्स्काया प्राव्दा" के एक अक मे सातवे दशक मे तीस लडको का एक चित्र प्रकाशित हुआ। ये लडके मास्को रियाज़ान रेलवे के स्कूल न० १ के छात्र थे और चित्र १९५३ का था, ठीक उस समय का जब ये लडके स्कूल से निकलकर ससार मे कदम रख रहे थे। यह पता लगाने पर कि सातवे दशक के मध्य मे वे लडके कहा थे और क्या कर रहे थे, यह मालूम हुआ कि उनमे से एक सोवियत सघ का पाचवा अतरिक्षयात्री बना, और उसके १७ सहपाठी इजीनियर, पाच सोवियत सेना के अफसर, एक भूविज्ञानी और एक और विश्वविद्यालय से शिक्षा पूरी कर लेने के बाद डाक्टरी क्षेत्र मे अनुसधान कार्य कर रहा था।
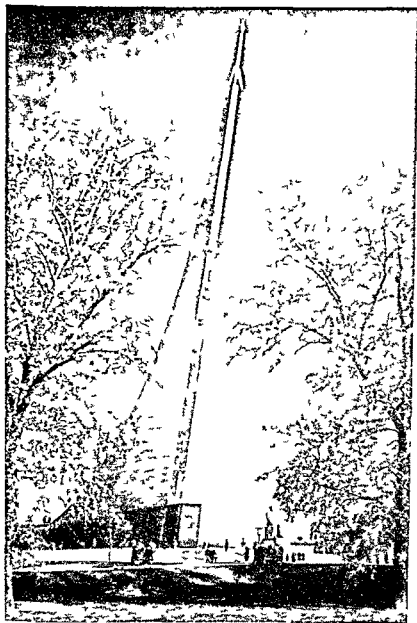
अंतरिक्ष पर विजय के उपलक्ष मे मास्को मे एक स्मारक

सोवियत शिक्षा व्यवस्था मे इसी प्रकार की सुविधाए सभी लोगो को उपलब्ध है। किसी को, मसलन, अब यह सुनकर आश्चर्य नही होता कि कल तक पिछडे हुए तुर्कमानिस्तान मे १९६७ मे प्रति १० हजार की आबादी पर ११५ विद्यार्थी थे जबकि पडोसी ईरान मे केवल १० थे। एक समय था जब एक फ्रासीसी पत्रकार ने मध्य एशिया के लोगो के बारे मे लिखा था कि वे उनकी कार को घास खिलाने आये थे। लेकिन सातवे दशक तक जहा तक शिक्षा की सुविधाओ का सवाल है, उदाहरण के लिए ताजिकिस्तान अपने पडोसी देशो को ही नही बल्कि ब्रिटेन और फ्रास को भी पीछे छोड चुका था। उस समय तक सोवियत सघ पुस्तके तैयार करने मे, जिसमे विदेशी भाषाओ से अनूदित किताबें भी शामिल है, अपने पुस्तकालयो मे किताबो की सख्या मे, तथा सग्रहालयो और पुस्तकालयो मे जानेवालो तथा इनके सदस्य होनेवालो की सख्या म भी निस्स देह ससार मे सबसे आगे बढा हुआ था। १९६५ मे ८,८८३ पुस्तको का अनुवाद हुआ, और यह सख्या सयुक्त राष्ट्र सघ के आकडो के अनुसार सयुक्त राज्य अमरीका के आकडे से चार गुना आधिक थी।

वास्तव मे सस्कृति समस्त जनगण को समृद्ध करने का साधन बन गई थी। क्रातिपूर्व के रूस मे विशाल मेहनतकश जनता को पुश्किन या त्यूत्चेव को पढने अथवा ग्लीका या चाइकोव्स्की के सगीत से आनन्द लेने का अवसर भी नही था। क्राति के बाद वे न केवल इन कृतियो को पढने तथा इस सगीत का आनन्द लेने लगे, बल्कि जनगण म शीघ्र ही नयी परम्पराओ ने जड पकडना शुरू किया। हर साल पुश्किन की जन्म तिथि पर प्स्कोव के निकट मिखाइलोव्स्की ग्राम म जहा पुश्किन रहा करते थे, लोग बडी सख्या मे इकट्ठा होते हैं। वहा उनकी कृतियो का पठन होता है जिसमे स्थानीय लोगो के साथ अन्य जनतत्रो के प्रसिद्ध विज्ञानी, अभिनेता और अतिथि भी भाग लेते हैं। इसी तरह के जमाव ब्रियास्क के नजदीक उस घर म जहा कवि त्यूत्चेव रहते थे, स्मोलेन्स्क के निकट ग्लीका के घर म, क्लीन नगर मे चाइकोव्स्की तथा कीयेव मे शेव्चेको के सम्मान मे हुआ करते हैं। य चद नाम हैं। इन समारोहो मे अक्सर विदेशो स आये अतिथि भी भाग लेते ह।

सोवियत सस्कृति की प्रमुख हस्तिया कम से कम एक सौ भिन्न भिन्न देशो का भ्रमण किया करती हैं। सोवियत कला मे विदेशो म अपार

ल्चिस्पी पायी जाती है। सोवियत संस्कृति मन्त्रालय के पास विदेशा से सोवियत वैले थियेटरा के प्रदशना के लिए जितने निमन्त्रण आते है, उन सब को अगर स्वीकार किया जाये ता देश के ७० प्रतिशत वैल थियटरा का अस्थायी रूप से वद कर देना पडेगा। विदेशा मे पेशेवर कलाकारा का ही स्वागत नही किया जाता वल्कि शौकिया कला मडलिया का भी पुरजोश स्वागत किया जाता है और इसमे काई आश्चय की वात नही क्याकि सोवियत सघ मे शौकिया कला सरगमिया का विकास वास्तव मे व्यापक पैमाने पर हुआ है और उनका स्तर बहुत ऊचा है। १९६८ मे १ करोड २० लाख से अधिक लोग शौकिया कला मडलिया के सदस्य थे। ऐसी मडलिया देश भर मे फैली हुई है और अधिकाश शहरा तथा गावा म सक्रिय है। देश मे १,३२,००० सास्कृतिक केद्रा मे उनके प्रदशन अक्सर हुआ करते है।

आजकल यह विश्वास करने मे कठिनाई होती है कि क्राति के पहले रूस म केवल ११,००० व्यक्ति वैज्ञानिक अनुसधान मे भाग लिया करते थे। १९४० तक उनकी सख्या दस गुना हो गई थी और १९६७ मे

वोल्शोई थियेटर मे चाइकोव्स्की का वैले "राजहस सरोवर"

७,७०,००० तक पहुच गई थी जो सारे ससार की सख्या का एक चौथाई है। ज्ञान का कोई क्षेत्र ऐसा नही है जिसमे सोवियत वैज्ञानिको ने महत्व पूण प्रगति नही की हो। भौतिकी मे नोवल पुरस्कार ताम्म, लदाऊ, फ्राक, चेरेकोव, बासोव तथा प्रोखोरोव को तथा रसायन विज्ञान म सेम्योनोव को मिल चुका है।

जब वैज्ञानिक अनुसधान तथा एक प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था का विकास सग-सग हो रहा हो तो मानव के लिए जो सुविधाए उत्पन्न होती है, उनका एक ज्वलत उदाहरण सोवियत चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धिया तथा देश की समस्त स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था है। तीसरे दशक के प्रारम्भ मे मलेरिया से लाखो लोग मरते थे और १९५२ तक इस जान लेवा बीमारी ने १,८०,००० व्यक्तियो को अपनी चपेट मे लिया था। लेकिन सातवे दशक मे आखिरकार मलेरिया भी उन्ही रोगो मे शामिल हो
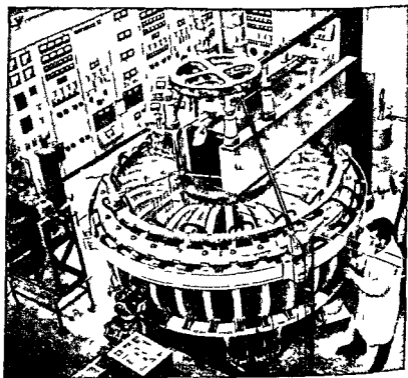
एक अनुसधान केद्र

गयी जिनको सोवियत सघ से देश निकाला मिल चुका था जैसे चेचक, हैजा, ताऊन और टाइफ्स।

पोलियो निवारण वैक्सीन ससार के अनेक देशा मे लोगा को इस नाशक रोग से बचाने के लिए भेजे गये हैं। स्वय सोवियत सघ मे यह रोग बहुत कम पाया जाता है। राज्य ने वैज्ञानिको को सुविधाए प्रदान की कि वे कारगर वैक्सीन खोज निकाले। ८ करोड से अधिक आदमिया को यह वैक्सीन दिया जा चुका है।

१८६७ मे रूस मे लोगो की औसत आयु ३२ वष हुआ करती थी, १६३६ तक यह बढकर ४७ तक और १६६७ मे ७० से ऊपर हो गयी। तब सोवियत सघ मे मृत्युसख्या युद्धपूव की तुलना मे १५० प्रतिशत कम तथा ससार मे सबसे निम्न हो चुकी थी।

ये तमाम उपलब्धिया सोवियत सघ मे प्रगति का अग हैं तथा सारा ससार उनको अपनी आखो से देख सकता है। इन उपलब्धियो मे तथा देश द्वारा मुहैया की गई शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा वैज्ञानिक और सास्कृतिक विकास की सुविधाओ मे गहरा सवध है।

वैज्ञानिक तथा सास्कृतिक प्रगति की इस राह पर अनेक कठिनाइया का सामना करना पडा, भूल चूक तथा कभी-कभार दुखद क्षति भी नया रास्ता बनाने के इस काम म अनिवाय थी। एक नये प्रकार के अतरिक्षयान का परीक्षण करते हुए व्लादीमिर कामारोव ने प्राण दिये, वायुयान मे एक साधारण ट्रेनिग उडान मे यूरी गगारिन की मृत्यु हो गयी। अतरिक्ष युग के इन वीरा की राख क्रेमलिन की दीवारो मे देश के प्रमुख हस्तिया के पास दफन कर दी गई है। इन क्षतियो ने हमे स्मरण कराया कि प्रकृति के भेदो को पाने का उनपर हावी होकर उनसे काम लेने का रास्ता कितना जटिल तथा कठिनाइया से भरा है।

अतरिक्ष की खोज से मानव बडे-बडे पराक्ष लाभ प्राप्त भी कर चुका है। खगोलज्ञा, भौतिकी वैज्ञानिका, प्राणिविज्ञानिया तथा चिकित्सका न बहुत कुछ सीखा है और मौसम की भविष्यवाणी अब काफी विश्वस्त हो गई है। सचार सबधी उपग्रहा की सहायता से व्लादीवोस्तोक के लोग मास्को के टेलीविजन कायक्रमा को देख सकते हैं तथा यह सम्भव हो गया है कि मास्को और पेरिस के बीच रेडियो तथा टेलीविजन का सपक स्थापित किया जाये। मानव द्वारा नयी अतरिक्ष उडानो की तैयारिया के

सिलसिले मे अनेक अत्यत जटिल तकनीकी तथा प्राणिशास्त्रीय समस्याओ का अध्ययन किया जा रहा है।

एक समय था जब लोग पूछा करते थे कि तारा तथा विमाना का फायदा क्या है। जीवन ने स्वय इन सवाला का जवाब दे दिया है। प्रतिदिन यह स्पष्ट होता जा रहा है कि अतरिक्ष की उडाना का उद्दश्य नये रिकाड कायम करने की किसी की अनावश्यक अभिलाषा को पूरा करना नही है। इन उडाना से कही अधिक फायदा मिलने लगा है। अतरिक्ष पर काबू पाने पर सोवियत सघ मे इतना अधिक ध्यान मानवजाति के नाम पर तथा वैज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति के लिए दिया जा रहा है।

अक्तूबर क्राति की पचासवी जयती समारोह के दिन जितने निकट आते गये, पूजीवादी अखबारो को किसी न किसी दष्टिकोण से इस घटना की ओर उतना ही अधिक ध्यान देना पडा। अधिकाधिक सख्या म विदेशी पत्रकार तथा सवाददाता सोवियत सघ पहुचने लगे। सोवियत जनगण ने विशेष रूप से हार्दिक स्वागत किया समाजवादी देशा से आये अपने मित्रो का, बिरादराना कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधिया का, राष्ट्रीय मुक्ति आदोलनो मे सरगम स्त्री पुरुषा का तथा मजदूर और सावजनिक सगठनो के प्रतिनिधिमडलो का। इनमे से अनेक आगतुको ने विशेष अतर्राष्ट्रीय जयती अधिवशनो तथा सम्मेलना मे सीधे भाग लिया। उन्होंने फक्टरिया और फार्मों, अनुसधानशालाओ तथा शैक्षणिक सस्थाओ का भी दौरा किया। उन्होने स्वय अपनी आखो से देख लिया कि सारे देश मे कितना उत्साह उमड आया है।

अक्तूबर, १९६७ मे जयती पव के उपलक्ष म समाजवादी प्रतियोगिता मे जीतनेवाला को चुन लिया गया १,००० फैक्टरियो और फार्मों तथा अनेक सैनिक दस्तो और शिक्षा सस्थानो का आदश घोषित करके उन्ह विशेष जयती परचम प्रदान किये गये। अक्तूबर क्राति तथा गहयुद्ध के लगभग १,३०,००० वीरा का विशेष पदक दिये गये। इसी प्रकार का सम्मान विदेशा के बहुत से लोगा का दिया गया जिन्हान गहयुद्ध क दौरान सोवियत जनतत्र की रक्षा करने के लिए लडाइयो मे भाग लिया था। मास्को और लेनिनग्राद का विशेष सम्मान करन के लिए उन्ह अक्तूबर
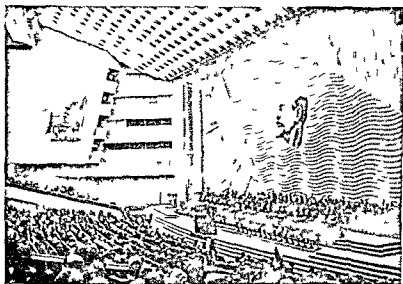
लेनिन जन्म शताब्दी का समाराह

क्रांति के प्रथम दो पदक प्रदान किये गये। यह पदक पहली बार जारी किया गया था।

नवम्बर, १९६७ का उद्घाटन विशेप समारोहों से हुआ। अक्तूबर क्राति की जन्मभूमि लेनिनग्राद के जयती समाराहो मे पार्टी तथा राजकीय नेताओं ने भाग लिया। उस महान दिवस के ठीक पहले, ३ और ४ नवम्बर को कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत और रूसी सघ की सर्वोच्च सोवियत के सदस्य क्रेमलिन के काग्रेस प्रासाद मे जमा हुए। उसमे पार्टी के पुराने सदस्य, क्राति के वीर, श्रमजीवियो, सावजनिक सगठनो तथा सोवियत सेना के प्रतिनिधि और १०७ देशो के नुमाइन्दे शरीक हुए। ब्रेज्नेव ने "समाजवाद की महान उपलब्धियो के पचास वर्ष" शीर्षक एक रिपोर्ट पेश की। उनके साथ समारोह मे उपस्थित सभी लोगो तथा समस्त जनगण की दृष्टि उन सघर्षो तथा सफलताओं की ओर गयी जो पचास वर्ष पहले हुई क्राति के बाद सोवियत सघ के मार्ग मे प्रकट होती रही। इस राह ने मजदूर वर्ग की ऐतिहासिक भूमिका की व्याख्या करने म मदद की, यह बताया कि उसकी सर्जनात्मक भूमिका उस सामाजिक व्यवस्था की उत्पत्ति तथा सुदृढीकरण मे क्या है

जिसने मानव कायक्लाप के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र मे, समाज की उत्पादक शक्तियो के विकास मे पूजीवाद पर समाजवाद की श्रेष्ठता साबित कर दी। वह समाजवाद ही था जिसने मानव द्वारा मानव के शोषण का अत करने के बाद सभी श्रमजीवी जनगण के लिए रहन-सहन की स्थितियो मे मौलिक सुधार तथा भौतिक समृद्धि तथा सास्कृतिक प्रगति के द्वार खोल दिये थे। सोवियत अनुभव ने सारी दुनिया को दिखा दिया कि कैसे एक छोटी सी मुद्दत मे रूस की पिछडी जातियो तथा जनगण के लिए यह सम्भव हुआ कि सदियो के पिछडेपन को दूर करे और सोवियत सघ की तमाम जातियो को अटूट समाजवादी भ्रातत्व म सूत्रबद्ध करें।

क्राति के बाद के पचास वर्ष लेनिनवाद की विजय के वर्ष, कम्युनिस्ट पार्टी के सैद्धातिक तथा व्यावहारिक कायकलाप की विजय के वर्ष थे जिसके नेतत्व मे अक्तूबर क्राति हुई, समाजवाद ने सोवियत सघ म मुकम्मल और निर्णायक विजय प्राप्त की तथा वर्गहीन समाज का माग प्रशस्त हुआ।

समाजवादी देशो के जनगण ने इस महत्वपूर्ण जयती को सोवियत सघ के लोगो के साथ मिलकर मनाया। बिना किसी अतिशयोक्ति के यह कहा जा सकता है कि समस्त मानवजाति के जीवन म यह एक प्रेरणादायक घटना थी।

नये ध्येय, नयी मजिल

अक्तूबर क्राति की पचासवी सालगिरह के समारोहो ने सोवियत समाज के इतिहास पर अमिट छाप छोड दी। जयती की तैयारिया जारी ही थी कि आठवी पचवर्षीय योजना का काम शुरू हो गया। स्वय जयती के सम्मान म श्रमजीवी जनगण ने योजना के ध्येयो को समय से पहले पूरा करने का बीडा उठाया तथा अपने ऊपर भारी कायभार लिए।

सोवियत राज्य की स्थापना के सम्मान मे समारोहो के तुरत बाद कई और जयतिया मनाई गईं। क्राति के तुरत बाद के वर्षों मे कई सघीय जनतन्त्रो का जन्म हुआ था, कोम्सोमोल की स्थापना हुई थी, लाल सेना कायम की गई थी, सक्षेप म उन वर्षों मे समाजवादी निर्माण का श्रीगणेश हुआ था और नये सावजनिक तथा राजकीय सगठन स्थापित हुए थे। सातवे दशक के अत मे सोवियत सेना ने अपनी पचासवी

सालगिरह मनाई, और बाद मे उनइना, लिथुआनिया तथा बेलोरूस की कम्युनिस्ट पार्टियो ने अपनी अपनी स्थापना की पचासवी वर्षगाठ मनाई। लाटविया, लिथुआनिया तथा एस्तोनिया मे सोवियत सत्ता की स्थापना की पचासवी जयती के समारोह मे सभी जनगण ने भाग लिया। इनमे स प्रत्येक घटना से लोगो को और अधिक प्रेरणा मिली कि इस अर्द्ध शताब्दी मे प्राप्त अनुभव का तथा क्रातिकारी प्रक्रिया मे अतर्निहित मौलिक नियमा का अध्ययन करे। प्रत्येक घटना ने सोवियत जनगण मे देशप्रेम की भावना को सवर्द्धित किया।

समाजशास्त्रियो ने १९६८ मे स्कूल की पढाई पूरी करनेवाल छात्रा की आकाक्षाओ के विश्लेषण के सबध म मास्को, क्रास्नोदार, गोर्नो-अल्ताइस्क तथा कुछ अन्य नगरो मे एक प्रश्नावली प्रकाशित की। स्कूल के विद्यार्थी से पूछा गया था कि अगर तुम सवशक्तिमान होते तो तुम क्या करते? उनमे से विशाल बहुमत के उत्तर से प्रकट हुआ कि उन्हे आम इसानो का ख्याल है, समस्त ससार मे स्थायी शाति स्थापित करने, रागो का निवारण करने तथा कम्युनिज्म का निर्माण करन की कितनी इच्छा है। इनके बाद सबसे अधिक जवाबो मे उनकी यह आकाक्षा प्रतिबिम्बित हुई कि मनुष्य के मानसिक क्षितिज को विस्तारित किया जाये (३० प्रतिशत उत्तर)। व्यक्तिगत हिता को प्रधानता केवल १८ प्रतिशत जवाबो मे दी गई थी। एक दिलचस्प बात यह है कि उन्ही इलाको म ऐसी ही प्रश्नावली के उत्तर १९२७ म जो दिये गये थे, वे इन उत्तरा से बहुत भिन्न थे। तब जाहिर हुआ था कि मुख्य इच्छा, प्रथमत भ्रमण करने की है, दूसरे, भौतिक मूल्य की वस्तुए प्राप्त करने की है और तीसरे लोगो का जीवन स्तर ऊचा करने की है।

नयी पीढी की बढी हुई सामाजिक चेतना समस्त सावियत जनगण की राजनीतिक परिपक्वता से अटूट रूप से सम्बद्ध है। ये दोनो गुण सोवियत सघ मे सामाजिक आचरण की अविभाज्य विशेषता बन गये है। ये खास तौर से उस दौर मे सामने आये जब सातव दशक के अत मे अमरीकी सेना ने वियतनाम मे तथा पूरे हिंदचीन मे युद्ध की आग फैलाने का कदम उठाया और इस कारण अतर्राष्ट्रीय तनाव बहुत बढ गया था। १९६७ म इजराइली शासको ने अरब जातिया के खिलाफ आक्रमणकारी युद्ध छेड दिया। १९६८ मे प्रतिक्रियावादी शक्तिया ने चेकोस्लोवाकिया को

समाजवादी समुदाय से अलग करने का प्रयास किया। सोवियत जनगण को सोवियत-चीन सीमा पर उत्तेजनाभरी कारवाइयों की खबर से अत्यन्त दुख हुआ। सोवियत संघ की श्रमजीवी जनता के मन में मेहनती चीनी जनगण के प्रति हमेशा ही की सद्भावना रही तथा नये जीवन का निर्माण करने के उसके प्रयासों के प्रति उनके मन में हमेशा सहानुभूति रही थी। हजारों चीनी छात्र शिक्षा प्राप्त करने सोवियत संघ आये थे तथा अनेक सोवियत नागरिक आधुनिक उद्योग के निर्माण में अपने चीनी साथियों की सहायता कर रहे थे। इस संदर्भ में सोवियत जनगण के लिए विशेष रूप से दुखदायी चीनी नेताओं की वे नीतियां थीं जिनका उद्देश्य सोवियत संघ से आर्थिक तथा सांस्कृतिक संबंध विच्छेद करना तथा प्रत्यक्ष रूप में सोवियत विरोधी उन्माद भड़काना था।

फैक्टरी और दफ्तरी कर्मियों ने तथा सामूहिक किसानों ने अपनी जन सभाओं में अमरीकी जंगबाजों और इज़राइल में प्रतिक्रियावादियों की हरकत की घोर निंदा की। बिरादराना चेकोस्लोवाकिया की सहायता करने के संबंध में सोवियत सरकार के निश्चय का समस्त जनगण ने समर्थन किया तथा सोवियत संघ की सुदूर पूर्वी सीमाओं की दक्षतापूर्वक रक्षा करने में सीमावर्ती सेनाओं ने जिस दृढ़ता का परिचय दिया, उसका राष्ट्रव्यापी अनुमोदन किया गया।

इन घटनाओं से एक बार फिर यह प्रकट हो गया कि वैदेशिक तथा घरेलू दोनों नीतियों के सवाल पर कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत जनगण सर्वथा एकमत हैं। इसके अलावा जैसा कि इससे पहले अवसरों पर भी देखने में आया था, तनावपूर्ण स्थिति का केवल यही फल हुआ कि सोवियत जनगण को और ज्यादा मुस्तैदी से काम करने की प्रेरणा मिली।

१९६८ की गर्मियों में केन्द्रीय समिति ने "व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की जन्म शती की तैयारियों की बाबत" एक फैसला स्वीकार किया। तब से अप्रैल, १९७० में जन्म शती की तिथि जनगण के रोजमर्रे के जीवन में तथा भविष्य की उनकी योजनाओं में केन्द्रबिंदु बन गई। स्कूली विद्यार्थी तथा विश्वविद्यालयों के छात्र, शहरों और देहातों के श्रमजीवी तथा सोवियत सेना के लोग—सभी इस अत्यंत महत्वपूर्ण घटना की तैयारियों में लग गये। सोवियत वैज्ञानिकों तथा अंतरिक्षयात्रियों ने अन्तरिक्ष उड़ान के दौरान अंतरिक्षयानों को जोड़ने, अंतरिक्ष में इस्पात की वेल्डिंग करने और वाल्व में

एक साथ और अनुशासन स्थापित करने में अपनी सफलताओं का जो संसार में पहली बार प्राप्त की गई थी लेनिन जयंती को समर्पित कर दिया। कम्युनिस्ट श्रम आन्दोलन में भाग लेनेवाले लाखों और करोड़ आदमियों ने समस्त श्रमजीवी जनता का आह्वान किया कि नयी श्रम सफलताओं के जरिये लेनिन जयंती मनायें। अपनी श्रम-सफलताओं से इस अवसर के उपलक्ष में जो जिम्मेदारियाँ ली, उनका सहज संबंध आर्थिक सुधार से उत्पन्न मुख्य कार्यभारों से था जिनपर सारे देश में जोरों से अमल किया जा रहा था। सबसे मुख्य ध्येय वैज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति को तेज करना, श्रम उत्पादिता में लगातार वृद्धि करना तथा पैदावार के गुण को बेहतर बनाना था, उत्पादन लागत को कम करने के लिए काम के घंटों का ज्यादा उपयुक्त प्रयोग करना था। अर्थशास्त्रियों का अनुमान था कि एक मिनट में सोवियत उद्योग लगभग २०० टन इस्पात, ६०० टन तेल और १,००० टन कोयला पैदा करता है और प्रत्येक डेढ़ मिनट पर एक नया ट्रैक्टर तैयार होता है। हर एक मिनट बर्बाद होने का मतलब होगा देश को बीसियों फ्रिज, टेलीविजन सेट, कपड़ा धोने की मशीनों तथा हजारों जोड़े जूतों का नुकसान। और इधर हर क्षण काम तथा माल में किफायत करने से अर्थव्यवस्था को काफी सहायता मिलती है।

लेनिन ने लिखा है "कम्युनिज्म शुरू तब होता है जब साधारण मजदूर श्रम की उत्पादिता बढ़ाने में ऐसी उत्साहपूर्ण उत्सुकता का परिचय देते हैं जो कठिन मेहनत से भयभीत नहीं होती अनाज के, कोयले, लोहे तथा अन्य चीजों के एक एक छटांक की रक्षा करते हैं जो व्यक्तिगत रूप से मजदूरों या उनके 'अपने' सगे-संबंधियों को नहीं मिलती, बल्कि उनके 'दूर के' सगे-संबंधियों को यानी पूरे समाज को, लाखों-करोड़ों लोगों को मिलती हैं जो पहले एक समाजवादी राज्य में और फिर सोवियत जनतंत्रों के संघ में एकत्रित होते हैं।"* कम्युनिस्ट श्रम की बाबत लेनिन की इस शिक्षा से प्रेरित होकर अगुआ मजदूरों ने सुझाव दिया कि मजदूर अपने अपने पेशे में सर्वश्रेष्ठ मजदूर की उपाधि के लिए तथा किफायत से कच्चे माल का उपयोग करके उच्च कोटि के माल का उत्पादन करें।

---

*व्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २६, पृष्ठ ३९४

२२ अप्रैल, १६७० को लेनिन की जन्म शती यथोचित ढग से मनाने के लिए यह ध्येय निर्धारित किया गया कि श्रेष्ठतम मजदूरो को चुना जाये, उत्पादन की सफलताओ का खुलासा किया जाये तथा उनके श्रम उत्साह से बाकी मजदूरो को प्रोत्साहित किया जाये।

आर्थिक सुधार अधिकाधिक व्यापक मार्चे पर कार्यान्वित किया जा रहा था। इससे जनता के सृजनात्मक कार्यकलाप को प्रेरणा मिली। १६७० तक लगभग समस्त सोवियत उद्योग यानी वे उद्यम जिनमे देश की समस्त पैदावार का ६३ प्रतिशत तथा ६५ प्रतिशत से अधिक मुनाफा प्राप्त होता है, नये प्रकार के नियोजन को अपना चुके थे और आर्थिक प्रोत्साहन की नयी व्यवस्था जारी कर चुके थे। जो फैक्टरिया पचवर्षीय योजना की अवधि के प्रारम्भ मे ही नये तरीको को अख्तियार कर चुकी थी उन्होने बडी खुशी से अपना अनुभव दूसरो को बताया तथा अपने पीछे आनेवालो के नये तरीके सीखने मे सहायता की। मास्को म व्लादीमिर इल्यीच फक्टरी उन फैक्टरियो मे थी जिन्होने सबसे पहले लागत खाता जारी किया, बोनस की कारगर व्यवस्था लागू की, तथा आर्थिक प्रबध के अध्ययन का पाठ्य क्रम सगठित किया। नये विनियमो के सिलसिले म प्रोत्साहन कोष (बोनसो, सामाजिक तथा सास्कृतिक कामो और गृह निर्माण के लिए कोष, तथा एक उत्पादन विस्तारण कोष) फैक्टरी के सुपुर्द किये गये। इससे फैक्टरी नवीकरण परिषद, लाइसेंस तथा डिजाइन कार्यालयो के काम को अधिक प्रोत्साहन मिला। पचवर्षीय योजना की अवधि खत्म होने से पहले ही अगुआ मजदूर श्रम उत्पादिता बढाने के लिए स्वय अपना कार्यक्रम तैयार करने लगे थे। श्रम सगठन के वैज्ञानिक तरीको का अध्ययन तथा उनकी तामील नियमित रूप से की जाने लगी। इन बातो का नतीजा यह हुआ कि सभी योजनाओ की अतिपूर्ति हुई और १६६८ से १६६६ तक भौतिक प्रोत्साहन कोष लगभग तिगुना हो गया। इसके एक अश का प्रयोग उपकरण का नवीकरण करने के लिए किया गया, एक अश का बोनसो के लिए और एक तीसरे अश का प्रयोग एक खेलकूद केंद्र तथा एक नये सस्कृति भवन का निर्माण करने के लिए किया गया।

जो लोग इस फैक्टरी मे जीवन का अधिक ब्योरेवार ज्ञान प्राप्त करना चाहे उन्हे फिटर अतोनोव द्वारा लिखित एक पुस्तिका "मजदूर होने का गौरव' अवश्य पढनी चाहिये। उन्होने उस फैक्टरी म कोई चालीस

साल काम किया। उनके पिता न भी यही एक टनर की हैसियत म काम शुरू किया था। उनके भाई भी यही टनर थ और बहन डिजाइन कार्यालय म काम करती थी। स्वय अतानाव न दो सौ से अधिक नवीकरण प्रस्ताव रखे ह जिनस देश को लाखा का अतिरिक्त मुनाफा हुआ। उन्ह समाजवादी श्रम वीर की उपाधि मिली। अपनी किताब म उन्हान अपनी फैक्टरी म काम करनवाला का हाल लिखा है। साथी मजदूरा क सृजनात्मक उत्साह पर प्रकाश डालत हुए अतोनोव ने लेनिन क य शब्द दिय है 'सवाल प्रत्येक राजनीतिक चेतनशील मजदूर क यह महसूस करने का है कि वह स्वय अपनी फैक्टरी म केवल मालिक ही नही बल्कि अपन देश का प्रतिनिधि भी है, सवाल अपनी जिम्मेदारी को महसूस करने का है।' *

इस फक्टरी म कई हजार मजदूर काम करत हैं। पूरी फैक्टरी के प्रति देश क प्रति जिम्मदारी का अहसास उनकी विशेषता है। इसी कारण व एक के बाद एक लगातार सफलताए प्राप्त करत अपन सामन अधिकाधिक उच्चतर मानक स्थापित करते तथा त्रुटिया को नजरअन्दाज करने स इनकार करत हैं। २ अक्तूबर, १९६९ का 'प्राव्दा' न उस फक्टरी के अगुआ मजदूरा के एक समूह का एक पत्र छापा जिसका लोगा पर बहुत अच्छा असर पडा। और यह स्वाभाविक था। उन्हाने यह सवाल उठाया था कि श्रम अनुशासन क उल्लघन, अनुपस्थिति तथा खराब काम करने पर कडी कारवाई करनी चाहिये। दुर्भाग्य से ऐसे कुछ लोग अभी भी रह गये थ। जाहिर है कि ऐसे लोगा की मनोवत्ति का बदलना कुछ अधिक टन या मीटर उत्पादन कराने स कही ज्यादा कठिन था। इस पुन शिक्षण का मतलब था नय सामाजिक सबधा का, काम के प्रति कम्युनिस्ट दष्टिकोण को तयार करना।

जब यह फैक्टरी लेनिन जन्म शती प्रतियोगिता म शामिल हुई तो इसन फसला किया कि आठवी पचवर्षीय योजना की अतिपूर्ति कुल पदावार के मामल म ७ नवम्बर, १९७० तक तथा श्रम उत्पादिता के मामले म २२ अप्रल १९७० तक कर देगी।

अन्य कई फैक्टरिया न इस फक्टरी का अनुसरण किया। श्चोकिनो

---

*ब्ला० इ० लेनिन सग्रहीत रचनाए पाचवा रूसी सस्करण, खड ३६, पृष्ठ ३६९-३७०

रसायन प्लाट द्वारा प्राप्त सफलतायें सारे सोवियत सघ मे प्रसिद्ध हो गइ। उस फैक्टरी मे १९६८ से १९६९ तक श्रम उत्पादिता दो गुनी हो गई तथा कुल पैदावार मे उसी अवधि मे ८० प्रतिशत वद्धि हुइ। इसके लिए न ता कोई नया वकशाप खडा किया गया था और न ही उच्च कौशल के मजदूर, इजीनियर और स्नातक विशेपज्ञ लाये गये थे। वात बस इतनी थी कि इस फैक्टरी को एक एक वप करके सारी पचवर्षीय अवधि के लिए एक स्थायी उत्पादन योजना दे दी गई थी जिसमे सालाना लक्ष्य स्पष्ट रूप से दिये हुए थे, और साथ मे एक स्थायी वेतन कोप दे दिया गया था जो विगत १९६७ वप से अधिक नही था। मानो फैक्टरी को नियत काम के लिए भुगतान मे एक चेक दे दिया गया था, शत यह थी कि इस काम के लिए खच की रकम स्थायी रहेगी चाहे इस काम के लिए कितने ही आदमी क्या न रखे जायें। ऊपर से देखने मे तो यह बहुत सहज लगता था मगर इसकी तह मे जटिल आर्थिक, सामाजिक और कभी-कभी शुद्ध मनोवैज्ञानिक समस्याए निहित होती थी, तकनीकी कठिनाइयो की बात तो अलग रही।

इस रासायनिक प्लाट के अनेक मजदूरो के दादा और कुछ के बाप को अभी भी वह समय याद है जब नौकरी से निकाला जाना और बेरोजगारी मज़दूरो के जीवन की आम घटना थी। क्राति के बाद स्थिति बदली। जब किसी फैक्टरी मे छटनी करने की जरूरत होती तो दृष्टिकोण बिल्कुल भिन्न होता। श्चोकिनो मे जिस जिसको काम से मुक्त किया गया, उसे कई अय कामा मे से किसी एक को चुन लेने को कहा गया—चाहे व इसी तरह की किसी और फैक्टरी मे काम करे, निर्माण मजदूरा के जत्थे मे शामिल हो जायें, अपनी याग्यता बढायें या किसी और काम की ट्रेनिंग हासिल करे, इत्यादि। ऐसी स्थितिया मे खास ध्यान इस बात पर दिया गया कि जिन लोगो को काम से हटाया जा रहा है उनकी आयु क्या है, परिवार के लोग जो उनपर निभर है कितने हैं, पिछले काम से मुक्त होने वाला का वेतन क्या है, आदि। फैक्टरी के प्रवधकर्ता तथा सावजनिक सगठन नया काम दिलाने मे उनकी सहायता करते। इस प्रकार श्रम नियमा की सहिता का कडाई के साथ पालन किया गया। योग्यताक्रम निर्धारण मे अधिक सुधार किया गया, आधुनिक तकनीक जारी की गई और मजदूरा को प्रोत्साहन दिया गया कि अपनी पेशेवर दक्षता बढाने के लिए अपन हुनर के अलावा और भी कई हुनर सीख ले। लगभग दो वप की अवधि

मे मजदूरो की सख्या मे ६०० की कमी हो गई, बाकी के वेतन मे औसतन २५ प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा मजदूरा की तकनीकी योग्यता मे स्पष्टत उनति हुई। उच्चतर श्रम उत्पादिता की प्रतियोगिता म यह प्लाट अनगिनत अय कारखानो मे प्रथम था।

श्रम उत्पादिता मुख्य उद्देश्य के रूप मे कायसूचि मे हमेशा ही शामिल थी मगर अब आथिक सकेताका की ओर अधिक ध्यान दिया जान लगा। वह समय अब पीछे छूट गया था जब देश मे कई प्रकार की वस्तुओ का अभाव रहा करता था। फैक्टरिया को अब सोवियत सघ की मत्रि परिषद की ओर से ऐसी वस्तुआ की सूची दे दी जाती थी जिन्ह योजना से अधिक पैदा करन की उनका मनाही थी। विशेष राज्य आयोगा द्वारा यह प्रमाण पत्र दिया जाना आम दस्तूर बन गया कि माल राज्य मानक के अनुसार है, श्रेष्ठतम माल के लिए उत्कृष्ट गुण का द्योतक एक विशेष त्रिकोणात्मक चिह्न जारी किया गया। सबसे पहली फैक्टरी जिसको अप्रैल, १९६७ मे यह चिह्न मिला, वह थी ब्लादीमिर इल्यीच फैक्टरी जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका है। इसकी बनायी बिजली मोटर अतर्राष्ट्रीय मानका के अनुसार थी तथा अपनी कायक्षमता, आकार और वजन म बेहतरीन वैदेशिक माडेला से अच्छी थी। दजना देश उनका आयात करन लगे ह।

१९७० मे क्रेना, एक्सकेवेटरा, टर्बाइना, कुछ प्रकार की घडिया, टेलीविजन तथा रेडिया सेट, मोजे बनियान आदि को, कुल मिलाकर २,५०० वस्तुओ को जो देश विदेश म ख्यातिप्राप्त हैं – यह चिह्न प्रदान किया गया। इस आकडे से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि इस चिह्न के लिए वस्तुओ को चुनने की प्रक्रिया कितनी कडी है। इस चिह्न की बडी प्रतिष्ठा है और उसे पाने की प्रतियोगिता से राज्य को, अलग अलग फैक्टरिया तथा समाजवादी समाज म प्रत्येक श्रमजीवी को काफी लाभ होता है।

समाजवादी प्रतियोगिता की वतमान अवस्था की विशेषता ही यह है कि इसम पूरे उत्पादन के हित इसमे सलग्न प्रत्येक व्यक्ति के हित से जुडे हुए हा। इसमे आथिक प्रगति के तथा श्रमजीवी जनगण के सास्कृतिक तथा सामाजिक राजनीतिक कायकलाप को बढावा दने के ठोस प्रयत्न शामिल हैं। १९६६ म ट्रेड-यूनियनो ने एक फैसला किया जिसम केवल अच्छे काम क लिए कम्युनिस्ट श्रम के अगुआ मजदूर की उपाधि देने की निन्दा की

गई। अगुआ मजदूर के लिए यह भी जरूरी है कि वह अध्ययन करे, अपने सास्कृतिक स्तर तथा तकनीकी योग्यता को बढाये, फैक्टरी के बाहर अपने आचरण से मिसाल कायम करे तथा सार्वजनिक सगठनो के कामो म सक्रिय भाग ले।

लेनिनग्रादवालो की पहलकदमी के असर से राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की अनेक शाखाओ मे सामाजिक विकास नियोजन न जड पकड ली। कहा जा सकता है कि सामाजिक नियोजन तकनीकी तथा आर्थिक योजनाओ का ही सिलसिला तथा अतिम अवस्था है। यह उत्पादन के उद्देश्यो को मजदूरो के हितो तथा आवश्यकताओ से जोडने का काम देता है। १९६६–१९७० की अवधि के लिए इस तरह की जो योजनाए तैयार की गइ, वे साधारणतया कई भागो म बटी हुई थी काम की स्थितियो मे सुधार, पेशो तथा हुनरो की व्यवस्था मे सुधार, प्रशासन के रूपो का और अधिक विकास तथा शैक्षणिक स्तरो और तकनीकी योग्यताओ म उन्नति आदि। योजनाओ मे निर्धारित लक्ष्यो पर विचार किया जाता तथा अब तक हुए काम के नतीजो का विश्लेषण किया जाता था। ऐसे कार्यक्रमो की तामील से उत्पादन म "मानवीय तत्व" के प्रति समाजवादी समाज के विशेष दृष्टिकोण की झलक मिलती थी तथा विकास के आम उद्देश्यो को उस खास उद्यम के ठोस कार्यभारो तथा सम्भावनाओ से जोडने म सहायता मिलती थी। यह बात अकारण नही थी कि सामाजिक नियोजन का ख्याल अगुआ कारखानो के लोगो को आया और कम्युनिस्ट श्रम आदोलन के अगुआ मजदूरो न इसकी तामील म सबसे अधिक दिलचस्पी ली।

कम्युनिस्ट निर्माण के विकास से सबधित ऐसी ही तबदीलिया सोवियत ग्रामीण जीवन मे भी देखने मे आ रही थी। अधिक सख्या मे कृषि मशीनो की सप्लाई, अधिक बोनस तथा कृषि कर्मियो की जरूरतो का अधिक ख्याल ऐसी बातें थी जिनके साथ साथ सामूहिक तथा राजकीय फार्मों के मजदूरो के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे मुख्य प्रगति हुई। उदाहरण के लिए हम बेलोरूसी सामूहिक फार्म "नावी बीत" (जीवन का नया पथ) का ल। १९६९ मे इसके अमले म ७१९ आदमी थे। इसका मतलब यह है कि १९५९ की तुलना मे एक सौ आदमी कम हो गये थे मगर फसल उससे दो गुनी होती थी और सामूहिक फार्म मे, मिसाल के लिए, दूध का उत्पादन दो गुन से अधिक था। अगरचे खेती के लिए जमीन उतनी ही थी मगर उसपर काम

१६६६ म बिल्कुल भिन्न तरीके से हो रहा था। पहले सामूहिक किसानो को खेता मे आधे से अधिक काम हाथ से करना पडता था। मगर १६६६ म ६५ प्रतिशत काम मशीनें करती थी और दुगुने से अधिक खाद का प्रयोग किया जा रहा था। १६६६ मे फाम के अमले मे एक प्रधान इजीनियर, एक श्रमशक्ति इजीनियर, एक अथशास्त्री, एक वास्तुशिल्पी शामिल थे तथा विशेषज्ञो की आम सख्या १६५६ की तुलना मे लगभग तिगुनी थी। पहले ही सामूहिक किसान खेलकूद मे बडे पैमाने पर भाग लेन लगे थे लेकिन अब सिखाने के लिए उन्हाने एक पेशेवर प्रशिक्षक रख लिया था तथा स्थानीय क्लब के अलावा एक सस्कृति भवन का भी निर्माण हो गया था। इन दस वर्षो के दौरान फाम मे दिये जानेवाले वेतन मे औसतन १५० प्रतिशत वद्धि हो चुकी थी। पशुपालक महीने मे १४०–१६० रूबल तथा ट्रैक्टर चालक २५० रूबल तक कमा रहे थे।

क्रास्नोदार इलाके के फाम और अधिक समृद्धिशाली हैं क्याकि वहा की मिट्टी तथा आबोहवा ज्यादा मुनासिब है। १६७० तक उस इलाके म सामूहिक फार्मों की आमदनिया १०० करोड रूबल से बढ गई थी (जिसका मतलब था दस वप के अर्से म १०० प्रतिशत वृद्धि)। खच की एक बडी मद थी–डेरियो, स्कूला, शिशु भवनो, क्लबा' सडको का निर्माण (बिजली सप्रेषण लाइनो तथा सचार सुविधाओ का निर्माण सरकारी खर्चे पर किया जाता है)। स्थानीय फार्मों ने पैसा बर्बाद नही जाने देने तथा औद्योगिक श्रम विधि का प्रयोग करने के उद्देश्य से एक अतर्फार्मीय निर्माण सगठन स्थापित किया जिसके पास १६७० के प्रारम्भ तक अपना सीमेट कारखाना, ईंट का भट्ठा, कक्रीट और अन्य चीजें बनाने के कारखाने मौजूद थे।

इसी प्रकार के सगठन देश के सभी भागो मे कायम किये गये और चालू हो गये। यह सामूहिक तथा राजकीय फार्मो की सम्पत्ति को एक दूसरे के और समीप लाने की प्रक्रिया का अग था। दश भर म सामूहिक फाम बडे पैमाने के कृषि उद्यम बनते जा रहे थे जिनकी अपनी आधुनिक मशीनें थी तथा अमले म सुयोग्य कायकर्ता थे। १६६६ मे एक औसत सामूहिक फाम के पास लगभग ७,४०० एकड बोवाई की हुई जमीन थी, १ हजार से अधिक पशु, ६०० सूअर तथा १,५०० भेडें थी। कोई ५० से अधिक

गया कि वे किसी भी व्यक्ति को निर्वाचित संस्थाओं में या उसके पद से विश्वास योग्य साबित न होने पर पदच्युत कर सकते हैं। अगर सामूहिक किसानों की आम बैठक में तय किया जाय तो सामूहिक फार्म बोर्ड के अध्यक्ष तथा अन्य सभी सदस्यों का निर्वाचन गुप्त मतदान द्वारा किया जा सकता है।

कांग्रेस के काम का दूसरा पहलू आर्थिक था। कांग्रेस ने नयी व्यवस्था जारी की जिसके अनुसार सामूहिक फार्म स्वयं अपनी बोवाई की योजनाएं, इसके लिए लक्ष्य तथा अन्य कार्यभार तय कर सकते हैं। पहले यह सब कुछ राज्य के अधिकार में था। अब राज्य आगे आनेवाले कई सालों के लिए फार्म की पैदावार की खरीदारी के अपने आर्डर दे दिया करता है। नियमावली में ठीक-ठीक शब्दों में सामूहिक फार्मों द्वारा अपने सहायक उद्यमों तथा उद्योगों का विस्तारित करने और राज्य तथा सामूहिक फार्मों के बीच के संयुक्त संगठनों की स्थापना करने के अधिकारों का वर्णन किया गया है। उसमें यह भी बताया गया है कि सुनिश्चित नियमित भुगतानों के जारी होने के संबंध में प्रत्येक फार्म की कुल पैदावार तथा आय के बटवारे का नया तरीका क्या होगा।

जहां तक कांग्रेस के काम के तीसरे, सामाजिक पहलू का संबंध है, वह उन प्रयासों में निहित था, जिनका उद्देश्य सामूहिक किसानों के सामाजिक निवाह की व्यवस्था को नियत्रित करना था। विगत नियमावली में इसकी बाबत कोई उपबंध नहीं था। कांग्रेस ने पेंशन, भत्ते, आदि निर्धारित करने की पद्धति का जो १९६५–१९६६ में निरूपित हुई थी, अनुमोदन किया तथा उन सामूहिक फार्मों का अपनी स्वीकृति दी जो अपने पुराने कमियों को राज्य पेंशनों के अतिरिक्त अनुपूरक भत्ता देना तथा उनके लिए वृद्धाश्रम का निर्माण करना चाहते थे।

सामूहिक फार्म किसानों के लिए सदा ही कम्युनिज्म की पाठशाला रहे थे और नयी नियमावली की प्रत्यक धारा इसकी साक्षी थी। इसमें काफी ब्यौरेवार बताया गया था कि सामूहिक फार्मों के उत्पादन संबंधी कार्यभार क्या होंगे बल्कि यह भी कि कम्युनिस्ट शिक्षा में उनकी भूमिका क्या होगी।

सामूहिक किसानों की तीसरी अखिल संघीय कांग्रेस ने कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार को आश्वासन दिया कि सोवियत किसान मज़दूर

वग के साथ, समस्त सोवियत जनगण के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अग्रसर है तथा सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति क गिद और अधिक एकत्रित हुए है, और लेनिनवाद के झडे तले कम्युनिज्म के निर्माण की नयी सफलताओं की दिशा म आगे बढत जायेंगे।

ज्यो-ज्यो लेनिन शताब्दी निकट आती गई, उत्साह की राष्ट्रव्यापी लहर जनगण मे फैलती गई। इसकी ठोस अभिव्यक्ति सबसे महत्वपूण योजना लक्ष्यो की प्रतिपूति मे, श्रमजीवी जनगण के जीवन-स्तर म काफी सुधार म तथा आबादी के सभी हिस्सो की राजनीतिक चेतना की अधिक वद्धि मे हुई। अप्रैल, १९७० मे जन्म शताब्दी समारोह देश भर म शहरो तथा गावो मे मनाये गये। अगुआ श्रम समूहो को जन्म शती का स्मरणीय प्रशसापत्र प्रदान किया गया। समाचारपत्रो न लेनिन जन्मशती के सम्मान मे समाजवादी प्रतियोगिता के विजेताओ के बारे मे नियमित रूप स घोषणाए प्रकाशित की। उस महीने की एक यादगार घटना थी अखिल सघीय सुब्बोत्निक। यह श्रमदान ११ अप्रल, १९७० को उसी दिन सगठित किया गया जब ५१ वष पूव ससार मे पहली बार सुब्बोत्निक हुआ। तब मास्को सोर्तिरावोच्नाया रेलवे स्टेशन के मजदूरो द्वारा की गई पहलकदमी को लेनिन ने एक ऐतिहासिक महत्व की घटना बताया था। मजदूरो के उस छोटे से जत्थे न जब कई घटो के काम के बाद निशुल्क कई इजनो की मरम्मत की थी तो उन्होंने उत्साह और लगन के अलावा किसी और चीज का भी प्रदशन किया था। गहयुद्ध तथा हस्तक्षेपकारी युद्ध की भीषण स्थितियो मे और आर्थिक अव्यवस्था के बावजूद काम के प्रति कम्युनिस्ट भावना निरूपित होन लगी थी क्योकि यह पहला अवसर था कि लोग शोषको के निकाले जाने के बाद अपने हित म अपन समाज के हित मे काम करने लगे थे। पचास वष बाद ११ अप्रल, १९६९ को करोडो सोवियत जनगण ने कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक मे भाग लिया। यह सुब्बोत्निक ऐसे समय आयोजित किया गया था जब देश की शक्ति अधिकाधिक बढ रही थी और उसन एक ऐसे जनगण की नैतिक दायित्व की भावना की अभिव्यजना का काम किया जिन्होंने मुक्त श्रम के आनन्द का अनुभव किया था। उस दिन की कमाई की सारी रकम शाति कोष तथा अस्पतालो और चिकित्सा केन्द्रो के निर्माण के लिए द दी गई। उस सुब्बोत्निक के अनुभव

को लेनिन जन्म शती वर्ष में और विकसित किया गया। ११ अप्रैल, १९७० को सारा देश काम करने निकल आया।

सुब्बोतनिक के बाद के दिन नयी सफलताओं के दिन थे और २२ अप्रैल को हजारों अगुआ मजदूरों ने अपना वायदा पूरा किया उनमें से कुछ ने अपने पंचवर्षीय उत्पादन ध्येय को पूरा किया, कुछ ने अपनी उत्पादनशीलता को उस स्तर पर पहुंचाया जिसपर उन्होंने जन्म शती तक पहुंचने की प्रतिज्ञा की थी और कुछ ने उस दिन बचाया हुआ सामान इस्तेमाल करते हुए पूरी पाली का काम किया। "हम लेनिन की शिक्षा के अनुसार काम और अध्ययन करेंगे तथा जीवन व्यतीत करेंगे।" यह था नारा उस दिन का तथा उससे पहले के दिनों का।

सोवियत संघ के श्रमजीवी जनगण ने १९७० की राष्ट्रीय आर्थिक योजना नियमित समय से पहले पूरी की। उस वर्ष के दौरान जो काम किया गया उसके महत्व का अधिक ठोस चित्र प्रस्तुत करने के लिए निम्नलिखित तुलना की ओर ध्यान आकृष्ट किया जा सकता है १९७० में औद्योगिक उत्पादन तमाम युद्धपूर्व पंचवर्षीय योजनाओं के यानी १९२९–१९४१ की अवधि के उत्पादन के बराबर था। यह मानो सफल चरम बिंदु था उस अभियान का जिसका उद्देश्य १९६६ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २३वीं कांग्रेस में स्वीकृत १९६६–१९७० की अवधि के लिए निर्देशों को पूरा करना था।

विगत पांच वर्षों की अवधि में कम्युनिस्ट पार्टी तथा समस्त सोवियत जनगण के बहुपक्षीय कायकलाप की सारी उपलब्धि का साराश सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस में पेश किया गया जो १९७१ के मार्च के अंत तथा अप्रैल के प्रारम्भ में बुलायी गयी थी। कांग्रेस के पूर्वकार्य के रूप में देश के सभी जिलों शहरों तथा प्रदेशों में स्थानीय पार्टी सम्मेलन किये गये और इनके बाद सभी संघीय जनतंत्रों में पार्टी कांग्रेस हुई। विगत पांच वर्ष की अवधि के परिणामों का विश्लेषण करते हुए कांग्रेस के डेलीगेटों तथा पार्टी पत्रों ने इस बात पर जोर दिया कि इस अवधि की विशेषता केवल यही नहीं थी कि उसमें अनेक महत्वपूर्ण काम पूरे किये गये थे बल्कि यह भी थी कि इसकी बदौलत अनेक महत्वपूर्ण गुणात्मक परिवर्तन हुए थे। उस अवधि में सोवियत संघ में एक आर्थिक सुधार जारी किया गया था और भरपूर प्रयास किया गया था कि सोवियत

समाज के सवतोमुखी विकास को तेज किया जाये। १९६६-१९७० की अवधि मे सोवियत अथव्यवस्था का विकास विगत पचवर्षीय अवधि की तुलना मे अधिक कारगर ढग से हुआ था। राष्ट्रीय आय-जो सचिति तथा उपभोग का मुख्य साधन है-१९६५ की तुलना मे १९७० मे ४१ प्रतिशत अधिक थी। १९६१-१९६५ की अवधि की तुलना मे अब राष्ट्रीय आय की औसत वार्षिक वद्धि दर अधिक थी। इसी लिए यह सम्भव हो सका कि सोवियत जनगण की भौतिक समृद्धि के लिए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा निर्धारित मुख्य ध्येयो की पूर्ति ही नही बल्कि अतिपूर्ति भी की जाये। वास्तविक प्रति व्यक्ति आय मे ३३ प्रतिशत वृद्धि हुई हालाकि निर्धारित ध्येय केवल ३० प्रतिशत था। उसी अवधि मे मजदूरा तथा दफ्तरी कमचारियो के वार्षिक प्रतिमास औसत वेतन मे २६ प्रतिशत वृद्धि हुई। आठवी पचवर्षीय योजना की अवधि मे अथव्यवस्था के सभी क्षेत्रा मे निम्नतम वेतन बढा तथा मजदूरा और दफ्तरी कमचारियो के वेतन से आय कर की वसूली मे कमी हुई, पाच दिन का काय सप्ताह जारी किया गया, श्रमजीवियो के लिए छुट्टिया बढाई गई। सामूहिक किसानो के वेतन मे ४२ प्रतिशत वद्धि हुई।

उन वर्षो मे सावजनिक उपभोग कोष पहले से बहुत अधिक महत्वपूण भूमिका अदा करने लगे। जनता के जीवन स्तर म वद्धि का यह एक महत्व पूण साधन था। सोवियत सघ मे सभी परिवार इस कोष से लाभान्वित होते ह। १९६५ और १९७० के बीच की अवधि मे सावजनिक उपभोग कोष से आबादी के प्रति व्यक्ति के लिए होनेवाला भुगतान १८२ रूबल से बढकर २६२ रूबल हो गया था। इन भुगतानो तथा अ य सुविधाआ का देखते हुए औद्योगिक मजदूरो तथा दफ्तरी कमचारियो की औसत मासिक आमदनी १९७० मे १६४ रूबल थी।

ठीक यही कारण था कि खाद्य पदाथ तथा औद्योगिक माल के उपभाग मे काफी वृद्धि हुई और आठवी पचवर्षीय याजना काल म माल की कुल बिक्री ५० प्रतिशत अधिक हुई। सबसे ज्यादा माग महगे खाद्य पदार्थों तथा टिकाऊ सामाना की बढी। इसका अथ यह था कि सोवियत जनगण के उपभाग के ढर्रे मे स्पष्टत सुधार नजर आया।

उसी अवधि म गह् निर्माण के क्षेत्र म नयी सफलताए प्राप्त हुइ। १९६६-१९७० की अवधि म लगभग साढे पाच करोड लागा का नया निवास-स्थान दिया गया। इनमे से ६० प्रतिशत परिवारा का अलग अलग

फ्लट दिये गये जिनमे तमाम आधुनिक सुविधाए मौजूद थी। दूसरे शब्दो म पाच वर्षों के दौरान जितना गह निर्माण किया गया, वह दस दस लाख आवादी के ५० वडे नगरा के बराबर था।

स्वाभाविक ही है कि ये सारे आकडे आवादी के प्रत्येक सदस्य को नही मालूम रहे होगे लेकिन सोवियत सघ मे हर व्यक्ति अपने रोजमर्रे के अनुभव मे यह महसूस कर रहा था कि आठवी पचवर्षीय योजना की पूर्ति के फलस्वरूप विराट पैमाने पर उपलब्धिया मिली है। जाहिर है कि हर आदमी को नया फ्लैट नही मिला और न हर आदमी का ट्रेड-यूनियनो के स्वास्थ्य निवासो मे या अवकाश गृहा म निशुल्क रहने का अवसर मिला। लेकिन निशुल्क चिकित्सा सेवा की सुविधाओ मे पिछले वर्षो मे वडा सुधार हुआ है और इसका फायदा हर सोवियत परिवार को पहुच रहा है। फिर कोई फक्टरी ऐसी नही थी जहा काम की स्थिति म इस अवधि म सुधार नही हुआ हो। कई बार सरकार ने शिक्षा सवधी सामाना तथा घरलू उपभोग के सामान का मूल्य कम किया। शिशु भवना, स्कूलो, नये उच्च शिक्षा सस्थाना का निर्माण अभूतपूव पैमाने पर हुआ। दजना अत्यत आधुनिक क्रीडा केन्द्रो का भी निर्माण किया गया। इस सूचि का कोई अत नही, लेकिन यहा इतना ही कह देना काफी होगा कि अब जबकि सोवियत सघ म समाजवाद को पूण तथा अतिम विजय प्राप्त हो चुकी है, सावियत जनगण अधिकाधिक सोवियत जीवन पद्धति के सुलाभा का अनुभव करन लगे हैं।

जनगण की भौतिक समृद्धि म सुधार के सवध मे विशेप उपलब्धिया का विश्लेपण करने पर कम्युनिस्टो तथा गैर-पार्टी सदस्यो ने देखा कि वे उद्याग, कृपि तथा पूजीगत निर्माण की ऊची विकास गति का सीधा परिणाम ह। १९६५ की तुलना मे १९७० मे औद्योगिक पदावार की मात्रा ५० प्रतिशत अधिक थी। सोवियत अथव्यवस्था के मुख्य उत्पादन कोषो मे भी ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। १९६६ – १९७० की अवधि मे जो वद्धिया हुइ वे देश की १९५५ की, उस समय की सपूण उत्पादन क्षमता से अधिक थी जबकि सावियत सघ मे ससार के प्रथम कृत्रिम भू उपग्रह का निर्माण काय शुरू हुआ था जो १९५७ के अत मे छोडा गया था।

उद्योग और सपूण अथव्यवस्था की उच्च तथा स्थायी विकास गति सावियत आर्थिक विकास की सबसे वडी विशेपता है। इसका सबूत आठवी पचवर्षीय

योजना सहित किसी भी अवधि के आंकडो के विश्लेषण से मिल सकता है, जब कि औद्योगिक उत्पादन की विकास दर के लिहाज से सोवियत सघ विश्वास के साथ सयुक्त राज्य अमरीका तथा ब्रिटेन जसे अत्यत विकसित देशो से बढ जाता गया और इस तरह अपने तथा सयुक्त राज्य अमरीका के बीच प्रति व्यक्ति उत्पादन के फर्क को निरतर कम करता गया।

आठवी पचवर्षीय योजना के दौरान सामाजिक उत्पादन का पमाना और भी बढा, अथव्यवस्था की कडिया का सबध और पेचीदा होता गया, तथा विनान और प्रविधि ने और तेज गति से कदम आगे बढाया। इन सब के लिए जरूरी था कि आर्थिक नियोजन तथा प्रबध मे और सुधार किया जाय। जैसा कि स्वय लेनिन ने बताया था, आर्थिक प्रबध ही ठीक वह चीज है जो व्यावहारिक स्तर पर उन सम्भावनाओं को सुनिश्चित कर सकती है जिनसे "वज्ञानिक आधार पर सामाजिक उत्पादन तथा वितरण का व्यापक विस्तार हो, तथा उनको श्रमजीवी जनगण के जीवन का सुविधा जनक बनाने और उनकी समृद्धि मे जहा तक हो सके अधिकाधिक सुधार करने के लक्ष्यो के वास्तव मे अधीनस्थ"* किया जाये। इस दष्टिकोण से हाल मे जारी किये गये आर्थिक सुधार ने मेहनतकश जनगण के लिए अतिरिक्त भौतिक प्रोत्साहन उपलब्ध करने म, आर्थिक लागत खाता का तरक्की देने मे तथा अलग अलग उद्यमो की पेशकदमी तथा स्वततता को बढावा देन मे और उसके साथ साथ सकेंद्रित नियोजन को सुदृढ करन म महत्वपूण भूमिका अदा की। आर्थिक सुधार के ज़रिये श्रमजीवी जनता के व्यापक भागा को कम्युनिस्ट निदेशन के काम मे शरीक करने मे, भौतिक ही नही बल्कि नैतिक प्रोत्साहना की भूमिका का भी बढान म तथा दोना म सही सतुलन कायम करने म सहायता मिली।

आर्थिक सुधार की शुरूआत, अप्रयुक्त पडे रिजव के इस्तेमाल तथा नयी प्रविधि के उपयाग स १९६६–१९७० की अवधि म सामाजिक श्रम की उत्पादिता म ३७ प्रतिशत वद्धि हुई।

कृषि म भी वडे गुणात्मक परिवतन तेरहन म आये। फसलो की उपज म वद्धि हुई और पशुपालन म भी काफी विस्तार हुआ। कुल कृषि उत्पादन

---

*व्ला० इ० लेनिन सग्रहीत रचनाए, खड ३६ पृष्ठ ३८१

की औसत सालाना मात्रा विगत पाच वर्ष की अवधि के १२ प्रतिशत की तुलना म २१ प्रतिशत बढी। १९७० म खासकर बहुत पैदावार हुई। अनाज की फसल १८ करोड ६० लाख टन से अधिक हुई और कपास की ६९ लाख टन। सोवियत कृषि के इतिहास मे इतनी बडी फसल पहले कभी नही हुई थी।

१९६६–१९७० की अवधि की उपलब्धियो का सारांश निकालते हुए सोवियत नर-नारियो ने सोवियत विज्ञान तथा प्रविधि की उपलब्धियो की ओर विशेष ध्यान दिया। सोवियत अतरिक्ष अनुसधान कार्यक्रम देश के समस्त जनगण के लिए गौरव की वस्तु है जिसकी ओर वे बराबर ध्यान देते है। उनके नजदीक वह सोवियत सघ की भौतिक और बौद्धिक प्रगति का प्रतीक है। इस अनुसधान कार्यक्रम में केन्द्रीय स्थान चद्रमा तथा सौरमडल के ग्रहो के अध्ययन का है जो स्वचालित साधनो की सहायता से किया जाता है। ये स्वगामी साधन मानव सहित अतरिक्षयान से अधिक सस्ते और अधिक विश्वस्त होते है। वे उन क्षेत्रो से जहा अभी मनुष्य का भेजना असम्भव या बहुत खतरनाक है, पृथ्वी के पास अत्यत मूल्यवान वैज्ञानिक सूचनाए भेजते है। इन्हीं साधनो से काम लेकर चद्रमा, शुक्र तथा मगल ग्रहो का अध्ययन किया जा रहा है। सितम्बर १९७० म एक स्वचालित स्टेशन भेजा गया और पहली बार स्वचालित उपकरणो की सहायता से चद्रमा की मिट्टी के नमूने पृथ्वी पर लाये गये।

१९७० के अत मे इस क्षेत्र म एक अनुपम उपलब्धि हुई। यह सोवियत स्वचालित अतरिक्ष स्टेशन "लूना १७" की उडान थी। १० नवम्बर को वह चद्रमा पर (वर्षा सागर के क्षेत्र मे) ससार का सबसे पहला स्वप्रणोदित अतरिक्ष रोबट ले गया जो वहा अनुसधान कार्य करता। इसे "लूनाखोद १" (चद्रमा पर्यटक) कहा जाता है। यह ४ लाख किलोमीटर की दूरी पर वैज्ञानिको के आदेश पूरा करता है। उसने अपनी प्रथम चद्रमा यात्रा का नकशा बनाते हुए चद्रमा की चट्टानो, अतरिक्ष किरणो तथा विकिरण के प्रभावो की बाबत महत्वपूर्ण सूचना पृथ्वी को भेजी। अतरिक्ष पर विजय मे यह एक महत्वपूर्ण नया कदम था।

सोवियत अतरिक्ष कार्यक्रम के एक और महत्वपूर्ण पहलू का उल्लेख यहा कर देना चाहिए। वह है सोवियत अनुसधान वैज्ञानिको तथा अन्य देशो के वैज्ञानिको का सहयोग। १९६९ म एक कृत्रिम उपग्रह "इटरकास्मास-१"

सोवियत सघ की धरती से छोडा गया। इसपर जो उपकरण भेजा गया, इसे जमन जनवादी जनतन्न, सोवियत सघ और चेकास्लोवाकिया ने मिलकर तैयार किया था। स्पुतनिक की खोजा का वैज्ञानिक विश्लेपण करने म बल्गारिया, हगरी, पोलैंड तथा रूमानिया के वैज्ञानिका ने भी भाग लिया। समाजवादी देशा के प्रतिनिधि इस क्षेत्र मे १९७० के पूरे साल परस्पर सहयोग करते रहे।

सोवियत सघ ने अतरिक्ष के शातिपूण प्रयोग म सहयाग का हमशा प्रोत्साहन देने का प्रयास किया है। इसका परिचय इस बात से भी मिला कि "लूनोखोद-१" के परीक्षण मे कई ऐस उपकरणो का उपयोग किया गया जिनका निमाण फ्रास म सोवियत सघ तथा फ्रास के बीच वज्ञानिक तथा सास्कृतिक सहयोग के समझौते की शर्तों के अनुसार किया गया था। गत पाच वर्षों के दौरान सोवियत तथा अमरीकी अतरिक्षयात्रिया मे भा भेंट मुलाकात हुई ह।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस की पूववेला म हुई बैठका म देश के आर्थिक, सास्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन के सवध मे जितने सवालो पर विचार किया गया, उनका कोई अत नही था। कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार की अन्दरूनी तथा वैदेशिक नीति के सभी पहलुओ पर विचार किया गया। इससे एक बार फिर सोवियत जनगण की राजनीतिक परिपक्वता का, कम्युनिज्म के आदर्शों के प्रति निष्ठा तथा समस्त ससार मे शाति को सुनिश्चित बनाये रखने के लिए उनकी गहरी इच्छा का परिचय मिला। कम्युनिस्टा ने कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति और सोवियत सरकार के कायकलाप का पूण अनुमोदन किया तथा सोवियत समाज की आगे की प्रगति का माग निदिष्ट करने मे सहायता दी।

काग्रेस के कायक्रम मे १९७१–१९७५ की अवधि के लिए पचवर्षीय आर्थिक विकास योजना के निदेश शामिल थे। इस सबध मे आर्थिक समस्याओ पर विचार विमश बहुत महत्वपूण था। नयी पचवर्षीय योजना को बहुत ब्योरेवार तैयार किया गया था। इसकी मुख्य दिशाए केंद्रीय समिति के १६ मई १९७० के सन्देश म दे दी गई थी जो सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के निवाचन की तयारी के सिलसिले म जारी किया गया था। जुलाई, १९७० मे केंद्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन न पचवर्षीय योजना के कृषि

कार्यक्रम पर विचार किया। वैदेशिक आर्थिक नीति से सम्बद्ध भाग नियत समय से पहले ही १६७१–१६७५ के लिए परस्पर आर्थिक सहायता परिषद् के दायरे के अन्दर समाजवादी देशों की आर्थिक योजनाओं व समन्वयन के दौरान तैयार कर दिया गया था। दिसम्बर १६७० में केन्द्रीय समिति के पूर्णाधिवेशन तथा सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के अधिवेशन ने १६७१ के लिए जो ६वीं पंचवर्षीय योजना का प्रथम वर्ष था आर्थिक विकास की राजकीय योजना और राजकीय बजट का अनुमोदन किया। योजना के अन्य भागों तथा पूरी योजना पर भी विस्तारपूर्वक विचार किया गया। १६७१ के प्रारम्भ में पंचवर्षीय आर्थिक विकास योजना के निर्देशों का मसविदा अखबारों में प्रकाशित किया गया। सोवियत समाज के विकास की सम्भावनाओं पर राष्ट्रव्यापी विचार शुरू हुआ।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस ने इस विराट कार्यभार को पूरा किया। इस कांग्रेस में भाग लेनेवाले लोग एक ऐसी पार्टी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जिसके सदस्यों की संख्या अब १,४४,५५,३२१ थी जिनमें से ४०.१ प्रतिशत मजदूर थे, १५.१ प्रतिशत सामूहिक किसान थे और ४४.८ प्रतिशत दफ्तरी कर्मचारी थे (इनमें दो तिहाई इंजीनियर, कृषिविद, शिक्षक, डाक्टर, वैज्ञानिक, लेखक तथा कलाकार थे)।

२४वीं कांग्रेस ने कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव ब्रेझनेव द्वारा प्रस्तुत केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट सुनने और उसपर बहस करने के बाद केन्द्रीय समिति के राजनीतिक मार्ग तथा व्यावहारिक कार्य का और उसी तरह रिपोर्ट में पेश किये हुए सुझावों और निष्कर्षों का पूर्णतः स्वीकार किया। कांग्रेस ने १६७१–१६७५ की अवधि के लिए सोवियत आर्थिक विकास के निर्देशों का अनुमोदन किया जिसे कांग्रेस के सामने सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष कोसीगिन ने पेश किया था। प्रतिनिधियों का सारा काम ऐसे वातावरण में हुआ जो सिद्धांतनिष्ठ और कारोबारी था तथा सामूहिक भावना से ओतप्रोत था। सारा प्रयास यह निश्चित करने के लिए किया गया कि राष्ट्र की अंदरूनी तथा वैदेशिक नीति की समस्याओं तथा विश्व क्रांतिकारी प्रक्रिया के विकास से संबंधित समस्याओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जाये। कांग्रेस के काम में ६१ देशों की कम्युनिस्ट और मजदूर, राष्ट्रीय जनवादी तथा वामपक्षी समाजवादी पार्टियों के १०२ प्रतिनिधिमंडलों ने भाग लिया।

बहुतेरे वैदेशिक आगतुको ने काग्रेस म भाषण दिया और उनमे से अधिकाश न औद्योगिक उद्यमा का दौरा किया, औद्योगिक मजदूरा, दफ्तरी कमचारिया तथा सामूहिक किसाना से भेंट और बाते की। वदेशिक प्रतिनिधिमडला ने सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की नीतिया की, विश्व कम्युनिस्ट आदोलन के प्रति उसके सिद्धातनिष्ठ मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुख और इस आदोलन की एकता को सुदढ करने तथा तमाम क्रातिकारी शक्तिया की एकता को प्रोत्साहित करने के लिए उसकी लगातार और अथक कोशिशो की भूरी-भूरी प्रशसा की। इन सब कारणो से २४वी काग्रेस शाति, जनवाद, राष्ट्रीय स्वाधीनता, समाजवाद तथा कम्युनिज्म के सक्रिय समथको की अतर्राष्ट्रीय सभा के रूप म सामने आयी।

कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत राज्य के सस्थापक लेनिन ने बताया था कि समय गुजरने पर अधिक से अधिक कृपिविद इजीनियर, अथशास्त्री और अथव्यवस्था के सभी क्षेत्रा के विशेपज्ञ पार्टी काग्रेसो के मच से बोलेंगे, वगहीन समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार के निर्माण से सबधित मौलिक समस्याओ पर विचार विमश मे भाग लेगे। २४वी काग्रेस म पहले की सभी काग्रेसा की ही तरह, उत्पादक श्रम मे प्रत्यक्ष भाग लेनेवाले स्त्री पुरुषा तथा अत्यत सुयोग्य विशेषज्ञा ने मच पर आकर अपनी बातें कही। उन सबो ने इस बात की पुष्टि की कि उत्पादक शक्तिया अब जिस स्तर पर पहुच गई हैं, वहा सोवियत जनगण के लिए यह सम्भव हो गया है कि और भी अधिक शानदार कायभारा का बीडा उठाये। इस तथ्य की अभिव्यक्ति निर्देशो मे भी हुई जिनमे यह कहा गया था "**पचवर्षीय योजना का मुख्य काय है समाजवादी उत्पादन के विकास की ऊची दर, उत्पादन कारगरता मे वृद्धि, वज्ञानिक तथा तकनीकी प्रगति और श्रम की उत्पादिता मे वृद्धि की रफ्तार को तेज करने के आधार पर जनता के जीवन के भौतिक तथा सास्कृतिक स्तर मे काफी वृद्धि को सुनिश्चित करना।**"

१९७१–१९७५ की अवधि मे राष्ट्रीय आय म ३७–४० प्रतिशत वृद्धि होगी। इसका मतलब है कि प्रति व्यक्ति वास्तविक आय लगभग ३० प्रतिशत बढ जायेगी। इस अवधि म मजदूरा तथा दफ्तरी कमचारिया का औसत वतन १४६ से १४९ रूबल तक हो जायेगा। सामूहिक किसान शीघ्र ही १०० रूबल के लगभग कमाने लगेंगे। इसके अतिरिक्त निशुल्क भौतिक सुविधाए और सवाए और साथ ही सावजनिक उपभोग कोष से प्राप्त

भुगतान पाच वर्षों मे ४० प्रतिशत बढ जायेंगे। ६ करोड स अधिक लोगो को बेहतर रिहायशी मकान मिल जायेंगे। नये शहर उठ खडे होग नये अस्पताल, स्कूल, स्वास्थ्य गृह और पुस्तकालय खोले जायेंगे। सक्षेप मे सोवियत सघ के श्रमजीवी जनगण के लिए इतना ऊचा जीवन स्तर सुनिश्चित हो जायगा जितना किसी पूजीवादी देश म नही है। निस्सदेह इसके लिए उन लोगो के बहुत प्रयास की जरूरत होगी जो देश के कारखानो और निर्माण स्थलो म, खेतो और शिक्षा सस्थानो म, अनुसधान केन्द्रो म सक्षेप में हर उस जगह काम करते हैं जहा भौतिक मूल्यो का सृजन किया जाता है, जहा नये कार्यकर्त्ताओ का प्रशिक्षण होता है जहा सोवियत जनगण को छुट्टिया तथा विश्राम की सुविधायें मुहैया की जाती ह। नवी पचवर्षीय अवधि में औद्योगिक उत्पादन ४२–४६ प्रतिशत बढेगा और उत्पादन के उन क्षेत्रो का विकास जो उपभोग का माल पैदा करते ह उनकी तुलना म अधिक तेजी से होगा जो उत्पादन क साधन पैदा करते ह। नयी पचवर्षीय योजना के दौरान कृषि की औसत सालाना पैदावार पिछली अवधि की तुलना म २०–२२ प्रतिशत बढेगी। एक व्यापक कार्यक्रम मे बताया गया है कि शहर और देहात दोनो जगह श्रम की उत्पादिता को बढाने के लिए व्यापक पैमाने पर नयी प्रविधि को लागू करने के लिए तथा श्रमजीवी जनगण के सास्कृतिक और तकनीकी स्तरो को और ऊचा करने के लिए क्या कारवाई की जायेगी।

पहले ही की तरह कम्युनिस्ट पार्टी की दृष्टि म अब भी उसका मुख्य काय कम्युनिज्म के भौतिक तथा तकनीकी आधार का निर्माण करना है। उत्पादन के कम्युनिस्ट सबधो म सक्रमण की यही सबसे महत्वपूर्ण शर्त है। मगर उत्पादक शक्तियो मे वृद्धि से आप ही आप कम्युनिज्म नही आ जायगा। अगर केवल भौतिक तथा तकनीकी आधार निर्मित करने का सवाल होता तो वर्तमान वैज्ञानिक और प्राविधिक क्राति के युग म कम्युनिज्म म सक्रमण अपेक्षाकृत कम समय म हो जाता। नये समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार के निर्माण के उद्देश्य से जो काम किया जा रहा है, उसके प्रसग मे उत्पादन के कम्युनिस्ट सबधो और उसके अनुकूल ऊपरी ढाचे के निर्माण के लिए उससे अधिक समय की जरूरत है जितना पहले लोगो का अनुमान था। कम्युनिज्म का निर्माण एक अत्यत जटिल प्रक्रिया है। इसम भौतिक उत्पादन, सामाजिक सबध और सामाजिक चेतना

शामिल हैं। इसके लिए जरूरी है कि कठिनाइयां तथा अंतर्विरोधों को दूर किया जाये, प्राकृतिक शक्तियों पर काबू पाया जाय और नये कार्यभारों की पूर्ति के लिए कारगर उपाय ढूंढे जायें।

आठवीं पंचवर्षीय योजना को पूरा करते हुए सोवियत जनगण ने एक विकसित समाजवादी समाज की स्थापना कर ली है तथा कम्युनिज्म के भौतिक और तकनीकी आधार का निर्माण शुरू कर दिया है। नवीं पंचवर्षीय योजना इस महत्वपूर्ण मार्ग पर अगला कदम है। कांग्रेस के दौरान ब्रेज्नेव ने कहा "हम जानते हैं कि हम जिन चीजों के लिए प्रयत्न कर रहे हैं, उन्हें हासिल करके रहेंगे और जिन कामों का बीड़ा उठा रहे हैं, उन्हें पूरा करेंगे। इसकी गारंटी है, रही है और रहेगी सोवियत जनगण की सृजनात्मक प्रतिभा, उनका आत्मत्याग और अपनी कम्युनिस्ट पार्टी के गिर्द उनकी एकता, जो अडिग कदमों से लेनिन के बताये रास्ते पर चल रही है।"

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस में केंद्रीय पार्टी संस्थाओं के सदस्यों का निर्वाचन भी हुआ। कांग्रेस के अंतिम दिन नवनिर्वाचित केंद्रीय समिति की एक बैठक हुई जिसमें पोलिट ब्यूरो का चुनाव हुआ। नये पोलिट ब्यूरो के सदस्य हैं ब्रेज्नेव, किरिलेंको, कुनायेव, कुलाकोव, कोसीगिन, ग्रीशिन, पेल्शे, पोदगोर्नी, पोल्यान्स्की, माजुरोव, वोरोनोव, श्चेर्बीत्स्की, सूस्लोव। पोलिट ब्यूरो के निम्नलिखित उम्मीदवार सदस्य भी चुने गये अंद्रोपोव, उस्तीनोव, देमिचेव, मशेरोव तथा रशीदोव। ब्रेज्नेव केंद्रीय समिति के महासचिव भी चुने गये।

कांग्रेस ने "हिंदचीन के राष्ट्रों के लिए आजादी और शांति!" नामक अपील और "मध्य पूर्व में एक न्यायपूर्ण तथा स्थायी शांति के लिए" एक घोषणा भी स्वीकार की। कांग्रेस में इस बात पर जोर दिया गया कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी, जो अपने अंतर्राष्ट्रीय दायित्व से अवगत है, वैदेशिक नीति के उस मार्ग पर चलती रहेगी जिसका उद्देश्य सारे संसार में साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष को सक्रिय रूप से तेज करना है, उस संघर्ष में भाग लेनेवाले सभी लोगों तथा उसके हिरावल—अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन—की संघर्षशील एकता को सुदृढ़ बनाना है। सोवियत संघ अन्य बिरादराना समाजवादी देशों के साथ मिलकर

साम्राज्यवादी देशो की आक्रमणकारी नीतियो के विरुद्ध शाति की सक्रिय रक्षा तथा अतर्राष्ट्रीय सुरक्षा को सुदढ बनाने की नीति पेश करता है। कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार सोवियत सघ मे कम्युनिज्म के निर्माण के लिए शातिपूण स्थितिया का सुनिश्चित करने के लिए हर सम्भव क़दम उठा रही है और उठाती रहगी। वे विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओवाले राज्या के बीच शातिपूण सह्अस्तित्व के लेनिनवादी सिद्धाता का समथन करती हैं और करती रहेगी।

देशभर मे २४वी पार्टी काग्रेस के फैसला का उत्साहपूवक स्वागत किया गया। सभी कम्युनिस्टा की ओर से काग्रेस ने मज़दूरो, सामूहिक किसानो तथा बुद्धिजीवियो से अपील की कि अपने देश की प्रगति मे अनुप्राणित सृजनात्मक श्रम के साथ योगदान करे। और सोवियत जनगण अधिक उत्साह के साथ, अपनी क्रातिकारी परम्पराओ के प्रति वफादारी के साथ तथा कम्युनिस्ट पार्टी के नेतत्व मे, नयी योजना को कार्यान्वित करने के काम मे इस अहसास के साथ जुट गये कि इसकी पूर्ति कम्युनिज्म की विजय को और नजदीक लायेगी।

उपसहार के बदले

हम अपनी कहानी के अत तक आ पहुचे और अब समय आ गया है कि हम इसको समाप्त करे। परन्तु जीवन की यात्रा जारी है और इतिहास कभी एक पल कही टिकता नही। एक के बाद दूसरा दिन आता है और पिछला दिन इतिहास का अग बन जाता है। यह पुस्तक जब पाठका के हाथो म पहुचेगी अनेक तबदीलिया हो चुकी होगी। देश की उपलब्धियो के सबध मे कुछ बाते और आकडे पुराने पड चुके होगे या यो कहिए कि वे पुरानी उपलब्धिया के प्रतीक रह जायेंगे। केन्द्रीयकृत आर्थिक नियोजन से समाजवादी अथव्यवस्था की स्थिर विकास दर निश्चित होती है। सोवियत जनगण विश्वास के साथ भविष्य का सामना कर सकते है। उनके देश के अतीत ने उस माग को सही साबित कर दिया है जिसपर वे अक्तूबर, १९१७ मे अग्रसर हुए।

अक्तूबर क्राति की प्रथम जयती के अवसर पर लेनिन ने सोवियत जनतत्र के जन्म को याद करते हुए कहा था "पूजीवादी वग के लोग

31

बोल्शेविकों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते और यह कहते थे कि बोल्शेविक मुश्किल से एक पखवारे तक टिक पायेंगे " और भी कितनी ही बार हमारे देश के दुश्मनों ने अंत्य काल-सीमायें निर्धारित की थी। जब यह स्पष्ट हो गया कि उनके अन्दाज़े सही नही है तो हमारे शत्रुओं ने मध्यम और ऊची हर आवाज़ मे सोवियत समाज के जीवन में गलतियों का ढिंढोरा पीटना शुरू किया। यह स्थान नही कि हम एक बार फिर उनकी बातों का उत्तर दें। इसके बजाय हम क्रांति के नेता के इन शब्दों को याद कर कि बोल्शेविकों तथा सोवियत जनगण के लिए घबराने की कोई बात नही है, क्योंकि जो गलतियां हुई हैं, वे एक नयी जीवन-पद्धति के निर्माण की महान उपलब्धियों की तुलना में नगण्य हैं। उन्होंने लिखा था "प्रत्येक गलती के लिए जो हमसे होती है और जिसका ढिंढोरा पूजीपति और उनके चाटुकार पीटते हैं (जिनमे हमारे अपने मेंशेविक तथा दक्षिणपथी समाजवादी क्रांतिकारी भी हैं), १०,००० महान और वीरतापूर्ण कारनामे किये जाते हैं "*

उन्नीसवी शती के मध्य मे कम्युनिज़्म केवल एक सिद्धांत था। मार्क्स तथा एंगेल्स द्वारा प्रस्थापित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा संगठन में कुल ३०० सदस्य थे।

बीसवी शती के मध्य मे कम्युनिस्ट समाज के निर्माण की दिशा मे व्यावहारिक कदम उठाये गये। हमारी धरती के छठे भूभाग पर जहा संसार की जनसंख्या का लगभग सात प्रतिशत भाग बसा हुआ है, जो कुल औद्योगिक उत्पादन का पाचवा भाग पैदा करता है, हर रोज एक वर्गहीन समाज के भौतिक तथा तकनीकी आधार के निर्माण की पूर्ति को एक कदम निकट ले आता है। अन्य समाजवादी राज्य अब सोवियत संघ के साथ भविष्य की ओर बढ रहे हैं। संसार की कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियों के सदस्यों की कुल संख्या अब ५ करोड से अधिक है। इन तथ्यों की रोशनी मे अगर कोई ईमानदार आदमी मानवजाति के इतिहास का विश्लेषण करना शुरू करेगा तो वह यह देखे बिना नही रह सकता कि वह ठीक १९१७ का ही वर्ष है जिसने भूतपूर्व रूसी साम्राज्य के लोगों तथा

---

*ब्ला० इ० लेनिन, संग्रहीत रचनाएं, खंड २८, पृष्ठ ५४

ससार की अय अनेक जातियो के जीवन मे ऐसे स्पष्ट परिवतनो की बुनियाद डाली थी।

अक्तूवर क्राति ने मानवजाति का दो दुनियाओ मे–समाजवाद की दुनिया तथा पूजीवाद की दुनिया म–विभाजित कर दिया। पहले पहल सोवियत जनगण ने ही समाजवादी निमाण का रास्ता अपनाया। यह सवाल कि किसने इस या उस मशीन का आविष्कार किया इस या उस द्वीप की खोज की, विवादास्पद हो सकता है मगर इससे कौन इनकार कर सकता है कि वह कौन सा देश है जिसने समाजवादी निर्माण का माग प्रशस्त किया। सोवियत जनगण का अनुभव इतिहास की विरासत है और अय जातियो के लिए एक मूल्यवान नमूने का काम दता है और दता रहगा। सोवियत सघ ने जो ऐतिहासिक रास्ता दिखाया है, वह विकास की अनिवाय गति का सूचक है और इस बात का ज्वलन सबूत कि माक्सवाद-लेनिनवाद का वैज्ञानिक सिद्धात जीवनक्षम है। पूजीवाद तथा कम्युनिज्म की एतिहासिक लडाई ने नया रूप तथा अन्तवस्तु धारण की है, इसके भावी विकास की सम्भावनाओ मे परिवतन हो रहा है। इसने अव दो विशेष सामाजिक व्यवस्थाओ के बीच प्रतियोगिता का रूप धारण कर लिया है। हर साल, इस प्रतियोगिता के दौरान, कम्युनिज्म अपना वास्तविक प्रगतिशील स्वरूप, पूजीवाद की तुलना म अपनी श्रेष्ठता समस्त ससार के सामने प्रदशित करता है। इसका सबसे सजीव सबूत स्वय सोवियत समाज का इतिहास है।

घटना कालक्रम

१९१७

१२ माच (२७ फरवरी)*	रूस मे पूजीवादी-जनवादी क्राति की विजय। निरकुश शासन का अन्त। मजदूरा और सैनिको के प्रतिनिधियो की सोवियतो का गठन।
१५(२) माच	पूजीवादी अस्थायी सरकार का गठन।
१६(३) अप्रैल	लेनिन रूस लौटे।
जून	पेत्रोग्राद मे सोवियतो की प्रथम अखिल रूसी काग्रेस तथा जून प्रदशन।
जुलाई	अस्थायी सरकार के सैनिको द्वारा पेत्रोग्राद म मजदूरो तथा नौसैनिको के एक प्रदशन पर गोलीबारी। दोहरी सत्ता का अत।
जुलाई – अगस्त	रूसी सामाजिक जनवादी मजदूर पार्टी की छठी काग्रेस।
७ नवम्बर (२५ अक्तूबर)	पेत्रोग्राद मे सशस्त्र विद्रोह की विजय। अस्थायी सरकार का अत। सोवियतो की दूसरी अखिल रूसी काग्रेस। लेनिन के नेतृत्व मे सोवियत सरकार का गठन।

---

*फरवरी, १९१८ तक तिथिया नये और पुराने (ब्रैकट मे) दोना कलेडरो के अनुसार दी गई है।

नवम्बर १९१७ – फरवरी १९१८	देश के अन्य भागों में सोवियत सत्ता की विजय-यात्रा।
नवम्बर	"रूस की जातियों के अधिकारों का घोषणा-पत्र" की स्वीकृति।
दिसम्बर	उक्रइनी सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।

१९१८

जनवरी	सोवियतों की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस। "श्रमजीवी तथा शोषित जनगण के अधिकारों का घोषणापत्र" की स्वीकृति। चर्च को राज्य से अलग करने तथा स्कूलों को चर्च से अलग करने की आज्ञप्ति। रूसी संघ की स्थापना।
३ मार्च	ब्रेस्त लितोव्स्क की शांति संधि।
जून	बड़े उद्योग के राष्ट्रीयकरण की आज्ञप्ति।
जुलाई	सोवियतों की पांचवीं अखिल रूसी कांग्रेस में रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र का संविधान स्वीकृत।
अक्तूबर का अंत तथा नवम्बर का प्रारम्भ	कम्युनिस्ट युवक लीग की अखिल रूसी कांग्रेस। कोम्सोमोल की स्थापना।

१९१९

जनवरी	बेलोरूसी सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।
मार्च	रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बाल्शेविक) की आठवीं कांग्रेस। दूसरा पार्टी कार्यक्रम स्वीकृत।
अप्रैल – मई	प्रथम कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक।

१९२०

जनवरी	हस्तक्षेपकारियों ने सोवियत रूस की नाकाबन्दी उठा ली।
अप्रैल	आज़रबैजानी सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।
नवम्बर	आर्मीनियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।
दिसम्बर	देश के बिजलीकरण की गोएलरो योजना स्वीकृत।

१९२१

फरवरी	जार्जियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र की स्थापना।
मार्च	रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की दसवीं कांग्रेस। नयी आर्थिक नीति लागू हो गयी।

१९२२

अप्रैल – मई	जेनोआ सम्मेलन।
१६ अप्रैल	रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र तथा जर्मनी में रपालो संधि पर हस्ताक्षर।
अक्तूबर	सुदूर पूर्व से जापानी हस्तक्षेपकारियों तथा सफ़ेद गार्डों का खदेड़ा जाना।
३० दिसम्बर	सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की स्थापना।

१९२४

२१ जनवरी	लेनिन की मृत्यु।
जनवरी	सोवियतों की दूसरी अखिल संघीय कांग्रेस द्वारा सोवियत संघ का संविधान स्वीकृत।

अक्तूबर	उज्बेक तथा तुर्कमान सोवियत समाजवादी जनतन्त्रो की स्थापना। साल के दौरान ब्रिटेन, फ्रास, इटली तथा अन्य कई पूजीवादी राज्यो द्वारा सोवियत सघ को मान्यता तथा उनके साथ राजनयिक सबधो की स्थापना।

१९२५

दिसम्बर	अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बाल्शेविक) की चौदहवी काग्रेस। उद्योगीकरण का प्रारम्भ।

१९२७

दिसम्बर	पन्द्रहवी पार्टी काग्रेस। कृषि के समूहीकरण का प्रारम्भ।

१९२८–१९३२

प्रथम पचवर्षीय योजना।

१९२९

उद्योग तथा कृषि मे व्यापक समाजवादी प्रतियोगिता आदोलन की शुरूआत।

ताजिक सोवियत समाजवादी जनतत्र की स्थापना।

पतझड	किसान जोतो का व्यापक समूहीकरण।

१९३१

जापानी साम्राज्यवादियो ने मचूरिया पर कब्जा करके सुदूर पूर्व मे युद्ध का अड्डा बना दिया।

१९३३

जर्मनी मे नाजियो ने सत्तारूढ होकर यूरोप मे युद्ध का अड्डा बना दिया।

१६४०

जुलाई – अगस्त	लिथुआनियाई, लाटवियाई तथा एस्तोनियाई सोवियत जनतन्त्रा की स्थापना हुई तथा वे सोवियत सघ म शामिल हुए।
अगस्त	मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतत्र की स्थापना।

१६४१

२२ जून	सोवियत सघ पर जमनी का आक्रमण।
दिसम्बर	मास्को के नजदीक नाजी सेनाओ की पराजय।

१६४३

नवम्बर १६४२ – फरवरी १६४३	स्तालिनग्राद मे नाजी सेनाओ की शिकस्त।
जुलाई	कूर्स्क के पास नाजी सेनाओ की हार।

१६४४

	नाजी सेनाओ को सोवियत सघ से खदेड दिया गया। लाल सेना द्वारा यूरोप की जातियो का मुक्ति अभियान शुरू।
जून	यूरोप मे मित्र-राष्ट्रो द्वारा दूसरा मोर्चा स्थापित।

१६४५

२ मई	सोवियत सेना द्वारा वर्लिन पर कब्जा।
८ मई	जमनी द्वारा विना शत आत्मसमपण।

१६५७

अक्तूबर	सोवियत सघ ने पथ्वी का प्रथम कृत्रिम उपग्रह छाडा।
नवम्बर	मास्को मे कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधियो का सम्मेलन।

१६५६

जनवरी – फरवरी	इक्कीसवी पार्टी काग्रेस, सातवी पचवर्षीय योजना (१९५९–१९६५) स्वीकृत।

१६६०

नवम्बर	मास्को म कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियो के प्रतिनिधिया का सम्मेलन।

१६६१

१२ अप्रैल	सोवियत अतरिक्षयात्री यूरी गगारिन द्वारा अतरिक्ष मे मानव की पहली उडान।
अक्तूबर	बाईसवी पार्टी काग्रेस। तीसरे पार्टी कायक्रम की स्वीकृति जिसके साथ ही कम्युनिज्म का निर्माण शुरू हुआ।

१६६३

अगस्त	वायुमण्डल, अतरिक्ष तथा जलगत न्यूक्लियर परीक्षण पर प्रतिबध की मास्को सधि।

१६६४

अक्तूबर	सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति का पूर्णाधिवेशन।

पाठको से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिजाइन के बारे मे आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमे बडी प्रसन्नता होगी। कृपया हमे इस पते पर लीखिये

प्रगति प्रकाशन,
२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।